বালনাত জীকাৰৰ মুন্দানাত সুন্দাক —१४% জনাহৰ হৰ্ত দিবানক। জনাহৰ হৰ্ত দিবানক।

> Lakodaya Serses, Title No 145 BHARATIYA ITIHAS RE DRIGHT (Haber) Dr. Ired Frank Inc. Sheretire Josephia --Served Edding 1888 Price No. 10 00 O अस्त्रीह अस्त्रीत 1865 rest spring अध्यक्त कार्यकर रूपेक्य को परक्ती⊸र -१६९०५१, देवाची हुन्यत्र सर्वे दिश्वी-६ वितीय बंदरूरन १९६६

> > क्त । कारी मुखान्य, गारावरी-५

ऋामुख

इस पुस्तकमें प्राचीनतम कालसे लेकर स्यतन्त्रता-प्राप्ति पर्यन्त सम्पूर्ण भारतीय इतिहासका क्रमबद्ध विहगावलोकन प्रस्तुत किया गया है। भारतवर्षकी सनातन भौगोलिक सीमाओको दृष्टिमें रखकर अवण्ड भारतको, जिसमें भारतीय सघके साथ हो पाकिस्तान और नेपाल भी सिम्मलित है, इतिहासका विवेचन अभिप्रेत रहा है। खण्डों और अध्यायोंके द्वारा जो विषय-विभाजन किया गया है उसकी योजना मेरी अपनी है। विषय-निम्पणमें यथासम्भव सर्वमा य अपवा बहुमान्य तथ्यों, घटनाओं एव तिथियोको ही अपनाया गया है, जहाँ कहीं ऐसा नहीं हुआ उसका कारण निजी द्योध-खोजके निष्कर्ष हैं। जनसङ्या सम्बन्धी आंकडे १९६१ की जनगणनाके आधारपर दिये गये हैं। जहाँ सम्पूर्ण भारतकी भौगोलिक इकाईका प्रदन है वहीं भारत और पाकिस्तानके जनसङ्या और क्षेत्रफल-सम्बन्धी आंकडे सम्मिलत है। कुछ भौगोलिक नामोंको हाल ही में परि-वर्तित किया गया है। यथासम्भव नये स्वीकृत भौगोलिक नाम पुस्तकमें प्रयुक्त किये गये हैं।

सामाय इतिहास-पुस्तकोंसे दो-एक अन्तर भी इस पुस्तकमें दृष्टिगोचर होंगे। अय सामाय ऐतिहासिक आघारोंके साध-साध जैन ऐतिहासिक आधारोका भी इस पुस्तकमें पर्याप्त अपयोग किया गया है, किन्तु उसी सीमा तक जहाँतक वे अय प्रामाणिक आधारोंसे समर्थित होते हैं अथवा इतने सवल और विश्वसनीय प्रतीत हुए कि उन्हें मान्यता देना उचित

भामुख

बान बात । बाबाय प्रांतान-पानशेते जैवनोन्द्री और य दे बान-बारियोचा बानेबा बार बाम्य बीच वा दोरीका राम्य है। बाते देव देन्द्रा दोराता बोचेबा की बार्ग बान्य दिवा सत्ते है। देवर मार्ग बात देव बातेने बारीका रास्त्री एवं कृत्य सारा बार्गांकों के कोग-इन बांकर बारीका बाते के बाते के बाता देवा दारा है।

स्वया क्या में रिश्त है मिनूस का बया था तो में की यूक्त वा बार बार है रव कारणार्थ सार्थाय हानांकि का में ब कुत का रा पूर्वकरों निमार्थ होता है जो कारणोर हानांकिता कारणार्थ मान्य पूर्वकर मेंग्य में कारणोर हिए की यह में वार्य पूर्व रहे हैं पाल्पके कारवारणों स्त्रीप हुन में दे कही यूक्त मेंग्र को सार्वक्र बार्य पूर्वकर की मेंग्र की सार्थ करते कहा बार्वका मेंग्र हो है जा की मान्य क

क्षाण है इतिहासके विद्यानियों एवं दर्गितास-विद्याने क्षा कुल्यके दुष्ठ वर्गाच्या क्षा वर्गाच्य व्याप्तानुर्व विदेशकारी वृद्धिनेकर होती कीर सरस्त्रीत संज्ञानके व्याप्तानने तह कुलाव स्विक्य एवं कर्यानी तिन्न होती।

क्षेत्र - जिल्लं स स्टर्गाय, स्थानस १७ स्थानस्था ११११ -22,4-4.5 6,

यह द्वितोय सस्करण

'भारतीय इतिहान . एक दृष्टि' व द्विनीय महत्त्रपणि इतना वीद्य प्रवासमें सानवा श्रेय यदि एक और उनकी वृद्धिगत लोकप्रिया एक उपादेयताकी है ती, दूसरी और भारतीय शानशिष्टम मन्त्री एक लोकोदय वस्त्रमालाके नियामक भाई लक्ष्मीकाद्रऔकी तत्त्रपता एक मुक्षयक्षाका ।

प्रयम संस्क्ररणमें मुद्रणकी जो अमुद्रियों रह गयी थी ये इस संस्क्ररणमें टीक बर दी गयी है। मायाका भी यत्र-तत्र स्वामद्रयक गरिरकार विधा गया है। पृश्वकपर प्राप्त समीद्राओं आस्थि। छाम उटाकर विश्वम प्रमाम खावस्यक संदोधन कर दिये गये हैं। वहीं कही गुछ परियर्जन भी किये गय है। भारतवाके दो मानचित्र स्था खरतमें नामानुक्रमणिया दे दी गयी है, जो प्रयम संस्करणमें नहीं थां। इन संदोधनों एवं परिवर्तनीं पुरुषका उपयोगितामें मानुक्त पृद्धि होगी ऐसा विद्वास है।

इस संस्थरणमे गारवाभूत पाठक, समीसक, मुद्रक, प्रकाशक खादि सभी गण्यनोंका में हुदयमें बामारी हैं।

सायनक २७ मवस्यर १६६५ —उद्योतिषशाद जॅन



तग्छ १ प्राचीन मागत

१ प्राग् ऐनिहासिक काल

प्रान्ताविक - १, पृर्वाका प्रारम्भिक इतिहास - ११, भारा मात्रक्ष - १४, पूर्व पापाण युग - १४, पृरातन पाषाण युग - १४, वन्य पापाण युग - १४, पानु पाणाण युग - १६, निष्मू पाटी सम्मता - २५, विद्या काल - रामायणसे महामारत पर्यन्त ११।

- २ प्राचीन युग प्रथम पाद महाभारतस महायोर पर्यन्त - १५ - ६१
- प्राचीन युग द्वितीय पाट मगप साम्राज्य – ६२ – १०५ ।
- ४ प्राचीन सुग हर्ताय पाइ उत्तर मारत (ई० प्० २०० स ई० सन् ३०० सक्) ब्राह्म सातवाहन - १०७, पिरिप्रमासर प्रदेशके विदेशी ज्ञासक - ११०, पूनानी या यवन - ११०, इण्डीपाधियन या पह्यूव -११२, इण्डोसीवियन या दाक - ११३, मद्र घष्टा वैदा - ११८, कृपाण येदा, मालवा - १२२, मयुरा - १२५, नाग वदा - १३३ वकाटक वैदा १३७।

८ प्राचीन युग – चतुर्वे पार बच्च सारतं(बच्च ने १२ 🕇 एक) कुछ बंध – १३९, बसुप्रकुछ – १४ - बसबुज विकेश विकर्ण-रित्य - १४२ जुजारपुरा प्रथम महैन्यादिता - १४६ सम्बद्धा

विक्रमातिस्य - १४३ पुरमुख - १४४ - गानिस् मुख - १४४ दुशासून दिशोत - १४४ वृष्युच - १४४ वैष्युच - १४४ हम - १४६, बावन गरेच बंधोर्थ्यम् - १५१, वडीवका मीबरि वेच - १५३ व्यक्तिवरका वर्षन वेच - १५४ हर्व-वर्षन -१५४ अस्तवस्ता जीर वद्योदर्वत् -- १५६, अमृष वंद्य -- १५४ दर्बर ब्रहिशा –१५७ १ वी –११वीं ब्रहामीके राज्युत राज्य-- १६२ वर्षावके सहस्रात - १६३ व्हेबरके पाहमान - १६४ रिल्लीके बोबर ~ १६५ अदिको (बेबाब)का साही वीच -बाराके बरबार - १६६ वेशाको ब्राह्मीय -१६६ इतिछ-श्र हमेंडोडे राहीत - १७१ जानस्टीडे व्यवस्थी नरेव

 १७१ नमेश वंध - १७२, माहिसको बच्छावट रावै ~ tw1 :

कृष्टिंग आहि राज्य और शृहचर मारत

क्रिक - १८ - महाबोधनके क्षत्रपुरि - १९५, मुक्साय -१९८, किल केंग्र – १११ करबीर – २१३ वैसाय – २१६, क्षणी पारी – २१५, डिज्यड – २१६ ब्रामाय – २१६, बंगाय - ११६ किंवन प्रीप और रत्यप्रीय - २२० वर्गा - २१८, गुपूर-वर्षेके होत्र रहेट ।

७. वृद्धिय मारत [१] १३१ राज्य मंत्र - १४१, गारच राज्य १४६, नीम राज्य - १४८ वैद शाम - १५ करमा वैष - २५१ वेववेद - १५६

८. दक्षिण भारत [२]

वातापीके परिचमी चालुक्य – २७८, वेंगिक पूर्वी चालुक्य – २८९, राष्ट्रकूट वदा – २९२, कल्पाणीके उत्तरवर्ती चालुक्य – ३१०, कल्पाणीके कलचुरि – ३१९ ।

६ दक्षिण भारत [३]

पूर्वमध्यकालक प्रमुख उपराज्यवदा — ३२३, सी दिसिके रह — ३२५, कींकणक दिलाहार — ३२६, कोगात्व वदा — ३३०, घगात्व वंश — ३३१, अलुप या अलुब वंश — ३३१, गंगधाराका चालुबय वदा — ३३३, तुलव देदामे बगवाहिका वग वदा — ३३४, वारंगलके ककातीय — ३३५, देवगिरिके यादव — ३३६, द्वार-समुद्रका होयसल वदा — ३३९।

१० विजयनगर साम्राज्य ३६२-३६०

खण्ड: २ विदेशो शासनमे भारत

(मुसलमान और अँगरेजी शासन)

- १ इस्लामका भारत-प्रवेश और दिल्लीके सुल्तान गुलामका – ४०४, खिलकीवक – ४०९, सैयदवंश – ४१९, लोदोवंश – ४१९, सूरिवक – ४२१।
- २ पूर्व-सुगळकाळके प्रादेशिक राज्य

 वनाल ४२५, बोनपुर ४२७, मालवा ४२७ गुजरात ४३०,

 कहमीर ४३३, बहमनीराज्य ४३४, बरारकी हमादशाही ४३९, बीदरकी बरीदशाही ४३९, गोलकुण्डाकी कृतुवशाही ४३९, अहमदनगरकी निजामशाही ४४०, बोजापुरकी आदिलशाही
 ४४१, खानवेशका फ़ारूकीवश ४४४, राजपृत राज्य ४४५।

३ मुराह-साझारप - ठावेगत वास- ४९८ हवाई-४३१ अवसर ४७४ अग्रेगिर-४९५३

४ मुख्य-मामान्य-स्थानात्त्वः बाह्यता - अर्थस्यः - ५(६ वन्यत्वा वस्त्रः ५१९)

द्र सराज्ञणतायां [१०००-१८८० ई] शास्त्रमी बरमस्य – १९११ कुण्यमः स्वाय – १९८८वर्षः १९११ – १९१४ कुण्यमः स्वाय – १९४४ वर्षाण्यो स्वयो – १९ द्रीयमात्रे साथ – १९१४ विष्यु – १९६६ वराय – १९४ एक्ष्मा सो १९१४ वर्षः – १९४४ वर्षः – १९३ वर्षाः साथ – १९४४ वर्षः स्वर्षः – १९६६ वराय

६. यूरोपवासियोन्द्रासः साध्यक्षे सूद यांच क्षित्रमः – ६६ । साध्यक्षत्रक्षयः – ६३१ वर बाद योग – ६३१ वर्षा वेचेयते – ६१४ वर्षार्थकः – ६१६ वर बार्य

क्यों १९४० मार्ड विक्रों - ६१६, वार्ड हिरियन - ६१८ कार्ड सम्पंत्र - १९८, वार विकास नेहित - ११९ कार्ड साम्बंदित कोड - ६४१ कार्ड कोड - ६५१ कार्ड सीम्बंदा - ६४१ कार स्थित - ६४२ कार्ड क्योर्ड - ६४४ कार्ड कील - ६४४ • पुरस्तात सुगा (स्थाद १९४० वें)

वैधिकवरीत - १९९६ मन्तर्गत्व काका और वैचारिक विकास - १९८, विकास पासकी दुवेरों - १९४ विधिक वाकाओं वर्षित्स मुदेशें - १४२, कुलक्षणाव - १८ अपूर्व क्षेत्रियों -१ वेची वरित्स - ७०% विवेदी वाकामों मारक - ७१४

खराड १ प्राचीन भारत





अध्याय १

प्राग्ऐतिहासिक काल

प्रास्ताविक—उत्तरमें सुविस्तृत उत्तृग हिमवान पर्वतमालामें सुरक्षित
तथा दक्षिणमें तीन ओर महासागरसे वेष्टित और मध्यमें विन्ध्यमें लाग द्वारा उत्तरापय एसं दक्षिणापय नामक दो विशाल भागोमें विभाजित हमारे इस त्रिकोणायार महादेशका सर्वप्राचीन उपलब्द नाम अजनाभ या। तदनत्तर यह भारतवर्ष नामसे विश्यात हुआ। यह नाम भी सहस्रो वप पुराना है। इस देशका मुख्य भाग आर्यवण्ड कहलाता था, विशेषकर उत्तरापय। सङ्गा आर्यावर्त थो। उसके भी मध्य मागका नाम मध्यदेश या। गंगा, यमुनासे युवत यह मध्यदेश ही प्राचीन भारतीय मस्कृतिका उत्तरम स्थान रहा है। इसो प्रदेशमें भारतीय धमं, दर्धन, ज्ञान और विज्ञान आविष्कृत एव विकमित हुए, यहींमें देश देशान्तरोमें उनका प्रकाश फैला, इसी प्रदेशका आध्यात्मिक एवं बौद्धिक ही नहीं, राजनैतिक नेतृत्व भी विरकाल तक न केवल सस्पूर्ण भारत देशपर ही वरन् उसके बाहर भी दूर दक व्याप्त रहा।

अठारह लाख वगमील क्षेत्रफल तथा लगभग चौयन करोष्ट जनसस्याका यह विशाल भारतवर्ष एक पूरा महाद्वोप-सरीखा ही है। जल, यल, भूस्थिति और जलवायु, जीव जानु और वनस्पतियों, खनिज और कृषि-चरपादनोकी जितनी और जैसी विविधता हम देशमें है अन्यप्र कहीं चप-लक्ष्य नहीं होता। जातियो, भाषाओ, धर्मों और सम्कृतियोंका भी यह एक अद्भतालय ही कहा बाता है। किंतु इतनी विषमताओं और विविध-

निरोम्पोर्चना यो यन बीट शासको लिपानी बड़े-वहे बद्धपत बच्चीने नहीं सामे कहे में कर ही दन देवके इतिहानके एक वहे बावका निर्माण हुआ है। मार्ग्यन इतिहास ८ वस प्रीट

ाधान एक आप बाहु के राजाहर वर पार्थित प्राथित प्राथित । कारिका वाह्य परिवारी बाहर विकर्त होता है। वे कार्यक वाहर परिवारी दिल्लाहर परिवारी केंद्र केंग्रा कुर केंद्र केंद्र कर्मा करी बाही वाह्य के राज्य के राज्य के तर्म केंद्र करती कर बहुत कार्यार्थित केंद्र केंद्र करती कार्यार्थित (देश्वारे करता क्या कर्मा विराय कार्योद विद्या करती है किस्सा करता हुए। इस क्या कर्मा विराय कार्योद विद्या करता है। किस्सा करता हुए। इस

वीरिक्यम समाने एवे। बारणांतातात तो बारत्यक्षा ही एक वास बनमा बागा वा का व्यक्तिक है। त बीर बच्चावित्ता ही बही कुमने तक प्रवासन राहणी जन है बीर्ड माने मीर दूस तेता तमा तुहर दूषि विश्वम देशों का बार्मावंड न्याबरिंग एवं पानेर्वीत्व सामाना वार्य-कार्यना वाहास परिवासने बारादा विक्रोड है। वे सामाना वार्य-

निर्मानमें । पुरस्तुक करण रूप देशे वर्ष र्यान्ती नारकों और वर्ग वस मार्ग अपनीत कामानादे वस निर्मान और वस कुछ वी मिल्मी बारा मार्ग क्षेत्र कामानादे करा निर्मान और वस कुछ वी वर्ष वर्ष मंद्र में एक्टे ग्राप्त वस्त्रपानि हो जाने नार्भियो क्या मन्त्र पुरस्त देशों और जानियोदे काम से स्थानित हुए काम्युटक काम्यु

करारी पेर बारसार का अपने बार्ग्य वरिष्य करारी वर वाल करना तिकरणा भाग ना भी भानी दिरियर द्वारा नार्ग्य देवती राजिर्दित इस्कृतानी बेरियेश द्वारण करागे मा नाम वर्णमानाजी भी। बहरे बहुग्यारांने मालक्वरणे देव क्यान नेवारे पुरुष के इसे बार्गियम पोर्टियान इपना प्राप्य कर दी है। विम्नु मालक्वरण अहुम्बरोडरण मोर्टियम हो रहा बहुद के देवें

किया बामान होने हुए वो सारवार्यको छोड़ाई उठ बुदया वसके हरियारी वं ब्राह्मिक सारका वारकेत जायते हैं। दृष्टितीयर होने क्यों है। एवं ही यह सार्याहर दलाओं देगारी जाउनेटिय बुदयाओं में सार्य हो। हतती नेसार । सारक देशों सारवार सोमा है। सार्युव सारवारी सारवी देन ब्राह्मात सार सार्युव स्वारु सोस्य समस्य दिया सारवारी कर सार्युव मानव भेदोंको जिसनी विविधता और विभिन्न मानव जातियोग मिन्नण मो जैना भातरयपमें रहा है ऐसा अन्यत्र फहीं नहीं रहा। स्तूत्र रचते दो प्रधान मानवी धाराएँ यहाँ उचलक्ष्म होती हैं, एक फट्टन, यझ, नाम शादिने यदाजीनी यह भारा त्रिसे बसंमानमें प्राय द्वाविट नामने मूचित किया जाना है और दूसनो उत्तर पश्चिमको और उदयमें आने गाली आर्य जातिके यदाजीनी यह धारा जो इण्टोआर्य कहलाती हैं। इनने अतिरिक्त प्राचीन बाल्डेलायड, मंगोलायड, मानस्त्रेर आदि और प्राला-तरमें ईनानी, यूनानी, दान, पह्नुद्र, मुखाण, हुण, शर्म, सुर्क मादि जातीय तरम भी ममय समयपर भारतीय जनतामें मिश्रिन होते रहे हैं। भावारी दृष्टिमे भारतीय-प्रार्थ, द्राविट, और मानस्तर—ये तीन तरम भारतीय भाषाआंचे मृलाधार हैं।

पृथ्वीका प्रारम्भिक इतिहास—पृथ्वीक इतिहामके विषयमें दो विचारपाराएँ हैं। इनमें-मे एक शास्त्रतादी है जिसमा विश्वास है कि सत्का कभी नाम नहीं होता और असत्का कभी उत्ताद नहीं होता। इसके अनुसार विश्व व्यवस्था और उसके अन्तर्गत हमारे पृथ्वीमण्डल तथा उसपर विवास परनेवाले मनुष्य आदि प्राणियोंकी परम्परा अनादि और अनन्त है। शू यमें-से बभी किमी प्रकार उनका अवस्थात् उदय हो गया या कभी भी उनका सर्यया द्यय या अभाय हो आयेगा, यह वात असम्भय है। पदार्थोमं अपने-अपने द्रश्य दोत्र काल-भावके अनुसार निरन्तर परिवर्तन परिणमन होते रहते हैं। इन परियतनोकी ही नोई-कोई सामूहिक अवस्थाविशेष ऐसी प्रस्पन्न एवं आत्वितक होती है कि उन्हें सृष्टि और प्रलय आदि नाम दें दिये जाते हैं।

दूमरी विचारधारा मृष्टियादी सस्कारोंसे उद्भूत है। इसके अनुसार ईव्वर बादि नामोंसे अभिहिस कांवत विशेषने किसी समय अपनी इच्छासे सर्वथा सूयमे-से हमारे विश्व, पृथ्वीमण्डल और मानवका एकाएक निर्माण कर दिया और एक समय ऐसा भी बायेगा जब यही शक्ति इनका सबधा



एच० जी० बैत्मी अनुमार यह काल ८० करोटमे ८० करोट वर्षे पूर्व तक रहा प्रतीत होता है। इन कालके प्रारम्भमें सम्पूर्ण पृथ्वी प्रायः एक रूप थी, जममें भारत पूर्व, अफ्रीका, अमेरिका आदि जैमो जीमालिक इवाइयों न बन पायों थीं। किन्तु पह अनुमान विभा जाता है कि भारतके हिमबान प्रदेश तथा दक्षिणो पठारको रूपरेगा जूनात्विक इतिहामके प्रारम्भम हो यन गयी थो। बन्तुत हिमाल्यसे कन्यानुमारी पर्यन्त मम्पूर्ण वर्तमान भारतके दौचेना मूलाधार मी बन गया था। इस प्रकार मारतवर्षका मूल चहानी आधार बगु प्रश्मे कात जीवनमें प्रारम्भ हो अवस्थित था।

निर्जीय युगके उपरात जीव युगका प्रारम्भ होता है। इसके तीन खण्ड है--पहला काल-पुरातन जीवपुग (पेठेजोडब), दूमरा काल-मन्वजीय युग (मेसजोइर) और तीमरा काल-नन्यजीय युग (येनेजोइक)। यह पहला राज डां० हेडेनके अनुसार ४० से ३० करोट और यैल्डके अनु-सार ३० से १५ करोड वर्ष पर्यत चला । इसी कालमें सर्व प्रथम घरातल-पर वनम्मतिया और जीव जन्नु पाके अपने सरलतम प्रारम्भिक ह्वीमें उदय होनेका अनुवार किया जाना है, जितसे हो सनै -सनै जलचर, नमचर एवं थउचर प्राणियोगा तथा जलाय एव स्यलीय वनस्यतियोंका विकास हुआ। इस मालमें मृतल्यी रूपरया भी वर्तमानग्रे नितात निन्न थी। दूसरे कालमें पृथ्वाने वडो ऐंठ मराह दिवायी, भूतलमें बढे वहे परियर्तन हुए, जल-थल विमाजनमें अतर पटे। इस युगमे पृथ्वीकी भौगोलिक स्थिति बहुत करके जैन शास्त्रामें वर्णित 'अढ़ाई हीप-मनुष्य लोक'के सद्ग्र थी, अर्थात् उत्तरीय ध्रुवको मेद्र लेकर उल्टे यटोरे-जैसा एक अविच्छिन भूसण्ड या जिसे चारों ओरसे मेखलाकी नाई एक वृत्ताफार महासागर घेरे हुए या। तत्परचात् फिर एक मेंबलाकार अविच्छिन्न भूनण्ड या—दक्षिणी भारतके फुछ माग, अफोका, दक्षिणो अमरीका, आस्ट्रेलिया आदिको सयुक्त करता हुआ। उनके नाचे फिर एक वृत्ताकार महासमुद्र और अन्तर्ने दक्षिणी ध्रुव पर्यन्त कपर जसा एक अप भूखण्ड था। यह काल १५

हे ४ करोड वर्ष पूच तक बना । वीत्रस काम को ४ करोडत ६ सात वर्ष वृत्र तक पता । अविश्व महत्त्वपूर्ण है । इन पूर्व अधिकांत वृद्ध वर्षाः स्थान नही-बर अवाड कार्टि अर्थ वर्णमान स्वकारी अल्ब हुए । दश कुनके कमानै पानै वालेवाच बीच-अन्तु, चमुदरवादि एवं वृष-लटा कादि वयसादिवी मैं-के मानवर्षित सरवान सर्वास्त्रत है। बीर दशी मुनके सन्तर्वे सर्वप्रवर्व क्षेत्रपाधी बीनोने प्रचयत्र प्रामी मानवक करिजनके विश्व वाये बाते हैं। भाग्रसानम्-अलस्यो बन्धांत रेते हुई शहबि हुई दिन स्थानी हुई और बंध हुई बोर दिस अपने हुई-दल बालींड सम्मानने विश्वनिन बदा नक्ष्मेत्र है। दिन्तु बदा विक्रिय वक्ष नक्षान्त्ररोके बद्धानको यह निव्हर्य निर्देश क्लिया का बकता है कि पूर्णायकार बावब्रे वर्षप्रवस बस्तिक्ष मिन चनपदे बनाम विश्वते हैं दाबीते. लारतमर्थमें गढ़ अनवद विचनान मा बी मी पर्याल क्षेत्रप्रमे । बल इच तथाने तमित्र भी करोड नहीं है कि बातवी रक्षित्रवर्षे आरम्य बावधे ही जारतवृत्ति अनुस्वकी बीकानृति प्यो है। मानव और खबरी आदिव-तार्ग्यियाबिक-बाग्याके विकासका कुत सुधारिक्तों को अध्येतिहास्त्रोती जागामें क्षेत्रा काल कहनाया है। इंग्ले वीय विजान है--(१) पूर्व प्राचान युप--१ करोप्रवे ६ कास वर्ष पूर्व देव---प्राप्तः निकान्तः बनस्य बन्ध्यस्यानः पूर्वन्या प्रकृतिहारः सबस्थितः दर काकने सम्मन्तिन प्रवाद व हडीके करियम अस्तरन आहे और वीर्ड घण भीवार बारियाँ जान्यम हर है। शिवत मुबलॉर्वे निर्वाप मन्तापनम्ब पारम यस पुनश्ची इत बारिन बानकानी व्यवस्था मी

मा और माराविक भीमा नाम प्रतके परमानु आरम्म होता है ।-(१) इत्तर मनत् पुरस्त पालामुक-- ६ काव वर्ष प्रति १५ हजार वर्ष क्ष कर पार । इन धार्म पार-राप बहे-बहे स्टाप्ट वर्तीके एकल बाने विषके नारम कर बन्गोंनी दिवनुष जी नहते हैं । बन्नाहारा बस्तविक विकास क्ष्म दियासप्रैके संपान्य इस मुनके सन्दित गांवने संबंधि

बार्स्साव इतिहास एक धीर

वर्षेत्र समित्र होत्ये हैं ।" क्लूना यह जून खेलरे शासका हो सन्तिम नार

४०००० से १५००० वर्ष पूर्वने मध्य ही लिल हुआ। इन युगके अध्य-राहत, राछ रहींडे, औडार बादि मी पापाण प अस्यियींने ही बने हैं विन्तु बादिन ढगवे होते हुए भी वे पूच पापाण यूगवानीकी अपेक्षा श्रेष्ट्रनर है। इसी कालमें सर्वप्रयम मनुष्यके धर्मभायको किसी न किसी स्पमें अभिन्यतित दृष्टिगाचर होनी है। भित्तियोपर अद्गुत रेखाचित्रोंसे युक्त कुछ बादिमकालीन पर्वतीय गुफाओं इसके चिह्न मिले हैं। अन्त्येष्टि सस्कार खादिके भी कुछ अवदीय मिले हैं। मृत व्यक्तियोगी बैठी मुद्रामें भूमिन्य कर दिया जाता था, साथमे आगामी जीवनमें उपयोग करनेके लिए भोजनादि सामग्री भी रख दो जाती थी। ये छोग फड फुछ, कन्दमूछ तया विकारमें प्राप्त मांन आदिशा मनाण करते थे। उनमें रेखाशास्त्रका भी ज्ञान विषसित हो रहा था। दक्षिण भारतमें कर्न्छकी गुफाओंके परी-क्षणसे पता चलता है कि उनका सम्बन्ध जाद टाने-जैसे किती-न-किसी प्रकारके षानिक गुरवोंसे रहा होगा । ये लोग मृत व्यक्तियाकी देह गुकामें हो छोटकर सायत्र जाकर रहने लगते थे। रेखा एव भित्तिविशोंसे अनुमान होता है कि इस युगक मानव समस्त चराचर पदार्थीमें जीवको सत्ता मानते थे, कितने हो सरलतम अपरिष्कृत एयं आदिमरूपमें सही, जीय या जीवनी धानितको सर्वन्यापकतामें उनका विद्यास या । ये वित्यूजक भी थे । मध्य प्रदेशके रायगढ़ जिलेमें स्थित मिगनपुरके निकट भित्ति एव रेखाचित्राँमे युक्त उस कालको ऐसी गुफाएँ मिली हैं जो सम्भवतया उनके देवस्थान या मिंदर थे। मनुष्यो, पशुओ एवं आस्वेट आदिके चित्रोके अतिरिक्त जो कई रेखानिर्मित रहस्यपूर्ण सांकेतिक चित्र मिले हैं उनका कितने ही माध्यात्मिक साकतिक चिह्नांसे बद्भुत साद्ध्य है, वे चित्र कई मौलिक जैन मा यताओंको सांकेतिक अभिव्यक्ति जैसे लगते हैं।

(३) नव्यपापाण युग — ईनवोपूर्व लगमग१५०००-८००० वर्ष पर्यन्त नव्यपापाण युग चला । इस कालमें मानवको आदिम सम्यता और सस्कृतिने बढे दुतवेगसे प्रगति की । विविध पापाण, हायोदौत, सींग, लकहो आदिक हुए और प्रमुक्ति र क्वा न रहे ने क्वान सोचे वाले करें। नार देन केंद्र बनारे क्वां र स्मृतिम र क्वा केंद्र स्वाति का स्वात्त हुवा। व्यक्ति हित्रक साम साम स्वात्त का केंद्र स्वाते का स्वात्त का स्वात्त केंद्र स्वात्तर मी सुन्द हुया। बनेत कियों ने स्वतन ना हु तिरावने सामित बनोशां मी साम हुया। बनेत कियों ने स्वात्त का सीव्य सित्रक स्वत्ता—क्वा सिक्ति क्वा क्वा हुए साम स्वत्त करेंद्र हैंद्र बने । क्वा अस्वता मो पालित पूर्व स्वात्त करेंद्र हुए बीट स्वतिक द्वा साम स्वात्त केंद्र साम स्वतिक स्वात्त का स्वतिक हुए बीट स्वतिक द्वा साम सम्बद्धा पूर्व का स्वतिक स्वतिक स्वतिक हुए बीट स्वतिक द्वा साम सम्बद्धा है हिन्दु कर्वन बनिक पित्रक स्वतिक हुए बीट स्वतिक हुन स्वतिक सम्बद्धा है। स्वत्त करेंद्र सामित स्वतिक स्वत

मार्थीन इक्टिक यह धी

 किसी-न-किसी प्रकार अनुष्ठान करनेकी प्रयाएँ प्रचिन्त हुईं। किनने ही वर्तमान अन्विविद्यामो, व्यक्तियो अयया पदार्थों को निषिद्धमान उनके समगिनपेव, परमारागत आह्मायिकाओ, दैती उपाह्यानो, लाककयाओ, यहाँतक कि सगोत और नृत्यके भी वोज नव्यपापाणयुगीन आत्मवादमें निहित ये। उस युगके जोववादकी अभिव्यक्तिका एक महत्त्वपूर्ण द्वार पाषाण-पूजा यो। विभिन्न आकृतियोके पाषाणवण्ड विशेष विशेष दैवी शक्तियों अयवा देवी-देवलाओंके प्रतीक या प्रतिनिधि समझे जाते थे। लिग-पूजाका भी प्रचलन था। कालान्तरमें वैदिक आर्योने पहले तो उसका विरोध किया किन्तु बादमें समझौतेकी भावनासे प्रेरित हो उसे अपना लिया। अस्तु जो लिगेद्वर ऋग्वेदमें इन्द्रका शत्रु कहा जाकर निन्दित हुआ वही अथवंवेदमें अनेक मात्रो-द्वारा पृजिन-विद्यत हुआ।

जैसा कि ऊपर निर्देश किया जा चुका है, देवमूर्तियोका सर्वप्रथम उसी युगमें निर्माण होना प्रारम्भ हुआ । ये मूर्तियां पापाण अथवा काष्ठको होती थीं। आज भी शायद इसीलिए काष्ठ और पापाणको घातुओंको अपेक्षा अधिक पवित्र और शुद्ध माना जाता है । साधु-सन्यासियोंके लिए भी काष्ठ, पापाण या मिट्टोके ही पात्र विहित हैं। देवपूजामें भाजन-पानकी विविध सामग्रियां समर्पित की जाती थीं, कहीं-कहीं हिसक बिल भी होती थी। कृपि आरम्भ, चरागाह परिवर्तन, युद्ध यात्रा, आखेट आदिके अवसरोपर आनन्दोत्सव मनाये जाते थे जो भिन्न-भिन्न समूहोको प्रकृति तथा परम्प-राओके अनुसार हिंसक-अहिसक दोनो ही प्रकारके होते थे। व्यक्ति, कुटुन्ब, वस्ती अथवा समृहको मगल कामनाके लिए भी घार्मिक अनुष्ठान किये जाते थे। स्वप्नों और उनके फलमें विश्वास था। इसमें सन्देह नहीं कि घकुनापशकुनों एव स्वर्पों हा मानव सस्कृतिके प्रारम्मिक विकासपर अत्यधिक प्रमाव पहा है। ज्योतिप सम्बाधी प्राथमिक ज्ञान भी उन्हें था। ब्योमचारी. प्रह, नक्षत्र, तारिका बादिका वास्तविक रहस्य वे भले ही न जानत हों किन्तु चिरकाल तक प्रकृतिकी हो निरावरण गोदमें खेलते रहनेके कारण को ब्राह्म है ने संस्था पर पहुंचाने के हैं से । क्रमोत्ती बह यस मुत्रदे का वि विश्वानी की व्यवसाय विश्व है को क्षत्र कुनके जल्म विशेष व वृत्तिकारात्री अवक्रेगण्यत् व अनुवार दिशासका है। बाँद दश्यान सददाओं और बंशुनियाँका सिन्देन क्रियों बाये ती करने बनद तरन हैने हैं में बिनक बनद बनदा अनुप्र बाराम नृत्ये समार माने बानेशने साहित समार ही है। बाहुरा इन्हें करें। नहीं है कि बसान बगरवानान सामाण बना पार्थ मुखेन बध्याब बाराएर हो निवित क्य रिकटित हरें हैं। इस बामरी संस्था वृद्धे बाधार-विधारां के क्रेन बरदेश बाब के बण्य बनावर्ष थी हुन्तिकर होते हैं। रहतान क्योंके मृत-देवताद, सनेक कड़ स्तापीते वैसे बन्ता मणतिवित्र होनेका शिकान नागुका निरमुका नृतिपूर्ण बुक्र और शायान-दूरा, बन्त-सार्व व वाल जाकरचीकी वृक्षा सार्विकान-की बनी बन्दिताचीर देशान्तादा, बंदुनकाम मामान्त्रेड, बंब मंदि क्यों मुख्यों देन हैं। पृष्टिनांस निवारण फार्नेके बिन् स्थानीके ही के संयोग बोल-रही बागरमा सिम बारिको बुनी देशा हुई बनाउनीका बचीन बानि-बरायन क्षेत्रे बरामा मान फरना, मन्द्र-तर चापू-दोना नाव-मान क्रिरामा बार पुरशाना, बैडनेके बिए पूरायन और श्रीमाके बिए बंधन बचेरे बर्धर मुने पानचे बनेना इसी बन्तको अधिक स्टेबन नाम्य

ह है कोर्रिकोंन अगानीका प्रकारत व नेप निष्ट वर्ताण अपन्त क्रिया या । बाबायन बालशा निवह वे लूने यानवे बीची गाड़ी वृद्धिकरी

रोनींश काचार करना शर्याद अनेक चोचें बोचको वृषको देन हैं । पुरस् वर्षा, निष्ठपूर, बण्मा-बेबन वरडी मुखारता बात हवा अन अनेर वरेल् वर्ष विश्री बाकरचाँका बाक्तिकार छन्। दे किया वर । प्रतन्तरियाँ सर्वान् वयो महत्वामीका देववीति मा स्वयंतिहरू बदन बीर बारतकातीक दृष्ट व्यक्तर, देख पानर कारको कारि बोलियोने काना, बनेशीका नाराय मार्चार क्षितात । एवं पी

प्रतिकृत पर्वपर वाणिको या स्थानांके साम धरिकांन करना आही-वृद्धिवी

वृक्ष, पशु-पक्षो आदि योनियोमे जन्म लेना, देवी-देवताआको गदा, दान, चक्र, त्रिधूल आदि आपुर्धोसे पूवन करना, दैत्य, दानय, प्रेत आदि दुए आत्मा- आंक्षा पूजन सत्कार करना, सामुद्रिक शास्त्र, जगेतिय आदि अनेक ऐसी मान्यताएँ हैं जो उत्तरकालोन मुसम्कृत जीवनमें उपत आदिम विचाराका प्रमाव स्पष्ट प्रदक्षित करती हैं। जैन, वैदिक, दीय, वैष्णव, दावन, म्मातं, वौद्ध, यहूदी, पारसी, ईमाई, इस्लाम आदि धर्मोमें अनेक रीति रिवाज, धार्मिक क्रियाएँ, मान्यताएँ एव विस्तास उस आदिम युगकी वपौतीके रूपमें प्रहण कियेगये। चस्तुत आजका सुसम्य मानय उन तयाकथित नितान्त असम्य आदिमकालोन मानयोका कितना ऋणी है यह ठोक-ठोक अनुमान करना और उनकी महत्त्वपूर्ण देनोंका उचित मूल्यांकन करना सहज सम्मव नहीं है।

धातुपापाण युग-इम नन्यपापाण युगके अन्तिम पादमें अर्थात् ईसासे लगमग बाठ-दस हजार वर्ष पूर्व एक नवीन युग प्रारम्भ हो रहा था जिसे घातुपापाण युग कहते हैं। इमीमें धने -शने घातु युगका प्रवेश हुआ जो प्रारम्भमें कहीं कौसा युग और कहीं ताम्र युगके रूपमें आया और अतत लोह युगमें आकर स्थिर हुआ। नन्यपापाण युगके अतमें प्रामीण सम्यता स्थायों हो चुकी थी जिसमें पशुपालन और कृषिप्रधान उद्योग थे। किन्तु धातु युगके उदयके साथ-साथ मागरिक सम्यताका उदय होने लगा जो प्रारम्भमें बहो-बही निदयोंकी उपजाऊ घाटियामें फली फूली। उसके साथ-हो साथ नानाविध शिल्प उद्योगों, राज्यव्यस्था एव राजनीति, जलीय एव यलीय देशी विदेशी व्यापार आदिका भी उदय हुआ और वर्तमान मानवकी वास्तविक सम्यता एव सस्कृतिका व्यवस्थित विकास प्रारम्भ हुआ।

मनुष्यकी आदिमकालीन सम्यता और उसके इतिहासका जो ऊपर सिक्षित विवेचन किया गया है, उसमें यह व्यान रखना आवश्यक है कि उकत सुदीर्घ पापाण कालको जो विभिन्न युगोंमें विभाजित किया गया है और उन युगोको वर्षोंमें जो अविधयाँ दी गयी हैं वे सर्वथा निराधार न होते हुए भी अनुमान मात्र हो हैं। अनेक विद्वान् उक्त अविधयोंमें घटो शंबदी करवेड कळने हैं किए जी को बहुमान्य नंत हैं प्रकारी ^{कर्क} बाबार लिया बया है। दूसरी बात जब है कि बारियज्ञासदरा सरियत भीर बनकी प्राप्त हैनी ही नक्तारात्मा विकास कृष्णीक विश्वित बाउँनी वारा नदा है जिल्हु यह बारस्यक नहीं है कि श्रमारियतन और नजाहारी विकास वर्षत एक ही समयों एक ही करने सबना एक-नी ही वीकी हुमा। नहीं बनका केन और प्रचीत बहुत हुत रही जहीं वहाँ दिन्छ। बीर नहीं नापु पुत्र और समारिक सम्प्राप्ता प्रारम्प हो रहा वा के क्की बार्जन नहीं नगरावान मूननी और कहीं पुश्चन पानानवृत्ती 🗗 संबंद्धा बन्दी एग्रे । साथ सी बन्द संदोशा आलेनिया वासनी अने रिता अनेक होगी साहित हो नहीं भारत-बंध बेघडे जी कुछ मार्थीने बला क्लारामपुर्वेत बारित बानको सँतन बाता वर्ती कर्षे रहते पूर्वे वारो हैं। एक बात बोर है कि आयोजिशक्षित बनशेला बुनारिका^{र्}डी या पापलवियोगें शहनेद हो नकते हैं जिल्लू करका क्षम क्ष्में स्वक्ष आय नुनिस्थित है। दनवें की कोई क्षतेह नहीं है कि महस्तवर्धनें नामनी पुर्णातको सम्ब बाग्राठ प्रदेशोंको बरेता। यह शास्त्रों सी वहीं सबिक उत्त वें क्षेत्र अर्थात की की कोट बारव जानकाने क्षेत्रकृति और सामस्रोता ^{की} करेज्य की बाद हुआ का कीर इन प्रमृद्ध एवं विकासका स्मीप्रकर्ण क्रित क्यार बालावा जानीत प्राव्हेस ही बा । न्यानारक्षके पूर्वके अनुवृक्षित्रस्य बारतीय इतिकालके बाब कररेला बायुनिक विशायनाथा विश्वत्या सम्बद्ध करतेते यह स्वयं वरीत fint & fie und grunt nient uffereb fog land f und केकर पाराण बायके बान्द क्षत्र पार कार्युकेटमा प्रष्टरशासित प्रोतसूत्रिकी बसमा वर्ग छो। देन परमानं युक्ते दूपरे और क्षेत्ररे शाली मह स्वतन्त्रा गर्छ ब्याची बार्चा है जिसकी संबंधि मुचारितक स्वावता है नाम क्षेत्र व बीवरे वालेने वान प्रीवनीय देव वाटा है। यह

नरमार्थं अनुसार मी दन कालीमें क्षांरोठार क्यूनों क्यूबी द्व

मास्कीय इतिहाल : एक शी

नस्पनियोंके आकार, बल स्रीर सुव शान्तिमें ह्वाम होता गया केन्तु कृत्रिमता. प्रयत्न क्षीर उद्योगमें विकास होता गया। प्रारम्भिक मानव विद्यालकाय, अतुल बल्झाली, निदशक, निर्दृन्द, निरोह और सुबी या, उसकी जीवन सम्बंधी आवस्यकताएँ अत्यन्त परिमित यीं और इच्छा करते ही वह उन्हें उसी स्थानके प्राष्ट्रितक बातावरणमें प्राप्त कर लेता या और सान्ष्ट रहता या। कित् घीरे-घीरे उसकी शिवजर्यां क्षीण होने लगीं, प्रकृतिमे स्वत ही उसकी आवश्यवताआकी पूर्नि न होने लगो, उमे प्रवास और उद्यनको आवदवबता प्रतोन होने लगो, सग्रह और सामाजियाना उग्रमें आने लगो, ओर जिसे हम सम्पता महते हैं उसका उसमें विकास हाने लगा । हिमप्रवयोंके उपरान्तका अर्थात् लगभग ५०००० वर्ष प्वके बादका जो पुरातन एव नव्यपापाण युग है वह यह सक्राति-षाल था। जैन परमाराके अनुमार जो तोसरे मुखमा-दुखमा बालके वन्तिम भागमे चौदह कुलकर या मनुआका एकके बाद एक पर्याप्त अन्तरस होनेका उल्लंख पाया जाता हु वे इसो सालमें हुए प्रतीत हाते है। उन्होंन देश हालके अनुसार अपन समकाशीन मनुष्योंका नेत्त्व और पथ-प्रदशन विया बताया जाता है। इनमें अन्तिम कुलकर नामिराय थे जो मध्यदेशमें जहाँ अयोध्या स्थित ह उम स्थानमे उत्पन्न हुए ये। उहीके पुत्र प्रयम ताथंकर ऋषमदेव थे।

नृतस्त्रिषज्ञान (ए प्यापोलाजी) मम्बन्धी एव पुगतास्त्रिक अन्वेपणींसे प्राप्त निष्कर्षोकी प्राचीन अनुश्रुतियों एव मान्यनाओक साथ सगिति वैठानसे यह स्मष्ट है कि इस प्राचीनतम कालमें जब मनुष्त्रकी सम्यत्भका सर्वप्रयम उदय हा रहा था, कमसे क्षम भारतत्रपस सम्बन्धित मनुष्य जाति तीन प्रधान रमुदायोने विभवन थों जिनके आचार-विचार और सस्कृति एक दूमरेसे भिन्न थों। प्रथम समुदाय उत्तरी भारतके पूर्वी भैदानी भागमे गमा यमुनाने दोआवेसे लेकर लंग ममध पर्यत्त निवास करता था। में लोग धान्तिप्रिय और धाकाहारी थे, स्रोक-परलोक, आत्माहे लस्तित्व,

इंदरी बारवा की १ द के बावा | इका अध्यक्त वर्ष है पुरत्रावद के ह इ. रह मानुर्वत्र राज्य बच्चा दर्गायी अन्त व्यापना है . स्त है वि प्रदर्श विवासम्बर्धः भारतं वर्षः भारतं व कल्पनायः सम्बर्धः बर्वे प्र. वि. मेर कारात के क्यून्य एवं के जान जीवर प्रेमिती निए रिजी प्रदराव रिप्टेंग । यहको सामावदन्तवा सं होता तमा द्वरण feing al'an arein m qu arei graf eit mig na reite Bit attriber erter et a ert gu fer er f. water at a be an ten feete es fetere ale mere mee-निंदर कॉल्टर जोट बरन में जह बताब प्राप्त संबद गाओ प्रतिस्थात । त्यां तुर्व नुमक्तीना अर्थ्य प्रती वार्षि हैं ^{हा का} al anti namanere en er er errer fit u!

म गरिक एवं बौदिव दृष्टि आर्थ बाावी की हि चेड बगावेरे बारच बानरामा बानानामें में आने बारदी लावें भी बहरे लहें। मान्त पुनर्व प्रयुप्त समाप्त दी बीहर अनुपाद देवता प्रयुप्त अपनी भी मी मूर्ति सामने दम बारदेशीय बालद बंदरे बुबा का कर दम कर्ति है

पुर्वक केरला मंदिर लिलक र दे हैं। में ब्रियुक्त में मीर गी gerieb mier mit die wir fegere mein ab nich femient

क्य मूर्ण बा वर्त प्रकार जीवनवा विशेषक प्रदेश बाहाने कराया बा देख लिया किया काश है। पूपार बंदुराव बनार, शांतान बना पृथ्वे अधिवत्तर वरंतीय प्रदेशीनै नीतित था । आस्प्रांत्वक वृष्टिमें में भीव बानशेकी क्लेक्स होन में निर्मा गम्मनीयन रचे वर्णन पन्नीवे वे बनके बहुत बहुनाई से। इत्रशिवाननी क्षातीने मानवीकी मरोला कार्यक प्रांताता काल क्षात्व अवर्थ्य कर भी भी और सार्थीने वसमूचिके मानमनके बारास्त की जान बाज गाँके सक वे घरवे इत निरुक्ति माने ही रहे । विश्व बान ही जानहोंको जाना

भारतीय प्रविद्यास : यह दरि

किया तो इन विद्याघरोंने विज्ञानका विकास किया। नाग, ऋक, यहा, यानर आदि अनेक कुलोंमें विमाजित यह भारतीय विद्याघर जाति माग्तीय महाशागरमें फैले हुए विभिन्न द्वीपों एवं प्रदेशोंमें भी रानै -शनै फैल गयो। काला तरमें इस विद्याघर जातिके विद्यांकों ही द्रविष्ठ सज्ञा दी गयी। मानवों और विद्याघरोंके बीच प्रारम्भने ही घनिष्ठ मैत्री सम्बन्ध रहे। परस्पर विवाह आदि भी होते थे जिसमे रक्तिमिश्रण बढा। विद्याघरोंने मानवोंके ज्ञानसे लाम उठाया तो मानवोंने विद्याघरोंके विज्ञानसे।

सीसग समुदाय मानव वशकी ही एक शाखा यो जो किसी बहुत पूर्व समयमें मध्यदेशीय मूल मानवजातिसे पृयक् होकर उत्तर-पश्चिमके पर्वतीय प्रदेशोंकी ओर चली गयी थी। यह समदाय ज्ञान-विज्ञान दोनोमें ही बहुत पोछे तक पिछडा रहा । पशुपालन इसका प्रधान कम रहा । यह समुदाय युमक्कड या और उत्तर-परिवम भारतवर्ती अपने मुलस्थानसे चलकर इसके अनेक दल हिन्दूकुशके दर्शेष्ठे पार होकर मध्यएशिया तक फैल गये। वहाँसे एक शासा कुछ उत्तरकी बोर जा वसी, दूमरी पश्चिमनी ओर यूरॅपके यूनान आदिमें और तीसरी ईरानमें बस गयी। कि तू इन सभी शाखाओका परस्पर यातायात एव सम्पर्क चिरकाल तक बना रहा, जवतक कि वे विभिन्न भूमागोमें स्वायी रूपसे वसकर अपनो-अपनी स्वतत्त्र सम्यताके विकासमें सलग्न न हुईं। अपने देश-काल, रहन-सहन, जीवन-ज्यापार आदि परिस्थितियोंके कारण ये लोग सामान्यतया भौतिकवादी, प्रकृति या प्राष्ट्र-तिक शिवतयोके उपासक, मांसाहारी, हिमक एव प्रवृत्तिप्रधान रहे। ये ही लोग कालान्तरमें आय अथवा 'इण्डोआय' नामस प्रसिद्ध हुए। ये न हो मध्यदेशीय मानव आर्थोंकी भौति आत्मज्ञानरत ये और न विद्याधरोकी मौति विज्ञान एव कला-कुशल । अखएव इनकी सम्पताके विकासका आरम्म **उन दोनोंसे वीछे हुआ।**

अस्तु, अयोध्या प्रदेशके नाभिसुत ऋष्मदेवने पाषाणकालीन प्रकृत्या-श्रित असम्य युगका अन्त करके ज्ञान विज्ञान सयुक्त कर्मप्रधान मानधी बारताच्या जूतकार कर्तववव की नवः विवा । सरोपाति हरिनार् परिका परिकार करीन बाराज्या प्रयान केल था। उन्होंने पति वर्ति कृति विवार वार्तिकाल और पितावाल केलिक पहल्चीर वर्ति प्रतान व्याप्तिक क्षाप्ति प्रतान वर्तिक स्थाप्ति कार्तिक स्थाप्ति कर्तिक व्याप्ति क्षाप्ति क्षा

नार्थ जनसम्भा जीर कैवाल पर्यक्त विशोध काल रिया। करते पुर रामान्द्र भारत थाल कि सर्वत्यम वामुर्थ चारवारी राम-वैक्ति प्रत्यकृताये सोमवेश जराम किया। क्राफ्टि नामी का के चारवार्य पहाचान और जामीन आवेश गायलोय चला। चारवे से एक करता पुरासान और जामीन आवेश गायलोय चला।

बाता है। बातव है रिक्षी विधास क्यांत क्यांत क्यांत के ट्रिक्साओं हैं। जा को हो जी विधास के ते क्यांत्र होंगें ही जा को हो जी र क्यों के ता को ही रिक्ती के तेन क्यांत्रार होंगेंं ते। पर्यों पूर्व का दिने पृत्य का दिने पृत्य का को की तेनवारों तथा एक क्या बच्च कुछ कुछ कुछ का दिने की कुछ पृथ्वी हैं। अस्पनी क्यांत्र हार्थित बहु ब्रिक्टिया बात बातवार्थ का नावों स्थान ब्रह्मिया हो कि हो की तथा का नार्थ का हुए होने की हुम्मा नार्य कुछस्य मां। कुछ हो हारा ब्युप्तिक हो हुम्में । स्थान के तर्यों

इस र्राष्ट्रिया नीयम निमा और क्षमा समामार प्रमान बीमवर्णका गुन-

मास्तीय इतिहास । एक दर्रि

कुत प्रचार किया।

41

सिन्धु घाटी सभ्यता—जिस कालगें मध्यदेशके उपरोक्त धनत संस्कृति घोरे-घोरे विकसित हो रही या प्राय वसी बालमें उनाउ क्रायमधर्म एवं ध्रमण संस्तृतिसे वर्षवित प्रभावित विद्यापराको सोविकता एवं भौति-बना प्रधान उत्तृष्ट नागरिक मस्पताका प्रारम्भ एक सार पर्मदा नदीवे गाठेमें और दूसरी बोर मिपू मदीशी पाटोमें हा रहा या। वर्तमान ग्रताब्दोके प्रारम्भिक यदाकोंने भारतीय पुरातस्य विभागकी स्रोतमे सिच प्रान्तमें लग्माना जिल्में तथा परिषमी पनावर्ग गाटगुमरी जिल्में जी महस्वपूर्ण सुदाई एव गोज शोध हुई है उसने भागतमें एक शरपन्त प्राचीन एव अत्युत्रपृष्ट नागरिक सम्यताके अस्तिरवपर बादचर्यजनक प्रकारा यहा है। छिच् घाटीकी मोहन्जोदरी (मुर्टीका टीसा) नामस् विगरात उत्तर सम्यता सम्यमानवरी अधुनाजात प्रामीनतम सम्यता माने जाती है। पुरातत्वणींने एव पुरा नगर सोद निकाला है जिसकी उगर योजना, पवको इंटोंके सुरदर मुचार नवन, हाट-बाजार, चौरस्ते. गमामवन, विविध अन्त्र - रास्त्र, आभूषण, खेठ - स्विकीने, मुद्राएँ, मूर्तियाँ बादि विविध पुरातात्विक सामग्रीने जो यहाँस प्राप्त हुई है वर्तमान समारको आरचर्याभिभृत कर दिया है। गेहैंका रोनी और उसका भीज्याल-के रूपमें उपयोग, रुईमी गेती और उगरी यस्त्र बनाना, स्वर्णक आभूपण बादि सिन्ध् घाटीने इन प्राचीन विद्याधरोंने ही बायिप्नार माने जासे हैं। विद्वानींके मतानुसार इस सम्यताका जीवनवास ई० पुरु ६००० स लेकर २५०० वर्ष तक रहा प्रतीत होता है। अवतक विरेमिडा एव पैराओ वादशाहोंक पूर्ववर्धी प्राचीनतम मिस्रकी नीलघाटीकी सम्यता तथा परिसमी एशियामें दजला-फरातकी घाटीकी सुमेर सम्पता ही सव-प्राचीन समझी जाती थीं । किन्तु अब उपरोक्त सिन्धु घाटीकी मोहन्जोदड़ी सम्पता उन दोनोंसे ही पूर्ववर्ती ही नहीं यरन् मानवकी सर्वप्रथम नागरिए एव ओद्यो-गिक सम्पता अनुमान की जाती है, और प्राचीन मिस्रो, सुमेरी आदि सम्पताएँ उसके पोछेकी तथा अनेक रूपोंमें उसकी ऋणी मानी जानी है।

वड़ सम्बद्धा लोहेके बास्थिकारके पूर्वकी अर्थाम् बालुपायाम् (वैरकीनिविष्) वा साम्यवकी नानी बासी है ।

ऐना प्रशीक होता है कि बीचने वीलेकर नामनामको कामने नर्दयस्य इस गाणेन काम्यास्त्र प्रशास हुवा। काम्यासका सिव्ह स्थास नव्य है मोर किन्तु में हिएकाक काम्यास ते कैसन सकते किन्तु स्थापी एक है। बीचे बाक का निस्तुति एक तामुगर कामर बीर जानका (बाहुव) अधिके कोण नियास में भी सुन कामन है कि तिम् नामयाके मुन प्रमाणिकों पूर्व विस्तुता मान्यासका मुन कामन है कि तिम्

श्वेच-रारम्पार्वे हो। यह गम्बन्धा सर्वतिक वर्ष कमार्व हो गृही बहुए इस्तितिक को तथा राजे पुरस्तात्र अवस्था स्वीत बेल वर्गक समुद्रात्र सी प्रथम संबद्धिक कारक सामीत दिवाबर सर्वात्र साम्योज इतिक सामित्र पूर्वत वे ऐसा स्वीत होता है। द्वार साम्यावस्था स्वयत्त है कि "नित्यू संबद्धित पूर्व विकेष संबद्धिक स्वात्र साम्यावस्था स्वयत्त्व है कि "नित्यू संबद्धित पूर्व विकेष संबद्धिक स्वात्र साम्यावस्था स्वयत्त्व हित्या हिता होती है कि इन दोनों

पुरमात्मक कामनाव क्यां का सामाना करत हता हूं कर बना कर सहित की सामाना कर हता हूं कर का सामाना सहित की सामाना कर हता है। तो दिव की सामाना महिता के सामाना महिता के सामाना महिता के सामाना महिता की सामाना महिता के सामाना महिता की सामाना महिता के सामाना महिता की सामाना महिता की सामाना महिता की सामाना महिता कर सामाना महिता कर सामाना सामाना महिता कर सामाना सामाना महिता कर सामाना सामान

नुष्या पार्टी है कि बाहुमारा करानी हुए आहेते किसारी व केवल सीरामारा हो कराँ में बाहित मीतियों मुस्ति मीति से केवल सीरामारा हो कराँ में बाहित मीतियों मुस्ति मीति मीति हो मीतिया करा है कि प्रिक्त मार्टी मितिया करा है कि प्रिक्त मार्टी मितिया करा है कि प्रिक्त मार्टी मितिया करा है कि प्राप्ति मित्र मार्टी मित्र मित्र मार्टी मित्र मित

पार्स्तान इतिहास ! एक प्रति

मृत्या ३६ मुद्रा विशिष्टतया जैन है। बादिपुराण आदिमें इस कायोत्सर्ग मुद्राका उन्लेख न्तृपम या वृपमदेवके तपश्वरणके सम्बन्धमें बहुधा हुआ है। जैन त्रत्वमकी इसे कायोरसर्ग मुद्रामें खड्गासन प्राचीन मृत्तियाँ ईसवी सन्के प्रारम्भ कालको मिलतो है। प्राचीन मिस्नमें प्रारम्भिक राज्यवदाोंके ममयकी दोनो हाथ लटकाये खडी मूर्तियाँ मिलती हैं। किंतु यद्यपि इन प्राचीन मिस्री मृत्तियो तथा प्राचीन यूनानी क्रुरोई नामक मित्तवामें प्राय वही आकृति है तयापि उनमें उस देहोत्सर्ग निस्सग भावका अमाव है जो निन्वु घाटीकी मुद्राओंपर अकित मूर्तियोमें तथा कायोत्मर्ग मद्रासे युवत जिन मृतियोमें पाया जाता है। ऋपम शब्दका अर्थ वृषम है और वृषमं जैन ऋषमदेवका लांछन है।" वस्तुत सि घू घाटीकी अनेक मुद्राओं में मृपम युक्त कायोत्सर्ग योगियोंकी मूर्तियां अकित मिली हैं जिससे यह अनुमान होता है कि वे वृपभ लाउन युक्त योगीस्वर तरपभकी म्तियाँ हैं। ऋषम या वृषभका अर्थ धर्म भी है शायद इसीलिए कि लोकमें धर्म सर्वप्रथम तीर्थकर ऋपमके रूपमें ही प्रत्यक्ष हुआ। प्रो॰ रानाहेंके मतानुसार 'तरपमदेव ऐसे योगी ये जिनका देहके प्रति पर्ण निमेमत्व उनको आत्मोपलव्यिका सर्वोपरि लक्षण था। उत्तरकालीन भारतीय मन्तोके योगमार्गमें भी श्ररूपभदेवको उक्त मानका मूल प्रवर्तक माना गया है। प्रो॰ प्राणनाथ विद्यालकार न केवल मिष्य घाटीके धमकी जैन घमसे सम्बाधित मानते हैं वरन् वहाँसे प्राप्त एक मुद्रा (नं० ४४९) पर तो उन्हाने 'जिनेश्वर' (जिन इड्सरह) शब्द भी श्रिकत रहा वताया है और जैन आम्नायकी थी, हीं, किल आदि देवियोंकी मा यता भी वहीं रही बतायी है। वहाँसे नागफणके छत्रसे युक्त योगी मूर्त्तियाँ भी प्राप्त हुई हैं जो सातवें तीर्यंकर मुपार्श्वकी हो सकती है। इनका लाउन स्वस्तिक है और तत्कालीन सिन्यु घाटोमें स्वस्तिक एक अत्यन्त सोकप्रिय चिह्न दृष्टिगोचर होता है, सड़कें और गिलमी तक स्वस्तिकाकार मिलतो हैं।

कुछ विद्वान् मोहन्जोदहो सम्यताके प्राग्जार्यकासीन होनेमें सन्देह

बन्द्यान्य इमी पटचे हैं कि बिल्यू सम्बद्धा क्यार्व ही बड़ी की बान्यू वर्द शिक्षण हरिय की । बनावा मारा मार्च मंत्रपूर्त प्राथमीर मार्च प्रतिकार मे १ को हैरानके सन्दार 'जीएओएरीका जानीन नाम अनुर मर्चीर् बक्रदेश का बोर सनूर निर्मेश नमुख्यों क्षेत्रका विक्रितमा का कारण बन्दरी जनकार काँग्यन बनाता की। हा हैएन हर कारतारी प्रशिक्षित ही मानते हैं। इस बानान्तर्म नह बात क्यान देने बोला है कि 'महर' नवें दीर्वंबर कुलालाहा शावन है। बाल मायल हम निन्तु बस्दशकी अनती बतार बारतके सम्मोदाने बदित इसे रिपारित मंन्द्रतिको जातते हैं। जी एवं पीचण्यामणीका बहुता है कि 'कारे दिवस्तर वर्ग जीन गर्न नुपन गाहि शिवित्त शासनींची पुना बादि बार्गाहे कारण प्राचीन निष्मु कम्पना बैन वर्गहे शाब अद्देशन माराय रखनी है. जाता पर जनका समार्थ अपना वनने बाब सर्नेटिक ते हैं हो अन्तु ऐना प्रचीत होता है कि बक्त माचीन किन्तु बानताके नुस्तकर्ता प्राचीन विद्यापर वानिके जीन में जिन्हें इविश्वीश पूर्वज बहुत का नवन्त्र है। शिन्तु बाव ही बनके बेरक वर्ष वानिक मानदर्शक बागरेशके है नानवर्षी नुष् भार वे को टीवेंडरोडे मानवर्ष और बावक संस्कृतिके बचानक में । दीवरे बीर्वकर नामक्तानके नेकर करें दीर्वकर प्राप्त तकता बाद किन्दु बाक्ताकै विकासका बात है। मुक्ताब्रि कुलकत बात्त-ना बान दनका बन्दर्य नाम छा । बादः इती बनव प्रशाबी वर्तनान माध्यमधी विभेने हरूमा नामने वृथित प्रदेशके कपुमतिनीके करवे एक

करने हैं । इसके सनुदार काणेश जल नियाब स्थान बारनकर ही है और तिल्बु सरस्ता आहे तम्बतायों ही एक बायनिक सरस्या है। दिन्द्र

अन्य नामता विश्वतित होती सुरू हुई । दक्का काल ई मृ क् रे पर मना बाता है। इतनाशर्त मी बनार्व और अवैदिस के दिना इसमें बन परिवर्ण बारोंका को कामान्तरमें बीरक क्षेत्रप्रिको सन्द

40

देनेवाले ये गुछ मिश्रण रहा ही मक्या है। कार्य कार्य निर्मा विदेश सार्यों का हट पायालिक साथ हो सर्वप्रथम एव सबसे भीपण संपण हुआ। विदेश साहित्वरे दहम्, अनुर आदि यही थे। पित्वमी एिसवाम एक साद एक आनेवाली सुमेर, अस्तुर, बावृसी आदि सम्वताओं का सम्पर्व अपनेय प्रवेच्छ मोहन्त्रोदको एवं समकालीन हट्णा सम्प्रताके साथ विशेष रहा। मिश्रकी प्राचीत्रतम सम्मता भी प्राय इसी गालकी है। ई० पू० २१५० के लगभग हट्णावालोंके साथ पित्यमी एिसवाको मुमेरी सम्यताका सम्पर्क निश्चित रूपने रहा प्रतीत होता है। तत्कालीन मालगणनामें यह विधि महत्वपूर्ण है। हड्णा सम्यताके चिह्न गंगा, पम्यल और नर्मदाके कांटींम पित्यमी उत्तरप्रदेश (हित्तनापुर आदिमें), पित्वमी राजस्थान तथा गुजरात पाटियावाड़ आदि प्रदेशोंमें भी प्राप्त हो चुके हैं को उनके त्रिस्तुत प्रसारके मूचक है। इस सम्यताको उत्तराधिकारिको हुकर आदि परवर्सी सम्यताले मानी जाती हैं, और तदुपरात आर्थ (इन्हा आर्थनों) का तथा उनकी वैदिक सम्यताका उदय हुआ माना जाता है।

चैिद्यक सम्यता—आर्गोक मूल नियासस्यानके विषयमं पष्टा मताभेद है, किन्तु अधिक संगत यही प्रतीत होता है कि ये मूलत भारतके
हो नियासी थे और मध्यदेशके प्राचीन मानवधंशी आर्याको ही उस शासारे
मम्बिचत है जो मृत्यभदेवके समयमें होनेवाले मानवो सम्यताके उदयके
फुछ पूर्व हो पिद्वमोत्तर प्रदेशको ओर विचरण करो मूलशासारे प्राय
पृथम् हो गयी थी और चिरकाल पर्यंत पृथक् हो रही। इसवा एक कारण
यह भी रहा प्रतीत होता है कि उनका प्रयाह और विचरण पृत्रकी ओर
अपने मूल जातिब चुओको ओर न होकर पिद्यमिको ओर अर्थात् पृथिमी
एशियाई देशको ओर हुला। वहाँसे ये उत्तरी एशिया और पूर्वी एव उत्तरी
यूरॅप आदिको ओर भी फैले। इनका प्रधान वेन्द्र पिद्यमी एशिया रहा।
उनकी एक शाला जब ईरानमें वम गयी सो एक अन्य शाला किरस
मारतमें आयी और उनके जो जातिब चु यहाँ पहलेरो हो पिद्यमीलर

प्रदेशमें बड़े के कार्य नरीम जोत्वाहर कूंक्जर रहोंने बारवारी नरीके ठटपर बरती कार्या बतिकां बसके खालेके नर्मोंकी एका भी और नर्माहबा कुल स्वोधकों वेतिक लंदाविकी कार्य दिया है वे बीतकाल संस्तरीक कार्युत्पार भारता बैरिक तुम बार्यान-वेटपर बसवाके किरवाबा ही एक प्रमुद्ध है। बारीन रिप्ती बोर सीक बेहतिके

समेनिक व्यक्ति वर नांव निवाह । विद्यालय प्रेस प्राप्त प्राप्त का स्थानिक प्राप्त का कार्याली एक्सामी विदेश कारणार्थी विद्याणि तार्वति है। यह कि विनातुमार सांधि को है हूं १९ ०-१ कारण निमित्र कार्यी हैं से विकास स्थानिक क्षेत्र सेशोनी नांवल मोतियांके सामानाव्य के हैं हूं १ प ४ के से

बहुबत इब समनतो ई नु नु के सरामन निवर करता है बीर

संसर र नर्द हैं , जात तीर बाराया विशायन व्याप्त स्वाप्ता स्वर्ण स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य

বানামিক আৰিক বুৰ্গ বানগীয়েক বাঁচনৰ বাঁমিনক বুবিয়াও আৰি বিবাৰী-ক ৰামক্ষাই বহুগ বুক আনবাটো মানৰ হী বালী হুঁ। বাহিক জিলাকাক বুকাৰি ভাষামাই বুটাইয়ে ধৰনাৰ আৰু আনাৰ্থ কিন্তুৰ

मारगीय इतिहास : एक रहि

सर्वोपरि स्थान, विश या जनपद, ग्राम या बस्तीकी व्यवस्था, समाजमें स्त्रियोका सम्माननीय स्थान, वहपत्नीत्व और वहपतित्व, वण-अ्यवस्थाका प्रारम्भिक रूप, अनुलोम-प्रतिलोम विवाह, मासाहार, सुरापान, खूतव्यसन सादि तत्कालीन सस्याओ, प्रथाओं एव लोकदशाकी रोचक सूचनाएँ मिलती हैं। ऋग्वेदसे ज्ञात होता है कि प्रारम्भिक वैदिक आयोंका यज्ञविरोधी हरूपावालोंके साथ सांस्कृतिक एव राजनैतिक सघर्प हवा, युद्ध हवा और सुलह हुई। उन लोगोंको आर्थोने दस्यू और दास आदि सञ्चाएँ दीं। इस कालकी प्रमुख घटना दशराज युद्ध है। भारतके प्राचीन भारतोका भी इस बेदमें चल्छेख मिलता है। मानवी सम्पताके मुलप्रवेतक योगीस्वर ऋपभकी स्तुतिमें भी कुछ मन्त्र हैं। किन्तु साथ ही लिंगेश्वरको इन्द्रका शत्रु भो कहा गया है। कालान्तरमें ऋकसहिताके रूपमें सकलित इस प्रथम वेदमें दश मण्डलोंमें विभागित फुल १०१७ मन्त्र हैं। जैन अनुस्तिके अध्ययनसे पता चलता है कि दसवें तीर्थकर शीतलनाथके उपरान्त सर्वप्रथम ब्राह्मणोने श्रमण-परम्परासे अपना सम्बन्ध विच्छेद करके अपनी पृथक् ब्राह्मण सस्कृति एव वैदिक धर्मको ज'म दिया था। हो सकता है कि वैदिक आर्योंके समाजमें ब्राह्मण वर्गका सर्वोपिर स्यान देखकर मध्यदेशीय मानववशी ब्राह्मण उनशी स्रोर आकृष्ट हुए हों। वेदोंकी भाषापर मध्यदेशकी अर्धमागधी प्राकृतका तथा ईरानी आदि पश्चिमी भाषाओंका द्विविध प्रभाव रहा प्रतीत होता है। लिपि जो उन्होंने अपनायी वह भारतके मानवविशयो-द्वारा आविष्कृत ब्राह्मी लिपि थी।

उत्कर्पकाल -रामायणसे महाभारत पर्यन्त - शनै वैदिक कार्योने भारतके आदिम निवासो मानवों और विद्याधरोंसे सुलह कर ली और उनका उनके साथ रक्तिमध्यण भी होने लगा। उन्होंने पूर्वकी ओर फैलना प्रारम्भ कर दिया और पजावसे लेकर समस्त पश्चिमी उत्तरप्रदेश उनका के द्व बन गया। उनको राज्य धिनतयोका भी विकास हुआ जिनमें

बुक्तांबावके राज्य वय अनुत से । बैडिशोंके नशेन जानाहते पूर्व एएं हुए-देवले वृद्धियन प्रमाय प्रमार राया मोदिक प्रात्तिक प्रानुत क्षार-निवयको नाम कारि निकासर कारियों परानृत होकर मुदूर बसारवे राजवित्तर और लिन्दु मधीके बुद्रुलेके निकट राज्यकपूरी आदिनें संदुष्टित हो बनीं । र्राज्यने वे प्रदेश क्वल को रही । पूर्वि बनवीरात्रक नानरेग्री जानर अने अनर बन्द वरी उत्तरप्रदेशने सीमित हीते पत्रे बचे । बीचरे दीवेंबर मृतिपुत्रपत्रे

बबर तक वेदिक वर्ष दर्व बाराम संस्कृतिको बतारीतार प्रवृति होती वनी । अभिनुबन्धानके कोचेंने बहुबायुक्ते नूने बंधाने शतक अनीप्यापित राजवान-हारा दोनी बंदर विमेनि बक्तपाना मानीरच प्रकृत हुआ। बद्धान धीराम बारि यात्रव परम्पराने वृत्र बद्धान पूराच पृथ्य तथा वणी प्रवत्ते बीख शत्य करनेकाने क्रिय परमान्ता हुए यो दूबरोने हरवरके अपनार जाने करे । दक्षे वे परम महिनक महत्वीचानक है हो दूबरोंने दे बस एवं महिनोंके रक्षक है। बन्दीके हारा वस बसन्यवसम्बद्ध करार आरधीय बीर्जुडिया

प्रचार गुप्त र्शामके देवाँने पहुँचा मीर देशिकाके प्रदेशके बारण कुछ कालके किए विश्वित हो जानैवाची नानव-विद्यावर सेवी अब बावे-बविष्ट क्रमार्केक क्रमी किरके प्रश्नानित हुई । मानेरके बनरान्त पहुन्, बाव और अवर्ग गानक देव तीन वेदीने बाह्यम सम्बा वैदिक रहिनके बान यमन सम्बा माध्यारिक सार्टित बेरद्रविके कम्मन्य वर्ष बाराम-प्रसारके कररीया प्रश्लोका वर्षाना बाहास दिख्या है । वैर्शनै 'ब्ल्बो शहरवता' के काने एत्याबीन दिख्यर विर्श्वेश कार कार्मित है। वैदिक वार्त क्यांतिये विश्वास कार्नेवारे वाहकीकारक वर्धी भागीयो पारम शहने से । शारम्य शासीम अलीमें इस सारवानी पत्रीय निन्ध है, दिन्तु बचर्च मेरने बारस्त्वीयके स्थाने बचकी प्राथ

स्तुति हो है। इसी प्रधार सबस सहित्योध्ये सी वैतिक साहित्यने दिलाओ वृक्ति बावरान् कहा क्या है। रिन्तु वैदिक क्षत्री राजे कर कृति करिजीहे

समन्यय या समझोतेका एक कारण यह भी प्रतीत होता है कि रामायण एवं महामारतको पटनाओं के मृष्यवर्ती कालमें वैदिक-आर्य समाजमें सिन्योंकी शक्ति और प्रमाव अत्यधिक बद् गया वा-उनकी बलवती राज्यसत्ताएँ यत्र-तत्र फीन गयी थीं, त्राह्मण मन्त्री और पुरोहित मात्र ही रह गये थे। इसो युगमें वैदिक दात्रियोकी राजनीतिक दावित सर्वोपरि षी और यही काल वैदिक सम्पताका चरमोत्कर्प काल है। महामारतके विनाशकारी युद्धने वैदिक युगका ही अन्त नहीं किया, वैदिक धानियोकी राज्यसत्ताको भी अत्यन्त अयनत कर दिया ।

जिस प्रकार इस युगके प्रारम्भमें वयोष्याके रामने दोना सस्कृतियाँके समन्वयका स्तुत्य प्रयत्न किया था उसी प्रकार इस युगके अन्तमें यहुर्यकी कृष्णने वैता ही प्रयत्न किया । ये दोना ही महापुरुष भारतकी मीलिक सांस्कृ-तिक एकताके प्रतीक हैं—दोनों हो प्राचीन श्रमण एव प्राह्मण सस्कृतियोंके योजको सुदृढ़ कड़ियाँ हैं। कृष्ण भी दोनों ही परम्पराओं में प्राय समान ह्पसे सम्माननीय हैं। उनके ताऊगत माई धाईसवें तीर्थंकर गरिप्टनेमि मी यजुर्वेदमें स्मृत हुए हैं। कृष्ण स्वय प्राचीन मानववशकी हरिवश नामक शालामें उत्पन्न हुए से और उन्होंने कुछ पांचालके वैदिक आर्य सिनियोंके साथ विवाह एवं मैत्रो आदि सम्बाध स्यापित करके तथा अपनी विलक्षण कूटनीति-द्वारा मारतकी ममस्त तत्कालोन राजसत्ताओंको मिलाकर, लडाकर और प्रभावित करके चन सबका ही नेतृस्व किया तथा उनके वंशओं-द्वारा कालान्तरमें ईश्वरके अवतारके क्ल्पमें पूजे गमें । साथ ही श्रमण अथवा जैन परम्परामें भी वे नारायण, अर्धचक्री, त्रिखण्डो, श्रावकोत्तम, अपने समयके सर्वप्रताणी सवलिक्तमान् आदर्श नरेश एव धर्मात्माके स्पर्मे स्तुत्य हुए हैं। स्वय पाण्डम य यु भी जैनधर्मके चपासक तथा अन्तमें जैन युनियोंके रूपमें तप करते बताये गये हैं। रामायण एव महामारतको घटनाएँ वहुत थोहे-से अतराँको लिये हुए ब्राह्मण एव जैन दोना ही परम्पराओं में प्राय एक-सी पायी जाती हैं और

बबान करने बोस्तित है। बस्तुतः दोनों बादाबोंने में कारण्य एक हुए हैं पूर्ण है और नितरित्व प्रियानोंने मारमाने कुने बस्तुरिक्तमा करने कारण कारण निर्माण करने कर वाद्यान परित्यान करने तथा पूर्वाण करना विश्वाने करावीचों है बचने ही में ब दूधना बाहित्व करना वार्थाण पूर्वाण करना विश्वाने करावीचों है बचने ही में ब दूधना बाहित्व करा सार्थित बाहुनिक्ती में है। मैना कि मों सामान्य निर्माण है। माराव्यान माराव्यान करना है, माराव्यान माराव्यान करना मेरीनों माराव्यान हिस्सान करना मेरीनों माराव्यान हिस्सान करना मेरीनों माराव्यान हो मेरीने हैं। मेरीने माराव्यान हो स्वेदन में मेरीने माराव्यान हो स्वेदन मेरी मेरी हो माराव्यान हो स्वेदन मेरीने हो स्वेदन हो स्वेदन मेरीने माराव्यान हो स्वेदन मेरीने हो स्वेदन हो स्वेदन हो स्वेदन मेरीने हो स्वापनिक स्वेदन हो स

विरोधी कोशा है। कैगले प्राथित होजेब्द को वेह में कारणीय हेरिक्सीया कुम के कि कि वेटी प्रितास होतियत का वाह्यण राज्यादी काम सामेश स्वाहृत्य। वाहुत के दृष्ण करणायी का साम-सामाणी विराय को सीम वृद्धिया पुरंत्यकों के प्राप्त साम-सामाणी विराय को सीम वृद्धिया पुरंत्यक पुरंत्यक पुरंत्यका विराय निराय है। सामाण विद्यालिय सामाणीय हालीय सामाण सामाणी हो भी विरोय वाह्य की सामाण विद्यालिय सामाणीय हालीय सामाण सामाणीय हाला की सामाणीय सामाणी सीमाणीय की सामाणीय सामाणी

करान्त पह बबके बात बोर्च कराती हमलह कराती सारान-सम्ब कराती तथा कर्मी पृष्ट् करता भी कराने रक्ता हुई कम्मी-हम्मी भीर निकारण होती रही। नियाक्यारी मरामारत तृबके मस्मी बान-बात बरातीय क्रियांक्य कुरोर्च मान्येनिहातिक वह मानुस्तितम्ब इतिहास क्षमा सारा सन्

निरामकारी नरामारत मुक्के सम्बक्त काल-बान कारतीन क्रिप्टाके कुरीर्च नाम्प्रीत्यातिक वस सनुमृतिसम्ब क्रिप्टाक मालका जात और निर्माण्य क्रिप्टाक्य नारण्य देशा है।

अध्याय २

प्राचीन युग-प्रथम पाद [महाभारतसे महावीर पर्यन्त]

बहुत समय तक भारतीय इतिहासका नियमित प्रारम्भ छठी शताः दे पू० में महावीर और वृद्ध-द्वारा क्रमदा जैन एव वौद्धधमंके प्रचार तथा मगध साम्राज्यके उदयसे माना जाता रहा। इसके बांदका काल ऐतिहासिक तथा पूचना प्राग्ऐतिहासिक कहा जाता था। किन्तु इधर कुछ दशकांसे भारतीय इतिहासकारोका सुकाव भारतवर्षके नियमित इतिहासको महाभारत युद्धके ठीक उपरात्त प्रारम्भ करनेकी ओर बढ़मा जा रहा है। बस्तु, भारतवर्षका विधिवत् इतिहास अब गत लगभग तीन साढे तोन सहस्र वर्षका इतिहास माना जाता है। इसका प्राचीन युग महाभारत युद्धके ठीक बाद प्रारम्भ होकर मुसलमानो-द्वारा भारतकी विजयके साथ समान्त होता है। इस छाई सहस्र वर्षके सुदीर्घ प्राचीन युगका पूर्वार्घ प्रधानतया उत्तर भारतके इतिहाससे ही सम्बन्धित है, दक्षिण भारतके सम्बन्धमें इस युगमें कोई विशेष जानकारी प्राप्त नहीं होती।

महामारत युद्धको एक ऐतिहासिक घटना माननेमें अब प्राय किसीको कोई शका नहीं है यद्यपि महाभारतमें कथित उसके वर्णनको जैसाका तैसा माननेमें प्राय सभी सकोच करते हैं। इतिहासकाल अथया भारतीय इतिहासके प्राचीन युगके आदिकालका सूचन करनेके लिए उक्त घटनाकी तिथिका निर्णय करना आवश्यक है किन्तु इसके सम्बन्धमें भी विद्वानोमें यहुत मतभेद हैं। प्रो० पार्जीटरके अनुसार महाभारतकी तिथि ई० पृ० प्रकारिके लगुवार है पू १३०६ जवण्य विद्यान्ति वर्ष्या है पू १४९४ वा व्यान्यात वात्रात्रात्वे कृत्यार है १४९ व्यान्ये है १४९४ वा व्यान्ये है १४५४ व्यान्ये है १४४४ व्यान्ये है १४४४ व्यान्ये व्यान्ये के तर्पय है। १९ विद्यान्ये व्यान्ये व्यान्ये है १ वे १४४ व्यान्ये व्याप्ये व्याप्ये

९५ है डॉ रवेंग्रवल अनुवरार, तो नीवकान गान्यों वार्टिके अनुवार सवस्य १ : ई वृ कर्नन शाक्षे अनुवार ई वृ ११९

के कानक वास्तीय रहिद्राक्य आतीन कुप आरम्भ हुवा थाना या वरुण है। अपून परम्पाने अनुवार को वस्य हारावा अक हुवा और अध्यक्ष परम्पाने अनुवार को वस्य हारावा अक हुवा और अध्यक्ष परम्पान को यह है कि बहाबाराओं वस्य को दिख्य उपाय अपने परम्पान के यह है कि वहाबाराओं वस्य की परम्पान हुवा को है। १४ जोते की यह हुवा वस्य करते प्राप्त की वहुमात्रों है की परमुक्त वह सम्बद्ध कुपना वस्य कर कर वीर्तिक इस्य वहुमात्रों है की परमुक्त वह सम्बद्ध कुपना वस्त कर कर वीर्तिक इस्य

यन, ब्राह्म करानि वर्ष केराहमध्ये स्वीक धानस्थानेता हात वर्ष कराव्य प्रध्य इत्रा द्यो इत्ये बोर दोनंदरिक वन, काल क्षेत्रति एवं काले क्यान्य काल स्वीको एवं नाम स्वीव प्रीव वर्षायोगंत्र प्रदार्थ प्रकृत कृत्यान्य हाता प्रार्थिक केर्य स्थानान्य काराव्य क्षार साहस्य के केल सामियोक साह्य साहस्य केन्याल हुन, साहक सुरोक अन्यक अपनी पूर्व-

भारतीय इतिहास : एक रहि

नाय राज्य च---वाच द्वार, राज्यक सुरक्ष कराया पुर रिषेद्र, मनम निक्त करणि नदिष्यती और सरस्क। इसने औ दूर (राज्यकों हरितनपुर) समाज (राज्यकों कनिका) कीस्क (राज्यकों सरोप्या) विदेह (राज्यकों दिविना) और कार्यों

(राजवानी वारामणे) कारक श्रीय चारव बनुब में । इन बची चार्मीके

नरेश पुर, इदबाकु और मागध इन तीन प्राचीन राज्य वशों में से हो किमीन न किसीके साथ सम्बन्धित ये। ये सभी राज्य उस समय प्राव वैदानुषायी आयंक्षत्रियों में हो थे। इनके अतिरिक्त जो अप राज्य पूर्व, परिचम, उत्तर और दक्षिणमें स्थित ये वे प्राय श्रमणीपामक क्षत्रियों में थे।

चपरोक्त १२ राज्य वंशोंमें भी सर्वप्रधान राज्य नुरुदेशमें हस्तिनापूर-के पुरु, फूरु अयवा पाण्डत्र विश्विमोका पा । अर्जुनवा पौत्र परीक्षित् उनका लघीरवर था। किन्तु उराके समयमें ही वैदिक लायोंकी बढ़ती हुई छित्तिके सम्मुल चिरकालंगे दवी रही नाग अ।दि द्रविष्ट जातियाँ फिरसे यत्र-तत्र सिरं उठाने त्यों। पश्चिमोत्तर प्रदेशको तक्षशिला और मिन्य मन्त्रको पातालपुरीके नाग विशेष प्रवल हो उठे। नवीन उत्माहमे जागृत, विशेषकर तक्षशिलाके नागोने कुर राज्यके ऊपर भीषण आक्रमण शुरू कर दिये। उनके साथ युद्धमें ही परीक्षित्की मृत्यु हुई। उनके बेटे जनमेजयका भी सारा जीवन नागोके साथ युद्ध करते ही बीता। उसने उनका भरसक सहार भो किया किन्तु उनके बढ़ते हुए वेगको राकनेमें बह भी असमर्थ रहा और हस्तिनापुर राज्य उत्तरात्तर क्षोण होता चला गया । जनमेजवके पश्चात शतानीक, अश्वमेघदत्त और अधिसोमकृष्ण क्रमश गद्दीपर वैठे। अधिसीमके समय अयोध्यामें दिवाकर, मगवमें सेनजित् एवं विदेहमें जनक उग्रसेन राज्य करते थे ओर पजावमें प्रवाहण जैवलिका प्रभाव था। अधि-सोमके बेटे निचक्ष्के समयमें नागोंके निरन्तर आक्रमणांके अतिरिक्त कृष देशपर लाल टिट्रोका भयकर प्रकीप हुआ, भोषण दुर्मिक पहा और स्वयं राजधानी हस्तिनापुर गगाकी बाढसे घ्यस्त हो गयी । कुरुवंदी राजे देश-का परित्याग करके यत्स देशकी कीशाम्बी नगरीमें आ वसे। इस प्रकार उत्तरापयकी सर्वप्रधान बेदानुपायी क्षत्रिय राज्य शक्तिका कमसे कम कृष्ट प्रदेशसे अन्त हा गया। सदनन्तर नागोंने उसपर अधिकार कर लिया।

तभीसे गजपुर या हस्तिनापुरका नाम नागपुर या हस्तिनागपुर भी प्रचलित हुआ। यह घटना लगभग ९वीं-१०वीं शतान्दी ई० पु०की है।

प्राय: इसी बनपके लगभन विदेशमें अभित हुई । वहाँका राजा करान जनक बड़ा कानी वा अब अनाने बते बार बाका और तान ही निवेदने क्तवींकी बारानताक कला हो बना बीर बड़ी बंब राज्य स्वारित हैं। बता । बतीके नहोनमें वैद्यालीके विन्यविद्याना बंबराज्य विनर्मित हो पहा वा । विदेशना लेक्सान्य मी उनीमें विश्व वया और प्रवश्यकर सुरक्षित्र वति वा विश्वयवणी स्थापना हुई। ये लीम धवन्त्रानिक दृश्य offer & .

बाबोर्डे को प्रश्न का शास्त्रेयी पाला कवित्रोंका साध्य स्वाप्ति ही नता । इन मंघमें बद्यादल नामध्य बढा प्रचारी चलतार्थे बसाद हवा । इन

ननव पायी धारापी बड़ी वस्ता की नव्यवेदनें बड़ी कुंदर सामान्य बस्ति भी । जीनल नई बार प्रवक्ते अर्थल हवा । विक्री सन्तर बोरावरी वार्टिके बस्तक राज्यती संवक्ती रोत्तव (गोरतपुर) यो उन्नर्व ताँगाहित सी । बहारण बैन परमाध्या अन्तिन प्रवर्णों था । उनुसा सम्मेश अपनेदेर क्य बीद बादिलनें भी बाथ है। डॉ - रायबीवसे प्रमृति स्ट्रिल बढाडी देखियानिकारमें बन्देड करनेका कोई कारण शार्ध देखते : इती बंधारें तीर्वेकर शहरनावंश कला हुना। प्राय वती कलायें ब्रीजनके तरापुर नामक स्वापने करणम् मावता एक बद्धारी केंग राजा हवा जिल्ही पैतिहार्यनकतार्वे कर विदानीको प्रापः गोई तुन्देह कहा है। ∠भी धारों है व ने मनवने जो सारम-फिल्बन हुआ। बनूनेशोर्वार चरके वयन बाहरवीमा वाल हुवा और नायीकरेस विश्वासको प्रवस क्तरोंने राजा डोतेंके किए बामन्तित किया । वह कार्योका राज्य कारी पुर्वोत्तो देकर संबंधका राजा क्या - ब्रावन्ति की - राज्य-किन्युव कीर बोस

हुए अमारके बम्बूब कोला रहता चना बता। इत जहार हुने बती हैं नु के पूछ कुई ही नहाबारतचानीन बक्ता वैश्विक सविव राज्यसताओं-3 =

र्थातका हुना । इतिकारातके पुत्रतिका अवनतिके बालमें बारस्का कोजनने तुझ क्वार्त की था किन्तु बारने शामी और किर नशको बारी का प्राप अत हो गया था और उनके स्थानमें एक ओर नागादि विद्याघर विधायको राज्यमत्ताएँ तक्षाणिता, पातालपुरी, उद्यानपुरी, पपायती, भोगपुरी, नागपर, अग या चम्पा तथा दक्षिणके भिन्न भिन्न भागोमें स्थापित हो चुको थीं और दूमरी ओर लिच्छित, मन्ल, मोरिय, आदि प्रात्य धिनयों के सनेक गण या मधराज्य यत्र-तत्र स्थापित हो चुके थे, साथ ही पुरानी राज्यमत्ताओं के स्थानमें काशी और मगध आदिमें इही यात्यों अवश्रा तथा-कथित छात्र-बन्धुओं के कई ऐसी प्रतापी राजत त्रीय धिवतयों प्रवल हो चुकी थीं को साम्राज्य पदकी पोषक थीं। काशीके बह्मदत्तने साम्राज्य स्थापित किया ही था। कुछ कालके उपरान्त मगध साम्राज्यका उदय हुआ।

ब्राह्मण परम्पराकी अनुश्रुतियोंमें लिच्छवि, मल्ल, मोरिय आदि जातियोको बात्य यहा है। धैजुनाक वशको मी सन्निय नहीं वरन क्षात्रब घ कहा है। प्रो० जयचन्द्र विद्यालकारके अनुसार, 'इस शब्दका प्रयोग होन-ताका भाव मूचित करनेके लिए किया गया है क्योंकि वे ब्रात्य लोगोंके क्षांत्रिय थे, और प्रात्य वे बार्ष नातियाँ थी जो मध्यदेशके पूर्व या उत्तर-परिचममें रहती थीं। ये मध्यदेशके फूलीन प्राह्मण क्षत्रियोंके आचारका अनसरण न करती थी। उनकी शिक्षा-दीक्षाकी भाषा प्राष्ट्रत थी और वेशभूपा (नार्योको यृष्टिसे) परिष्कृत न थी । वे मध्यदेशके ग्राह्मणेंके सस्कार न करते थे और ग्राह्मणोंके बजाय अर्ह ताको मानते थे तथा चेतियो (चैत्यो) की पूजा करते थे। वस्तुत इस कालम वैदिक आर्थोकी शुद्ध स तित अविशिष्ट ही नहीं रह गयी थी। रक्तिमिष्ठण, सास्कृतिक आदान प्रदान एव वहमा घर्म परिवतन आदिके कारण एक नवीन भारतीय जाति चदयमें आ रही थी जिसमें श्रमणीपासक चातुवर्णके श्रात्यो अथवा नाग आदि द्रविड जातियाका बाहुत्य था । आर्य द्रविद्योमें भी घीरे घीरे रवनिमश्रण हो रहा था और परस्पर जातीय भेद-भाव मिटता ना रहा था। व्यवसाय-कर्मके अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैरव और जूद, इन चार वर्णोमें समस्त भारतीय समाज वेंटता जा रहा था। क्षात्र धर्म पालन करनेवाले चाहे वे वैदिक कार दी बन्तन ही जाने मानवंदी कादी तो बात है जोई बन्दे नन जर्दर रिक्टपर बॉक्ट) जबस बंदम हो-जब काव-बाएसे ब्रीवर है बहुते के में वाल दिसार रात ही उसका करने कादे के वर्षों में बहुत के सकता ही जो वस तालात परवेदे दिवाहे जिद्दा हैं।

बार्ट पू त ६ व तम्बर्ध वाता सर्वात संसात वैद्याद का नवंदन र देशा नवंदी याके मार्गाला दिखा कुछ हो जान देशा ता त्याको गुरुवाद देशाला की बागमार्ट पूर्व के हो। या स्थाव क्याहे व स्थाव की बोट में बागमा तम्मां व सांच्या सामार्थ के सुर्व कामार्थ स्थाव रिश्या वार्य देशा शिक्स स्थाव नामार्थ हिमान स्थाव स्थाव की स्थाव स्था स्थाव स

बाप्टम सनुसरित दर भा बहाबान सम्रोत हुन वामीनहती बन्मेस विमान हैं और सनुपर निष्म --वारो बोहन संब सरस

भारत (भार) वह (का) हुत राज्यात क्षण (भारत) हार्यक्ष साइस (सावस्त) अर्था न पांत्रा प्रश्नीय-भारत का उत्पार्थिक लगी साइस (सावस्तात वर्णना है एक का मुक्तीय वर्णना (कार्यूर) साइस (पीरमूप) करण (भारतको) 10र (दीएक) दिसे (विर्त्या), कह (भारत), कोर वार्या (साइस्त्री) 1-स्त का गान्ती स्त्रा का साम्य काल (साहस्त), कहा (कार्यू) कर्णा या (पायस्त्र) माह (पारत), कशी तत्म आर्थी भीत्म कार्याम सीर क्षण्यार पत्र हो सान्ता का स्त्राह्म क्षण कार्या कार्युल कार्य

वा जलेन विषया है। इन सुविशीह मुख्याल्यक अध्यक्तने नह राष्ट्र है कि

जैन सूजियाँ अप सूजियों की अपेक्षा अधिक बहुक्षेत्रज्यापी और सम्भवतया अधिक कालज्यापी हैं। दूमरी बात यह है कि विभिन्न अनुसृतियों को सूजियों के उन्हों देशोका उल्जेख विशेष रूपसे है जिनके माय उनके अपने-अपने धर्मों का अधिक सम्बन्ध रहा। उपगोक्त नामोर्मे भी उस काल (६ठी शताज्यों ई० पू०) में मगध कोमल, वस्म और अबन्ति ही प्रमुख राज्य ये तथा विज्ञयोंका गणतन्त्र गणतन्त्रोंमें प्रमुख था।

इस श्रमण पुनरुत्यान युग या उत्तर वैदिक काल (१४००-६००-हैं प्) में एक ओर तो वैदिक यज्ञोंका कर्मकाण्ड बढ़ा और दूसरी ओर ज्ञान य तरा चित्रनकी एक नयी लहर लक्षित हुई। वैदिक मंत्रीको ऋक् यज्य माम और अयर्व नामक चार संहिताओं में समलित किया गया। चनपर जटिल गद्य भाष्य बनाये गये जिन्हें 'ब्र'ह्मण' ग्रन्य कहते हैं। एक ष्ट्रमरे प्रकारके भी भाष्य वने जो 'आरण्यक' कहलाते हैं क्योंकि वे वनॉमें ऋषियों-द्वारा रचे गये बताये जाते हैं। वैदेंकि ही कथचित् आश्रयसे एक दूमरे प्रकारका आध्यात्मिक साहित्य उदयमें आया जो रहम्यवादी होने अयवा बैठकर कहा जानेके कारण 'उपनिषद्' कहलाया। शिक्षा, ध्याकरण, छन्द, निरुवन, ज्योक्तिय और कल्प नामके छ वेदांगोका भी विकास हमा। इम धान्ति युगमें यज्ञोंके पूजा-पाठ एव क्रियावाण्डको खुझ त्रिस्तार दिया गया और सीघे सरल वेद मन्त्रोंके अर्थोको अत्यन्त दुम्ह एव जटिल वना दिया गया। कहा जाना है कि इसी कालमें परोक्षित्की पाँचवीं पीढीमें हस्तिनापुरके राजा अधिसीमकृष्णके समयमें नैनिपारण्यमें जब मनि लोग यक्ष पर रहे थे तो वहाँ व्यामरचित प्राचीन ब्राह्मणीय अनुभृतिक सम्रह या प्ाणको सूर्तोने सब प्रयम गाकर सुनाया या । इमीके आवारपर ईसवी सन्के प्रारम्भवे लगभग रामायण, महाभारत आदिकी तथा गुप्त कालमें प्रमुव हिन्दू पुगणों री रचना हुई।

दूमरो ओर यज्ञोंके कमकाण्ड और आडम्बरके विरुद्ध देशब्यापी विद्रोह हो रहा था। इनका मूल कारण अहिं आपधान एवं आब्यारिमक श्रमण बंदुरितरा वस्तीतर पृतिका प्रवास था। वैदेक्ताकर स्वीत्त सार्व है तपुर्वकर दिलाने एक स्वर कर तो थी। वस्त्रतेय वर्ष वेदोधीर वर्षते वस्त्रते वर्षत्व त्यार स्वरास वही प्रकार के बाद हुना शाह करण-के दिलाने के वर्ष वहूम रीनों कुपुरियो एक्सा है। बस्ते वर्षु होरे वर सार्वक्रिकी विकासी वसारित हाल बाहुक सी वक्त गाई करणां सहित्यांग व्यवस्थित सारित करणां कुप्तारों एवं बाह पर व्यवस्था व्यवसारको करणां कार्यों कुप्त निष्क बाहुकोरी क्षेत्रका पर वृत्यां

क्षमान इसी अहरता सनुभागी होता चना बता । इसके बैना अनुसार

को प्रस्कात बारवारागायके अनुसारी नहीं में या नहीं हुए में दैरिक

परकारावें-के ही बींड - कमकाब्द तथा बाहित दिनावा विशेष मीर क्षात्रसके बीज क्षोत्रमें सबै : इन्होंने जीपनिवरिक स्वरवणाइको बन्द रिद्ध । विदेश इतका केन्द्र या । इन्द्र आर्थि केरिक देवताओंके स्थानमें श्रांतिक विराप्ते संशास्ति वैदानश्च क्या निराकार-विशिवार साजर-समर ब्रह्मणी स्थापना हुई । पैरिक नहीं हो पूर्ण नवकी ब्रामा के पत्री । बारण-वर्धन वा बारमानुमृतिकी काम ब्रह्मान्य बद्धान्य स्था वृत्तवीतिका राजन इत्रेडनेंका निवड सम्मत्ता युविता सम-मानी-सर्वेदा निवपन तत-स्थान बद्धापर्व पढा बार्टिंग बर्ल्ल्ड्डल निक्रल ब्रमापि ना अस्त्रामेन्छा है परवास प्राप्त करनेका वरदेव दिशा आहे कहा । परमूतः जीवनिवर्तिक विचारपाद्यका चैत्र सम्मारणके बाच क्षता विकास सनुस्य है कि बहुवा दुवने बुनरेका अन हो चला है। सबेक क्यान्यहाँने हो निविध चैन रामानको एक मनन्त्र हाँ मिकतो है। इनये कोई क्लोड वडी कि क्या-नैरिकराजीन बीनानवरिक विभारवास क्य बुक्ते सनन बेल्हरिके पुरस्तानको हो सुबब है। वैश्विक एवं बावक-ब्रोहरीके बक्तनंत्रा वह एक पुंचर अवल वा । इन बक्तने निधी राज्यनाय वी रियो दैनिक माने किने वालेक शहर कोई प्रवास वहीं विकर्त । बस्तासार-

शासिक क्षेत्र है ।

रणको याज्ञिक्तिसिसे अरुचि हो गयी थी। वैदिक्षमं इतना जिट्छ एक साहम्बरपूर्ण बना टाला गया था कि वह लोकप्राह्म हो नहीं रह गया था। वह पने गने कित्यय वैदानुषायो प्राह्मण विद्वानों में ही सोमित होता चला गया। जनसाघारण या तो श्रमणोपासक था या प्रह्मवादो जनकोके उपनिषद् धर्मका अनुसर्वा, अयया इन दोनों के समन्त्रपक्षे जो सदा- चार एवं भिक्त प्रधान एक नवोन स्रोक्यमं सामान्यत अलक्ष्यरूपमें उदित हो रहा था उमीसे सन्तुष्ट था। वर्णाश्रम उपयस्या इस युगकी इस नवीन धाराकी एक प्रमुख विद्येषता थी।

इस युगके उवत श्रमणधर्म पुनस्त्यानके सर्वश्रयम पुरस्त्र वा बाईसर्वे तीर्थं कर नेमिनाय या अरिष्टनेमि थे। उनका जाम यदुविध्यों के सूरसेन जन-पदकी राजधानी शीरिपुर नानक नगरमें हुआ था। किन्तु उनकी माल्या- सहयामें ही यादवगण शीरिपुरका परित्याग करके पिरचभी समुद्रतटगर द्वारका नगरीमें जा बसे थे। वासुदेव कृष्ण इनके चचेरे माई थे। कृष्णने प्रवृत्तिका मार्ग अपनाया और नेमिनायने निवृत्तिका। चिरकाल तक बहिसा- धर्मका प्रचार करनके उपरात काठियावाहक गिरनार या कर्जयन्त पर्वतसे नेमिनायने निर्वाण प्रान्त किया था।

तीर्यंकर नेमिनायका प्रभाव विशेषकर पश्चिमी एय दक्षिणी भारतपर हुआ। दक्षिण भारतके विभिन्न मार्गोसे प्राप्त जैन तीर्यंकरोंकी प्राचीन मूर्त्तियोंमें नेमिनायकी प्रतिमाओंका बाहुत्य हैं, जी अकारण नहीं हैं। उत्तरापयके मध्यदेशमें उस समय वैदिक धर्म एव वैदिक क्षत्रियोंकी राज्यस्ताएँ ही सवल धों। कि तु महामारतके विनाधकारी युद्धने उक्त राज्यस्ताओंके साय-ही-साथ वैदिक धर्मकों भी वहीं निस्तेज कर दिया था। स्त्रय पाण्डवव पु अन्त समयमें नेमिनायके भवत हुए और उन्होंने दक्षिण भारतमें आकर जैन मुनियोंके रूपमें तप करके सद्गित लाभ की बतायी जाती है। महाराज कृष्ण और वलराम जो सत्कालीन राजनैतिक जगत्क प्रधान एव प्रभावशालों नेता थे, तीर्यंकर नेमिनाथके स्रावकोत्तम और अनुयायी थे। इन

श्रममुनाधके बनारणे वसागाव बीट बरादेवनें भी नमुन्नि मेंदूर्ण बाजिए में एक बार नियानात हो बया । बागावाली अनिवासी एउन mbed es in en ein 3 a aralamuenn geraf रह समय पुरश्यानको हिन प्रकार शास्त्रा सर्वेत्राची वर् आह बसर्व क्रिश का पुत्रा है।

बक्ते हुछ बएड रव भी इन्तिमब द्वित् वेतनावसी दैनिस्त निकामि संस्थानक न ये दिन्तु स्थव कि इतिशावकामकी प्राथमितक भीता ६ छ यात्री है ... के बे Gerer मराध्यातमुद्धके ब्रह्म सहस्र ब्रह्म क्षी है और यह दि काराज कृष्णको है उसे बहतारे बाई बन्देई नहीं किया बाता बहर रण प्राप्ती हुन्ता है लाऊ मात आई ती बंद सरिष्ट ने विदेश हैं निर्दर्शन है बर्दशान मा नका । बारण नहीं इ माना । बरतून प्रसिद्ध की पकार द्रां नर्फेप्रसारवयु पुरावरका द्रां पूर्वर, ब्रो बारनेट वर्षण द्वा वि

करों को बहिदार प्रभाव के को प्राप्तकात विद्यार्कशास की प्राप्तक

हुनानु साहि सरद और एव प्रामानिक विक्रानु वेजिनाय है ऐतिहासिक्यानें urbu eif und ceu mit auft untt marte Onte बाह्य बान्त निरंदर अर्थान्त्रपविदर्श रोक्षा वैद्यवंग्रीहिका नारणमञ्ज, बद्धानारतः मानवतः स्वन्य एवं मार्थयेवः पुराव मादि प्रविद्ध माधीन umita until unt aren femi & : राजना ही सही - बी-बीकर मेरियाचका बजार जारतके बाहर विदेशीयें भी पहुँचा महीन होता है। वर्षन शह मान 'शहरमान' से लियते हैं कि "बुम देना प्रचित होता है कि जाधीनशायमें बार बुद्ध का मैसली महानुस्य ge & gel auf aufene at wante & gut ffanje & &

निर्माण ही स्वेणिकोविया नियातियाके प्रथम श्रीवित स १ वोनियोके प्रथम को नामक देवता में ३ को जामनाथ विकासकारने १६ मार्च कर्त है है के बारताहिक द्वारान्य क्षांत्र प्रीवसानि काविकानाइक्ने जार्च एकं मार्चन रामपाउन प्रशासिक किया बढ़। बनके अनुनार बन्ध

मारतीय इतिहास : एक वडि

दानपत्रपर जो लेख अकित था उसका भाव यह है कि "सुमेरजातिमें उत्पन्न बाबुलके खिल्दियन सम्राट् नेबुचेदनजरने जो रेवानगर (काठियावाड) का अधिपति है यदुराजकी इस मूमि (द्वारका) में आकर रैवताचल (गिरनार) के स्वामी नेमिनाथकी भिवत की तथा उनकी सेवामें दान अपित किया।" दान पत्रपर उक्त पिक्चिमी एशियाई नरेशकी मुद्रा भी अकित है और उसका काल ई० पू० ११४० के लगभग अनुमान किया जाता है।

नेमिनायके उपरान्त उन्त ध्रमण पुनरु स्थान आन्दोळनके दूसरे महान् नेता तेईसर्वे तीर्थंकर पार्थ्वनाय थे। ये काशीके राजकुमार थे और उरग-वंशमें इनका जन्म हुआ था। यह वही वश था जिसमें इसी युगना ऐति-हासिक चक्रवर्ती सम्राट महादत्त हुआ था। डॉ॰ रायचीघरीके अनुसार काशी इस कालमें भारतका सर्वप्रमुख राज्य था और शतपथ ब्राह्मणये अनु-सार काशीके ये राजे वैदिकधमं और यशोंके विरोवी थे। तीर्थकर पार्वकी माताका नाम यामादेवी था और उनके पिता काशीनरेश महाराज अश्वसेन थे। प्राचीन बौद अनुध्रुतिमें इनका 'असमें नाममें उल्लेख हुआ है तथा महाभारत आदिमें भी अश्वसेन नामक एक प्रसिद्ध तत्कालीन नाग नरेशका उल्लेख मिलता है। पार्श्वका जम्म ई॰ पू॰ ८७७ में हुआ पा। ये वालप्रह्मचारी रहे।

वाल्यायस्थासे ही इनके हृदयमें ससार एव भोगोंके प्रति विराग तथा जोयमात्रके प्रति करणाका भाव था। तीस वर्षको अवस्थामें ही इन्हाने घरका त्याग करके वनकी राह छी। कुछ काल दुर्बर तपश्चरण करनेके फलस्वरूप इन्हें केवलज्ञान एव अहंन्त पदकी प्राप्ति हुई। तदनन्तर शेप जीवन इन्होंने देश-देशान्तरमें विहार करके धर्मका प्रचार करनेमें विताया। अन्तमें एक सौ वर्षको आयुर्ने ई० पू० ७७७ में इन्होंने विहार प्रदेशमें स्थित सम्मेदिशसर पर्वतसे निर्वाण छाम किया। वह पर्वत आज पर्यन्त पारसनाय पर्वतके नामसे विख्यात है। वरेली जिलेका प्राचीन अहिन्छत कारक रक्ता जार्नकावकी विविध करवायूर्वित हुएँ को व सर्ववेच्यार्थ विचित्र बाराज्य पर है। इरका पर्वे दाना पद्म स्वारण बाता है। बार इसमें विकास प्रतिपादि पाना वस पूर्व विक्रेड करर बारायार्थ सारकावे पूरण पाने कार्यों है। इसमी है विद्यार्थिकावों कर कियों में सारकावे पूरण पाने वहीं है। इसमी है व्यारण पाने वहां कियों हुआ है कि प्रमाद में बैदगारिक प्रार्थित के सारवा रखने-कम पान कि वर्षों पूर्वार्थी क्रिकेट ऐसिहासिक परिवेद साहद है करा करके सांकारण के साममाने हुए कार्यों कहा पा करवा।

ग्रीनेक पानंदा कार वार-वीर्यका कार्यनायुक्त कार्यन्त द्वार प्रकार प्रकार प्रकार कार्यन्त कार्यन प्रकार कार्यन विकार कार्य द्वार प्रकार प्रकार प्रकार कार्य कार्य

करहीं, परिवर्ष समय गॉनक्के ब्रांत्यकारी गरेंच करवीं, गो ऐके-ग्रांतिक व्यक्ति है। वे तीवंदर चलके तीवंदी में करवा हुए वे जीत क्योंकि कामात कर्मा कर कर्मा कर विश्व की एउस्सावना स्थाप कर केन मूर्तिक करने क्योंके क्यांत्र को बीर क्यूक्ति प्राप्त के क्यांत्र करते हैं। तैयहरू मानेशी दुष्पानीन तम्ब दुष्पतात्त्वक विश्वानी तम्ब क्यांत्र करते अनुमुति प्रमाणित होतो है। इनके अतिरिक्त पाञ्चाल नरेश दुर्मुख या द्विमुख, विदर्भ नरेश भाम और गान्यार नरेश नागजित या नागाति, तीर्थ-कर पार्श्वके अनुपायी अप तत्कालीन नरेश थे।

डां॰ जाल चारपेण्टियरके अनुसार 'जैनधर्मके मूल सिद्धान्तोंके प्रमुख तत्त्व महावीरसे बहुत पूर्व, पास्वनायके समयसे ही व्यवस्थित रहे आये प्रतीत होते हैं। प्रो॰ हर्म्सवयके अनुसार गौनमबुद्धके समयसे पब ही पार्वनाय-द्वारा स्यापित जैनसप, जो निर्प्रन्य मघ कहलाता या, एक विधिवत सुमगठित घानिक सम्प्रदाय था। प्रो० रामप्रसाद चाँदका कथन है कि 'यह आमतौरपर विश्वास किया जाता है कि महावोरसे पहले भी जैन साथ विद्यमान थे जो कि पादर्वनाय द्वारा स्थापित सबसे सम्बन्धित थे। उनके अपने चेंत्य भी थे। 'डॉ॰ विमलवरण लाहा भी इस तथ्यकी पुष्टि करते हैं और कहते हैं कि महावीरके उदयके पूर्व भी वह धर्म जिसके कि वे अन्तिम उपदेशक ये वैशाली तथा उसके आस-पासके प्रदेशोंमें अपने किसी पूर्वरूपमें प्रचलित रहता रहा प्रतीत होता है। ऐसा प्रतीत, होता है कि कमसे कम उत्तरी एव पूर्वी भारतके कितने ही क्षतिय जन. जिनमें कि वैशालीनिवासियोकी प्रमुवता थी, पारवेनाय-द्वारा स्यापित एव प्रचारित धर्मके अनुयायी थे। आचाराग सुत्र आदिसे पता चलता है कि महावीरके माता-पिता पास्वके उपासक एव श्रमणींके अनुयायो थे। इसी प्रकार प्रो० जयचाद विद्यालकारका भी क्यन है कि अपर्ववेदमें भी जिन बारवाँका उल्लेख है वे अहीता और चैरयोके जपासक थे। ये अर्हत और उनक चैरय वृद्धके समयके बहुत पहल्से विद्यमान थे। लमी तक आधुनिक पर्यालोचकोने केवल तीर्यंकर पाववकी ही ऐतिहा-सिकता स्वीकार की है। अन्य पूर्ववर्ती तीर्यंकरोंके वृत्तान्त पौराणिक गायाओंमें इतने उलझे हुए हैं कि उनका अमो तक पुनर्निर्माण नहीं हो पापा । तथापि इस बातक निश्चित प्रमाण है कि महावोर और वदके पहले भी भारतवपमें वैदिक धर्मसे सर्वेषा भिन्न धर्म विद्यमान थे।'

स्ति मी अपनु इस बारहे थे इस व किन्ते हैं कि नार्वेकी रचन भिष्या के बी बरे १ । बी बीनने नपूर ८५ ई में साम बीनमारिक कोनाहर्ट ने बाब्ध बारन वृत्र करनवे क त्या का कि शाकान् न कीन्य-हारा बीच वर्षे प्रवासके बहुत वृद्ध बर्गणीत्याय दशके निम्मान्त्रमणी पर्वे paran at i ar fait ihnene ment angebrait ang meret antern en ica et are er ele ante e ! met el बारा ब्र'बप क ते हैं. बारा व अर्थक बार्य में हैंव. नवा स्थाप कप बई बार्यान तंत्रीय देश राज्य को का हो। यह रखन व रवेंगा ना औ यीप काब का । बार्चपुर चन्नः कुनारः बन्न प्रश्यवेद्यवे बार्वनावका कन्न हुना बाब प्रामीमार परमा असामा दबसाबा । अन् तर्वे र सार्वे बालपा बोपो से और सम्बद्ध आपने जीप ताल प्रशासन है भी मेरिय वै । बारवर्गण्याका विकारिय जन्म कॅल्पिका और बाइलाना का कीर बाबरत्या इसे बाबानार - धे वसी ई में की दिला हैं स्वानि हम क्षत्र मी बाजन क्षा नाम कर पुर निक्ताने बुनानी वादिनीने हन नगरने १६ क्या निकास बाज देख व । सन्दर दुवशा व छ वरवावना है कि महाराष्ट्र पुर को बरशाधिकार के लावा सबस समाहत्व, बाला मारि नवरोने बैनवन हर्वान्त या । ६४-५०ी बना है व वे हीनेशके मुखरी र्रातान के बनक है तिरावनने बाले बन्दने कुछ हैने बारनीय बर्बका बन्देश विश्व है जिनमें बर्व प्रशास्त्र योगाहा योज्य या और जिन्हें जनवासी मात्र मधर्मा है से सू ५८ में बलब बुशना दार्चनिक देवेदीएक वो स्वय महाशार मीर मुखना कमनाबीन बा, बीवान्याचे कुन्यंत्व दुवें बारानकों बरा वर्षावद्वात्रवे शिरांत करता वा वर्ष प्रवासी बीचीं मा तथा मां भारत में दिश्त परमें का करोब देशा का अहाँ तक कि पन्तिम जनस्थिताको स्रो मार्नि क कुन्द्रमे समस्य सामग्र मा । अस्तर सङ् भी धारा मा कि यह साले पूर सन्तांता मुत्तान्त और तन्तिने बच्च बकता या । सपुरविवाने इव बन्द्रशासके दिवारक बार्शाविक्त वर बार्शाविक मालांच इनिहास दक्ष रहि ाधनिक कहलाते थे। आत्माके समझ ये देहको हेय और नाशवान समझते । उपरोक्त विचारोका वौद्धधर्म या श्राह्मण धर्मसे कोई सादृश्य नहीं है तब कि वे जैन धर्मके साथ अद्भुत सादृश्य रखते हैं। और क्योंकि ये गायताएँ सुदूर यूनान एव एशिया माइनरमें उस कालमें प्रचलित थीं जब कि महावोर और दुद्ध अपने-अपने धर्मीका प्रचार प्रारम्म ही कर रहे थे अस पैथेगोरस आदि पाइवनायके उपदेशोंसे प्रभावित रहे प्रतीत होते हैं।

मेजर जनरल फ़र्लांगका कथन है कि 'लगमग १५०० से ८०० ई० प्० पर्यन्त, बल्कि उसके बहुत पूर्व अनिष्चित कालसे सम्पूर्ण उत्तर, पश्चिम तथा मध्यभारतमें तूरानियोका जिन्हें सुविधाके लिए द्रविष्ठ कहा जाता है, प्रमुख रहता रहा था। उनमें वृक्ष, नाग, लिंग आदिकी पूजा प्रचलित थी. किन्तु उसके साथ ही-साथ उस कालमें "सम्पूर्ण उत्तर भारतमें एक ऐसा अति व्यवस्थित, दार्शनिक, सदाचार एव तप प्रधान धर्म, अर्थात् जैनधर्म, अवस्थित या जिसके आधारसे ही ब्राह्मण एव बौदादि धर्मीके सन्यास-मार्ग वादमें विकमित हुए। आर्थोक गगा तट क्या सरस्वती तटपर पहुँचनेके पूर्व हो लगभग बाईस प्रमुख सत्त अथवा तीर्यंकर जैनोंको धर्मीपदेश दे चुके थे। उनके उपरान्त ८वीं-९वी शती ई० पू० में २३वें तीर्थकर पार्ख हुए और उहें अपने उन समस्त पूर्व तीर्थं करोका अथवा पवित्र ऋपियोका ज्ञान या जो वहे-बहे समयान्तरोंको लिये हुए पहले हो चुके थे. उन्हें उन अनेक वर्मशास्त्रींका भी ज्ञान था जो प्राचीन होनेके कारण पूर्व या पुराण कहलाते थे और जो सुदोर्घ कालसे मान्य मुनियों, वानप्रस्यों या वनवासी सामुओकी परम्परामें भौक्षिक द्वारस प्रवाहित होते वा रहे थे।'

कुछ लोग पार्स्वनाथके घर्मको चातुर्याम घर्म भी कहते हैं और इसका कारण यह बताया जाता है कि उनके द्वारा उपदेशित महाव्रतोंमें ब्रह्मचर्य व्रतको गणना नहीं यो, पेवल खहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह ही ये और भगवान् महावोरने उनमें ब्रह्मचर्यको सम्मिलित करके द्रतोको सख्या पाँच कर दो। कुछ आधुनिक बिद्धान् अमवश यह भी कपन कर दते हैं कि वर्तमान वरेतास नगराम नार्गिश विकासमार है क्यांनि मार्गिश वर्षाव की वर्ष कि विकास नगराम नार्गिश मार्गिश मार्गिश कि वर्ष कि वर्ष कि वर्ष की वर्ष मार्गिश कि वर्ष के हैं कि वर्ष कि वर्ष कर के हैं में है कि वर्ष के कि वर्

क्की बसामी है पू में बहुंचा और इन बसर बसके बसामुख कैया रेश्वे तीर्वकर निर्वाण बागुपर धर्मबाण बहाबीर से । बहाबीरपुर वार्तिक श्रम्पूर्य एक अवसूत्र जान्ति करशीवसूत्र हवं शास्त्रिक विवास बाहुरदर्ग वर वा । पारतकारी ही नहीं बनार कार बंगारी हार बार्टि वर्षं नववेतवाची सहरकारत थी। चीनवें काञ्चन और काडीले देशमने बरकुरत बुनामने वैवेदीरत दिश्वततीनमें मुना द्वारादि अवेद प्रकार विचारक वायनिक एवं वनवर्शक छाताबीन क्रम्य बन्त्के विभिन्न भागोपे मन्त्रे-मन्त्रे यह एवं निभार्तेना प्रचार कर रहे वे और नवाचे बनदायालयो तात दात कर रहे में । इन क्षमके क्योंकवी एक कारान्य विधेयका वह यो कि सानवके गहरत और वस्त्रपारवर, को कि बनव संस्कृतिकी बग्मनात विश्वेषताएँ की व्यक्तिक बस्त विद्या जाता का । दश्यं वारतपर्वते स्पेतकेनु, वहावक बाह्यदास्य वार्टि पूर्वी ब्रह्मान जावि एवं बनिय निवास् जीतनियक्ति जनसम्बद्धाः प्रचार कर रहे है ? पनियमें क्रियासम्बर्ध कर्मन युद्ध कीत वर्ष वर्ग सेद्रोवे सूच बाहिसकी रचना कर रहे थे। वेदोपर निर्मुक्त आदि टीकाएँ भी रची जा रही थीं। साथ हो कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनो आदि ऋषि सास्य, वैशेषिक, न्याय. मीमांसा. योग बादि पह्दशनोंका विकास कर रहे थे। पह्वेदागो को भी व्यवस्थित रूप दिया जा रहा था और उनके अन्तर्गत सर्क, छन्द, व्याकरण, अलकार, ज्योतिप आदि तथा उपांगके रूपमें आयुर्वेद प्रमृति लोकिक विद्याओका सुजन भी प्रारम्भ हो रहा था। वानप्रस्य आग्रम एव प्रयुज्याका तथा विद्याभ्यास, साहित्य साधना, तपदचर्या एव तत्त्वचिन्तनका फोर वेदानुषायी समाजमें भी बढ रहा था। दूसरी बोर श्रमण परम्परामें यह लोकश्रुति जोरोंपर थी कि इस कालमें अन्तिम तीर्थंकरके रूपमें एक महापुरुप जन्म लेगा। अतएव उवत परम्पराके अनेक विचारक एवं सुधारक अपने-आपको तीर्थकर घोषित करके अपने-अपने मन्तव्योका प्रचार करने लगे । मक्खिलगोशाल, पूरण कश्यप, पकुष कात्यायन, स्रजित केशकम्बलिन, सजय बेलट्रिपुत्त, शाष्यमुनि गौतमबुद्ध, निर्फ्रेय ज्ञातपुत्र महाबीर इत्यादि व्यवितयोने यह दावा किया। बौद्ध अनुम्नुतिमें चपरोक्त (बुद्धके अतिरिक्त) छह तत्कालीन तीर्थकाका उल्लेख हैं। जैन अनुश्रुतिमें भी इन विभिन्न एकान्तिक विचारकोका उल्लेख है। उससे तो यह भी पता चलता है कि उस कालमें छोटे बढे मिलाकर कुल ३६३ 'पापंड' या घामिक सम्प्रदाय प्रचलित हो रहे घे जिनमें उपयुंतिक खित द्राह्मण एव श्रमण विचारक और उनके मन्तव्य प्रमुख थे। सदाचारकी इस प्रवल लहरकी प्रतिक्रियाके रूपमें उच्छ खल एव नास्तिक लोकायत या चार्वाक मत-जैसे भौतिकवादी मार्गका प्रचार भी प्राय उसी कालमें हुआ जो अनेक तथा अधिक विकृत रूपों एवं गुप्त सम्प्रदायोंके रूपमें चिरकाल तक बना रहा । गोशालका आजीवक सम्प्रदाय भी मध्यकालके प्रारम्भके कुछ पूर्व सक चलता रहा। ब्राह्मण परम्पराके पहुदर्शन और वैदिक एव ु ... उपनिषदिक अन्य विवारघाराएँ भो स्वतन्त्र सम्प्रदायोंकारूप तो न स्रे सकीं, किन्तु उन सबके समन्वयसे तथा श्रमण विचारी एव मान्यताओं की त्ती बाजिक भारते जारावान्त् भागे हुए वाकाकार्य एक ऐसे परितरण वायान्य पर्वता वाय एवं विकास हुवा यो जानी अनेतरिक बहुवा सारत विरोधी पानकार्यो किसानी विकासी असानी वर्ष वावती आरिके पान ओक्टीश एवं उत्पन्त होता वक्षा क्या पात्री चन्न किसानी किसे बहुबातका यह जातार प्रयान वर्ष वर्ष पात्र। उत्पादीन वालीं विरोध अभिन्योव तीयत वृद्ध-वास्त्र वेत्यांत्रील वे

प्रचारित बीज वर्ग है। धनवींने बनुवानी करिवनरपुत्रे धारमांची बतवॉर्में बत्यन्त राजा युक्तासको कृतः निकाय गीवन ऐनीः नदान् निव्^{ति} में कि जिल्लो क्षार लेगात्वर नहरी नहीं । मालावरनाये ही कान्य हुरर वेंगारके हुनके प्रवीवृत का । वरवाकींके आवहते करोंने अवीवध नारफ एक गूनरोंके बान निनाह थी किया मीर करके राहुक नानक द^क पुत्र जो बरतन हुवा । फिन्तु बन्छा ली पुत्र राजनाव बारिया की वर्ने श्रीवकर न रख बका और वक श्रीवर्ण ने करवारका स्थाय करके करनहीं लोजों चल स्थि। यनभ परान्त्यमें कनका क्रम हुना का किन्द्र वसमें भी बस समय मैनवर्गके समितिका साथ समेक विशिक्त विचार भारत्यें दर्ज करनायदान प्रशस्ति हो रहे थे। सक्ष्मार भीताने दर्जे बाद एक कई मार्वीक प्रशेष क्याने अवकन्तन किया। कुछ दिन वे उन्हर्न<u>री</u> मानायो रह वेंग बाबुरे भी विश्व रहे। स्वयं बन्धिमनिकार भारि प्राचीन बीक चर्चींते स्पष्ट है कि कसूने बैनाबार एवं तपस्यरण का सम्बाह्य किया था। श्राष्ट्रक क्रम्पराधि की कई ब्रकारके साबुनॉर्ड र्वेडर्ग क्षे बनुसरम क्ष्मीन रिया। रिन्तु द्वितीये वी क्ष्मरी क्स्मीट महर्दि। नीई मलें बच्चें बर्धन बैचा हो बोर्च वृति सरक सबदा ध्येपके प्रतिपृष्ट ? अन्तर्ने भरा नगरने बाहर एक बीएनके मुलके तीने बेडे हुए कर्ने नीवि सार्च हुई बीर क्वेंने बाने-बारशे बुद्ध बोबित कर दिना। ने तबाना पारममुमि बादि नार्नोते जी प्रतिश्च हुए। बाले हारा बीज विशाव करे देव नालेकी बन्होंने बार्न बहानिक्यार्न का सम्बन्धार्मका नाम दिया। दाशिनक एव तास्त्रिक उल्झनोंमें उन्होंने उल्झना नहीं घाहा। जो उन्हें उचित जैंचा ऐसे सदाचारके उपदेश-द्वारा उन्होंने ससारी मनुष्योंके दुष्य निवारणका प्रयत्न किया। बोधि प्राप्त हानेके उपरान्त उन्होंने सारि-पृत्र मौद्गलायन, आनंद आदि कुछ व्यक्तियोंको अपना शिष्य और साधी बनावा। वाराणमीके निकट सारनाथ (ऋषिपत्तनके) मृगदावमें उन्होंने पहले पहल अपना उपदेश दिवा। कुछ सत्कालीन राजाओने भी उहें आध्यय दिया।

उनकी मृत्युके उपरान्त उनके भिक्षुसघमें मतभेद उताप्र हुए । उनके मौसिक उपदेशका शिष्योंने त्रिपिटकोक रूपमें वर्गीकरण भी किया। उनके कुछ उत्माही बिष्य उनके धर्ममा प्रचार दुवता एव गुश्यलताके साथ करते रहे। फिर भी सम्राट् बशोकके समय तक बुद धर्मकी स्थिति शौबाडोल हो रही। अशोकने बुद्ध घम अगोकार किया या नहीं, इसमें मतभेद है, किन्तु वालान्तरवी विदेशी धीद अनुश्रुति उसे बीद्धधमका सर्वमहान् सरक्षक घोषित करती है। कमसे क्म इस बातमें कोई सादेह नहीं कि बदोकके शासन कालमें ही बोद्ध मधका पार्टलिपुत्रमें जो सम्मेलन हुआ उमीमें यह निर्णय किया गया कि बौद्ध धर्मके रक्षार्थ एव प्रचारार्थ बौद भिक्षुत्रोंको विदेशोंमें भी जाना चाहिए। अस्तु, अनेक बौद्ध प्रचारक तिस्वत, बर्मी, मिहल तथा मध्य एशिया आदिको आर दिना फिसी वाधा और कप्टकी परवा किय चले गये और उन्होंने वहाँ बौद्ध धर्मका प्रचार किया। चीन और तदनन्तर जापानमें भी थोडे समय पहनात से पहेंच गमे। स्वय भारतमें आनेवाले गूनानी, शक्, पह्नय, कृपाण, हण आदि विदेशी राजाआमें-से भी अनेकने इस धमको प्रोत्साहन दिया। भारतीय-यवन मिनेण्डर और कृपाण सम्राट् कनिष्कवा नाम बौद्ध धमके प्रिमिद्ध समर्थकोमें लिया जाता है। वादके भारतीय नरेशोंमें हपवर्धन बीर बगालके पालवशी नरेश बौद्ध धमके अनुपायी एवं प्रवल पोपक थे। किन्तु हर्ष (०वीं घताब्दी) के उपरान्त ही बौद्धधर्म भारतवपसे त्म बेरके ताब दिरोदिन होने नमा और (१९से-१९री प्राथमी वह रि देवों उपका ताब ताब देन ही बचा। हिन्तु मान ही चीन आंके, जाते, लंधा दिरा-दिवा पूर्वी दिरानुत आर्थ क्षेत्र दिरोदी बद्ध में वर्ष देने कोटपर्न है। नया। जात्र तंत्राओं अनवंत्रामा वहने की जात तरी बर्चना जनुमती है और वही जात्म बद्दामा दूरते वस्त्र संवादिः कर्षनायों कर्मन स्तुत्त्र तो अन्त का वर्षोदी के आगी है। यह त्यां में क्षेत्र लोड क्षेत्र क्षांत्र कर्मन वर्षोदी के आगी है। यह त्यां में क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षांत्र कर्मन वर्षोदी क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र कर्मन वर्षोदी क्षेत्र क्षेत

की आहें के क्यूंति पर कींग का कांके करवार में बर्ग भार कोई नीतें आप हों जीर बीपरके वेच पर वर्ष कहाने वर्ष अपरांते रिकार । त्र कुके मानुसर्थि वर्षतिक बीम्ब्रेगिय राज्य वृद्धे के वें बावारतीय प्रवास मार्गीयक था। त्रवं नुस्न करते देखते अवाध्य में भीर वचरा करार बार के । त्रवस परस्तातें तिक बीचता तीर्वकरों देशेंदी मार्गियक्षात्री के इस्वेद्याम स्वासीत् हैं ने सुक्ताति प्रकार मंत्रा के मार्ग प्रवासी के इस्वेद्याम स्वासीत् हैं ने सुक्ताति करानार्थे स्वासीत क्यों करते प्रवास अस्तार हमार हम्म क्यां करते किया वर्षत्व तीर्वकरों करते स्वासीत् अपना हमा प्रवास स्वास्त

पाना है और पन बबरे परनार बहुत पनते हैं। बात जापूर्तक पितानी की त्यापनती बहुत नातेन हैं है जूड निशीचके तिर्विक सामूर्तिन तम बहुआप नाते कहा है है पुरति पत्ती है। बुदबी बायू ८ गरीती की बता जावा पता है है पुरति में सामा करता है। अवस्ता है नह समय कुछ कालके छिए भले हो कुछ विवादप्रस्त रहो हो किन्तु मगवीर-द्वारा धर्मचक्र प्रवर्तनके चपरान्त उसमें किसीकी कोई सन्देह नहीं रहा। उन्होंने न किसी नवीन घर्मका प्रचार करनेवाला दावा किया, न कोई नवोन मार्ग खोज निकाला, न किसी देवी-देवता या देवी अथवा गुप्त शक्तिका अध्यय लिया और न किसी राजा महाराजाको ही सहायता चाही । चन्होने एक सामान्य मनुष्यके रूपमें जन्म लिया, एक सामान्य समारी मनुष्यके रूपमें बाल्यावस्था एवं कुमारकाल व्यत्तीत किये, और स्व पुरुषार्थ द्वारा अपनी आत्माको उन्नतिके चरम शिखरपर पहुँचा दिया। आतम-कल्याणके चिर-प्रचलित एव तीर्थंकरों-द्वारा प्रणीत मार्गका उन्होंने अपने जीवनमें शुद्धतम एव श्रेष्टतम रूपमे अवलम्बन करके उसका सौचित्य परितार्थ किया था और लोक-कल्याणार्थ उसका उपदेश दिया था। यही महावीरको सबसे वडी विशेषता थी और इसीके कारण विश्वके महापुरुषो-के उस महायुगमें भी वह अपना विशिष्ट स्थान रखते थे। आज भी, न केवल वह जैनधर्मके इतिहासके सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति है बरन् प्राचीन भारतके इतिहासमें तथा विश्वके धर्मोंके इतिहासमें भी उनका एक महस्य-पूर्ण स्यान है। जैनधर्मका तो जो कुछ वतमान रूप है तथा उनके गत ढाई सहस्र वर्षीका जो कुछ इतिहास एव संस्कृति है, उस सबका सर्वाधिक श्रेय अन्तिम तीर्थंकर मगवान् महावीरको ही है।

चैत शुक्ल १३ (२० मार्च धन् ईसयो पूर्व ५९९) के दिन प्राचीन मारसके यात्य क्षत्रियों के प्रसिद्ध विष्क्रसम्य नामक गणतन्त्रके अन्तर्गत कुण्डप्राम (क्षत्रिय कुण्ड) के ज्ञासूक वशी कारपप गोत्री क्षत्रिय नेता सिद्धार्थको पत्नी त्रिशला देवीने वर्धमान महावीरको जन्म दिया था। यह कुण्डप्राम जक्त विज्ञसम्बक्ती प्रधान राजधानी वैशाली (जिसको पहचान विहार प्रदेशमें मुक्तकरपुर जिलेके बनाढ़ नामक स्यानसे को गयी है)

के निकट स्थित था। उस्त सपके अध्यक्ष मैशालोके लिच्छवी राजा

प्राचीन युग-प्रथम पाद

चेटक बहानीरके मातामहत्रने । चितृकुकरी अपेकाने महानीर क्रानूच रूप धनमा नारमुख और नज्ञान भी नड्डाले ने स्वक्ति आधुनुसारी बरेसावे ने किम्प्रदिक एक मैदाकिक वरकार्य प्रकृत जाना विज्ञका कारकार्य प्रियक्तरियों निवेद्वरता जो नदकाती दी दन नारम में रिदेश या विवेद्वरिय त्री रहमाने और अधिनीय, रस्तिशीर शहाबार वर्धनाय जार्थ निर्म बित नाम मा बफावियों इनों समर-समन्तर विक्र-विक्र कारबंदि प्राप्त हुई। बहाधन बैटकरे दन दुन वे जिनमेन्द्रे कोई दन विह सबना विह्ना वरिजयको प्रसिद्ध प्रथान केनापद्धि के बदाराज चेटकरी देश वार्त पुरियोगै-वे चेडमा नवस्वरेख शेखिक दिम्बदारके साथ दिवाही की, हुतरी नीकामीनरेव पदानीतके पाव, बीतरी बचार्च वेपके शाम क्यारक ताय जीवी निवृत्तीयीरण सहाराज जरवनके ताथ और श्रीवरी सवस्ति-गरेच परकाचोतक बाब निवाही थी । जग्न ही क्षेत्रा जीर भन्दता वाल-सहाचारियी पुरारी रहीं और महातीरके वस्त्रेक्क कार्रिका वर्ती ! चैरपण बनस्य चरिवार महाबीत्का लक्ता वा । बचके विशिक्ष बावाण मी जो जन्मे समयके प्रक्रिय गरेश में महामोरके प्रका रहे । सन्देश सर्विः रिनन परमके राजा व्यवस्थान जिल्लानीय जिल्लान को बहाबीरके कुछ भी ने, नामती-नरेप प्रतेतिन्तु, समुगके राज्य श्रीतीतम हैशांकानरेन बीनन्तर, ग्रेरक्यूर-गरेंग्र दिश्यात बळावपुरके राजा विजयकेन । राजान-वरेम का क्या इमितनापुरका राजा दरवादि क्योब तरकार्यान राजे-महाराजे महानोरके बारेबडे प्रवास्ति हुए बातावे बाते हैं। पॉलिक्ट्रोस क्लिक्ट्रूपी फल्मा बंदीशके बाब ब्रह्मशेरने दिसाईफी

वर्णिकारिया जिलावृत्ती व्याना वर्णमार्थ सह कारोशिक विराधि वर्ष पार्ची थी। एवं राप्तरायके समुवार करणा बहु बिराह्म हुआ दी वर्षी वर्षीर उपने एक नप्तामा की कमा हुआ था। किन्नु प्रवास विस्तु आरस्के ही जीगान्देहन्त्रीयोक्ति निराम या और बोदपा वरुशम् करनेही वस्तरी व्यानमार प्यानिक प्रकृत सेका वा शेरके समुप में।

उत्कट भावना था। अतएव घरवालोके आग्रहको उन्हाने अमान किया और तीन वर्षको आयुमे मार्गशीर्प कृष्ण दशमी (११ नवस्वर, ई० पू० ५७०) के दिन इम बाल्प्रहाचारी राजकुमारने समस्त नासारिश बैभवको ठात मार बनकी राह ली। बारह वर्ष पर्यात चन्होंने दुईर तपम्चरण विचा और इस प्रकार अपनी आत्मानो सब प्रकारकी कमन्त्रालिमात गुद्ध कप पनित्र वना लिया । इम वीचमे न उन्हाने उपदेश दिया और न शिष्य वनाये तथा अनेक उपमग एव परीपह सहन किये। अन्तमें वयालीस वपनी आयुमें वैशाग शुक्ला दशमी (२६ अप्रैल, ई० पू० ५५७) के दिन बिहार प्रान्तम जम्भक ग्रामके बाहर ऋजुकूला नदीके सटपर एक झालवक्षक नीचे घ्यानस्य वठे हुए महायोगको यवलज्ञानको प्राप्ति हुई-और वे सवज्ञ. सबदर्शी, अहत परमात्मा हा गये। वहाँसे चलकर वे राजगृह अपरनाम पचरौलपुरक बाहर स्थित विपुलाचल पवनपर पहुँचे और उसी वर्षकी श्रावण कृष्ण प्रतिपदाके दिन प्रात काल उनन पर्वतप उनकी समवशरण सभा जुडी और उनका सर्वप्रथम उपदश सर्वप्राह्य अपमागधी नामक लोकमापामे हुआ, यही उनका धर्मचक्रप्रवर्तन या। मगध सम्राट् विम्यमार-श्रेणिक उनका सवप्रमुख श्रोता था। इन्द्रभृति, गौतम, अग्निभृति, वायुभृति, आयञ्यक्त, सुधम, मण्डिकपुत्र, मौर्यपुत्र, अकम्पित. अचल, मैत्रेय और कौण्डिन्यगोत्री प्रभाम उनके ग्यारह गणवर या प्रधान शिष्य थे जिनकी अध्यक्षतामे अनेक श्रमण मुनियांके गण या सघ मगठित हुए । महामती चन्दना उनके आर्थिका मधकी अध्यक्षा थी और मगधकी सम्प्राजी चेलना श्राविका सघनी नेत्री थी। इस प्रकार मुनि-आयिता-श्रावक-श्राविका रूप चतुविध सघके रूपमे सुव्यवस्थित जनसमुदायको विना किसी यण, वर्ग, जाति, लिंग आदिके भेदमावके महावीरने अपना उपदेश दिया । तीम वप पयन्त विभिन्न देश-दशान्तरमे विहार करके उन्हाने लोकको मिवन-मा माग दिखाया । पूर्वोक्त सभी प्रसिद्ध राज्यो और उनकी राजधानियोमें उनका विहार हुआ और तत्कालीन प्रसिद्ध राजा-महाराजाओंमें ने अधि- नांच करने नारेक्टर प्राथित हुए। बनानेचे कोन्हेरे तेन पूर्व करने बारत्यास्त्र किया। बनाने वर्णकोच्या सार तीत्रापूर्व करनोंने हार्यने कृत्येर रार्च हैं सार्वा स्त्री सुन्ध के सार्वास्त्र हार्दिक्ता कृत्यत्त्र बना। बनावे कार्तिक कृत्य बारत्यास्त्र पंत्रकार, १५ नक्पूरर () १९७ मा विकारने १००० तमा बक्यून (), के बारतास्त्र होर्यने सुने बनाव परार्थने कारत्यकेशांचे कहा निका होत्यास्त्र स्त्राम

पूर्व नामा प्राप्त कामा क्यांचा के बात निकार द्वीवाचार स्थाव प्रस्थ प्राप्त स्थाव किया। याचापा राज्यकीत राज्य स्थावीत स्थाव सामा स्थावीत स्थाव स्थावीत राज्य स्थावीत स्थाव स्थावीत स्थाव स्थावीत स्थाव स्थावीत स्थावी

ध्यानीरके धीरणकार्ज हैं। वर्णके लग्यन पीर स्वाव नाम जी ही सो में को बारें हाए मुम्बरीसण जुनिस बार्ज करात वी 'ने स्थाप लग्नाचारी सम्बद्धानी ने पाने मुक्केंटे निकला का' -मारिकामोर्ज बच्चे नामें क्यू बारिकामें स्थापना वार्तिका । साध्यप्ति हास स्वीक स्वाचित्यानी स्वाच्याचे से साध्यप्ति की संस्थापन हिंद्या ज्यादीन बार्जि स्थापित स्वोच्यान के । इसके मिर्ग संस्थापन हिंद्या ज्यादीन बार्जि स्थापित स्थापन के । इसके मिर्ग

हुई । सीचेन्द्रर बहुतरीरका विदाह करकन विद् मा । इक अन्य नंदन प्रदेश

बनके ही भारते वर्षमानक बढकारा ।

भी राज्यार, राश्क्या चरकोज सारि देखीमें उनके बरन से। इनके मिर्मा क्रिक स्थानि एको मिर्मा क्रिक स्थानि एको मिर्मा क्रिक स्थानि एको मिर्मा क्रिक स्थानि क्रिक स्थानि क्रिक स्थानिक क्रिक स्थानिक स्थानि

15

दृष्टिपोंमे महावीरने दिया उनना सम्मयनया अन्य किनी धर्मापदेशने नहीं दिया। जैन धर्मको उनका अन्तिम विक्मित रूप देनेका थेय अन्तिम तीर्थकर महावीरको ही है।

महाबीरके निर्वाणीपरान्त जैन नयका नायकत्व उनके प्रधान गणघर इन्द्रम्ति गौतमको प्राप्त हुआ। महावीरका शिष्य हानेके पूर्व वह एक महान् वेदशास्त्रज्ञ प्रकाण्ड ब्राह्मण पण्डित ये। महावीर्ये उपदेशोको स्रृंखला-वद, व्यवस्थित एव वर्गीरत रूपमें मकल्टित करनेका श्रेय इन्होंको है। ये बौद्धधर्म प्रवतक गौतम वृद्ध एवं यायसूत्रकार अक्षयपाद गौतमके ममसामियक होते हुए भी उन दोनोंसे भिन ध्यिक है। ये भी अहत मेवली ये और महाबीर मवत् १२ (ई० पू० ५१५) में निर्वाणको प्राप्त हुए । इनके परचात् सुधर्माचार्य मधनायक हुए । यह भी अहत चेत्रकी थे और म० न० २४ (ई० पू० ५०३) में निर्वाणको प्राप्त हुए । तत्परचान जम्बुस्वामा जैनसमके नायक हुए। ये पम्पाके एक कोट्यामीश श्रेष्टिके पुत्र ये और महाबोरके प्रभावते उनके शिष्य हो गर्म ये। जैन मृतिके म्लमें मत्रानगरके चौरासी नामक म्यानपर इन्होंने तपस्चरण किया था। म० स०६२ (ई० पू० ४६५) में जम्बूम्बामीको मीक्ष हुआ। एक अनुश्रुतिक अनुसार मधुराके चौरासी क्षेत्रसे ही इनका निर्वाण हुआ किन्तु एक अन्य मान्यताके अनुसार राजगृहके विपुलाचलपर यह घटना घटो थी। महावीरको शिष्य-परम्परामें जम्बुस्वामी अन्तिम वेवली थे। मयुरा नगर क्षोर शूरसेन देशमें इनके द्वारा जैन धर्मका अत्यधिक प्रचार हुआ । इनके पश्चान् विष्णुकुमार, निन्दिमित्र, अपराजित, गोयर्दन लोर ् भद्रवाहने क्रमश मधका नेतृत्व किया। ये पौचा ही श्रुतकेवली थे वर्घात् इन्हें सम्पूर्ण श्रुतका यथावत् ज्ञान था । इनमें-से अन्तिम श्रुतकेवली नद्रवाहका मृत्यू म० म० १६० (६० पू० ३६५) में हुई। जीनघर्मक इतिहासमें इन आचार्यका अन्यन्त महस्त्रपूर्ण स्थान है। इनके समय तफ जैन सब अक्षण्ड अविभक्त रहा था, किन्तु इनको मृत्युके उपरान्न उसके शाबुबोर्मे बतपेर शंबमेर देखनेर बाचारपेर बार्थ प्रतान होने रुक्त हो एवं। अज्ञानीर-बारा प्रपरेतित वंब-पुर्वोचा सी पूर्वज्ञात करके समय तक अविकितन का बद्ध भी भीरे-भीर विकित्त होने नवा । वह शाम पुरु-क्रिया परम्परामें मौनिक हारस वसता सामा का और बड़ी शकार बज़के कई की वर्ष का तक बज़ता रहा । यह भी एक कारम ना कि बतका सनै नाने मनिराजिक ज्ञान होता क्या । उपरोक्त मतिनेशिविका एक धनते बडा बाह्य निकित सम्ब देखतो बक्तेवाका यह बारमदर्वीय यहात्रीयक वा जिल्ली करने बाग क्षाच्य पर्व स्थला पाकर बाबार्व अप्रवाह क्यते शहका विश्वतेत्र साथ ब्रांडन देवको निहार कर नवे थे। बुजिलको उपवास्तिके वयरास्त थी इ.स. सामग्रीका मुख्य वर्ष कहुमान पतित्र देवारे ही। रनामी क्यारे रह नगर र बैसबर्य बड़ी बड़केरे ही जनकित ना और इब सुनिननके राज्याध्यस नह क्षीर अधिक ब्रमाण ही क्या । क्यारिक देखके श्रदणवैक्योल नामक स्वात-को अपना प्रमाण केन्द्र नेनाकर यह रक्तिमीच निकला ध्वसमनब दक्तिय भारतके निजिल प्रदेशीये येवा भारतीय स्वाकारणती क्षेपानिकाचे सैन बर्मना प्रचार एवं प्रतार करनेमें लंबना हो बना । इन नवका क्रियान बी रार्त-कर्त वेक्काकको परिस्थितियोके बतुतार पान् हो पना । बनर निक्त हो सामू ऐसे भी में भी पुल्लिक समाव सम्मानें ही एह मने मे रिक्त बुक्तिक बुक्तिमें में बयत कठार लियत-समय बाजार-विचारको बालगानुस्थ बुर्रकत न रख बके । बनव नाना प्रकारके निकित्राचारके बीज नवत हो धरे । मात्राम स्थलमहते करूता नेताल किया किया के ती करते तथ किविकाचार एक आवश्र क्षांगको राज्यसँ समर्थ ग हो। सब र नाभागारमं इत गायमा नामारः नाम्याने गाटक्षित्रमा परिस्थान करके कामीगानी माना कला बनावा सी वारतनार बहाते भी सीर सविक र्यात्रमणी बोर तरकर बोरागुक बस्ताशीपुरली बरना स्वाबी केना बनाया । इसी प्राचाक साम तम ईवर्षाका प्राचन बनाव्यक्ति कराने क्रोनाव्यक

धार्त्वाप इतिहास । एक रहि

सम्प्रदायके जनक वने । इन दोनों शाखाआंके अतिरिक्त उत्तरापयके विभिन्न भागामें और भी अन्य अनेक जैन नाघु थे । इनमे-मे अधिकतरने कालान्तरमें मयुरा नगरको अपना प्रमुख केन्द्र बनाया और इनका विकास भी स्वतन्त्र रूपसे हुआ । मयुरा आदिके जैन साघु महाबीरोत्तर महासाव्दमें कर्णाटकी या मागची एव पिचमी साघुओंके बीचकी एक महत्त्वपूर्ण कडी सिद्ध हुए । इस प्रकार महाबीरके निर्वाणके उपरात जैनमध निरन्तर प्रगति एव विकासकी और अग्रसर होता गया और अनेक धालदीप, विकार एवं भेदादिके उत्पन्न होते रहनेपर भी तीर्यकराके मौलिक सिद्धानोंका प्रचार देश-देशान्तरम वढता गया ।

a

अध्याय ३

प्राचीन युम-द्वितीय पाद

म्लाब साम्राज्य

त्म से ब पूर्व है वि सार्थी समार्थी है जू है सम्बेद नावत साराव्य है। इसे या देव नावत साराव्य हो जात कर पा १०। सार्व है या दूर नावत साराव्य हो जात कर पा १०। सार्व है या दूर नावत है। सोर कर है। सोर कर है देव पात कर है। सोर कर है देव साराव्य एक है के साराव्य है साराव्य कर है। साराव्य है साराव्य है से यहिष्या है। से साराव्य है से यहिष्या है। से साराव्य है साराव्य है से यहिष्या है। से साराव्य है साराव्य

डो नोबी-नार बारक्साको जनुसार शाहीने मानेशका स्वयका करतेला बस्त करेंद्र विद्यारक था और इस्ते बारता स्वयका वह हैंद्र-विद्यारक प्रस्ते हैंद्रीयात वह नहुमाता है। नह साम को वैसर्वे वराय हुसा या निमने बहुमता चलाडी दूरी सीवेटर पानेला क्या हुसा का, का-मानके इस काम सीवा बालस्था। मुक्तमें भारताने ही कैन धर्म रहा प्रतीत हाता है। राज्यक्रान्तिके उपरान्त इस वशके प्रारम्भिक नरेशोंमें सर्वप्रसिद्ध राजा श्रेणिक विम्विशार था। हिन्दू पुराणीमें उसके पिताका नाम नियुनाग या दौशुनाक, यौद्धसाहित्यमें भट्टि और जैन अनु-श्रुतिमें उपश्रेणिक मिलता है। श्रेणिकके सुमारकालमें ही उसके पिताने विसी बारण कृषित होकर उसे राज्यमे निर्वासित कर दिया या और अपने इसरे पत्र चिलातिपुषको अपना उत्तराधिकार मीप दिया या । अपने निर्यासन पालमें श्रेणिवने देश देशान्तरांका अमण करके अनुभव प्राप्त क्रिया । इसी कारमें वह कतिपय जैनेतर धमण मायुओंके सम्पर्कमें आया कोर चनका भक्त हो गया तथा जैनधर्मसे बिदेप भी फरने लगा। पुछ अनुत्रतियोंके अनुमार वह बौद्ध हो गया था विन्तु यह बात असम्भव प्रतीत होती है क्यों कि महाबीरके केवलज्ञान प्राप्ति (ई० पू० ५५७) के पर्व ही यह फिरसे जैनधर्मका अनुयायी बन पुना या और उस समय तक बहु-माय मतके अनुसार बुद्धने अपने धमका प्रचार प्रारम्भ नहीं किया था। श्रीणकका भाई चिलातिपुत्र राज्यकार्यने विरक्त था और उसने दत्त नामक जैन मुनिसे वैभार पर्यतपर मुनि-दीक्षा ले हो। फलस्यस्य सन ई॰ पू॰ ५८७ के लगभग श्रेणिय विस्त्रिसार मगघमे सिहासनपर बैठा। उसने राजधानी राजगृहका जिसे गिरिवृज या पचकौरपुर भी कहते थे. पुन निर्माण किया एव राज्यका सगठन और पासनकी मुक्यवस्था की। उसके तया उसके वशजोंके प्रयत्नसे यह सुन्दर महानगरी मगध साम्राज्यको ही नहीं वरन् सम्पूर्ण भारतवर्षकी प्रधान राजधानी बन गयो। उसके सिहा-सनारूढ़ होनेके समय मगधका राज्य न विशेष वहा था और न वल्यान। कोसळराज्य एव वैशालीके विज्ञिसघकी सीमाएँ इससे सटी हुई थीं। श्रेणिककी महत्त्वाकांक्षाका आभास पाकर वैशाली नरेश चेटकके नेतत्वमें कोसल तथा विज्ञमधकी सेनाआने मगधपर आक्रमण कर दिया, चिन्त चतुर घेणिकने अवसर देखकर सन्धि कर छी। इतना ही नहीं, उसने चेटकको पुत्रो चेलना और कोसलको राजकुमारी कौशलादेवीके साथ विवाह करक उन रोजों पर्रशापारी परोधी शहरोको स्वारी मैक्टे पूकरें भी बाँद निया । बनन महत्ती राजपुतानी नामके नाम भी दिसाह किया ह करता किया जाने और भी भी राजकरताजा सभा एक प्रशास कर्या के शाब विवाद करनांद्र उत्तेष है। किन्तु को तीन प्राणी राम्त गतियी को को प्रमुद्धे की बैरकरमा अवस्था ही प्रमुक्ता प्रदेशकी बनी। विवास त्य होती अञ्चलकामा गण प्रचार काला स्थितिको सर्गका करक थेजिबन बार-बार्ट राजाको जैनकर बाला राज्यक्लार करता बारस्म बर दिया और बनाय और बेने को सामाकों मी बोटकर करने बनते राज्यमें निष्ध निया । नर्ष राप्य-नीने राज्यक ब्रोडिनिन बाजी बीर अबसे लेक्स मन्त्र शासास्य बच इत्तरा भारतका बदन संविक निरन्त दर्व वर्षभावारी शहर बत बार या । बहाराज प्रमेनविश्रमा कोलक राज्य की बनवानु या और भरतके अविनायकान्त्र वैद्यानी एवं निरेत्रण सनुसर वरिक्रमंत्र और भी क्रीक बनधानी या किन्तु में बीमों ही धेनिकक नामानी एक दिया के जनक अनिवासी करीं। भारतमा में नेपाकी समृतियें नामक करीं हुए । केवल बर्वाल-गरेय चम्प्यकोत क्रमण एकमान प्रवस क्रास्त्रिनी सा किन वह हर या बीर अववदी काठी हाई योकिसो गेसबेसा उन्हें मी कारण म प्रका पारम्प (ईराव) के पार्टके मान जी बर्जनको राज-

के बारण कर है है । में मेरिकार्श जुरा है।

में यह के रूप पर विकास पर प्राणी को पाने में वा जह इस कुरने मानव की बात जिल्हा है।

मुद्रान मानव की बात जैन मारिकार क्या प्रकार है कि उनके प्राप्त के तो विकास मानविक्त कर है।

मानविक्त मानविक्त मानविक्त कर ती की प्रमु कि कि प्रमुख्य कर है।

मानविक्त मानविक्त मानविक्त कर ती की प्रमुख्य कर है।

मानविक्त मानविक्त मानविक्त मानविक्त कर है।

मानविक्त मानविक्त

वैक्ति माधान-पदान विषय प्रतीत होता है । २ वय पर्यान राज्य करने

युक्त इन जनतन्त्रान्मक सम्याओं द्वारा उसने माम्राप्यके उद्योग प्रत्या, व्यवसाय और व्यापारको भारी प्रोत्माहन दिया। ये श्रेणिया ही आगे चलकर वतमान जातियोके रूपमें धोरे-धोरे परिणत हो नयी। मम्राट् श्रेणिक जनपदाका पालक एव पिता कहा गया है। वह दयागील एव मर्यादाशील था, माथ ही दानबीर एव निर्माता भी था। राजवानीने पुनर्निर्माणके अतिरिदत सम्मेदशिखर पर्वतपर जैन निपिद्यकाएँ तथा अयय जिनमन्दिर, स्तूप, चीत्यादि उसने बनवाये बताये जाते हैं। राजगृहके प्राचीन भग्नावरोपोमे उसके नमयको मृतियौ आदि भी मिली बतायो जाती है। अपनो अग्रमहिपी एव प्रिय पत्नी चेल्नाके प्रभावमे श्रेणिक जैनघर्मका भवन हो गया था। चेलना स्वय महावीरकी मौसी (या ममेरी बहुन) थी। महावीरका प्रयम समवशरण श्रेणिकको राजवानीके ही एक महत्त्वपूर्ण भाग, विपुलाचल पवतपर जुडा था और वही ई० पू० ५५७ की श्रावण कृष्ण प्रतिपदाको उनका सवप्रथम धर्मोपदेश हुआ था। महाराज श्रेणिक सपरिवार एव नपरिकर चक्न ममवगरण मभामें उपस्थित हुआ या और श्रावकोत्तम कहरुाया था तथा महावीरने श्रावक समका नेता यना था। कहा जाता ह कि श्रेणिकने भगवानुमे एक-एक करके साठ हजार प्रक्त किये थे और उन्होने उन सबका समाधान किया था। इन प्रश्नोंके उत्तरा-के आधारपर ही विपुल जैन साहित्यका रचना हुई। उसकी साम्राज्ञी चेतना श्रायिका सवको नेश्रो हुई। उसने अपनी समस्त नपत्नियो-महित महासती चन्दना आयि निकट धर्मका अध्ययन विया बताया जाता है। श्रीणकके अभयकुमार, मेधकुमार, वारिपेप, कुणिक आदि कई पत्र थे। इन मबमें अभयकुमार जेठे थे। यह अत्यात मेघावी, राजनीनि निप्ण एव धर्मात्मा थे। श्रेणिकके जीवन कालमें ही वह अपने नाइयोंके साथ जैन मृति हो गये ये । अतण्व श्रेणिकने नुणिक अपरनाम अजानशयुको जो कि महारानी चेलनासे उत्पन्न हुआ था, राजपाट सींपकर एकान्तमें घर्मघ्यानपूर्वक शेप जीवन वितानेका निश्चय किया । राज्याविकार पाने- पर पूरिपाने देवस्तरे बहुवानेहे जानी तिवा भीवानने वार्य गुरुने वाल रिवा दिन्तु नताने जनांना करोवर की प्रधानात हुवा और यह दिखें जाता गीरने और को बनात जुना अरवेन किए तया। भीवन करवे जातीय कीड वरणा था दिन्तु की प्रधान कार बाता देवस्त पढ़ यह साजा दिन वह यो जाती नित्त कार्य है। जन वर्यभूतको दीनाविति पिर चीडकर भीवनने कान्यारणा वर गी। इन प्रधार पत्र चन्नु प्रशानी वर्ष कर्मना वरिता तथा जवने प्रधानित हमारण हमारणा हुआना हुआ। पायस्त्र निवास बीजन भी वह दूरस्था करके एम्यायस पाव पढ़ मोदी वो भीवानो स्वस्तुष्ट कर्मी कार्याची दिस्स वरनेना प्रयान

नरमं ग्रहेमांना मार्ग नमाना महात्वाची एवं इनिया यात्रक था। तथ बिता विकारियाण्यते वनने विकारणी भी भाग वर नवर विदास था और रिपाणीका भारत करात्र था पात्रकारमध्ये केन मूनि मात्राव केयो उनके पुत्र के १ वेष भीतत रुप्या-भावत्व पार्यानी दशी कर हुए कपारे बाते हैं। प्रदेशीन प्राप्तिका अस्त था और यात्रका सुकार भी स्वर्धका बादर करना था। बिम्बिसार और चेटकका वह मित्र था, कि तु अब उसकी वृद्धावस्था भी और उसके पुत्र अमीग्य थे। उसके पुत्र युपराज विद्रुहभने पिताको इच्छाके विरुद्ध स्वयं गीतमबुद्धवे जीयनकालमें ही उनकी जन्मनुमि क्षिलवस्तुपर भयकर आक्रमण करने उने नष्ट-ऋष्ट कर दिया या। अजानशक्तने अवसर देख कोसलपर आक्रमण कर दिया और उसे पराजित करके उसका बहुनाग अपने साम्याज्यमें मिला लिया। अद उसने दैवारीकी कोर घ्यान दिया । लिच्छिन क्षत्रियोंका यह प्रसिद्ध बिज्यस्य एक बादर्प गणतन्त्र राष्ट्र या । उसका विधि-विधान आजकी जनतन्त्रीय प्रणानीसे वहत-कुछ साद्ध्य रखता था । जनता या नागरियों प्रतिनिधि राजा कहनाते थे। इन राजाओकी सम्या सहस्रा थी और वे वैशालीक सथागारमें वैठकर शद्ध जनतन्त्रीय पद्धतिसे राजनैतिक तथा आय छौकिक एव धार्मिक विषयों-पर विचार-विमर्श एव बाद बिबाद बन्ते थे जिनका निर्णय बहमत-हारा होता या। मतदानमें शलाका (वैलट) या भी प्रयोग किया जाता था। उस राष्ट्रको तथा जिच्छविया अयत्रा विज्ञियोंके चरित्रको स्त्रयं महात्मा बुद्धने प्रधामा को है और उन्होंने अपने सधन सगठनमें भी लिच्छवियोंकी अनेक विविधाका अनुकरण किया । बुद्धघाप आदि प्राचीन बौद्धाचार्योने भी उनके आबार-विचार एव प्रयासाँके सुन्दर वर्णन किये हैं। महाराज चेटककी अब मृत्यु हा चुत्रो थी और उमका मित्र राज्य कोमल पराजित हो चका या । फिर भी वैद्यालीपर खुके रूपसे आक्रमण करनेका अजातरायुको साहस न हुआ। अत उसने बम्मकार नामक एक घूत ब्राह्मणको वैशाली भेमा। वहाँ उसने अपने छल, कौणल एव विश्वास्थात-द्वारा विज्ञमधको एकता एव शक्तिको निवल कर दिया और अजातशत्रुको वैशाली विजय करनेका स्अवसर प्रदान किया । वई एक छोटे-मोटे राज्य मी उसने जीतकर अपने -साम्राज्यमें और मिलाये और इस प्रकार अवन्ति नरेश पालकको, जिसने कि कौशाम्बी नरेश उदयनके वत्सराज्यको विजय करके अपनी शक्ति और अविक बढ़ा ली थी, छोडकर सम्पूर्ण भारतमें मगव सात्राज्यका कोई प्रयस art recens as a miss of the artist बानर उस ना । अन्यदानको पर निरुच्चनी कुछ माराको अपने राज्या । का च च च च मा श्रीवराती राजसाय (ई. च ६ ६५) न जब व्यानरा बाज्यण दिया का ना उनकी नवाबें तक treba & feure ut at aniel tresteute g tren ut mite-क ल आक्रमा दाराका बालती अवरी रिमामा है। नाता बाली नवाई Ber (t a ve jant em ber fem & megtant u बोर कृष्टिक सामनरामाने मारण्य है । तर मारचे हु थे है वर्ध द्वान्त्रे भातः । सम्पादिनार काराप्तै भव्यापी मा ता । हुई युगान सम त ना भी । जनारतानुके साम्राराती । माम्राने (मन्त्रारी बजन पुर मा कहा बारण है हैं । ईरानिया है अनवा र के बार है उबन कर नेपेंगे किनेय wint. A et a weise wie trate eiteren fift minte et eerd tri वाकारणण सावत वायन भी अर्थन (अनुवास) अस्त्री सर्थन है पुढ म नके लिए बनन बंगा की अलब एक्यरर सब सरद विस्त हो बनाना गरी नापने नार्गनाम तगर बना। यह बान समापानका धारती (रामाधार) का नाबारमध्य प्रयोग कावमान एवं स्थापार बोर मनुद्धिशी बोर बान्न रिपारी वर्ति ही बसने भी बतात दिखा बीर उनीरी सीतिही बरनाया। इतिश-महानयण नदानीरका अस्त 14 जसर्गान प्रशिक्षण वस प्रक्रि

अभ्यापन गाउट जमान गण दिस्स का स्थापन किस्स क्षेत्र क्

ያ ርኔ ት ፖለካ ፤

या और अपने कुल-धर्म जैनायमंका ही अनुषामी था। रैप्तनके मतानुमार उसने जैन श्रावकके जन धारण क्ये थे। वह बुद्धका नी
आदर करता था किन्तु उनका अनुषामी नही हुआ प्रतीत होता।
बौद्ध नाहित्यमे उमका घटो निवा की गयो है और उस पिनृह ता
कहा गया है। विवा जैन अनुश्रुतिमें उमकी प्रयास मिलती है। उसने
मृति निर्माण कलावों भी प्रोत्साहन दिया। महाबीर आदि सीथकराको
मूतियोंके अतिरिषत स्थय अपनी मूर्तियों नी उसने वनवायी प्रतीत होती है।
पराम नामक स्थानस किसी एक मूर्तिको डॉ० कासीप्रसाद जायसवालने
स्थय अजानश्युकी मूर्तिके रूपमें चीनहा है और उनके मतानुसार वह उमीके
कालमें निमित हुई प्रतीत होती है। अजातश्युने वई अभूतपूर्व युद्ध यन्थोका भी आविष्कार किया था।

अञ्चातरायुके परचात् ई० पू० ५०३ मे उमका पुत्र उदयिन (उदयो. अजनवयी अपया उदयीमट) मगधक सिहामनपर बैठा और विभिन्न मतोक अनुसार उसने १६, २४, २५ या ३५ वर्ष राज्य किया । वह भी राज्य प्राप्त करनेके पूर्व अपने पिता कृणिकको भौति अगदेशका शासन रहा था। जैन साहित्यमें उसका पर्याप्त उल्लेख मिलता ह और यहाँ उसका वर्णन एक महान् जन नरेशके रूपमें हुआ है। उसने पाटलिपुत्र नगरका, जिस कुमुमपुर भी कहते थे और जिसके भग्नावरीय वतमान पटना नगरक निकट मिले हें, निर्माण किया तथा राजधानीको राजगृहसे चठाकर पाटलिप्यमें हा म्यापित किया । इस राजाकी भी एक प्रस्तर मूर्ति मिली है । इसन मगधके एकमात्र प्रतिद्वन्द्वी अवितिको ती पराजित किया और उस महा-राज्यका प्रहमाग अपन साम्राज्यमें सम्मिलित कर लिया। अब प्राय समस्त उत्तरा भारत मगद साम्राज्यक अन्तगत या । बुछ अनुस्रुतियामें स्दयीक परचात् अनुरुद्ध, मुण्ड, नागदशक या दशक आदि अन्य राजे भी इस वशमें हुए बताय जाते हैं। किन्तु यह निश्चित है कि महाबार स० ६० (ई० पृ० ४६७) में मगधमें एक नये वशका प्रारम्भ हुआ जिसे नन्दवश कहते हैं और का करवार १५ जा १ ५ जर्ग नफल नताल्ड एटा । इसी वर्ष प्रया-नीक्ष बलावर्षः साम-लाग सर्वानाके साम बंधारा की क्षण ही बना और बाउरीती अनव नाउद्याग्यको हो क्या काराज्याती यत वयी ।

दम नदीन बंगके प्रयम महारक्ता नाम जिप्प-विश्व अनुपूरियों में पिछ्-नाम काक्ष्मण बाजाचीक परिचान मयनिकास बारवनन्ति बदाननि कार्ट किन्ना है. जिस्स करें एक विशिध नामीपा समोदरण कर दिया बबा प्रतीत होता है। एता नात्व है कि बनशा नाब बारबनिश विप्रातात था और यह बुचनरेपचा पुत्र मादि न डाकर पीई बुदरा कम्मनी मा क्लि का बल देशनांक समने ही सम्बन्तित । वी बादीशनांच बाउन क्लाको प्रसाद निषद कारी एक वृत्ति मी निनी वी जिनपर उन्होंने 'ब्लारा' जा बाल्यमिन' स्टब्स परा गा । यह मान प्रबद्ध बाल्य बहिना क्षेत्रका समर्थक है और विभागाय जान क्षात्रिक वंदने प्रमुद्धे बार्बास्त्रज्ञ होनेका । त्यारत बतार्धावशास न होनेने बन्दि नाव बंध वरिकांत सुवक क्या । वह बीर वनके द्रक वयत पूर्व-नन्ति नावने ती प्राप्ति है। तमने १८ वस वस्त (रे वु ४४९ वक्) राज्य किया प्रवास होता है। जबन बामाग्यनी बुकता। विस्तार एवं व्यक्ति ब्रह्मे ब्रम्बने पूर्वपत्र क्वी श्रद्धी । इनरा क्लराविका रे बन्दियक बाकवर्त बाबादोन्ह वा । है अ

५५९-५ ७ वक ४२ वर वचने शास किया । यह इक्ष बंधरा हर्वतहाल और प्रतासी नरेक भारत संदेश (देशु ४२४) ते बलने वर्णियमी निजय की मो मीर कहा राजके इस वेपता कवित्र-जिल (वा क्रवरित वर्णात् तीर्थकर स्वचानवेत) की मूर्तिको वह बहाने क्रया क्राया था धीर बंधे वनने जन्मी राजपानीमें स्थानित निमा या । बारवंकके हातीन्त्रः विकासिको नष्ट क्षण अकट है । क्षणी दहनाङ्ग्रो, मीरहेली सारि अवस्थित समित राज्योंको भी नराजित दिना सीर उत्त राज-वैक्षीता क्षण कर विरात । सं कं ८४ (ई. पू. ४४६) के क्ष्मी निलालेसमे बिटित है कि उसके बासनकालमें राजपुतानेकी माध्यमिका नामक प्रमिद्ध नगरी जैनपर्मणा प्रमुख ने प्रयी, जैनोकी दर्श धण्छी बस्थी ची और न गेवल वहाँ गठावीरशी पुष्पल मायता घी करन होक-ध्यवहारमें महाबीर सवतदा ही प्रपतन या । भारतमें गा मवताके प्रचलतका मह मर्व प्राची। उन्हेस है। निद्यपाणी हता पटार-द्वारा की गयो बतायी जाती है। उसके उपरान्त उसका पुत्र मधानिक राजा हुआ जिसने लगभग ४० वर्ष राज्य किया । यह भी अपने पिनाके समान शक्तिशाली एवं प्रतापी नरदा था। इमीपे दासर कार्ट्म में न ० १६२ (६० प० ३६५) में अतिम धृतपवली भद्रवाहुकी मृत्यु हुई। ऐसा प्रतीत होता ह कि इसी नरेशवे धामनकालके अन्तिम वर्षीमें वह अनुश्रति-प्रसिद्ध हादरा-वर्षीय भयपर द्रिक्ष पहा या जिसकी पूर्वनुचना पावर आचार्ग भद्रबाह कई महस्र विषय मुनियांके साथ दक्षिण देशको विहार कर गये थे। सम्भवत यह राजा भी उनका भवन एय जिप्य था और च हीके साथ मृति होगर दक्षिणको चला गया था। इस दुमिक्ष पात्रमें जैनसपम प्रयम बार फूट पहनके बीज पटे। दुर्भिक्षकी उपशातिके पश्चात स्यू रुभद्रके नत्त्वमें प्वतास्वर अनुश्रातका पहला जैन सम्मेलन एवं आगमा-को बौचना पाटलिपुत्र नगरम इसी पालमें हुई और इसी कालमें बौद्धावी दितीय सगीति भी पाटलिपुत्रमें हुई।

गहानिन्दनके उपरान्त मगधमे किर एक घरेलू राज्यकात्ति हुई। उमके राज्यवालके वन्तिम वर्षोमें देश भयवर दुर्गिक्षसे पीष्टित रहा था, इस मक्टकालमे शासन भी अन्यवस्थित हो गया था। स्वय वृद्ध राजा राज्यका परित्याग वर मुनि हो गया था और दक्षिणको चला गया था। इस परिस्थितिका लाभ उठावर एक साहसी एव चतुर युवक महायदाने राज्य सिहासन हस्नगत कर लिया। उसके अप नाम मर्वाथसिद्धि और उप्रसेन (यूनानी लेखकोंका एप्रेमेच) मिलते हैं। कुछ लोग अमसे उसे धनानन्द या घनानन्द भी कह देते हैं किन्तु यह नाम उसका नहीं वरन्



यूनानो सैनिकोंके दाँत खट्टे कर दिये । किन्तु आक्रान्ताओको विपुल सैन्य शक्तिके मम्मल अग्रोहेकी छोटो-सो सेना कवतक ठहरती, अन्तत उसका पतन हुआ और वीस हजार स्त्री बच्चोंने जौहर द्वारा अपना अन्त किया। लिखित इतिहासमें जौहरका यह सर्वप्रथम उदाहरण है। अपने लगमग छेढ वर्षके प्रवास कालमें सिकन्दर और उसकी सर्वविजयी सेना पुरे पजाव और सि चको भी विजय न कर पायी। नन्दके प्राची साम्राज्यकी सीमार्मे तो प्रवेश करनेका उसे साहस ही नही हुआ। ई० पू० ३२५ के प्रारम्भमें ही वह निराश होकर वापस लौट गया और ई० पू० ३२३ में वाबुल नगरमें चसकी मृत्यु हो गयी। पुरु और अम्भीको अपना करद प्रतिनिधि नियुक्त करके और थोडो-सी यूनानी सेना छोडकर वह भारतसे चला गया था। यदि पजाव, सिन्ध एवं पदिचमोत्तर प्रान्तके ये अनगिनत छोटे-छोटे राज-तत्र एव गणतन्त्र सगठित होकर और मिलकर एक साथ यूनानियोके विरुद्ध खडे हो जाते तो वे निस्सन्देह सिकन्दरको पलक मारते ही बुरी तरह हराकर भारतको सीमासे खदेड बाहर करते । सिकन्दरके मुडते ही उसके दारा जीता हुआ भारतका अंश शीघ्र ही पूर्ववत् हो गया और अधिकाश माग अविशिष्ट भारतको तो परिवमी जगत्के इतिहासकी इस अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाका भानभी न हुआ । भारतवासियोंके लिए वह इतिहासकी एक शोध्र ही विस्मृत कर दी जानेवाली गीण एव क्षुद्र घटना थी।

किन्तु सिकन्दरके भारत आक्रमणके कुछ सुपरिणाम भी हुए। भारतके वाहर पिद्यमी देशोंके साथ भारतवपके सम्पर्क और अधिक उन्मुक्त एव गहरे हो गये। पिद्यमोत्तर प्रदेशकी छोटी-छोटी शिवतयोंके छिन्न भिन्न हो जानेने शोघ्र ही मौर्य साम्राज्यका विस्तार अफ्रगानिस्तान पर्यन्त फैल जानेके लिए भूमि तैयार हो गयो। भारतीय घम, दर्शन, ज्ञान और विज्ञानके समस्त सम्य पिद्यमी जगत्म प्रसारित होनेका द्वार वन गया। यूनानी कलाका भारतीय कला, विशेषकर मूर्तिकला, पर प्रभाव पडा। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह हुई कि सिकन्दरके साथ आनेवाले कई यूनानी

साम नार्यक्ष जान जानाए के लिया जा और सामान्य कार्य कारण वादि मात्र पुरोशों संपूर्ण कार और दिया जा किन्तु प्रत्याम कार्ये ही नार्यके पात्रा था। बाद्य वर्ष कारण व्या स्वत्यास पान्नु प्री समान्ये हैं मु १५० के कारण पात्रपार हुई पात्र पुरान्ये की सामान्ये कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष कार्यक्ष पात्रम हमा मात्री कीर्यक्ष मात्रपार हुई। सामान्येक सामान्य मात्रपी कर्यक्ष कार्यक्ष क्ष्यास्मृत कारण मुचानी

शिक्तरका आक्रमण है। गुरूर मुनानके नहदूतिया नामक दक कीउनी राज्यके नामक रिविशका वेटा विकासर संनारका अवत्रका महान् दिल्हेंग बता । पुतासन्यामें ही सनके मसन्तारी क्रावर्तनी देखकर कीरोंने वर्ते देवाप बहुना सक कर दिया था। है व ६५७ वें बहुका मन्य हुन्छ क्षेत्र वर्षकी बादुमें ही बचने करार्थ बनान देखार बयवा वावित्रत स्वाधित कर क्रिया और बान राज्ये धोटे-बोटे बड़ीबी वैद्यांनी जीतकर अन्ये राज्यका निस्तार वर्षे प्रक्तिका वीवह किया। एक पुरु नियुक्त वेता केकर बढ विरक्ष विषय कि कि कि कि का देश । अनु पृक्षिका कान पृथ्यिता औरिया, ईराज बाबुल काहि प्रदेशींकी बीतता हुना वह ईराववर कड़ बीड़ा और बक्ते जनमधे बंधके विस्तृत एवं बरिनवाओं बाझाराको क्रिक-विन्त करके क्षेत्रकार बासाम्यका अंत बना निया । नारक्षके सनुस्तेत अन-वैजनके सोच एवं विजनिष्याचे हैरिए होकर बचने हैं वृ ३२७ में संबर पारीके सारतमें प्रवेश किया, समित्रमा वरेख अन्तीको प्रवासित कर अपना करव राजा अनावा और किर एक वृक्त करके विल्लुसाधी हुई र्वभावने विकारे हुए क्रोडे-क्रोडे साम्ये इब वजडलॉक्ट्रो विजय करना जारत्व किया। किना पन-पन्तर वसे जीवन विशेषका बादना करना नहा। बैकन और विवासके बोमावेका राजा पुत्र नहीं नीरक्षपूर्वक महा और शीयकशाय ही इराय वा दश । दाल्डीवें वहोट्डे बहचेनी रकानते विकारणी मुक्तिक हुई । गर्तनाम जनगाओंक पूर्वन, अधोईके में स्थानकार हेगी निरामी सङ्ग्रण गोरताके काम कड़े और कन्द्रोंने विकासरके दूर्वर्ग

भारतीय दृतिहास : एक रहि

उनमें मुछ तो बनवासी (हिलोबाइ) ये जो नितान्त निष्परिग्रह, निम्पृह एव नग्न तपस्वी थे, बनोमें रहते थे, अल्पभोजी और विदाद शाकाहारी थे, हाथमें लेकर ही भोजन करते और जल पोते थे, मृत्युके उपरान्त दावको जीव जन्तुओ-द्वारा भक्षण किये जानेके लिए वनमें ही छोड देते ये और मृत्यु निकट जानकर विविध उपायोरी जीवनका अन्त कर देते थे, अर्थात् समाधिमरण करते थे। वे देह और भोगांकी चिन्तासे सर्वेषा मुक्त थे, जान ब्यान और सपमें लीन रहते थे। यह सब वर्णन जैन मृतियांके अतिरिक्त अन्य किसी सम्प्रदायके माधुआपर पूर्णतया लागू नहीं होता । तक्षणिलाके निकट ऐसे ही मण्डन नामक एक प्रसिद्ध मुनिमे सिकन्दरने साक्षारकार चाहा। मुनिने उसके निमन्त्रणका तिरस्कार कर दिया, इमपर सम्राट् स्वय मृनिके पास गया। प्रश्न करनेपर मुनिने कहा। कि यदि हमसे कुछ पूछना और लेना चाहता है तो पहले हमारी ही सरह अन्तर बाह्यसे नग्न हो जा। और फिर उन्होंने राज्यतुष्णा एव भोगलिप्सा-का त्याग करके आत्माकी चिता करनेका उसे उपदेश दिया। एक दूसरा साधु जिसका नाम क्ल्याण था सिक दरके साय ही बाबुल चला गया। वावुलमें जाकर उसने समाधिमरण पूर्वक चितारोहण किया। अपनी तथा स्वय सिकन्दरकी निकट मृत्युकी सूचना इस मुनिने सम्राट्की पहले ही दे दो थो। उसको मृत्युके परचात साम्राज्यकी क्या दशा होगी. यह भी बता दिया था। इन वनवासी श्रमणोके व्यतिरिषत ऐसे भी खण्डवस्त्रधारी त्यागी श्रमण श्रावक ये जो वस्तियोमें रहते थे और धर्मीपदेश, शिक्षा, ज्योतिप, चिकित्सा आदिके द्वारा लोकोपकारमें रत रहते थे। इन त्यागी गृद्स्यों (ऐल्लक, क्षुल्लक, ग्रह्मचारी आदि प्रती श्रावको) का छोग वहा आदर करते थे।

इन यूनानी लेखकाने तीर्थकर ऋषमदेव एवं उनके पुत्र भरत चक्र-वर्तीसे सम्बन्धित छोकप्रचलित अनुध्यतियाका भी उल्लेख किया है। नन्द, उपसेन, चाद्रगुप्त मीर्य, अभित्रधात बिन्दुसार आदिके सम्बन्धमें उनके नेन्द्रशिक्षान्त्री वर्षण विशे विशेष वार्णारार वर्णान्त्री बृगारी द्वितान्त्र सार्वेद विश्वरणाधीम वार्णाशास्त्रीय जीतींत्रक वार्णिक सार्वेदक पूर्व वर्षिक प्रदाने दर्षेत्र दिने जी सार्थान्त्र वार्णात्र दिनाक्षेत्र प्रदान पूर्व वर्षारण्युक्त वार्णा को। यात्र में वृष्णो निकार्षेत्र नेन्द्रीयोशास्त्र वर्षारण्युक्त वर्षण्युक्त वर्षेत्र विश्व वर्षण वर्षण्युक्त सार्व्या प्रदान्त्र प्राप्तिक सार्वेदक सार्थान्त्रम्भित्रा विशेषण पर्वेद स्तरीयक प्रदेश वर्षो वर्षा वर्षो वर्षण वर्षण्य

निक्त्यर को जनके सुनानिकोंको परिवर्शनार अदेशकरी पान्यार, नक्षांसात्र कार्यके निकारणी यात्र अदेशोने ही नहीं बाल् कर्ल्यून पैताय

और निल्पेरे बय-प्रण बनेशो नाम रियावर निर्देश्य बालु विके थे । इससी बुमानियोंने विम्मोनोरिस्ट ना जिन्हेराइ मानोने बनोस बिया है और बनरे वर्षनीते इन स्थितने प्राप नाई अञ्चेद नहीं है कि इन सम्बंति बाह्य ताबारीन (स्वावस जैन बानुबोधा है। निम्बनाटीके मैने ही नुख मानवींका कार्टिन औरता वर्ष मैरिया नामीने की कारेन किया है। इसमें प्रथम धार 'आंगडी व' धारका मुतानी नम है । चैत बाहिनामें जैन वृतिर्यासा एक प्राचीन वर्ष 'काराजीव नावडे नृत्वित विच्य बदा है। दैरिटाइ एक मास्तिके निया प्रपुत्त हुआ है जो बारवका बनानी कप प्रसीत होता है। नुगानी केमफोन चनको बीट शाहाजीका नुवस-नुवक स्वष्ट कान दिया है और दममें नाई कार्य नहीं है कि अवनीने बनता स्वि बाव मैंन शानुभारत है। बीट जिल्लाकों को छो-एक व्यक्त क्राकेश हुन बतानानि निक्रते हैं बनके ही बड़ राष्ट्र है कि बननोंने बोर्डीया बांब-बाव नहीं था । वरपुता बायुनिक विद्यानीका बद्ध बारवय होता है कि इत पुराती केलकोने बुद्ध बोद्धमन बोर बौद्ध निकारीका बाद पुछ बी बालेम नये नहीं निया - ऐना ननना है कि बंध नानवें नमी कर परिवर्गेतर मारवर्षे बोदवन वृत्र बीच बन्धकन था । वरधेला जिल्लो-बोरिन्द मा भवन सामग्रेडि सामन्त्रमें मुनानो नेखबीबा स्थन है कि

*1

चल्लेख मिलते हैं। इन चपरोक्त भिन्न कयाओं परस्पर बहुत-से अन्तर्म मी हैं। ब्राह्मण साहित्यमें चन्द्रगुष्टको नन्दका मुरा नामक जूद्रा दासीसे चत्यन पुत्र वताया है, बौद्ध अनुश्रुतिमें उसे मीरिय नामक ब्रात्यदात्रिय जातिका युवक वताया है। किन्तु बौद्ध तथा ब्राह्मण अनुश्रुतियोमें चाणक्य और चन्द्रगुष्टका जन्मसे मृत्यु पर्यन्त पूर्ण जीवन-वृत्त नहीं मिलता। जैन अनुश्रुतिमें इन महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक व्यक्तियोक्ते सम्बन्धमें अथसे अन्त तक पूर्ण वर्णन मिलते हैं और वे भी कई विभिन्न द्वारोंसे। अत विभिन्न अनुश्रुतियो, ऐतिहासिक आधारो और मान्यताओंके समन्वय-द्वारा हमें चक्त कालको ऐतिहासिक घटनाओंका वहुत कुछ प्रामाणिक विवरण चपलन्त्र हो जाता है।

आचार्य चाणक्य मीर्यवशको स्थापनाम मूल निमित्त एव मीर्यसाम्राज्य-के प्रधान स्तम्भ थे। वे सम्राट च द्रगुप्त मीयके राजनैतिक पुरु, समर्थ महायक तथा उसके राज्यके कुराल व्यवस्थापक एव नियामक थे। राज-नीतिके ये महान् गुरु और इनका प्रसिद्ध अर्थशास्त्र अपने समयमें ही नहीं वरन् तदुत्तरकालीन भारतीय राजनीति एव राजनीतिज्ञोंके सफल मार्ग-दर्शक रहे हैं। प्राचीन जैन अनुश्रुतियोंके अनुसार आचार्य चाणनयका जन्म र्ड० पू० ३७५ के लगभग गोल्लविपयके अन्तर्गत चणय नामक ग्राममे हुमा या । इम स्थानको ठीक स्थिति अज्ञात है । बुछ अनुधृतियोंमें उन्हें पाटिलपुत्र और कुछमें तक्षशिलाका निवासी भी वताया है। इनकी माता-का नाम चणेरवरी और पिताका नाम चणक था जो जन्मसे प्राह्मण और धर्मसे श्रावक (जैन) थे। जन्मसमयमें ही चाणवयके मुँहमें दाँत धे जिससे सबको वहा आश्चर्य हुआ। उसी समय मुख्य जैन साचु चाणक्यके पित्रालयमें आये और उसके पिताने उनसे इस बातका उल्लेख किया। उन्होंने वताया कि यह बालक वहा होनेपर कोई भारी राजा होगा। किन्तु ब्राह्मण चणक सन्तोपो वृत्तिका घर्मातमा व्यक्ति या, राज्य वैसवको वह पाप समझता या अत उसने वच्चेके दौत उखाह हाले। इसपर उन पुराला केव नाम्बारिके विकार वार्ताण होते हैं कार निर्मा जान माने मुनिके मही। बारिक मान जमानुको विहासकारिकाओं को जिल् (बारीद में नु १११) बारीक मुशालो प्रशिक्षकारिक ही है वह मो दर्ज सार्दि आर्मुष्य विद्यार्थिक मुशाल कोई स्वेती हो बारण हुई थी। वेता कार्यार्थ्य माना कार्या कार्या कर कार्या कर्या स्वार्थ कार्या कर्या हु पूरा मा कि लार्य बाह्यूम पुरिचो एवं परिकारिक निर्माण मोने क्रमानि क्या क्ष्मा है कि में भी बारपार्य होने से । सांक्ष्म दिक्का भी मोने क्षमीन क्या

विकास के बाक्सक के कुछ वर्षी के परवालू बारत है एक बहुरकपूर्व राजक

क्यन्ति हुई । नन्यरंकका परान हुआ। शोर्यशंकती कक्षके श्वासने स्थापना हुई बीर कमस्यका मनवहाप्रान्त करने चरायेत्वर्गको शस्त हवा । इस राज्य-क्रान्तिके प्रवान नावक सनिव नीर चन्त्रपुत्त भोर्ने और वसके बहानक राजनीतिके निरम्भः पश्चितः ब्रह्मण नायस्य मे । भावस्य सक्ता वडके बर्गबातमके विषयं हरकातीय मुतानी केवक वर्गमा मीन है, नवपकी राजवताने बाकर कुछ बननके जिल रहतेयाचा नशानी राजवत वैदेशकीय थी करका कोई बस्केस गड़ी करता । भागरमके सर्वधास्त्रके की संस्करण क्षप्रकार है में संस्का जानिये स्तरित निवृत्त क्षेत्र हैं भीर बनकी प्राचीनका स्वयं पालकके बद्धावे कई वो क्यों शह तब ही हाविन है वनिक पहुँचरी है। बहुत रीखेंके निवे को नुप्राराखन शहन एवं कवा-बरित्वावर मारि कमालक बलाँचे दशना दी का बळता है कि कूटवीरि-विवारम पाणक, को विश्वकृत और कौतिन्य की शहकता का, एक केरानुसारी चीच्य पादाच था। राजा क्यारे क्याचा बरजान किया जिल्हा बरका केलेके लिए मनके बंबका चनुक बन्तुकन करवेशी बढवे अतिहा को और अपने कुलिक्स बचा कार्युक्तको सहस्रताहे वह बसमें बचन हुआ और बंदने फ्लाबुट्यको सन्दर्क विद्वासन्दर् देश दिया। बीज जनुम्हिने की जनकान अस्तिका जनकात और चनावरतकी राज्य हास्तिके

मर्त्याच इतिहास कुत्र परि

साधुओं नो सन्या सहररोंने थी अत मयूर पीपण एप स्यूरिष्टों निर्माण-का व्यवसाय पर्याप्त महत्त्वपूर्ण था। घूमते घूमते घाणवय एक दिन इसी गाँवमें पहुँचा और गाँवमें मोरियवशी मुस्तियाके घर ठहा। मुन्तियाकी पुत्रो गभपती थी और उस उमी समय चाद्रपान करनका विचित्र दोतला उत्पन्न हुआ था। किंतु चाणवयने इस सर्तवर कि उत्पन्न होनेवाले शिगुपर उसका स्वयका अधिकार रहेगा युक्तिसे वह दोहला धान्त कर दिया। तदन तर यह वहाँसे चल दिया। कुछ ही मास उपरान्त उम लडकीने एक मुन्दर तेजस्यी पुत्रको जाम दिया और उस दोहलेके आधारमे उसका नाम चाद्रगुष्त रखा गया तथा परिक्राजक चाणवयमे को गयो प्रतिज्ञांके अनुसार उसे परिक्राजकका ही पुत्र कहा जाने लगा। नाय द्वारा चाणवयका अपमान और चाद्रगुष्तका जन्म आदि उपरोक्त घटनाएँ ई० पू० ३४५ को छगमग हुई।

विद्याल साम्राज्यके अधिपति पराक्रमी नन्दोना समृत्र नाम करना कोई हैंसी खेल नहीं था, चाणक्य इस वातको भली प्रकार जानता था। किन्तु वह दृष्टप्रतिज्ञ भी था लत धैर्यके साथ वह अपनी तैयारीमें सलग्न हो गया। लग्ने कई वप उसने धातृविद्याकी सिद्धि एव स्वर्ण आदि धन एवत्र करनेमें व्यतीत किये यताये जाते हैं। लाठ-दम वर्ष वाद फिर वह उसी प्राममें आ निकला। ग्रामके वाहर धनमें कुछ वालक खेल रहे ये। एव तेजस्वी वालक राजा बना हुआ था और लग्य बालकों इस कौतुकको देखता रहा। तदन तर उसने उस बालकसे वार्तलाप किया और उसकी तुरतबृद्धि, बोरता, साहस एव तेजस्विताका दलकर वहा प्रसन्न हुआ। वह सामृद्रिक धास्त्रवा भी ज्ञाता था और उस बालकके सामृद्रिक चिद्धोंमें उसे चक्रवर्ती सन्नादके सब लक्ष्मण दीख पढ़े। पूछताछ करनेपर मालूम हुआ कि यह बही बालक है जिसकी माताका दोहला उसने स्वयं धान्त किया था। लस्तु वह उस बालकको साथ लेकर वल

श्रामुद्रोते यह चॉक्यांचानी की कि जब बद्ध बातक स्वयं का चाना न हो क्षेत्रा दिन्तु कियो सम्म व्यक्तिके अपक्रमादे राज्य करेता । यह प्राप्त होतेपर संग्रहिमा संचा अनके निकटवाडी स्थानीय रहवेपात मापानीके निरुद्ध चायकाने चौद्ध विद्यास्थायां (प्रतु अव चतुरानुगीन वर्धन स्थाय पुरान, पर्वशालन) नी विका प्रान्त की और क्यो विधानों दर्व श्रामधीमें बद्ध पार्रपण हो नया। यक्षोत्रति शामक एक स्थाना कुन्दर्शके बाब बबका विदान हुना और नह बाह्यजोरित शिवकनृतिके परिवराके बाम मीवन माठीरा करने बना एक बार बंबची रती मनने आर्थि विवाहने मानके बत्री । बार्ड प्रथमी विवादमाना कार्नीने प्रशास किया जिसके बहु बड़ी कुली हुई । जायरतको सब बहु बहुत सलाज हुई ही पह क्योगार्वको ति । वर्षे विकत परा अवस्तात क्योवेनित बहारणक्य विकासीया बडा बागर करता है और क्षाई क्रमूच बागारिके कन्यूड करता है बद बार क्वेंप्रहित की । कर बालकर बार्टील्यूब प्रदेश । बड़ी क्वेंबे राजवनाके कारत परिवर्तानो पारकावते नराजित करके बीववादान (रामधिशायके सम्बद्धः) का पर जान्त कर निजा । किन्तु बढकी कृषयण विकासी बहुति वर्ष देवतः स्वमानक सारच वरणव विद्युत द्विरणसूच्य मनरकाम करतान्य बढके रह हो बचा और बढने चानकारा मनगान किया। कम्मनवरूप पायकाने मुद्ध होकर बनाये बंधको बनुस यह करतेकी जीवन प्रतिकान्ति । अपने चन्त्रक्षमाने बानुसी-हारा की वर्ती मरिक्तपानीका स्मरण करके परिशासनके बेदमें यह एक ऐसे व्यक्तिकी कोनमें निकल पहा को राजा होनेके क्षप्रकृत हो।

त्या है के विकास क्षेत्र के प्रतिकृति हैं के व्यवस्थित क्षेत्र मान है के व्यवस्थान के विकास कर किए के विकास के वितास के विकास के

मूखें है, उसने सीमा प्रान्तोको हस्तगत किये विना ही एकदम साम्राज्यके केन्द्रपर घावा बोलकर भारी भूल की है। चाणवयको अपनी भूल मालूम हो गयी और उन दोनोने अब नवीन उत्साह एव कौशलसे तैयारी प्रारम्भ कर दी। विच्य अटवीमें पूर्वसचित किये हुए विपुल धनकी सहायतामे चन्होने सुदुढ एव विशाल सैन्यमग्रह करना शुरू किया और परिचमोत्तर प्रदेशके यवन, काम्बोज, पारसीक, खस, पुलात, शबर आदि म्लेच्छ जातिया-की एक वलवान सेना तैयार की । वाह्नोक उनके अधीन थे ही । पजाबके मल्लि या मालव गणतन्त्रको भी उन्होंने अपना सहायक बनाया और हिम-वतकृट अर्थात् गोकर्ण (नैपाल) के किरातवशके ग्यारहवें राजा पचम उपनाम पर्वत या पर्वतेश्वरको विजित साम्राज्यका आधा भाग दे देनेका लोभ देकर अपना सहयोगी वनाया, और फिर मगय साम्राज्यके सीमावर्ती प्रदेशोको जीतना शरू किया। एकके पश्चात् एक नगर, ग्राम, दुर्ग और गढ़ छछ-बल कौशलस जैसे भी वना अपने हाथमें करते चले गये। विजित प्रदेशाको सुसंगठित एव अनुशासित करते हुए तथा अपनी शक्तिमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए वे राजधानी तक पहुँच गये और उन्होंने उसका घेरा हाल दिया।

पर्वतकी दुस्साहसपूर्ण वर्वर युद्धित्रयता, चद्रगुप्तकी अद्भुत सैन्यसचालन कावित एव रणकौशल और चाणक्यकी कूटनीति—तीनोंका सयोग
था। पाटलिपुत्रपर भीपण आक्रमण हुए तथा उसके अन्दर फूट और
पड्यन्त्र रचाये गये। नन्द भी वीरतासे लहे, वननन्द आदि समस्त नन्दकुमार लहते-लडते वीरगतिको प्राप्त हुए। अन्तत वृद्ध राजा महापद्मने
भी कोई आज्ञा न देखकर घर्मद्वार नामक प्रमुख नगरद्वारके निकट हथियाग
हाल दियं और आत्मसमर्थण कर दिया। उसने चाणक्यको धर्मकी दुहाई
देकर सुरक्षित चला जानेकी याचना को। चाणक्यको अभीए सिद्धि हो
चुकी थी, अतएव उसने नन्दराजको सपरिवार नगर एव राज्यका त्याग
करके अन्यत्र चले जानेको उदारतापूर्वक अनुमति दे दी और यह भी कह

बरा । कई बंध बरन्य प्रवंत को दिन्ति व अन्यन्ताम विद्यार्थी एवं तालकी की राज्यों पत्र बागम विकासी । क्यांके वित् अपूर्णने नार्यका मुक्त वारी मी बोरे-बोरे बुरा दिए । ई. पू. १३६ के विकास का बाज्यन हुआ। ntranfact febalt un id nam co miferma mingelt anner greet gian tent : fert tere eant feereret uf ab ib बर् प्रमारित हमा अन बनन शिव च प्रमुख्य । बनार श्री कि कर geifagigt Affen unfer Armeinen ein umgebmen miet बारण समुख्य प्राप्त करे. चायर व बुनानी बिर्वर में बहेबा । मुख्य होते व प्रथ बन्ते क के बर बजार के बन्नक क्यांक्य किया की fer auft i alanie nem eine faereit ab um ut fett बीर कुर कार दिया। काप्रतामने बाबीए बानकारी शाल की बीर निकलाई मारत्य बरहर दिव हे ही बबाबडे बाशीकोची प्रचारकर बुनानी बनाडे fera ferte ar fen en murr wud urnen abm gerfant बाचितातके स्था प कर किया कोर है वु ६१३ के करमण पामराके शिरयनके बाना एक कोटा-मा धान मनवदाबात्रको बोनावर स्वान्ति et fen

१ । १ व सन्दर्भ नगर्युम और कार्युम्भ हरू स्थीनी विकास स्थापन कर स्थापन कर स्थापन स्यापन स्थापन स

मूख है, उसने सीमा प्रात्तोको हस्तगत किये विना ही एकदम साम्राज्यक केन्द्रपर घावा बीलकर भारी भूल की है। चाणनयको अपनी भूल मालूग हो गयो और उन दानाने अब नवीन उत्पाह एव कौशलसे तैयारी प्रारम्भ कर दी। विन्ध्यञटवीमें पूर्वमचित किये हुए विपुल धनकी सहायतासे उन्हाने सुदुढ़ एप विशाल सैन्यसग्रह करना शुरू किया और पिरचमोत्तर प्रदेशके यवन, काम्बोज, पारसीक, खस, पुलात, शबर आदि म्लेच्छ जातियो-की एक वलवान सेना तैयार की । बाह्मोक उनके अधीन ये ही । पजाबके मिल्ल या मालव गणतन्त्रको भी उन्हाने अपना सहावक बनाया और हिम-वतकट अर्थात गोकर्ण (नैपाल) के किरातवशके ग्यारहवें राजा पचम उपनाम पर्वत या पर्वतेश्वरको विनित साम्राज्यका आधा भाग द देनेका लोभ देकर अपना महयोगी वनाया, और फिर मगध साम्राज्यके सीमावर्ती प्रदेशाको जीतना शुरू किया। एकके पश्चात् एक नगर, ग्राम, दुग और गढ छल वल कौशलसे जैसे भी बना अपने हायमें करते चले गये। विजित प्रदेशोंको सुसगठित एव अनुशासित करते हुए तथा अपनी श्वितमें उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए वे राजधानो तक पहेंच गये और उन्होंने उसका घेरा द्वाल दिया।

पर्वतकी दुस्साहसपूर्ण बर्बर युद्धप्रियता, चद्रगुप्तकी अद्भुत सै य-संवालन काक्ति एव रणकीक्षल और चाणक्यकी कूटनीति—तीनोंका सयोग या। पाटलिपुत्रपर मी। पण आक्रमण हुए तथा उसके अन्दर फूट और पड्यत्र रचाये गये। नन्द भी वीरतासे लहे, घनन द आदि समस्त नन्द-कुमार लडते-लडते वीरगतिको प्राप्त हुए। अन्तत वृद्ध राजा महापद्मने भी कोई आधा न देखकर धर्मद्वार नामक प्रमुख नगरद्वारके निकट हथियार डाल दिये और आत्मसमर्थण कर दिया। उसने चाणक्यको धमको दुहाई देकर सुरक्षित चला जानेकी याचना की। चाणक्यको अभीष्ट सिद्धि हो चुकी थी, अतएय उसने नन्दराजको सपरिवार नगर एवं राज्यका त्याग करके अन्यत्र चले जानेकी उदारतापूर्वक अनुमति दे दी और यह भी कह त्व कंपन्तुंच तीव नक्पायनुवारी नुष्यांची बावादीय वाराव तवक रामांवादावरार बावड हुवा और वसके बात-वन्दुच प्रिमाणी बाधाम्या बिर्मांची हुवा। नक्परंपा नक्ष्म और वह क्यार कंपन्न नार त्यांचे हुवा वह बक्तोंचे वार प्रार्थानुवारे मेनेर्ववंकी स्थाना में नु १३० हुवे। वक्ष्मुंचन्त्री बादा मेरित व्यक्ति की स्थाना त्यांचे का विश्व क्यार मान्या के प्रक्रिया के विश्व की स्थाना कंप्नेची थे। क्यान्या प्रमाणिक प्रक्रिया की प्रक्रिय की स्थानित क्यान्यों कंपाया मेर्ने प्रमाणिक प्रमाणिक क्यान्यों की स्थानित क्यान्यों क्यान्यों की प्रकान क्यार करण्या क्यान क्याने क्यान उप-राजधानी बनाया । ई० प० ३१७ में मगदमें नन्दोका पतन शानेपर भी उज्जैतोमें नन्दोंके पुछ बदाज गा सम्बाधी स्थलात्र यन रहे प्रतात शीते हैं। यही बारण है कि कुछ जैन अनुधुनियों में नादयाका जात ग० स० २१० (ई० पू० २१७) में और कुछमें म० ग० २१५ (ई० प० २१२) में कपन किया गया है।

चउनैनीको स्विकारमें करनेने उपरान्त चसने दक्षिण देशनी दिश्विजय करनेके लिए यात्रा को । सुराष्ट्रके मार्गसे उसने महाराष्ट्रमें प्रयेश किया। मुराष्ट्रमें गिरिनगरके नेमिनायकी यादना की खीर ववत पवतकी तलहटोमें सुदर्शन मील नामक विशास सरीवरता निर्माण अपने राज्यपाल वैदय पश्यगुज्नकी देल-रेजमे कराया। इसीके तटपर निर्याय मुनियांके नियासके लिए चन्द्रगुका आदि गुफाएँ बनवायीं । महाराष्ट्र कारण चर्चाटक तथा तमिल देश पर्या प्राप समस्त दक्षिण नारतपर उसन अपना आधिपत्य स्थापित किया। प्राचीन तमिल माहित्य, अनुधृतियो एय कतिपय शिनालेगीसे मौयोंका दक्षिण देशपर अधिकार होना पाया जाता है। दक्षिणकी इस विजयमें एक और भी प्रेरव कारण या। चन्द्रगुप्तका पितृतुत्र मोरिय आचार्य भद्रवाह श्रुतिनेत्रलोका भवत था । द्वादशवर्षीय दुभिक्षक मनय इन आचार्यके समय दक्षिण देशको विहार कर जानेपर भी वे लोग उन्ही हो परम्पराने अनुवायी रहे और मगधमें रह जानेवाले साधुको तथा उनकी परम्पराको उन्होने मान्य नहीं किया । भद्रवाहुकी शिष्य-परम्परामे जा आचार्य इस वीचमें हुए वे दक्षिण देशमें हो रहे अत उनमे उत्तर भारता निवासियोगा होई सम्पर्क नहीं हुआ परन्तु थे, यथा चाद्रगुप्त, चाणक्य आदि, अपने आपक्षे अ(चार्य भद्रवाहुका ही अनुयायी कहते एव मानते रहे । अतएव अपने परम्परागुरु आचाय भद्रवाहुने कर्णाटक देशके जिस कटवप्रया कुमारी पवतपर तपस्या को यो और समाधिमरणपूर्वक शरीर त्याग किया था तीयरपमें उसका वन्दना करना तथा उनकी शिष्य परम्पराके मुनियोसे

र्यान्त्रो रोष्ट्र । त्या तथास् बाहरूपने तैन्द्र-बन्द्रपन् विद्या । यह वर्षान्-मोमी बढ़ प्राचीन नमश्च र'र्धनत का करके नर्देशों भी कालत मा और धेरोनो मी भी पंत्र हुए हुआ और जन्त मुखनो हैया हुते बाद पर्याद्य हुई, रस्य नियानन बन्दे हता। जनने नापरा बरके चनारक वर्ष्य का ही और तकार चेत्राप्त और किरकोड़ी नहीं बारशाय हाँग्रास्त पुत्र प्रति

and american experience agent erre ar er ein al affecting गानर व बहुबन बोर बहुबार ही अपने राज्यों के हो। जिल्हा बेटाई बीर रिकार उपना मार्चनार विकित का अने रह करते हुए क्षेत्र कामाजारा बाजनर कर देना बंदना लंदन का कब बोगी देश लेकर है. पू. है ५ में रहते बाराचे बांब विया । विन्तु बगुरूत बीर बसके बारकानीहे क्यारे मनारकार नहीं में . नारत आमें महत्तर ब्रोध देनाने ब्रायमध्यारीकी

(प् १९० के बार संबंधने राज्यानान्त्र हुन यस समय निरमुख्याओं निर्दा बाएल दोपनोड को । दिल्ल दरी-दर्ज उपने बाली निर्दार बेंगान ने बोर्च प् उत्तर का प्राप्तन प्रीत्माली हो पर्श नि निकारती क्षान वह बलगरिकारी प्रार्थ शामक रव गर्दे । अन गर्द दिनेश्वरका स्टब्स देखने करा और विकास में भी जो न हो गया की बार्व बर्चां बार्यवर: १ हिवद बरवेंडी दन टीव ब्राजिनायर हाँ । सार

ware and away errare ! erere ferreter ferrete देशको १४ इन्हरूच का । इनको अन्दर्भ इदगुन्त बुरूको बन्तराज्ञाना मो बीराग्रा हुता बचने बकान बका रव वृत्र ह्र'द्रवाई बात विश्वते बारणका शिरा बंद के ब अध्यक्त का अध्यक्त दिनों बे बाद्य पार पारवरें का बच्चीरक हिंदीहा बार्यके बहरत बच्चे निर्वाद स अबाज नेपर है

वर्षमान मेना क्षेत्र करको मुक्ति कारिको कारन्या करना की नेने बहार वे को क्यान्त्री होन्य रास्त्री देश्या है इसेंह होते हैं। कारूस बीपने राजवशास्त्रा रख बाँद जास्त्रारू पास करें र्राटराहे दूसची संधान विश्ववंत निवेत्राका ज्ञानकर जात्राक न्या अफ्गानिस्तान और कन्दहारको भी खाली करके मौर्य सम्राट्वो समर्पण कर दिया। जो चार प्रान्त सिल्युकसने च द्रगुप्तको इस प्रकार दिये उनके नाम परोपिनसहाइ, अरिया, यखों शिया और गदरोशिया (कावुल, हिरात, कन्दहार और वल्विन्तान) थे। इसके अतिरिक्त कम्बोज (वदहशौं) और पामीर भी मौय सम्राट्के अधीन हुए। सिल्युकसने अपनी पुत्री हेलेनका विवाह भी मौर्य नरेराके (या उसके युवराजके साथ) कर दिया। चन्द्रगुप्तने भी मैत्रोके चिह्न स्वरूप उसे पाँच सौ हाथी भेंट किये। इम प्रकार अपनी बीग्ता और पराक्रमसे चन्द्रगुप्तने अपनी स्वभावसिद्ध प्राकृतिक सीमाओंसे वद्ध प्राय सम्पूर्ण भागतपर अपना एकच्छत्र आधिपत्य स्यापित कर लिया। इतनी पूर्णताके साथ समग्र भारतवर्षपर सम्मवतया आज तक अन्य किसी सम्राट्का, अँगरेजोंका मी, अधिकार नहीं हुआ।

इमी युद्धके परिणामस्वरूप मिल्युकसका मेगेस्थनोज नामक एक यूनानी राजदूत ई० पू० ३०३ में पाटलिपुत्रके दरवारमें आया, कुछ दिन यहाँ रहा और उसने राजा, उसकी दिनचर्या, राजधानी, शामनव्यवस्या, लोकदशा, रीति-रिवामी आदिका वर्णन किया जो कि भारतके तत्कालीन इतिहासका सर्वाधिक मुल्यवान् साधन वना । दुर्भाग्यसे मेगेस्यनीजके मृत्तान्त मूलत नष्ट हो गये, चिन्तु उसके दो-नीन सौ वर्ष बाद जिन यूनानी इतिहासकारोने भारतके सिकन्दर सेल्युकसकालीन इतिहास लिखे उन्हें वह प्राप्त थे, उन्होंके आधारपर और बहुषा उनके उद्धरणोसिहत ये इतिहास लिखे गये हैं अब मेगेस्थनोजकी साक्षी बहुत-कुछ अशोमें आधुनिक इतिहासकारोको भी प्राप्त हो गयी। मेगेस्यनीजने भारतवपके भूगोल. जातियो, प्राचीन अनुश्रुतियों, रीति-रिवाजों, जनताक उच्च चरित्र एव ईमानदारी, राजधानीकी सुन्दरता एव सुदृहता, सम्राट्के चरित्र एव दिनचर्या, उसकी न्यायप्रियता, राजनैतिक पटुता एव शासन-क्रुशलसा. विपुल चतुर्रागणी सैन्यशनित जिसमें चार लाख बीर सैनिक, नौ हजार हायी तया अनेक अद्य, रथ आदि थे और जिसका अनुशासन आदर्श था, प्रजाने

वायंत्रिक मा वरिष्य इयक, जिन्ही स्वयक्ती एवं स्वयंत्री काव वर्षं वृद्धारक विष्यां पानकांत्रीयाँ पुणकर व निरोधक कर्यो वर्षं क्यारत वर्षोंक कर्यांच्य कर्यांच्य द्वारांच्या स्वयंत्रीय स्वयंत्याय स्वयंत्रीय स्वयंत्रीयंत्रीय स्वयंत्रीय स्वयंत्रीय

भारिके विकासेको धना सैनार्जन कारतीय सनुभूतिगोछे चलकुछ और पानरा-आस रचारित एवं संपाणित बीर्य बाह्यस्परी बत्तव प्राप्ती-रास्त्यारा बहुत रुक्त कान हो बाता है। प्रशासी कन्य-मान स्थानारा स्थीत रखना, निर्देशियोके नवमानवनको नुबनाएँ बान्त करना नाय-सीक पूर्व वाजारका निवन्त्रक विविधाचा वर्तवालाई, राजाव बादि वर्ती दार्थे-को न्यस्त्य थी। देशका देखी दर्ज निरेशी स्थातार अहत बक्रत का अनेक प्रकारके क्योप-मन्त्रे नहीं होते में और राजा-प्रजा बोनी ही अलाना बन-वैजय प्रमाप से । निहानोगा राज्यमें बावर या । स्वतं ब्राह्मत बनवों दर्व काराजीती निर्माणत करके या कनके जात बाकर बालकाक वसावर्थ तेता या । मीरिकाके मक्यालयमें सन्दर्भ मारको काले प्रप्रवर्धी सेवसी के परिवादा है बड़ी बबुउदे बबुउ पर्वता बन्दून क्षेत्र मीर्व बन्नाहके सवीन या । विकित अन्त और सररान्त्रके वैश्वी यह क्षेत्र तीन विधानीमें निवस्त ना । बीने नेन्द्रीय कांक्सके अन्तर्वत को क्षेत्र का बहु विक्रित सहकाता ना मीर मनेक पत्रोंने विकासित या । निरस्त मीता एवं दीवा स्था साहि बैन मान्ति प्रतिकेति तुन्य क्लिके भी इस बसार्ज अन्य हुए हैं।

चलकुत मेर्स वर्गाचा थी था और कामुबोला निर्देश क्ली बाहर

नारतीय इतिहास न्य रहि

परता या । जैन अनुपूर्तियोमि ब्राह्मण माहित्यकी भौति उस सृपल या शृह नही यरन शद्ध शत्रियनु लोरपन्न फहा गया है । अत्यन्त प्राचीन निद्धान्त प्रन्य 'तिलीयपणाति'में उस उन मुकृटयद माण्टलिक सम्राटामें बा तम कहा गया है जिहोंने जिनदीक्षा लेपर असिम जीवन जैन मुनिके स्पमें व्यतीत किया या । वह आचार्य मद्रवाहकी परम्पराका अनुयायी या और उनका ही पदानुसरण करनेका इच्छुक था। अत ६० पू० २९८ में लगभग २५ वर्ष राज्य करनेथे उपराक्त अपने पुत्र विद्मारकी राज्य दकर यह मृति हो गया और दक्षिणकी और चला गया । सम्भवतया मुराष्ट्रके गिरि-नगरकी जिस गुफामे उसने कुछ दिन निवास किया था उस च द्रगुपत कहा जाने लगा । बहुमि यह फर्णाटक देशके श्रवणबेल्गोल स्थानमें पहेंचा । इसी स्थानपर भद्रवाह श्रवकेवलीने दह त्याग किया था। अत इस स्थानके एक पवतपर चाद्रगुष्त मुनिने भी तपस्या की और ई० प० २९० के रुगभग सल्लेखनापूर्वक देह न्याग किया । उनकी स्मृतिमे उसी समयसे वह पवत चन्द्रगिरि नामसे प्रसिद्ध हुआ। उसके कपर जिस गुफा (चन्द्रगुप्त यमित) में उन्होंने समाधिमरण किया या उसमें उनके चरण चिह्न वने हुए है। वहाँ लगभग देव सहस्र वर्ष प्राचीन वई एक शिलारेख भी अफित है जो इस सम्राट्के जीवनको उक्त महान् अन्तिम घटनाका उल्लेख करते है। इम नरेशके समयमें भारतवर्ष प्रथम बार अपनी राजनैतिक पूर्णता एव साम्राज्यिक एकताकी प्राप्त हुआ और मगघ माम्राज्य अपने चरमोत्कर्षपर पहेंचा या ।

च प्रगुप्तकं परचात नन्दसुता सुप्रभासे उत्पन्न उसका पुत्र विन्दुसार अमित्रपात (यूनानी छेखकाका लिम्ट्रोचेटिस) सिहासनाक्ट हुआ। ई० पू० २९८-२७३ पयन्त लगभग २५ वर्ष उसने राज्य किया। अपने पिता और मालाके समान वह भी जैनधमिनलम्बी रहा प्रतीत होता है। यह अपने प्रतापी पिताका योग्य उत्तराधिकारी था और उसके राज्य-कालमें साम्राज्यका विस्तार, धाक्त, समृद्धि एव प्रताप पूर्ववत् ही बने



पूर्व हाँ । आर । शामा गान्त्रीको उसकी एकमात्र प्रति प्राप्त हुई थो, तदुपरान्त ही विद्वानोने उसके सम्बचमें विशेष ऊहापोह प्रारम्भ को और उक्त प्रतिके आधारपर उसके मूलका समय ईसवी सन्की दूसरी-तोसरो शती निर्धारित किया। स्पष्ट है कि वह चाणक्यका मूल अर्थ-शाम्त्र न था।

लगभग ८२ वर्षकी आयुर्मे ई० पू० २९३ के लगभग महामित चाणमय-को मृत्यु हुई। बिद्धार अय स्वच्छन्द था किन्तु चन्द्रगुष्त और चाणक्यके अभिभावकत्वमें जिसकी शिक्षा-दोशा हुई हो वह निकम्मा या अशक्त शासक नहीं हो मकता था। उसका शासनकाल शान्तिपूर्ण एव सुव्यवस्थित रहा। मध्यएशियाक भारतीय-यूनानी सम्राटोंसे भी उसके राजनैतिक आदान प्रदान हुए। मिन्न, सीरिया आदिके यूनानी नरेशोंसे उसने मैत्रीपूर्ण सम्ब घ रखे। सिल्युकसके उत्तराधिकारी अन्तियोकस सोतरने उसकी राजसभामें डेइमेकस नामक यूनानी राजदूत मेजा था। मिन्न देशके राजा टालेमोने भी डायनिसयो नामक दूत भेजा था। इन राजाओंने उसके साथ नानाविष्ठ उपहार एव भेंटोका भी आदान-प्रदान किया। उसने यूनानी दार्शनिकोंको भारत आनेका निमन्त्रण दिया था।

च द्रगुप्तने दक्षिणकी विजय की यो किन्तु उसे मुसगठित और स्थायी करनेका अवसर उसे नहीं मिला था। विन्दुसारने भी दक्षिण यात्रा की। अपने कुल गुरु भद्रवाहुके ममाधिस्थान तथा अपने पिता मुनि चन्द्रगुप्तके दशन करने या सम्भव है उनकी मृत्युके उपरान्त उनकी तपोभूमि एव समाधिका दशन करनेके लिए दक्षिण देशको यात्रा करने जाना उमके व्यक्तिगत उद्देश्य थे, और विजित प्रदेशोपर मौर्य आधिषत्य स्थायो करना तथा पहली विजयसे छूट गय देशोंको भी विजय करके मागरसे सागर पर्यन्त सम्पूर्ण दिक्षणपर अधिकार करना उसके राजनैतिक लक्ष्य थे। और इन दोनों में हो वह सफल हुआ। भद्रवाहु एव चन्द्रगुष्तको तपोभूमि श्रवणवेल्गोलमें उसने कई एक जैन मन्दिर आदि भी निर्माण कराये बताये जाते हैं।

शिवारी दिव्यानदार राज्याचे अनुवारों किनुवार बोध्य राज्यांकी एवं अपने कीमतीन करेंद्रेर दिया ना । काद्य सामान अपने साम वीदर दिना कर ना । चाया की उपना समझ काद्या पार्युके वा बो बहुत दूरक और मोल पा । यह भी पाल्याचा है दिला गा। दिल्लार बीचन दिलीन त्वांत्रिया विद्या हुआ । यहने करेंद्रे एं राज्यान सामेट कादा कादा कर करने कहा ने मां अपने प्रेत हैंद्रे वासर नार्यायोग सामा दल करने कहा के सामान की साम-वन्ता कर (दल। उनकेन बद्धा कि वाहे न नाराहे की विद्योग है और यहने हमारी दिला दिलारा । कोचन सामान कहा है कि सामान है

विहोसी हो यहे हैं। राज्युन्तरन सामुजूरिन्तुर्वक बनको बान सुनी-कर बसावनो स्रवित क्षण दिवा और बदन बानुकी सहय है किसी साथ कर दिवा। हैं पू २०३ के स्वयत कमाद विज्ञान स्वित्वती को सुन्यु हुई। बीक्शन विकासकातके दश सामी सम्बद्धी स्वित्वती

िमुनाएक वराया बाता पूर सबोक धीर्तवासास्त्रका सर्विति हुन। सायुक्ति धीर्तवासास्त्रका सर्विति हुन। सायुक्ति धीर्तवासास्त्रि स्तृतार बात्री वराना साराव्यति हैं सार्वे वेदार्वा कार्या कार्या वेदार्वा कार्या वेदार्वा वेदार्वा कार्या कार्या वेदार्वा वेदार्वा कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्या कार्य कार्या कार्य कार्य

fafere wer & :

स्पुस्तम्मेटल हैं बोर तीन गुहाभिलेश हैं। गत लगमा मी यपों में इन विभिन्न शिलालेश क्यर पारवादय एवं पौर्वात्य प्राच्विवरों तथा इतिहामकारोंने पहुत-कुछ कहापोह किया है और उसके आधारपर सम्राट् बशोशके परित्र, व्यक्तित्व, विचारों, धर्में, राज्यवाल एवं शामन व्यवस्था आदिया निर्माण और उसकी महत्ताका मूल्यारन विया है। किन्तु इन शिलालेखोमें-से निवाय एक मास्की शिलालेखकों छोटकर अन्यत्र कही स्थय अशायका नामोल्लेख नहीं मिठता। केयल 'देवाशिय' या 'श्रियदर्शी' या 'देवानिप्रयन्य प्रियर्शीन राजा' आदि पद ही उसके सूचक मिनते हैं। जिस शिलालेखमें, सो भी वेवण एक ही वार, उसके मूल नामका उल्लेख हैं भी वह सम्बाध कारण (अशोकरसम क्य) में हैं और उसके आणे कुछ स्थान शृदित हैं जो पढ़ा नहीं जाता। ऐसे भी वर्ष विद्वान् हैं जो इन मब शिलालेखाकों केयल अशोक-द्वारा ही लिखाये गये नहीं मानते विस्ता उनमें से कुछका श्रेय उसके उत्तराधिकारी सम्प्रतिको देते हैं।

शिलालेश्वोसे अशाकको बौद्ध धर्ममा सर्यमहान् प्रतिपालक एवं भवत चित्रित करनेवाली बौद्ध अनुभृतियोका भी विशेष समर्थन नहीं होता। वस्तुत शिलालेखोंके आधारपर अशोकके धर्मको लेकर विद्वानोंमें सर्वाधिक मतमेद हैं। पुछ विद्वानोंके अनुसार वह बौद्ध था और बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके उद्देश्यसे ही उसने ये लेख लिखवाये थे। मुख्य अग्य विद्वानोंके अनुसार इन लेखोंके भाव और विचार बौद्धधर्मको अपेक्षा जैनधर्मके अधिक निकट हैं, उसका कुल-धर्म भी जन था अत वह भी यदि पूरे जोवन भर नहीं तो कममे कम उसके पूर्वाधर्में अवद्य जैन था। ऐसे भी विद्वान् हैं, और उन्हींको बहुलता होतो जाती हैं, जा यह मानते हैं कि वह न मुख्यत बौद्ध था न जैन चरन् एक नीतिपरायण महान् प्रजापालक मम्राट् था जिमने अपनी प्रजाका नैतिक उत्कर्ष करनेके हेतु अपना एक नवीन ममन्वयात्मक, अमाम्प्रदायिक एव ब्यावहारिक धर्म लोकके मम्मुन्व प्रस्तुत किया था।

हुए मी कार्त तान तरसार। चैन दूर बीड बनुपृतियों तथा मार्ड कर रिशामकं बनाय साम सम्लय करते हुए इन मरेकर बावन्यने को बार्य-स्यक्ष मुख्याएँ प्रशासने जाती हैं बतने बड़ा चळता है कि क्षत्री शाम मयोक भी मयोक पण्डायोक अयोक्षण्ड वा अवोक्षण्य था। हेनी-माजिप या जिनस्थी सबसी क्यांचरों थीं । विश्वकार साहि जनके पुर्वजीते तमा सन्त मी कई एक सारतीय बरेशोने में बन्धनियाँ बारम की प्रवेण होती है। बारते तिनाके सासन कासने वह करवेतीका सासक रहा वा और क्ती क्रमा निकास विदेशके एक वैत्रवर्गनकारी धेबीको कन्छके बक्ते विनाहतिना वा जिल्ले हुवान नामका पुत्र करवल हुवा या । लिपी मारने अस्तिन रिलॉर्ने संबोधने बर्धायकाने वर्धकर विदेशका की प्रवर्ष किया ना और वह प्रदेशका शासन-बार की बैंबाबा ना । इन्हों कारकीरें च्यू विमुत्तारके सुतीय स्थाप बाति कई क्योंने बन्देविक शोध्य बन्धा का यन क्लैफ कुम न होते हुए भी स्तित्वे छहे ही बनराव बकारी और बत्तराविकार बीता । जिल्लारकी मुलके धनरान्त इस अन्य भावपीने विशेष किया विश्व अधीकते बृहताके बाव बनका "का किया । सनीवर्ष मीर बनता मी क्वके बनुस्क की अतः बडी बनार क्या । किर मी बिद्युमारकी मृत्यु (ई० पू० २७४-७३) मे तीन-चार वर्ष थाद ही यह अपना राज्यानिपेक करानेमें समर्थ हुआ। उसन एम विलालेंगमें २०६ सम्याका उल्लेख हैं जिसक विद्वानीन अनेक अर्थ किये हैं। ऐसा प्रतीव होता ही कि इस सम्या-द्वारा उसन अपने राज्यारोहणकी तिथि उन समयमें प्रचलित महावीर सवत्में हो है जिसके अनुमार यह ई० पू० २७१-७० में पहती है। बौद्ध कथाओंका तो कहना है वि उसने अपने ९९ भाइयोकी हत्या करके अपना चण्ड अजाम नाम सार्थक किया या और राज्य प्राप्त विया था। किन्तु यह कथन अतिदायोकित पूण हो नहीं प्राय असस्य समझा जाता है। इसमें सन्दह नहीं कि प्रारम्ममें वह उस प्रकृतिका कृत निद्म्यो एवं कठोर जायक था। अपने स्वयके नाइयोका तया अन्य विराधियोका उसने दृढतासे दमन किया था, किन्तु उसने हता हो कि प्रारम्ममें वह उस प्रकृतिका कृत निद्म्यो एवं कठोर जायक था। अपने स्वयके नाइयोका तया अन्य विरोधियोका उसने दृढतासे दमन किया था, किन्तु तथावत क्रिकेशाम नहीं।

उसने षुद्रालता और कठोरतासे घासन किया, अपन घासनाधिनारियो एव अधीन राजाओपर पूरा नियन्त्रण रथा, जिसने सिर उठाया
उसे ही बुचल दिया। किलग देशको विजय नियर्थनने ई० पू० ४२८में
को थो, तभोने यह राज्य मगधके अधीन रहता आया या, किन्तु ऐमा
प्रतीन हाता है कि नन्दराज्यक्षातिके समय मगधमें आन्तरिक कलहको
दिखकर किलगक राजे स्त्रसन्त्र हा गय। सम्भवत चन्द्रगृत और विन्दुसारके घामनकालोंमें उन्होंने पुले रूपमें सिर नहीं उठाया, किन्तु विन्दुसारकी मृत्युके उपरान्त होनेवाले गृह-युद्धका लाभ उठाकर उन्होंने मगधवे
विकद्ध अपनी स्वतन्त्रता मुल्लम-खुल्ला घोषित कर दी। अत ई० पू०
२६२ के लगमग अपने राज्यथे ८वें धर्षमें एक मारो मेना लेकर अधीकने
किलगपर आक्रमण कर दिया। भोषण युद्ध हुआ जिसमें लाखो व्यक्ति
मृयुके घाट उत्तर गये। सर्वत्र प्रचण्ड अधोक महान्वा दवदवा बैठ
गया, अव भविष्यमें पचासो वर्षो पर्यन्त कहीं कोई मौर्य सम्राट्के विरुद्ध
सिर उठानेका साहस नहीं कर सकता था। किन्तु साथ ही इम मयकर

बर-संद्रारको देखकर बशक्तक कैन वर्गके संस्तारोमें तके योज योजनी बाज्या शिक्तिका करें। वर्गके मंत्रका कर तो कि वर्गक्यों का मूर्ति एकंच रिक्त पूर्वता। वर्गके सब बावकाक्या थी न वी। वर्मुके वारत-वर्गकर वी गारी बक्के बहुद बीजन्त परेबहरर वी बक्का निकासक एकारिकार था।

धावन-स्वत्त्वा मुभाव भी धामाण्यमें वर्षत चाल्ति और वर्ग्नि ^{बी} क्षतः सब क्षत्रहरे वपना स्नान कान्तिपूर्व कार्नोकी और दिया। न्युन्धे बीर पद्मीके बिए विकित्सावन सुक्रमाने नराने राज्यांकी घरमार बीर नयीना निर्माण करावा सहकोके किनारे वृक्ष करानाये, निर्माण शामार्थे बनवाधी इत्यादि सबस बोकोपवारी कार्व क्लबे किने । वहने बनताके नैतिक परिचको समूत करवेका स्रोजवान किया और धनरें बसाम्बदाविक जनोम्हित पैदा करनेके किए एक ऐने राज्य-वर्धका प्रचार किया थी न्यान्द्रारिक एवं सर्वद्वाद्वा गा । क्वमे अनगी और वाहानी धेली हो क्योंके विद्वालीका बावर किया काहे विचार-दिवर्ष किया बीर चनका करपंत्र किया। कतने मर्मनावाओ और वार्मेस्तवोत्त्री वी भीजपा की : पासालको दिवस स्वातीको सत्तवे बाधा की सीर कैंद. बीज और सम्बन्धान प्राप्ताच प्रस्पराने मी सोचों वर्ष वर्जनीय स्वामीको देखा । विविध कर्ती एवं कामपार्वीचे कामन्त्रित बंदवाओं, जाजनी, कर्री भीर समीका की निरोक्तक किया । जिसमें बढ़ों को स्वारकी जासनकर्ता देशी वर्षे जेरभा-हास जनना झालून-हास करानेका प्रजल किना। बीयरम भीर व्यापकारिक व्यक्तिको करूने बनना नवसन्य बनावा और बनने पर्वता ्रकातावें प्रचार करनेके किए प्रक्रिय-गाँवय गीर्थ स्वानी एवं केन्द्रीयें वचने क्रिकी सर्वातां विकासक्त्रों एवं स्वत्योगर पत्त्रीमें करवाती । वे व्यक्तिक करने हैं पु २५५ के प्रयान्त निक्रनिक सक्तोने किक्नाने हरीय होते हैं । यस्त्रे अन्यक्रियोलाक्ष्ये कार्यसम्बे आजीवन शास्त्रीये क्रिय भी बचाडे निक्य 'वर्रवर' नामक च्याडिकोनर नुकाएँ कावानी में।

गिरिनगरको तलहटोमें अपने जितामह माद्रगुप्त-द्वारा बनवाये गये सुदर्शन तालका भी अपने यवन अधिकारी तुहवाम्फको देख-रेसमें उगने जीर्णोद्धार कराया था।

ऐमा प्रतीत हाता है कि फलिंग युद्धके आग-पास अशोकने एक बौद सुन्दरीके माथ जिसका नाम सम्मवतया तिष्यरक्षिता या विदाह कर लिया या । यह स्वयं इस समय थघेट ययका या । इस बीद्ध रानीके प्रभावमें वह मुछ अधिक वाया और उसको प्रमन्न करनक लिए मम्भवत औढ धर्ममें भी कुछ विशेष दिलचस्पी लेने लगा जिसके कारण बौद्ध लोग यह समजने लगे कि यह बीद धमका अनुयायो हा गया । सम्प्रतिकया खादि क्याओंस पता चलता है कि उसका ब्येष्ट पुत्र युवराज मुणाल बहुत ही सुन्दर था और उमको और्ये कृणाल पक्षीके समान अत्यधिक आकषक थीं। उसकी विमाना तिष्यरक्षिया उमपर मोहित हो गयी फिन्तु राजकुमार सदाचारी था अत रानो अपना कुचेष्टाआमें विफल हुई। प्रतिहिसासे दग्य रानीनी पह्यात्र करके सम्रादकी मुद्रासे अकित एक आज्ञा भिजवाकर बुणालकी अन्या करवा दिया । पुणाल कुशल सगीतश भी या अत वह भिखारीके वैपमें राजधानीमें बाया और समाटके महलवे नीचे गाने लगा। गीसकी मिस उसने अपना पिन्चय और स्वयपर किये गये अत्यानारका भी सकेत किया । सम्राट्ने उसे पहचानकर तुरत वुलाया, सब हाल जानकर तिष्य-रक्षिताको जीते जी जलवा दिया, उसके साथिया एव सह्योगियोको भी फठोर दण्ड दिया, उसे स्वयं वहा पदचात्ताप हुआ और उसने कृणालके नवजात विश्व सम्प्रतिको अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

इसी ममयके लगभग पाटलिपुत्रमें भीग्गलायन तिस्सकी बध्यक्षतामें तीसरा बौद्ध सम्मेलन एवं त्रिपिटककी सगीति हुई। मम्मेलनके नेताओंने यह निर्णय किया कि बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके लिए बौद्ध भिक्षुओंको त्रिदेशामें जाना चाहिए। अत वर्मा, तिब्बत, मध्यएशिया, लका आदिमें बौद्ध प्रचारक गये। लका (सिहल) में उस समय विजयवंशी नरेश केपस्तित हिन्त पारत बारा पर। यह बढ़ाए बारीको है जान दें।
बारि बारान-बार-दार्श की वाकार बारो हुए था। वहने करको
बारे हुए बीद क्वारतीय किसे वाकार बारो हुए था। वहने करको
बारे हुए बीद क्वारतीय किसे हैं मा रार्थ कराइ है हुए बोर की रूपी
स्विध्य के जारर स्वारत हिना। मेश बीर सर्वविध्य जारकार्य स्वीकेद करों की क्वारतीय हुए हुए बुला हुए के इसे वह क्यारिक से स्वीक की वान् वहर्ग बढ़ाने सार्याश कर्या कर्या क्यारता की स्वीक्ष क्रील मेरी है। हिन्तु बीद क्यां क्यारतीय स्वारता की यो बीरा मेरी है। हिन्तु बीद क्यां क्यारतीय क्यार कर्य के विकास क्यार्थ की बिरा मार्थ की बनद दाए ८८ जुन दिनों कराई की स्वीक्ष पर सान्न क्या बुला सार्थित वह बीरा क्यारता की स्वीक्ष करकार क्यार्थ क्यारता वाली क्यारता क्यां क्यारता कर हिया सार्यास बारिक की बिरा दियां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां कर हिया क्यां क्या

बनुत्र बारीय समान्यों सेंद्र बनावारीओं हिन्देश निवास मेंद्र गिर्मा कर परिवर्तना मेंद्र कि सार्वा कर स्थित है। यो अपना कर स्थानित कर सार्वा मेंद्र कि या अपना कर मेंद्र कर सार्वा मेंद्र के सार्वा कर मेंद्र कर सार्वा मेंद्र के सार्वा मेंद्र कर सार्वा मेंद्र के सार्व मेंद्र कर सार्वा मेंद्र कर मेंद्र कि सार्व मेंद्र कर मेंद्र कि सार्व मेंद्र कर मार्व मेंद्र कर मेंद्र कि सार्व मेंद्र कर मार्व मेंद्य कर मेंद्र मेंद्र कर मार्व मेंद्र कर मेंद्र मेंद्र कर मार्व मेंद्र कर मेंद्र मेंद्र कर मार्व मेंद्र कर मार्व मेंद्र कर मेंद्र मेंद्र कर मेंद्र मेंद

अर्थशास्त्रमें दिये गये पवित्र दिनो एव जैन परम्पराके पर्व दिनोंसे प्राय परी तरह मेल खाते हैं। शिलालेखोमें उसके द्वारा निग्रन्थों (नग्न जैन मुनियों) का विशेष रूपसे आदर करनेके उल्लेख हैं। ये उल्लेख अल्प-सल्यक इस कारणसे हैं कि उत्तर भारतके मगध आदि देशोमें इन नग्न दिगम्बर मुनियोका विहार अशोकके समयमें अपेक्षाकृत विररु था, दक्षिण देशमें उनका वाहल्य था। मगयका जो जैन सघ इस कालमे प्रवल होता जा रहा था वह स्थूलभद्रकी परम्पराका था और खण्डवस्त्रधारी हो चला था । सामा य श्रमण शब्दसे सब प्रकारके जैन सायुऑका बोघ होता ही था। राजतरिंगणो एव आइनेअकबरीके अनुसार अशोकने कश्मीरमें जैन धर्मका प्रवेश किया था और इस कार्यमें उसने अपने पिता विन्दुसार तथा पितामह चन्द्रगुप्तका अनुकरण किया था। कश्मीरके श्रोनगरको बमानेका श्रेय भी अशोकको ही दिया जाता है। वह नैपाल भो गया था और वहाँ उसने ललितपट्टन नामक नगर बसाया था। उसकी पुत्री चारुमती एव जामाता देवपाल वही जाकर वस गये। कर्णाटकके श्रवणबेलगोलमें उसने जैन मन्दिरोंका निर्माण कराया बताया जाता है। इस विषयमें अनेक विद्वानोंको सन्देह नहीं है कि अशोक जैनधर्मके दगामूलक उपदेशोंसे प्रभावित या। उसका कुल परम्परा धर्म जैनधर्म था हो। अपने जीवनके अन्तिम कुछ वर्षामें उसने राज्य कार्यमे विरत होकर एक त्यागी गृहस्य या यती श्रावककी भौति जीवन विताया प्रतीत होता है। इस कालमें उमकी दानशीलता अतिशयको पहुँच गयी बतायी जाती है जिसके कारण अमात्योने उसपर प्रतिवन्ध लगा दिये। राज्यकार्य कृणाल करता था। ई॰ प॰ २३४ या २३२ में लगभग ४० वर्ष राज्य करनेके उपरान्त अशोब-की मृत्यु हुई। कुछ लोग उसकी मृत्यु तक्षशिलामें हुई बताते हैं।

इसमें सन्देह नहीं कि सम्राट् अशोकका स्थान विश्वके सर्वमहान् नरेशोमें हैं। उसका साम्राज्य अतिविस्तृत एव अत्यन्त समृद्ध, उसका शासन-काल मुख एव शान्तिपूर्ण, उसका व्यक्तित्व महान् और उसकी प्रतिभा र्शं क्यार कार्यन में । यह नहीं कार्यन वाहय वाहये नवाहर कार्या वा और यून विद्यान कार्यासार्थ | रिज्यू पर्ववाद पूरा कार्यास्त्र नवेदीरात कार्याहित्या कीर्य यह वार्यास्त्र कार्याहित्य वार्याहित्यास्त्र में एकत बार्याणिक वार्याहित कार्याहित कार्याहित्य क्लिके होतेगोले कार्या व्यवहरू पृत्याहित कार्याहित कार्याहित कार्याहित कार्योहित कार्याहित्य व्यवहरू विश्वास कार्याहित कार्या

न्यायात्रण सन्तरिवर्शने हुन्या विन्तुं केन ने तेल वा नव उत्तरी स्थान विन्ता वि

स्वाराम्य भाषा हूं स्वाराम्य प्रकारित नेवाद्यं दिवतायोक्ते हैं यू १११वें हैं पू १११वें हो स्वाराम्य स्वार

भारतीय इतिहास एक दक्ति

है जैन अनुश्रुतिके अनुसार मम्प्रितिने जैन धर्मके लिए उसमे गुछ अधिक ही विया बताया जाता है। अनेक तीधोंकी वन्दना, जीणोंद्वार, अनिगतत नवीन जिनमन्दिरो एव मूर्तियोंका विभिन्न स्थानोमें निर्माण तथा प्रतिष्ठा, विद्योंमें जैन धर्मक प्रचारके लिए प्रधारय भेजना, धर्मोत्मवीका मनाना, साम्राज्य-मरमें अहिसा प्रधान जैनाधारका प्रसार परना इत्यादि अनेक कार्योक्ता श्रेय इम सम्राट्नो दिया जाता है। विन्सेण्ट स्मिथव अनुसार उसने अरब और ईरानमें भी जैन मस्कृतिके के इस्थापित किये थे। प्रो० जयच द्र विद्यालकारके अनुसार "चाहे चद्रगुष्तके चाहे सम्प्रतिके ममयमें जैन धर्मकी युनियाद तिमल मारतके नये राज्योमें भी जा जमी, इसमें सन्देह नही। उत्तर पित्वमके अनार्य देशामें भी मम्प्रतिके समयमें जैन प्रचारक भेजे गये और वहाँ जैन साधुओंके लिए अनेक विहार स्थापित किये गये। अशीक और सम्प्रति दोनोंके पायसे भारतीय सस्कृति एक विदय सस्कृति वन गयी और आर्यवर्तका प्रमाव भारतकी सीमाआंके बाहर सक पहुँच गया।

वदीकिकी तरह उसके इस पोतेने भा अनेक इमारतें बनवायों। राज-पूतानेकी कई जैन कलाकृतियां उसके समयको कही जाती हैं। जैन लेखकों-फ अनुसार सम्प्रति समूचे भारतका स्थामी था। कई विद्वानोका यह भी मत हैं कि अशोकके नामसे प्रचिलत शिलालेखोनें-से अनेक सम्प्रति-दारा उत्कीण कराये गये हो सकते हैं। अशोकको अपने इस पौप्रसे अत्यधिक स्नेह था, इसी कारण उसने इसे अपना उत्तराधिकारों भी बनाया था। उनका कहना है कि अशोकको उपाधि देवानाप्रिय थी और सम्प्रतिको वह प्रयद्यान् कहता था अत जिन शिलालेखामें 'देवाना प्रियस्य प्रियद्यान राजा'-द्वारा उनके लिखाये जानेका उल्लेख है वे सम्भवतया सम्प्रतिके हैं, विशेषकर उनमें-से भी वे शिलालेख जिनमें जीवहिंसा निपध एव धर्मोत्सवा आदिका वणन है।

जैन साहित्य, विशेषकर स्वेताम्बर परम्नराके ग्राचों यथा परिशिष्टपर्व, सम्प्रतिकथा, आदिमें सम्राट् सम्प्रतिके विषयमें बहुत-कुछ लिखा मिलता

है। इन नरेवड़े कई स्तियों और पुत्र-पृथ्वियों भी । बीह बनुप्रतिरोज मी टब बरेक्टर क्ष्मेज जिल्हा है। दिवरशी राजाके नामने प्रचलिन विद्य-केलोडे बाजारपर यनके कनी गरेगके बाद्य वर्गसालक मधीलन बाइबॉर्फ अनुनार इत्र नदानारमुन राम्य स्वारित करनके प्रयत्नोके तिए वन रावाची नुस्त्रा बीरश्च तर्वाश्च मिनश्चा त्रान्त इक्टाइसक नमाह स्टाउ एवं नुकेनलनं की बाती है विजयमंत्री इन प्रशास्त्र प्रथम देतके किए जा बने एक स्वातीय बनकी स्वितिय बटाकर विश्ववर्ध बतनेने महाबंध हो बनवा गुमना ईनाई नतके तिथ् विवे वय नबाट् काल्टेक्टाइन-के बबलोन को जाती है। सपनी सार्थिकता वर्ष परिच विचारोंके निय बहु रोजन सम्राट् धारकन कार्रीनवतका व्यवस विकास है, बन्ते शाकारर किन्तार एवं कानल प्रवासीने बंद मार्न्जनेन जहालके समयक्ष है अनेसी कोबी नरस पुनरायृतियाने पूर्व प्रस्तराद्धित प्रसाध्ययामें स्थानवेषशी मैना स्वतित होती है। बनेफ गांठान यह खारीचा उत्तर बोर नवन क्रमाद बक्दरके नगान था । निरमके नमकाबीन बहान नरेग्राको नोटिये इन प्रकार परिवर्णित का भारतीय समार नाहे वह समीक हो या बस्पीत क्षवदा शहानीते दोनी ही नवल क्यन हो। बारहीय हरिहाहक बीरव हैं और चंद्रेने ।

करनम् भे चा वन्ने नागम् रामा दिना । वन्ने वक्ते वीतराम् वान्यो भी वन्नो निवासम्मा ही बाराम हो बना चा वन्ने स्थापिक मीना नाशि वन्ने कुमाने हा वान्यान का राज्यनाव कर साम्या नीममिना वर्षा तिथा वाने हो बहुना राज्यनाव ५६ स्थापिक वर्षा त्या नीमिना वर्षा तिथा वाने हो बहुना है। समय श्री हो भी वेन समूर्णानी वर्षास्त्र है। निवासी सीहाबरार हास्त्राव स्थाप राज्यनाम ५५ स्थाप स्थापित है।

दे ५ १९ के समयन ६ नवती बादुने सम्प्रीताहर मृत्यु हुई।

नम्प्रतिके वरापना वक्तम पुत्र वास्त्रपुत्र वर्णनीके निहासकार वैद्याः स्त्रु यो करने रिकाएवं मन्त्र पूर्वजनी वर्णन वैत्र वर्णना स्नुतारी था। इसने भी दूर-दूर तक जैन घर्मका प्रचार किया बताया जाता है। इसने अल्पकाल हो राज्य किया। इसके उपरान्त यूपमेन, पुण्यवमम् आदि कुछ अन्य राजे हए और उज्जैनीमें १४८ यपके उपरान्त ई० पू० १६४ में भीर्य बदाका अन्त हो गया।

मगधमें दशरयके पश्पात् देशवमन्, मनधनुष और बृहद्रय सादि राजे हए। इनमें-से एम-आध राजा प्रजापीडक मी था। अतिम नरेश बुहुद्रथनी इसके बाह्यण मात्रो पुष्यमित्र शुगने घी बेमे हत्या करके राज्यसिहासन-पर अपना अधिकार कर लिया, और इम प्रकार मगवमें लगभग १३७ या १३३ वर्ष बाद ई० पू० १८४में मौर्य वशका अत हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि सम्प्रतिके घामन कालमें ही ई० पु० २०४के लगभग मोर्य माम्राज्यकी एकता भग होने लगी यो और कममे कम वे प्रदश जिनपर मौर्यवशके ही राजपुरुष प्रातीय शासक ये स्वताव हान लगे थे। यही कारण है कि कुछ जैन अनुवृतियामें मौर्यवशका काल १०८ वप भी दिया है। करमोरमें सम्प्रतिका नाई या चाचा जालक (जलोक) स्वतन्त्र हुआ, कुछके अनुसार वह जैनी या और युष्टके अनुमार धैत्र। उसने म्लेच्छांके, जो सम्भवतया यूनानी थे, आक्रमणमे देशको मुक्त किया बताया जाता है। कान्यरूटज पर्यन्त उमने अपने राज्यका विस्तार कर लिया था। गान्धारपर वीरसेनका राज्य था जिमका उत्तराधिकारी सुभगमेन था। इसने यूनानी नरेश अन्तियोक महान्के साथ पुयवर्ती मीर्यो की भौति मैत्री सम्बाय स्यापित किये थे। युनानी यूथाडेमस और उसके उत्तराधिकारियाने इस शास्त्राका अत किया। ... कुछ छोटे-छोटे मीय राजे मगघ, परिचमी भारत, राजस्यान, सानदेश, -काकण आदिके द्रुष्ठ भागोर्मे बहुत पीछे तक राज्य करते रहे । कलिंगमें चैत्र या चेदिवणका उदय हो चुका था। दूसरी शती ई० पू० के पूर्वार्थमें कॉलग चक्रवर्ती सम्राट् ारवेलके कालने उसका चरमोरकर्प हुआ। दक्षिणमें आ प्रवंशका उत्थान हुआ। इस प्रकार मौर्य वदाके साथ-ही-साथ मगध साम्राज्यका भी अवसान हो गया ।

बनके है न १८४ तर अवस्य ११३ वर्ष नरेन मेन बंदरा कावर ता कि इ कार्रिकेश प्रवृत्ति है व १६४ में अर सब अवसर र बा परन्ता रहा इब बंधवार बार पूर्वांका कार बाराय का वसने बीड़ा का र सरमोत को अन्त्रपार दिने बक्तवे मार्न है । संबद न इन्होलनामन्द्रश्चापः जर का बहुनाय है । वर्डमीन स्वीत प्रारा वर्षि । अक्षाप्रधान । प्रधान । अगमून को स्वनादवी वार्व-में तकाई बाधान हो। बाल्यां राजास्त्रका प्रशासाल का बड़ा निर्मान रिल किया बारा है। इता कामब रिल और किन्तुकी पक्षा तथा पीरानिक erme an ferie er neur un'n ernit ge etud urefren भी दिना बताबा माता है विश्व वह अनवे विकता बारत हथा इस रिकास मान्देर है। एक का नुवास्त्रन (अन्त है न १) के नुव एक कुलारिकारी बरानी । रहा हिर्देशकार्थ कर बार बच दिवा और माध्योत्रका वर्ष बारण वर्षमा प्रदेशको तीर बाचा । दूसरी और वृतिक हरेस बारदेशन सम्बद्ध बाह्यम दिया । बह लंब बरेशके दैन ्रिक्त कार का चनदा आपनेत करना तो उने महा स बा। सङ् आरहेकने नमय मरेयको पराजित दिया और क्षा बानिजको विकास सरके ania milifacet fan nieuret epriere & met an un un unteren

बहीत स्वाधिकारों किया तांच्या कर्या नामून के सादा कर यह स्वाध्यक्त के बादा कर पूर्व क्षाप्य कर्या कर क्षाप्य कर कराईक दाएस हों। स्वाध्यक हिंदि का प्रदान किया कर कराईक दाएस हो क्षाप्य के क्षाप्य के क्षाप्य कर कराईक दाएस हो क्षाप्य कर क्षाप्य कर क्षाप्य कर कराईक दाएस हो कराई कराईक हो कराईक है। क्षाप्य कर है। क्षाप्य कराईक है।

क्षापने गो है पू ७६००६ के सरवन अस्तिन शुंत गरेयके जाहान क मारतीय इसिटान : एक रहि मन्त्री वसुरेव कन्वने अपने स्वामीका वद्य करके राज्य हस्तगत कर लिया। ४५ वर्ष तक (ई० पू० २८ तक) कण्य वशका मगवपर अधिकार रहा। ये एक गौण स्थितिके राजे रहे।

ग्ग वशमें दस और कण्य वशमें चार राजे हुए वताये जाते हैं। अपने मालविकाग्निमित्र नाटकमें महाकवि कालिदासने शुगवशी अग्निमित्र-को अमर बना दिया है। शुग-फण्यकालमें मगध हतप्रभ या और विदेशी यूनानी, पह्नव, शक आदिको भारतमें राज्य स्थापन करनेका अवसर मिल गया । डेढ सौ वर्षके इस युगकी सबसे वडी देन यही हैं कि वर्तमान हिन्दूधर्मकी रूप-रेखा इसी कालमें बनी, मनुस्मृति, रामायण, महाभारस तथा पुराणोका सकलन प्रारम्म हुआ और हिन्दूओंकी धार्मिक अनुभूति एव प्राचीन रचनाएँ लिपिवद्ध होने लगीं तथा नवीन साहित्य रचा जाने लगा। श्रमण सस्कृति तथा चसके जैन, बौद्धादि धर्मीके साथ समन्वर करके हिन्दूधर्म एक नवीन रूपमें उदय हुआ। देवी-देवताओकी मिन एव उपासना, मृतिपना, जीव दया आदि इसके प्रधान अग थे। मनुस्मृति आदि धर्मशास्त्रोंके द्वारा सामाजिक जीवनका नियमन करना भी इस मुगं याह्मण सुवारकोने आरम्भ **किया। इ**स बाह्मण पुनरु**द्धार आ**न्दोलनः परिणाम-स्वरूप मगघ एव मध्यदेशमें बौद्ध और जैनधर्म भी धिनतही एव अवनत होते चले गये। जैनधर्मके तो सुदुद केन्द्र कर्णाटक, मध्यमारत सौराष्ट्र, कॉलग, मयुरा मादिमें स्यापित हो चुके ये और वह वहाँ फलत फुनता सप्राण बना रहा, किन्तु बौद्ध धर्मको विदेशोका तथा यवन, शः क्पाण, हण आदि विदेशी शासकों और उनके द्वारा शासित प्रदेशोंका प्रधान साम्रय रह गया।

अध्याय ४

प्राचीन धुग-वृतीय पाइ

सीर्व बालाव्यके पासके सामनी-पास, विदेशकर शुंक-बण्य पुतर्ने सीम बालाव्य धर्मसार्थ एक बाद करवर्षे बार्टी कथा पूर्व-शिवले बस्तियक सैन

चत्तरभारत (**१ प्**०२ ०**-१ सन्**३००)

(विद्य) वेस बचारी प्रीवारात्में बारधार्थीय संक्रायात्म वंत के बहर त्रीपार्थ बंदर, एवं पहुत्र पूराव मारि विशेषों व्यक्ति । एकं मंत्रितिक पूर्व दोनार्थ चेता पायप्त वेसक बारहा व्यक्ति के के ले हैं । एमं में मोर्च प्री वाद्य एवं मार्चार्थ हैं है, कार प्रीवि मंत्रितिक सुद्ध मार्च के ले ले हैं एवं का एक्स में वे के प्राप्त के में मूर्य क्या कर्य पूरा पूर्णिय मार्चि में प्राप्त के मार्च में मार्च वर्ष मार्च कर्य यहि विश्वारित होत्य एमंच्याची मोर्च पर्व मार्च में मार्च में में हो पोर्च हो एम्बरान्स के मार्च मार्च स्थाना क्या कर्यों में स्थान में यह पर्व में भी र क्लावर वह स्थाव मार्च स्थान क्या क्या मार्च मार्च स्थान एक्सीक होत्यों में होने में से मार्च में स्थान होता क्या मार्च मार्च स्थान स्थान

एरं कारवारोंने बंगन होते नहें बहै । पर्याप्त तो बातामा प्रांत्यांत्रिके कांत्रके पेत पंचा परा पर्याप्त केंत्र कार, व्याप्तिकार वार्त्यके कारते हैं कु २ --१५ के कारवर प्रााणिकारी वार्व्याप्तिकारीयीर प्राणीनीय हार्कपुण्या वार्तिक के विकासी एरं कार पुण्याप्तिक कार्योणी वह कार्युक्त क्रियाणकारीया प्राच कार्याक्त कार्योप्तिकार विकास वार्त्यकार वार्त्यकार वार्त्यकार

आन्ध्र-सातवाहन-दूधरी शनित आध्र जातिके सातवाहन वशको षी । आप्त्रोंका सर्वप्रथम उल्लेख ऐतरेय याह्मणमें मिलता है । यहाँ इनकी गणना पण्ड, शबर, पुलिन्द, मुतिब आदि जाति बाह्य नीच व्यक्तियों या दस्यवोमें को गयी है और इन्हें अनाय कहा गया है। कि तू प्रथम शती ई॰ का रोमन इतिहासकार प्लिनि आन्धोंका एक शवितशाली जातिके रूपमे उल्लेख करता है जिसका विस्तृत साम्राज्य दक्षिणापदपर या और जिसके पास एक लाख पैदन दो हजार अध्यारोही और एक हजार हाधियोकी भारी सेना थी। प्रतिष्ठानपुर या पैठन इनकी राजधानी थी। ऐसा प्रतीत होता है कि शुगकालके प्रारम्भमें ही प्रियदर्शिक शिलाछेखोंमें चिल्लिखत दक्षिण देशवासो भोजक, पैठिनिक, रिट्टक, पुलन्दि आदि जातियाँ आप्र जातिके सातवाहन कुरुको अधीनतामें सगठित हो गयी थीं। ये साववाहन ब्राह्मण एव नाग रक्तिमिश्रणसे उत्पन्न हुए ये यद्यपि वे अपने-आपको याह्मण ही कहते थे और अपने छिए 'एक ब्राह्मण', 'खत्तियदपमानमदन' आदि विशेषण प्रयुवन करते थे। मत्स्यपुराणमें इस कुलमें ३० राजा हुए बताये हैं जिन्होंने ४६० वर्ष राज्य किया। अन्य पुराणोमें १७, १८ या १९ राजा तथा उनका राज्यकाल ३०० वर्ष वताया है। सिमुक इस वशका प्रयम राजा बताया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि तीसरी मती ई॰ पु॰ के अन्तके लगभग सिमुकने पैठनमें अपना राज्य स्थापित कर लिया या। सम्प्रतिकी मृत्युके उपरान्त इस राज्यकी शक्ति बढने लगी। जैन अनुश्रतिके अनुसार सिमुकने २३ वर्ष राज्य किया कि तु अपने अतिम वर्षों वह दूष्ट और दुराचारी हो गया था जिसके कारण उसे गृहीसे उतारकर उसका बध कर दिया गया और उसका भाई कन्ह राजा हुआ। उसने नासिक पर्यात अपने राज्यका विस्तार कर लिया। तीसरा राजा शातकर्णी प्रयम बहुत महस्वानाक्षी था, नानाघाटपर उसने अपनी मृति स्थापित की थी, पहिचमी मालवाकी विजय कर ली थी और शुगों मुद्ध किया था। उसने राजसूय और अध्वमेध यज्ञ भी किये थे। वृद्धिन पहनती बारवेडने क्षेत्रे वर्धावत करके क्षत्री बहत्त्वकांकार्वे वार्ध ही और क्लके 'प्रक्रियापयत्रम्' एवं 'कत्रतिहत्तरम्' मादि विक्शेकी व्यर्वे किया । क्शकी विकास परनी माननिका न्हारा क्रियाचे कर्ने क्रियाचेत्र से प्रवर्षे राज्यकामा कुछ पता प्रवता है । क्रम रामा मारामणी विदेश क्ष दिल्ली ५६ वर्ष राज्य किया नताना नाता है । क्षत्री कम्प नेवका नार कर दिया और पूर्वी पालना बनौत निरिद्या शालाको विवय कर किया। शतानी राजा सुप्रविद्ध संवद्देश रचतिया हास ना शास्त्रियाह्व ना । प्रवि क्षत्रके बक्ष-सहराय भूमक जक्राय मान्ति शासनाहरोके प्रतिकारी हरे बीर बार्वीने सामग्राम अस्तिके बढनेवे बाना हो । हामका एका र रथ है के बनान बनाता जाता है। हारुके बाद चार-तीन बराकानीन निर्मय राजे हर और फिर बीतगीतम बातकर्थी बहोतर बैठा । यह रन बंदका दर्शीयक जतारी गरेंद्र या । यक्त-बहुएत बहुपल बदका अपन प्रतिहत्त्वी या । मोतमीनुषमे वते वृत्ते वत्त्व प्रशस्तित किन्ता । किन्तु गर्ह-भागके क्यरान्त करके मानी वक्षीमदिक और चन्ननके श्रीराज्यके करून मेंच की और शकी बीर सार्वनाइगोके साथ बुद्ध कारी रखा । प्राप्तनाइगों और क्षपारीका नह प्रशिक्षक क्ष्मका एक को वर्ष प्रश्नेत बळा जितके क्रपानका बहुते बातवासन यंग्र और फिर समर संग्र को मों हो। समान्त हो वर्षे । बीतबीपुरका तहन प्रवस बतान्ये हैं का क्यापर्व है। क्याकी मृत्युके बनरान्त क्लका पुत्र की पुलुसमी पाना हुना किश्वके राज्यके १९वें वसमें अक्तमें निवासी मीतनी बनबीने पाविकनें एक स्वश्न विकासित कियापाना था । यह देख गीतनीत्तर चालकर्मीको प्रकृति बहुकाला है और इस्कें वर्ते बक-महार-वरनेत्रा बंदारक्षणी बताना नवा है क्ल बबके प्रधान और निजरोत्ता वर्तन्त्र किया गया है । पुत्रवीके बन्दमी शहबहुत बंबी सन्दर्भ

र इस निराण कार्यकारी केवाचे तिने काम सती है यू का कार्यार्थ निर्माण करते हैं। का भारत्यार्थ पर सामकार्थ विशेषको कार्य होती। वालीय हरिशाय पुरु रहि

मालना एव पश्चिमी राजस्यानपर भी अधिकार कर लिया था। उसके उत्तराधिकारी घातकर्णी तृतीयके साथ क्षत्रप चृद्रदामन्की कन्याका विवाह हुआ था, किन्तु क्षत्रप-सातवाहन सधर्पका अन्त नहीं हुआ। अन्तिम नरेशोंमें यज्ञश्री घातकर्णी अधिक प्रसिद्ध है। उसके चौदीके सिक्के प्राप्त हुए हैं जिनमें क्षत्रपोका अनुकरण पाया जाता है। इस वैद्यका अन्तिम ज्ञात नरेश श्री पुलुमयी द्वितीय था। तीसरी घती ई० के प्रारम्भके लगम्म इस सातवाहन वशका अन्त हो गया। इसके अनेक महारपी पदवीच घारी सरदार, जो अधिकादात नागनातीय थे और मूलत आन्ध्रोंके सेवक होनेसे आन्ध्रमृत्य भी कहलाते थे, दक्षिण एव मन्य भारतके विभिन्न मार्गोंमें स्वतन्त्र हो गये।

पैठनके ये सातवाहन राजे अधिकाशत ब्राह्मण धर्मानुयायी थे किन्तू वे अन्य घर्मीके प्रति भी सहिष्णु थे। प्राचीन जैन साहित्यमें सातवाहन राजाओंके अनेक उल्लेख मिलते हैं और उनमें-से कई एकका जैन होना भी सूचित होता है। किन्तु क्योंकि यह उल्लेख 'पैठनका शालिवाहन राजा' करके ही प्राय पाये जाते हैं अत ऐतिहासिक नाम-सूचीमें उन्हें चीन्हना दुष्कर है। इन जैनराजाओं में सतसईके रचयिता हालके होनेकी सम्भावना है। यह प्रसिद्ध ग्राय महाराष्ट्री प्राकृतमें आर्याधन्दोंमें लिखा गया है और जैन विचारोका प्रभाव उसपर लक्षित होता है। सातवाहन राज्यमें प्राकृत भाषाका ही प्रचार था। ये राजा स्वय तो विद्वान् या विशेष विद्यारसिक नहीं ये किन्तु विद्वानोका आदर करते ये । जैनाचार्य शर्ववर्म-द्वारा कातन्त्र व्याकरणकी रचना तथा एक अन्य जैनाचार्य काणभिक्षु या काणभृति-द्वारा प्राकृतके मुल कथा-प्रत्यकी रचना और उसके आधारपर गुणाइयकी वहत्कचाको रचना इन्होंके प्रश्रयमें हुई प्रतीत होती है। इनके राज्यमें जैन मुनियोका स्वच्छन्द विहार था। इन्हींके कालमें जैनसघ दिग्रवर एवं ष्वेताम्बर सम्प्रदायोमें विभवत हुआ और इनका राज्य उन दोनों सम्प्रदायों-के साधुओका सन्धिस्यल था। दिगम्बर परम्पराके कैन आगमोंका सर्वप्रथम शंक्यन एवं किरिवद्योकरण मी इन्होक कासमे और बम्मनवया स्वीके राज्यने शुर्मा था।

पक्रिमोत्तर प्रदेशके विदेशी शासक--(१) मुनली मा बदन---विकन्तरकी मृत्युके बरधन्त बरसपृथिकाने क्षाके क्षेत्रान्ति किन्तुकरूने बनना बामापन स्थापित कर किया या निवकी बीमाएँ मारतपर्वेकी राग्रे करती थीं। क्लिपुकचके बंदले करमन १ वर्ष धरूप किया। मीर्ने बमारोके बनके इन्होंने जान्त्रमें प्रदेश करनेका प्रश्नव गरी किया वरण् कावे सेश्रंपूर्व क्षत्रमण हो एसे । बुनानियोको कुछ छोडी-बोटी वस्तियाँ भारतपर्वते समस्य तम पूर्वी । अबोक्के समस्य विस्तृतक प्रवक्त कम्पर वन्तिनोत्र क्षेत्रीय राज्य कर च्या का। वन ब्या क्रिक्के राजाके तान प्रक्रिशिकार्वे चेता था तो अववर देश वहके वैशिका प्रश्नका बावक नियी-रोत्रव स्टब्ल हो बना और इब अकार इन्डो-वैक्टिन्स बेक्सा आरम्ब हता । है व के के क्यावन वसके बत्ताराविकारों पूरीवेनबके बार बम्राह् वर्रियोक दुरीयने बन्दि कर भी और अपनी क्या मुनीदेनवर्षे पुत्र विकिट्टिक्ट (रिमिन्त) के बाज न्याई जी तथा वैकिट्नाकी स्कानना स्रीत्यार कर स्ते । कावक भागीनै इस कमय ब्रामवेशका बादम का मी बारमश्चना एक मीर्पनेकी राजकुमार था। कमान है पू १९ में दिनिय वैदिन्दाका पायक हुना । भारतपर्वने नवन अस्तिके विस्तारका भेन को ही दिया बाता है। कतने भारतपर शास्त्रम निया। स्पृत मीर पांचामके राजे बढके बाबी। यम नवें । यह शंत्रका बैक्का बारे तकी रीका हवा कुनुक्तुर (कार्यक्तुम) एक वा पर्तेचा । किना क्रम्यकारा तमार बारवेशके मत्ताकनवकी तुपना नाकर इन बालानताओं वरस्पर कुद पर वरी और वे राजवाबीकी पूर्व विजय किने विद्याही बार्च बीट की । मनव वर्ष सम्बदेशकों तो बनुश वर्बन्त सारवेशने बनानी विभिन्नको विशास बाहर क्षित्रा, किन्तु चैत्राम शत्र प्रकृता बविकार बना ही प्या । बानन (स्थाक्त्रीय) की, क्लिका नाम अपने तिवाकी स्मृतिये

चसने यूपोडेमिया रखा या, जसने अपनी मारतीय राजधानी बनाया। इस युनानी आक्रमणके परिणामस्वरूप पतनोन्मुख मौर्य सत्ता मृतप्राय हो गयो। वृहद्रय मौर्यके याह्मण मन्त्रो पुज्यमित्र खुगने सम्भवतया इसी स्वणं अवसरका लाम उठाया और अपने स्वामोको हत्या करके वह स्वय मगध राज्यका स्वामी धन वैठा। विमित्रके थापस चले जानेपर उसका वायसराय मिनेण्डर (मिलिन्द) जो सम्भवतया उसका उत्तराधिकारी भी हुआ, ई० पू० १६०-१४० तक सागलमें शासन करता रहा। यह शासक जैन और वौद्धोंके सम्पक्षमें आया और उनका भक्त हुआ। वौद्धावार्य नागसेनका उसपर विशेष प्रभाव था। मिलिन्दपञ्हो (मिलिन्दके प्रक्त) नामक ग्रन्थका नायक यही यवनराज बताया जाता है। इस ग्रन्थमं जैनों और उनके सिद्धान्तोका भी उल्लेख है और इस धमके विषयमें राजा तथा उसके साथी अन्य यूनानियोकी जिन्नासा प्रकट होती है।

विष्ट्रयाके यूनानियोका राज्य तो प्रयम शतान्दी ई० पू० के प्रारम्भके लगमा समाप्त हो गया किन्तु अनेक यूनानी भारतमें वस गये। उन्होंने जैन, थोड, भागवत आदि भारतीय घमौंको अपना लिया और शनै -शनै वे भारतीय जनतामें ही समा गये। विदिशाके राजा भगदत्तके दरवारमें हिलियोदर नामक यूनानी राजदूत आया था और उसने वहाँ गरुडष्ट्रज बनवाया था जिसपर अकित लेखसे उसका भागवत घमिनुपायी हाना स्वित होता है। मिनेण्डर सम्भवतया बौद्ध घमिनुपायी हो गया था। इसी कालके एक यूनानी इतिहासकार ट्रोगसने अपने एक पूर्ववर्ती लेखकका और प्रमाण रूपमें उसके लेखोंका उल्लेख किया है। प्रो० टार्न आदि विद्वानोक्ता मत्त है कि ये यूनानी इतिहासकार भारतवर्षमें रहे और वहाँ जैनोंके विशेष सम्पर्कमें आये प्रतीत होते हैं वर्योकि उनके लेखोंसे पता चलता है कि वे जैनोंसे, उनके आचार-विचारोंसे और उनकी ऐतिहासिक अनुश्रुतियोंसे भली-भौति परिचित थे और उन्हें ही उन्होंने अपना आधार बनाया था। सम्मव है कि इन भारतीय यवनोंमें-से अनेक जैन साधुआंसे

समारित होणर सेन बर्चने अनुपानी मो हुए हों। मुम्ननी केनल दिरिनेतरनी बतारी अनुसारे होण्योतियानी देन शासु विचारते सिने हैं। एक सम्बन्ध-पार्न (बेन बानु) सबस प्रती हैं में महीचने बाना नरणे रोज (स एक्नेन) भी महीचे हैं। बहाँ समारी बतारि निरामात रही बतारी माती हैं। (१) एमोर्गार्टिनम स्वरूप-सैनिक मार्गित मोर्गित मोर

हम्बार थी विष्युद्धारीयो पूर्णातिकी राजानका एक जान था। विरुत्ता है। तका राज्या वह यो स्कार हो जार था लिए तार वि विरुत्ता के या हो इसका राज्या कर सूत्र करिया था। दिश्या की दिक्षिण के काम प्रतिकार राज्या निर्मेश्य कम्ब (१ व क्षां-(६६) था। दिश्या वस पारक्षी स्थित कम्ब एक्स राज्या वा स्वरूप हो त्या था। वर्ष-वर्ष वस्त्रे क्षां क्षां-वर्ष क्षां होते १ व् ११८ के कम्बन विप्नुत्वादकी तीव क्षांनु राज्या क्षांत्रा कर्मा

१९१-८८) के बनवर्ने घराँका शास्त्रम हवा । पहुके वे हारे और गार्कि

कांकि साँग दो को रिल्यु बीम ही फिट सामन होया मार्थाक परिचयोगर प्रवेचन का को नीर वर्षकी परिचयोगर प्रवेचन का को नीर वर्षकी परिचयन कामने वा रिया । है वृ बान का कामनी में नीर्मन करके हो पार्थिकन का प्रवेचन के प्रवेचन का प्य

धमम दोश्तित हा गये ये मरापि अपनी जामसूमिक बहुत-में संस्कार उन्होंने बनाये रहें।

(३) इण्डोसीविवा वा शक-चीनी आधारसि पता चलता है कि ६० पुर १७५-१६५ में रंगभग वर्वर हुनोका उत्यान हुआ जिन्हाने परिचमी पानसे यू घी लोगाको सदेष्ठ याहर किया । मह यू घी या तुलारी लोग परिचमकी आर वढ गय और सोर नदीके तटपर उन्हें उन्हीं-जैमी एम अप अमणकारी जाति मिर्रा जो शक थी। तुर्फोने शरोको उनवी ज ममुमिसे यदेश अत व भारतये चीमान्त प्रदेशोंकी बार बढ़ आये और यवनी एव पह्नचोंके राज्योंके विभिन्न प्रान्तोपर टूट पढे। किथे हेटम द्वि० (ई० पु० १२३-८८) ने चनको पराजित करके अपने अधीन कर लिया, किंतु प्रथम दाती ई० प्० के प्रारम्भम (ई० प्० ८५-७५ के लगभग) ये बोलनगी घाटी और विलीचिस्तानके मार्गय भारतमें घुस बाये बौर समस्त सिन्यु घाटीपर छा गये । पुष्कलावतीको उरहोने अपनी प्रधान राजधानी वनाया । अपने मुलस्यान सोियया (शवस्थान) की समृतिमें उन्होंने अपने इस नवीन बाग्रम्थानका नाम मी इण्डोसीथिया (शकस्थान गा शककुल) रखा। इनका सबसे गडा सरदार शाहानुशाही कहलाता या भीर अगफे अधीन अनेक शाही (शक सरदार) थे। ई० पृ० ७० के लगभग आचार्य कालक द्वितीय उज्जैनके दुराचारी राजा गदिभल्लके अत्या-चारासे पीडित हा और अय सब उपायोंसे हारकर इन शकशाहियोंके पास सि युवर्धी शबस्थानम पहुँचा । यहा एक शाहीमा अतिथि हुआ । कालकके ज्योतिप-सम्बाघी ज्ञान और वृद्धिमत्तास घाही बहुत प्रभावित हुआ। उसी समय युद्ध बाहानुकाहीका एक दूस एक छुरा और कटोरा छे द बाहोके पाम आया जिस देखत ही वह पर-घर कांपने लगा। कालक पृछ्नेपर शाहीने कहा कि उसका स्थामी उससे नाराज हो गया है और इन वस्तुओंको भेजनेका अथ है कि वह अपना सिर उस छुरेसे काटकर उसी कटोरेमें रखकर शाहानुशाहीके पास मेज दे अन्यया उसका सकूट्रम्ब अन्त करादिया नावेश । यह वी वाक्त 🛮 🗷 कि ९५ अल्प वार्विकेटी राता भी मैंता ही मर्थकर कलेगा जाता था । नाक्यमें अपवर देख का ९६ बाहिनोंनो इकम निया और पत्रधे नहां कि यदि वे बंबरी ना तालकर नाक्ष्मेपर बाक्रमण करें और दृष्ट वर्षक्रिक्कमा स्थम करें से क्रमी बाल-ता बन वर्ष नदीन प्रदेश निक बायेना और बाहिनुबारी करने भी में मुक्त हो मार्नेने । मतएन ने तम बादी नाकपके बान पर वडे और श्रीराष्ट्रके वालंडे गांकवार्थे प्रविष्ठ हुए । गाविं काक्यके वालं कई राजानीको भी बहानतार्थ काब के किया। है वु ६६ में इन सर्थ शादिनाने नर्गनाकके राज्यके बहुन वको विजय करके बज्जेंदी वहरूरा गेरा शांका और मान्यो इस संस्थाताओं मनालेके किए एक संबद्ध स्थापित कियाँ को पुत्र मा प्राचीन युक्त क्षेत्रत नहस्त्रता है। यह काक्ष्में न्यातिक सूच्य प्रक्रियम्बे मारूम होनेवाचा बदाबीर बंबत बढी प्रमुख्ति रहा प्रतीत होता है ज्ञान्त्र कवनी ममनाके बनुवार महागीर निर्माणके प्रपृष्ट वर्ष बाद इस प्रमा क्रम ध्रम्पूनी समृद्धि हुई । क्षिर मालेशर भी भार वर्ष तक वर्धीतान बोध्यानुर्वत करूप प्रदा । बन्दर ई वृ ६१ में बच्चे पराज्यि होत्रर men-auswert fier : urmak auft un bei fraffen er रिध्य क्या वन उन्नीवीनर बनोका राम्य हो बना और बन्होने न्हीं क्षते रहना चाहा । जाकनक्य स्वतन्त्रदानेनी ने बीट दनकी बाहर-प्रवासी वनतन्त्रीय की विवेदी करोंके निर्देश काववड़ी वे बहुव की कर करते हैं । स्वर्ध कालक और करके उत्तरहारके उस बर । अल: वर्ष विरामने पुत्र चीर विक्रमाहिताके नेतृत्वमें मामनवन कह को हुए सीर है । ५७ में बार्टी बरोगो बरनेगोंके नियम नाहर किया । बस में धनकती कुछ हो बारव दिल्य देवको और वने कुछ बोहारतें हो बन वर्षे द्रक महराने था बने और द्रक नाधनकी वक्ष था चूंचे। बच्चेन कुमानावीके जाने वशकायुक्तवादीको मी प्रवस कर किया और नास्त्रापके सिद्द अवकी वार्तान्त्राचे प्रकृति वार्तान्त्रे क्यूचे विशिक्ष प्रदेशी- पर राज्य करने छर्गे । भारतीय घर्मी, रीति-रिवाजो, नामादिकोंको अपनाकर और भारतीयोके साथ विवाह सम्बन्ध आदि करके ये भारतीय नरेशोंकी मौति ही यहाँ बस गये। इस प्रकार ई० पू० ५० के लगभगसे सन ६० ५० के लगभग तक जो विभिन्न शक शक्तियाँ मारतके विभिन्न भागोम सत्तारूढ रहीं ये निम्न प्रकार हैं - (क) पुष्कलावतीके प्रधान शक नरेश-शाहानुशाही-जिनमें सर्व प्रसिद्ध महार्य मोगा था। उसके सिवनोपर कतिपय भारतीय तथा यूनानी देवी देवताओंकी मूर्तियाँ अकित मिलती हैं। स॰ ४२ और ७८ के दो अभिलेखोंमें उसका नामोल्लेख मिलता है जो ई० पु॰ ६६ में स्थापित पूर्व शक संवत्में होनेसे ई० पू० २४ तथा सन १२ ई० के निर्वारित होते हैं। उसके अविरिक्त अजेस प्रथम और द्वितीयके होनेका और पता चलता है जो सम्भवतया उसके उत्तराधिकारी थे । इन शक शाहानुशाहियोंके उपरान्त पुष्कलावतीपर पह्नवोका अधिकार हो गया प्रतीत होता है। विन्दुक्रन (गोण्डोक्ररनीज) जिसका समय १९-४५ ई० निश्चित होता है, इस कालका प्रसिद्ध पह्लव नरेश था। उसका सं० १०३ का अभिलेख भी पूर्वशक स० में होनेसे सन् ३७६० का है। विभिन्न प्रान्तेंकि शक क्षत्रप इन पह्नवोंको भी शक शाहानुशाही-की भौति अपना अधिपति मानने लगे।

- (ख) उपरोक्त शक क्षत्रयोमें-से एक शाखा सक्षशिलामे स्यापित हुई थो जिसमें लिसक, कुगलक, पतिक आदि क्षत्रप हुए। इनका उल्लेख स० ७२ (सन् १२ ई०) के अभिलेखमें मिलता है।
- (ग) एक शाखा सुदूर वाराणसीमें स्थापित हुई जिसमें मेविक आदि नाम मिलते हैं।
- (घ) एक शाला मयुरामें स्थापित हुई, इसमें हगन, रज्जुबल, घोडास आदि नाम मिलते हैं। मयुराके ये शक महाक्षत्रप शत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इनके, विशेषकर क्षत्रप शोडासके, मयुरासे अनेक शिलालेख प्राप्त हुए हैं जिनमें कई यथा सं०४२ (ई० पू० २४),

यं कर (क्यू ६ हैं) जारोके निर्माणन में है। वह विकासियों स्ता चेत्रमा है कि वे पार स्वारोक रायोग परितामणे परे जारों मेरेस में । इत्तम प्राप्त इस्ताने क्यांने क्यों मारे की विकास कर में नहीं जारोंक पर्योग सार करते थे। वैत्यमंदी सोर यो दश्या सार्याच्या मार्गित होता है तो प्राप्त के नोड को होते हैं। स्त्रुपत्ते प्राप्त सारकार्यन विकासियों में वह विकासियों से इंडिंग मुझे स्त्रिक है। यह नार्यों सपुत्र वैत्यमंत्रम प्रदू व्यवस्था के स्त्रुपत्ते क्यांने स्त्रुपत्ति कर प्राप्त सारकार्यन स्त्रुपत्ती क्यांने के स्त्रुपत्ती क्यांने स्त्रुपत्ति कर प्रस्तान स्त्रुपत्ती क्यांने हे निष्ति क्यांनित सारकारी स्त्रुपत्तिक क्यांनी होने स्त्रुपत्ती सारकारी स्त्रुपत्ती क्यांनित सारकारी

(s) वरपादिशेकी वक वाका बीराज्यें की स्वारंख हो बजी **थी** ।

बार्तात हरिहाल एक ग्रह

निश्चित होता है । यूनानी भूगोलवेता टारुमीने मी इस नरेशका चल्छेख किया है । नहपानके अपने तथा उसके जामाता उपवदात या ऋपभदत्त और कुशल मन्त्री अयमके कई शिलालेख प्राप्त हुए है जो वर्ष ४१से ४६तकके हैं। सम्भ-बतया नहपानके पूर्वज भूमकने अपने अन्तिम दिनोमें अयवा स्वय नहपानने क्षपने राज्यारम्भमें ही मालवा देशके बहुमागपर अधिकार करके यह नवीन वर्षगणना चाल को थो । किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि स्वय उज्जैनीपर उसका अधिकार नहीं हो पाया और इस महानगरीको प्राप्त करनेके लिए पैठनके सातवाहन नरेशोंके साथ उसको प्रतिद्वन्द्विता एव संघर्ष बराबर चलता रहा । अन्तत सन् ६५ ई० के लगमग गौतमीपृत्र शातकणींने भगकच्छपर बाक्रमण किया, घोर युद्धके उपरान्त नहपानकी पराजय हुई और उसने सचि कर ली। सातवाहन नरेशने अपनी विभयके उपलक्ष्यमें नहपानके अनेक सिक्काको हस्तगत करके और उनपर अपनी भी मुहर लगाकर अपने राज्यमें चाल किया । नहपानने राज्यभार अपने जामाता उपवदात, मन्त्रो अयम और सेनापति यशोमतिकको सीपकर स्वय जिनदोक्षा ले ली प्रतीत होती है।

इस समय तक इन शकाका प्राय पूर्णतया मारतीयकरण हो चुका था, इ होने भारतीय आचार-विचारो, भाषा और नाम, वेप-भूषा और प्रधाएँ, धर्म और सस्कृति अपना लिये थे। एक जैन अनुभूतिके अनुभार इस महाराज नरवाहनने अपने मित्र मगधनरेशको मुनिरूपमें देखकर उनकी अरणासे अपने राज्यश्रेष्ठि एव मित्र सुबुद्धिके साथ मुनिदीक्षा छे ली थी। इस समय दाक्षिणास्य जैनसघके नेता सपाचार्य अर्ह्चृत्रलि थे, बही सम्मवतया इसके दीक्षागुरु थे। सन् ६६ ई० में उन्होंने महिमा नगरीमें एक महामुनि सम्मेलन किया था। इसी सम्मेलनमें सर्वश्रयम निर्श्रन्य दिगम्यर सधम नन्दि, सेन, सिंह, देव, भद्र आदि उपसच उत्पन्न हुए थे। इसी कालमें गिरिनगरकी पूर्वोक्त चन्द्रगुफामें अविधिष्ट आगम ज्ञानके धारक एव अष्टाग निमित्तके जाता घरसेनाचार्य तपस्या करते थे। अपना अन्त

सार (नार सानगर और सानग नानगारे विनिज्य ही समेरी सर्था के की है। है हर समेरे सरियारे सर्वन्तनियों है हुम्म कि की हर्ग होन्य नियं कर्म करियार है हुम्म हिन्म कि कि कि स्टार्ट के स्टार्ट के स्वाप्त है स्थान हिन्म हिन्म

 धानोंपर भी किसी युद्धमें आंशिक विजय प्राप्त की। मातवाहनोने सकाके नवप्रचलित सवत्को भी अपना ऐनेका प्रयस्न किया, इसी नारण यह मालान्तरमें धक-शालिवाहन सवत्के पामने भी प्रमिद्ध हुआ। धनप्रकालके प्रयम सौ वर्षोमें सक-सातवाहन प्रसिद्धन्दिता और भी अधिक सीप्र हो गयी और सातवाहन साम्राज्यके अन्तके साथ ही उसका अन्त हुआ।

चप्टनका पुत्र जयदामन् या । उत्तने अपने विताके साथ कुछ वर्ष राज्य किया किन्तू पिताके जीवनकालमें ही उसकी मृत्यू हो गया प्रवीत होती है। उसके उपरान्त उसका पुत्र महादात्रप रहदामन् प्रयम राजा हुआ । उसके राज्यारम्मके कुछ वर्ष वाद ही उसके पितामह चष्टनकी मृत्यु हुई। छद्र-दामन्के सन् १३० ई० के शिलालेशके समय तक चष्टन जीवित था। रुद्रदामन् इस वसका सर्वाधिक प्रतापी नरेश या, उसके समयमें दावप साम्राज्य उन्नतिके चरम शिव्यरपर या। इस राजाके मन् १५० ई० के एक वृहतु शिलालेखमें, जो कि जुनागढ प्रशस्तिके नामसे प्रसिद्ध है, जनकी अनेक विजयों, पराक्रमों, लोकहितके कार्यों आदिका पता चलना है। यह शिलालेख ऐतिहासिक दृष्टिमे अत्यात महस्वपूर्ण है और गिरिनगरके सुवसिद्ध सुदर्शन तालके तटगर ही अफित है। रुद्रदामन्ते भी उस ऐतिहासिक सरोवरका जीर्णोद्धार कराया या । घद्रदामन्का पुत्र दामजदश्री था जिसने गिरिनगरकी पूर्वोक्त च द्रगुफामें आगमोद्धारक आचार्य घरसेनके स्वर्गवामकी स्मृतिमें एक शिलालेख उत्कीर्ण कराया था। उसके उपरान्त रुद्रांसिह प्रथम गद्दोपर बैठा वह भी जैनधर्मका अनुपायी रहा प्रतीत होता है। प्राय इसी कालमें इस वशको एक राजमहिलाने महावीरको ज ममूमि वैशालीको सीर्थ-यात्रा को थी जैमा कि वहाँसे प्राप्त उक्त महिलाकी कतिएय मदाओंसे विदित होता है।

पिर्विमी शकोका यह महाक्षत्रप वश २४२ वप पर्यन्त उज्जैनी राज-घानोसे एक विस्तृत प्रदेशपर राज्य करता रहा । दूसरो-तीसरी शताब्दीमें सो दक्षिण भारतके भी अनेक भाग उसके अधीन थे। ३२० ई० में नुकारमधी स्थापको शासनाव बार्यनार स्व संबत्ता विचार वर्षे हुता। बन बनव कर रूप संबद्धी वर्षे शासाई वर्षे कर-धाराई वर्षे भी बीर कंग-बोरे यह शासामा वर्षित्तव वोदी शासाई बन कर स्व रहा बन कि परमूख विकासीयमें दशा अना नुस्ताम कोरो स्व

वारों वे पुरास नामसे प्रसिद्ध हुए। बन् ४ है के सववय बनने केल पुरास करकिमतने विश्वतयोगी बार करने नामुक जलहार और वरियों

निनंतर समित्रार वर निया। एवने भी विश्वते सिंग है बनार रोज स्तार स्तित होता है और प्राचित कार्वितीय स्वाचीन वेतांनी स्वार होता हुन है में समझन र नहीं मार्ग्य दुवानों मुख्य हैं। पढ़ने पुन व बतार्गिकारी सिंग स्वाचेन दुवा सामार स्वित्य स्वाचेन स्वचेन स्वाचेन स्वचेन स्वाचेन स्वाचेन स्वाचेन स्वचेन स

कामीर सक्की राज्यका औन का बीट पाणीएकी बार करने समी पासमर, पारतम्य सीमान साहि चीनी प्रदेवींची मी निकस निवा मां !

मार्खाम इतिहास । एव धी

बौद्ध बनुश्रुतिमें उसे अशोक्यो समान ही बौद्ध धर्मका गक्त और प्रथमदाला कहा गया है और उनमें उनके द्वारा पेशावरमें एक घोड स्तुप वनवाने, पाश्मीरमें चतुर्य योद्ध सम्मेलन युनाने और बुद्धपरिसके कत्तां प्रशिद्ध बौद्ध विद्वान् अश्वपायको प्रथम देनेके उल्लेश मिलते हैं। यह बौद्ध धमके महायान सम्प्रदायका पोपक रहा बताया जाता है। कि तु विद्वानीं-का मत है कि उसके साम्राज्यमें सभी धर्म प्रचलित ये और यह धर्मसिहिष्णु नरेश समीका बादर करता था । मयुराके अनेक जैन शिलालेसींपर उसका नाम अवित है। पामस आदि विद्वानांके अनुसार कमसे कम अपने राज्य-कालके पूर्व भागमें उसका झुकाय जैन धर्मकी और अधिक रहा प्रतीत होता है। कहा जाता है कि एक प्राचीन जैन स्तूपका मी उसने जीपोंद्वार कराया था। कनिष्ककी मूर्तियाँ भी मिली हैं। उसके समयमें बीद साहित्यका सर्वप्रथम प्रणयन प्रारम्भ हुआ । कनिष्ककी राज्यारीहण विधि सन् ७८ ई० मानो जाती है और बुछ विद्वानांके अनुसार वही प्रचलित शक सबतुका प्रवर्तक था। किन्तु जैसा कि पीछे कहा जा चुका है शक-मयत्की स्थापना भद्रचष्टन बरावे गस्यापक चप्टन द्वारा उज्जनीकी विजय-के उपलक्ष्यमें हुई प्रतीत होती है। सम्भव है मयोगमे कनिष्कका राज्यारम्भ भी उत्तर-पिदचममें उसी वर्ष प्रारम्भ हुआ हो। उसके सथा उसके उत्तरा-घिकारियोंके लेखोंमें जो वर्षसम्या मिलतो है वह उसके राज्यके प्रथम वर्षमे चालू हुई प्रतीत होती है, बादमें जहाने एक सवत्का रूप है लिया जो सयोगसे शक सवत्के अनुस्य होनेसे उत्तरापयमें भी छोकप्रिय हो गया। कनिष्ककी हत्या उसके सेनानियोंने उसके सोते समय कर दी थी। उसके उपरान्त क्रमश ह्रविष्क (१०७-१३८ ई०), कतिष्क द्वि० (११९ ई०), विशिष्क, वासुदेव (१५२-१७६ ई०) इत्यादि कई राजे हुए। इन राजाओंके अनेक जैनाजैन दिलालेख मथुरा आदिसे प्राप्त हुए -हैं। ये समी धर्मोंके प्रति सहिष्णु रहे प्रतीत होते हैं। जैनधर्मकी, विद्येष-कर मथुरामें, इनके कालमेंवि शेष उन्नति हुई। वासुदेवके उपरान्त कृपाण बाबारको जरगी बारन ही बती। जारा है कम बारे हुए की बर्गकार सी-तीर कर का बीर में (सरदी और दर्म को दी बरें में रामी पंची पर की। मानती संबंध करके बारों को कमी कमा कम ही बता। में है हिम्में कमानको बान रक पाएंची हुए बारे की सी। तीमरी कांच पार्टान्तुके कुमाने में बाद जी सोने हैं। पासन पूर्व में

माञ्चरा--वर्गन वराह वशसरकावीन वरित्र वार्गन व्हाराजी वर्षे महावस्तातिनी वस या । वस समय ब्रद्धान वंत्रण बनार बन्दार या । बाजानीय बर्गासनीय पत्तप्रदोत् महारीएके मेंगा में। जिन हैर मरावीरका निर्वात हुआ बनी दिव अवस्ति है हाथ गरे गुर धानवंता धानी विरोध हुआ वर - अवन्ति राज्यको अवान राज्यको अर्जनी की। प्रदेश मंबके बनरान्त सन्तों और फिर मीधीना बनार अविकार रही बीर वर् ६९के बालामको स्वरायकानी बनी ग्री। सीर्वे बलाट् बार्या वी मार्च कार्यनीमें ही पहचा ना स्टेट क्यो करवते केंद्र बंदकी करती करूपने का पाकलारमें स्वेतान्तर नागराध्ये चौरता हो नहीं बार्गनीरी माना देख क्या निवा मा । काल्याचा इसी बारम बळावर्ड-हिं फ्लाक्ड पुरस्को स्वतंत्री शाह्य गरेवाने कार्रेनीको व सामार्थ प्रबंध स्थानमे निरिद्या, अपरशाम नैपन्तर वा ब्रोट्स्न्टर (चेन्या), के मानी प्रिय परची बनावा था। एक मोर भी शास्त्र रहा प्रचीव होंगा है— मुतानी बजार विकारके भारत-सामनको समय क्यारी विन्य मीर रेशापने जो मारेन शाला, अर्जुशापन अपुन्तर मापि अनेच साँचापानी बनान में बनशे बना बाहरूको जिल्लामा कर रिमा । वरिमान ररका बायरमा बीर बनके नहींची कारेरमन स्वरेशका चौराया^{त करके} कृष व्यक्तिकत्री और बतालक कर करे में । बाक्यतन की राजरकानके विराह देवमें क्य वरे और आदेश्यम जारबाइ तथा परिचर्ना बतार मरेड व बानगाराने रक्त प्रकृत केन कहे । रुवीने बनेप्रबर्गः बादणीया स्वाप करके व्यापार-वाणिज्यमें हो अपना जपयोग लगाना प्रारम्भ कर दिया किन्तु अपने गणत प्रारमक येणी सगठनकी और भी बहुत पीछे तक भग नहीं होने दिया। मालव लोग विराट देशमें भी अधिव स्थिर न रह सकें और अन्तत अागे बढ़कर उज्जैनी प्रदेशमें यस गये। सम्प्रतिको मृत्युके जपरान्त इन स्थलप्यता प्रेमी माल्योंने उज्जैनीको के द्र बनाकर अपनी गणत प्रारमक सत्ता स्थापित कर हो और घोरे-घोरे अपनी धिक बढायी। यह देश भी उनके कारण मालवा कहलाने लगा। गुगो और कण्योंने राज्यकालमें मालवेके मालवगणने पर्याप्त संवित संवम कर ली घी।

ऐसा प्रतीत होता है कि कलिंगचक्रवर्ती सम्राट् सारयेशने मालवगणकी भी विजय कर लिया या और सम्भवतया उसकी गणतन्त्रात्मक सत्ताको भी माय कर लिया था कि तु उसके नायक के पदपर अपना कोई राजकुमार नियुक्त कर दिया था। यह पद उसकी वंश-परम्परामें मढ़ हो गया। ईन पूर्व ७४ में इसी बदाका महे द्रादित्य गर्दमिल्ल मालवगणका अध्यक्ष धीर उज्जैनीका गणतात्रीय राजा था । यह बहुत अत्याचारी और दुराचारी धासक या । गणोकी भी अवहेलना करता या । उस समय उज्जैनी जैनोंका प्रधान के द यी, जैन साध्वियों और साधुओं का वहीं स्वच्छन्द विहार होता या । कालक दितीय उस कालके एक प्रसिद्ध जैनाचार्य थे, जो पूर्वावस्थामें एक राजकुमार थे। उनकी वहन सरस्वती भी साध्वी यो। वह अनिन्य स्दरी भी थी। उपत साम्बीका आगमन जब उज्जैनीमें हुआ तो उसके रपपर गर्दभिल्ल मुग्व हो गया। उसने जवरदस्ती अपहरण करके उनत सान्त्रीको अपने महलमें उठवा मैगाया। सूचना पाते हो बालक वहाँ माया, उसने गर्दभित्लको बहुत प्रकार समझाया, अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों-से भी कहलवाया कि तु उस दुरावारी निरकुश शासकको अपने दृष्ट अभि-प्रापसे विरत करनेमें वह समर्य न हो सका। गर्दभिल्लके भयस आस-पासकी राजे भी हस्तक्षेप करनेका साहस न कर सके। अत सायस्त कालक ferregard and saturate and old and also also क्या दरीका वर्षेत्र सन्त्र केशर अन्त्र अन्त्र आसरीका की नाजर क्रम बारा हैसा है तु ६६ व र ३६ दुन्हें बन्दर का प्रवर्ता । वर्ष an tie fe me 62 am. mme 6. 6. 46 g nineg ages a't watet drief er ein enten ger mer ger aft brite. Bi fir eineren be mein & gareger geet ererit eines al weine co ere fertige ar freit feiff #

mente and the name of the state of the state of the state of at at at at a fifter on the formation bound and & of the American and Afrendame featige and der fiel-यो सामा नयराका बार्चन (बचा

निकारीय कारण मुद्रिकानु सर्वकारी स्थार कारकार सामि दर्व राज्या तरम बावम का अर्थनमा ब्राह्मीय अोब-बयाबीया पी क्षात्र है। जैन जनपुर्वत्र ज नार वर कैन्ववंता प्रकाशा । इर बाउरे

की काली है। हि होती कर्णक बाद काइटरीको बार्क्यारे वर्ष मामान प्रांताहर सबस अन्य प्राप्तेन ही नहीं किलाह । विक्रवारिक ने विरायान परना राज्य किया कीर काने देख अन्यशा नथा मार्ग राज्यानी कार्रिको विस्तवस्त्रीय क्या विका, बन्त (ई. पू. ५ वर इत नावर ना रिक्रम नर) के प्रश्नानाग्य स्वरंग नवर्गना गर्म

#41 E 40 I विकास रिम और वेमके संबंधा आवसारर की वर्त सकता अधिकार राग बताबा बाता है, विन्यु बबको बुन्हें क्षताना ही क्षोरान के बने

अंटच्यों और रेडनक बायचान बंधे नरेटाने क्यांनील अधिकार कारेंके िंद चीर मेर्चा चमन क्या । बीच-बीचने दुक्त बालके लिए बचने ने दर्ग बा दूपरेके बांचनारके की बड़ बनर एता । सन् २६०६६ ई के बच्च बार्वेनीसर मुर्वत्रद्व बहरात्र अद्देशन (बेन बलकृतिसीना अस्तरहत्य स

मातीय प्रतिश्वास : एक ग्री

नभीवाहन) का अधिकार अवस्य रहा प्रतीत हीता है। सन् ७८ ई० में अहरातों के उत्तराधिकारी पिष्वमी शक समयों के वश सस्यापक मद्रमणने इस नगरपर स्थायो अधिकार करके शक सवत्की पूने प्रवृत्ति की और लगभग सी हेढ़ सी वर्षों तक इसी वशके अधिकारमें यह प्रदेश चला। शनैं - शनैं मालवगण भी इस पराधीनसामें क्षोणप्रभ और क्षीणशक्ति हो गये।

अन्तत ४थी शती ई० प्रारम्ममें गुप्त साम्राज्यका उदय हीनेपर इस प्रदेशपर उस वशका अधिकार हुआ और उज्जैनी गुप्तोंकी उपराजधानी वनी । इस समय तक यह नगर वरावर जैनधर्मका एक प्रमुख केद्र वना रहा । व्वेताम्बर सम्प्रदायका तो यह प्रथम प्रधान केन्द्र था, किन्तु गुप्त कालके उदयके पूर्व ही इस स्थानसे पश्चिमकी और हटकर उन्होंने स्राप्ट-देशकी वल्लभी नगरीको अपना प्रधान के द्र बना लिया था। फिर भी उज्जैनो महानगरी विभिन्न धर्मो और सस्कृतियोका सिन्धस्यल धनी रही। मारतीय साहित्य, ज्ञान और विज्ञानके सूजनमें इस महानगरीका सर्वीपरि स्थान रहा है। राजनैतिक राजघानी न रहनेपर भी घताब्दियों पर्यन्त यह नगरी भारतवर्षकी सांस्कृतिक राजधानी वनी रही और इसको वैसा बनाने-में जैन धर्मावलम्बी विद्वानों, मुनियो और श्रावकोका भी महत्त्वपूर्ण हाय रहा । जैनधर्म और साहित्यके इतिहासके साथ इस महानगरी और मालवा देशका अट्ट सम्बाध है। भारतके सर्व प्रसिद्ध एव सर्व प्राचीन छीकिक सवतो--प्रथम शक (ई० पू० ६६), विक्रम (ई० पू० ५७) धीर शक शालिवाहन (७८ ई०)-का जन्मस्थान मी उज्जैनी ही है।

मधुरा—मथुरा नगरका जैन, बैच्णन, शैव, बौद्धादि विभिन्न भारतीय वर्मों के साथ अत्यन्त प्राचीन कालसे ही घनिष्ठ सम्बन्ध रहता आया है। मागवत घमके परमदेव भगवान् कृष्णकी यह लीलाभूमि तथा उसके अनुयायियोका महातीर्ष रहा है। वृद्धका भी वहाँ आगमन हुआ धताया जाता है और कृष्णण कालमें यहाँ कई विशाल बौद्ध स्तूप एव विहार विद्यमान थे। धैयोंका भी इस नगरके साथ प्राचीन सम्बन्ध है, और सहस्रो

वर्ष कर्मना बहू नगर बनारामार्थ वैन संस्तृतिका में। मृत्य केंग सार्थ । वैन वर्षक हिंगुसर्व कृतार आर्र निवरती वरिया मार्थ्य कर्म मार्ग है। स्थितुरामके कृतार आर्रात्मके १६ वर्षी कृते केंग और कक्ष्मी सम्मानी नृत्याक्षी कर्मा थी। स्थापितके महामान्यों, मृत्य राज्यें कुष् स्वत्याविकों भी प्रकार मार्थ्य हुई। स्थितों वैद्यास्त्रीने कर्म क्ष्मीयं चायक वा स्वित्ये कर्मा हुई। स्थितों वैद्यास्त्रीने कर्म क्ष्मीयं चायक वा स्वत्ये क्ष्मा कृत्य मुद्ध नार्थ क्ष्मा हुं। मिर्चान महिल्य सहिल्य क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा कृत्य मुद्ध नार्थ क्ष्मा हुं। मिर्चान महिल्य क्ष्माय क्ष्मा क्ष्मा क्ष्मा कृत्य कृत्यास एक स्थापित केंग क्ष्मीय कृत्य क्ष्मीय क्ष्मी कृत्ये वृत्य नार्थिक मुद्यार क्ष्माय क्ष्मीय कृत्य क्ष्मीय क्ष्मी कृत्ये क्ष्मी सक्ष्मी कुर्मीक स्थापित क्ष्मीय क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी क्ष्मी कर्मा क्ष्मी क्ष्मी

क्षानों क्या जल वालिक रूपार्थ क्यूप कराई क्रमेब याँ वार्थ है। इस आर्थ्य अनुसूर्विक व्यूप्प कार्य तीर्थय मुगर्ववाय वार्य इसेम प्रमाने विते कुमूर्य प्रमाने कार्य तीर्थ्य न्याय दी। स्वाराय कार्य कार्यक्र इस रहेकार हरियंकों कार्यक व्यूप्तिकीय राज्य की वारायकों स्वारायकों कार्यकार विते वार्यक प्रमानिक राज्य की सम्पन्ताय कंपार्थिक क्षार्थक वेदन कर्पार्थी पार्टे कुमूर्य विराव कर्माण्य की हार्यक क्षार्थक वेदन कर्पार्थी पार्टे कुमूर्य विराव वित्तपार्थ्य केपार्थक स्वत्य कर्पार्थी पार्टे कुमूर्य वित्तपार्थिक क्षार्थक क्षार्थक पार्टे कुमूर्य प्रमानिक वित्तपार्थ्य क्षेत्र क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक पार्टे क्षार्थक क्षार्यक क्षार्थक क्षार्यक क्षार्यक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्यक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्यक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्थक क्षार्यक क्षार्यक क्षार्यक क्षार्थक क्षार्यक क्रार्थक क्षार्यक क्षार

भारतीय इतिहास पुर परि

हैं पूर्व में, उपरोक्त देय निर्मित स्वर्णमयो स्नूपको मुंटोसे देंक दिया गया था। फुहरर, स्मिय, योगल आदि पुरातत्त्वज्ञ भी इस स्त्येष अवसेपोको देयकर इसी निष्कर्षपर पहुँचे कि यह जैन स्तूप मुंसासे नमसे कम गाँच छह सो वर्ष पूर्व निर्मित हुआ था। अन्तिम सीर्यकर महावीरका पदार्पण भी इम नगरमें हुआ बताया जाता है। उस समय यहाँका राजा पद्मोदया पुत्र उदितोदय था। सम्ययत्वकोमुदी क्यामालाका घटना होत्र और समय यहाँ है। महावीरकी विष्य-परम्परामें अन्तिम केवली जम्बूस्वामीने मयुराके चौरासो क्षेत्रपर दुर्दर उपस्वरण किया था। उन्होंके उपदेशसे इस नगरये महान् दस्यु वय्न्यनचीरने अपने ५०० माथियों-सहित दस्युवृत्ति छोड़कर मृतियत घारण किया था और घोर उपसर्ग सहन करते हुए सद्गति प्राप्त की थो। इन मृनियोको म्मृतिमें यहाँ ५०० के उगमण स्तूप निर्माण किये गये थे जिनके अवसेप मध्यकाल तक विद्यमान थे।

नन्द और मीर्यकालमें मथुरामें जैनघर्मकी यया स्थिति रही निश्यसे नहीं कहा जा सकता। ४यी वाती ई० पू० में द्वादावर्षीय दुर्भिक्षके कारण उत्तराययों जैन संघया एक वहा भाग अन्तिम श्रुतिकेयलो भद्रवाहु-को अव्यक्षतामें दिवाण देशको विहार कर गया था। दुर्भिक्षको समाप्तिपर भी उनमें-ले अधिकाश साधु यहीं रह गये और उनका सगठन कालान्तरमें मूल सघके नामसे प्रसिद्ध हुआ। मगधमें ही जो साधु रह गये थे उनहोंने स्थूलमद और उनके विष्योंके नेतृत्त्रमें अपना पृथव संगठन कर लिया। दुर्भिक्षके समय आपद्धमंके रूपमें इन मागधी साधुओं जो विधिलाचार ग्रहण कर लिया था वह वाने -वाने रूद्ध होता गया और कालान्तरमें दिगम्बर-क्वेताम्बर सम्प्रदाय मेदका कारण बना। मथुरा आदि मगधसे दूरस्य प्रदेश दुष्कालके प्रकोपसे उतने वस्त नहीं हुए थे, अत ग्रहींके जैन साधु कर्णाटकी (दक्षिणो) और मागधी (उत्तरी) दोनो ही धाराओंसे अपने आचार-विचारमें कुछ विलक्षण रहे। दुष्कालका ग्रह प्रभाव अववय हुआ कि ४यी-३री शाती ई० पू० में मथुरामें बौद्ध और ग्राह्मण धर्मोंने विदीय

बच पकर किया और वे चैनवर्गने बान मस्तितिया। करने करें, स्ट्रीर्ड कि प्राचीन चैन स्तूचके वनिकारको केकर उनमें बरस्वर बक्स में हैं^{डा} वरमानीन राजाने जिवका नान पूर्वपूच वा अपनी बीड राजीके व्यानी बाकर मीजोंना पछ तिया किन्दु बतको सैंव रानी वर्षिकार प्रशासी क्लावी बाद निर्वत हुवा कि स्तूप बैतोला ही है और क्लांकि वरिवार्त ध्या । अवोक्ते पावनकावने बन्द्रनत्या नीवनर्वता म्हार्से रूड किर त्रवार नहां जिल्हु बनके तीर सम्प्रतिके बास्त-नाक्ष्में वैश्वर्तना प्रकर बद्धाः) क्ल क्ष्मव नमुचको नक्षम् प्रमुख सैन क्वतिसम्भि सी । ट्युरचर्न पूर्वित कामर्थे बस्तकाना आहाल वस्त्रे लिपेन वक करता । स्थानि क्यूप बनपोनी नह विकासन्ता की कि इसन विकास करीनो स्थान करते हुनी दिया और नहीं ने तब बात-बाब नरस्वर तबुवान एवं बहुसेनपूर्वत की कूढे और देखने बारकृतिक विचावनें तायक बने र मनुशा नगर बैच, दीज, रेंपन, बेर आहे बनोका हो बनियरक नहीं का बरन मार्च, होरह (बार, नव शारि), नुपानी चन पहुर, नुपान बारि निवित्र की निवेची व्यक्तिसे इन संस्कृतिनोंकी वी समावत मृति वा । सनुराते ^{क्}र र्धमने विकास स्वेदान्यर जनन सम्बद्धमाँची पूर्वन क्वरोला दोनी दारासी पुषक् रहणर प्रक्रिय पुत्रमी सक्ता स्थापिक मानार असे वन बाबा, कुछ मौरक साहि स्थापित करके सकता स्थापन वंद्रका किया । मूँस-वर्ण दुसाय पास (क्लार प्रदेश देश हैं । बन्दाने दश वैन्तानने बन्दार्ग बन्नति नी।

नपुर्धाने एवं वैपानेस्ने बनुष्यां कर्तात् हो।
वपुर्धाने हिम्बत स्वाने मेर्ग एक्टियर कंपायो होनेसे क्या राज्ये
स्मानेत्व प्रद्याने तिन स्वान्तियों क्या केपाने विशेषकार्येक त्या है।
स्वानेत्रिया प्रद्याने तीन स्वान्तियों क्या केपाने विशेषकार्येक त्या है।
स्वान्तियां प्रतिकारियों स्वान्तियां स्वान्तियां क्या स्वान्तियां स्वान्तियां
स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां केपानेले स्वान्तियां स्वान्तियां
स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां स्वान्तियां

विद्याल, शिलास्तम्म, आयागपटू, अष्टमंगलद्रम्य, बेदिशान्द्रम्य, बोरण, जिलालय, प्रवा (बायदो), उदपान आदिशे अवदोष प्राप्त हुए है। क्ष्र्ं प्रस्तर-सण्डॉपर ऋषम-वैराग्य, महायोर-सम आदिशे भीराणिश दृश्य प्रस्ति है। कई एक्पर विगन्तर गुनियोशी और गुएरर लण्डवरत्रपागी क्षद्र- फालक माधुओंकी मृतियाँ उत्कोण हैं। भारतीय ख्या घर आदि विश्ती नर नारियोंकी मृतियाँ भी निजी येपमूपाम अविन मिल्सी हैं। शोर-श्रीथम, से सम्बन्धित जनक दृश्योंसे मधुरा-नियाधियाशी तालाहोन येपमूपा, श्रूरं कार, मनोरजन, कलाप्रियता आदिपर सुन्दर प्रकाश पड़ता है। अवशे उत्कृष्ट कारीगरीये कारण ये अवशेष आज भी भारतीय क्षशि भीरव

प्राप्त जिलालेमामें-से हेढ सोसे अधिक प्रकाशित हो मुके हैं और उनमें आधेरे लगभग तिथिगुषत हैं । अधिकाश यप संख्या ४ से ९८ तक्षे है। कुछमें शक महादायप रज्जुबल, कोडास, मेविकिके नाम अंकित है कीर मुख्में कनित्व, हृवित्क, यदिष्य, वासुदेव आदि कुपाण सम्राटि । मयरावे इन विलालेखोंके आधारपर ही प्रयम धती ई० पू० के शक-सत्रवों तथा प्रथम व द्वितीय शताब्दी ई० के कुपाण-नरेशोका पूर्वापर एव कासमून स तोपजनम रूपमें निरिचन करना सम्भव हुआ। इन अभिलेखोंमें भक्तीं-द्वारा विविध धर्मायतनो, उपकरणो, कलाष्ट्रतियो एव लोकोपयोगो वस्तुओं निर्माण कराने और दान देनेके उल्लेख हैं। उनमें लगभग साठ जैन गुरक्षा-का उनके विभिन्न कूल, शामा, गण तया उपाधियो-सहित नामोल्ले हैं, लगमग तीस तपस्त्रिनी साध्यियाने, लगमग एक सो गृहस्य श्रादकों और लगभग पचास महिला श्रविकाओं भी नामोल्लेस हैं। इन लेखांसे पता चलता है कि उस समय विभिन्न वर्णों, जातियो, वर्गों और न्यवसायोंके भारतीयज्ञन तथा मथुरावासी यवन, शक, पह्नव, कुपाण आदि विदेशी भी जैनधर्मके भक्त ये। उनकी स्त्रियाँ भी स्वतन्त्रतापूर्वक पुरुपोंकी मौति ही धर्मका पालन करती थीं, विलक दान देने और धर्मायसनोंका निर्माण बरानेंचें उसके को वाचे दो थी। राज्य ही बही में संस्कारे बाओं में दो बरावी थी। वह बरानें बारों कार्यकार्य कंकार मी बहुत कर किन्दु दहा करोब होता है। बरागांवा जैरावा हम बरावें बरानें किरावार था। वह पूर्व प्रीह्मा हमें तरस बराहाओं बरावानें को कीन था। में बरावा और मेहनावारा बरावें बराव था।

बही कारण है कि जैनलंबकी बारके-बारको मीकिक कहतेगाओ रिकन्दरों एवं दरेतान्दरोंकी पूर्वत पूर्वीस्त दोनों बाराई बच कि नाले बीच बारधार बैंडकी भाईको इन्तरीहर बहुए बन्ती का रही की सहराहे बैंच बुद सार्व इप पोनींबे बुदेव रहवर भी समान्यवा ही अवाल करते में । बात शेलों ही परमाराबीने मनुस्के नवेब नुव बनान बनके बनानुस हुए और जनुराना राष्ट्रापीत वर्त वीधीं बन्नारान्येक्ट बीपशी नहीं किह द्वता । नहीं बीर इसी कारमें बन्द्रमारफे बेनुत्समें बस सहस्रातक मध्यक्षात्रका मनवामी करन हमा थी एक क्रीताना क्रायत्रक रहण करनेका रियान करके दोनों रजेकि बीच कच्छीता कराना चाहका था। बैन मुक्तिकोची बुक तीन सारकीकोची पूर्वाम मिनार्न बाहिर माराद्रीया कराविकारी बहिर्वित के सम्मन्त्रक इसी नवरवे देने सैद्धानिक विदारीका साहितिक प्रचार प्रारम्भ किया को संग केंद्रणाँगे कुठते सैनवचको रक्षा करना चाहरा बा । और इसी नवरके चैन मुदलेंने बर्गत्रपत बढ़ जाला बरावनी आल्धे-भन क्याचा जिल्ला क्हेंरव चरम्पराच्य चैत्रमुख्या बंधकत करावा और देवाँमें किनेश सामित्व-रवतामा प्रारम्य करावा का ।

केरी ही आपनीय नेता मानावित विश्व करने नीर मुख्य ब्रिट्सिया निर्मिय सरीमा निर्मित करने ने । किन्यू काम शब्द प्रमुख्य कर्मुटों करा यह पहुर पूराण नहीं प्रतिक्रमार्थ प्रतिकृति निर्मित्ती-वा बनावन ही द्या था। सबीमार्थ करने ही नेपालकाका स्थार करनेकर कर प्रकृता यह पत्र, किन्नू कर्मित्रमार्थ क्रीतिकारी कीर वर्णिक संस्थापन निर्मा । पुरस्कार्य प्रायुक्त पुरस्कार स्थारिकारी क्षार्यक्री वाल्माको, सीति आदि बिद्धानोंके नेतृत्वमें ग्राह्मणीय साहित्यके प्रणयनकी भारी प्रोत्साहन दिया । उघर सिहल्द्वीपमें वहाँके राजाके आश्रयमें वौद्ध-सघ पालि त्रिपिटकको सकलित एव लिपिवद्ध करनेका प्रयत्न कर रहा था। फलस्वरूप स्वय मारतमें फनिष्कके आश्रयमें अश्वघोप, पादर्व, वस्मित्र बादि बौद्ध विद्वानोंने चतुर्य बौद्ध-सगीति वुलायी और स्वतन्य साहित्यका भी निर्माण करना प्रारम्म कर दिया था। ऐसी स्थितिम मयुराके दूरदर्शी जैन गरुओंने भी सरस्वती आन्दोलन-द्वारा अपने कट्टरपन्यी धर्मबन्धओंने सकोच एवं सकीर्णताको दूर करनेका प्रयत्न किया, यह स्वामाविक ही था। ई० प० १६० के लगभग कॉलग चक्रवर्ती सम्राट् खारवेलने उड़ी धाके कुमारीपर्वतपर एक मुनिसम्मेलन किया या। सम्भवत मयुरासंघके प्रतिनिधियोंके प्रभावसे ही उपत सम्मेलनमें सरस्वती आन्दोलनका प्रारम्भ हुआ जिसका कि पदक्षेप स्वयं खारवेलका जैन नमस्कार मन्त्रसे युक्त वहुद शिलालेख या । मथुरामें इतनी वडी सस्यामें लिखाये गये तत्कालीन जैन **दालालेख उक्त आन्दोलनको प्रगतिके प्रतीक हैं। इतना ही नहीं, मयुरा** सघने पस्तकघारिणी सरस्वतीदेवीकी विद्याल प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करके इस बान्दोलनमें जान ही टाल दी। दूसरी शती ई० के पूर्वार्यमें कूपाण नरेशोंके शासन-कालमें आचार्य नागहस्ति-द्वारा प्रस्थापित सरस्वती-देवीकी जो खण्डिस मृत्ति मयुराके ककाली टीलेसे प्राप्त हुई है वह न केवल जैन सरस्वतीकी ही सर्वप्राचीन उपलब्ध मूर्ति है वरन् अन्य सम्प्र-दायो द्वारा निर्मित उपत देवीकी ज्ञात मूर्तियोमें सर्वप्राचीन मानी जाती है। मथुराम जैन सरस्वतीकी वैसी मूर्तिया बहुत पहलेसे ही बनसे लगी घीं इसमें कोई सन्देह नहीं है और इसी कारण ज्ञान-जागृतिके उस प्रथम महान् जैन आन्दोलनको सरस्यती-आन्दोलनका नाम देना उप युक्त हो है।

मयुरासे प्रचारित इस आन्दोलनका परिणाम यह हुआ कि दक्षिण एव उत्तर भारतके कुन्दकुन्द, शिधार्य, कुमारनन्दि, विमलसूरि, उमास्वामी संक्रम हो नहें और आरमोर्ड मंत्रतारही जाएक बुन्नर वरते की । बार प्रकार एनी हैं है है कोई बन दिएलाएको निकारकार्यों माने बाहिए बार्क्याचे कालिन वर्ष तिसंक कर प्रमान एक बारक-राल्याके बाहार्ये प्रमाननीय नरमानूबीय परमानूबीय जीर वस्ता-मुक्ति की बन्नर वन्न रहने प्रदास कर कि बहीर बाहित बाहित सामनास्त्रीय में महिल दरस्य होके बाहित को प्रमान के स्वार्थ कालक संक्रमार्थ

इंद्र वरिकाम बद्ध हुआ कि क्षित्र क्षणपेरको अनुस्थाने टाक्का पाईडै वे बहु व टक बद्धा और प्रवत स्टी ई के मुस्तिय पाएने देन क्षण अनवीर

बारि बरेड निक्रमायार्थ देवयी यन्त्रे प्रारम्बरे पूर्व हो बाद-स्थमार्थे

संच्या दिशस्त्र सामान और श्रीवास्त्र करायन द्वन से सेवीन बयांके किए दिस्ता है तथा । ग्रीवास्त्र सार्यके सङ्ग सर्थन स्वास्त्र स्वास्त्र की ग्रुप्त है निर्देशिक स्वते को सीत स्वस्ते व्यक्ति क्षात्र के स्वास्त्र की स्वास्त्र की स्वास्त्र करायों है अपने स्वास्त्र करायों स्वास्त्र करायों के स्वास्त्र करायों का स्वास्त्र की स्वास्त्र करायों का स्वास्त्र की स्वास्त्र की स्वास्त्र करायों करायों का स्वास्त्र करायों का स्वास्त्र की स्वास्त्र कराया करायों का स्वास्त्र करायों का स्वास्त्र करायों करायों के सीवित्र कराया करायों के सीवित्र कराया करायों कर

 किन्तु वह परस्पर मतमेदके कारण विफल प्रयत्न हुआ। इससे स्पष्ट है कि द्वेताम्बर और धायद दिगम्बर दोनों ही सर्घोंना कहुर एवं बहुमाग अदा मयुरायालोको सन्देशको दृष्टिसे देगता था और उन्हें दूसरे पक्षको ओर झुका समझता था। इस प्रकार जैन पर्मका एक प्रमुख वेन्द्र बने रहने हुए भी मयुरामें ८वीं-९वीं दातो ई० पर्यन्त दिगम्बर दवेताम्बर मेद उत्पन्न न होने पाया।

मयुरासे प्राप्त प्राचीन जैन अवरोपों सम्यापमें अनेक देशी एवं विदेशी पुरातत्वज्ञों, कला-मर्मज्ञा, इतिहासकारा और विद्वानोंने जो अपने अभिनत प्रकट किये हैं उनसे उपत अवरोपोंका घामिक, सास्कृतिक एव ऐतिहासिक महत्त्व नली प्रकार प्रकट है। उनसे भारतवर्षकी साम्कृतिक अभिवृद्धिमें प्राचीन मथुराके जैनोंके प्रशसनीय योगदानका मूख्याकन करना भी सम्भव हो जाता है।

नारा वंश्य—नाग जाति मारतकी एक आर्येतर ही नही यरन् प्रागार्य आदिम जाति थी। महाभारत युद्धके उपरान्त उसकी सक्ति एकवारगी प्रवल वेगसे जागृत हो उठी थो और उसने वैदिक अथवा आर्थ क्षत्रिय राज्याको प्राय समाप्त ही कर दिया था। नाग जातिके ही वाशोके उरग वश्य और तदनन्तर मगमके राशुनाक वशने प्रथम ऐतिहासिक मारतीय साम्राज्यकी नींव ढाली थी। नाग जातिके क्षत्रियोको माह्मण लोग प्रारयक्षत्रिय कहते थे। नागोंके अतिरिक्त वैसी हो प्रागार्य अन्य जातियोके भी अनेक प्रारय क्षत्रिय वश उदयमें आ गये थे। प्रारयक्षत्रिय मुख्यत्या श्रमण्यरम्पराके उपासक थे, उनमें-से विज्ज, लिच्छित, झरल, मल्ल, मोरिय, शावय आदि अनेक वशोंने अपने गणद म्यापित कर लिये थे। किन्तु नन्द एव मीर्य सम्राटोंके बढ़ते हुए प्रतापके सम्मुख ये सभी गणतन्त्र हतप्रभ हो गये थे और शनै शनै गने मगम साम्राज्यमें समा गये। पंजावमें आर्थ जातियोंके भी कुछ गणतन्त्र थे, किन्तु सिकन्दरके आक्रमण और तदनन्तर अप विदेशो शासकोंके कालमें थे सब क्षीणशक्ति और छिन्न मिन्न हा

सबै में पुराणोगी नाराविक बात कारण स्वत्यार्थ दिस्से प्रसार्थ नार्या । वार्या वार्या नार्या । वार्या वार्या नार्या नार्या । वार्या वार्या नार्या । वार्या नार्या नार्या । वार्या नार्या नार्या । वार्या नार्या नाष्या नार्या नार्य

निम्मन एए करा बायते कृषक चरित्रण हुए वित्रास होनेने शास्त्र सम्बोध न मानदेशने मेर यो बीट होयंचार पर्व बरम्पुरे कर रखेटी रॉक्ट एक्ट कर बड़ाई कर धारा करते हो। हुएते प्रकली है के बरुपारी हुएता बादार मोनदारित हुएते होने को स्थान करते स्वेक्ट होंगे हुए ना धारा नामित्रारित हुने को स्थान के बादा राज्यानी कराज कराजि आक्रमाई होयार प्रकल्प करते की। इत नामित्रण वेदार वाच्या परनार (समय तहा १८००) हो। मानदीर देशी हिस्स हु पेत नतन्त्रम पंतर हुक्का है। पहु कराज है कि नामित्रण वेदार वाच्या नामित्रण वेदार नामित्रण नामित्रण है वि

अरध्य विषयत सार्थ सल्यानी क्ष्मच सतन यान्त रिना ।

ऐसा बसीत होता है कि कुसामा बाहुदेशके राज्यमानमें नाजितुरीका

नव-नाग उत्तर प्रदेशके पूर्वी मागका एक स्वतन्त्र धामक या। उसका रत्तराधिकारी वीरसेन (१७०-२१० ई०) नवनागरे भी अधिक प्रतापी था । पजावमें यौषेयो-द्वारा कृपाणोंके विरुद्ध किये गये विद्रोहसे उत्पन्न ब्रव्यवस्थाका लाम टठाकर मीरसेनने अपनी ग्रन्तिका विस्तार करना प्रारम्भ किया । उसने शीघ्र ही कीशाम्बीसे मयुरापर्यन्त समस्त देशपर अधिकार कर लिया और कूपाणोंकी उत्तर प्रदेशसे निकाल बाहर किया। उसने पद्मावती और मयुराको अपनी उपराजधानियाँ बनायों और उनमें अपने प्रतिनिधियों एवं उपशासकोंके रूपमें नाग उपराजवश स्थापित किये। पदावतीका यह नागवरा टाक्वश कहलाता है और इसमें भीमनागसे गण-पित ना पर्यन्त छह-छह शासकाने सन् २१०-३४४ ई० पर्यन्त राज्य किया। मथुराका बदा सम्भवतया यदुवश भी कहलाता था। इस वसने भी प्राप इतने ही काल राज्य किया किन्तु इसके अमीतक नेवल दो राजाओं--कीतियेण और नागरेनके हो नाम प्राप्त हुए हैं। इसके अतिरिक्त अम्बारेके निकट खुष्त नामक स्यानमें,बुलन्दशहर जिलेके इन्दुपुरमें और वरेली जिलेके अहिच्छत्रमें भी नागराज्य स्थापित हुए । सुदूर दक्षिणमें भी एक श्ववित्रशा श्री ना। मण्डल था और राजवर्गाणोके अनुसार कश्मीरमें भी एक नाग वसका राज्य रहा प्रतीत होता है। मिन्तु उत्तर भारतमा इस मालका प्रमुख और प्रवान नाग राज्यवदा कान्तिपुरीका भारशिव वश हो या ।

वीरतेनके उपरान्त ह्यनाग, भयनाग, बहिननाग, चरजनाग और मवनागने क्रमश सन् २१५ ई० पर्यन्त राज्य किया। इन नाग-नरेशोंने कृपाणींको अन्तत भारतवर्षको सोमाओंके वाहर खदेड मगाया और अन्हें ईरानके सासानी शाहशापुर (२री शती ई०का मन्य) की शरण लेनी पड़ी। कुपाणींका अन्त हो जानेके बाद भी मगबमें उनके महाक्षप्र अनम्परके वश्चोंका शासन चलता रहा। यही वश्च सम्मवतवा मुद्द वंश मी कहलाता था। काम्बुज (हिन्दचीन) के राजाका एक दूत सन् २४५ ई० के लगमग पाटलिपुत्रके मुद्दराताके दरवारमें आया था।

चारी मुक्बीके बादन और यह बदरकी बीयन बाद व निवायका बस्केस निवास है। इस विदेशों बंबके सन्त करवेशा मेर बसारक किन्य-बन्तिको है को मार्थिवोत्ता एक महाबायना था । इतके बनरान्त बन्तार्मे भी पतः सावराज्य स्वापित क्षता । क्षितः सवयवे नावीरा राज्य स्वामी न रहा। प्राचीन किन्द्रतिनभने नहीं बीध ही अपनी स्वतन बस्स स्वाधित कर को बीर पार्टाक्षणको अपने क्वराज्यका देखा वना किया । बस्तुतः इत नारोंकी सातल-सभावी थी बंदालक थी जारशिव वर्तके मैठा में और काफी मध्यक्षतारों कका संबर्धे उसके प्रतिनिधि स्वकृप समेक नावराज्य तथा प्रमाणक तानिकाल है । वस नवने नवतान प्रचानी ही वर्षिक क्षेत्रप्रिय की । वर्षी पंजाब क्षेत्र राज्यकालये बोलेन अर्थनास्त्र बालेन बाहि, मध्यमाराज्ये मालव जिलाहर्ते निव्यक्ति बाहि बाहिर्विके बन्त बयान्त्र से । किन्तु नाव बरित व्यापक की और इन बन्द क्वेंकि भक्त व्यक्तियोको करको करवाएँ निवाहमैं देकर वैकी बानस्य स्वापित करके बंबधनित्रशारी बहालेमें तत्वर थी। वर्धके नियमी भी वे गरम उदार और बहिष्यु में । क्याची कादिनें क्षेत्र और धैव दोलों ही वर्कोंकी जन्ति भी । निरिक्षा पद्मारतीपुर, नमुख अदिशक्षत साथि समी अनुस केन्द्र मैनवर्षके भी महिन्द्र शीच एवं प्रकार केन्द्र में 1 सेन अनुस्तिवींसें नान माजिको निविद्य स्थान आस्त्र है, से प्राचीन नियासरेकि संघड कहे करें हैं। स्वाप्तरंप कथानी नागर ग्रेग्डी एवं माजेवन्य नागरे किरिके बारिफारका भेन की करते ही दिया काता है। अनेक कदर बाज मी कनके बावकी स्मृति बनाने हुए हैं। वैशीकी बचायती प्रशास बादि बारीकी भी वका शत्स्वतके नामधानाजी हास बीतनतीक जनसकी मूचिस करती हैं। बन्दोने सफ्ता राज्यनिष्क वी. कोई साम्बर्धायन नहीं रखा था वस्तु नेपा-पक्ष्मके बार्क्सको विदेशी शास्त्रके मना करते है सारव करा सहा-नरियोगो ही बाला चाराविक्क बनावा था। सर्वे इव बारिका बीकिक

मतर्गत्व इतिहास । एक धी

111

कैनाचान पार्शकरातृरिते सम्बन्धित अनुस्तिने मी पार्टकनुषयर अस्या-

लाष्टन था । सर्प साष्टन विशिष्ट तीर्यंकर पार्वकी परम्पराभवन नागजाति नागमण्डित यागिराज शिवकी और भी आकृष्ट हुई इसमें क्या आस्तर्य ।

चकाटक चंश-नवनागवशका अन्तिम शासक भवनाग पुत्रहोन था, उसके मात्र एक काया थी जिसे उसने अपने सामन्त विन्ध्यदानित वकाटकने पौत्र और प्रवरसेन वनाटकके पुत्र गीतम।पुत्रको विवाह दो या । गीतमी-पुत्रकी भीत्र ही मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र रुद्रसेन वालक या, किन्तु वह अपने पितामहके छाटे-से राज्यका ही नहीं यत्कि अपने नानाके विशास राज्यका मा उत्तराधिकारा था। भवनागकी मृत्युके उपरान्त प्रवरसनने अपने पोतेके सरक्षक रूपमें भारशिष और वकाटक दोनो राज्यांको सम्मिलित करके शासन चलाया । यह वहा श्रवितशाली राजा था । चारा दिशाओं वसने दिग्विजय की, विशेषकर मालवा, गुजरात और सौराष्ट्रकी विजय बरवे उसने ४थी शती ई० के शारम्भमें उसत देशोमें चष्टन-वजी बक्त क्षत्रपोंके शासनका प्राय अन्त कर दिया था। अब वकाटक शिक्त भारतवर्षकी सर्वोपरि राज्य-शक्ति थी । सन् २३५ ई० में प्रवरसेनकी मृत्यु हुई बोर उसका पोत्र एव उत्तराधिकारी रुद्रसेन प्रथम (३३५-३६० ई०) गद्दीपर वैठा । उसके राज्यमें उत्तरप्रदेश, मध्यमारत, मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र तथा दक्षिणके भी पूछ भाग शामिल थे। उसके अतिम दिनोमें शकक्षत्रप रुद्रदामन द्वितीयने फिरसे सौराष्ट्र एव गुजरातपर अधिकार कर लिया । रुद्रसेनक पश्चात् पृथ्वीसेन वकाटक (३६०-३८५ ई॰) राजा हुआ। इसका पुत्र रुद्रसेन द्वितीय था। इस कालमें मगधमें गुप्त माम्राज्यका उदय हो रहा था। वकाटक रावित अब भी प्रवस्त थी . और पश्चिमी शक क्षत्रपोका अन्त करनेमें विशेष रूपसे सहायक हो सकती थी । अत गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीयने अपनी कन्या प्रभावतीका विवाह रुद्रसेन दिसीयके साथ कर दिया । विवाहके पाँच वप उपरान्त हो रुद्रसेन-की मृत्यु हो गयी और प्रभावतीने राज्यकार्य सँमाला। वकाटक सेनाओको सहायतासे गुप्तसम्राट गुजरात सौराप्ट्र आदिसे भी दाक सत्ताका उच्छेट कानेवे बढन हुए भीर जनावरीकी मृत्युक्त कवानत वकारब साम्य मी साथ कार्यानका ही बीच हो बचा ।

तृत नामान्या हो स्व दर बया ।

से बाराय पीनि नीता जी पायबार्ताल्यु से । नामोधी जाँदि पासे
पायबारास्त्र में देवपा दना सामान्ये लिएक सेमोने करनास्त्रणा
पा लिलु कर बयदे नवस्य न केम बीनाय पीर स्वर्धात्र हा समे से से
बारा सा तरे वर धरी-ताने में नी विश्वार पास्त्र हो ता दिवार क्या सांदि है प्राप्तात्र ने ता सीनाय सामित सीमां लिलु कमूर्य र्वाण्य सांत्र की नुवार का स्वयं समुद्राद प्राप्त नी और सम्मय कर नहां की सांत्र मानवार्त्र की त्राप्ता सांत्र सांत्र की सांत्र प्राप्ता कर नहां का मानवार्त्र की मानवार्त्र की प्रमाण सांत्र हो सीन सीनाय सामान्यक प्राप्त की मानवार्त्र की प्रमाण सांत्र हो सीनाय सांत्र की सांत्र सांत्र सांत्र सांत्र स्वयं कर प्रमाण सांत्र हो सीनाय सांत्र की सीनाय सांत्र सां

होते समे । इस पारिपाति आलपत वर्ग म्यापन होते समे ।

अध्याय ५

प्राचीन युग—चतुर्थ पाट

उत्तर भारत (सन् ३००-१२०० ई०)

घीची शताब्दी ६० के पूर्वार्षमें नाग-त्याटय गुगनी समाजि और गुज सामाज्यके उदयर नाय-ही-साम भारतीय इतिहासक प्रामीय गुगवा पूर्वार्ष ममाप्त हो जाता है और उसके उत्तरार्षेता प्रारम्म हा जाता है। इस उपमत कालमें ऐतिहास सामनाकी विविधता एवं प्रमुख्ताके कारण इतिहासवारका वार्य भी पहलेकी अपेका अधिक गुगम हो जाता है।

गुप्त चंदा—गुप्त वंदा मूलत सम्भवतमा प्राचीन प्रास्य जातिका ही एक ऐसा अंदा चा जिसने पेदय वृत्ति अगीकार कर लो थी। किन्तु प्राचीन पालमें और विधेषकर प्रमण परम्पराने अनुपामी प्रास्य आदिकाँ में वर्ण जमत नहीं वर्मत या और वर्णपरिवर्तन सहज या एवं व्यक्तिगत स्वेच्छा-पर निमर था। अस प्रारम्भिक गुप्तलोग राज्याधिकारी और मामत आदि भी रहे प्रतीत होते हैं। चन्द्रगुप्त भीयवे चासन-कालमें उसवा एक वर्मचारों जो गिरनार प्रदेशका चासक था वेदय पुष्पगुप्त था। मयुराके एक धककालीन जैन जिल्लालेखमें एक गोध्तिपुत्रका उल्लेग हैं जो घनों और पह्नवेंके लिए 'कालक्वाल' सद्भा कहा गया है। उसकी जननी गुप्त वदाको कथा रही प्रतीत होती है। इसी प्रमार भरद्वतके एक स्तम्म लेलामें एक आय गोध्तिपुत्रका उल्लेग हैं जिसका नाम राजा विसदेव था।

ऐतिहासिक गुष्नवशका प्रथम पुरुप राजा श्रीगुष्त या जिसने नाग-वकाटकों द्वारा मगपसे शक शासनका उच्छेद कर दिये जानेके मसय माननाहे ४ योजन पूर्वेनी बीर अपना एक क्रोटान्सा शास्त्र स्थापित वर विया वा । वह प्रदेशमें बीद वर्षको अवृत्ति भूक कविक भी यह सम् की बच्ची वर्षका अनुवासी रहा जारीय होता है। मुख्याबा बनके निवन जनने बीली बोज पार्रिकीकै निवासके किए एक विद्यारण निर्वास में कराय बडाबा चटा है। क्या उत्तराविकारी प्रटेशक्युच्य का विक्री 'बहाराज नरयी बारम की। इतका कुर चन्द्रपुत जनम ना जीर ककी 'बद्धाराश'वराव' क्यांवि भारत तो । ऐतिहासिक तुम्ब बंदश नही प्रमन बब्राद या और बन् ३१९-२ ई में इसके राज्याधिकेश्वे ही नुष्ठ नवाकी प्रवृति हुई सावा माळे हैं। एक्टी परवर्षे वह तबब विश्वापित्र र्धान्यान्ये वा । पार्थनपुषपर को बसका बरिवहार वा । क्लापुरते बार्टक्रिक्त किन्द्राचि वरेराकी एकमान कन्या कुमारदेशीके बाब निर्देश करके अपनी प्रस्तिका निकार किया। इन कम्मानके बारब प्रतिपुत्रपर थी बहुना अधिकार हो जना बीर किन्द्रशितमंत्रा क्षमान प्रदेश बहुने राज्यका क्षेत्र कर करा । परिचमधी क्षेत्र करार प्रदेशकें की जाने अपने राज्यका विस्तार दिया। विष्यविद्येषि प्रति बुद्धारता प्रवट करवेषे किए क्वने किन्तरिक्त्या दुरायेशेको मूर्चि की वरने बाव हो बरवी मुशकी-पर व्यक्ति करायी और नेन्य रातियोति अनेक न्येष्ट पूत्र रात्ते हुए सी बढोते रूपन विकास-वैदित बहुाकुराको सस्या कराहरिकारी कराया । चलानुष्ठ प्रयक्ते बानवरास बन् ११५-१२८ है सक राज्य किया और क्य ११९-२ हैं में बन्यवत्रया क्यारे पार्टाबहुतमें बदशा शुक्रमानियेक करके स्वयको बन्नाट पोनित किया का ।

समुद्रमुम (१२८-१२८ र्षं) एवं परंग तमारी और बहुन् विज्ञा क्षम् वा अपनी धिक्यको मारच वह नाशीय प्रमुक्ति स्वरूपेय नामा नाग है। मारममें को पुरुषकुषा सम्मा करणा का सम्बे केन्यमें वर्षके अन्य प्राप्ती वर्षके विच्य तिथा हिन्द वर्षमुच्यम बीम ही विश्वाय कम कर विचा स्वृत्यक्त वह सिन् रेश भारशिव नागसेन और पूर्वी पजावके कोटबूल वशी नरेशको विजय हरके अपनी आर्यावर्तकी विजय पूर्णकी। तदनन्तर उसने दक्षिणकी वनययात्रा की और दक्षिणकोसलके राजा महेद्र, महाकान्तारके यान्नराज, कोशलके मटराज, पिष्टपुरके महेन्द्रगिरि, कोटट्रके न्त्रामिदत्त, रेरण्डपल्लके दमन, कांचीके विष्णुगोप पल्लव, अवमुक्तकके नीलराज, वेगिके हस्तिवर्मन, पाल्लकके उग्रसेन, देवराष्ट्रके कृवेर, वौम्यलपुरके घनजय आदि विभिन्न छोटे-बडे राजाओंको पराजित करके उनसे अपनी अधोनता स्वीकार करायी। उसकी दक्षिण यात्राका लाभ उठावर उत्तरके अनेक नाग, बकाटक तथा अग्य राजाओंने विद्रोह कर दिया था. बत लोटकर उसने उनका नमन किया और उनमें-से मनेकोंके राज्यको अपने साम्राज्यमें मिला लिया । समतट, कामरूप, नेपाल, दवाक और कर्नपर बादि प्रत्यन्त राज्योंको उसने अपना करद वनाया, आटविक राजाओंको परिचारक बनाया और मालव, अर्जुनायन, यौघेय, माद्रक, आभीर आदि गणराज्योंसे भी अपनी अवीनता स्वीकार करायी। अविशिष्ट शक, मुरुण्ड आदि राजाओंका भी दमन किया। इस प्रकार इस महान विजेताने प्राय सम्पूर्ण भारतमें अपनी विनय-पताका फहरायी और पाटलिपुत्रके गुप्त साम्राज्यको अपने विस्तारकी चरम सीमापर पहुँचा दिया। इस उपलक्षमें उसने नवीन सिक्के चलाये तथा वस्वमेव यज्ञ किये। किन्तु ये यज्ञ प्राचीन वैदिक धैलीके हिसा-प्रधान यज्ञ नहीं ये वरन् दान-पुण्य, दोन-दरिद्रोंकी सहायता आदि ही इन सांकेतिक यज्ञोंका प्रधान अग या। इस सम्राट्के गुणों, विजयों एवं कार्यकलापोंका सुन्दर वर्णन प्रयागके लकोक स्तम्भपर उत्कीर्ण इस नरेशकी विस्तृत मस्कृत प्रमस्तिमें पाया जाता है निसवा रचयिता उसका सन्धिविग्रहिक महादण्डनायक हरियेण था। सम्राट् समृद्रगृप्त विद्याव्यसनी, सगीत और कलाका प्रेमी, वीरपराक्रमी, कूराल सेनानायक, महान् योद्धा, उदार दानी और धार्मिक नररत्न था।

यके लिए निकला । सर्वप्रथम उसने अहिच्छत्र-नरेरा अच्युत, पद्मावती-

बह जारे कुन्दे देशिक वर्तका बहुबादी वा किन्तु वरवर्तविन्त्यु वी वा । वनकी बदर्जाको राजहारेची वी जिनका कुन बन्द्रक्य दिनीय व्य ।

यन्त्रगुत्र वितीय विश्वमादित्य (१ ९ ४१४ ई)-कानुनकी मृत्युके बनरामा बनके प्रदेश पुत्र राष्युमाने निशायनपर अधिकार कर निया विन्तु वह निवन और पामक का अल्यागांदे अनेक बाक्नीने विशेष क्या बोर नियेत्तर बाल्यार-वान्यात्रके तुत्रान्ये और परिचार्क बाल-बारपोन निर प्रथम था है नाथ बद्धवे रावन्त्र बनी हवा और बनने इन यापर जान जान बचले (६ वह छक राजाव) जाली राजी धुवरेपी नमीत कर देशा कुल कार्यन्त्र श्रवदेशीका के बसादर सबके पर राजाका दल्या कर दो और आईका राजा किया । बाहवे प्रवे भी मारकर बनन निवानकार अविकार कर किया और शुक्षेत्रीकी नकी यानी बनाया । बारनी पहली साली शृहेरनामाहे दालम करेवा प्रमापनीका रियाह सकते वसाटक पाक्षेत्रके बाच कर दिया बीर बकारक व्यक्तिकी artanit muting tie artere fembert erifer fert i uter: बंबन मारबंबरी बंबीना उच्छेर ही कर दिया और बंबार क्व दिश्या-चित्र विषय प्राप्त निर्मे । यामैनीयो भी अपने अपनी पाजपानी बताया । क्ति-दास विभिन्न साम्राज्यका समझ्य काले बढ बार्ट्सपर्वका महत्त्र प्रवासी बाहार हुन्य । यह बाहिरक-रहिक और मुखिनीया जनुस्य प्रचक थाना या । वानियान व्यक्ति बढवी बढावे नरसन् बोद्यादित है । बद्धिके क्यमदे इब वयमे मामयन वर्शनी अनुति हुई और कुछनरेख परवजायका परमान्द्रारक परमेरपर सदाराजाविश्वत बहुताने करे । वह बजाद वर्ष-पर्वनहित्तु, क्यार, शतकोक नीतिनितृतः स्वास्तरोयम् मीर पराजनी च । बाबाजनी गुल-वान्ति और बनाँड वी - बाल-विकास और कमाकी मनुतपूर्व क्रमाविने इस मुनको भारतीय इतिहासका स्पर्वमुन बना दिया । वक्ते बलावेश गत मी किया बहाशा बहुदा है। बक्ते बसकी बलेक

पिकारेश निकर्त है। सहर्रात्री सरस्य केलपा ज्ञानी पात परेश की

मुछ विद्वानोंके मतसे वही या । उसके सिक्के भी मिलने हैं । घोनी यात्री फ्राह्मान (३९९-४१४ ई०) ने इसोके समयमें भारत-यात्रा की यी ।

कुमारगुप्त प्रथम महेन्द्रादित्य (४१४-४५५ ६०) पट्ट महा-देवी घ्रवदेवीसे उत्पन्त चत्रगुप्तका पृत्र था। इसके समयमें विशाल गुप्त माझाज्य असुण्य रहा, बल्खमे लेकर बंगालकी खाडी पर्यन्त उसवा अवा-चित शामन था। गुप्तशिक्त इस समय अपने घरम शिखरपर थी, सर्वत्र मुख शान्ति और समृद्धि थी। सझाद् परम भागवत था किन्तु जैन, बौद्ध आदि घर्म था स्वत त्रतापूर्वक फल-फूल रहे थे। इसने भी अध्वमेध यझ किया। मध्य भारतमें पुष्यिमशोने खिद्रोह किया किन्तु गुमार स्वाद-गुप्तने उनका दमन किया। बर्वर स्वेत हूणोके आक्रमण भी इस मझाद्य-अतिम दिनामें प्रारम्भ हुए। इसने नये सिक्के भी चलावे। मालन्दा विश्व-विद्यालयका उदय भी इसीके समयमें हुआ बताया जाता है।

स्कन्दगुप्त चिक्रमादित्य (४५५-४६७ ई०) का वहा माई पृक्युप्त उसका प्रयक्ष प्रतिद्वन्द्वो था, किन्तु पुष्यिभित्रा और हणोंके दमनमें अदमुत बीरता प्रदिश्ति करने के कारण स्कन्दगुप्त लोकप्रिय हो गया था और पिताको मृत्युके वाद यही साम्राज्यका अधिपति हुआ। उसने सिहासन-पर बैठते ही समस्त प्रान्तोमें घामक नियुक्त करके घासन-भ्यवस्था ठीक की। उसने पर्णदक्तको सुराष्ट्रका गवनर बनाया। पर्णदक्तके पुत्र चक्रपालितने जो जूनागढ़ (गिरनार) का नगरपाल था इतिहासप्रसिद्ध सुदर्धन वालका जीर्णोद्धार कराके वहाँ शिलालेख अकित कराया था। स्कन्दगुप्तके घासनकालमें हूणोंके आक्रमण बराबर होते रहे और उसका सारा जीवन उनके साथ युद्ध करते ही बीता। मिटारीकी विष्णुमूर्त्तिके लेखमें इस सम्राद्दार देशको हूणोंके शाक विलानेका वर्णन है। युद्धोंक कारण देशकी समृद्धि कम हो गयो, राजकोप भी खालो हो गया, उसके सिक्के भी हलके तथा मिश्रित स्वर्णके हैं, किन्तु इसमें स देह नहीं कि उसने साम्राज्यको अक्षुण्ण रखा। गुप्त वशका वह अन्ति म महान् सम्राट्धा।

नैक्यमें ह्योंने किर ज्वन आज्ञाय दिने । क्यू ५१०-११ई में जल्दान्ये कार्डे पूरी बरह परावित औ किया, जिल्ला बनका हमार पहला ही बना । क्य राज्य कर सम्बन्धि नक्स स्थल स्तर भारतने हा सीतित रह क्या या । हुनोदे जातनवेति करस्य दिश्य परिस्थितिका शाथ बटाकर जनेक अल्डीन बातक बातना एवं क्याने स्थान हो को वे । इस्केनी शासकोड मधीपर्वत क्योनके मोबारी, चारेदारके वर्षत और बालतीके देशक

मतः इसके निवदाने स्थमकी कामा किस्ते बड़ी हुई जिल्ली है। यह धाना वैष्यवयार्थं रहा क्षतित होता है। इनके क्याराम्न कुन्त नाम्यास्य शिक्ष-विद्य होते बना । क्याके परिचयी भाषार मानुन्त वामानिया महिनार पावा वाता है। तीरतायके

मा । इसने बचान्यामे मालवाको ब्रिट्स विश्वय कर सिवा । क्यांके बाद नुपानुमा राजा हुवा विनन्ते सनजन ४७५ है। जब राज्य विजा । जब कुस नरेस फिरम नार्टालपुत्रमें ही रहने क्षत्रे थे । काम्राज्यका दिस्तार संयुप्तित द्वीचा मा रहा था । वावपूर्ण वर्षके बीज वा और वास्त्रमा विद्वारकी क्लने नहीं बहारता की की इनके शरवान् चैत्रप्रशुप्त राजा हुना जिसने बनवन ५ ७ र्र वक राज्य किया । इत्तरे बुद्धने जायः वीर्व वाल नहीं किया

कोलनके भी दुख मानदर सरना अधिकार कर विना । मरशिक्षग्रम (r -01 f) परम्पत्रका प्र वा । १९ने 'वामा-रिम्य बनावि बारम की। यह बी बीज ब्या । बनके सम्बर्ध की मुख सामाग्रहका साम आहे रहा क्रमारगुप्त जिलीय (४ ३-७३ () बेप्तर बीर परमनावरत

बनशाबता कार्र पुरमुख्य मी सब मुख्याती लुका का नकार हुआ। बा बीद वर्षका बनवारी का और एक निर्देश सामक वा : बक्ट्य मरेग्योग-न हुए। के बाज बनके नमन हो जरनी वर्तना बहुत्ती कुम कर दी की। बन बह रवतन्त्र ही गा। जो जीम है। इबके माएक माध्ये तथा बीतन

पदमा (४६०० ()--वन्तरहरू को वर में वर्ष

नरेश प्रमुख है। इन्हों रावितयोंने अतर्थ ्रणीका उच्छेद किया। गुण्य नरेगोंका मुर्च अस्तगत या, धराकी कई शालाएँ हो गयी थीं । ५३५ ई० में मानगप्तकी मृत्यु हुई और कुमारगुप्त सुतीय गद्दीपर बैठा । तदनन्तर दामोदरगप्त राजा हुआ और उसने लगभग ५५० ई० सक राज्य किया। इम कालमें कन्नीजमें ईशानवर्मन् मौगरिने स्यतात्र होकर सम्पूण मध्यदेशी गप्त गासनका अन्त कर दिया । दामोदरगुष्तके उपरान्त महासेनगुष्त राजा हुमा । छठी धतीके अन्त सव वह जीवित रहा । ससवे समयमें गुप्त वंशावी शिवत फिर कूछ में मली। उनके पुत्र कुमारामात्य देवगुष्तने मालयापर अधिकार कर लिया और वहाँ स्वतात्र पासककी भौति राज्य वित्रा । यह महाराज देवगुप्त जैनघर्मानुयायी या । इसने वगालके गुप्नवंकी शासक घशांकके नाय मिलकर गृहवर्मन् मौखरिको युद्धमें पराजित किया और मार ढाला। इसपर गृहवर्मन्के माले, थानेदवरके राज्यवर्घनने देवगुप्तपर आफ्रमण किया और उसे पराजित किया। इस पराजयसे देवगुप्तका वित्त संसारसे विरक्त हो गया और वह अपने ही बसके जैन मुनि हरिगुप्तसे दीक्षा छेकर जैन साधू हो गया । उसके साथ ही माल्या व मध्यमारतमें सदाके लिए गुप्तवदाका अन्त हो गया। उसके पिता महासेनगुप्तने अपनी बहुनका वियाह धानेत्वरके आदित्यवघनके साम कर दिमा था और देवगुप्सका छोटा भाई माधवगुप्त अपनी वृक्षाके पास यानेश्वरमें ही रहता या, अत राज्यवर्धन और हर्पके साथ उसकी मैत्री रही। महासेनगुप्सके बाद पाटलिपुत्रके गुप्त राज्यका माघवगुष्त ही म्वामी हुआ। उसके चपरान्त बादित्यसेन, देवगुष्त द्वितीय, विष्णुगुष्न और जीवितगुष्त क्रमश गुप्तोंके सिहामनपर बैठे। ७वीं शतीके अन्तके लगमग जीवितगुप्तको मृत्युके साय-साय गुप्त वदा और उसके राज्यका अन्त हो गया।

यद्यपि गुप्त साम्राज्यमा अम्युदय काल समुद्रगुप्तसे लेकर स्व दगुप्त पर्यन्त लगमग हेंद्र मौ वपका ही रहा तथापि ४ थी से ६ ठी शती ई० पर्यन्त तीन सौ वर्षका काल भारतीय इतिहासका गुप्तयुग कहलाता है। बह स्वतुन्त्र भारतका स्वत्र मुख बा । बवनै भरनोप्तवः बाक्रमै कुछ क्षमीद् 'मातनुत्रतितीय' वै अन्तीर वर्ष नार्वारक वाल्य सुम्बद्धियत या स्थाप-विवास बरार बीर नरम का अबद मुख-पारीच और समृद्धिकी। विविध ब्रह्मीय प्रश्ने क्या क्यारवात श्रेमित्रों और निप्ततीमें सभी प्रश्नीर भूनर्यक्षेत्र सन्त्रप्रत रागने च । सन्तराधेत ही वहीं सक्ष-तक विविध मानीते वस-परिचन एवं बीबपोर्ड बाहरी देवीचे बाब बारएका मामार बक्र-पद्मा या । रणा-मरेशाचा स्वचनुत्राई वेयते स्वचका प्रमुख्यकी परिचायक है। इन करूपे विर्वदय करतीयों वर्ष कवित कवामानी बागुउ-वृत्र प्रप्रति प्रदे । जनार मारक्ती वार्च नावर वा व्यवस्थ देवीके विकार बन्द शन्तर्रोवा निर्वास इती कलाने प्रारम्य हुता । सैन बीड एने दैप्पद पर्नोके बालिए जुलकवाका भी अवृतुत्र विकास हुन्छ। देवपड और विटाएँके विन्तुतन्तर तथा देवरत कारिक बैनर्जनर बन्धेबनीत है। विवरण एवं लेटीलवे की अध्येवलीय बल्पति की नहांचवि वर्शांच्यान जारित मुक्त्यु, बन्द्रो बान, विभान सूरक महि विदेशेन, दृष्टिने राजनीति मारि बनेक शामियोंने भारतीके मध्यारको बगुद्ध मिना बराहरिदिर बारकंट समर्शक्त, ब्रह्मपुष्ट पुरस्कार साहित विकासको सीए दिश्य हरूप दिन्तान बनुबन्त, बन्हरि धानकेवरि बिधारेन बार्वित वर्धार्थ क्षं न्याम कलकडी समूच्य मेंटे ब्रह्मन की । प्रमुख हिन्दू नृहादी और वर्ष-याल्योको जो एकमा इसी कावजे हुई । बारछीय वर्गी जीर बंस्कृतिका जनार देवाची बीमानीची जीवचर नाम श्रीद्वश एक क्या बीदन एवं पूचने वर्ग, मनाया स्थान दिग्यचीत, बंदा पूर्वीद्वीत बजूद अधीर्य मी सूचि बीर बनेक कारतीय क्यांनकेंग्र इसे आरडीय राज्य क्या देगीने स्थानित हुए । जीनी वानिजेतिः विवरकोति ती बाद बाजकी केस-बदायर सन्वर मन्त्र्य परता है। इन स्टब्युवर्ने देखकी निरुद्धा हो। बच्चीनुकी दम्मति हुई । गानिक पृक्ति इस मुख्ये पायपत का कैरमण जैन और औड

179

मार्ताल इतिहाल एक वर्षि

तीनो हो प्रधान धर्म समुन्नत दशामें सहयोग एव सन्द्रावपूर्वक फले-फुले। गुप्तवदामें प्रधानतया भागवत धर्मको प्रवृत्ति यो और प्रमुख ा सम्राटोंके समय वही राज्यधर्म था किन्तु इस वशके कई, विशेषकर उत्तर-वर्ती, राजे बीद धमके अनुयायी हुए और कुछ एक जैन धर्मके भी। राज्यवशके स्त्री-परुपोमें स्वेच्छा और स्वरुचिके अनुसार इन तीनो ही धर्मोंके अनुयायी रहे पाये जाते हैं। गुप्त-नरेश सर्वधर्मसहिष्णु थे। धार्मिक अत्याचार या प्रतिब योका उस कालमें नोई चिह्न नहीं मिलता। जहाँतक जैनधमका सम्बाय है यह समुद्रत दशामें था। वर्णाटकको केन्द्र बनाकर प्राय परे दक्षिणापमपर दिगम्बर सम्प्रदाय व्याप्त था। गुजरात, सीराण्ट, पश्चिमी राजस्थान भीर मालवामें स्वेताम्बर सम्प्रदाय पमुन था। उत्तरापयमे मयुरा, हस्तिनापुर, अहिच्छत्र, भिन्नमाल या धीमाल, कोल. उच्चीनगर, कोशाम्बी, देवगढ़, विदिशा, श्रावस्ती, वैशाली, वाराणसी, पाटलिपुत्र, राजगृही, चम्पा, पहाडपुर आदि जैनधमरे प्रसिद्ध केन्द्र थे। पजाबसे रेकर बंगाज तक जैन मुनियोका स्वष्टस्य विहार था। प्रधानत दिगम्बर दक्ताम्बर चगम सम्प्रदायोमें विभक्त तथा अनेक गण गच्छ शाला गुन आयमा आदिके रूपमे सुमगठित चतुर्विष जैनसप एक परिपष्ट लाक गविन या और जन-जीवनपर उसका पर्याप्त नैतिक प्रभाव था। गुप्तकालीन उपस्य जैन अवरोषीम मयुरावे प्राप्त प्रस्तरमयी जिनमृत्तियाँ, यध-यक्षियोगी मृत्तियो एव गई विलालेख, कहाऊँ (जिला गोरखपुर) का पंच जिने दक्ते प्रतिमाओंने युवत रेखांकित जैनस्तम्म, पहाडपुर (बगाल) सं प्राप्त तथा पंचस्तूपा वयी यागाके दिगम्बर गुरुओं द्वारा उम्बोण बराया हुआ तासपत्र जिसमें बटगोहालोके जैन अधिष्ठानको किसी षाह्मण रम्पति-द्वारा दान दिये जानेना उल्लेख है, विदिशाक निकट उदय-गिरिभे तिलारेस युन्त की गुराम दर, देवगढ (जिला सीसी) के प्राचीन देनमं दिर छादि प्रमुख है। मगपमे जिस लिम्छिय गणको सहायतासे तया ल्ब्छिब राज्ञभुमारा युमारदेवीचे साथ विवाह गरनेक बारण बन्द्रगुन्त क्षत्रका क्यारेगा हमाना जीतरात राजापत्रकी नीव परी की पत् क्रमोत्र क्रम्य र्वाटरोडा कुन बरायंग्डर हो येख या औं। यहते हैस्न क्षेत्री वर्षान् ती । करालमे रिलेप विकर्णातको समादे गुर्गेत्र । पर m a principal piet in 1 arrive ferm in freien-बाब हा अपने हैं कि बह भी दिल्लाम बानेड नवील बारम है कि वह रिल्डरायार्थं अर्थाद्यं दर्गयीत्यात् हे. स्थापना विक्रमेन प्रथं सं । प्रार्थेक & arrest alert bak grei e an eurer ter har af for वर्णनार्थे सर्थानपुर्वे पुर्वारणः के सम्बद्धा दाराज्यों के प्रवस्थालय है। दिश्याणः बार्ड नरमाने र किन्द्र बनाम है पुरस्कार के किन्द्र बन्दरहाओं सामव दियान वैन विसान 'बहुना के राज्यकृतने निरमा के बानव बहुत्तिकों मा पुनरिको नाम्बान क्रजानति । नन्युरोत्र त्वित भिवानीन न्यान मा रावा भागीपार बराशा का बहाई । बेशाना व का वनीदे संबद्धा है जिनमें इस मोदारी प्रदोश है। इसी मानमें राष्ट्र (बंबान) के जुसे मैंन र्मा ने बकाने जावर जिनमान प्रांतीस बनारी की अवन्यकाना के एक िया रक्षेत्रवर्ष (bac र) परम्पान्य हरिन्द्रम् जन्मदर्वे ही क्य राजपुरत में क्लिमेंने क्लोंने पान यह रुवर हमनीय गोरवायकी माने बेजने परता काके इन माना करा बधाया को इसी हरिगाएं रित्य रावीं देवकुत में को बड़ी राज़ हैं में बलगायेंने बायरावे गए रेख में । मार्थान रिपायके बाजनदायन सामेशके मोनी वाची परहार्यने प्रम है बारमके निविध स्वामीने जिस बीद्रेपर कालुओं कायराजी भीर बर्गी क मंत्रामीकी क्या या उनकेने बनक बैन के बहु उन्त बनकी करी अकार नुवित होता है। उनके सम्मार हव स्थितक देखके समाच भाव-देखने असा क्षमुत्र और मुत्ती है। स्वरद्धारको स्थितनही और वंबायत हुछ नही है। सीव

मही बाहें मार्न मार्ग महे हैं। शहा न प्रामश्चार देश है न कीई बच्च

चाण्डाल कहते हैं। वे नगरके वाहर रहते हैं और जब नगरमें आते हैं तो सुचनाके लिए लकडी बजाते चलते हैं जिससे लोग जान आर्थे और बचकर चले। जनपदमें कोई भी सूबर या मुर्गी नहीं पालता, न जीवित पशुओको वेचता है। न कहीं सूनागार और मद्यकी दुकानें है। केवल चाण्डाल ही मछली मारते, मृगया करते और माछ वेचते हैं।' चोनी यात्रीके वर्णनसे प्रकट इस तरहका आचार-विचार जैनधर्मके व्यापक प्रभावका ही फुल न्हा होगा । मद्य-मास, मछली, प्याज, लहसुन, मृगया आदिका सेवन न हिंदू घर्ममें विजित था और न वीद्धधर्ममें। इन वस्तुओंका ऐसा सर्वया अभाव जैन प्रभावसे ही सम्भव ही सकता था। साराश यह कि गप्नकालमें उदार गुप्त-नरेशोंके प्रश्रयमें जैनधर्मका प्रभाव एव प्रसार देशमें पर्याप्त व्यापक या, यह घर्म उस कालमें समुप्तत दशामें या और लोक-जीवनका एक प्रमुख अग था। देशको सांस्कृतिक अभिवृद्धि, कलाकृतियो, विविध साहित्य एव विज्ञानके निर्माण विकासमें भी तत्कालीन जैनोंका योगदान कम नहीं था। ब्वेताम्बर आगमोंका सकलन भी इमी युगमें (४५३६०) में देवद्भिगणि-द्वारा बन्लभीमें हुआ था।

हुण—रवेत हूण मगोलियाकी निवासी एक अत्यन्त वर्षर, मुद्धिप्रय और खानावदीश जाति थी। इन्होंके दबावते पीडित होकर २ री शती ई० पू० में यूची जाति स्वदेशते खदेही जाकर सीथियापर जा टूटो थी और परिणाम स्वरूप शकोंका भारतमें प्रवेश हुआ था। एक बार फिग्से हूणोंके आक्रमणोंसे त्रस्त होकर १ ली शती ई० में यूचीलोग कुपाणोंके रूपमें मारत-में प्रविष्ट हुए। मारतके कुपाण साम्राज्यकी प्रवल शक्तिके कारण हूणोंने उन्हें फिर तग नहीं किया और वे पिश्चमकी और यूरोपीय देशोपर टूट पढे जहाँ उनके दुर्दान्त आक्रमणोंने विशाल रोमन साम्राज्यको छिन्न-मिन्न कर दिया। पिश्चमी जगत्में हूण सरदार एटिल्लाका नाम चिरकाल तक भयका सचार करता रहा। पौचवों शती ईसवीके द्वितीय पादमें इस मयकर जातिने फिर मारतकी लोर रख किया। गा चार आदि मारतके सोमान्त प्रदेशोंपर इन्होंने क्षेत्र ही बर्टरवार कर किया लिन्यु कुछ नालागांकी प्ररक पंचित्रके कारण देखों दश्ता पुत मालेका करों ताहक न हुआ। पुतारपूरत प्रयमि इत्तित क्षांने क्ष्मुंनि पंताकार मात्रनम किया किन्यु कुमार स्वत्यपुरनो क्यूँ सदेद बाहर किया । रक्त्यकुतके यानक्वाक्रमें हुपाँके कई भाक्रमम हुए और बस्त बन्नाद्वा प्राप्त नरुन बोवन बनके नाव ही साते बीता कारन में बनने बरावर पराजित ही हुए । बताबी मुन्दुके बाद बनके निर्वत बन्धिवर्धारोकि नगर्वे ह्वति सन्धर बोरवबन् हो की नस्त देशकार बाला: कविकार कर किया । नर्रातहरूत काकारिराने में। कर्षे हराया बद्धारा बाह्य है फिन्दु इनका कोई स्वामी शरिकाय नहीं हुआ। बन् ४३३ ई के नगरन हम बरदार द्यारमान हम सारक्षमा अविस्त बता । बनने नम्पूर्व बोनान्त, चेमान, बचुरा धर्मन दरिशमी ज्यार प्रदेश बीर बध्यबारमध्ये बहुतन्त्रे बालार बाँबसार कर किया । बन्द्रवासके किंगारेशर परेंगा बामकी नमछे. असकी धानवाली मी, न्याबियरको सबसे क्षजी बच-एउवानी बनाय उद्योव होता है । धर्म न्यन्तः मुख्य एउएउनि को पुरावित करके या पुत्र प्रदेशीयों योजकर ही क्ष्मवे बुदवा राज्य

का राजान कारण जुन करनार नामा हुए होन्सी हो बराब की पूर्ण हिएएओं बाब माँच हुमार बायांद्रीयर एमं बीड्रिक हिन्द करने पूर्ण हिएएओं बाब माँच हुमार बायांद्रीयर एमं बीड्रिक हिन्द करने पूर्ण बच्चों राज्यानीर्ते में पूर्ण माँ पूर्ण राज्या प्रत्याच्या प्रवासीयन्तु बा बिच्चा करना है कि उनने मार्पाय पर्य मार्ग बिच्चा के मार्ग किया बा बिच्चा करने कि उनने मार्पाय पर्य मार्ग बिच्चा के मार्ग किया कराया प्रदा नामा है। वैद्य प्रतिकृति हिन्दू एक पिट्य की करने कराया प्रदा नामा है। वैद्य प्रतिकृति हिन्दू एक प्रतिकृति करने की प्रदान करना दीनों हैं करना मार्ग्येय करने करना प्रवास स्वासीत करने प्रिका-कित कि हैं हुक निर्मा की कि हैं। वह प्रदेशन हों है मान्नुकुलें केंद्र परिचारित क्रिया करना स्वास्त है, बद्य वर्षिय का रक्षा है।

नार्शिय इतिहास युक्त दक्षि

वह विजय फिननी स्यामी रही यो। तीरमाण या तीरराय अमके उपरान्त भी जीवत और वायनवाली रहा। ५१५ ई० के लगभा उग्रही मृत्यु हुई और उनका पुत्र मिहिरपुष्ट हुमराज्यका अधिपति हुया। यह मी भयकर योदा या किन्तु अपने पिताकी भौति मन्य और उदार शामक नहीं या. बरन कर और अत्याचारी या। उसके सिक्कॉम इसका शैव होना मिचत होता है। एरन और न्वालियरमें उन्हें विलालेग भी मिले हैं। अपनी अमहिष्णुता, क्रुता और अत्याचाराँके भाग्य वह सबका अप्रिय हो गया । इसने साइल या स्यालकोटको अपनी राजधानी बनाया घा और बालादित्यको भी पराजित किया था, किन्तु सन् ५३०-३१ में मानवेके यशोधर्मन्ने उसे बुरी तरह हराया । फल-स्वरूप उसने भागगर वदमीरमें शरण ती और वहाँ अपने आश्रयदाताका ही छल्से मारकर कटमीरका राज्य हृषिया निया। ५४२ ई० में उसकी मृत्यु हो गयो। साकतका राज्य उसके भाईने पहले ही इस्तगत कर लिया या। मिहिरकुलने बौद्योपर वहत अत्याचार किया या जिसके लिए बालादित्यने जो बौद या उसे फिर परास्त किया कहा जाता है। इसके उपगन्त हुणोंका फिर कोई चन्लेख नहीं मिलता । कदमीर और परिचमी पजावमें जी हुग राज्य जम गये थे तथा उत्तर प्रदेश और मध्य भारतमें जो फुटकर हुण बस गये थे घीरे-घीरे उनका मारतीयकरण हो गया और व मारतीय समाजमें ही खिल-मिल्त हो गये । गुप्त साम्राज्यने पतनका प्रधान श्रेय हुर्णोको ही है _।

प्राचीन जैन अनुश्रुविमें भगवान् महावीरके निर्वाणसे एक सहस्र वर्षे वाद किल्का अन्त कहा है जिसके अर्थ है कि ८७३ ई० में उसका अन्त हुआ। उसने ४० वर्ष पर्यन्त अत्याचार पूर्ण राज्य किया सताया जाता है और क्रूरता, बर्वरता, अनीति तथा धर्म, धर्मा माओं एव धर्मायतनोंका विष्यस, आदि उसके राज्यकी विधियताएँ बतायी जाती हैं। उसकी मृत्युके उपरान्त उसके पुत्र अनितंजयका धर्मराज्य स्थापित हुआ कहा गया है। अत जिस हूण सरदारने हुमारगुप्त प्रयमके समय सन् ४३३ ई० के रुगमग

भारतके नीनान्तरह हर्ष प्रथम देश हाता ४५ ई के अनुसर पंजाबरर बाहबर दिया को स्थलपुराध्य प्रयत्न प्रतिभूत्यों और प्रयान यम् यस रता और नो बन्नवस्था नर्रोबहरूल बालाहिन्दरे द्वाची बन ४०३ हैं के अनवन मुख्ये बारा नवा, यह वर्षर झुर जारतीयवर्त-विशेषी विवेधी बरवापारी ही बैन अनुभविषा बचुर्वन करिक रहा प्रचीत होता है।

बबका रह और बत्तर्पारकारी वर्षश्रका हीत्याच का कारराव का जिसके वर्तपारकी बर्धना की नवी है। सबक पासके बचन को बर्चोड़ा ही बर्चन बनुवृत्तिने विचना है। इनके दशराना वह बीन है। सीरबायके सम्बन्धने क्या बाक्नोंने जो कुछ बात होता है। इस्ते जो पैता ही बनता है कि पह एक बुद्धिमान, पुरवर्षी क्यार कहिएन और प्रजानतक सरेत का । जाने वर्षपत्री इस बरवार वा बरकारीची आंतिके समझ विषरीत सीति कलाले

. और बाचान करनेके बारक हो बनका राज्य-किन्तार कन्ती नुसन्ताने और बन्न्य कविक हो तका । मालय-बरस बसोधर्मन्--धरंबचे उत्तरावधे श्रवत हुव बस्तिके कारके कारक दिन काम क्या नथती मर्नीता नोका जारोडील हो छी। थी नामना प्रदेशने एक अपूनुत पराजनी बीर बरराह किया। इसका नान संबोधनम् या और नव नाववेत्रे हो दिनी प्रानीन राजवंदावे बाराप्र हमा मदीत हुता है। कड़ी पड़ी है के दिवीन पूर्व बक्का बक्कात चकाचीय कर देनेपाका बरन और किर वैता ही। सफरनायु बस्त मी ही

थना । सन्दर्भीर ना दयपुरमा चरती धानवानी अनाकर करून हुन्तेनते बक्त्में प्रक्तिको बक्का पृद्धि कर औ । तकाबीन सबस्त राज क्यके प्रतारक तस्त्र प्रकृत को बीर शत ५३ ६१ ई में बबने दर्शना हव रामा निक्षिरपुषका मो स्वयं माध्येनै बुन जाना वा वजाव तक बहेडा और करों तो स्थान क्षेत्र पर्धारत करके बाल अकाकर नक्तीर काल वालेरर वज्युर किया । अन्यवीरमें वयीवर्तनको विस्तात बोस्टर श्रमीत तमा ५१३-१४ ई. पा विश्वतिक कालीम दिक है। विवर्ते उसको अनेको यिजयाका तथा उसके हारा हुणोको बुरो तरह पराजित करने व्यादिका वर्णन है और लिखा है कि भारतके सभी नरेसोने यद्योधर्मन्के नम्मुख मम्तक झुका दिया था। इस अद्भुत दीरया पूर्वापर अभीतक ज्ञात नहीं हो सका है। उसके माम्राज्यका भी उसीके साथ अन्त हो गया। हूणोकी घितका तो उसने अवरोध कर ही दिया किन्तु साथ गिरते हुए गुप्त माम्राज्यको भी एक ठोकर लगा दो। अब माम्राज्यके विभान सामन्त और प्रान्तीय शासक खुने रूपसे स्नतन्त्र हो उठे।

कन्नोजका मीखरि वंश-यह एक प्राचीन मागध ध्रा था। गुन्त साम्राज्यकी स्थापनाक उपरान्त गुप्तेनि करद साम तोके रूपमें गयाने समीपवर्ती प्रदेशपर मौखरियोंका शासन था । इन माम तोंमें महावर्मा, साई-लवर्मा और अनन्तवर्माके नाम मिलते हैं। इसी घंराकी एक शासा गुन्तीके सामन्तोके रूपमें कन्नौजपर शासन करती थी। ६ठी शती ई० के प्रारम्भम राजा हरिवर्माका पुत्र आदित्यवर्मा मीलरि कन्नीजमा शामक था। उसकी पत्नी गुप्तवशकी ही एक राजकन्या थी। इसमे मौखरियोकी प्रतिष्ठा और शक्ति वढ गयी । आदित्ववर्माके पुत्र ईश्वरवर्मा (५२४–५५० ई०) ने हर्णो-के आक्रमण और यशोधर्मनुकी विजयोंने उत्पन्न परिस्यितिका लाम उटाकर कन्तीअमें अपना स्वतन्त्र राज्य जमा लिया । यञोधर्मन्के साथ हणोंकी पराजयमें भी वसका हाय या। वसके पुत्र ईशानवर्मा (५५०-५७६ ई०) ने अपने-आपको महाराजाधिराज घोषित कर दिया और पर्याप्त शक्त बढ़ा ली । स्वय गुप्तसम्राट् कुमारगुप्त तृतीयसे उसने युद्ध किये । उसका उत्तराधिकारी धाववर्मा अपने पिताकी ही भौति वीर और महत्त्वाकांक्षी या। गृप्तोके साथ उसने निरन्तर युद्ध किये और गुप्त-नरेश दामोदर गुप्तको पराजित करके उसकी सत्ता और शक्ति अति क्षीण कर दी। अव कन्नीजका मौखरि राज्य उत्तर भारतकी सर्वप्रधान प्रापित था। उसके बाद अवन्तिवर्मा और फिर गृहवर्मा कन्नौजके राजा हुए । गृहवर्माका विवाह स्थानेस्वरके वैदय राजा प्रभाकरवधनकी कन्या राज्यश्रीके साथ हुआ था। हेसाके बयांत्र और नामस्तरे देगान्तर्व निकार नहामित सामार साम्रण दिया सौर दुवेरी कारी मृत्यु ही स्तरे । नास्तरि स्तरे साम्रणंत्र सीर हर्षणंत्रेते वन यहाँनी बयान निया । इति सामारी संस्कृत वर्ष दर्गितिक नाम स्वयोक्ता सामारी सैनामा सौर वर्ग प्रवार वर्ष-पत्ते सौर्मान्य बयान इत्रा सौर सम्तरिमा सामारी सामाराय सामारी स्थान पर । स्थानस्याय सामारी सीर्मान्य स्थान स्थान स्थानस्था सामारी सामारी

(बैरद) बर्रिय वर । उनके बैदर्व नरवान कोर ब्रिट बारिन्यकान हुए ।

हिसा, हिन्तु आधानों को ही करन नार यात्रा । वज्रत्र करना करने धाई तरी किया हरने धाई तरी किया हरने प्रतिप्त — (९ ६-६४) नकतिरहाई करन बंधका वर्ष्य क्षित्र , वर्ष्य मुझ्ति हैं हैं हैं जिल्ला नरेड था। वह करने कराई क्षा नायात्र राज्य की स्वार्ध कराई का मायात्र राज्य की स्वार्ध कराई का मायात्र राज्य की स्वार्ध कराई की स्वार्ध की स्वार्ध कराई की स्वार्ध कराई की स्वार्ध कराई की स्वार्ध कराई की स्वार्ध की स्वार्ध

प्राय सब नरेशोको उसने अपने अधीन कर लिया था। गुप्त वशका प्राय अन्त ही हो चका था। अपने वशशत्रु गौडके शशाकके साथ उसने कई युद्ध किये जिनमें उसके मित्र कामरूप नरेश भास्त रवर्मन्ने भी उसकी सहायता की किन्त उसका पूर्णतमा दमन करनेमें वह सफल नहीं हुआ। सौराष्ट्रके मैत्रक राजा प्रवसेनको भी उसने पराजित किया और गुजरातका कुछ भाग अपने अधीन कर लिया। इस राजाके साथ उसने अपनी कन्याका भी विवाह कर दिया वताया जाता है। चालुक्य चक्रवर्ती पुलकेशी द्वितीयके साथ भी उसने यद्ध क्रिये किन्तु उनमें उसे सफलता न मिली। कॉलग-कोसलका राजा, जिनका नाम मम्भवतवा हिमशोतल या, उसका मित्र या, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि जैनाचार्य अकलक द्वारा उसकी सभामें बौद्धोंको पराजित कर देनेके कारण जब उसने वौद्धोको स्वदेश निर्वासित कर दिया और जैनवर्म-को अपनाया तो हपने उमपर आक्रमण कर दिया। युद्धमें हिमसीतलकी मत्य हो गयी किन्तु चालुम्य यिक्रमादित्य प्रयमकी मेनाआंके आ जानेके वारण हपको वापस छोटना पडा । इस प्रकार प्रयत्न करनेपर भी उत्तर भारतो आगे हप न बढ़ सका। यह घौद्धधर्मका परम भक्त या साथ ही परवममहित्जु, उदार और दानों भी या। दघीज उसकी राजधानी थीं। गन्नीज और प्रमागमें उसने कई महती सभाएँ की । प्रयागमें तो हर पौचन वप यह एव प्रकारका महान् अनुष्ठान करता या जिसमें बौद, जैन (निर्ग्रन्य). क्षेत्र बीर वैष्णय साधुओंको निमन्त्रित करता और भरपूरदान देकर गवका सन्तुष्ट करना या । इन दानोंमें यह राजकोपको खाली कर देता या और व्यन्ते तनके कपडे भी उतारकर याचकाको दे टालता था। वह गुणियों कोर विद्वानोंका आदर परता था। उसका राजविक वाण या जो हुएँ-परित, यादम्बरी आदि रचनाओंचे लिए मुप्रसिद्ध है। नीरदेव क्षवणक नामक एक जैन विद्वान् बाणका मित्र या और सम्भवतया हपेकी राजममा-ना एक विद्वान् था । स्वय हपने मी प्रियर्दिगका, रत्नावली और नागान्द नामचे तीन नाटनाको रचना को यो। उसके ब्रुष्ट शिलानेम भी मिछते है।



मे प्राकृतकाव्य 'गोडवहो' में यशोयर्मन्की दिग्विजयका विराद वर्णत है।
महावीरचरित, उत्तररामचरित, मालतीमाधव बादि प्रसिद्ध मस्कृत नाटकांके
रचिता महाक्षि मबभूति भो महाराज यशोवर्मनके हो आधित थे।
७४० ई० के लगभग कश्मीरके लिलादित्यने अपनी विजययात्रा आरम्भकी
और ७५० ई० के लगभग उनने यशोवमन्को पराजित करक कन्नोजपर
अधिकार कर लिया।

श्रायुघ चश्र-७६० ई० के लगभग कन्नोज किर स्वतंत्र हुआ और यहाँ एक नवीन वशके बष्पायुष, इन्द्रापुष और चक्रायुष नामक राजाओने क्रमश राज्य किया। जिनसेनके हरिवशको रचना (मन् ७८३ ई०) के समय उत्तरापयमें कन्नोजके इद्रायुषका राज्य था। किन्तु अपने उत्तरमें कन्मीर नरेशों, पूर्वमें पालवशों राजाओं और दक्षिणमें राष्ट्रकूटोंके निरत्तर दवायके कारण आयुष वश ८वो शती ई० के अततक ही समाप्त हो गया। भिन्नमालके गुजर प्रतिहारोंने इस परिस्थितिका लाभ उटाया। राजस्थानमें शिवतसच्य करके उन्होंने कन्नोजपर अधिकार कर लिया और शीझ ही ममस्त उत्तरापथपर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

गुर्जेर प्रतिहार—प्राग्मुसलमान कालीन राजपूत वशामें प्रमुख थे और अपने-आपको थीरामके प्रतिहार लक्ष्मणका थेंशज बहते थे। मारवाह- के भिन्नमाल अपरनाम थीमाल नामक स्थानको इन्होने अपना प्रथम के द्र और राजधानी बनाया। हरिष्चंद्र इस बशका नस्थापक था। किंतु वास्तवमें प्रथम महान् नरेश नागमट्ट प्रथम (७४० ७५६ ई०) था। ७५६ ई० के लगभग उसने मि पके अरवोको हराकर बडी प्रसिद्धि प्राप्त को। परिचमी गारतको इस प्रकार रक्षा करनेसे उसना प्रताप एव राज्य- विस्पार बढ़ा। नाचीपुरके गुजर, जोधपुरके प्रतिहार, महीचके चाहमान आदि अनेक छोटे छोटे राज्य तसके अधीन हुए। इसके उपरात नागमट्टके मतीजे कक्ष्मुक और देवराज क्रमश राजा हुए। क्ष्मुक जैनधर्मी था और उसने एक विशाल जैनमन्दिर वनवाया था। तदन तर देवराजका

कुर बन्तरात्र रण्यांत्र क्षे 'परवर मुक्तिबंबक वहूं'पर वैद्य । दुर्बर जीतरार काम प्रकार सम्मारिक संस्थालक बढ़ी जरेग था। पैतासार क्रयोचन नूर्राने अपनी गुणनपनामा (अट ई) में तथा जिनलेन नुपार बंतीने शिक्षंप (२८) है । वे इन बरेपका बारमकांके रूप्याचीन वर्ष-ब्यान बरेपाँचे बालेस विस्ता है। बानसाबवे तम् अ५०८ है वर्शन गान किया बर्गेण होता है । जनकी प्रकार शावकारी जिल्लाक ही की और नक्षण वर्षी राजन्यण जाला। व बच्चकारत और नुब्रशाउँ वर्षी प बार बनके राज्यक कल्पन से इसने बनामके बादासको इछना माँ र भगी या भी भागाय जानुवर्वतो नरेशले बाहीब छाना । राज्यपूर प्राप मीर राज्यमा समग्रन दनके अपन मान्त्रको ने । सन्तर नपमन रह यतको परन दुर्वर प्रतिहारीय वेरावदे बाले और र्राजनलब्द राज्युतीके साथ कलारायके बाधाररके किए जबन बेयर पमा बीर मनेक बुद्ध हुए दिन्तु मन्तराज्ये ही बचीजार अधिकार बरके बन्ने अन्त बालामको पात्रकारी बनारा । रूपारंबके करनके बार कमीत ही बारवर्षकी प्रकार धारवाची कर चना का बीर नर्जर प्रतिप्रारंकि प्रयासके कामीयका सामान्य अपनी बाहिको भारत विकासी भूष बता । बचाएक्यो बैन साहित्य और बन्यदिसीने बैन्यर्नेश देखे वता नवर्षक बीट बदावक विदेश किया क्या है। बोर्डिश बीराज बारि बबरोबे बबके उत्तय नियाण जिल्लानियाँका निर्वास हमा बद्धारा बाता है। बैन की क्यार्कानुस्ति। यह बहुत बाबान अस्ता वा बीर रतीके नवव अनुसर्वे बनवयन व्हेंप्रास्तर एवं दिनावर अनिर नवन पुष्य वने और बनव बन्नवारों के पुष्य-पृथ्य केन्द्र स्वातित हुए जडीड होते हैं। इसी गरेपके राज्यों रिमन्यराचार जिन्हेंको अपना नुप्रतिस हॉर्रियपुरान नवसारपुर (कारतरेशने बन्दीरक निवट बदनानर) में रता वयोजन्तुरिते राज्यकाके बातावित्रुर्धे कस्ती पुरक्रयनामा रथी बीर बम्बरण्या विश्वीहर्ने बुप्रविद्ध बरेडाम्बर विक्रम् श्रीरंकः मुरिते बनेत्र प्राचींनी चना थी। इस नरेशने बन्नोज, मचुरा, लाहिस्याए, मोषरा लादि स्वानोंने अनेक जैन मन्दिर यनवाये वनाये जाते हैं। गन्नोजना मन्दिर १०० हाय कैंचा या और उतमें भगवान् महाबीरको स्वर्णमां। प्रतिमा प्रतिष्टिन की गयी थी। ग्वास्तियरमें भी इस राजाने एक २३ हाय कैंची सीयनर प्रतिमा स्वापित की थी।

यरमराजवा पुत्र नागभट्ट दितीय जागावरोव आम (८००-८३३ ई०) अपने पिताके समान हो प्रवापी और विजेता था। पालो और राष्ट्र-कुटोंके पारण कन्नोज फिर गुर्जर प्रकितारोंके हायसे निकल गया या मिन् नागावलोगने अन्तत चक्रायममा अन्त गरमे मन्नीजपर ८१६ रि० मे लगभग स्थायी अधिकार पर लिया और उसे ही अपनी प्रधान राजधानी बनाया। इस नरेशने आन्ध्र, सैचव, विदर्भ गौर मिलिंगभे राजाशोगी अपने अधीन विया, बंगालके पाल-नरेशको पराजित किया और सानते. मालवा, किरात, तुद्दक, बरम, मत्स्य आदि राज्याके अनेक भाग छीन कर अपने साम्राज्यमें मिला लिये । राष्ट्रगृट गोवि द तुतीय (७९४-८१४ ई॰) से उसके कई युद्ध हुए और ये दोना परस्पर प्रवल प्रतिद्वन्द्वी बने रहे। नागभद्र दिसीय गुजरेस्वर भी गहलासा था। यह नरेस भी जैन-यमेका बढा प्रश्रयदाता था। जैन साहित्य और अनुश्रुतियोंमें उसकी प्रशसा पायी जाती है। जैनाचार्य प्रभाष द्रसूरिके प्रभावकषरित्रके अनुसार ८३३ ई० में उसकी मृत्यु गगामें समाधि लेकर हुई। वह भी जैनाचार्य यप्पमट्रसूरिका वहुत बादर करता था। मयुराके प्राचीन जैनस्तुपका जीर्णोद्वार इसीके बाध्यममें हुआ बताया जाता है। यह एक धर्मारमा राजा था, जिनेन्द्रकी भौति विष्णु, शिव, भगवती और सूर्यका भी भगत था। उसके पुत्र रामदेव या रामभद्रने फेवल तीन वर्ष (८३३-८३६ ६०) राज्य किया और उसके अल्पकालीन शासन कालमें राज्यकी क्षति हुई।

रामभद्रका पुत्र भोज इस वंशका सर्वमहान् नरेश हुआ। प्रभास, आदिवराह, मिहिर आदि विरुद प्राप्त परम भट्टारक महाराजाधिराज बबाद बा बार और नहिन्तु था। असी पुन्धी जरणीत यही रामक वा किन्नु कैरकर्मा को बारी क्यारात था। बाँचे सामक रामक का किन्नु कैरकर्मा को बारी कर रामक को स्थान कीरियों रेक्ड (मुस्कार्यित) के पुष्के बीकर किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्त किन्नु कार्यक्रम किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रिय किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रम किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रम किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रम किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रम कीर्यक्रम कीर्यक्रम की किन्नु कार्यक्रम कीर्यक्रम कीर कीर्यक्रम कीर कीर्यक्रम कीर्यक्रम कीर्यक्रम कीर्यक्रम कीर्यक्रम

निविद्र नीमका पूर्व बहेन्स्यान प्रथम (८८५-५ ८ ई.) थी वर्ष महान् प्रत्यक था। बहेन्स्यान बीट विश्वसदात्र बढनी वधाविमां थी। वतके बमनमें वामान्यको पतित वृत्तं विस्ताद बीट राजवानी नवीनका

बाहरीय इतिहास एक संवे

वैभव अक्षुण्ण रहे। वह विद्वानोंका आध्ययदाता और साहित्यका प्रेमी था । कप्रमजरी, काव्यमीमामा, बालरामायण, वालमारत आदि ग्रम्योकि रचियता महाकवि राजाभ्यर उसके गुरु ये। उसके बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र मोज दितीय गद्दीपर वैठा किन्तु उसकी शोघ्र ही मृत्यु हो गयो अत किनप्र पुत्र महीपाल (९१०--९४० ई०) राजा हुआ। यह सूर्यो-पामक था। राजशेखर इसका भी राजकवि या, चण्डकौशिक नाटकवा कर्त्ता क्षेमेश्वर भी इसी राजाका आधित या। ९१५ ई० में अन्व लेखक अलमसूदीने इस गुर्जर नरेशको बहुत घनी और पिनतशाली वर्णित किया है। किन्तु ९१५--१८ ई० में ही राष्ट्रकूट इन्द्र तृतीयने कन्नीजपर चढाई की और उसका बहुत विव्वस किया। कन्न हके जैन महाकवि पम्प-द्वारा रचित पम्पभारतके अनुसार इन्द्रके सामन्त नर्रासह चालुक्यने महीपालको बुरी तरह हराया और अपने घोडाँको गगाके सगममें नहलाया । यस्तुत महोपालके समयमे हो गुर्जर प्रतिहार वशको अवनति प्रारम्म हो गयो। उसका उत्तराधिकारी महेन्द्रपाल द्वितीय भी भारी विद्याप्रेमी था, जैना-चार्य सामदेव सुरिने इसी नरेशके लिए अपने राजनीतिके महान ग्रन्य नीति-वाषयामृत और महेद्रमातलिस जल्पको रचना की थी। तदनन्तर क्रमश देवपाल (९४६-६० ई०), विनायकपाल, महीपाल हिसीय, विजयपाल, राज्यपाल, त्रिलोचनपाल और यदापाल नामक राजा हुए। यदापालके समय १०२३ ई० मयुरामें एक नवीन जैन मन्दिरका निर्माण हुआ। ११वीं रातान्दो ई० के मध्यके लगभग यशपालकी मृत्युके साथ इस वंशका अन्त हा गया, इस बीचमें ९४६ ई० के लगमग माल्या स्वतंत्र हुआ, ९६२ ई० में गगनरेश मारसिंहने प्रतिहारापर आफ्रमण किया और उन्हें परानित किया। सनै शनै बजुराहोक चन्देले, ग्वालियरके कच्छपघट, घागक परमार, मध्य भारतके कलचुरि, गुजरातके मोलको आदि स्वतन्त्र हो गये बौर कमीजका गुर्जर प्रतिहार माम्राज्य छिन्न-निम्न हो गया। कन्नीजके बन्तिम राजाओंने मुबुक्तगोन और महमूद गुजनवोके विरुद्ध मटिण्डेके साही नायहर राज्यानाके नारपात देवने याना की जोर नहीं योच्याके राहिय स्वादी नीव प्राचीत देवनी पहींचे इन बंबके राज्यान जाहरणी नार्मातिक नार्या पार्ट बेन व । स्वीमारके नाष्ट्रपार्ट —वश्योतक निरस्त कीमर या पार्ट्यमंति नारपार या हिना पार्ट्यमाना गांव नात्र कर है वे वि

वधा स्टर हुए था। धन्नुर, गारेच बातु रक्तवारी, रणायारी सार्वि से स्था समझे पायारी एक पर रही थी। स्टामार्ड निष्ट सम्बं स्टर क्षणार्च से भी मीहारात पाया था। दिन्तु इन सीवर प्रामर्थनी समझे (भीतर) हा बचने निष्ठ मृत्यु दिन्दि कृपीया स्टब्स मेर्ड प्रियंत संस्थादि पाया था। यह दिन्दि कृपीया स्टब्स मेर्ड प्रियंत संस्थादि पाया था। यह दिन्दि कृपीया स्टब्स मेर्ड प्राम्य का स्टब्स प्राप्त था। यह स्टिविट प्राप्ति के सिर्वेद्ध प्राप्ताया स्टब्स प्राप्ति थे। यह सिर्वेद्धिया प्रमुख सिर्वेद्ध मेर्ड मृत्याया स्टब्स या। बचीतरे स्टब्स प्राप्ति मृत्यु कर स्टब्स सिर्वेद्ध मिल्यु स्टिवेद्ध मृत्याया स्टब्स या। बचीतरे स्टब्स प्राप्ति मन्द्र स्टिवेद्ध स्टब्स स्टब्स सिर्वेद से। १-वी प्राप्ति है से स्टब्स सिर्वेद्ध स्टब्स स्टब्स स्टिवेद्ध स्टब्स स्टिवेद्ध प्राप्ति होत्र से सीवर प्राप्ति स्टब्स स्टब्स स्टब्स स्टिवेद्ध स्टब्स सित्व सित

 रोनीका पुत्र इतिहासप्रसिद्ध पृथ्योराज तृतीय (रागिष्योरा) था। घन्दवरदाई माट उमका मित्र और राजकिय था, ऐसा प्रसिद्ध है। पृथ्योराज एक महान् योद्धा एव वोर नरेश था। कन्नोजके जवनन्त्र और महोविके च देलोके साथ उमको प्रवल प्रतिद्वन्त्रिता थो। पृथ्वोराज द्वारा कन्नोजकी राजकन्या सयोक्ताके हरणकी घटना लगभग १२७५ ई० को है। ११८२ ई० में उसने परमाल चन्देलको पराजित किया था। मोहम्मद गोरीके हमलेको उमन बीरनापूर्वक रोका और ११९१ ई० में तराइनके प्रयम युद्ध में ग्रोरीको बुरी तरह हराकर भारत्यपसे खदेड दिया। किन्तु परस्परकी कूटके बारण ११६३ ई० में तराइनके दूसरे युद्ध में ग्रारीको विजय हुई। पृथ्वाराज बन्दी हुआ और मार डाला गया। फलम्बक्रव दिल्लो और अजमेरपर मुमलमानोंका अधिकार हो गया।

बाय चौहान राजाओं में घवलपूरीका चण्डमहारोन (९८२ ई०) बिघक प्रिनद्ध है। अजमेर, नाडोल, दिल्ली तथा आय मभी न्यानोंक तरकालीन चाहमान नरेश जैनधर्मी न होते हुए भी जैन धमके पापक ये और जैन गृहआका आदर करते थे। उनमें-से अनेक राजपुरूप जैनी भी रहे। नाडोलमें चौहान राज्य ९६० से १२५२ ई० तक रहा। इम बशका अक्ष्यराज चौहान जिनभकत था और उमने अपने राज्यमें पशु-हिसापर प्रतिवाध लगाया था। उसका पुत्र अहलदेय अपने पितासे भी अधिक उत्ताही जैन था। यह राजा भी महाबीरका परम भक्त था, उसने १९६२ ई० में उक्न तीथकरका एक विशाल मन्दिर नादरामें धनवाया था और उसके लिए कतिपय श्रावको एव साधुओंको सुरक्षामें बहुत सी सम्पत्ति दान कर दो थी। सन् १२२८ ई० के एक ताम्रशासनस इस दानका पता चलता है। यह राजा अन्तमें राज्य स्थाग करके जैन साधु हो गया था। उसके पूर्वज लाखा और दादराव तथा धंशज कल्हण, गर्जीसह कृतिपाल आदि आय राजे भी जैन थे।

दिल्लीके तोमर—दिल्लीकी कतिपय राजापलियोंके अनुसार, जो



मो इम समय निर्मेल हो चुके थे। अतः गोयकने एव स्थतःत्र सासकको नाई राज्य किया, महाराजाधिराजको नपाधि धारण को ओर अपने राज्यका विस्तार किया। अपने पोषित पुत्र मूंजनो राज्य देकर सम् ९७४ कि ने लगमा उसने एक जैनानागी मुनि दीशा ले हो और टीप भोषन एक जैन तपस्वीमे रूपमें व्यतीत विषया बनाया जाता है।

उसका उत्तराधिकारी मृज यावपितराज एवं उत्पल्लाज भी कहानागा

या। बहु बहाबीर, पराक्रमी, कवि और विदायेमी या। क्रिनावीय चालुवय सम्राट् सेलप हितीयपर उमने छह बार आक्रमण किया और कई बार उसे पराजित किया । मातवी बारम आफ्रमणमे यह स्वय तैलपका बादी हो गया । बन्दी दशामें ही मुजना तीप्रपनी यहा मृणालद्वीमे त्रेम हो गया और इस प्रकार यह एक प्रसिद्ध भारतात प्रेमणाधाना नायक हुआ। मृणालयतोषी महायताम यह बाटीमानेस भाग नियला, बिन्स पकडा गया और उसनो हत्या करवा टी गयी। यह घटना लगभग ९०५ ई० की है। मुजके सम्बाधमें प्रवाधियातामिक सादि जैन ग्रायामें अनेक कयाएँ मिलनी है। नवसाहमाक्चिन्तिक लेपक पद्ममुख्न, दशक्यके लेतक घनजब, उसके भाई घनिक, जैन कवि घनपाल आपि अनेक कवियोंका वह आश्रगदाता था। जैनाचार्य महानेन और अमितगतिका यह राजा बहुत सम्मान करता या । इन जैनाचार्योन उसक प्रश्नवमें अनेक ग्रन्थोकी रचनाकी। मुंज स्वय जैनी था या नहीं यह नहीं कहा जा सकता किन्तु वह जैन घर्मका प्रवल पापक या इसमे सन्दह नहीं है।

चनका उत्तराधिकारी और भाई सि चुल या सिन्धुराज कुमार नारायण नवसाहसाव (१९६-१००९ ई०) भी जैनधर्मका पोषक था। प्रयुम्नचरितके कर्त्ता मुनि महासेनपा यह गृष्यत् क्षादर करता था। क्षामनव कालिदास कवि परिमलका नवसाहसाक चरित्र इसी राजाकी प्रशासों लिला गया है। हणो एवं लाट नरेकोंके साथ इसके कई युद्ध हुए। चालुक्वोंसे भी अपने भाईका बदला लेनेके लिए इसने युद्ध हुए। चालुक्वोंसे भी अपने भाईका बदला लेनेके लिए इसने युद्ध

तिये । जिल्लु कोर्लको आमुन्तराज्ञमे कारास्य आजनस्य कर प्रवत्न हेरा काल तिमा बीट विम्मुराजको नराजिम किया ।

या व (साम् तार विस्तृत्त्रक) वर्गाता (क्या) । प्रकार प्रचार मेर (१ १ - १ ५) वे) मान्त्रेय कीर-वन्द्रासी व्याप्तेय कीर (वर्गाता प्रांत वे वर्गा वीत्र करण किया मान्यते नृप्त प्रकारी कर्णा (वर्गा वर्गा वे प्रत्यत्त करण किया मान्यते करण वर्गा विकार वरगा था। वर क्या (क्याप्तेय वर्गा कर्णा केरे विद् वर्गे तोल (वर्गा वर्गा था। वर्गा वर्गा (क्याप्तेय वर्गा कर्णे कर्ण वर्गा वर्गा कर्णा वर्गा वर्गा था। विचार पुरान्त्रण वर्गा वे अध्याप्त्रक वर्गा वर्गा कर्णे वर्ग वर्गा वर्ग वर्गा वर्

है विकार्ण गांवहरूक्त नकांत्र प्रवासा ग्राहि, बहे क्यांत्रे रवित्रा त्यां त्यां देश प्रवास वादस र क्यांत्र इस्त दिशा या । यावस गांवहरूक्त क्यांत्र प्रवास के देश करित हिम्मीर्थे प्रशासने वर्णाव्य दिशा या । श्रीवा तेवालं पूचक्क सी वैदिया । वर्णाव्य क्यांत्र वरित व्यक्ति दूराव के व्यक्ति त्यांत्र वर्णाव्य वर्णाव्य क्यांत्र वर्णाव्य वर्णाव्य क्यांत्र वर्णाव्य क्षांत्र मार्वा

बायपरे पाण-मारशा वो बो । यस वस्त्रं शो पुरित यह मुक्तेम वा ।
भोजे कराणा सर्वाह्म प्रवर्ष (१ १६-८) । ध्या हुवा । वस्त्रे
प्राणिकारि विशेष स्वारु १६ । उसे तायकोर (११ ४-११ हैं.)
स्वार्ष मेद्रा मेरे सेरास्त्रा स्वारोप था। इस्त्रेशके महाराज में दर्वे सेरामां रस्त्रेशन वेशायों विश्वाद्यापिक वा प्राप्तिक महाराज मेरिकाम हिंद्रा । इस प्रस्ते सेरामुक्त स्वारोप सोर प्रोण्यामां प्रोण क्षामां प्रकार विद्या । इस प्रस्ते सेरामुक्त स्वारोप सोर प्रोण्यामां प्रोण्यामां प्रोण्यामां विश्वाद

बारतीय इतिहास वृक्त रहि

160

किया। जिनचन्द्र नामक एक जैनीको उसने गुजरात प्रान्तका शासक नियुवत किया था। १२ वीं-१३ वीं शताब्दीमें धाराके परमारनरेश विच्यवमी और उसके उत्तराधिकारियो सुमटवर्मा, अजुनवर्मा, देवपाल और जैतुनिदेवने पं॰ आशाधर आदि अनेक जैन विद्वानीका आदर किया था। आशाधरने अपने विविध-विपयक लगभग चालीस ग्रन्थोंकी रचना उन्हीं नरेशोंके आश्रयमें की थो। विव्हण कवीश, मदनोपाच्याय आदि अनेक सस्कृत कवि भी इनके प्रथम रहे थे। १३ वीं शती ईसवीके अन्त तक परमार राज्यका अन्त हो गया और मालवापर मुसलमानोंका धामन हो गया। किन्तु फिर भी मालया और उसके उज्जैन, भार, माण्डू आदि प्रमुख नगर जैन एव हिन्दू वमें और उनकी सस्कृतियोंके प्रसिद्ध के द्व वने रहे।

मेवाडके गृहिलौत-मेबाह राजस्थानका स्यात् सर्व-प्राचीन राज्य हैं और उसकी प्राचीन राजधानी चित्तीह (चित्रकूटपर) प्राचीन कालमें भो एक प्रसिद्ध नगरी थी। ८वीं शताब्दी ई०के मध्य तक यहाँ मौर्यवशकी एक शाखाका राज्य था। उक्त शताब्दीके प्रारम्भमें जिस मोरिय राजाका यहाँ शास्त था उसका उपनाम सम्भवतया धवलप्पदेव या। श्रीवल्लम उसका उपाधि यो और श्वेतच्छत्र उसका राज्य-चिह्न या। उसके उत्तराधिकारी राहण्यदेवको पराकित करके राष्ट्रकूट दन्तिदुर्गने उपराक्त चपाधि और चिह्न स्वयं ग्रहण कर लिये थे। धवलप्पदवके कनिए प्र सम्भवतया वीरप्पदेव थे जो आगे चलकर प्रसिद्ध जैनाचार्य धोरसन स्वामोके नामसे प्रख्यात हुए और जिन्होंने दिगम्बर आगमोंकी विद्यालकाय टोकाओकी रचना करके उन्हें घवल नामाकित किया। इसी चित्रक्टपर (चित्तीड) में जैनगुरु एसाचार्य निवास करते थे। वेही बीरसन स्त्रामीके विद्यागुरु थे। राहप्पके राजा होनेपर ही सम्भवतया घोरसेनन दोक्षा छे छी और ७५० ई० के लगभग राष्ट्रकूटों-द्वारा राह्प्पकी पराजयके उपरान्त वे राष्ट्रकूटोको राजघानीके निकट वाटनगरमें चले गये ये और वहीं अपना विद्यापीठ स्थापित करके उन्होंने घवलादि नाम् वर्णोलं रचना थी थी। राज्यके वाहें वृत्त वहीं वा क्या वहीं रावता उत्तरा जाता कारणवाक सम्बन्धी कारणा बीम्मा इस्त रिक्षीता प्राप्त वर्ण-वारणे वृद्धिकी अंदर्भ कारणा थी। वृद्धिकी प्राप्त वर्ण-वारणे पूर्विकी नहीं थे बीद वह वंद नामकारें नीमीर्द्धिक गार्वे की अधिद हुए। इसी वहने रिक्षीके एक प्रवस्त कारणा निमान की अधिद हुए। इसी वहने रिक्षीके क्षा वहने होत्रर नाम् दी वर्षे बीद यह हो पनिवासका कार्यको राज्या हो। इसी व्याप्तिके कारणा हिम्मा कारणा अधिद एक प्राप्त हो हिस्स हिम्मा व्याप्तिके कारणा है वृद्धिकी कारणा अधिद हा प्राप्त कुछा बुक्त वना स्थापित कारणा विद्यालया करणा हिम्मा व्याप्त हो हिस्स क्षा वृद्धिक कारणा है हिस्स क्षा वृद्धिक कारणा हो। इसी

विकास राजरवाणने जातो के प बोर बेनक्योर हर प्रमुख में त प्रा था। पृथ्वितीन नवार पास्त्र कर इक्तनार्थ देव या। तिल्लु इस स्पेक पाते बैनक्ये प्री वर्ष क्यार बोर प्रशित्तु परे। नहीं पाते और पास्त्रकों विकास के स्वी-प्राट क्या काल स्वायत्त्र नानी श्रीवार कावार्थ काल्य-वार्ष्य के स्वी-प्राट क्या काल्य का पास्त्र कार्य काल्य-क्यार्थी पास्त्र व्यक्ति के प्राट कार्य की प्राट कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य प्रवेशित कार्य कार्य की प्रीटक्य होगाव्य की स्वीक्ष नानुवार पुर्वित्तक कार्य की कार्य की प्रीटक्य होगाव्य की स्वाव्य कार्य पुर्वित्तक कार्य की कार्य की प्रीटक्य होगाव्य की स्वाव्य कार्य प्रविद्यान की प्राट वर्ष कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य विकास कार्य कार्य की प्राट कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की पार्टी के लेक्स और कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य के स्वाव्य की कील की स्वावित्त कार्य की कार्य की कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की किस कार्य कार्य कार्य कार्य की कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य किस कार्य की कार्य कर्म कार्य सन्त्य-वेम तथ स्त्रदेश-प्रवितके लिए इतिहासमें सवाधिक प्रसिद्ध है। उसके बीर राणाबोंने १७में प्रताब्दी पर्यन्त मुसल्यानोकी अधीमता स्तीकार नहीं की। राणाबोकी इस आनको निमानेमें मैवाटका जैनसमें तथा उसके जैन बीर मदैव महायक रहे। घोटमें भी मुहिलोंकी एक सालाका राज्य का।

हस्तिकृष्टिका या हथ दीके राठोट्-१०वी पती ६० में राजस्थानके हथेडी नगरमें राठींद वशी राजपुत्रींका प्राचीन राज्य था। इन राठीडॉका सम्बन्ध मम्भवतया दक्षिणके राष्ट्रकृट घॅरासे पा। बन्नी बने गहडवालोंसे भा इनका काई मम्बन्ध पाया नहीं यह नहीं पहा जा सकता । सम्मव है जोधपु -मारवाटक गठौड हर्नेदीके वशरी ही मुम्बन्धिम हा। हर्युटीका राठौष्टवरा जैनधर्मका अनुवायी था। ९१६ ई० में इस वशका राजा विद्रम्बराज जैनधर्मका परम मनत था। उसने अपनी राजधानी व्युँडीमें प्रयम तायकर न्यूपभदवका विशाल मिदर बनवाया या और एस मन्दिरके लिए बहुत-ती भूमि प्रदान की थी। जनके गर वास्टवसूरि या यलभद्र थे । राजाने स्वयको स्वणके साथ तुलवाकर संम मन्दिर और गुरुवा दान पर दिया था। सन् ९३९ ई० में विद्राधराजक पुत्र एव उत्तराधिकारी मम्मटने भी जनत मदिरके लिए विपुल द्वत्य दान किया था और अपने पिताये दान-पत्रकी भी पुनरावृत्ति की थी। यह राजा भी परम जैन था। इसवा पुत्र महाराज घवल भा परम जिन-भवत था। उसने ९९७ ई० में उपरोक्त मिदरका जीणोंद्वार फराया. दान दिया और ऋपमदेवकी एक नवीन प्रतिमा स्थापित व रायी। इस राजाके गुरु वासुदेवसूरिके शिष्य शान्तिमद्रसूरि थे और गूराचायने वह दान प्रशस्ति लिखी थी। जैनधर्मकी प्रभाषनाके लिए इस नरेपाने अनेक काय किये । १२वीं शती ई० व उपरान्त हर्युंडी राज्य सम्मवतया जोध-पुरके ही अधीन हो गया अयवा एक छोटा मा उपराज्य रह गया।

श्राचस्तीके ध्वजवशी नरेश- उत्तर प्रदेशके पूर्वी नागमें जिला बहराइचके अन्तर्गत श्रावस्ती (वर्तमान सहेटमहेट) एक प्राचीन महानगरी थी । वसरकोदान देवके सूर्ववंदी राजाबॉकी वह राजवाबी जी । व्हाचैर एवं पुरुषे सम्बर्गे समाद प्रदेशीका नहीका प्रसिद्ध समार या । गुण्यनान-के चरनतक पद कोशकरामको शामकानी बनी रही जिल्हा कुरावसकी ही रुपकी मनवति धारम्म हो वर्ता । झाझान और इएक्वान शक्त चीतो पानियोल क्रेच क्षत्रवी हुई अवस्थाम गाया वा । विका हर्वपर्यत्रके कुत गाप्तकाने नृष्टित होता है कि सक्ते धनवर्षे वह अवेस बसके राज्य-की एक मुक्ति (प्राप्त) या । ९वीं १ वीं कर्ती ई में बाबारीकी कुन क्सांग्र हुए और नहीं एक बैनमयानुनानी बंधका राज्य वा क्रिक्रने अवरण कांत्रमध्ये मंतुनार नुबन्धकातः सकरकात इंग्रक्तत बीर बीरकात वानी राजा बनम हुए। यह वस सम्बद्धमा संस्थापकी कळन्दियोगी एक सत्या थी । कम्बुरीबंबको निर्मित्र बालायोग बागान्यदरा वैवयर्थको अनुदिनी। नमा समयर्थ को सायरठीके इह सैनमंद्रका कक्ष्मुरिजीते ही राजाना हो। निवेषकर वय कि इस काक्ये और इसी प्रदेवने क्रक्युरियोक्ने एक सन्दू पारीनवाना राज्य होनेका क्या पक्या है । वपराक्य जोरक्यके क्यरान्य पालस्तीका राजा मुद्रिकन्तन हुना थो बड़ा बोर और बराइनी होनैके वान ही बान जैनवर्गका भी बनुवानी ना । ११वीं बतान्त्रीके पूर्वार्थने राका बाराज्यात निविच्य होता है। क्या महत्त्व बच्चायोक केटेके विश्वताकार चैनव बाकार नवकन गांधीको नवस्त्रकुके प्रक्रिय कुढने गुरी वच्च नयमिय किमा क्वाना माठा है । युद्धिक्त्यत सा तुहिसदेशके रतनार् करका नीता इर्थोक्ट्रेंस मानत्तीका राजा हुआ। छन् ११९४ है के प्रधीनके मोदिन्तका महत्रकारने बावस्तीयर माख्यमध करके क्षेत्र साव-नद्दत कर निना। इर्चवहने आपकर बुद्देशना ननमें बढी बना को और कर न्यति वसके संबन्ध नैपासमें का बसे और नाविता मुन्यत्व राज्यके स्वयती वर्षे ।

वानोक्संग्र-कार शास्त्रवे पूर्वपृत्रकाल कृतका वयके शांकर प्रतिक बीर वर्तिकाली नेय वैजाकशुनितके कालेक राजपूर्वाच्या वा ।

1 1

वतमान विभयप्रदेश (बुन्देलसण्ड) गुप्तबानम गुप्त साम्राज्यकी एक यमित्र मुक्ति । देवाङ और यजुराही आदि उसके प्रमुख नगर थे। मन् ८०१ ई॰ में नान्य चादेलने इस बदाकी स्यापना का और रार्जुरवाहक या राजु-राहोको अपनी राजधानी बनाया । चम्देलोंका मुल सम्बाध चेदिस रहा प्रतीत होता है और इनका उद्गम भार एव गोष्ट जातियामे हुन्ना अनुमान विया जाता है। बिन्तु उनकी अपनी अनुमृतियोके अनुमार उनका पूर्वपुरुप याह्मण था। वे नगने-आपको शात्रेय ऋषि और पादकी मन्तान वनाते है। नन्तुवर्न कन्नीममे प्रतिहारोपे सामन्त्रके रूपमे ही घादेल राज्यकी स्थापना की यो अवएव प्रारम्भिक चादेल राजे पितहारोंके अघोतस्य राजाआंके स्पर्मे नो रहे। नन्तूकके परचान् वायपति राजा हुआ, उसक दो पुत्र जेजा (जयशक्त) और बेजा (विजयशक्ति) थे जिल्लोने क्रमश राज्य किया। जेजाके नामपर यह प्रदेश जेजाकम्पिन नामसे प्रसिद्ध हुआ बताया जाता है। कालान्तरमें इसी शब्दका त्रिवृत रूप जुझीती हुआ। जेजाकी पुत्री नट्राका विवाह त्रिपुरीके कलचुरि-नरेश कोक्कल प्रथम (८४५-८८० ई०) के माप हुआ था। वेजाके याद राहिल राजा हुआ और फिर हप चादेल गही-पर बैठा। इसने ९०० मे ९२५ ई० तक राज्य किया। इसके मनयमे च देलोका उत्कर्ष प्रारम्भ हुआ। हुर्पका पुत्र यशोवर्मन या लक्षत्रमंन (९२५-९५४ ई०) और अधिक प्रतापी था । बन्नीजवी महीपाल प्रतिहार-से उसके मित्रवत् सम्बाच थे और उससे उसने एक प्रसिद्ध विष्णुमृति भी प्राप्त की थी। इसका पुत्र घग (९५४-१००२ ई०) वहा महत्त्वाबांक्षी था। उसके समयमें च देल राज्य एक सबया म्वतन्त्र राज्य था और धग अपने ममयके सर्वाधिक धावितशाली नरेशोमें-से था। ९९० ई० में उसने स्वम्तगीन ग्रजनवीके विरुद्ध भटिण्डेके जयपालकी सहायता की थी और युद्धमें स्वय भाग लिया था। खजुराहोंके सर्वप्रसिद्ध और सर्वधेष्ठ जैन एव वैष्णव मिदरोमें-स कई इसी उदार नरेशके नमयमें और उसके प्रध्यम निर्मित हुए थे। वहाँका भव्य पार्स्वनाय-मन्दिर इस राजाके शासनके प्रयम बचनें हो तिबित हुआ का। नन् ९५४ ई. के जबत मन्दि हे सम्बन्धि शिकानेक्ये अहाराज संबर्ध कुनानाम शाहिल मामक प्रक्रिक्र जैन वेडि ग्रे राजपुरच-द्वारा सर्गेच जान दिवे वामेचा जन्मेल है। अहने नई मनिर बीर मुलियो निर्माण करायो थो । इनके वृद्ध मुन्नि वानवचन्त्रका रामां की बाहर करता वा । बंबका पुत्र तथ्य औ जनारी और बरिल्ह्याची बरेघ वा।

रे ८ है ने बनन अरुन्याल बाह्यी-बारा भरमूर श्ववनरीके विश्व निरोजित स्वमें नहत्त्वरूच जान विवासीर बद्दमूचना वटा बुक्रायना विवास समृगद्वोके बान्तिगान-सन्तिगम बाहिनावची दिखान प्रतिसनी प्रतिष्ट इनी नरेचक पुत्र विद्याबरदेवने याननवासने बन् १ २८ वें में हुई मी। तत् १ २३ म म्ब्रमूद क्षत्रनदीके ताथ मुद्धमें विद्यापर पराज्ञित हुना मा वनी क्षत्रपते चलकोरी वस्तिता हु।४ प्रारम्त हुवा ।

११वी घटीके बस्तरावंगे १३वें राजा कीस्त्रियमनन राज्य निया। वनके नवरमे अन्देन शास्त्रको स्थिति किरव बेंबल वश्रो । यह सम्बन्ध एक बनान्तीके निष् वृष्टकमानोके बाकनवींने मी जारतवर्षको पास निमा और फ्लेकले इन दिवरिके गया नाम कठाना । ग्रीतिवर्तनके सामी साम-राजने बन १ ९० ई. ने बेस्वडने नवील दुर्व जनवाकर बनका नाम शीतिविधि रक्षा राज्यमें नई देश्यप बैन बादि मन्दिर की बने । स्थी राजाने बातानराजने १.६५ है बनावर कुछारियने जाना अमेर चल्दोस्थ पादक विच्याको राज-नवार्वे क्षेत्राको नवाका। १९६६

र्व बहार बरतरसमें एक वैत्रयन्त्रिका को निर्वाच इसा । १२वीं क्टीके बच्चमें स्लोध-तरेक बस्तकर्त बारी निर्मात मा । उद्ये अनेक नवर वरीवर तथा बैन एवं बैन्नथ-सन्दिरीका नियान करावा । एम १९४५, ११५४-११५५, ११५८-११६६ जारिकी समेक कैन मुस्तिमी इन रामाने सास्त्रमाण्ये प्रतिधित हुई मिनतो है। ११५५

की मुक्तिकर कराके निर्माता फिल्धे कुनार्शहरूका बान की अंक्रित है। सम् ११६५ है १२ २ ई. वर्धन्त क्लोब-नोब्र परव्यक्तित वा वरवाकरा

((जय रहा । यह इस यदाका अन्तिम महान् नरेश या । दिल्ही-अजमेरका स्वीराज चौहान और मन्नीजका जयचाद्र गहटवाल उसके प्रवस प्रतिद्वन्द्री -वे। महोत्रेके लोकप्रसिद्ध योदा बाल्हा और ज्दल परमार सन्दर्श हो बाधित एवं मेनानायक ये। जगनिकके बाह्यनण्डन उस कालको सन बनेक वीरगायाओको सजीव बनाये रसा जिनमें महावेके ये पीर नायक ये। सन् १२०२ ई० में परमालकी मृत्यु हो गया और चन्देलीन मुनुबहीन ऐवकम पराजित होकर उसकी अघीनता स्वीकार कर सी । परमादिदेव भो निर्माता या, अनेक मन्दिर उसक कारुमें यने । अहारक पान्तियाय तीर्यकरको सुदर विशाल पर्गासन मृतिका इगोक राज्यमें सन ११८० ई० में रूपकार पापटने बनाया था। १३ वीं मसीके उत्तराधमें बादेलराज वोरवर्मनदेव भी अजयगढ़के तथा अनेक देव-मिदरोक निर्माणके लिए प्रिमद्ध है। उनके समयका सन् १२७८-७८ की मृतियाँ एवं लेख मिलने है। मन् १३१० ई० के लगभग चन्दल राज्यका अन्त हुआ और यह मुसलमानी माम्राज्यमें बलाउद्दीन खिलजो-द्वारा मिला लिया गया ।

लगभग ४०० वर्षके दीर्घकालमें चादल नरेवाने भारतीय कलाका अभूतपूर्व पोषण किया। उनका निजका धर्म जैन न होते हुए भी वे जैनधमके प्रति अटबन्त सिहण्णु और उसके प्रवल पोषक रहे। देवगढ़, खनु-राहो, महोधा, अजयगढ़, अहार मदनपुरा, मदनसागरपुर, वानपुर, पपीरा, च देरो, दूदाही, चन्दपुरा, छतरपुर, टोकमगढ़ आदि च देल प्रदेशके प्राय सभी प्रमुख नगगमें समृद जैनोंकी बडी-बड़ी बस्तियाँ थीं, उनके श्रीदेव, वासवच द्र, षुमुदच द्र आदि अनेक निर्मन्य दिगम्बर साधुओं एवं विद्वान् आचार्योक्त राज्यमें उमुक्त विहार था और अनेक भव्य विद्याल जिनमन्दिरों एवं जैन कला- एतियोंका उन म्थानोंमें निर्माण हुआ। जैनकलाके ये चन्देलकालीन उदाहरण मारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनॉमें-से हैं और पूर्व मध्यकालीन मारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनॉमें-से हैं और पूर्व मध्यकालीन मारतीय कलाके सर्वोत्कृष्ट नमूनॉमें-से हैं। उनत राज्यके जैनियोंने भी राज्यकी सवतोमुक्षी उग्नतिमिद्य करते हैं। उनत राज्यके जैनियोंने भी राज्यकी सवतोमुक्षी उग्नतिमें पूणतया योगदान दिया। श्रिव और विद्युक्त



देशो राज्य उस कालमें उत्पन्न हो गये थे। उनके अतिरियत तिन्वत. नैपाल, कुमायूँ, गडवाल, आसाम आदिमें भी स्यत त्र या अर्थस्वतन्त्र राज्य थे। एक अनुध्विके अनुमार इस कालके परिहार, परमार, सीरकी. राठीइ, घौहान, बछवाहे आदि अधिकांत राजपुतवत अग्निष्छने बहे जाते हैं और वर्नल टाडवें मतानुसार उनके अधिनशूल बहुछानेवा कारण यह मी हो सकता है पि वे जनधममें दोक्षित हो गये थे। कमसे पम उस कालने विभिन्न छोटे बटे राज्यवयोगा जो इतिहास प्राप्त है उसम इस विषयमें तो सन्दह नहीं हैं नि इन राज्यवेद्योमें अल्पाधिय काल सक जैनधर्मकी प्रवृत्ति अवस्य रही थी। इन सब ही राज्याम जैनधर्म और उसके अनुवायो मूखपूर्वक फले-फुले । राजागण जैनवर्मने यदि अनुवायो नहीं हाते थे तो उसके प्रति उदार एवं सहिष्णु अवस्य गहते थे। साथ हो जैनधर्म और उसके आचार-विचारके प्रभावते उनकी धोरता, युद्धप्रयता बोर स्वात प्र-प्रेममें कोई कमी नहीं वायो थी। उनके पतनका यास्त्रविक नारण उनकी परस्परकी फूट, जाति और कुलमा दुरभिमान, उनमें परम्पर एकता और एकसूत्रताका अभाव और दूसरी ओर धन एवं राज्यके लोभसे प्रेरित धर्माच एव कर मुसलमान जातियोके अनवरत आक्रमण, छल, वल और कौराल थे, जिन्होंने सहज और धीन्न ही देसको विधर्मी विदेशियोंकी पराधीनतामें जनह दिया ।

सूर्य, शिवन तथा विष्णुके विभिन्न अवतारोको लेकर अनेक सम्प्रदाय चल पढे थे। तान्त्रिक और वाममार्गी मम्प्रदाय मी उत्पन्न हो गये। बोर शैव या लिंगायत-जैसे नये नये सम्प्रदाय तथा जोगियां और साधुआ-द्वारा चलाये गये नये-नये पन्य नित्य पैदा हो रहे थे। इन समस्त विभिन्न एवं बहुधा परस्पर-विराधी मम्प्रदायों और पन्धोयों सामूहिक रूपसे, विद्येषतया मुसलमानों द्वारा, हिन्दूधर्म कहा जाने लगा, उन सबका अन्तर्भाव इस एक हो नाममें सामा यत किया जाने लगा और इनमें से किसी भी सम्प्रदाय या पन्थवा माननेवाला अपनेको हिन्दू कह सकता था और कहलाने लगा।

देव उतार त्यावर्धन्य दिनुसंबे बहुसाय सम्बाधारण तथा धाने माहार धी समाय होने सती । इस्त विस्तान सामारांके अनुसामिती स्वाधा संक्रमण बहुत मेर विद्यालया भी समीनान्त्री स्वम्य पूर्व हो माही े तथान मेरायोग्या जिलु सान तीले कर्यत स्वाप्ता क्रियान मंदि चना मेरे हार्योग सम्बाधित समान करने सामारा । सामाय पूर्व मा मार-वेती आणीन मानुप्तियांकी समान करने सामारा । स्वाप्त पूर्व मान्य विद्यालया मानुप्तियांकी समान करने सामारा मान्य पूर्व मान्य विदेश चना हुए सी मानु दिश्योग सम्बाधा प्रकार सामार्थ कर स्वाप्त स्वाप्त मान्य वर्ष बंदामक बोप आ शिलु आदिका सामारा पुरु सूर्व सीचे स्वाप्त नेत्रमंत्र में साह्य स्थापनार्थ स्व साम्य पुरु सूर्व सीचे स्वाप्त नेत्रमंत्र में साहय स्थापनार्थ स्व साम्य पुरु सूर्व सीचे स्वाप्त नेत्रमंत्र में साहय स्थापनार्थ स्व सम्बन्ध व्यक्त स्वाप्त विद्यालया ।

रवनम्य नग्रहाय-वैता हो बन चवा आवेशके नव्यवाधने राज्येनिय और नामाजिक पृक्ति चैनी और क्रियुवॉर्न बावा कोई बनार नहीं रोव परने तथा अन को यम बार्शनह, विश्वत नक्तपुरी निव्यूपर्वन होन्या पापुत्र माहप्रमान पुत्रात्त्रान बोबंडी बेरे वह बक्राई, बवेड पर्के वरपाने बाक्क-बरधार, वेनालीत और शीनान वेती होते हैं। सार्व दिन्दु तथा पुनत्रमान बजाद बैनवर्षेत्र नुष्यतेषक और माधवयता स्रो रहे रिक्ते हो देशीने बन-बाबारण राजपुत्र आहर और शहान वर्ष धार बादियोजे जी बैनवर्गके अनुवासी गाउँ बार्ट के। श्रमीरियक पर्वेदिवरके अनुसार बन् ६ ०-१२ ई के सध्य बैश्वर्य बस्तवारतारी वर्ण वातियोगा प्रवास कर का । विश्व धर्म-ताने कर वर्त आसार-स्वरतात-प्रयाग विक्त् मारिने ही धीनित होता पत्न बना । इससे इनकी स्त्य वर्ष लोकरिक्या को वर्षी विष्यु समृति चलित और बालादिक लिबीची विकेष बन्तर नहीं साना । कई एक काउदायों एवं शब्देविक बेटों बंबर्स बंग वन पन्ध वारिकोर्ने निजन्त हो बालेपर की जैनवर्जकी बंस्कृति बीर मीमित्ता पुरुष् बलुम्न बनी रही. बाह्य खाबार-विचार पृक्षा-नडींग स्वीदार-प्रस्तव मानिये दिन्दु बरप्रशासीक साम बढका बहुत कुछ बायान- ादान हुआ तथापि उसकी सैद्धान्तिक मूलभित्ति अंडिंग रहो, उसके मौलिक विश्वास औ परम्परार्ष स्थिर रहे और इनके कारण वह भारतका एक स्वतन्त्र एव प्रमुख घर्म बनारहा। उसके प्रेरक तत्त्व मजीव वने रहे और उनवे कारण उसके अनुयायियोंका धार्मिक उत्पाह सजग रहा । इ हीं कारणोने जैनधर्मकी तथाकथित हिन्दूधर्नमें आत्मसान् होनेमे नक्षा की और माय ही उसे बौद्धवर्मकी जो गति हुई उमसे भी उसे वचा लिया। मारतवर्षकी मौलिक घामिक महिष्णुनाने इस देशमें घामिक विद्वेप, अत्याचार एव साम्प्रदायिक वैमनस्यप् वहत क्छ सफल नियन्त्रण रखा। यही कारण है कि मुसलिम युगके पूर्व एवं अनेक अशोंमें वसके प्रारम्भके उपरान्त भी विभिन्न भारतीय धर्म बहुत कुछ पग्स्पर सहयोग एव मद्मावपूर्वक साय माय फलते-फूलते ग्हें। वानेवाले मध्यकालके विदेशी विधर्मी मुसलमान शासन-कालमें जैनधर्मकी प्राय वही दशा और स्थिति रही जो अप नारतीय घर्मोंकी थी। उसके शान्तिप्रिय एव धनी व्यापारी अनुयायियोंके कारण मुसलमान शासकोंने भी उसपर अत्यधिक अत्याचार नहीं किया प्रतीत होता।



र राज्यके इप्टदेव 'कल्लिंग जिन' कहलाते थे । विद्वानोंमें इस विपयमें तमेद है कि ये कॉलग जिन' सादि या अग्रजिन प्रयम तीर्थंकर ऋषभ-व थे, या भद्दलपुर (कॉलगदेशस्य भद्राचलम् या मद्रपुरम्) में उत्पन्न सर्वे तीषकर क्षीतलनाथ थे अथवा २३वें तीर्थकर पार्वनाय थे। किन्त् नहावीरके जन्मके पूर्व भी इस जनपदमें उक्त कॉलग-जिनको प्रतिष्ठा थी इसमे सन्देह नहीं ह । तीथकर पार्स्वका विहार कलिंग देशमें हुआ था । भगवान् महावीर भी वहाँ पघारे थे और राजघानी कलिंग नगरके निकट कुमारी पवसपर उनका समवसरण रूगा था। उपरोक्त घटनाओंकी म्मृतिमं उपत स्यानपर स्तूपादि स्मारक बने ये और मुनियोंके निवासक लिए गुफाएँ भी निर्मित हुई थीं जी खारवेलके समयके वहुत पहलेसे वहाँ विद्यमान थीं। इन सब वातोंसि विदित होता है, जैसा कि प्रो॰ राखालदास वनर्जीका भी मत है, कि उड़ीसा प्रारम्भसे जैनवर्मका एक प्रमुख गढ़ था। वस्तुत इस प्रदेशम आर्यसभ्यता और सस्कृतिके प्रवेशका श्रेय जैनघमको है।

छठी शताब्दी ई० पू० में किलग देशपर जितशमु नामक राजाका राज्य या जो महाबीरक पिता राजा सिद्धार्यका मित्र और बहनोई था। इमकी कथा यागोदाके माथ महाबीरके विवाहकी बात घलो थी किन्तु महाबीरने आजन्म ब्रह्मचारी रहनेका ही दृढ़ निश्चय कर लिया था अत यह विवाह न हो सका। जितशमु सम्भवत्या किसी प्राचीन विद्याघर वसस सम्बिधत था। उसके बशाजोंने नन्दकाल-पर्यन्त इस देशपर निर्वाध शासन किया प्रतीत होता है। महाबीर निर्वाण सवत् १०३ (ई० पू० ४२४) में मगधनरेश नन्दियर्धनने किलगपर आक्रमण किया और उस राज्यको अपने साम्राज्यका अग बनाया। सम्भवत्या वह स्वय जैनी था अत किलाको राजधानोमं प्रतिष्ठित किलगजिनको भव्य मूर्तिको अपने साम लिवा छाने और अपनी राजधानी पाटलिपुत्रमं प्रतिष्ठित करनेका लोग सबरण न कर सका। मगधनरेश महानन्दिनके उपरान्त ई० पू०

अध्याय ६

कठिय,गुजराव बंगास, सिन्य, करमीर, सिंदर और बद्धतर भारत करिया-वालिय राज वृत्ती तबुक्तरार वाजन्तवे बंदन कर्तन

कैन्स हुना था । बक्तो बत्तानी शोबा बंद्यांगीको लाई कराये दी शक्तिको नस्य प्रत्यके प्रपरान्त वर्ते वन की हुए थे। वृत्ती जारताव नग्नावर म बीर पतिचयो नीमा मध्यक्रमताचे बमरतगरू प्रमानामा तक पहुँची चौ । वश्चित्रशोधन या महाजेलक देशः जो बहुवा प्रवक्ते मीतर हो ^{बहुवा} चा। रहिन (बर्तनान बडीना) नो विरुष्टिम देव मी न्या नगई क्योंकि उनमें बल्बम क्योन और श्रीवक (परिको बेंडम) है बीर देख बन्गिमान थे । वैदिकः सामित्वये व्यक्तिकः कोई सम्बन्धः नहीं है। नहाशारकमें बतुशा नर्जन एक रूपा प्रदेशके रूपने हुआ है। जिस्सा धार्म

विवासर था । सर्वशास्त्रके सनुभार सही एक विरोध प्रकारका असी ^{सर्व} नन्ता या । पर्नतुर्वीत रहे स्त्रेच्छ देश बढ़ा है और दर्श वालेस्टीनी पराची नदा है । इन प्रचार बाह्य नरस्परायें करित हैच निरसा^{त तक} एक बरार्थ क्वेडिक देव बना रहा । बीज्जानोर्वे वनिवदेश बीर वंपनी राजकारी रामपुरके जरेक शरीख है रिन्मू बीज अनुसूचिते क्रो^{स्}र महाज्वापीने दक्षण करनेक वहीं है। इसके निरारित जैन हादित्व ^{जीर}

अनुसूत्रीमंति वर्षित देवचे अनेच अनेच मिल्ली है चलिएके वर्ग शापाल क्लाम्ब पुण्यत्नावधेच जैन है और इन देवलें ब्रह्मच शा^{पील}

कारचे ही मैन रीवेंकरींची अधिका रही उत्तीन होता है। इस ^{देव}

भारतीय इन्द्रिया पढ की 3=

गमनवालके अनिम वर्षीमें करिंग फिरमें स्थताय हो गया और वर्षी एक ावीन राज्यवराचा उदय हुआ । यह नमीन वश मी जैनमर्मानृपायी या । गाचीन राज्यवंदाने इसका कोई मम्बन्य या या नहीं यह नहीं बहा जा पुकता । सम्भावना यही है कि यह किंगके विभी प्राचीन राज्यबराकी ही पाचा भी । सारवेरके शिलानेखरु धनुगार इस यशका नाम ऐक <mark>घा और</mark> यह चेदि या चैत्रवंतको एक शासा थो । तत्कालीन राज्यका नाम सम्म्यतया क्षेमराज या । मूछ विद्वानींने अनुसार क्षेमराजना पृत्र बृद्धिराज था और उसका पुत्र निक्षराज लाखिन था, किन्तु पूछ-लुछका मन है कि में सब स्वर-वेलको हो अपनो उपाधियाँ भीं। जो मी हो इसम मादह नहीं है कि म्बारबेलके पितामहने ही सम्प्रतिके समयमें इन राज्यवताका स्थापना का बी और विजानो स्वतात्र विया या। यारवलके पिठाको मृख्य अपने पिठाके जीवनकालमें ही हो गयी थी अतएव उनत वृद्धिरातका उत्तराधिकारी चमका पोता वारवेल हुआ। क्लिंग चक्रवर्ती महामेघबाइन राजींद सारवेल-नाजम लगनग १९० टी० पू० में हुआ, १५ वर्षकी लायुमें (टी० प० १७५ में) उसे युवराजपद प्राप्त हुआ और २८ वर्षकी आयुर्मे ई० प्र १६६ के रूपमण उसका राज्यामियेक हुआ। उसके उपगात कपसे कम १ वर्ष पर्यन्त उसने राज्य किया जिसका विशद वणन उसके रनयंके शिमानेम्बर्मे प्राप्त है। उसके (ई० प्० १५२ वे) उपरान्त वह कितने वर्ष जीवित रहा और उसने बवा-यमा किया इसके जाननेका वर्तमानमें बाई सावन नहीं है। मम्राट् मारवेणका यह इतिहाम-प्रिट्ड विलालेन टडोसा प्रदेशके पूरी जिल्लेमें स्थित भूबनेश्वरसे नीन मीलका दूरीपर दिखमान माण्डीगरि पर्वतके उत्तरी भागवर जा कि सदयगिरि महस्ताता है वने हुए हायोगुम्का नामके एक विद्याल एव प्राचीन कृत्रिम गुफामन्दिर-वे मुद्र एवं छत्तपर अरकीर्ण है। १७ पित्तियोंना यह महत्त्वपूर्ण लेख ८४ वर्गकोट क्षेत्रमें लिला हुमा है। रेखकी भाषा अई-मागकी तथा जैनप्राहत मिथित अपभ्रय है। लेखके सायमें मुकुट, न्वस्तिक, १९४ में को साराज्यन्ति हुई बनका नाम कदाकर कॉनन सारा है। स्तरुप्त हो बया प्रदेश होता है। इस समय सम्बद्धा कोई वीज-दीरार्ग मी हमा, जिल्हु बह करी बड़ा का बकता कि वह नवीन वंग प्राप्ति राज्यबंध्ये ही सम्बन्धित या जवता को^ई ततीन वंध वा । एकारी हेन्द्री-में बारतके रमजाने प्राचाके काम-ताब देवराप्रदेश गामका को स्मेन किया है बनव दुक्त निहारोंका अनुवान है कि यह राजाबीन वर्ति धारावा है। मुक्त है और सम्परमधा वहाँ वस समा सब देवसेट्स राज का लिए बंधरीने कानानारमें कर्मातको संतर्गात राज्यो स्थाना की की बीर कॉलन देखपर की कई बाग्रीकरों पर्नेय धारा ^{किया} या । कारण बारि कारणीने कॉनक्को क्यी क्रेस । चलकुण कीकी पी बंदरारकों माने बामारको नुस्कतिका करने और बुनानिकी नोदा केरो राजेके भारत कॉन्सको बोर माल क्लेका सरकार की निया । विमुतारने स्रो सर्वित राजनो विस्ता हो रखी, विम्तु ^{हाती} पुत्र मधीलने पहरानी बरवेची बाधताने श्रीवरतर माहनम विचा। वच बन्म वह एक धरिलधाओं राज्य था, वचका बाजारा वर्जन्यर पूर्व देशों वह चैता का नुपूर पूर्वि करके बरेक क्यांतरेश को पी ^{हर्ना}

बारी परिवर्तन हवा बोर वह बावेडे एक पानिसीय वजीता बरेड बना । फिन्तु ननव बाजाञ्चका किलार को चरण सोजापर अपि वसी है शक्ति वर्षमके बन-का इर स्वातुल्युको स्थीत बहेत हुई दुवरे वर्षे ची । वैषये पदान्तो है पू के शतके बनवर बनाउ बन्द्रति मी^{र्डिक}

भारतीय इविदास वृत्र ही

होते हैं और काका स्थासर थी बडा बडा का वें पू १६६ के सनवर बाले राजांड टर्वे कार्ये एक बाग्रे केन्नर संबोधने रहिलार सक्तरण किया, जीवन पूत्र हुआ। निक्रमें क्षत्रका केंद्र काल न्यांना क्^{रूपी} हुए एक बाथ गारे बंधे और बस्ते कर पूरे बुद्धके परिवासके अर हों। इव भीपन परणहारने मश्रोपको शिक्षांतन कर रिखा, अवकी स्थेन्ति है त्नोंको भेंट लेकर अपने घरणोगे नमस्पार कराया । पौष्ये वर्षमें राजा उस नहरका राजपानी (तोरालि वा याँनग नगर) तक लिया लाया जिसे महायोर सबत् १०३ (६० पू० ४२४) में नन्द राजाने सर्वप्रयम खुद-वाया या । छठे वपम उसने राज्यैश्यर्थ प्रदर्शनार्ध प्रजाजनोंके कर आदि माफ किये, दीन-दुखियोपर पृपा दिखायो, उन्हें सन्तुष्ट सुसी किया और पीरजानपदों (जनत प्रात्मध संस्थाओ, नगरपालिकाओं, ग्रामपचायतो, व्यावसायिक निगमो, श्रेणियों आदि) पर सैवडो हजारी विविध प्रकारके अनुग्रह विधे । मातर्थे वर्षमें उसकी रानीने, जो यगदेरास्य वज्यवर राज्यकी राज्यकुमारी थी, एक पुत्र प्रसव किया। माठवें वपमे सारवेलने विशाल गेनाके साथ उत्तरापयकी विजय-यात्रा की, गगघपर आक्रमण क्या, गोरयगिरि (गया जिलेका बराबर पर्वत) पर भीपण युद्ध करके राजगृह नरेदाको शस्त किया और उसके भयसे यवनराज दिमिश्र भी अपनी समस्त सेना, वाहनो आदिको यत्र-तत्र छोडकर मधुरासे भाग गया । यमना तटपर (मयुरामें) पहुँचकर पुष्पित पल्लवित कल्पवृक्ष मभी अधीनस्य राजाओ तथा अध्व-गज-रथ सैन्य सहित यह राजा सय गृहस्या द्वारा पुजित स्तूपकी पूजा फरने जाता है। उसने याचकोको दान दिया, ब्राह्मणोको भरपेट भोजन कराया और अरहन्तोकी पुजा की । नर्वे वर्षमें उसने प्राचीन नदीके दोनी तटोपर अडतीस लाग मुद्रा व्यय करके महाविजयप्रासाद नामका मु दर एव विशाल राजमहरू वनवाया । दसवें षपमें अपनी सेनाओको विजय यात्राके लिए पुन भारतवर्ष (उत्तरापथ) की और मेजा और फल्स्त्ररूप उसके सब मनोरय पुण हए। स्वारहर्वे वर्षमं उमने दक्षिण देशको विजय किया, पियुण्ड नगर (पुयुदकदर्मपुरी) ना ध्वस किया (उसमें गदहोंके हल चलवाये) और ११३ वप पहलेने सगठित चले आये समिल राज्योंके सघको छिन्न मिन्न किया। (अयन्तिर-आ केतुमद्रकी उस १३०० वप प्राचीन निम्बकाष्ठ निर्मित प्रतिमाका जुलूम निकाला जिसकी कि स्थापना पूववर्ती राजाओने पृथुद- विचिति देशवर्थी (या बाय) बहारात्र बहावैवशहर भी बारदेशकाय बद्ध केम राज्योजे वराया नया जिल्होन अपने वान्त प्रदानी जिल्हाई कियोर वरीर-हारा पनाइ वय परना हुवार-बोधाएँ सी। शरननार केवर बुडा वा विवयसम् क्षतिन व्यवहार वन राजनीति और ग्रावस-शास्त्र वर्षार समस्य विकामीचे चारवत होवर वो वत तक वृत्रराजनाने कारन निया । यसरी बानुसा २४मी यम समान्त होनासर पूरे जीवनसामने वर कत्तरोचर वृद्धिमान नदान् विजेताका कतिकके वृत्तीय राजनंबर्वे साम्पेक्त के लिए स्वाराज्यविके इसा । स्रविषक होते ही साथै पासके प्रस् वक्षमें क्षावे सांबी-तूपाल आदि वैदी। प्रकारोंने नष्ट हुए। पानवाची कडिय-नगरक नीपुर प्राकार प्राक्षाचे सारिका सीवाँजार कराना, धीतक वसके करीयरो वर्ष सरको मास्कि बाँव बेक्सावे और क्यानॉका क्या निर्माण करामा मीर कामे पैरील काथ बजावर्गीको रंजानमात किमा-सूची किमा । दिगीय वर्षत्र प्रात्तवर्ष्ण (विकासका बाह्यसङ्ग बजाद बाह्यवर्ष ह्वाव) की परना न करके पुरस्कार, हाती. परश्च और रखोकी नियास केंग्र र्गतक विवास येथी एका इच्चरेना क्येपर व्यूवकर मुक्तिरोरी (बर्जिनी-नी) राजनतीका निभंद कराना । धीडरे वध्वें इस क्लाईनिसारिमारर पुत्रतिने गुन्त वनीत नारित्रके प्रदर्कको तथा अनेक उत्तवी दर्ज स्थानी (नाटन चैन नारि) के बामोजनोन्द्राचा क्षणे चानके बाबरियोंचा क्लोरंबन किया । पीत्रे वर्षने पश्च बदले वर्षन्ती कवित्र बुदरात्रीके नियानके किए निर्वित वत विधानर-निमाध्ये को इस बधन की अनुस्प

ना (शनक मो बीर्य-बीम नहीं हुआ का) निरास करते हुए वन रहिंद मीर बीनक रामानोंके जिलके राजनुरूर और राजका वह नर मिने

1 1

वास्त्रीय इतिहास । वृद्ध सी

 र नोंकी मेंट लेकर अपने चरणोंमें नमन्यार कराया । पाँचवे वर्षने नाहर रम नहरको नाजधानी (तोषछि या विनय नगर) तथ निया नामा दिए महाबोर सबन् १०३ (६० पू० ४२४) में नन्द राजाते मर्बप्रयम राद-बाया था । छठे वर्षमें उसने राज्यापयं प्रवर्शनार्थं प्रशाबनीक कर हाहि माफ विषे, दोन-दुनियोगर इपा दिसायो, उहें सनुष्ट मुक्के किया और पीरजानपर्दों (जनवात्रात्मक सन्यामां, नगरपाटिकाओं, ग्रामपचायतों, ब्यावनायिक निगमों, श्रेणियों श्रादि) पर सैवडों हजान विविध प्रभारके अनुप्रह किये । मातमें वर्षमें ट्रक्की रातीने, जो वँगशास्त्र वज्यवर राज्यकी राज्यकुमारी यी, एक पुत्र प्रसव किया। आठ्यें अपमे साग्वेष्ये विशाल सेनाके साथ उत्तरापयकी विजय-पात्रा सी, मगमनर क्षाक्रमण किया, गोरधिगरि (गया जिलेका बरावर पर्वत) पर मीपन युद्ध करके राजगृह-नरेदाकी अस्त किया और उन्नफे मयसे यदनराज दि मन मी अपनी समन्त सेना, बाहनों आदिको यत्र-तत्र छोडकर ममुरामे नाग गया । यमुना तटपर (मयुरामें) पहुँचकर पुण्यित पल्यित कल्याम् सभी अधीनस्य राजाओं तथा अस्त-गज-रय-सै य सहित वह राडा मद गृहम्यो-द्वारा पुजित म्तूपकी पूजा करने जाता है। उसने याचकाँको दान दिया, ब्राह्मणोंको भरपेट भोजन कराया और अम्हन्तीकी पूजा की। नर्वे यर्पमें उसने प्राचीन नदीके दोतो तटापर अहतीम लाख मुझ व्यय करहे महर्गवजयप्रामाद नामका मुद्दर एवं विद्याल राज्महरू वनवाया । दसवें वपमें अपनी मेनाओंको विजय यात्रावे लिए पुन भाग्तवपे (उत्तरापय) की ओर नेता और फलम्बरूप रसके सब मनीरथ पूर्ण हुए। स्वारहर्दे वर्षमें उसने दक्षिण-दशको विजय भिया, पियुण्ड नगर (पृयुद्दद्रमंपूरी) मा ध्वस किया (उसमें गदहोंके हल चलवाये) और १९३ वर्ष पहाने साठित चले आये तमिल राज्योंपे सथको छिन्न-मिन्न किया। (अर्थान्तर-प्या नेतृमद्रकी उस १३०० दर्प प्राचीन निम्बकाष्ट निर्मित प्रतिमाका जुलूम निकाला जिसको कि स्थापना पूरवर्की राजाओंने पृत्रूर पराम दिया अन्ते अस्त-धारत कर दिया अनवकी अन्तार्वे चारी वरस बंचार तिया। अपने शास्त्रिको (पार्टानपुत्रके) सावेव सामक राजनास्त्रक में ब्रांस्क्र फिया (का नेमा नरीन नानी रिनामा) और अनवरान गुण्डी विकित (पुष्पतित्रमूत ?) के अपने बरजीन जलान करवाया । पुरुवानी मन्तरामानारा अच्छत कविवर्णमा (मा अविवर्ण) की प्रतिमानी सर्व सम्बन्धाः राज्येके नहसूच्य रत्यो वर्ष वत-क्रम्मीतवी विभिन्न बन्मीतके कर्षे माने पर नारम नामा। बनावन देखा विजित्र बनके क्ष्ममें प्राप्त सम्पति कार्य बारती समुद्र विजनके विश्वासकार देवे समेक विकार (सन्दिरागर) बनवार्त जिनमं राजादि बैंक्डों बहुमूल बद्यावींके नर्ग्याचारी की नगी का बनी वय अवन सुरूर रविवादे पान्त्व राजांत्र बयुन्तूर्व वय बार्व्यवस् कर्माताने वरे हुए क्यान्त सीते हाता केरक त्रीन-माविकान्ता साहि तर सक्ता मेंट कावे प्राप्त क्षिते । इस अकार व्या व्यान वरेन

मान्द्रो राजवानीमें निवास करता हमा तथ ब्रह्मानचे और स्वी^{क्} राजाजेको बर्गाकुत करता हुवा और अस्त्रे नियत-पक्ष-द्वारा बाहान्यर्ग निस्तार करता हुवा नियन करता वा । अच्चने अपने राज्यके तेयाँ वर्षते इस राजाने मुर्लियनियम-पक्ष (जाना) में स्थित पुत्रारायण्डार माने राजनका हमानानाचा पूर्व भानेके स्थिए उन सांगानित स्पृष्टि निरवस्त्रे विश्रांच परासी को तिसीन ताम कर चुके ने। वस्त्री मुनिशोषे नियान करनेके किए मुख्येएँ वनशानी । दबने बनावक (कांगक)

क्दर्ज नवरनें की की तथा थी नवन्त कनके जिए आहारकायें की)। बारार्वे वर्षि बन्ने बताराचके राजाबीचे अपने बाहनवींचारा बार्ड

के बन बहुन क्रिये और अर्बुलमिरके लिक्ट बक्ते एक पुण्य नियान बंबालधर (व लिन कुछ) बक्तासा विक्री नामाँ रहे बहुमून्य रालप्रदियं पालराज्यं स्थापितं रिया पत्रा । क्षतः वयामध्यर्थे बनने का कारत दुइन नुनिहित हानी क्ष्मणी समन्ते (कैन नर्लेचे)

पारबील इतिहास एकं ग्री

लिए आये थे। इस मुनि-सम्मेलनमें राजाने मगवान्की दिव्य ध्वनिमें उच्चिरित उस शान्तिदायो द्वादशाग ध्रुतका पाठ कराया, जो कि महाबीर संवत् १६५ (ई० पू० ३६२—मद्रबाहु श्रुतकेवलीके समय) से निरन्तर हासको प्राप्त होती आ रही थी, (तथा उसके उद्घारका प्रयत्न किया) और इस प्रकार उस क्षेमराज, वृद्धिराज, मिक्षुराज (राजिप) धर्मराज नरेशने मगवान्की उक्त कल्याणकारी वाणीके सम्बन्धमें प्रवन करते हुए, उसका श्रवण और चिन्तवन करते हुए समय विताया।

विशिष्ट गुणोंके कारण दक्ष, समस्त धर्मोका आदर करनेवाला, धर्म सस्याओंका उद्धार, सुधार एव सस्कार करनेवाला, अप्रतिहत-चक्रवाहन (जिसके रथ, ध्वजा, सेनाकी गतिको कोई नहीं रोक सका), साम्राज्यों-का सतत विजयी एव साम्राज्य-सचालक और सरक्षक, राजियोंके वशमें उत्पन्न महाविजयो राजचक्री ऐसा राजा खारवेल श्री था।"

वपरोक्त शिलालेखका महत्त्व सुस्पष्ट है। समयको दृष्टिसे सम्राट् प्रियदर्शीके अभिलेखोंके पश्चात् इसी शिलालेखका नम्बर आता है। ऐतिहासिक महत्त्वको दृष्टिसे यह लेख प्राचीन मारतके समस्त चपलम्ब विलालेखॉर्म सर्वोपरि है। उस कालका यही एक-मात्र ऐसा लेख है जिसमें वश,वप-मंख्या, तत्कालीन जनसंख्या, देश और जाति, पद नाम इत्यादि अनेक वहमूल्य ऐतिहासिक तथ्योंका स्पष्ट उल्लेख मिलता है। प्रो० राह्माल-दास वनर्जीके मतसे यह लेख पौराणिक वशाविल्योंको पृष्टि करता है और ऐतिहामिक काल-गणनाको ५वीं शती ई० पू० के मध्यक लगभग तक पहुँचा देता है। देशके लिए 'भारतवर्ष' नामका सर्वप्रथम शिलालेखीय चल्लेख इमीमें मिलता है। कॉलग देशकी तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एव घामिक दशा, राजाकी योग्यता, राजकुमारोंकी शिक्षा-दीक्षा और प्रजाके प्रति राजाके कर्त्तव्योंका यह सुन्दर दिग्दशन कराता है। विहार कौर उद्योसके सम्बाधकी ऐतिहासिकताको २००० वर्ष पूर्व तक ले जाता है। इसमें तो किसोको भी कोई स देह नहीं कि इस लेखको चत्कीण



हरियमिहकी कथा यो, यह नेण निमित्त कराया यो । मचपुरी गुफारे निचले सामम स्थित पातालपुरी नामक गुफाको महाराज एल महामेद वाहनने यदा । (मम्भायतया पुत्र) कलिगाधिपनि महाराज मुद्रपश्चीन निमिन पराया था। यमपरी लेणके लेखके जात हाता है कि यह राज्यमार बढुपन निर्मित कराया या, सम्भव है कि उसने स्वयं भी वहाँ घर्म नाधन किया हो। व्याद्य गुफाको नगर यायाघीदा भूतिने निर्मित कराया था। इस गुकाके निकट हा सपगुकाम बम्म, हलविण और चुलकम्म नामक स्यवितयोंके लेख है जिनसे विदित होता है कि गुफाके प्रासादको प्र म दोने और अन्तगृहको नापर व्यथितन वनपारा या । जम्बेदवर गुफामे महा-वारिया और नाकियके नाम अकित हैं। छाटी हाथीगुफा मिसी आत्मव्हि-द्वारा प्रदत्त की गयी थी। तत्त्वगुका कृमुम नामके किमी राज्य-कमचारी (पादम्लिक)-द्वारा निमाण परायी गयी थी । अन तगुकाका लेख भी उस श्रमणाकी गुफा सूचित परता है। इन विभिन्न गुफा-मन्दिरा, छेणों और जिलालेखोंसे स्पष्ट है कि खारबलके बाद भी कई जतािदयों तक खण्ड-गिरि-उदयगिरिको गुफाएँ जैनाका पवित्र तीथ और जैन श्रमणोका व्रिय आवाम बनी रहीं तथा फॉलगके राजवशमें, राज्य-कर्मचारियोंमें और जनमाघारणमें जैनधर्मकी प्रवृत्ति बनी रही । ऐसा प्रतीत हाता ह कि कम-से कम प्रथम शताब्दी ६० के उत्तराध तक जवतक कि सातवाहन नरेशींने र्कालग देशक बहुभागको विजय नहीं कर लिया, वॉलग देशपर खार्ग्येलना वश शातिके साथ शामन करता रहा, किन्तु अन्तर्देशीय राजनीतिम यह नहीं चलझा ।

प्रथम शताब्दी ई० पूबके पूर्वाधम (सन् ७४ ई० पू० के लगभग) शरमेलक एक वशज, वक्रदेयके पुत्र महेन्द्रादित्य गन्धर्मसन गहिमिल्ल (या ब्ररभिल्ल) ने मालवेक नवस्थापित गणराज्यका नायक् त्व प्राप्त करक उर्जनोमे गहिमिल्ल वशकी स्थापना का थो । गहिभिल्लके अत्याचारा और अनाचारोने उसे पालकाचायने प्रयत्नसे शको-द्वारा ई० पू० ६१ में राज्य चुन एवं देवते निर्वाहित करावा किन्दू है पूर ५७ है बार्ट सार्व पूर और विक्रमदिस्त्रने बारोली बार मगारा आक्रमतमा साम्यानी और वैक्रमता कर न्यानपूर्वक राज्य विचा। बार्च पूर्वाहेंन वर्षे क्रिके रिएसी क्षिप बारमा की। एक बी वर्ष प्रकृति कर्मेंचेर स्थानन विकास तक्त रहा। प्राचीन तामिक वाहित्यते विकास होता है कि बारम्यारं वाहित्ये

होता है तथा बाते अन्यत्रे आरोल पान बेक्से कुछ कोण स्थित (वेस) में भी था बादें। १९६-१८ मधी है में जीवन केसमें बाद एकनकोश क्यें हुए प्रारीत होता है—व्यवस पूर्वनिश्तेष्ठा मां। चन्त्रेकके सम्बद्धि पर बावती में विका देखें न्याप्त प्रतिन्त्रीच्या मां। चन्त्रेकके सम्बद्धि पर कंपनेक्यों स्थापना भी भी और समा संभापन (बात्या भर्द हैं) औ

मारतीय इविशास वृत्र गाँउ

पानी बातो है। बनुरकुरके बाकानके क्वानकम पुत्र गावके किए कॉर्स्स के दुक जानपर वारावतीते जाने हुए बाक-बावरीका वी राज्य थी। उर्तेस प्रचिलत किया था। उडीसा देशके दक्षिणी भाग (सम्भवतया गजम जिले)
पर इनका अधिकार था। इस वशके इ द्रवर्म प्रयम, हस्तिवर्म, इ द्रवर्म
दितीय, दानाणंव, इन्द्रवर्म तृतीय आदि राजाजोंके अभिलेख गग-सवत् २८
से ११४ पर्यन्त (५२५-६४१ ई० तक) के मिलते हैं। इन नरेशोंके मूल
कर्णाटकी वशका कुलघर्म जैनघर्म था अत ये भी उसीके अनुयायो अथवा
कमसे कम उसके उदार प्रश्रयदाता रहें प्रतीत होते हैं। ७वीं शतीके
प्रारम्भ तक यह वंश अवनत एव गौण दशामें रहा। किन्तु वष्यहस्तदेव
(१०३८-६८ ई०) ने इस वशका पुनरुद्धार किया, किलागरको राजघानी बनाया और देशके बहुभागको विजय करके त्रिकलिंगािघपितकी
उपाधि घारण की। उसके उत्तराधिकारियों राजराजा, चोडगग और नरमिहदेयक समयमें यह वश उन्नतिके शिखरपर था। तदुपरान्त फिर अवनत
हुआ। अन्तिम राजाको पुत्रीका विवाह एक नागवशी सरदारके साथ होनेसे यह राज्य नागवशके अधिकारमें चला गया, जो मुसलमानों और फिर
मराठोंको अघीनतामें रहता हुआ १८वीं शती तक चलता रहा।

दूसरा वश तोशिलिक भौमकरोंका था। इस वशका सस्यापक सारवेलके किसी सामन्तका वशज रहा प्रतीत होता है। मौर्यकाछीन प्राचीन
महानगरी तोशिलिकों ही इस वंशने अपना केन्द्र वनाया था। ३री शतीसे
५वीं—६ठी शती ई० पर्यन्त इम राज्यका अम्युदय रहा। उसके उपरान्त
इसका हास हुआ और सम्भवतया गौण सामन्तो-जैसी अवस्था हो गयो।
कियोंझर राज्य प्राय इसी प्रदेशमें रहा है। इसका शासक भनी वंश
उद्योसके सर्वप्राचीन वशोंमें समझा जाता है, सम्भव है कि वर्तमान मंजी
राजे प्राचीन भौमकरोंके ही वशज हों। इस राज्यके आनन्दपुर तालुकेमें
उस नगरसे १० मील दूर वनमें पोडा सिगिड और वदिखया नामकी
प्राचीन विस्तर्यो हैं। उनके आस-पास वनो और पहाडियोमें जैन तीर्यंकरों
एव देवी-देवताओंकी अनिगनत प्राचीन खण्डित असण्डित मूर्तियाँ और
विशाल मन्दिर, देवायतन, स्मारकों, सरोवरों आदिके खण्डहर हालमें ही दृष्टि-

भोगरहर है। हुए प्रियोगर वादी विधिये केंद्र जो जरमीय कियें है। विभागरमिन्सी दोशकि विकेषी स्थापति का स्वित्यासमां और मार्ग कार दिराई गाँधिक उत्तरपात्री हात्रीत मुद्दुक्तिया वर्षण है या की प्रथम तर्शन होत्रा है और एव कारेटोले निर्देश होता है कि पार्टम वर्षणात्र की चीनकी वार्षिक राज्यपात्री कुटकारको बता यह पर किये वे बेनको मुंग्येष इस्वाय-कुरवा और प्रथमान बता हुए था। ऐसा होते दोशा है कि तर्शी खालको सम्मान्त्र पेत्र बाँद स्वन्य वर्गीन को है।

रीनरा में व कोनरका देशोदून बंद मा। दक्का क्रूपन म्हेल मंत्रीय स्थान बाठा है भीर बानुस्त किया जाता है कि वह जो दें करीय हैं मा तुक्क स्थितकों करो हरका स्थान परंत्र करें हैं मा । वह वेस्सी रोज्यान दुक्तिन्दीनका तुन वैश्रोद्धन मा । वक्के कराव्या अरम्पर्ते, वैज्योक प्रयान कर्मकरीय प्रमा क्रेलियों हिरोब, अरम्पर्ते के सम्बन्धि रामकरका प्राचित नर्वादा सामकरण विशेष रामके क्रम्पर्य क्रम्पर्य सम्बन्धाय तुमेन साहि बरेचाने भी वालेक अन्योद देनी क्यों कर्मा राम्यर क्या । सारमां में भीर तुमें क्योंक व्यान स्तु । इस् मीर वर्षाणे कर्मने में एन स्त्री प्रमा क्या कर्मने क्योंक स्त्रीय स्त्री

भोगा मंत्र गोरणंड या १४वण वन्तन परित्र देवते प्रोप्त प्राप्त में या । कर्मा में सम्प्राप्त सं कर पूर्ववर्षी और दूसरी क्याप्तम । इसर् कर्मान भेगी के में से क्यो पर्तमण प्रत्य किए । इस्त बेद पाने मेंसर्वर कर्मान प्रत्य क्यों क्यों क्याप्त क्याप्त क्याप्त मेंस्य क्याप्त मंत्रिय क्याप्त हों हैं इस्त बीर क्यों मान्यों इस्त एक्स र में बाहारी नर्वाय क्याप्त हों। सोने माने इस्ताल (१९५०-११) ने भी चीक्यप्ता भी में विकास क्याप्त क्यों क्याप्त क्या मार्ग्त वालोशा क्यों क्यों क्याप्त क

मास्तीय इविदास : यह ^{राहे}

विद्वानोंमें मतभेद है। किन्तु ऐमा लगता है कि हुएनसामके समय कोसल और त्रिक्तिं रुगका अधिपति कोई वह सोमवशी राजा था जो भट्टाकलकदेद-सम्बाधी जैन अनुश्रुतिका किलग-नरेश हिमशीतल है। यह गौडके बौद विदेपी राणाकका प्रतिद्वाद्वी और कन्तीजके हर्पवर्धनका मित्र था तथा स्वय मी महायानो वौद्ध सम्प्रदायका अनुयायो था। उसका राजमिह्यी जैनवर्मको भवत थी । एक समय वह उद्योसाके होरक तटपर स्थित अपनी उपराज्यानी रत्नसचयपूरमे निवास कर रहा था। कार्तिकी अधा-ह्मिकका पर्व निकट था। रानीने उम अवसम्पर जिने द्रके रथोत्सव-द्वारा पर्व मनानेका विचार किया किन्तु राजाके बौद्ध गुरु इसमें बाधक हुए। अन्तत राजाने निर्णय दिया कि यदि जैनाचाय बौद्ध चिद्वानोंको प्राप्त्राचमे हरा देंगे तो जैन ज्य निकलनेकी अनुमति दे दी वायेगी। जानी तया अय जैनो जन वहे चिन्तित हए। उनके मौभाग्यसे उमी ममय नगरक बाहर चचानमें महाराष्ट्रके दिगाज जैनाचार्य अकलकदेव तभी आकर ठतरे थे। उन्होंने तुरन्त बौद्धोकी चुनौती स्वीकार कर ली। ६ महोने तक विवाद हुआ। बीद्ध लाग तागदेवीका महायतासे शास्त्रार्थ कर रहे थे। अन्तत अकलकदेवने घटमें स्थापित तारामा विस्फोट मरक बौद्धांकी पराजित किया । राजा वटा प्रभावित हुआ और उसने जैनधर्म अगोकार कर लिया। अनेक बौद्धोको सम्मवतमा दशम निष्कासित होकर सुदूर पूर्वके मारतीय राज्यो एव उपनिवेशोमें चला जाना पढा । हर्प इस समा-पारवो मूनकर क्रुद्ध हुआ। वह दक्षिणके चालुक्योपर भी विजय प्राप्त करना चाहता था अत उसने कल्यिके मार्गसे मसैन्य प्रयाण किया । हिम-धीतलके साथ धार युद्ध हुआ जिसमे वह मारा गया। किन्तु उपर वकलकदेवने चालुक्य राजधानी बातापीमें जाकर अपने भपन चालुकः गम्राट् विक्रमादिस्य प्रयम माहमतुग (६४३-८० ई०) को इस बादक ममाचार सुनाया। अत हर्षके आक्रमणकी सूचना पात ही यह नुम्ल हिमशीतलकी सहायताका पहुँचा । हिमशीतलकी रक्षा ता वह न कर सक

कर्लिंग आदि और वृहत्तर मारा

किन्तु हर्ष वर्धान्य होकर नारम बीट नया बीट कीनक राज्यकी मी रखा भी बती। वे बहागर्थ वर्ष प्रश्न-पत्र के की है। वरारमधी बोनसी अने-वर्धा देश करा करके महत्या हो से वे। किन्तु पत्रेमी वर्धान्य विराध्यो तथा पुरास्त्य जैस समुद्राहितो मार्टि जान होत्रम् वास्त्रीक का कर्माह हिंद त्याँ बती है वर्षाय बाजूने व्यक्ति के वेद वेदार्थ बाज्ये कर्माह हिंद त्याँ बती है वर्षाय बाजूने वर्डिन हेवारे वेदार्थ बाज्ये कर्माह हत निवाद राज्यों और राज्योंकी अहिरोस्त निवाद

स्वार्थनको क्षमुदि बीर वैनिक नुषी चातुम्ब मो शॉलको राज्योजि करी कार्र है या प्रस्तुन कार्य के बी वो अस्त्रम्वरीय कीच अपारे में ने नीति कर कर्म बासक्त्य किराता किया । बुक्तानो वास्त्री बीरानके बाव्य बीर प्रतिक्षे स्वारम्भा तरेच यह वेक्सर क्रीन्य-कार्य करते पूर्व । मुक्तांके बातान्यन व्याप्त दूषा द्वी वा वया। १८वीं करते पूर्व । मुक्तांके बातान्यन व्याप्त वास्त्रपुष्ट राज्येची अस्त्रमें वहाँ सराम राज्य स्वारम।

वार्तिक मुंदिने वैद्या कि काम निमा जा मुख्य है. यह निवास के करा रास्पर्य हुए के नेकार के प्रारम्ध्य में निवास को है. यह मोर्स कार्य के किए हों हो है कि नहीं कर के प्रारम्भ कार्य के विद्या के प्रारम्भ कार्य के प्रारम्भ कार्य के प्रारम्भ कार्य कार्य हुए है जिस के हिन्दा कर कर कार्य हुए हैं है कि निवास कार्य कार्

चड़ीसा गजेटियरके लेखक उद्य्यू० एच० हण्टरके अनुमार इस ददाके आदिम वानियोंका धर्म भी जैनधर्म ही या, यहाँके यवन राज्योंने भी इमी धर्मको अपनाया। १०वी ११वीं शतीके उपरान्त यहाँके जनाने दृत वेगसे स्वधर्म छोडा। जो फिर भो अडिंग रहें, उनके यंग्रज मराकोंने स्थम आज भी विद्यमान हैं।

महाकोसलके कलचुरि--कॉलंग देशके परिवमी माग (जो दक्षिण कोसल कहलाता या) तथा विदर्भ और मध्य प्रदेशक कुछ भागोंसे महाकोमल राज्यका निर्माण हुआ था । मगमके नाद भौयं बादि मझाटोंके पक्चात् कॉलगचक्रवर्ती स्वारवेलका और फिर आ छ मानवाहनाका इस प्रदरापर अधिकार रहा। सदुपरान्त वकाटकोंका राज्य हुआ जो ५वीं शती ई० पर्यन्त चला। वकाटकोंके सामन्तांके म्हपमें ही सम्भवतया कलचुरि वशका, जिसे चेदि या हैहम वश भी कहा गया है और जा सम्भद है चैत्रवर्शी खारवेलके वशजोकी ही शाखा थो, धीसरी शती ई० में उदय हुआ था। गुप्तोंने वकाटकोंको समाप्त किया अतएव चनवे ममयमें महाकोसलके कलचुरि गुप्नोंके करद राजाओंके रूपमें चलते रहे। डाहडमण्डलमें त्रिपुरी इनकी प्रधान राजधानी थी। दक्षिण चेदि या दक्षिण कोसलक कलचुरियोंकी राजधानी रतनपूर (विलासपुर) थी। कलचुरियाँकी एक दाखा सरवूपारी नामसे मो प्रसिद्ध हुई जिसका राज गोडा वहराइचमें था। कलचुरि वरा एक अत्यन्त प्रतिष्टिन वश था। विभिन्न राजवशोंक नरेश कलचु-रियोंके साथ विवाह सम्बन्ध करनेमें गौरव मानते थे। कलपुरि या वैकुटक संवत् २६९ ई० में प्रारम्भ हुआ अत यही तिथि कलचुरि वंगकी स्यापना को मानी जाती है। किन्तु इस वदाका उत्कर्षकाल ८वीं से १२वीं शती ई० पर्यन्स रहा, और उसमें ७वीं शतीका शकरगण एक प्रमिद्ध राजा हुआ । ८वीं शतीमें लक्ष्मणराज राष्ट्रकूट गोविन्द तृतीय-का सामन्त था। उसके पुत्र कोक्कल प्रथमका विवाह चन्देल राजकुमारीके

मात हुआ का और इसी मनवने कमचारशारी शांका प्रविध कड़ी ! र्राटरमन हिन्देश या अभिन्न (८३८- 📢) लट बनारी मीय स मानपुर प्रतिद्वाराध और एकरिया समुद्रे निर्मा में और जनते कनिय काम व मार्थीयकाक बार्गाजन किया का जनके बाद बालकेच और कि पुषराज व बृहका राजा हुआ । वर्षि । अर्थनान्या विद्वारानवीतिका माहर मर्पत्रक की गुत्राक रावार्थ गर्म बना १३ ९२५-९५ हैं तप रान्य राज्य विद्या । बह बरण जारी तिवाँचा और विदेशा स्था। बनने रुलार नावा निर्मात न से बने बाना शाहकार्य बनाया था। इनकी वृत्री हुन सरका राज्यकृष्ट बरोपरच त बढ़ी विकास की विज्ञानकी बलगरिकारी अध्यानना जिल्लाम का उनका की नोजवर्गाओंने उन्ह गड़ी है इनकी पुत्रा बोल्यादेवी बायका नरेख जैपन द्वितीवरी मी का - तपुरदानी धेवण्यस स्वतात हितीय सीर कावक्रम हितीब तत्त्व राजा हरा। सम्मान शामा इन बंशका देश्यो राजा था। जबके मनारू जब पत्छारने विवृद्यिपर महिरास कर किया था । रिन्तु बन्नरा बन्तराधिकारी बारेकीर विश्वनादित्व (१ १५-४१ वें) शोख और स्टरग्रासन वा । **इन**स्ट दुर क्वीरेव (१ ४१०० री.) और भी अधिक ब्लादी या हव रा≭ बुजारी बालान्वरेपीन बनने निपन्न विश्वा अनेक युद्ध क्रिने और क्रियर बाना की। कृतिक क्षेत्रमध्ये बहुमानको विश्वत करके प्रमुक्त विश्वतिक नावित्रतियों क्यांकि की नारण की भी। बतका पूत्र नाव कर्ज (१ ७१० ११२५ है) ना मोर फिर नालर्नेश्य (११३५-५४ है) रामा हवा । १२वीं मार्गाणे आन्तवे विजयविक्रपेष (११९५ ई.) पूर्व बद्धारा अस्थित ब्युन्त् नरेव था । उनक क्रास्ट्रिकाराके ननरने दश वरवको जनगणनाने विकास जिला और श्रम्पुरि संबंदा अन्य हुआ ।

कमपूरि पश्चमें ब्युस्तन्तन यैपवर्धकी प्रवृत्ति मी रिन्तु इस वसके

भी जैनधमके प्रति महिष्णु भीर उदार रहे और इस धर्मका धादरको दृष्टिस देखते थे। प्रारम्भिय परेगोमें महाराज धाकरगणने विव सव ६८० (६२३ ई०) में जैनतीर्थ फुल्पाक क्षेत्रकी स्थापना की थो और उसके लिए वारह ग्राम प्रधान किये थे। कलचुरि-नरेश गयकणदेव (११२५०५४ई०) भी जैनधर्मका आदर करता था। उसके महामामन्ताधिपित गोल्हणदेव राठीरने जो जैनधर्मका अनुपायी था, जवलपुरसे ४३ मील स्तरमें स्थित बहुरीयन्दके खनुयादेय नामक प्रसिद्ध जैनतीर्थको जिनमूर्त्तिकी प्रतिष्ठा करायो थो। विजयसिहदेव कलचुरि (११९५ ई०) सो निष्यित स्वासे परम जैन था और उसके समयमें राज्य एव प्रजाका प्रधान धर्म जैन ही था।

मम्पर्ण महाकोमल दशमें प्राचीन जैन मदिरा, मृत्तियो एव अन्य धार्मिक कलाकृतिया अवशेष यत्र-तत्र-भवत्र इतने बिखरे हुए मिलते हैं कि जिसस इम तथ्यमें मन्देह नहीं रहता कि पूर्व मुमलिम कालमे यह प्रदेश शताब्दियो पयन्त जैनधर्मका एक प्रमुख गढ रहा है। कलचुरियाँके शासन वासमें जैनाश्रिम जिल्प स्थापत्यकलाका इस प्रदेशमें सभूतपूर्व विकास हुआ। कोई कोई जैन कृतियाँ तो तत्वालीन सम्पूर्ण भारतीय कलांदी • उत्कृष्टताका प्रतिनिधित्व करनेकी क्षमता रखती हैं। अनेक जैनतीर्थ एक मास्कृतिक केन्द्र इस प्रदेशमें स्थापित हुए यथा कुल्पाक क्षेत्र, सनुवादेव. रामगिरि, अचलपुर, जोगोमारा, कुण्डलपुर, कारजा, आरग, इलौरा, घाराशिव आदि। मारुआ प्राचीन कालसे ही एक प्रमिद्ध दिगम्पर जैन के द्व रहता आया है। अपभ्रश माषाके सुप्रसिद्ध जैन महाकवि पुष्पदन्त रोहणखेडके निवासी थे। रामपुर जिलेके आरग स्थानमें एक प्राचीन जैन-मन्दिर है और उमके निर्माता सत्कालीन राजे राजिंप तुस्य कहें जाते थे। डॉ॰ हीरालालका मत है कि ये राजी महामेघवाहन खारवेलके वदाज रहे प्रतीत होते हैं। सम्भव है कालान्तरमें ये कलचुरियोंके मामन्तरूपमें रहे हो। महाकोसल विद्यमका अचलपुर नगर मी प्राचीन जैन केन्द्र ना। कभी सारी है ना इस वेश नामरस सुर्वित मान हुए। है। टी. है के लेलास्वाचारी कर्मार मुर्वित सानो सर्वित्तरप्रसान द्वारित विकास है कि इस कर्मान्ति विस्तरत के सामान्तरण स्वतं अधिकारी, समस्य दारा राज्य करता है किस्से समेद बहासभार विकास करते दीने-यह प्रतिसामेशी जीवण करायों है। यह अध्यक्त १८० हैं में दीन विशेष कर्माणन सम्या 'समर्गीला' स्वतं प्रतास वृद्ध क्षेत्र १८० हैं में दीन विशेष है विस्तरतेष्ठ कि सा क्षेत्र सेक्स्युन्ताने सा और सामर्ग जनवर्ष

कूरिका किया का अरोत्तक क्योरिकंपाण (24.6 है) में के दूरी में तिका है कि बताब राज्य कृति मुक्किके चावण कहार (क्योर) तथा साथे और न्हांकी रिकारद कहारी (काले या कारावा) है उन्हों ने एके मूर्व व्हांका है कि उन्हों-तथी हमी में वी एक्सेस एक हिंदू दिकार केम या और दुर-पूर तक पत्थी विविद्ध में। १२६वें दमी में और वर्के बत्स भी तामार्थ कर कारावे बीच पुरावों हुए वासुवाद उन्होंने अलेव कियो है एस क्यार कुलकारों काम बताब बता कन्यूनि वांची और

कमी-कमी पूर्व देवके किए प्रमुख हुए हैं। बांत आपोल बावने ही यह देव की प्रेल्टिया वक अपून केल प्रमुख आगा है। प्रमुख कीनेल व्यवस्थित आग्रा नवसर पुरस्तोकने हम प्रदेवकें वर्ष्ट्राव पर्यक्ते कैन्द्रीय काल दिया क्यारा काला है। त्रास्त्रात सम् अनेक तीर्थंकरोंने इस प्रदेशमें विहार किया। महाभारत-कालमें श्रीकृष्णके ताऊजात भाई २२वें तीर्थंकर अरिष्टनेमिका तो यह प्रान्त प्रधान विहार- क्षेत्र था। स्त्रय कृष्ण, वलराम आदि हरिवशी यादवोंने घौरसेन देशके शौरीपुरका परित्याग करके सौराष्ट्रके समुद्रतटपर द्वारका-जैसी मनोरम नगरोका निर्माण किया था और उसे अपनी राजधानी बनाया था। उसीके निकट जूनागढ़के राजा उग्रसेनकी कन्या राजुलदशेके साथ नेमिकुमारका विवाह रचानेके लिए यादवोंकी वारात चढ़ी थी। क्लिनु दीन पशुओंकी पुकार सुन, मुकुट और ककणको ताडकर धर्मवार नेमिकुमार ससार, दह और भोगोंसे विरक्त हुए तथा निकटवर्ती ऊर्जयन्त अपरनाम गिरनार पवत- पर जाकर तपस्यामें छीन हो गये। महामती राजुलने भी उन्हींका अनुकरण किया। इसी पर्वतपर नेमिनाथको केयलजान प्राप्त हुआ और अन्तिक शिखरसे उन्होंने निर्वाण लाम किया।

सन् ई० के प्रारम्मसे लगभग एक सहस्र वर्ष पूर्व मध्य-एशियाके प्रसिद्ध प्राग्ऐतिहासिक साम्राज्य बावुलके अधिपति खिल्दियन वंशी सम्राट् नेदुचेह-नजरने इस गिरिराजको वन्दना की थी और इसके प्रमु अरिप्टनिमकी सेवाम वृहत् दान समर्पित किया था, जैसा कि इस स्थानसे प्राप्त उक्त नरेश-की लेखाकित मुद्रासे प्रमाणित होता है। इस प्रकार तीर्यंकर महावीरसे ही नहीं, तीर्यंकर पार्धनायसे पूर्व मी इस प्रदेशमें तीर्थंकर अरिप्टनेमिकी चपासना, गिरनार पर्वतको तीर्थ कपमें मान्यता और जैनधमका प्रमाव विद्यमान ये । बौद्ध अनुभ्रुतिके सोलह महाजनपदोमें इस देशको गणना नहीं है किन्तु जैन अनुश्रुतिके प्राचीन राज्यों एव आर्य देशोंमें कच्छ नामसे इसको गणना स्पष्ट मिलतो है। चन्द्रगुष्त मौर्यने इस प्रदेशको विजय करके **उसे अपने साम्राज्यमें मिला लिया या । उसने स्वयं गिरनारकी यात्रा की थी** बोर उसकी तलहटीमें अपने कर्मचारी बैदय पुष्यगुष्तकी देख-रेखमें एक विशाल एव मुन्दर मरोबरका निर्माण कराया था, जो सुदर्गन झीलके नामसे विख्यात है । चन्द्रगुष्तने इसी सरीवरके निकट मुनियोंके निवासके छिए एक

केंच की वनानी को यो पानुकार कार्य, प्रांत्व हुई। बनस्ता की व्याप्त नाम नमाएने बन्ध मैंन पुर्कि करते हुक दिन सिना किया था। बन्धे की प्राप्त में कार्य की प्राप्त में कार्य की व्याप्त की प्राप्त की प्

नवृष्टं पृ ५ में बर्जनमें बीर विश्वमाधिरा-हाश धन माहिपेटि भागमा वैक्को निकास बाहर विजे बाह्यर उनके कर नरशार वे बीराज वैय पर कविकार कर किया ना और बहुएके बग्रामी स्वापना की वी. इस बंदनें बनक बटक नकरान उपाध्यत बाहि राजे प्रतिक्र हर, हिन्तु इन बक-बाई रागीमें नश्रीविक प्रक्रिप्त गरेच बान्सन (बरसाइन था नश्रीवाइन) वा जिल्ला राज्य-काल १६-६६ है। नामा नाता है। इसी सबय विस्तिवरको इनरोका कन्द्रमुखामें बंदकुष्णायने अस्तिन वेदद्याना वरनेनाचार्य निका करते वे वर्धी क्याँनि वातार्थ एनक्यत एवं नगरनिको उत्त बादव्यालका क्षम्यान कराने वने क्रिप्तिक करनेका मानेच दिना ना । एक अनुसूर्यके अनुभार ध्वयं बाहणालयी समाद गहराल ही भाग्यका त्याद करने बैन मृद्धि हो क्या वा और कारीन्त्र वैनावार्य नत्त्वकिने व्यवस्था व्यवसारीके वरपाठ कर वातिरों हो एक अन्य कांका अध्यक्तांको व्याववरीरे क्तमें मीरान्तु देवसी अविसीत हुई। क्षत्रजीती विजयके क्षत्रकराई दन वंबरे एंस्वारक महासवा बहाते हो ६८ है में प्रचरित्त श्रव-संदर्गी स्वापना को थी। इस बेलके नरेडॉर्नेनी कई एक तथा राज्यंपके स्वी-पुरशों तथा राजपुरशीतिने बनेच बैनवर्षरः बनुसारी का दोवक रहे । इन मैंपका नर्वकाल् औरअकारी वरेख बदाबारा स्वारासन वा जिस्में रही बसी हैं के मध्ये रिशितवरणी कारोबर सुरस्य बीतका पुरू बोर्चोडार

कराया था तया वहाँ अपनी महस्वपूर्ण प्रशस्ति अकित करायी थी । उसके पुत्र दामजदश्रीने उपरोक्त चाद्रगुफामें एक जिलालेख अंक्ति कराया घा जिससे उस नरेशके जैनी होनेमें कोई स**ंदेह नहीं है। उसने यह ले**प आचार्य घरसेनको मृन्युकी स्मृतिको अमर यनाये रखनेके लिए अकित कराया प्रतीत होता है। इसी वशकी एक राजमिहिपीकी नार्नाकित मुद्रा भी महाबीरकी जन्मभूमि सुदूर वैशालीके खण्डहरोंमें मित्री है जिससे विदिष्ठ होता है कि वह रानी वहाँ सीर्थ-यात्राय गया होगी। इस प्रदेशपर शक-ह्मपर्पोका राज्य ४थी शती ई० के अन्त तक चलता रहा। ४यी शताब्दी ई० के अ'तमें गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्यने वकाटकोकी सहायतासे शकोकी राज्यशक्तिका उन्मूलन किया और यह देश गुप्त साम्राज्यका अग वन गया । सन् ३००-३१२ ई० में आर्य स्फदिलकी अध्यक्षतामें मयुरामें स्वेताम्यर साधुओं का एक सम्मेलन हुआ था, प्राय उसी समय नागार्जुन सूरिने वल्लभीमें एक वैसा ही सम्मेलन बुलाया था और उममें आगमोंके सकछनकी चर्चा उठायो थी। इससे तिदित होता है कि ३री धातीके व्यात या ४थी के प्रारम्भके लगभग ही सौराष्ट्र और विज्ञेपकर उसकी राजघानी वल्छमी इवेताम्बर सम्प्रदायका के द्र बन गयी थी। गुप्तोंके कालमें यह प्रदेश साम्राज्यकी एक भृषित था और सम्राट् स्कन्दगुष्तने पणदत्तको इस भुविजका प्रान्तीय सासक नियुक्त किया था। इस पर्णवत्तके पुत्र चक्रपालितने जो गिरिनगरका कोटपाल था, सुदर्शन होलका पुन जीर्जोद्धार कराया और वहाँ एक शिलालेख मी लेकित कराया था।

गुप्तकालमें ही गुनरातमें मैत्रक वशका उदय हुआ। वस्लमोको इस वशने अपनी राजधानी बनाया। कुमारगुप्त प्रथमके समयमें ही इस वशकी स्थापना हो गयी प्रतीत होती है और गुप्त सम्राटोंक करद राजाओं या सामन्तोंके रूपमें ही इस वशका प्रारम्भ हुआ। यही कारण है कि इस वंशके नरेशोंके समस्त अभिलेख गुप्त सवत्में ही मिलते हैं। मैत्रक

कळिंग आदि और घृहत्तर भारत

(स्वयन ४६५-७५ हैं) या । यही यन बंदका संस्वारय प्रतीत हीता है। बसके सररान्त बनके तीन नुवी-सरहेन प्रथम प्रोमॉन्ड बीर मुनवेन प्रवत (५१५-५४५ ६) वे झनक राज्य किया । वे प्रारंतिवर्ष रियक-राजे बैक्कप्रतिकाको सथा बाजाने केर्बाडक्रमीके सका रहे प्रदेश होते हैं। नहाबीर वे ९८ या ९९३ (४५३ है नवान्वरते ४६६ हैं) में बनको राजवानी बालजी अवसेनें ही देवदिवनी समाधनपरी सरस-बताने स्वैतास्वर बेन बानुबोला एक नद्राल बस्तेलन हुवा । बहु बस्त्रेनी का बनारा चैन अपनेतन था और बड़ीनें जनातः क्वेतास्वर परापरानें नान्य क्ये बनाडे द्वारा नुरक्षित सैन सावन श्वत्र बंधनित क्ये निरीयत कर क्षके परे । दिगानार गरामाराचे बालन इसके क्रवान ४ - पर्न पूर्व ही बंबरित इवं निरिच्छ हो कुछे में । स्वेतास्वर आपनेकि इस बंबनाले मार्ग जिल्लार-कोलान्त्रर मतनेवको प्रयोग किए वह और स्वादो कर दिना नहीं वरेताम्बर परम्पराफे कानुसींगी साबितिक बुजनके बिए सन्तर्जन बेरमा वर्ष बोल्याक्रम दिया और इनी धनवर्ष बरनुवा स्वेतालार सुन्तक बादिलके प्रथमका प्रारम्य हुमा । नीवक-गरेश कुष्टवेनके श्राविकेशोंने ही धर्ममान अपन्नेश मानाका शाक्षेत्र है। वे पानकी-गरेन प्राप्तत स्र् बरबंबके नोवक और विश्वलिक जानवराता है। बन ५९५-५१५ ई में बरवारी-नरेज जिलादित्व प्रयम अवशा बन्धित्व प्रथम बदा प्रदासी था। बढ़ राजा बरकेन ब्रेतीनका पत्र और क्लराविकारों का । ध्यो करीयें क्यो-के नवनके काम बठाकर मैनक-गरेज स्तानन हो करे के और कड़ोने बनी एवं हुनीको नष्ट करवेने नकोन्य नीम क्लिया वा । विकाशित्वके क्षत्रके क्याचीमें प्रविद्ध चैनानार्थ विश्वता बदावायय हुए जिन्होंने विहेताकान-मान्य विवेदमानी क्षेत्र विभिन्न-विदेशक एक सहस्त्वर्थ क्ष्मको एवता गी मी । यह ६ ६ है में प्रमुख होनेशके बच्चे अल्लाप्याच्या बच्चे

बालोन प्रतिप्राप्त । एक प्रीरे

...

राजानीके हारा अनुष्या होतेके जारण कीं सरचनी संग्तृ थी कहते हैं। कुछ गरेकीको कोरते भीराज्यका साम्बाल स्थलनंत्री केनावर्ति कार्य उन्होंने अपने आश्रयदाता चिलादित्यका भी उल्लेज किया है। यह राजा बौद्धोका भी समान रूपसे आदर करता या। चीनी यात्री हुएनसांगने भी उसका उल्लेख किया है। बौद्धप्रय मजुष्रीमुलकस्पर्मे इस राजाके राज्यका विस्तार उज्जैनीसे लेकर समुद्रतटवर्ती लाट देश पर्यन्त बताया है। शिला-दित्यका भतीजा ध्रुपमट्ट या ध्रुवसेन द्वितीय या जिसे हपवर्धनने युद्धमें पराजित किया या किन्तु फिर अपनी पुत्रोका विवाह उसीके साथ करके उससे मैत्रो सम्बाध स्यापित कर लिया था। सम्भवतया हर्पका जामाता होनेके कारण ही यह राजा महायानी बौद्धधर्मका भवन हुआ । हर्पकी मृत्यु-के उपरान्त वह स्वतन्त्र हो गया । उसका पुत्र घरसेन चतुर्थ भो महायानी बौद्ध था. उसने अपने लिए चक्रवर्ती शब्दका भी प्रयोग किया है जिससे सूचित होता है कि उसने विजयों-द्वारा अपने राज्यका विस्तार भी किया था । ६९५ ई० के लगभग भारतमें क्षानेवाला चीनी यात्री इतुर्सिग लिखता है कि वहलमी नालन्दाको भौति ही बौद्ध घर्मका प्रमुख ज्ञान-केन्द्र थी। इस शताब्दीमें गुणमति, स्थिरमति, जयमेन आदि वस्लभीके प्रमुख बौद्धाचार्य थे। वौद्धोंके इस उत्कर्पने वल्लभीमें जैनधर्मको सौ हेढ मौ वर्पके लिए गीणता प्रदान कर दो प्रतीत होती है। ७१५-४३ ई० के बीच अरव सर-दार हाशमके सेनानी जुन्नैदने वल्लभीपर आक्रमण करके उसे लृटा था। मैत्रकवरा अव अवनत हो चुका था और शिलादित्य सप्तम (७६६ ई०) सम्भवत इस वशका अन्तिम राजा था।

८वीं शतीके उत्तरार्धमें गुजरात देश सीराष्ट्रके सैयव, भडीचके गुर्जर, लाटके चालुक्य, सौरमण्डलके घराह, अन्हिलवाडेके चावडा (चापोत्कट) आदि अनेक छोटे-छोटे राज्योंमें चेटा हुआ था। जैनाचार्य जिनसेनके हिरवश (७८३ ई०) के अनुसार इन सबमें सौरमण्डलके वराह प्रमुख

ये और वहाँ महावराहका पुत्र या पौत्र नयबीर वराह राज्य कर रहा या। किन्तु इसी समय भिन्नमालके गुर्जर-प्रतिहार और दक्षिणके राष्ट्रकूट दोनों ही गुजरातको हस्तगत करनेके लिए उताबले हो रहे थे। प्रतिहार

🕆 🏻 कलिंग आदि और बृहत्तर भारत

बलाराजने को रिजय भी कर निमा रिन्यु राज्युक मीरिन्द तृरीको रुप ८ है के बनवर उसे पूर्विते क्रीनकर बाली राज्यते विद्या विया और जाने आहे इनको मुख्यतका जालीन यावक ना रिया । राष्ट्रपूर्वेशः इव पुत्ररातो बान्धनै इन्द्रके बनरान्य वर्क गुरर्क-वर्ष भ्रव शास्त्रप कृत्य समान्त्रय भ्रम द्वितीय, श्रीतार्थन सीर क्षाराज क्रमा राजा हर । नवरता है वे राज्यत राजहे किए माने रूपर्रेश सामग्रीटके राजपूर बन्नारोके प्रतिनिधि वर्ग मानना से, मानुक वै जान स्थाप धालक थे। राज्यकृतीको विकाफ बराम्य नजराउचे बीडवर्ग क्षेत्र ही दिलीन ही नहां और वैनवर्ग किरते बस्ता वकार्य हो दरा । सन्दर्भदर्भ राज्यन बसाद स्वयं बैनवर्सन प्रश्नि है बसाद वे विशेषकर समाह समोजवय प्रथम । बंदका नवेटा बार्ड नवं सुवर्वतर्व मी को बक्दी कोर्स संस्थातक प्राचीन वाक्य का चैनकरका जला है। बक्के बनवने नवशारिका (बवकारी) नामक स्थानमें एक बैन विद्वारीत-की स्वारणा हुई थी । दिवासरामार्ज परवादिमानके प्रविध्य दश्व आपनिताके बन्दल में, बीटयनराजें पुरुषे। क्ष्मू ८९१ ई के पूरा धालपावन रको निरित्त होता है कि अन्त करेराको नववारोडे इस विस्तर की विद्यानीको सिर् क्या दिसम्बर्धपार्वको जुलिस्तादिका जनुत सन् दिस ना । यह सम्ब राज्युक्ष-सम्बद्ध मनीयपर्व अस्तरपाल्य था । बदाः वर्जधान ही जबका व्यवसायक बेरबक मीर इच प्रवार निवास राष्ट्रकृत बाह्यस्य का नातानिक वाषक वा । इत नावमें दिनमार और स्पेतानार बोलीं ही बण्डराव नुमरात्रमें बाय-बाय समन्त्रम रहे थे। कर्वत बसराविकरी मी क्षेत्रपति प्रति वधार शीर विदिश्तु रहे । १०वीं पश्चीह प्राप्तवर्ते इन वंक-का बच्च इस्त ।

रायुक्तिनी पुत्रराय-निवरके वृत्तं ही और अधिक वैवय-निवर्ण बायनकार्य ही जुरायुक्ते वक्त साथ राजधंतका बरम हो बसाबा, यो कृतकार्य कार, पारीतकर सा पायहा वंज बहुमारा है। वन् करत हैं

भारतीय इतिहास इस गरि

में जयदीलर चापोत्कटके पुत्र वनराजने इस वशको स्थापना की थी। अपने गुरु स्वेताम्बरावार्य शोलगुणसूरिके उपदेश, आशोर्वाद और सहायतासे वनराज राज्य स्यापित करनेमें समर्थ हुआ । उसने वल्लभी और चसके मैत्रकाका अन्त किया और अन्तिलपाटन नामक नवीन नगर बसाकर उसे अपनो राजधानी बनाया। इस वशके समयमें जैनधर्म ही प्राय राजधर्म रहा यद्यपि शैव और शाक्तधर्म भी राज्यमान्य वने रहे । राज्यके अधिकाश प्रभावदाली वर्ग, घनिक महाजन, राजमन्त्री आदि जैन थे। वनराजका प्रधान मन्त्री चम्पा नामक जैन विणक् या जिसने चम्पानेर नगर वसाया । निम्नय नामक एक घनवान जैन श्रेष्ठिने, जिसे बनराज पिता तुल्य मानता था, अन्हिलवाडेमें ऋषमदेषका मन्दिर बनवाया। निम्नयका पुत्र लहोर वनराजका सेनापति था । गुरुदक्षिणाके रूपमें वनराज शीलगुण सुरिको अपना राज्य समर्पित करना चाहता था किन्तु उन्होने उसके बदलेमें उससे एक मन्दिर बनवानेके लिए कहा, अत राजाने राजधानीमें पचासर पाश्वनाय नामका प्रसिद्ध जिनालय बनवाया । इस जिनालयमें पार्व प्रतिमा पचासरसे लाकर स्थापित की गयी थी। वनराजने और भी कई जिन-मन्दिर वनवाये । उसके बाद योगराज, रत्नादित्य, क्षेमराज. माकडदेन और भूगडदेव या सामन्तिमह नामके राजा इस वशमें क्रमश हए। ९७४ ई० में मूलराज घोलकीने इस वंशका अन्त किया। वर्धमान नगरमें भी चापवशकी एक शासाका राज्य या जिसमें विक्रमार्क, अदृक, पुलकेशी, घ्रुवभट्ट और घरणीवराह नामके राजे हुए। ये भी जैन धर्मके पोपक थे। गिरनार-जुनागढ़के चूडासमास १०वीं से १६वीं शती तक राज्य करते रहे। सोमनायके मूल निर्माता इसी यशके प्रारम्भिक नरेश थे। ये जैन धर्मके प्रति भी सहिष्णु रहे।

गुजरात-अन्हिलपाटनका सोलकीवंश दक्षिणके प्राचीन चालुक्पवशकी ही एक शासा था। सौराष्ट्र, मत्तमयूर और लाटमें भी चालुक्योंके छोटे-छोटे वंश स्थापित थे। किन्तु गुजरातके इतिहासमें अन्हिलवाहेके चालुक्यों

कढिंग थादि और बृहत्तर भारत

अपरत्यन बोर्लोक्नोक्स स्थल हो। बर्शीक्क बहुत्त्वपुत्र है। इनके बार्थन राजमें ही बहु देख कप्रतिके परम क्रिजरंगर गृहिंग और एक निजान वक्तियांकी कामान्य स्वारित वरतेने कवने हवा । यन ९४१-४२ ई वे मुखराज क्षेत्रजीये इब पंजनी स्वापना की और ९७४ है के तनक वह बन्दर्व नुकरात देवका बावः एकाविरक्षि हो नदा । सर्वेहन-नाइतको हो बनने अपनी राजधानी बननामा । भौड्ला-मरेस निषद्गान क्रितीयके साथ मुख्यें ९९४ वं के समयम क्यारी मृत्यु हुई। अवके पुत्र चामुख्यराम (१९५-१ १ ई.) में बारके किन्युराज परमारकी पर्णाक किया। पानुष्वरायका पुत्र दुर्ववराय था जिल्ला पुत्र बीनरेप जनम (११-६२ ई.) था । दनके बनकी बहुनुर बनगरीने बोबनायका निर्माय किया। मीवनै मन्दिरको कुछः बनवाया। बोन परमारता सह सबु था। सीमरेक्के सक्तरें ही बीमासर्वती तीरवार विवसमाह अस्तिवनारेगा प्रथम नगरकेठ बनाना नवा। अस्तुरा निरम्भिकात कमाना मारियान्ता यांना इसे निरम्बाहरे वर्ष १ ३२ ६ व विनुष प्रम्य स्वयं सरके निर्माण कराया जा। विवस्तवस् मान क्षत्र मनी मनिक और मगौरवा सैनी सामक ही वहीं वा बद्ध राजाका एक प्रमुख कली भी या और बाव ही देता प्रयय तैयालारक वा कि क्क्ने नुप्रशाली देनानी दिन्दु नचीके नीरमें तैराकर प्रवर्गांकी की क्षेत्रको रस्तम्य क्रिया या । भीमशा दुव वरक्तराह कर्व (१ ६६-९६ है) वा निक्तन प्रवास सर्गी बुंबाक नावक वैनी वा । कर्नका पुत्र और क्लाधिकारी नुवनित कार्यक् वित्रधन (१ ९४-११४६ वे) बा। वह वना वन्तिवासे वर्गाता हर्व दली वरिष्ठना। वह दर्ववर्तदक्षिण्य या महादेशका दशासक था हो बहाबीएका वी क्ला या । वस्ते सामाज विकासन सम्माना हो स्वालीए विकासन की बक्तास क्षेत्रस्तका सङ्घ्यक मा तो सनुभव धीवकी सामा करके ब्दुड़ि बारियांको भी छल्ते (२ दान मेंद्र किने ने। यह कर-

पास्त्रका भी शाला पा और सिद्ध चक्रवर्ती गहमाता था। उसने वयना सवत् भी चनाया । रायविहार नामक आदिनायका सुन्दर जिनालय और गिरनार पर्वतपर नेमिनायके मुख्य मदिरको धनवानेका श्रेय भी इसी राजावो है। मुनाल, शान्तनु, खरपन, वाल्गि, पृथ्वोपान आदि उसके अनेक राजमात्री जैनो थे। पृथ्वीपालने आवृक एक मन्दिरमें अपने सात पूर्वजाकी हायोनजीन मूर्तियौ यनवायी थी। राजा जयसिंहने १२ वर्ष तक मालवाके परमारोंके साथ युद्ध फरके उनपर विजय प्राप्त की श्रीर वह अवितनाय कहलाया । उसने वर्षराका दमन किया और महायेके घन्देली-को सिंध करनेपर विवश किया। उसकी नीति प्रधानतया आक्रमणात्मक थो और उसक समयमें गुजर साम्राज्यकी अभूतपूर्व उन्नति एवं विस्तार हुआ । उसके प्रसिद्धमन्त्रो उदयनन सीरठक दुईर राजा मेंगारको पराजित परके निद्धराजको चक्रवर्ती पद दिलाया था और इसी उदयनने कर्णावती (अहमदाबाद) में एक जिनालयका निर्माण कराकर उसमें ७२ बहुमृत्य दव प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करायी थी । चदयनके पुत्र आहड, बाहड, अम्बह, सोल्ला आदि नी विषदाण राजमात्री और प्रचण्ड सेनानायक थे। स्ययं महाराज जयसिंह ज्ञान और कलाका वहा प्रेमी या और विद्वानोंका भारी आदर करता था। माजवी उज्जैनीकी मौति ही उसने अस्ट्रिलपाटनकी ज्ञानका अनुपम के द्र बनानेका निश्चय किया और वहाँ एक विद्याल विद्या-पीठकी स्थापना की । सुप्रसिद्ध दिग्गज जैनाचार्य हेमचन्द्रको उसने अपने काश्रयमें हानेवाली साहित्यिक प्रवृत्तियोंके नेतृत्वना भार सींपा। लगभग २० नवीन ग्रायाका निर्माण हुआ, स्वय हेमच द्रने द्वचाश्रयकाव्य और विद्वहेम क्याकरणकी रचना की, उनके शिष्य रामचन्द्रने अनेक नाटक रसे, कनकरु कायस्य प्याकरणके आचार्य निमुक्त हुए, याग्मट्टने अलंकार ग्रायकी रचना की, तथा गुणच द्र, महेन्द्रसूरि, देवच द्र, उदयचन्द्र, वर्षमानगणि, यशस्चन्द्र, बालचन्द्र, आनन्दसूरि, अमरच द आदि अनेक जैन विद्वानों एव साधुओंने राजासे सम्मान प्राप्त किया। राजाको दार्शनिक शास्त्रार्थ सुननेका भी शोक या, व्याप्तारास्वारके बार्डी संद्रामधानार्थं देशनीकि जान वनने नामी गरकार्यन्ति हो प्रत्यादानियानोत्तिके स्वतिना कर्नाटके विरामधार्या पुरस्तारको सम्बद्धि कर बनाया था। जनुस्तानकार्यी विद्यान वर्ष्टीत्तको यानकार कृत्यानोति दिल्लाका सर्वतृत्व था। कर्मित्तके कोई त्या नामी केला त्या कार्या कोक्सोरी थे। मो

बदमेर (बजायब) के बीहान-गरेब बजीवाको विश्वास की । इतना पुत्र बोर्नेस्वर करणान भाग्ड या जिल्हे कार्तेन्द्रने अस्तो रूपाई कार्य करणा रणसपुर एवं सकर्यास्वरणे बॉर्मरङ किया । किन्यु राजसन्तर में सीनीस-की करान्त्रीते कराम क्षेत्रगंतके प्रदेश कुनारात्त्रको ही निवानगर बैद्धा और सम्बन्धा स्थाने इसी बुद्धियनोत्ते हो बाद वियो को नामन काचर आपर्व देवरण और एक्स्प्रेडिन देख्ये भी क्यान्यानके ही बसर्वक में । क्यारपानने करने टीन गर्र (११४१-११३६ र) के राम्यकार्त्म एवर बालागर्का व केरब बनके विर्विध सम्मारिक को बाह्य धारवाँने रखा की बरन बक्की करीने-मनी उन्होंने वर्ष महिरादि ही थी। उनके नवामें स्वरत बालाव क्रांद्रीत के बरम रिकामी गाँच गया या प्रथमें १८ देश वॉमांबन के और बनको बीजार्य बन्तरमें असम देश पूर्वने बका तह । बांधवने क्लियाचन बाँद परिष्याने बनुत कर पर्वाण थीं । बनुते स्टारकारकों केटने बनुतुर्य बर्गाद एवं प्रथमे बहितीय धारीत और गुचवा दश्योच विद्या । बस्रीकें बनाव प्रकृति की देवार प्रकृत की वृद्दे शासकायने स्वयद्ध का वरवाहक न कोई ब्रध्यन हुन्य न कोई वृश्यित्रपता । शासनीव्यान और सब्बाधी नहाँगे वर्तिगाँड हुई मीर पर्रावस्त्राके जवारमें राजा बजाराते तुक्तुवस्र निवस्त्रा विया । यह रामा निर्मिश्तर अन्ते चैतवस्ता बहुर बनुशासी का और हर बार्के व्हिप्त मी नर्नेष्ठ नहीं है कि इस करण बंबराई जुवारतम क्षेत्रेरीके बनाने कुर्वर नामान्य पारतस्वका क्योंक्ट क्यूड, प्रात्तवाको, बरार दर्व मुर्गप्तर बाह्यस्य या । समाने जिब नुव बुरस्तित हैनवनावार

स्वय थे। उन्होंके पथ प्रदर्शनमें उसने राज्य संचालन किया, उसके मन्त्री. सेनानायक एव अन्य उच्च पदस्य कर्मचारी भी अधिकाशत जैन थे और सब ही कुशल सुवीग्य एव विश्वस्त थे। थोड़े ही समयमें उसने बाह्य एव अम्यन्तर शमुओंका दमन करके अपनी स्थिति सुरक्षित एव सुदृढ कर लो और शासन-उपवस्या सुवार कर दी। तदनन्तर शेप १५-२० वर्ष उसने कला, ज्ञान और धर्मकी सेवा-साघनामें व्यतीत किये। उसने श्रावकके व्रत घारण करके परम आईत् विरुद प्राप्त किया, राज्यमें पशुहिंसा, विल, शिकार, मद्यपान, जुआ आदिका निषेध किया, मृत्यु दण्ड वन्द किया, युद्धासे विराम लिया. राज्य-भरमें अमारि घोषणा करवा दी, दीन दुखियोका पालन किया. निस्धातान विघवाओं के स्वत्वकी रक्षा की, चतुर्विष सपके साथ शत्रुजय, गिरनार तथा अन्य तीर्थ क्षेत्रोंकी यात्रा की, और सीमनाथके मन्दिरका भी विस्मरण नहीं किया। यह राजा भारी निर्माता भी था, कहा जाता ह कि उसने १४४० नवीन मन्दिर बनवाये और १६०० का नोर्णोद्धार कराया. स्वय राजधानीमें भी अनेक सुन्दर जिनालय निर्माण कराये। प्रारम्भमें वह निरक्षर था किन्त राजा होनेके उपरात सत्सगरे शीघ्र ही उसने लिखना-पढ़ना सीख लिया, विद्वानोकी सगति एव वाद विवादमें उसे आनन्द आता या, कवि, पण्डित, चारण, जैनाजैन विद्वान्, साधु तपस्वी सभी उसके राज्य बीर दरबारको शोभा बढ़ाते थे, राजा चरित्रवान् और एकपत्नीव्रतका पालक था, ब्राह्मण विद्वानो और कवियोंने भी उसको मूरि-मूरि प्रशसा की है। वास्तवमें कुमारपाल एक ब्रादर्श नरेश था। ११७२ ई० में हेन-च द्रकी मृत्यु हुई, गुरु वियोगसे सन्तप्त राजा कुमारपाल भी ६ मास परचात् ११७३ ई० में मर गया।

कुमारपालके कोई पुत्र नहीं था, उसका दोहित्र प्रतापमल्ल उसका उत्तराधिकारो था, किन्तु उसके भतीजे अजयपालने चालाकोसे धिहासन हस्त्रगत कर लिया। वह धौबधर्मका अनुयायो था और बढा असहिष्णु था, उसने पुराने मन्त्रियों और सरदारोंको अपमानित किया और उन्हें नष्ट किया। वैन रिक्तों और बानु गोर से भी से अन्यासार हिंदी कामी हमा करायों । वर्ग के देन कामी जाय गान वास वार्या करायों । वर्ग के देन कामी जाय गान वास वार्या की स्वर्ण में हमारे की देन के दूर हारायक पढ़िये काम पढ़िये के दूर हारायक पढ़िये की से प्रतिकृति के दूर हारायक पढ़िये की से प्रतिकृति की स्वतिकृति की स्वति की स्वतिकृति की स्वति की स्वतिकृति की स्वतिकृति की स्वतिकृति की स्वतिकृति की स्वतिकृति

में अरब सेनानी मूहम्मद दिन फ़ासिमने सिन्यपर भयकर आक्रनण मा । दाहिर बीरतापूर्वक छटते हुए मारागया और विचयर हिन्दूराज्यका न्त तथा मुमलमानी घासनका प्रारम्भ हुआ। कुछ विद्वानीं रे मतस नि यके स पत्तनका श्रेय अरबाकी बोरताने अधिक सिन्चके बौद्धा और ब्राह्मणोंके श्वासवातको है। अरबोने प्रारम्भिक अत्यासारोक बाद बहुन फुछ महि-णुतापूर्वक शामन किया । बीद्धधम तो शर्न -शर्न तिरोहित हो गया और ।सके विकृत अवधिष्टाश तथा थास्त घमक सम्मिश्रणसे नि घर्ने वाममार्ग-हा प्रचार हुआ। शैवधम पनपता रहा, रानै -शनै वैरणवधर्म मो प्रविष्ट आ और जैनवर्ग भी व्यापारी वगमें बना रहा। कवि श्रोहपके नैपघ-वरितसे विदित होता हु कि ८वीं छन।ब्दीमें भी सिप्पमें जैनयम अच्छी दशामें था। मुल्तान नगर तो मध्यकालमें भी इन प्रदेशमें जैनधमका प्रमुख केन्द्र बना रहा । गोडी पारवनायची सुप्रसिद्ध मूर्निसे सम्बचित अनुयुतियाँ भी प्राचीन कालमें सिष्य देशमें जैनयमके अस्तित्यका समर्यन करती हैं। मध्यकालमें पादव-जिनकी इस प्राचीन ऐतिहासिक प्रतिमाक संग्धक सिच देशान्तर्गत पीरनगर (पारकर) वे मोहवशी राप्तपृत ाजे रहे और वे इसे अपना कुल-देवता मानते रहे ।

तने दमन किया किन्तु वह उनका अन्तुन कर सरा। साय ही क्राह्मणों र उनके घर्मका बोलवाला हुआ । छण्कं पुत्र दाहिरके समय ७१२

फर्मीर — यह पनाव और मध्य एशियाक बीच स्थित मुस्य पर्व तीय देश है जो हिमालय पर्वत मालाओं में ही होकर निश्वत और नेपालमें भी सम्यित है। यह एक प्राचीन राज्य है। आयों ने हो इसे सबप्रयम सम्यता प्रदान की। निकन्दरके आक्रमणके नमय यह विद्यमान था और च द्वगुष्त भौर्यने भी उसे अपने साम्राज्यका अंग बना लिया था। सम्राट् अयों के पृत्र जलोकने वहाँ स्वतत्य राज्य किया। कल्हणकी राजतरिएणी और अवुक्छज्ञकों आहने अक्यरीके अनुसार जलोकने ही इस देशमें जैन-धर्मको प्रतिष्ठा की थी। तदुपरान्त कनिष्क आदि कुषाणोंका बहाँ राज्य क्रांठे क्रांट बनराज्य ने जिल्हाने इस निरम्हिनसी। युवानी बन्नाद्की पर्नोच क्रमाना था। कुछ बाळ पर्यन्त भीनीता जिर युनानिमी जीर पञ्जरीका इत प्रदेशकार व्यविकार पहा । जनम क्याँ ई पू के जनम पान्ते ही बकोने बाइनच करके बहुर धरस्वानको स्वापना की। धरकुकके दन सकारी किन्तरे फैलकर ही बचर और परिचय भारतने अपने राज्य विकाने ने । बनोके बनरान्त हमॉना वनिनार हवा और करना-न्तरमें इस निवेश्विमीयां भारतीनकरण हो आवेगर इस वैक्नें नर्द एक क्रोडे-क्रोडे एउन परते है। राज्यपाताकी क्रियके क्योंने बैन-वर्पना प्रचार किया का बीर क्लीके क्षत्रवन क्षोद्वानार्यने अवधिके नव बाकोलो बैनवर्गये बोलिस दिया या । मुख्यकाकर्वे इतिमुख्ये पेटाक-क्षिणके हुनोली चैत्रवर्तना क्षत्रेच दिना था। बलानियोके बनवर्ते मी इब बरेखने बनेक दिनमार चैन बानु विचरण करते. और अलॉर्ने निनाब करते में । कामान्तरमें चन्यवत्या प्रात्मेके स्वयके महानामी मीजमर्ग दर्व क्षेत्र और प्राप्त वर्षोत्रा को रह देवने प्रचार हो कहा था। रह प्रकार में बन हो निवित्त भारतीय वर्ग इस प्रवेखने की हुए से। सैनवर्ग बनस्य हो बरेबाएत बीच स्थिति एहा । ६३३ वती है के बनावें एक धान्त्रातीय स्थालने तरपूर्व तिस्वपर विवास करके बढ़ी काना राज्य क्षमाना । यह व्यासावी क्षेत्रकर्मना वनुवासी या । क्रक्के देवने तिहरूप-एप प्रक्रित हुवा है। यह भी क्वी वर्तना बनुनावी ना । क्वक वर्तनी बीड मिन् दिल्म देखते बाकस्य और ऐक्सा बीरम विवादे में और ने राजने किय विमानन ने । बन ६५५ ई. में नकराना और बंधनिस्तालके पानीं बरवोने विश्वपर शक्कान किया इव बीड विस्कोके शारण राजा सिद्धरकरामको द्वार हुई और यह नास करा। कारा पुत्र बाह्यी का किन्तु ६५६ है। में क्लमी भी क्यी वर्ति हुई भे क्की निराती हरें थी। क्की बनराम्ब बक्के बाह्यम सभी क्की राज्य इस्तावतं कर विश्वा और अवश्वतं भू वर्ष राज्य विश्वा । वीडीका

उसने दमन किया किन्तु वह उनका अन्त न कर सना। साय ही प्राह्मणी श्रीर उनके धर्मका बीलवाला हुआ। छष्टके पुत्र दाहिरमे समय ७१२ ई॰ में अरब सेनानी मुहम्मद विन क़ासिमने सिन्धपर भयकर आफ्रमण किया । दाहिर बीरतापुवक स्टिते हुए मारागमा और सिप्पपर हिन्द्रगण्यका बन्त तथा मुमलमानी ग्रामनका प्रारम्भ हुआ। कुछ विद्वानांके मतस निन्यके इस पतनका श्रेय अरबोंकी बीरतासे अधिक सिचके बौद्धा और प्राह्मणाचे विस्वामधातको है। अरबोंने प्रारम्भिक अत्याचारींने बाद बहुन कुछ सहि-ष्णुनापृयक शामन किया । बौद्धधम सो शनै -शनै तिरोहित हो गया और उसके विकृत अवशिष्टांश तथा पानत धनक सम्मिश्रणम सि धने वामनाग का प्रचार हुआ। धैवधम पनपता रहा, धनै धनै वैरणवधर्म भो प्रविष्ट हुआ और जैनधर्म भी ब्यापारी धगमें बना रहा । कवि श्राह्यके नैपध-चरितसे विदित होता है कि ८वीं शताब्दीमें भी मिचमें जैनधम अच्छी दशामें था। मुल्तान नगर तो मध्यकालमें भी इन प्रदेशमें जैनघमका प्रमख मे द बना रहा। गोड़ी पादवनायकी स्प्रसिद्ध मृनित सम्बधित अनुस्रतियाँ भी प्राचीन कार में सिच देजमें जैनधमके अस्तित्यका समर्थन करती हैं। मध्यकालमें पादव-जिनकी इस प्राचीन ऐतिहासिक प्रतिमान संरक्षक मिन्य देशा तर्गत पौरनगर (पारकर) के सोडवशी राजपूत राजे रहे, और वे इसे अपना कुल-देवता मानते रहे।

फर्मीर—यह पजाब और मध्य एशियाके बीच स्थित सुरम्य पर्व-तीय देश है जो हिमालय पर्वत मालाओं में ही होकर निक्वत और नेपालसे भी सम्बन्धित है। यह एक प्राचीन राज्य है। आयों ने ही इसे सबप्रयम सम्यता प्रदान की। निकन्दरके आक्रमणके नमय यह विद्यमान था और चद्रगुष्त मौर्यने भी उसे अपने साम्राज्यका अंग यना लिया था। मम्राट् अधोकके पुत्र जलोकने वहाँ स्वतत्य राज्य किया। कल्हणकी रामतरिंगणो और अबुलक्कलको आहने सकसरीके अनुनार जलोकने ही इस देशमें जैन-धर्मको प्रतिष्ठा की थी। सदुपरान्त कनिष्क आदि कुपाणाका वहाँ राज्य

क्षपर करिकार कि। विश्व 34 ता/दे प्राराजदे बाद सार्गादे बचीन्द्र संप्रया प्रदा हुआ को देन संदर्भ शानवद्यान्त्री कालोर रणार्थ जनगर वर्षा की वर्षोत्त गाउँ मुक्तिक से को रीव पर्यायकी में अन् बानामा रूपांक्याने याने नाने बीदानम नवसंग्ये तिर्वेदित हो बार बोन बैंडबर्ड बॉलब रखेंबे नक्षा भेगेंबे बोर्डबर रह बार । किर बी टरी दला तर रामण बोद विदाया रेट्ट बना रहा । बाँग्द्र वार्वसीयर बीद शिक्षण पूजा भिन्ने क्रमीनमें ही दिया आग की की व कर्रोड़क वंत्रके ब्रार्शनक नेटॉर्न इन्बरन्त को सरवन ६३१-६३ ई बहुत्तर हैंडा बाँडड है। इबीय समाने बहबीरवा कार्यप्रत हाँगाउँ विमना तक होता है। यह राजा हचवर्षन बीच हुण्यमांच्या बम्हानीन था - इनका बीचा मान्निवादित्व वक्तारीय (७३६-७६६ ई.) बडा मनाचे बोर बरस्तारांठी या उसने कर हैं में बसीउने बसोरवनकी हराज तिस्तर चीर और गुर्शेशे में हराया । यह मूर्यता बधानक का मीर वसने प्रतिक सार्तरा-अस्टिर बन्यारा का वसका रोता विस्तारित क्सारोड का वर बता रिस्टी और नामको बा । दवी रामीके बनागर्वें इसमें बागीश्रे संपानुसरी हुएता । १वीं रानुमें तहत्वें इस बागीरम रंघरा बन्त हुना भीर प्रयोग स्थानी बरन्तिस्थन (८६५-८३ हैं) वै

न्ता पूर्व क्या मान्याप बीद्धवर्तवा कार्यनमें प्रदेश हुआ। पूर्व कर्न है

* 17

माराज्य प्रतिदास वृद्ध प्रति

बल्पा बंबची रेचारता की । इस राजा तथा इसके बंबजीये आहित्य कीर बाहित्यवारीकी सम्मन्ति जीनाहरू दिया और सीकहितके बतेब वार्षि नामशेप हो गया और शैवधम दम देशका प्रवान धर्म हो गया। इन नरेशोंने सेम्फ्रत साहित्यको मारी प्रोत्माहन दिया। मेंया, भौमक, शिव-स्वामिन, रत्नाकार, अभिनन्द, क्षेमेद्ध, सोमदेव (कथासरित्मागरका छेलक, १०६३ ई०) विल्हण (१०६४ ई०), कल्हण (११०० ई०) बादि अनेक सस्यत कवियों एय विद्वानोंने इन नरेशाचे शाश्ययमें भारतीके भण्डारकी मरा। कल्हणको राजतरींगणी कदमोरके इतिहासका अपूर्व प्राय है और सम्पूर्ण सस्यत साहित्यमें इतिहास विषयको वेजोए रचना है। इससे पता चलता है कि कश्मीरका तत्रालोन इतिहास गृह पद्याना, हत्याओं और दुरावारोंसे पूरित था।

नेपाल में प्रारम्भमें बनार्य लोगोंका निवास या। प्राचीनकालमें लिच्छिय द्याययोन यहाँ मारतीय राज्य स्थापित किया जो अर्थी घती ई० के मध्य तक घरता रहा । समुद्रगुप्तके शिलालेखमें भी नेपाल राज्यका उल्लेख है । हपके समयमें नेपाल राज्य हर्पके राज्य और तिब्बतमे बीच स्थित था। लिच्छवियोंने द्वारा ही इस देशमें आर्यसम्पता और धौद्ध, जन आदि धर्मी-का प्रवेश हुआ। कि तु तान्त्रिक यौद्धधमकी ही यहाँ प्रयानता हुई। सभी हालमें हो स॰ ४९८की एक जैन प्रतिमा एव शिलालेख नेपालमें प्राप्त हुए हैं। ६४२ ई० में अशुवर्मनने नेपालमें ठाकृरियश नामक एक नवीन राजवशको स्थापना को । ७२४ ई० में इस बक्तके राजा गुणकामदेवने काठमाण्डु नगरका निर्माण किया और उसे राजवानी बनाया। ८७९ ई. से नेपाली सवतका प्रचलन हुआ । १३२४ ई० में हीरासिंहदेवके समयसे नेपालमें बौद्धधमका अन्त हुआ और धैयधमको स्थापना हुई। तबसे बही इस देशका प्रधान धर्म चला आता है। जैन धमके मा कविपय चिह्न . नेपालमें मिले हैं। जैनियोका आवागमन इस देशमें प्राचोनकालमें था, इसके कई प्रमाण मिलते हैं।

कुलुकी घाटी में कुलूत लोगोंका एक छोटा सा राज्य था। इसके राजे बौढ ये। चम्बामें भी फुलूतोका राज्य था किन्तु ये लोग शैव थे। शिक्तर राज्य नवार्ष या । बीडावारना बहु एक प्रमुख कह वन का । या । योग देशों चाएक मोन्य प्रवान मार्च विकास होकर ही या । कियान के प्रामानीय चेनेक राज्यणिक यात विवाद-सरक्ता जो हुए । वन्यों नामी दिन्तु बहुन कमा दिक्तरपानील करार बारादीक प्रामानीहिंग यां शिक्यदें पीडा दिन्तु विकास का स्वीव कराया थी तो वे वा वा स्वीव हैं यां शिक्यदें पीडा मार्चा में ता वेदराज्य दर्शनाय काम देश कराया एवा वा वा नामा है कि जिस्साने बेनामक में तुझ पिछु निष्टे हैं, हो त तत्मा है वन्नी करा वो से वेन स्वाम वर्ष-प्राप्त का या पूर्वे हो, दिन्तु कहें रिपेट स्वामा पार्टी किया रहीत होती ।

सास्ताम नयम कर्गन कारान राज्यमें प्रकार मेरिक प्राणित की। कारानेत एवं मार्ग दिया प्रकार मंद्र प्राप्त मेरिक प्राण्य कि वास्त्र सामानेत एवं मार्ग देशी प्रवेत न्द्रम राज्य से। इस्त्रे क्ष्यर सामान्य स्वयर स्त्रीत प्रमाद मार्ग्यस्थन धर्मित संस्था से सी। इस्त्रे क्षय स्त्रीत प्रमाद मार्ग्यस्थन धर्मित संस्था से सी। न्द्रम सामान्य स्वयोगित दिया कर्म दूरा प्रमाद सी सामान्य सामान्य स्वया सीमार क्ष्या मार्ग प्रमाद प्रमाद सी सामान्य सामान्य स्वया द्वारा प्रमाद सामान्य प्रमाद सी सामान्य सामान्य स्वया द्वारा प्रमाद सामान्य स्वयाप्त सामान्य सी सीमान्य सामान्य स्वया प्रमाद स्वयाप्त सामान्य सिंग्य देश समान्य है सीर इस्त्रे सिंगानी विष्ठा । साध्यन्ति स्वयाप्त दूर्व दीना समान्य

चैनास्त्र-नार्येच नार्व्ये को जानस्त्र तिहार-नंदान बहुवता है बह मान्ये ना मान्य देशके नार्वते प्रतिद्व चा । और अनद और जेनस वर्तेच्य तिहार मान्ये आप है । बानुन परिचारी अंग्रस पूरी पारिकार्य, पूर्व-विहार तीर दिराय नहारी वर्ताल या वेच देश चा, पून्त प्रता (बाह) और तान मान्येने यो दश्यी परिद्वित में दिराय तोष स्त्रीतेव्यालि विशेषि युक्त समतट भी इसोबा एक भाग या । पुण्डुवर्षन, पुण्डुनगर या महास्यान-गढ, ताम्रनिष्त (तामलुक), कोटिवर्ष, वर्षमान (बर्दवान) सादि इसकी प्राचीन नगरियाँ यीं । जैन अनुष्कृतिके २५ई आर्य देशो तथा १८ राज्योमें वगदेश और उसकी रामधानी ताम्रलिन्तियी गणना है, किन्तु सीद अनुस्रुति-के सोल्ह महाजनपदोमें इनका उल्लेख नहीं है। वेदोंके आर्य मी बगदशसे मर्वेषा अविवित थे। उत्तर वैदिक-कालीन साहित्यमें उसे अनार्य-देश महा है, ५वीं-६टो शती ई० पृ० के धर्ममूत्रोंमें तो इस म्लेन्ट देशमें जाने-वाला आर्य महापातकी समझा जाता या । ढॉ॰ मण्डाग्करका मत है कि इस प्राच्य देशके छोग जैमा-द्वारा ही सर्वप्रयम सम्य बनाये गये थे। अव मध्यदेशीय सम्यता और धर्मका बग देशमें प्रतेश श्रमण सम्कृति और जैनधर्मके रूपमें ही सर्वप्रयम हुआ। प्रो० राखालदास धनर्जीके अनुसार भी प्राचीन पालमें गगाके दक्षिणी भागमें जैनधर्मका पाकी प्रपार और प्रमार या। दक्षिण बिहारके हजारोबाग जिलमें स्थित सम्मेदिशियर पर्वत जैनियाका सवमहान् सिद्धक्षेत्र है। इस तीर्घंसे ही चौथीममें-से योस तीर्यंकरा-ने निर्वाण लाभ किया था। यह पर्वत पारसनाय नामसे भी प्रसिद्ध है, तीर्यंकर पारवं इस स्थानसे मुक्ति लाभ करनेवाले अन्तिम तीर्यंकर थे। उन्होंने इस प्रदेशमें जैनधर्मका विरोप प्रचार किया था। आचाराग सुत्रके अनुसार बद्धमान महाबीर भी बज्जभूमि, सुम्हभूमि बीर राढदेशमें धर्मप्रचारार्थ गये थे और वर्द्धमान (वर्दवान) नगरकी प्रसिद्धि भी उ हींके नामसे हुई । अन्तिम श्रुतकेवली मद्रबाहु पुण्ड्रवधनके निवासी थे । जनस्यविरोंकी गोदासगण शासाके पौण्डवर्धनियागणका नाम भी इसी नगरके नामपर रखा गया था । जैन साघुत्राको कोटिवर्प और ताम्रलिप्ति शानाएँ भी वगदेशके तन्नाम नगराँके नामसे ही प्रसिद्ध हुई । बौद्धप्रन्य बोधिसस्यावदानके अन्तर्गत सुमगधायदानमें वर्णित अनायिपण्डककी पत्री सुमागघाकी कया प्रमाणित करती है कि ईसाके ज मसे बहुत पहले ही, स्वयं बुद्धके समयमें, पुण्डूबर्धन जैनधमेका प्रसिद्ध के द्र या । एक अप बौद्धग्रन्थ, शिवसर सारत सराये था। वीजवर्षना यह एक बहुच वह वह वह वा या। वेच देशने बारत सारेणा वाचन सार्व जिस्स होनर हो या। किस्स्य-के स्तामाओं के मेहिंद सारवार्य में तह रिस्मा-दावन मी हुए वहीं-यामी रिन्मु बहुव वस शिवस्यार्यों ने वास बारतीय सारवीरों में हमाने रिन्मु शिवस्य में तह सम्बन्ध नेमें देश यह दिएगी। साम है कि जिस्साने कैत्यर के पात्र काम नाम तह बन्दा पर। वस साम है कि जिस्साने कैत्यर के पात्र विद्या होने हैं हो तहना है वसी-यामा साम काम समय साम साम साम साम होने की हिल्ल काम है कि

क्षारं मानव कराय तामान (१२२६) व्यवस्था मार्ग्सारं मार्ग्सारं मार्ग्सारं मार्ग्सारं मार्ग्सारं स्थानं हुन्य हुन्य स्थानं स्यानं स्थानं स्यानं स्थानं स्थानं

र्षपास्य—धार्णन नामये जो भारतस्य निहार-बंदास स्वाम्या है स्व प्राप्त का मान्य केली नामके प्रतिव लाग और नवस जोर लोका संतम्म निवार वारण्ये कार है। बाहुन गरियारी बंदास पूर्व प्रतिवान पूर्व-पंदार तोर दिला पहारी जंतान का संग के या, पूर्व पाता (बन्द) और तम्ब व्यक्ति मी दशने वृत्ति की विरार को स्वीदनानी विकरी युक्त समतट भी इसीका एक भाग या । पुण्डूवर्यन, पुण्डूनार या महास्यान-गढ़, ताम्रिटिप्त (तामलुक), कोटिवर्ष, वर्षमान (वर्देवान) नादि इसको प्राचीन नगरियाँ यों । जैन अनुश्रुतिके २५ है आर्य देशों तथा १८ राज्यों में वगदेश और उसकी राजधानी ताम्रलिप्तिकी गणना है, किन्तु बौद अनुष्यृति-के सोलह महाजनपदीमें इसका उल्लेख नहीं है। वेदोंके आर्य मी वगदेशसे सर्वया अपिनित ये। उत्तर वैदिक-कालीन साहित्यमें उसे अनार्य-देश नहा है, ५वीं-६ठी शती ई० पू० के धर्ममुत्रोंमें तो इस म्लेच्छ देशमें जाने. वाला आर्य महापातकी समझा जाता था। डॉ॰ मण्डान्करका मत है कि इस प्राच्य देशके छोग जैनों-द्वारा ही धर्षप्रयम सम्य वनाये गये थे। अत मध्यदेशीय सम्यता और घर्मका वग देशमें प्रवेश स्रमण संस्कृति और जैनघर्मके रूपमें ही सर्वप्रयम हुआ। प्रो० राखालदास वनर्जीके अनुसार भी प्राचीन कालमें गगाके दक्षिणी भागमें जैनयमेका काफी प्रचार और प्रसार था। दक्षिण विहारके हजारोबाग जिलेमें स्थित सम्मेदशिवर पर्वत जैनियोंका सवमहान् सिद्धक्षेत्र है। इस तीर्घसे ही चौत्रीसमें-से बोस तीर्यकरों-ने निर्वाण लाभ किया था। यह पर्वत पारसनाथ नामसे भी प्रसिद्ध है, वीर्यंकर पार्व इस स्यानसे मुक्ति लाग करनेवाले बन्तिम तीर्यंकर थे। उन्होंने इस प्रदेशमें जैनधर्मका विशेष प्रचार किया था। आचाराग सूत्रके अनुसार वद्धमान महावीर भी वज्जभूमि, सुम्हभूमि और राउदेशमें वर्मप्रचारार्थ गये ये सीर वर्द्धमान (वर्दवान) नारकी प्रसिद्धि मी उन्हेंकि नामसे हुई। अन्तिम श्रृतकेवली मद्रबाहु पुण्ड्रवर्धनके निवासी थे। जैनस्यविरोकी गोदानगण शासाके पौण्डुवर्धनियागणका नाम भी इसी नगरके नामपर रखा गया था। जैन सायुओकी कोटिवर्ष और वाम्रलिप्त शासाएँ भी वगदेशके तन्नाम नगरोंके नामचे हो प्रसिद्ध हुईं। बौद्धप्रय बोधिसत्त्वाबदानके अन्तर्गत सुमगघाबदानमें बर्णित बनायिपण्टकको पुत्री सुमागघाकी कया प्रमाणित करती है कि ईसाके च मसे बहुत पहले ही, स्वय बुदके समयमें, पुण्डूवर्धन जैनधर्मका प्रसिद्ध केन्द्र या । एक अप बौद्धप्रय स्मित्रसम्बद्धे बनुसार की बचीकने जाते बहुत के निर्व ोको हुन्या वर्णका काम की की वर्शीय कारीने बदको करिया निरास विकास स

बैहुबाओं बन्हीं और बीओंडे सबस्यें बेंब अवस्थ बस्य बांबारामा क्षेत्र बना राग तहुररान्त जिल्लाहि बाहि बान्य शांवरी वृद्धे जारीके कीटेन क्षेत्रे राज्य वर्श वाली है जलात जुला-रोजीने विका वरते वर्ष मार्ले नामान्यवे विन्यु किया । बहारीएके बुवयवे लेकर बन्धीके बन्ध तर बार्ड-बिन्त ही इन देख्या बचान सत्रवानी जन्म न्यासीत्व नवर और नव्ये बंग बनारम् बनी गरी । नुरू वृष्टि बेरोडि बाब मान्डवे नांगु जिल राष्ट्रीतक बोर्चानोधिक कर स्थार्चारक क्षमानीको बनानेनै स्र बन्दरसाहरा प्रकृत स्थाप का विश्वका बाधितारी ६० वनरहे अनुनार्थ-हारा निरेतीको बावेसान बनेक बैन्धासारियो एवं बार्रावड कालिएके शक्तेच जरे को है। इस बावने बंबरेडके विका मार्गेजे केरवर्षकी ही प्रचानता थी। बची असूप नवर्ति वरी-वरी वैत विनार्थ की अन्य समेद स्थानीय जैन-केन्द्र विद्यार, विद्यारीड बीट जिनमन्तिर में । जनरितन निर्मेण बादुर्वोश पूर्व बिहार होता रहत वा और इत बानशीरे दास बंगलये बेंग्डम्सदस्य बत्तर दक्षिण पूर्व एरं प्रीपन बालवर्षके बची बालोंके बैनकेमाँने बानन्य बचा हुन्य था। बबुराके बैतानुरके बवधेरीने जाना कम् ६३ ई के एक विका-केसके पता पत्ता है कि राज़ (रामा-संचाय) के एक संबद्धीरने समुगर्दे बाबर एक बार्नेकर-मृतिकी प्रतिशा करायी थी । बातवानने गर्नकर शामको निमेचे बहारपुर स्थान (ब्रावीय साथ बोसपर) के निमन बट मोहानी नामका एक प्रविद्ध वर्ष विश्वास कैर विहार चा । विकलार बार्डोंडी पंतन्तरास्त्री बालाहे शृति इत बांदशन्ते अध्यक्ष है। मुनारेक्ट्र १५९ (बन् ४७८ ई.) के एक बाबबानरके विदि होता है कि इस बीरवापर्व एक ब्राह्मण बारहीको किन नृतिकी ल्याच्य करवायी की और अपनीकी बजाके क्रिय बान दिना या। वर्ष

अनेक जैन मन्दिर और निर्प्रन्य साधु देखे थे। वस्तुत पुण्डूवर्धनसे प्राप्त प्राचीन खण्डित जैनमृति, घटगाँव जिलेके सीताकुण्डके निकट चन्द्रनाय और सम्भवनाथके प्रसिद्ध प्राचीन मन्दिर, टिपरा जिलेमें कमिल्लाके निकट स्थित मैनामती और लालमाईकी पहाडियोंमें विद्यमान प्राचीन जैन मन्दिरोके खण्डहर, बाँकुड़ा जिलेमें बर्दवान और आसनसोलफे मध्य प्राचीन जैनस्तूपोंके ऊपर निमित ईंटोके वने एक सुन्दर प्राचीन मन्दिर जिसमें शिवके साथ तीयकर पाइवको प्राचीन मूर्ति अब भी विद्यमान है, छोटा नागपुरमें दूलमो, देवली, सुइसा, पकवीरा आदि स्थानोमें और उनके आस-पास भी अनेक प्राचीन जैन मन्दिर, तीर्थंकर प्रविमाएँ, यक्ष-यक्षिणियो-को मूर्तियां आदि अनेक जैन अवशेष मिले है। राखालदास बनर्जी. विमलचरण लाहा, अद्रोस बनर्जी आदि अनेक पुरातस्वज्ञों एव इतिहासज्ञों-का मत है कि वगदेशके विभिन्न भागों में विखरे हुए उपरोक्त जैन कलाव-दीप जो ईसवी सन्के प्रारम्भसे छेकर १०वीं-११वीं शताब्दी पर्यन्तके हैं प्राचीनकालमें इस देशमें जैनधर्मके व्यापक प्रमाव एव प्रसारके चोतक हैं। ६ठी शताब्दी ई० के अन्तमें, सम्भवतया गुप्त वशमें ही उत्तन्त, समाचार नामका गुप्तींका एक सामन्त उनकी श्रोरसे वग देशपर शासन करता था। गुप्त वशको अवनितसे लाम उठाकर उसने अपनी शिक्त ~ ~ *

समय पचस्तूर शाखां वाराणसी-नियासो आवार्य गुह्नन्दोके शिष्य-प्रशिष्य उक्त विहारके अध्यक्ष थे। इस शाखाका प्रसार नदसीर, मयुरा, हस्तिनापुर, चित्रकूट (चित्तीष्ठ), वाटनगर (महाराष्ट्रमें नासिकके निकट), कर्णाटक और तिमल देश पर्यन्त था। सम्भवतया हस्तिनापुरके पंचस्तूपोंसे इसका निकास हुआ था। वगालमें भी पचयूपी नामक स्थान अपने मूलकी स्मृतिमें इस शाखा-द्वारा निमित स्मारककी याद दिलाता है। ७वों शताब्दोमें चीनी यात्री हुएनसागने वग दशके समतट या व्याद्यतटी राज्यमें, पुण्ड्बर्धन और ताम्रिजिनमें तथा अन्य स्थानोंमें वाली । वसरा पूर या पीत नुपतिब बील्या बस्तंत्र या । वह रणें स्तेत्र वर्णकृत्यत्र व्यास्थल्य ही या लिन्दु बील ही यह स्वजन से बता और प्रत्ये करने प्राप्तक विकास माम्यत्रे वहीं या रहेण करें विल्या । वसने व्यास्थलियाच्यी वस्तंत्र वाल्य को साम्यत्रे वहीं वाले दिने और प्रेमेर (बेंबन) के वैलेग्ड्यरहेल्यो वस्त्रे वर्णि व्यास प्राप्त वेद्यस्थल वहूर व्यूस्ति या और बीलींग रहेल्य करने वस्त्री मृत्य और वील्यूक्तो ना विल्य पूर्व वीलेश स्त्री प्राप्त करनाथा दिने वहीं वहीं वहांने प्रमुख्य पूर्व वीलेश स्त्री प्रत्ये वस्त्र पुत्र वहां इसी वसने वाल्य या । वल्यूक्त इस्त्र विस्त विल्ये बाल पुत्र का इसी वसने वाल्य या । वल्यूक्त इस्त्र विस्त विल्ये

तो ह्येने रायांच्ये निरम्न स्थान मित्र वयाना । इत्त है के सम्बन्ध रायांच्यो नाम हुई और सम्बन्ध सब्दे ताल हो सत्ते सामगा

ती जाता हो जिला। बीड मर्नजा अवैध वंतरेहारों जाडोत्तर क्यारें हों हो पता वा जिल्हा वह एक पीम निर्माण हो सहाय जाता जो काडांग्रेस करणे हैं मह प्रवर्धक मान क्यार करना है जहां। तुर्णे-हामते मान्यत गर्यका भी मंत्रीय दुख्य मार हुआ हिन्तु व्यार्थ होत्रा कर्म करणा। ध्यार्थि करणे वेत मंत्री क्यारे क्यारे कार्यक्ति हांग्रा वह कर्मी के स्वत्रमान मंत्रीय क्यारे क्यारे क्यारे क्यारे कार्यक्ति हांग्रा बीट पीम कर्माय पुण्याद संगायने क्यारे हांग्रा क्यारे क्यारे

वकी प्रकार फाना-कूम्बर १ स्वयं नोतावने वहत्त्वपुरते एक रिक्षार वनगणाः १९ नास्त्रीय हविहासः : एक प्रति इसी समय प्रज्ञा नामक एक बौद्ध विद्वानं हुआ जो करियाम जन्मा. नालन्दामें पढा, उद्दोसामें बसा और पहीं योगाम्यास सिसाता रहा और फिर चान चला गया । यत्सराज प्रतिहारने गोपालको युद्धमें पराजित किया था। दूसरा राजा धर्मेपाल था। उसने ६४ वर्ष राज्य किया। मगध उनके साम्राज्यका लग था और उद्दीसाके भीमकर राजे उसक अधीन थे। राष्ट्रकृट ध्रुव और गोविन्द तृतीय तथा प्रतिहार वत्सराज, नागायलोक और भाज उसक प्रतिद्वन्द्वी थे। धमपालने कप्रीज विजय करके एक बार इन्द्रायुघको गहीसे उतारा और चक्रायुघको उसके स्थानमें बिठाया। इसी राजाने विक्रमशील विद्यापीठकी स्वापना को यो तथा छोमपुर (पहाडपूर) के जैन अधिष्ठानको नष्ट करके उसके स्थानमें बौद विहार और मन्दिर बनवाये थे। इसने अपने सिक्फोपर भी धमधक आदि बौद्ध चिह्न अंकित कराये । ८२४ ई० में उसकी मृत्यु हुई और उसका पुत्र देवपाल (८२४--८७२ ६०) राजा हुआ । यह पालवशका सर्वाधिक शक्तिशाली नरेवा या और कट्टर बौद्ध था । मुद्रगगिरि (मुगेर) को उसने अपनी राजधानी बनाया । घोद्वेतर जैनादि धर्मीके लगभग चालीस बढे-बढे केन्द्रोंको उसने नष्ट किया कहा जाता है। उसने अनेक बौद्धमन्दिर और विहार यन-वाये । धीमन और वोतपाल नामके दिल्पी उसके आध्यमाजन थे । उसने आसाम और उड़ीसाकी भी विजय की और श्रीविजय एव स्वर्णद्वीपके सदूरपूर्वी राज्योंसे सम्बन्ध बनाये। उसका नालन्दा साम्रशासन प्रसिद्ध है। इस वशका आठवाँ राजा राज्यपाल या जिसने एक राष्ट्रकृट राज-कन्यासे विवाह किया या । १०वीं शतीके प्रारम्भसे पालवश अवनत होने लगा या । ९५० ई० क पश्चात् काम्बोजोने वंगालपर अधिकार कर लिया जिन्हें महीपाल (९७८-१०३० ई०) ने निकाल बाहर किया। किन्तु राजे द्र-चालने उसपर आक्रमण करके उसे पराजित किया। यह पाल-नरेश लोक-कयाओं और लोक गीतोमें बहुत प्रसिद्ध हुआ। उसका उत्तराधिकारी नयपाल था । इसने बौद्ध भिन्नु धमपालको और फिर अत्तिसको धर्म-प्रचा- पार्थ निवास नेता था कियूंची बार्ड नारत निवास देवको विवाह बेटाईची दूर दिया। उद्दारण विवाहमा प्रमाण कुमारणक राम्प्रमाण कर्मात क्यार प्रमाण हुए। में कर विकास स्वास्त्र के दूर देवित कर्मी कर्मी कर्मी पार्वकास स्वाह हो बारा। पार्थिने बीट-स्वास्त्रों बहुत होस्ताहर निवा बीट कर्मात क्षामा कुमार्ग्य के मार्ग्य हमारा कर्मी कर्मात क्षामा के स्वाह कर्मात क्षामा क्षाम क्षामा क्षाम क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षाम क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्षामा क्

वेक्ने (यो बानवराया वेक्डवी वैशानाव बीरहेवडी जानावरें-डे प्र) इब मेंग्रेफी स्थापना की । बचका पूत्र हैक्क्क्रेस स्थूरबंद बालारें तारी-परका बावक ना १ ११मी बडीवे अन्य एक वेब-रावे शक्त-वरेबोके कन्य रहे । तपुररान्त तेल-गरेख विज्ञानेत स्ततन्त्र हजा, वास्त्रीके हास्त्री वंतास्त्रा स्टूबान क्रेमकर बक्ते माली प्रतित सहायी और ४ वर्ष राज्य किया। वह व्यक्तिको सक्तावर्गन भोडमेनमा निम ना । स्वक्ते वसार्गनाणी शस्त्राक केम (११ ८-१९ हैं) में बांबाकमें कुळीन प्रचानो कम दिया। प्रशन्तर करवारीन प्रवय राजा हवा वह वीत्रवेशिकके स्वतिता कर्नेर भीर रक्तपुरके केळक करि दोनोक्त मामस्रात्म वा) बक्के शेर्ट व्यवस्थ केन क्रितीयको ११९९ है में महत्त्वर दिन व्यक्तिवार क्रिकरीने पराकृत करके बंबाकार अधिकार कर किया । केमनंबके राजे कटर केर हैं। क्लके क्रमार्थे बोहरूमें बंगाको क्लै-वर्ग द्विधेदित हो नदा गोर स्मी वैश्व को बाना वजीवी स्टान्स हो को । प्रवासन राजसन स्टार्स मानिका की प्रचार रहा । चंद देखका आबी वर्ष दव दवदे परिकारके क्या । चैनवर्मना अस्तित्व वी ११वी-१२वीं क्ती दक्ष क्या खार, ल्या क्यके बनरान्य केवल बोर्ड-के नरियम-बारतीय केवी और ब्याजीरवीके क्यों ही शंगावने कीने वीमित पर नने और पहते वर्क करने। सिन्द क्षेत्र केलके विविध्य कार्योमें विकास कराज और बाज की प्राचीन क्यानी कालमाँ (वैभाँ) का स्वरण विकास है ।

बृहक्तर माराज-निमानको काराज बाळीन राजुनी बीवार्र

देशको नैसर्गिक एव प्राकृतिक सोमाओंसे वहुत अधिक सकुचित हो गयो हैं। अँगरेजो शासन-कालमें भारतने अपनी वैज्ञानिक सीमाएँ प्राप्त कर ली थी किन्तु उस समय भी अफगानिस्तान और क्रन्दहार भारतवर्षमें सम्मिल्ति नहीं थे, जब कि मध्यकालमें मुग्रलोके शासन-कालमें वे भारतीय साम्राज्यके ही अग थे। उसके भी वहुन पूर्व यदि मौर्य युगसे लेकर गुप्तकाल पर्यन्तके भारतीय इतिहासपर दृष्टिपात किया जाये तो उस समय भी किपशा (अफ़ग़ानिस्तान) और गाधार (क़न्दहार सथा ईरानका पूर्वीमाग) भारतके ही अंग थे। इतना ही नहीं, प्राचीन कालमें वलुचिस्तान. सीमान्तदेश, कश्मीर, तिब्बत, नैपाल, भूटान, आसाम, अराकान तो भारत-वर्षके लग समझे ही जाते थे, वर्मा (प्रह्मदेश या सुवर्णभूमि) और लका (सिंहरु) भो मारतके हो अग ये। इनके अतिरिक्त मन्य एशियाके विभिन्न भागामें यथा काशगर, खोतान, यारकन्द आदिमें भारतीय राज्य एव उपनिवेश स्थापित हुए थे। उसी प्रकार सुदूर पूवमें वर्गा, मलाया, स्याम, हिन्द-चीन, जावा, बाली, बोर्निओ आदि प्रदेशी एव द्वीपोंमें भारतीय राज्य एव चपनिवेश स्यापित थे। भारतीयों-द्वारा अनेक प्रदेशोंके आदिम निवासियों-का पूर्णतया भारतीयकरण हो गया था। भारतीयराज्यो और उपनिवेशोंके अतिरिक्त चीन, ईरान, अरव, मिस्र, यूनान, रोम आदि प्राचीन सम्य देशोंमें भारसीय धर्म और सस्कृतिका प्रकाश अभूतपूर्व रूपमें फैला था। समस्त ससारके लिए भारतवर्ष धर्म, सस्कृति, विद्या और ज्ञानका प्रकाश स्तम्भ था। दूर-दूर देशींसे सैकडो-हजारोकी सस्यामें विद्यार्थी भारतीय विश्वविद्यालयों में विद्या-प्राप्तिके लिए आते थे। अनेक विदेशो तोर्थयात्राके मिस आते थे और स्वय भारतसे अनिगनत विणक् व्यापारी, साहसी बीर विद्वान् और घर्मोपदेशक दूर-पूर विदेशोको जल और यलके मार्गोंसे जाते थे। इस प्रकार उन्होने भारतवर्षके न्यापार, न्यवसाय, धन समृद्धि, शनित और प्रभावको बढ़ाकर बृहत्तर भारतका निर्माण किया था ।

बृहत्तर मारतका यह निर्माण प्राग्ऐतिहासिक कालमें ही हो गया था।

बाबकी सम्बद्धानीको दना नीकवादीको निकी बामदानी प्रेरक में। क्तिवादी-बानताके बन्त होतेपर बारतमें वैदिक बस्पताना वरण और नैविक आयोंका प्रकार हुना । कह सबन बनेक प्रामार्ग कारक्षीय यातियाँ बचा क्षा बहुत यह बारि इपूर पूर्वके प्रदेशों एवं होगीने का बड़ी किन्तु बारतक्षेत्रे बन्द्रोने बनना बन्कन्त्र बनावे रखा । इतिहास कावमें नृहत्तर भारतके निर्माणका क्रम बहातीर एवं बहुके बाक्ते क्रमर क्रमण कर्मण रहा किन्तु इस प्रकार विभिन्न बृहत्तर बारत निवेत्रीमें स्थापित बारतीन राज्य और क्योगिक अम्मकात्र करता विकास रहे और अनेके बान बारको रावर्गिक व्यापारिक एवं बालारिक समान्य वस्त्रपर वर्गे रहे। ५९१-६डी बती हैं पू के बेकर पुरक्षमानोके बाडमन पर्वन्त बनानन वेड़ स्क्रम वर्षके सुरीर्व कामार्थ मारसम्बंधे प्रक्राण मैन और बीज में सीन वर्ष हो प्रवास ने । देवका कीई बार और देवकी बनदाका बोर्ड की वर्ग वा वर्ष देखा न वा निकर्षे इन दोनों हो वन्नेके वनुवाबी प्रयोक्त वंदवाय व पाने वादे हैं । बाल जिन स्वापारियो, बावकी बीटॉ, विदारों बीट वर्गोनदेशकोने बनरोत्तव बृहत्तर बारवना विशोध, निवास एवं बंध्याच किमा धनमें बका दीवों ही क्योंके व्यक्ति बर्मिनॉक्ट के । अदस्य बारतकांकि प्रकार पार्य-नाई की बारतका प्रमान बीट प्रकास किस कार्ये की भरेंचा न्यूनियाँ इन वीनी मनों एवं बनकी बंदक्रियोंना ही क्रसाबिक कार्ने अवास वर्षे जनाव गुर्वेश । यही कारण है कि जान बी क्य सुदूर पूर्वके विजिला प्रदेशीं होती तथा जम्म वृश्वितके विजिला बार्वीमें बका बुदायर बारको अस्त्रेतीका अनुकाराम किया बाता है बक्ता प्राचीन निक चीन ईंछन बनान बाज बाहिके बादिलाई बार दीन जवानको कोन की कारी है हो करें ही बनेदालय बलाविक नामार्ने हो बाह्यन बैन कोर बीड---एन रीमो हो वर्गो और स्थाने संस्कृतियोंके विद्व गृहिनोत्तर होते हैं । इसमें बनीइ नहीं कि गृहत्तर, जारतके निवित्त

बारकीय इतिहास १४ वर्ष

विश्वकारीको विकासर कम्पना हो सम्त्रक्षिताका सुनेर, अस्तुर एवं

मागाम अत्तन बोढ प्रमार हा सर्याधिक लिन होता है किन्तु इपका कारण यही है कि यद्यपि वृदत्तर मारठक प्रारम्मिक निर्माणमें समय हो बोढाको अपला जैन और ग्रंग वैरणवादि पुछ आग हो ये, किन्तु पालान्त्रमें धामिक वाधनींका मनुचित और अनुदार बना देनेके कारण उनना प्रयाध इस दिशामें शिथिल हो गया । गुण्नालके उपरान्त जिन छह-धात सौ वर्षों मारतीय शैन, धैष्णय और जैनधमींन धर्मशास्त्रा, पुराणों आदिक कारण उपरोक्त धामिक प्रतिवाधींसे समाजको जक्षण जा रहा था उभी कालमें यहाँ बोढिधमं हुनवेगस पत्तनशील था और बौढ लोग स्वदेशको छोड छाडकर बृहत्तर मारठके उक्त प्रदर्शों जा-जाकर वस रहे थे। मध्यकालकं मारतीयोंन तो अपने देशक इन बाह्य अगोका सर्वेया भूला दिया। अत बौढ धर्मको हा यहाँ सबस प्रधानता हा गया तथा धीन, जापान आदि बौढ धरोंसे हो उनका सम्बन रह गया।

मध्य एणियाकी प्ररात नदीकी घाटीक क्यरी भागमें एवं मारतीय उपनिवेश २र्ग दाती ई०पू० में ही विद्यमान था। छगमग ५०० वर्ष बाद पोप ग्रेगरीने भयानक आफ्रमण करने इस उपनिवेशका ध्वस किया था । एक अनुभृतिषे अनुसार खोतानमें भारतीय उपनिषेश स्यापित करने का श्रेय अशोकके पुत्र और सम्प्रतिक पिता राजकुमार कृणालका है। सम्मवत्या मध्य एशियामें यही सर्वप्रथम मारताय उपनिवश था। ४थी शती ई॰ के प्रारम्म तक काशगरमें हैकर चीनकी सीमा पर्यन्त समस्त पूर्वी तुर्किस्तानका पूर्णतया भारतीयकरण हो चुका था। उसक दिनिणी भागमें चैरुदेश (काशगर), चोक्हुक (यारकाद), खोतस्त (स्योतान) और चरुन्द (गानधान) नामके मारसीय राज्य ये। उसरी भागमें भक्क, युचि, अग्नि-देश और काओचग नामके राज्य थे। इन सबमें उत्तरका पुरिव और दक्षिणका खातम्न ही सवाधिक महत्त्वपूर्ण एव भारतीय सम्कृतिके सर्वमहान् प्रसारकेट ये। दक्षिणी राज्यामें मारतीयोंकी सक्या अधिक थी। इन उपनिवेशोंको प्रारम्भ करनेमें निजन्य साधुओं और बौद मिसुनाका ही

हाव क्वींक था। बारवें निवन्तीका रिहार फिक्कि होता क्या और बौद्धोंका बारार्क हर्व बादायम्य बड्डा नमा । इस राज्योंकी बोकवारा बाहुउ की भारतर्शने संस्कृतका की प्रकार का कहाँ कारतीय किरिका ही प्रकेत क्षेत्रा का तथा कारदीन भाग, वेक्तूका और बाक्सर-विकार जानाने नाने क्षते हैं । कुराराक्षके कररान्य बीजवन ही नहांचा प्रवास वर्त हो नगा और प्रमुख नवरहित निहारोंने करनीर कारिके बीज विद्यार्थी ही वर्षानाम होने क्ये । क्यारबीर नामक ऐसे एक बार्वमंत्रिक बीज विज्ञानका नाम इस काकने सन्तन्त प्रविद्य हुआ । बोटापका बोन्डी निहार बचका प्रमुख केन्द्र था । इन राज्योंके विशासी वर्ग निवासीकोंने जारतीय बार्स्टर स्वीतिय वादिश्य बार्डि विवयोंके इन्त पठन-समर्थे रहते थे। क्षेत्रापके निवट रामा-बर तथ्य दिशार एक बरवाना बत्तव वर्ष विधाय भेरत गर । प्राष्टाल, इंडरेन बार मारि जीनी बानियोंने इब निहार समा बनके रोक्तिरिवार्यों, बल्बरी बारिका कुमार वर्षन किया है। में धाम बीर दनका श्रीहकने दश्री कडी हैं तक बच्ची क्यानें विकासन थे। एका बोच और एक्टवर्ड स्टी-नस्त मी वर्तनक में, ने निम-पिन्नी की हो नाते में । ने कीन भारतीय होंगैंड, वित्र वृत्तं स्थापन नारि क्याओंके तेवी जीर तथनशक्त की थे। बीड वर्षकी प्रचलता और प्रमुचना होते हुए भी चीनी नदीवर्रोके बुद्धन्तीने वस शाय में इन बरेफीरे विकास जैन बाहुबीका बतितार की पदा बूनिय होता है । एक बैन मितरी एक अन्य बैन बनक्षेत्र को धकनार करने वाले है। कारतार्क नामी पालनायका यान क्या हवा प्रतास होता है। मनेक पुराशस्त्रीका रेस है कि मैनवन की बाक्सेनकार्क्य इस ब्रोसीने बबस्य गाँवा चा । क्रिया करिया (बक्ष्यानिस्तान) भाग्यार (स्वास्थ्या और क्रमहार), देशन अरब अम्बप्रक्षिण साहितें जैनक्षेक्रे क्रियो-स-क्रिको समये क्रिको-स-विको समय रहोपसेके सिद्धा प्रत्ये आहे हैं। योजरेसके बाबो सर्वेद प्राचीन वर्षोत्तर क्षत्रा क्यारकामीय बीद वादित्सवे स्तेत बैनतुषक बीध्य निकर्ष हैं। बैनॉकी क्रोडी-पीसी परितर्श की इन देवॉर्ने भारतीय इतिहास एक शीर ***

मध्यकाल तक रही प्रतीत होती हैं।

सिहलद्वीप और रत्नद्वीप-सिहलद्वीप या छमाम विद्याधर-वराकी अरुक्ष जातिका निवास था। भरत चक्रवर्तीने इस द्वीपको विजय करके वहाँ जैनवर्म और श्रमण संस्कृतिका प्रयेश किया वताया जाता है। एक अनुश्रुतिके अनुसार भारतके पूर्वी भागस वरराज नामक असुर सरदार ऋझ, यक्ष, नाग आदि विद्याघर जातियोंके व्यक्तियोका लेकर लका गया था और उसने उस द्वीपको वसाया था। रामायण कालमें ऋक्षवशी रावण लकाका महापराक्रमी नरेख या। जैन अनुश्रुतिके अनु-सार रावण और उसका बदा जैनधर्मी था। महाभारत कालमे श्रीष्ट्रण सिंहल जाकर वहाँके राजा इलक्षणरोमकी कन्या लदमणाको हर लाये थे और च होंने उसे अपनी पत्नी बनाया था। पार्स्वनायक तीर्थमें करकण्टू-नरेशने भी निहलकी यात्रा की थी । महावीरपे समयमे उदीसाके सिहपुरसे विजय नामक एक राजकुमार लका पहुँचा था और वहाँ उसने एक नये राजवदाकी स्थापना की थो। बौद्धप्रन्य महावंदासे पता चलता है कि ४यो दाती ई० प० में इसी वंदामें उत्पान सिहल-नरेश पाण्डुकामयने अपनी राजधानी अनुराधापुरमें एक विशाल जैन विहार और भव्य जैन मन्दिर वनवाया था। सम्राट् अशोकके समयमें लगभग २३६ ई॰ पू॰ से लकामें बौद्धधर्मका प्रचार प्रारम्भ हुआ और प्रधम शती ६० पू० से लका बौद्ध नर्मका एक प्रमुख गढ़ हो गयी। इसका श्रेय लकाके राजा वट्टगामिनीको है जिसने सन् ३८ ई० पू० में उपरोक्त जैन मन्दिरों एव विहारोको, जो उसके पूचवर्ती २१ रामाओंके राज्यकालमें अक्षुण्ण बने रहे थे, नष्ट करवाकर चनके स्थानमें बोद्ध मन्दिर और विहार वनवाये । उसीके समयमें सिंहलमें बौद्ध त्रिपिटकके सकलन एव लिपिबद्ध करनेका सर्वप्रथम प्रयत्न किया गया । सिंहल द्वीपका भारतीय-करण इस प्रकार अति प्राचीन कालमें ही चुका था और बादमें मी निरन्तर भारसयासी वहाँ जा-जाकर बसते रहे। जैन पुराणो एव कथा- प्लॉमें हिंदूब डीएके जनके विकास में प्रकारिक वर्षा पर डीपीयें केन ब्यापीयिके ब्यापीयें किए को-आपोरें दिव्यके वरिष्य प्रस्ता परें अपीया प्रसाद करना वार्याके अपेक करना कर नहें हैं। अपीया विकास के मां केन कर ने विकास अपिका दिव्यक्षीयों या पर बनाके तक निर्देश सिकार्ट हैं। इस्ता ही गाँव समझायों व्यापन को नामार्थ कर मीरिकतमणी पर विकासिक प्रमाद कि कि विकास कराजिय पासने कर बीमायों कामार्थ कर निम्म मां व्यापीय में स्वाप्त प्रमाद कर बीमायों कामार्थ कर निम्म मां कृष्ट कर करकी करना प्रमादका की पूर्व का प्रसाद विकास कराजिय

बारों—बारी वा बहुरेयाया हो वार्यन काव्ये पुरूषपृथि सहस्ता है, वार्यन स्वर दा। क्ष्म की कारीन कार्यों हो का । तीवेंच (सेन) इस्ते इस्त स्वर दा। क्ष्म की कारीने का बार्यों में है (क्ष देवाँ देवी कार्य स्वरूप को स्वरूप होता है। हिंदू वा बार पर्योंन कार्या की कार्य स्वरूप को स्वरूप होता कार्य कार्या कार्या कार्योंन कार्य-रोजेंचा में साम्यक्त बना पा स्वर्ण की की की की स्वरूप की हो। हो। इस्त की स्वरूप की है के इक बार-निकासने ही की हो। हो। इसे इस्तर की-निकासी मी की है। इसी कोई से स्वरूप करोंने कार्य-परित करों है कि से कार्य की की हो। इसी कार्य ही

सुनूद पूर्वके नकाय (शिरानार, स्वान (प्रायन्त्र)) दिल्य चीनकें अम्बोदिन (अम्बून) पत्र्या (स्वाम) त्या चीदिका (नुमान) केर्या इंग्लिट्स (रहारी ना बाना) नुप्त्रीत, वार्गिकमीत, रस्कीत, मूर्वादीत चारि कोची एवं शीनोंके वाल बस्कारीके वार्यक्लंबा वास्त्र्य अस्त्रम मार्गित है। वास्त्रपत्रम बाह्य स्वान्त्रम वार्मित वार्यक्लंबा क्षान्त्रम मार्गित हो। स्वान्त्रम चारित वास्त्रिके स्वेत पार्वके वार्मित वार्यके वार्यके वार्यके भारतवासियोसे भी उनका सम्पर्क वना रहा। कालान्तरमें व्यापारके उद्देश्यसे भारतीय वणिक् जिनमें-से अनेक जैन भी थे इन देशो एव द्वीपीके साय व्यापार करते ये और अपने जलपोतोंमें वहाँ जाते-आते थे। इस वातके अनक उल्लेख जैन-साहित्यमें पाये जाते हैं। कुछ भारतीय साहसी वीर अपनी भाग्य परीक्षाके लिए भी वहाँ जा पहुँ वर्ते थे, इनमें राजवंशी या सामन्तवशोंके क्षत्रिय ही अधिक होते थे। कभी-कभी कोई ब्राह्मण-पण्डित या बौद्धिमिक्षु अयवा जैन प्रह्मचारी, श्रावक सादि भी वहाँ जा पहेंचते थे और अपने-अाने वर्म और सस्कृतिका वहाँ जाने-अनजाने प्रसार करते थे। सन् ईसवोके प्रारम्भके उपरात हो हम इन देशा एव द्वीपोंमें नये-नये सुरुपमस्यित राज्य स्यापित होते पाते हैं और उन राजवशीके नरेशोने जो अनुपम कलापूर्ण मवन, देवमन्दिर, नगर आदि वनाये, अपनी स्वयकी तथा देवो देवताओंको मृत्तियाँ निर्माण करायों, शिलालेख अकित कराये-उन सबके प्राप्त अवशेपांसे और इन प्रदेशोंमें प्रचलित अनुश्रुतियोसे वृहत्तर भारतके इन महत्त्वपूर्ण अगोके इतिहासका बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस वातमें तनिक भी मन्देह नहीं है कि इन प्रदेशोंका पूर्णतया भारतीय-करण हो गया था। व्यक्तियोंके नाम व उपाधियाँ, नगरों एव पर्वो आदि-के नाम, वेष-भूषा, आचार-विचार, भाषा, लिपि, वर्म और सस्कार सव भारतीय थे। भारतीय विद्याओं और साहित्यका वहाँ पठन पाठन होता था। भारतीय पौराणिक अनुश्रुतियाँ ही उन देशोंकी पौराणिक अनुश्रुतियाँ थीं। वहाँको कला भारतीय कलाते ही प्रभावित थो। अस्नु, भारतके साथ इन देशोका स्पष्ट राजनैतिक सम्बन्व कोई न रहते हुए भी उनका चसके साथ सांस्कृतिक एवं त्र्यापारिक सम्बन्य अवाध बना रहा। इन देशों में जो घर्म और सस्कृति प्रचलित हुई वर्र भैव, चैल्लव, जैन और बौद्ध चारोंका ही एक अद्भृत मिश्रण थो । कालान्तरमें वहाँ सर्वत्र वौद-घर्मकी प्रधानता हो गयी और अन्वेषकोंने इन स्थानोंके पुरावस्य एव इतिहासका जो भी अध्ययन किया है वह बौद्ध अथवा हिन्दू दृष्टियोसे हो

विचा है बैरपुष्टिरे जो बरप बाबनीय जनायन हो बस्ता है प्रमुख बचीतक दिनीका प्यान नहीं नहा है । दिन्तु क्या हैने काप बंदेन निर्ण है जो बक्त देखींने जैन जेम्न्"प्रेडे बनावडे नुबढ़ है-वना कान्युज परश बारिके बार्वावक बारतीय राज्यकाके जलवे बाद-मानी कामानीका पान बाना, बाम्बदशी बारतीय बंदर्शकी संस्थातक वीकामाँका बैन-वाँद्राय इतिहास बोट बनुपनिये बेंगीके काले शहरेय शाला जाना सुरक्तर बारतके शक बनी दरत वर्धी देशाने नद्य-शब्दे बचात्वा समाद तया वर्षति मारिका को नवार्व काम करता. देव या बुद्धके बिए बिन प्राथम जनकर सनेक मुलियोंका श्रीचंबर अनिक्षेत्रे बाच विचलन सन्दर्भ परित्र क्रियानेवीवे प्राप्ताय क्षत्र व अर्थकर्ते क्षत्र पास्त्रवदारण वर्ताः वैनवर्णी-का जानेक तथा जैन आस्थारमण विवासों तर्व कराविका प्रसेत, राज्यवर्ष बीर बहाबारमके बबावबंदि सन्त देवीने प्रवस्ति वर्षोदा बाहाम रहनाछ-की बरेजा बैन-सरररराके कवानकीके काथ ब्रॉवक निस्ट बाहुरन - एक-मीतिने प्रापः मन्त्वति बारिका प्रवास होते हर की विश्वीके विधेया-विकारीने बैन नोर्निका प्रयाप - वर्षारम्भ नदावीर निर्माण वर्षेरी महित कार्तिक नामके होता बीतापनी करतरका बनारीहपुनक ननाया बाता अपरि । यन देखोंने बहुमान्य तीन आचीन वर्षीने एक बीद्धारिक से दूसरे वैश्वपूर्व का प्राप्तप निवास के और वीतरे सन्ते का व्यवस्थ के को की रिक्रम, व्यवस्थान सम्म पर पानमें रूप परिंदर की मानीन होते हैं। बढ तीवाध वर्त बन्बरकता मैनीय ही वा । इब प्रवाद बुरक्तर वास्त्रके क्रियाँच, विकास एवं परक्षमने बाह्यची और बीहाँक बाय-बाय प्राचीय बारतके वैनॉले को बरवड़ मोनदान दिया प्रतीत होता है।

अध्याय ७

दिचण मारत [१]

मारतवर्ष प्राचीन कालसे ही उत्तरापय और दक्षिणाण्य नामक दो विभागोंमें विभयत रहता आया है। उत्तरमें विच्यपर्वतमालाको सतपुदा, महादेव एव मेकल नामक पहाछियों स्था नर्मदा और महानदी नामक निविधे द्वारा उत्तरापथसे विभक्त एव दक्षिणमें तीन और भारतीय महासागरसे वेष्टित प्रायद्वीपाकार पठार दक्षिणाप्य बहुनाता है। प्राग्-ऐतिहासिक कालने ही मध्यकाल पर्यन्त भारतका यह विद्याल भू-भाग भौगोलिक ही नहीं, राजनैतिक एव कुछ अंशोमें सांस्कृतिक वृष्टिसे भी उत्तर मारतसे प्राय पृथक् रहता रहा। विदर्भ, महाराष्ट्र, कोंकण, आद्रा, कर्णाटक, तिमल, तेलुगू और मलयालम दक्षिणापथमे प्रमुख भाग रहे हैं।

वैदिक आयों की दृष्टिमं यह समस्त भू-माग ईमवी सन्के प्रारम्मके मी बाद तक एक अनार्य अवैदिक देश रहा है जहाँ असुर एवं राक्षस आदिकांका निवास था। किन्तु जैन अनुभुतिके अनुसार मानयी सम्यताके प्रारम्मसे ही इस प्रदेशमें सम्य विद्याधरोंकी नाग, ऋक्ष, बानर, किन्नर आदि जातियोका निवास रहा है जो कि ध्रमण सस्कृतिको उपासक थीं। ब्राह्मणीय अनुश्रुतिके अनुमार अगस्त्य समप्रथम आर्य ऋषि थे जो विष्याधलको पार करके दक्षिण भारतमें पहुँचे थे, परसुराम भी वहाँ गये कहे जाते हैं। अपने वनवास-कालमें रामचन्द्र उधर गये थे और वानरोंको सहायतासे लवाके राक्षसराज रावणका अन्त करनेमें सफल हुए थे। इससे प्रतीत होता है कि रामायण-कालके लगभग वैदिक आयोंके

री-एक होते होते क्यांश्वेस कार्यकारको स्थापन हो त्ये वे वित्त हा कार्यने समुद्रवरीने जाराज तथ कोई विदेश प्रवर्त नहीं हुई और बाँग्यासार मांबरादन अर्रेटक क्षेत्र अगाउँ ही बना रहा । दूनरी और जैन मनुचरित्रे करना शामावन-साबवे जी बहुत वृद्देने बहबरेगुढे बानुवी और राजवा पपरे रिहासरीय बदाय मन्दर्भ रहे थे। प्रथम ब्रांचरर नापमारेकी विश्वपार्थके बांतवाने दिवस गाँव विगयि बार्वि दिशावर-गरेशीने वाय विश्व ह मा का मादल्य भी दिले से और दलने बत्तानुस्तके बायबीके बाय हो-बाब बैनवर्धना प्रचार शिक्ष का अस्त बाउनशीने क्रांकी सिनावरने र्राज्यके की समान दशीको विजय किया था। जरहरे छोटे आई बार्यांकरो शास्त्रका शास्त्र निया वा को एक समुमृतिके करवार स्टिपर्वे ही रिवत का कारकांकती शिवाल मृतियाना निर्माण और कारती बच्चम्य बण्डनत्वा रही नारवने बीतच मारत्वे इत्त्री व्यवित रहाये बागी है। शामान्य-राजने बरोम्याके सूर्वनंती स्थारण साम न्यान्य बार्डि व्यक्तिवादर्श्व ब्रह्मंत्रय इनुवान और वार्ति नृष्टीय क्ल बीच आरि बानरचंदी किराबर दया संबादे ऋष्यंथी राजन जैपनार आरि कर ही बेंद मुन्दि क्यामण बक्त को है। वे विश्वादर कोन देशांकर कार्रिस्टारी कोर्टिक विद्यामों एवं क्यामी तथा क्या और बीतिक व्यक्तियें बत्तरात्त्वके मानवी सवता वै.सक आवीते नहीं अधिक बडे-बडे वै निमा बाल्यारिकड बसर्थि वर्ष, दश्रम और विशासने सुन्द्रीने बानसीके तुर बोर्चकरोके बानुन अस्ता बानुक सुदाया का और करके विकादने

हासपाद हरित कारफा मार्गन करते हैं और उतिक कोरोंनी समर्थ मीर करित हो गूरे मारावर के मार्गन कीर मार्गिक किया करते हैं भीर इस समय्ये बनामकारों की मोराट करते हैं हि हरित बार्रें साह्यम राज्यकों के कैमाराट करते हैं हि हरित बार्रें साह्यम राज्यकों के कैमाराट करता मार्गाट के बार्य में मार्ग की 1 मार्गुट राज्यकों करता मार्गाट मार्गिक हिस्सा के साहये कीर मार्गुट राज्यकों करता मार्गिक हिस्सा । इस प्रति

क्लुपानी बने में । उन्ह नियानरोति मंधाबीने लिए ही जानमित इति-

तीर्यंतर सिरिष्ट्नेमिने दिसिणायमं स्वधमंका विशेष प्रचार किया या।

उनके भवत हिस्तिनापुरके कुठवारी पचपाण्डव अन्ततः राज्यका परित्याग

करके दिसिणकी आर चले गये ये और वहाँ जैन मुनियोंके स्पर्में उन्होंने
दुर्बर तपस्या की यो। उनी समयसे सुदूर दिसिणके पाण्डय देश, पवपाण्डवमलय, मदुरा आदि स्पान प्रसिद्ध हुए। पार्व्वनायके तीर्भमें प्रसिद्ध
जिनभवत करकण्डु दिसिणायके ही एक प्रमुख नरेश ये। तेरापुरको
गुफाओं प्राप्त पुरातात्विक अवसेषोंसे करकण्डु चरित्रको क्याका समर्थन

होता है जिनके कारण करवण्डुको एक ऐतिहासिक व्यक्ति माना जाने छगा
है। महाबीरने भी दिसिण दशमें प्रमं प्रचारार्य विहार किया या और
दिसिणायके हेमांगद देशका जीव घर नरेश उनका मक्त हुआ या।
दिमी प्रकार यशोघर, नागकुमार आदि भी प्रसिद्ध जैनधर्म भवत दिसिणी
राजपुरुष थे। इन सत्पुर्योंकी चरित्रगायाओंका तिमल, कप्नड, सस्तृत,
प्राष्ट्रच, अपन्नत, अपन्नत, आदि भाषाओंमें दिसिणायपर्में प्राचीन कालसे ही प्रचार

रहता आया है।

महायोरकी दिाप्य परम्तरामें उनके प्रधान दिष्य गौवम गणधरणे आठवें पट्टघर, अन्तिम खूतकेविल भद्रवाहु प्रयम थे। अपने समयमें वहीं जैनसम्के अधिपति थे। उत्तरापयमें हादशवर्षीय नीपण दुमिल पड़नेकी वात उन्होंने अपने निमित्तकानसे दुमिलके पूव हो जान ली यी। अव अपने वारह हुआर शिष्य सायुओंने साय उज्जैनी एव गिरिनगर होते हुए उन्होंने ई० पू० ३६६ में दक्षिण देशको बिहार किया और कर्णाटक देशके एटवप्र नामक पर्वसपर म० स० १६२ (ई० पू० ३६५) में उन्होंने धरीर त्याग किया था। इसके लगभग ५० वर्ष पूर्व ही मगध-नरेश नन्दिवर्धनने दिलापरेशके इस माग (नागरखण्ड) को विजय करने मगध साम्राज्यमें मिला लिया था। यदवाहुके इतने वढे मधको छेकर वहाँ जानेसे यह वात स्वत प्रमाणित है कि उनत प्रदेशमें जैनसमी प्रवृत्ति और जैनोंका निवास उसके पूर्वसे हो था। यदि ऐसा न होता तो इतने जैनमुनि एक साथ उस ओर

प्रसास म काते । एन मुनिश्के सींग्राको साहः क्यो सामुनिश शिव्यु सारने गरी है। बाराहुरी मृत्युके कराला संपन्ने क्यो रसावणे सामा स्रास्त केंद्र स्वरावणा सी वर्गीत र्रावणांके स्वराण स्वरोक सावित्यो कर्णने स्वराय सारकार तिव्य सिद्धा । स्वराणांक नदेक सींग्राकोंक कर्णने स्वराय सारकार से प्रतिकार क्यालिक सामान प्रतिकार क्यालिक स्वराय भी पूर्वित से स्वरावणा भी प्रतिकार सारकार में स्वरावणा से सावित्य क्यालिक स्वराय भी प्रतिकार क्यालिक स्वराय में स्वराय क्यालिक स्वराय से स्वराय क्यालिक स्वराय से स्वराय क्यालिक स्वराय से स्वराय क्यालिक स्वराय क्या

स्वारम् अपनेशं सामीरानाय नार्वाप्त प्राचीत सुपने पूर्वं सामी से अपने सन्त प्रतान स्वारम्य अपने प्राप्त सुनेश समृद्धाने समुद्धान प्रतान प्रतान स्वारम्य अपने हुएत होने रूपा। निर्मुद्ध यान्त्री निर्मेण रिप्तमा सामु सामानेश सेक्टम जोर नार्वित्व मुक्तरो सामान्य सामाने से तीर प्रतान हिल्ला प्रतान काराय्य पीत्रम्य स्वारों ने से करते निरम संपत्त सेता रहते हिल्ला स्वारम काराय्य पीत्रम्य सुन्धानिक राज्या सामाना स्वारम्य स्वारम्य सामाने स्वारम्य सामाने सामान सामाना सामाना सामाना स्वारम्य सामाना सा

स यह बना । जानाहुकै तिधानाचार्य साहि सम्बन्ध (१९५४र है पू १९५-१८४ के बीज हुए। उसके सम्बन्ध साहुकें त्रकों १५ पूर्विन्ते १ पूर्वेच्या सम्बन्ध हो। वेष चार पूर्वेश हर देश हो साम रहा। स्टब्स्टर में साहुकों १८५-६१ है पूर्व हुए, उसके सकती सभी पूर्वेश साहु एपदेश रह गया। भद्रवाहको पश्म्यराके ये गुनि निप्राय दिगम्बर घै कोर अपने सवको मूलगंब गहते थे। महातन्दित, चाद्रगुप्त मीमें, बिन्दु-सार और बदानने साम्राज्यमें दिशण भारतना बहुत-सा भाग सम्मितिय या। इन नरेशोने राजनैतिक या अप कारणोंसे दक्षिणयो पात्राएँ भो की प्रतीत होता है। चन्द्रगुष्तके विषयमें का यह अनुस्ति है ही कि उसने अपने आम्नावगृह भद्रवाहके समाघि-स्पान-श्रवणवेलगालमें जाकर तपस्या को यो और आचायके रूपमें जैनसपका तिहर भी किया था। अशोक्के शिला-छेल भी कर्णाटक देशस्य मस्की खादि स्वानेपि मिले हैं। अभारक समयमें ही कुछ बौद्ध प्रचारक दक्षिण देशों में सर्वे प्रयम पहेंचे और तबसे बहा बौद्धधर्मका भी धोरे-घोरे प्रचार होने रुगा । इसी समयके लगभग दक्षिणमें चौबधर्मका भा चदय हुआ प्रतीत होता है। सम्राट् खारवैलका दक्षिणय अनक राज्यांग राजनैतिक सम्बन्ध या। उसने दक्षिणापयमा भी दिग्विजय की यी और मृषिक, राष्ट्रिक, भोजक सादि राज्योंको अपने अधीन किया था । पैठनके सातवाहन बातकर्णीको मी उसने हराया या और पाण्टच देशका राजा उसका मित्र या । सार्येक्षके गमयस ही दक्षिण भारतका आधुनिक राजनैतिक इतिहास वस्तुत प्रारम्भ हीता है और उसी समयसे उस दशका साहित्यिक, धार्मिक एवं सास्कृतिक इतिहास भी । इस इतिहासके प्रारम्भमें हम यही पाते हैं कि सम्पर्ण दक्षिण भारतको प्रधान सस्पृति श्रमण संस्कृति थी। तमिल भाषाका सर्व-प्राचीन साहित्य सगम साहित्य है, जिसके प्राथमिक सूजक अधिकतर जैन विद्वान् थे। उसीके साथ साप, प्रयम दाती ई० पू० से ही, मधराके सरस्वती बान्दोलनसे प्रभावित होकर दक्षिणके हो जैनाचार्योने प्राकृत भाषामें भी आगिमक, आब्यादिनक, धार्मिक एयं नैतिक साहित्यका समन करना प्रारम्भ कर दिया था। सुदूर दक्षिणके विभिन्त भागोंमें सित्तन-वासल (सिद्धोंका स्थान) वादि स्थानोमें २रो-३री शती ई० पू० के ब्राह्मी लेखोंसे युक्त प्राचीन जैन गुफाएँ जैन घमके उपरोक्त प्रशार एव प्रधारकी पूजक 🕻 ।

सम्राट बारवेनके बररान्त विकासको देउनके बातवाहर्योका बरकरे हुमा मिनका पर्रम पूर्व अस्थानमें किया का जुना है। पुत्र से मठी में 🤻 भाग तक बाजधारन करिया करोंग्रीर स्त्री । इन बोनामें स्त्रीय मान्यके विधेयकर बैन इतिहानमें वर्ष बहस्यार्थ बटनारें हो या थीं। ई प् १७-१४ में बाचार्य भवराद्व द्वितीय शास्त्रांत्रके नव संबंधि पूर्ण साल बचा देन बंदी वर्ष पुर्वेष एक देवजाता जनवानु जहातीरकी विध्य-मरमायाँ रक्ते पहुरर के और राजिमान्य मुक्तमके सांवरति में । वनके बनय कर करराती जानोकनके बावजूर कैन निवर्ति साहिता जयनाओं उन्हों प्रारम्य नहीं हुई को बीए न बादबीका लंबकन ही हुआ था। इन मानार्वेंहें क्षेत्रपत करने दिल्लीको बच्च कार्लीक किए कुट वे थी। क्लेक स्मृद्धिया ब्रोहाचान (१४ र्र. न⊷१८ र्र.) बारो चर्मनाचारक ने । नेशान मीर किनकी और मी बन्ति पर्यन्तवासर्व निहार किया या। बारोहरू (बाडोर्डे) सरातके सकाली बहरालीये बैग पनवा प्रचार करलों वर्षे क्रियेत सरक्राता विन्ते । इन्हीं काषाओं संबंधारेंकी काहर्मुस्य निर्माण करनेकी भी अनुवर्ति दे वी जिनके कारक कान्यानाओं बरस्क होनेचाके काञ्चलवर्षे मोद्वालार्रको हो यक्त बंदका जुळ प्रदान जाता। इन्हेंकि यक्त कार्यान र्यांक्य नारको क्योरक देवने कुन्दर न्यावार्य नामके बावार्य में । बरकात दिल्लीकरी में बरका पूर कारते से किया पह बरानराने इतका सामाह कारत की था। मन्द्रके मानाई स्वारतनिको की जिल्हा अरस्यह क्षम्बन्ना स्वामी बुमार वा कुल्हकूत ग्रावश्व जाता वृद्द मानते थे। क्षम्बर बना इन रचानी नुनारने ही नर्जीतनेपालीका नामक शाहरा बन्चको रचना को थे। तन् २१ ६ तक इत बाचार्यका बन्तित धारा गाता है। बाचार्य कुन्यक्रमे अनुसं बाराने सन्तर किया और यह बचार क्या प्रसान ही बरम्यकार बाह्यस्य ८५ चारह बार्वोडी स्टब्स्ट रक्ता की । इनके बाल कारण माधारें है और बावाय-सवान है। बोर जैन व विरामी वर्ष

प्राचीन ज्ञात लिखित कृतियोमें-से हैं। तिमल भाषाके सगम साहित्यके भी ये प्राथमिक प्रेरकोमें-से थे। तमिल देशमें ये सम्मवतया एलाचार्यके नामसे प्रसिद्ध थे और तिरुवल्लुवर-द्वारा सकलित समिल भाषाके विश्वविख्यात नैतिक प्रन्य क्रूरल कान्यके मूल प्रणेता थे। ये कर्णाटक देशके कोण्डकृण्ड नामक स्थानके मूल निवासी थे। गुण्टकल रेलवे स्टेशनसे ४-५ मोलकी दूरीपर स्थित इस नामका गाँव अभीतक विद्यमान है और उसके निकटकी पहाडियोपर बनी प्राचीन जैन-गुफाओं में इन्होंने तपस्या की थी, ऐसा अनु-मान किया जाता है। नन्दी पर्वतको गुफाओमें इन आचार्यका निवास रहा प्रतीत होता है। इन आचार्यका मुनि-जीवन सन् ८६० पू० से ४४ ई० पर्यन्त ५२ वर्ष रहा । दिगम्बर बाम्नायमें कुन्दकुन्दका नाम भगवान महा-वीर और गौतम गणघरके साथ-साथ लिया जाता है। रामकृष्ण गोविन्द भण्डारकर, पीटर्सन अदि अनेक प्राच्यविदोके मतसे ये आचार्य अत्यन्त प्राचीन एव सर्व महान् जैनाचारों में प्रमुख हैं। अपनी साहित्यिक कृतियो-द्वारा इन्होंने सरस्वती आन्दोलनको सफल किया। इन्होंके समकालोन आरातीय यति शिवार्यने 'भगवती-आराधना' नामक महान् ग्रन्यकी रचना की, विमलसूरिने सन् ३ ई० में प्राकृत परमचरिउ (जैन रामायण) की रचना की, सन् २५ ई० के लगभग आचार्य गुणधरने कसायपाहर नामक आगम प्रत्यका चढार, सकलन एवं लिपि-चढीकरण किया, इसी समय (४०-७५ ई०) में गिरिनगरकी च द्रगुफामें आचार्य घरसेन निवास करते थे जिन्हें महाकर्मप्रकृतिपाहु नामक आगमका पूण ज्ञान था। इस समय म्नसधके विधिवत् अधिपति एव पट्टघर आचार्य अर्हद्विल अपरनाम गुप्ति-गुप्त (३८-६६ ई०) थे और क्षहरावेवशो महाराज नहपान उ उज्जैन एव सुराष्ट्रका अघिपति या तथा गौतमीपुत्र शातकर्णो पैठनका सातवाहन नरेश था । ६५ ई० के लगमग युद्धमें गौतमीपुत्र शातकणींसे पराजित होकर नहवान जैन मुनि हो गये ये और भूतविल नामसे प्रसिद्ध हुए। सन् ६६ ई० के लगभग सघनायक अर्हद्वलिने वेण्या नदीके सटपर

रिवर महिवारवरी (बांबान कोग्हारर द्यारका महिवासक्द ?) में इक रियास कृति-गानेकन किया और मुश्रिको किए मुनवीपणे सीर be be fer un unfr unterf femfen er fret e eit graufen. वे बाजार्व वरतवडे बामन्त्रकार जावार्व पुन्तरन्त्र और जुन्तर्गिको वनके नाम विरुक्तर केश बदा और बर्धनि इन दिल्ह्यूवरी की जानम जान बार्चे बाजान या अशान दिना और वर्षे निरिश्य करतेश। जारेस रिया । su neit mane i f f am thil galligit ugniten विक्रमाने कार्ये महाबोर-द्वारा कार्यक्रित आमगीरे दश महत्त्ववर्षे श्रीवरा भी बढ़ार एवं चंद्रमन हो बना : को ई में ब्रामार्थ वरवेनने रूप मीनिशह तरन सन्दर्भता की रचना की थी। हुन्दहुन्दके दिन्त अस-स्थापिते (४०-० 🐔) बंस्कृत भाषाचै तूम सैबोर्चे तत्त्वार्वाचित्रस्तूत्र धानक महत्त्व वर्ष वृत्रविद्धः बाचरी रचना की । श्रीवान देवत्व मृत्रवेषके नदर्शों रो इन प्रवृत्तिवान विश्वे वयुग्ने स्वयं सम्बद्ध और वयुग्तिके विराय बान प्रदेशीके निर्देश्य मुदर्शीता मी पूर्व चमर्चन और बहुबोच का वैनवंबको बसके निष् को बन्नसनीयै विवस्त कर रिका । वस ७९-८१ है में स्वयंत्रको विध्य-परमाधके मानको बालुकोने को बाद कर्मन वर्ष बुराप्तमें दे लिंड में दरेशानर बाजधारता कर केवर बारे-बारची महतीन-के पक्छ कर किया और पैप नंत्रको बीच्छित्रमत्, स्वेत्रक बारहात का दिनावर शास्त्राव नाम दिया । ७८ ६ में ही नरिषय आरक्षरे बहुनहरू वंबरी स्वारमा ही भूती यो और महाबयत पहलते. कार्यन्तर, अविधार करके बक-बरनका प्रदर्शन कर विद्या था। इसी बननके लनवन प्रतिक कार्याता केलन मूर हान पाकिसहन वर बाल्याहन बंधमें एक प्रक्रिय नरेय हुआ । ९१ वें में मोजनय तानक मैनानार्यते को कि बाराधीर बारार्ने विदार्वकी विष्य-परान्यकोंने वे बारतीय बंबको स्थापना सी । दिवाने बारि कामार्थ रियमार कोडामार बंबरेटका निवारक बरावेदे किय प्रसारपीय ध्रे में और सम्बक्तिके रखने में। प्रथम हिन्दन होनेशर

114

वालीय इविद्राप्तः एक रथि

चनके अनुयायियोने नया सम्प्रदाय स्थापित कर लिया। सन् १०० ई० के लगभग आचार्य कुन्दकोत्तिने सकलित आगमापर सर्व-प्रयम टीका लिखी। सम्भवतया इनके विद्यागुरु स्वयं आचार्य कुन्दकुन्द थे किन्तु, दौसागुरु माय-निन्दि पट्टवर जिनवन्द्र थे। इन कुन्दकोत्तिका ही अपरनाम पदानिन्द रहा प्रतीन होता है और ये ही नि दसघको पट्टाविकमें जिनचन्द्रक पदचात् चिल्लिखत हुए है। उपरोक्त विवरण तथा समे उल्लिखत जैनगुरुआंके इतिहामसे यह स्पष्ट है कि ई० सन् के आगे-पीछेकी दोन्तीन दाताव्दियोमें किल्मसे गुजरात-सुराष्ट्र पयन्त और मध्य भारतसे लंका पयन्त सर्वय जैनघम और जैनगुरुओका प्रसार या। गिरिनगर, अकुलेश्वर (भडोच), महिमानगरी, वेण्यातट, वनवास देश, द्रविद्द देश, कर्णाटक आदि विभिन्न भौगोलिक नाम उस सम्बच्में वार-वार आते हैं।

इन शताब्दियामें दक्षिणापयम सवमहान् शबित आन्ध्र सातबाहनोकी थी. परिचमी मागमें चष्टनवंशी शक क्षत्रपाका अम्युदय या और सुदूर दक्षिणमे चोल, चेर, पाण्डच, सत्यपुत्र, फेरल आदि छोटे छोटे आदिम राज्य थे। तमिल-भाषाका प्रथम सगम (सघ) इसी कालमें हुआ और उसके प्रेरक द्रविडदेशके फुन्दकुन्द आदि जैनगुरु ही रहे प्रतीत होते हैं। ये तमिलराज्य समृद्ध और शान्तिपूर्ण थे, रोम आदि सुदूर देशोंने साय भी उनका समुद्री व्यापार वढ़ा चढ़ा था। प्रथम शती ई० के उत्तरार्धमें एक पाण्डच नरेशने रोमन सम्राट् आंगस्टसके दरधारमें राजदूत मेजा था। उसी कालमें घोल-राज्यमें पाण्डुचेरीके निकट एक रोमन व्यापारी कोठी भी स्यापित हुई थी। तमिल देशोके राज्यवशोंमें नाग प्रभाव अधिक रहा प्रतीत होता है। दूसरी शतीमें सातवाहनोकी शवितका उत्तरोत्तर हास होता गया और दक्षिणापयके द्यालाण्यमें सातवाहनोंके प्रतिनिधि कविषय नागमहारयी शासक थे. एस कुछ स्वतन्त्र नाग-सत्ताएँ थी । इन नागराज्योने मिलकर एक फणिमण्डल (नागमण्डल)की स्थापना की थी। दक्षिणी नागराज्योका यह प्रक्तिशाली संघ था । पेरिप्लसके समय (८० ई०) तक पूर्वोत्तरका नागराज्य अविभक्त

या रिन्तु राविती (१५ ई.) के बचर शोधीनक्यानन शोकग्रमाने पुरुष् को स्था । ऐसी बढीके आरामने बर्रवृत् (बरसपुर-वर्तनल विश्विराक्ति) वा नास्त्रीय क्षीतिष्ठवर्वन क्षेत्र वा । वह राज्य धरिन धानी या । वयका करिष्ठ तुत्र कान्तिकर्मन व्या निवका क्रम १२ ई के सम्बन्ध हुना च्या । कुनाएस्स्याने ही बक्रावर्तिक बानक बैनापार्नेक बीक्षा केकर वह बैक्कुरि हो नया और समन्त्रक्त बानके रिक्सल हुना । क्षम्तवारी मुख्यसम्बद्धे ही होग्डेरवरस्य बोक शामके नवस ही मुख मा और समयागाचा शार्थानक मुनियोदन कांचीमें ही बीता प्रस्तित है अरदे-बारको कांचीका याम स्वस्ती कहते थे । कांबीके बहारबी स्वन्यतान की राज्या पुटुराकरके विशाही की । अका मानधातकी मृत्युके नार परकरके पुर विरुद्धानी कांचीने भरवन बंदनी स्थानना थी। दरवदाना इद्योचा नाम डीम्प्रेमल इमल्पिस भी मा । शायम देवके राजा इस पासरी मैन्द्रप्राध्याल और दर्मशायनकानम् थे । भेरराज्यका स्थानी वैपेयरम् था यो बार राश्चिमानी पर । योग देवपर शारिकत जोकमा राज्य या. बहु राजा भी बुद और बान्ति दोनीने ही नहान या । इब करनवें संकाने प्रवाह प्रवश्नमा प्राप्त था। बनदान देखकी करहाटक मनदीवें बाहवाहर्गी-के बाद क्षमा बायराने प्रथम पंत्रकी बीच बाक्षा थी। बादव प्रथम प्रदेशन वसर्पातिकारी १५ 🕻 वे करमन किनल्य-४जी वा । श्राकार्य क्षतस्त्रका हे बार्मान्यत केन मनुस्तिका समा विषयोगी बड़ी व्यक्ति प्रतीत होता है। अल्बर रोग ही बानेपर पति पासके दिवासको सामार्थने रीनकी बपवान्ति को यो मीर लयमनस्तोत्रती रचना-दास बच्चे बोधवब वर्ष बार प्रशास व वक्कार विभाग था। चक्कान राजा विश्वकेटि और क्क्का थाई क्रियाला मामानीक विश्व हो क्ये बार बीववृति हो वदे । मृति क्रियमोनि ही क्रायांन्तुनयर राजवाका गामकी वर्गप्रयय शीका कियों की । निरक्तिके प्रत्याद क्षापन पुत्र श्रीकृत राजा हुना। वस्तव्यर विश्वकार्यन और किर १५८ है के नव्यव पण्याकी अधिकात

राजन् मयूरवर्मन हुआ। कदम्बोंकी अनुश्रुतिके अनुसार वे हारीतकी सन्तान मानव्य गोत्री ब्राह्मण थे। सम्भवतया नाग-ब्राह्मण मिश्रणसे उत्पन्न वे ब्रह्मक्षत्रिय थे। मयूरवमनके समयसे ही कदम्ब वशका उत्वर्ष हुआ।

इम कालमें जैनसपमें स्वामी समन्तभद्र (१२०-१८५ ई०) महान् वादी, वाग्मी, तपस्वी, योगी, धर्म-प्रचारक तथा ग्रन्थ प्रणेता थे। दक्षिणी फिणमण्डलमें स्थित सरगपुरके घोलवशी नाग नरेशके वे पुत्र थे और काची-के नाग महारथी तथा प्रथम पल्लव राजे एवं करहादकके प्रारम्भिक कदम्ब राजे उनके भवत थे। ये आचार्य द्रविह सघके मूल प्रवर्तकों में से। चन्होंने पुण्ड्रवर्धन, पाटलिपुत्र, वाराणसी, ठनक, सिन्ध, मालवा, विदिशा. दशपुर, काची, करहाट आदि सम्पूर्ण भारतवर्षके तत्कालीन सभी ज्ञान-केन्द्रोंमें भ्रमण किया और अन्य धर्मीके विभिन्न विद्वानोंके साथ सैकहो सफल शास्त्रार्थं किये थे। बौद्धाचार्य नागार्जुन उनके समकालीन एव प्रति-स्पर्धी थे। इन्हीके समकाछीन मथुरा सघके प्रसिद्ध आचार्य नागहस्ति और उनके शिष्य वह यतिवृषभाचार्य थे जिन्होंने कसायपाहुड आगमपर चूणिसूत्र रचे और १७६ ई० में तिलोयपण्णित नामक महत्त्वपूर्ण प्रन्थकी रचना की थी । इन्होंके जीवनमें सन् १५६ ई० में महावीरकी उस शिप्य-परम्पराका अन्त हुआ जो परम्परागमके साक्षात् ज्ञानकी मौखिक द्वारसे सरक्षक थी। समन्तमद्रके ही एक शिष्य आचार्य सिंहनन्दिको सन् १८८ ई० में दिहग और माघव नामक भातृद्वयके हाथों कर्णाटकके प्रसिद्ध गगवरा और गगवाडि राज्यकी स्थापनाका श्रेय है।

इस प्रकार दूसरी शतान्दीके अन्त तक दक्षिण भारतमें पाण्डभ, चोल और चेर नामक प्राचीन छोटे छोटे तीन तिमल राज्योंके अतिरिक्त पूर्वी तटपर तीण्डेयमण्डलमें काचीका पल्लब राज्य, बनवास देशमें करहाट और सदनन्तर वैजयन्तीका कदम्ब राज्य और कर्णाटकमें गंगवाधिका गग-राज्य—ये तीन प्रसिद्ध नये राजवश स्थापित हो गये थे। इनके अतिरिक्त दिक्षणापयमें सातवाहन शिवतके पतनसे लाभ उठाकर दक्षिणके विभिन्न

क्षेद्रै प्रकाराओं किन्नु अक्सरादी साथ स्वारित हो नहें है। वी की बागने राष्ट्रवारा यशियाची थे। बागारेखने द्रश्ताहनाया या या। नावित्र को धानदेशा अवस्था । वर्ष आसीर्तना शाव रता । तरकार बहो हा दि कि वर्ष भागाद रहता राज्यिकों हा जावित्रव हुना मौर श्रीवे ६दी द । पर्वाण वे बहा राज्य करते है। ५६ी छन्तीवे पालस्वीरे बारके बारम गाँकक बीमतावी शल्य हुए और किर देवी महाने राज्युटीके करने उनका कन्यान हता। अब आने क्रीने है की धारी बस्ना बाँचय बारतका हतिहाल कताब बन्नव वंश बालूसा और राष्ट्र कृद राज्यंक्षांका हो धीकाल है। पत्चप र्यत-पूरी तरदर दक्षिण बारहरे तकिन बरेप (वर्तगा न्यान राज्य) में १री वनी ई के बसाराईने शरबर श्रवणी स्वापना हुई भी। वासेदरत (कांके या वर्तिय काशी) इस चानसी चनवारी थी । यह बहेच वह बानने नोप्टेनस्थानन ना होत्ये लाह सहनाता था। बड़ा बाता है कि बीजिक्टर्नन बीचके एक नुबड़े काथ बन्तिएलपन् हीयको बाजी शावकनाकै दिवाह कारत्यने बराब बुट्टात्यन मानक स्पत्ति दम बंधवा सन शतकार वा । सन्त्रीक करद शकन नहारचे स्टब्स नारके कलतानिकारके मध्ये की एक प्रदेशका राज्य जिल्ला था । क्यान gu fergen eines auer nan upregu rint mit meb nit erm. ant unignt, au geein utt unntrifein ift egenti 411 प्राचीनक स्तर यत्रै बानांके शक्तीक करने हो रहे किन्तु ३० वर्धी है बालग्रीका हाल होनेगर वे स्वतन्त्र हो बचे और शास्त्र तामानके हुन्या तरीचे केकर बारव बानर वर्गन्त बमाच र्याबधी बावशर बाहीने अधिकार कर किया । सरक्षोंके मूच पुरुरकी मांदि हो स्थानी बक्तवाद भी कोविकवर्षन बीकड़े ही एक पूर में भीए स्थांको कांचीका निवासी ही मोरिया करते वै। बात मार्थन्त्रक परस्य राजाबाँदर स्थल्यी स्थलामा और स्थके मतर्वात दुव्याल एक व्य

मानीने पूर और मान मोहोंके भी कि बालामुन्द भी बहुमारी में ही?

घमका प्रमाव रहा प्रसीत होता है। प्रारम्भिक पत्लव राजाओंक, विदीप-कर शिवस्कन्दवर्मनके उत्तराधिकारी सिंहवर्मन प्रथमक प्राकृत अभिलेख भी प्राप्त हुए हैं। शिवस्कन्दवर्मन स्वय आगमेंकि टीकाकार जैनगुरु बप्पदेवका शिष्य या । पल्लवाका राज्यचिह्न मृपभ या इसीलिए ये वृपद्यज भी कहलाये। सिहवर्मनके उपरान्त वृद्धवर्मन और फिर कुमारविष्णु (३२५-५० ई०) राजा हुआ । सदनन्तर विष्णुगोप गद्दीपर बैठा जो समद-गुप्तका समकालोन या और जिसका उल्लेख उन्त गुप्त सम्राटकी प्रयाग प्रशस्तिमें काचेयक विष्णुगाप नामसे हुआ है। विष्णुगोपके उपरान्त इस यशका प्रसिद्ध नरेश सिह्वर्मन द्वितीय था जिसके राज्यके २२वें वर्षमें सक स॰ ३८० (सन् ४५८ ई॰) में पाणराष्ट्रके पाटलिक ग्रामक जिनालयमें जैनाचार्य सर्वनिन्दने झाना प्राकृत लाकविभाग ग्रन्थ पूर्ण किया था। यही सर्वप्रथम सुनिश्चित विधि है जो पल्टवोंके इतिहासमें अवतक मिली है। यह राजा जैनमर्म और जैनगुष्कोंका आश्रयदाता था। उसके उपरान्त दो-तीन राजा और हुए और सन् ५५० ई० के छगभग कुमारविष्णुसे प्रारम्भ होनेवाली पल्लव वशकी इस ट्रसरी शाखाका अन्त हुआ।

सिह्विष्णु पल्लव (५५० ६०० ई०) से पल्लवोंकी तीसरी साखाका प्रारम्म दुआ और इस धास्नाके समयमें ही पल्लव राज्यका चरम उत्कर्ष दुआ। सिह्विष्णुके आध्यमें महाकवि मारविने अपने जीवनके कुछ अन्तिम वर्ष विताये थे। सिह्विष्णुका उत्तराधिकारो महेन्द्रवर्मन प्रथम (६००-६३० ई०) था। वह जैनधमका अनुयायी था। कई जैनमन्दिर और सित्तनवासलको गुफाएँ उसने बनवायी थी। सुदूर दक्षिणमें पावतीय गुफा मन्दिरोंका निर्माण करानेवाला वही प्रथम नरेदा था। इन जैन-गुफाओमें भित्तिचित्र मी मिले हैं। इन चत्यालयोंके निर्माणके कारण उस राजाको चैत्यकन्दर्य उपाध प्राप्त हुई थी। शैवस व अप्परके, जो पहले स्वयं भी जैन ही था, प्रभावमें आकर यह राजा श्रीव हो गया था और तव इसने जैनोपर अत्याचार भी किये और कई जैन देवालयोंको भी शैवालयोंमें परिवर्तिव

बाहिरवरिक जी था और बल्लबस्ट प्रहुवनशा केशक था । क्लके क्यापे बालुम्म बुनवेची दितीयने पान्य राज्यार जानमण दिया या । स्वेत्र सम्बन्ध उत्तरामिकारी नरस्वित्वर्धन सम्बन्ध (६६०-६८ ई.) प्रवासी मरेब न्य । क्याने केरण भोल पाल्यय पालुक्त और विद्वतके वरेडींकी मुख्यें बरादित रिया था किन्तु बासूबर विक्रमास्तिको एके बुरी तरह वर्षास्त किया। उनके शत कर बहादी देश भी शा। यह राजा मी कैन्दर-वारोंचा राज्यक या । वधीक धारतकारमें योगीशामी हुस्परांत कांची बाया मा फिल् मारपूर वीकारमारोडे करवान वर्ग राज्यानाकै स्र बनव की नहीं देन और बीज दोनों ही बनकि चान, देशकर, यह बीर सनुवानी पर्वाप्त बंदनामें से । शह राजा निर्मादा की मा जोर बडके राज्य-में न्यापार कर्मक सुख और बान्ति थी। बच्छे क्रस्टर्धकराये म्हेल्पवर्मन विवीचका राज्य अरुक्यामा और घरना-यून्य का । वरक्तार वर्राध्यक्ति क्षेत्रेन (६९०-७१५ हें) दैनवर्षका बडा बर्लब हवा बादानके वर्ष चैन अस्तिर भी क्वने ननवाने । नरबेश्नरवर्णन प्रयम और दिखेन इक प्राचाने अस्ति गोप में। यह ७ ५ ई. में करवर परिवर्तन समस्तरूने विद्वारण इस्तवन्त्र विना और ७९५ हैं। शुरू राज्य विन्हा । यह राज्य वस पराधनी मा, पासुपर्वे राष्ट्रसूटी बीट बंदीहे करके सर्वेक बुद हुए। बतके बनावें बैप्पन बन्त बकार हुआ। एउटा की बबना बनुधारी हुना बोर पेस्तप्तारंकि बान क्रम रेप्पल बक्तर को बेन बोर बीउपनीके प्रसिद्धा को । स्थोते प्राथमध्यम् एव ७८८ ई में पंतरान्यांके प्रचारवे कांची जरेवके बीडीका कंगले केंग्डा प्रदेशको निर्माण हुन्य प्रचीत होता है। इस राजाने कांगीका निरमुतांगर बनयाना। यह विद्यानीयां की बादर करता था। बढके पून वरियमिनके कर्त के ८९ र कर राज्य किया। बचको बाला राज्यकर राजकुरायी रेख की शक्ति उत्तरको बोखे राज्यकारित बीर विकास जीती

किया । बैलेंकि स्थानमें धैरनवनारोंको करने प्रोतशाहन विधा । य

बारतीय इतिहास । एक प्रति

पाण्डम नरेगोंका दयाय उसे निरम्य गृहना पटा जिनमे उसके राज्यको पर्याप्त शित हुई। उसका उत्तराधिकारो निष्यमंत सुनीय (८४४-६०६०) था। पाण्डम नरेशको मार ध्येवन्लमंक विरुद्ध उसने गंग, बोल, राष्ट्रकृट और सिहल नरेगोंने मत्रोगम्बाय स्थापित किये और तैन्ताको प्रसिद्ध युद्धमें वह पाण्डम राजाको हराकर उसके राज्यमें पुन गया किन्तु वृम्बकोतमके नियट स्वय हारकर वापम लीट आया। इसकी नौनेना मो धिवताला थो। उसके पुत्र नृग्तुंपवर्मनने, जो अमोषवर्ष प्रममको पुत्री श्रमासे उत्पन्न हुआ या पिताका बदला न्तेने लिए पाण्डम्य राजाको हराया। यह नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने जानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंका समर्थक या। इस बंदाका अन्तिम नरेश अपने नानाको मौति जैनयमंको समर्थक या। इस बंदाका सम्बाधको नालाक यो। इस बंदाका समर्थक या। इस विष्ठक या । इस विष्ठक या। इस विष्ठक या। इस विष्ठक या । इस विष्ठक या। इस विष्ठक या। इस विष्ठक या । इस विष्ठक या ।

पल्कवर्शक प्राय सभी नरेग विद्याओं और कलाशों के पीएक ये और विद्वानोंना आदर परते थे। उनकी राजधानों एम प्रमिद्ध नान-विद्वने कपमें उत्तरापयकों काशीसे होड करती थी। इस नगरोमें विभिन्न धर्मों के बिद्वान् परस्पर धाहत्रार्थ करते थे जिनमें राजा और प्रजा सभी रस लेते थे। प्राष्ट्रत, संस्कृत और समिल तीनों हो भाषाओं में प्रष्ट धार्मिक एवं लोकिक साहित्यका पल्लव नरेशों के आश्रयमें सृत्रम हुआ। ध्यों शतो ई० के पूर्व पल्लव राज्यमें जैन और बीद्ध धर्मों हो प्रधानता थी, तहुपरान्त दीव और वैष्णव धर्मों का प्रसार हुआ। जैन, बौद्ध, दीव, और बच्चव, चारों हो धर्म इस राज्यमें साम ही-माय फलते-फूलते रहे और इस बशक कुछ-न-दुछ नरेश इनमें से प्रत्येक धर्मों बीद पर्यों एवं। धर्मों-८वीं शताब्दीस श्रीव और वैष्णवोंने जैनों और बौद्रोपर भीषण लत्याचार करने प्रारम्भ कर दिये। फलस्वरूप बौद्धपर्म तो इस देशस श्रीघ्र ही विरोहित हो गया किन्तु दक्षिणके विद्वान् जैनगुक्जों, उनके

किया । जैनेकि स्वानमें धैवनम्पनारोंको बक्तने श्रीलाह्य दिशा पर राहित्यर्रातक भी या और बस्तरपन्द प्रदुष्टबना केन्द्रम था। बन्नके बच्चमें चामध्य प्रभवेची दिवीयने बन्दव शास्त्रपर आस्त्रप क्रिया या । मीरा यमनका उत्तरप्रविकारी क्रोडिंगवर्धन प्रथम (६३०-६८ ई.) ब्राज्यती मरेक या । यसन वेरम जीत बारवप बालका और विक्रमक वर्रेबीडी मुख्ये पर्यापन किया था किन्तु बालपक विक्रमारितको सक्षे बुरी सरह पर्यानक विया । बनने शत वक बताबी देशा औ बत । बह राजा की वैकार-न्यरीया बनवन या धनीके बायनशामां बीलीशाची हुएनबान वांची कारा का दिल्ला बादवार वीवनक्यारोंके बल्यान वर्ष राज्यानको वर्ष शनन भी नहीं जैन और दि रोलीं ही बनोंके बाबू, देवलाय, नह और अनुवादी वर्षान सरकार्वे से । यह राजा निर्माता भी वा और वसके राग्य-में स्थापार कर्माज सुख और बार्ति थे। उन्नोर क्याराविकारी ब्रोलायर्नेन विक्रीयका राज्य बाल्यवारी और बरमान्तृत्व वा । क्षत्रस्थार वर्धानद्वयन्त्र दिनीय (६९०-३१५ ई.) बीववर्षका बक्त सवर्षक हुआ। पायानके कई धैन-मन्दिर जी उनने बक्शारे । परवेश्यरवर्तन सबस और दिनीय देन कामाने मन्तिन वरेख में। सन् ७०५ ई. के समान महिनार्मन रास्त्रहराज्ये विद्यापन इस्तम्त्र किया और ७९५ है। एक राज्य किया । यह राजा नहीं पराक्रमी ना पालुकरों, राष्ट्रपूर्वी बीट बंधोंने शतके बतेन वृत हुए ! यक्तक बकार्व वैध्यत बन्त अस्तर हुआ। राज्य सी बक्षण सनुवासी हुना और वेदनवनारंकि बाद यह दैयान अकर की बेन और बीजवाँकि प्रक्रियो वर्ते । इसीके साक्ष्यकारणे क्यू ७८८ ई में सकरावार्यके जनारदे काची जरेकरे बीजाका कंग्लंड केंच्या अरेवकी निर्वाहन हुना मधीत होता है। इस शामने कोशीका विव्यवस्थित करवादा। यह निकार्तामा भी बारर करता था। सबके वह व्यक्तिवर्तनने ७९५ है ८४५ ई. तक राज्य किया। क्लाब्रे गांधा राज्यपुर राज्युकारी रैसा की तकारि क्यूरशी बोरने राष्ट्रशाहित बोर प्रविवशी बोरने

की और मद्राको उक्त मधका केन्द्र बनाया। अस्तु ५वीं से ७वीं शती पर्यन्त पाण्डच देशमें जैनचर्मका अत्युत्कर्प हुआ। वज्यनन्दि और उनके सहयोगी गुणनन्दि, वक्कप्रीय, पात्रकेसरि, सुमितदेव, धीवधंदेव आदि जैना-चार्योने उनत द्रविष्ठ या द्रमिल सघको एक सजीव शक्ति बना दिया । इन विद्वानींने अनेक ग्रन्थोका सस्कृत, प्राफृत और तिमल भाषाओंमें प्रणयन किया तथा अपने भवतो और शिष्योसे कराया। तमिल साहित्यके कई महत्त्वपूर्ण कावप ग्रन्थ इसी कालमें लिखे गये। प्रवृत्तियोंके फलस्बरूप हो ६ठी शतीके अन्तके लगभग कडुंग नामक राजाने पाण्डध देशकी राज्य शक्तिका पुनरुत्थान किया, वह अपने पूर्वजोकी भौति ही जैनधर्मका अनुयायी था, उसके क्रमश चार वशज भी जैनी थे। इनमें-से अन्तिम नरेश नेन्दुमारन (कुन अथवा सुन्दर पाण्डघ) के समय (६५०-६८० ई०) में गुणसम्बन्दर नामक व्यक्तिने जो स्वय जैन या, जैनवमका परिस्याग करके शैव धर्मको अपनाया और राजाको भी शैव बना लिया। सम्बन्दरके प्रभावसे उस राजाने पाण्डध देशके जैनियोपर अमानुपिक अत्याचार किये वताये जाते हैं जिनके दृश्य मदुराके प्रसिद्ध मोनाक्षी मन्दिरकी दीवारोंके प्रस्तरांकनोंमें आज भी विद्यमान है। कहुगसे लेकर नेन्द्रमारनके समय तक पुनरत्यापित पाण्डच राज्यकी शक्ति और प्रभाव बढ़ता आ रहा था किन्तु इन धार्मिक अत्याचारोंके कारण किर छगभग एक शताब्दीके लिए उसकी उन्नति पिछह गयी।

्वीं शताब्दीमें श्रीमारन श्रीवल्लम (८३०-६२ ई०) इस देशका प्रसिद्ध राजा हुआ। महावशमें भी उसका उल्लेख है और सिह्लपर भी उसने आक्रमण किया था। पल्लव नरेश दिल्लममेंन और नित्द्वमेंन दोनोको उसने हराया और अपना राज्य वढ़ाया था। कि तु उसके अन्तिम वर्षोमें सिह्लके छेन द्वितीयने तथा काचोके नृपतुगवर्मनने उसपर आक्रमण करके उसे दुरी तरह पराजित किया और मदुराको लूटा। श्रीमारनकी भी उसी समय आहत अवस्थामें मृत्यु हुई। उसके पुत्र वरगुणवर्मन द्वितीयको

- -

लेकी प्रेरण बरेड प्योगी पाताई वहा तालण बराएँगी वैकारी बारद वार्थी कार्यका करण प्रश्ने कर वह बार पात्री है कर प्रमेश में ताल्यका करण वह नवा पात्र हुएवांचा व्योधी विकास के पुरावारिक बरोगी वहा वैती-सार लिंक डील बारियाँ कार्यक्रम पात्र कार्य वित्तार प्रशास के कुर्वक्रम कार्यका के प्रशास के कार्यका कार्यका प्रशास प्रशास के से तह बंद कार्यका कार्यका वहाँ हैं कर कार्यका प्रशास प्रशास की कार्यका कार्यका वहाँ ताल्यक प्रशास के बीर गांत्र कार्यका पात्रकों पुरा (बहुत वा बीवन बहुए) कार्यका प्रशास है प्रशीस क्षेत्र कार्यका प्रशास कार्यका वा कि बहुत सारायके करण प्रशास वाप्रण करना है । ऐसे बहुत कार्यका वा के क्षेत्र मारायके क्षेत्र प्रशासक कार्यका है। ऐसे

परवारमें बाता राजपुत्र बनावर बेटा था । बडीयके बन्दरमाने बन्दरेग हारा यह विदेश बाबा प्रापन क्षत्री हो । बन्त मुक्ति बन्दरा बन्त निरस्

सामार तेम नवरने सामेक्साओं पर हिला है थी और परि सार्थ करें स्वर्धन करों में । प्रसार्थ मुतारें हैं। स्वरंगन तिम्म प्रमाने मेंक्स स्वर्धानमां करता हुन। प्रमान्ध (हुम्मुक्त) सार्थ केन्द्र सेन्द्र स्वरंगन होंगे नेता में । क्या प्रदिश्यों साम कर तिपुर्व केन्द्र स्वरंग सामार्थित स्वरंग कर्म हिला कराई हुन्य इंग्लें प्रमान हमार्थित स्वरंग स्वरंग स्वरंग स्वरंग साथ हुन्य प्रमान प्रमान हमार्थित स्वरंग स्वरंग स्वरंग साथ हिन्द्र सेन्द्र जैन महाकवि धनपालके तिल्यमजरी नामक काव्यमें समरकेतुकी समुद्रमात्रा-का वर्णन अनेक जिद्वानोंके मतानुभार राजराजा चोलके ही सुद्रस्थके किसी द्वीप या देशपर किये गये समुद्री साक्रमणकी सैयारीका सबीव यर्णन है। कवि घनपाल इसी कालमें हुए ये, मालवेके परमारों, यन्नीयके प्रतिहारीं कीर कल्याणीके चालक्षींने सहीने सम्मान प्राप्त किया था, बया बारवर्ष है कि वे राजगंजा चोल-द्वारा भी सम्मानित हुए हीं। राजगंजा सामा यत शैवधर्मका अनुवायी था किन्तु वह एक बहुत चदार और सहिल्यू नरेश था । उसके राज्यमें जैनोंने उत्तर कोई अत्याचार नहीं हुआ युग्न विद्वानों-का तो यह मत है कि उसके समयमें जैनियोंको शैकोंके समान ही राज्यात्रय प्राप्त या और उसके माम्राज्यमें जैनवर्म उपन अयस्यामें या । उसका पुत्र राजे द्र घोल (१०१६-४२ ई०) सुयोग्य गिताना मुयोग्य पुत्र था। उमने लपनी विजयवाहिनीको उत्तरमें गगातट तक पहुँचा दिया और समुद्रपारके देशोको भी विजय किया । किन्तु वह जैनपर्मना विद्वेषो था, मैसूर प्रान्तके लनेक जिन मन्दिरोंको उसने जलवा दिया था। उनका उत्तराधिकारी राजाधिराज (१०४५-५४ ई०) था। सदन तर अधिराजेन्द्र राजा हुआ वह भी धैव था । मन् १०७४ ई० में उसके भानजे कोलुत्तग चालुक्षने उसे मारकर चोछ और पूर्वी चालुक्य राज्योंको सम्मिलित कर लिया। उसने ११२३ ई० तक राज्य किया । यह राजा भी बहा पराक्रमी या और उसने मिलग देशको पुन विजय किया । इम विजय यात्राका सजीव वर्णन समिस-के प्रसिद्ध महाकाव्य कलिंगट्ट्वरिनमें मिलता है। इस काव्यके लेखक कोलुतुग चोलके प्रधान राजकवि जयगोदम ये जो जैनो ये। यह सम्राट जैनवमका अनुयायी या और उसके आश्रवमें अने कामिक एवं साहित्यिक कार्य हए । उसने राजे द्र-द्वारा नष्ट किये गये जिन मिदरॉका भी जीणी-द्वार कराया । कोलुत्गके भवते भागकर ही रामानुमाधायने होयसल नरेश विद्विवर्धनकी दारण ही यो। कोलुत्तुगके आश्रवमें अनेक जैन विद्वानोंने वनेक ग्रामोकी रचना की थी। इस नरेशने अपने राज्यमें समस्त निपित

विद्वारी बेतास्तिने वहीतर विद्वारत । यह संद्वा-मरेज और मस्त्रमें, क्षेत्रीने ही सबीन रहा । बनके बाद रे ४ और निर्मेश आवड़ हुए और कराने रे मी वर्तीके बारम्बके चीनीने चारक्य देखको विवय बार्के कारे बाप्तात्राचे विका किया । इन्हों दातीने चान्त्रयोंने किरने चरित प्रसी और बुन्छ पान्नप तामान्य बदवर्षे आवा । इक् बामर्वे पान्नच नरेव बारवर्तन पुण्योत्तर (११६८-१६११ ई.) के बावर्त जावीरीजी नावक वैनिन निशासी बाबो इस देखने बाबा मा । सनके बुतान्तने 🕶 🖷 शिरित होता है कि बत बनव चारवप देनमें अनेक बेंग नक और वैती

विश्वसम्म में । बारवशको १९८४ ई में लेटाओं भी दिवस की की १३१ ६ में बनावहीन बनायोंके बाळनवने स्मृतके चायब राज्यश धन्त कर दिया । धोकराज्य-देवरी क्वडी प्रारम्बन क्वानिजॉर्वे करवन्त्वा यो^त राज्य एक बच्चत राज्य था । नावंदि बचरा सम्बन्ध था और वैतवस्ति

वय राज्यवे प्रवृत्ति को । किन्तु ३ री बती वें ते हो शक्तवीके करवाओं नारम जोस राज्यका तुर्व कई प्रतानियों तक बस्त रहा और नह सन मात्रक बीमराज्यके क्याँ बज्यातवा प्रकार छ। १वी वर्ती है हैं चीक देखके शंचाकर नगरने विजयात्रन चीतने चीकराउनका स्वरत्वन बीर करने बंबची स्थापना भी । इबका बसराविकारी कारित्र चीन व बोर किर परान्तव भोस (९ ४-४६ ई.) छवा हुआ। इसवे पान्यव वेस-नी मित्रव करके राज्य निस्तार किया। वसके करिश्वधसायविकारी म्यूरण पूर्व वहीं में । फिल्ह तहरराज्य राजराजा चोक (६८५-१-१६ ई.) सर् र्वश्रम वर्ववद्यम गरेत या नद्र वाटी विवेद्य वा और तम्पूर्व व्ययमध्य पर महाच शान्तका वकारियाँत हुन्छ । क्षम्ब्रिक (मैतूर) मीर कंपाके मी की जान दिवस करके सक्ते करने राज्यों निका किने। यह नाणे

Rafer alt au-eineren eine Baufer untit ammer er i unb

तो दीवा हेफर जैनमुनि हो गया या-रामिल भाषाके मुप्रसिद्ध प्राचीन महाकाव्य शिल्प्यदिकरम्को रचना इसी राजपिने वी घी। १री-४यो शती ई० से चेरोंका अवनित होन लगी और चैरराज्य एक छोटा-आ गौण राज्य रह गया । इस प्राचीन चेरवंशका सस्यायक चेरमान पेरमल था। ८वीं रातीने अन्तमें इस यंशका अन्त ही गया। ९वीं रातीमें वैष्णव अल्वर मतके अनुयायी कुल्डोखरने अपना यंश स्यापित किया और उद्योक साथ शाथ चेर प्रदेशमें जैनपमके स्थानमें वैष्णय मतकी प्रधानता हो गयी। इस प्रदेशके मलाबार तटपर धरणाधी यहदियों और नवागत ईसाइयोंकी बस्तियों भी बहुत प्राचीन कालमें ही स्थापित हो गयो थीं । प्राचीन कालमें फेरल भी चेर राज्यका ही अग था । सन् १३१० ६० में मद्रापर मुसलमानोंके प्रथम आक्रमणके उपरान्त कुछ कालके लिए केरल राज्य एक स्वतन्त्र और शिवतशाली राज्य हो गया था। घेर, मेरल एव सत्यपुत्र प्रदेशोमें अनेक प्राचीन जैन पुगतस्वामग्रीप पाये जाते हैं। चेरोंकी राजधानी कावेरीपट्टन थी। पाण्डय, घोल, चेर नामक प्राचीन अधवा आदिम तमिल राज्यो एवं पल्लय नामक नवस्थापित राज्यके साथ सुदूर दक्षिणके तिमल प्रदेशका इतिहास समाप्त हो जाता है। उपरोक्त विवरणसे यह भी चिदित होता है कि ३री से ६ठी राती ई॰ पर्यन्त सम्पूर्ण तमिल देशका इतिहास अधिकाराच्छन्न रहा। इस बीचमें वहाँ कलम्र (कलिमरसन=मन्यताके धन्) नामक जातिका प्रमुख रहा प्रतीत होता है। अच्युत विकास कलभ्र इस वराका प्रसिद्ध राजा था और बौद्धधर्मका समर्थक था। किन्तु ६ठी शतीके अन्तमें पाण्डधो और पहलवीने कलभोंका अन्त कर दिया था। १०वीं शतीके जैनाचार्य अमितसागरने भी अपने तमिल व्याकरणमें उक्त कलभ्र नरेशके अध्याचारोंसे सम्बन्धित कुछ प्राचीन गीताको उद्धृत किया है।

कत्रस्य घरा का सस्यापक कदम्य आप्त्र सातत्राहमोंका सामन्त या जिसन कदम्य नामक वृक्ष विशेषके नामपर अपने वश और राज्यकी प्रधानेक बार्क्स कर रूप दिवा था। प्राप्तित बारको परिवरण गरेकों करती नवता को करती है। करके बार करवा गाई दुर बनकेंद्र (विक्रम वा निरम्बद्धा) विद्यासन्तर कैंद्र। करके जो बनके निराम की मन्द्रों करव दिया और कब्बरी प्रकारत की विक्रमी वर्ष वृत्तिकी पार्ट हों। इब वेबला सन्तित बहुल नोक प्रशास गुर्मेस (१९९५-१८ हैं) था। करके करताल कोड सन्तिओं सकाति होने करी। गुरुक्तें

विर्वय प्राप्तको जोर मनोहिन्छ वास्त्रम महिन्दो बाह्यमधिक वास्त्र है। ये प्राप्ति क्यार्थ वह चीमवाश्रास्त्र क्षित्र-वित्र हो नगा । चीच वासारसी पावर-व्यवस्त्रा वही सुन्दर वी क्यारी दास वेदानती जोर वसके स्थारण

पाना के वो निवास प्राप्त हुए हैं ने कहाँ बवाज्य व्यक्ति को सार्थ वेस्तारि हैं। केवलिय कोर निवास कर्मन केवलिय हैं। केवलिय कोर निवास कर केवलिया हैं। वोच्य वार्ध्य कोरोवरात्ते के कार्य कर्मन केवलिया है। वोच्य वार्ध्य केवलिया कर कर कर केवलिया कर कर कर केवलिया कर कर केवलिया कर केवलिया है। वार्ध्य केवलिया के

पर्केश मान्ये विजयपारिनीतो पहुँचामा और पहुँ एक जिज्ञार माने अनुर्वेजको सेनिश कराया । इब वेबर्ने वरावर सैनवर्नेती ही ज्युनि यो। सप्ताद सेनुस्वरत स्वर्ण केन सा और संवर्ण माई राज्युकार प्रत्येचकार के आक्रमणका निवारण किया । उसने महपट्टिदेवके छिए एक दान भी दिया षा । उसके पुत्र भगीरयके कुछ सिक्के मिले हैं । भगीरथका पुत्र रघु भारी योद्धा था । उसने पल्लयोको पराजित करके अपने राज्यको निष्कण्टक किया । युवावस्थामें हो युद्धमें उसकी मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई काकुत्स्यवर्मन् भी छोटी अवस्थामें ही राजा हो गया, किन्तु वह एक महान् नरेश, योग्य शासक, वहा नीति-निपुण और दीर्घनीको या। उसने गग, गृप्त और वकाटक नरेशोंका अपनी कन्याओंके साथ विवाह करके तत्कालीन भारतके प्रसिद्ध राजवंशोंसे मैत्री सम्बन्ध स्थापित किये। इस नरेशके हुल्सी ताम्रशासनमें वर्षसंख्या ८० दी हुई है जो इस राजांकी ८०वीं वर्षगाँठका सूचक प्रतीत होती है। इस अभिलेखकी तिथि सन्४०० ई० निविचत की जाती है और लेखसे स्पष्ट है कि यह राजा जैनधर्मका भारी पोषक था। जैनपण्डित श्रुतकोत्ति मोजकको इस ताम्रशासन-द्वारा राज-घानीके जैनमन्दिरके लिए दान दिया गया था। काकुत्स्यवर्मन् चन्द्रगुप्त विक्रमादिखका समकालीन था और सम्भवतया राजकुमार कुमारगुप्तके साय भी एक कदम्ब राजकूमारीका विवाह हुआ था। स्वय कवि काछिदास इस विवाह सम्बन्धको स्थिर करनेके लिए उज्जैनसे वैजयन्ती आये बताये जाते हैं। काकुत्स्यकी दूसरी कन्या गगनरेश तदगल माधवकी विवाही थी और इस प्रकार गग अविनीत इस कदम्ब नरेशका दौहित्र या। काकुत्स्यवर्मनुके पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र शान्तिवर्मन् राजा हुआ । उसने कदम्ब राज्यके सन-वासी, त्रिपर्वत और उच्छगो नामुक तीनों भागोंको सगठित करके केन्द्रीय शासनके भीतर हे लिया। शान्तिवर्मन् भी जैनवर्म और जैनगुरओंका समादर करता या । उसका पुत्र मुगेशवर्भन् (४५०-४७८ ई०) जैनवर्मका अनुवाबी था। उसके कई उपलब्ध ताम्रसासनीमें इस नरेश-द्वारा जैन मिन्दरोका निर्माण कराने, निर्मन्य जैनगुरुओं, स्वेतपट जैन साधुओं और जैनोंके कृर्चक नामक एक अन्य सम्प्रदायके साधुआको दान देनके उल्लेख हैं। स्वय राजधानी पलाशिकामें उसने अपने पिता भान्तिवर्मनुकी

र्राचित्रके दरवान देवमें रही यूनी है के मध्यक मनवन स्थान्य मी में और काहारक (क्लेबल करहर) प्रवाको श्राम्यी राजवानी बनाम वा t नगर भीन बली-बाफी हरीयर बंबब बनागीमी ब्राह्म वहीं के मपुरेश्तरको अनुना कुमरेशना जानने वै और स्वासी महानेतको पुन्तपुर । राजरत्वा प्रदान के नुनमें जी शक्त या प्रवर वर्ष बान रराता नियम था। रन रंबका दुनग राजा जिस्लान्द अवशा विवरोटि काले गाउँ जिस्लाहे बाव बेंगावार्ष समन्त्रपत्र हारा बैंगवर्षने सौहित हो बचा था । क्यी बचाने इन बैंगरे बैंगवनको प्रवृत्ति सवदा सबके प्रति । साप्रदेशक रहता मार्थी । बनका पुत्र भीक्ष्य का और रीप विशासन्तरमृत् विवक्ते बत्तराविकारी बनुरक्तन् (३१) इतीना क्तरार्व) के बनव तक करान राज्य एक धीराना गारा या सी पाई शासकारके ही लिए बड़ी एक बीर माने मारशे मन्त्रीके अबीव भारता वा और बूनरी और शंपीके परच्येते दवता था । मपुरपर्वत् बुत्तारास्थाने विद्यान्तारिको विद् साधीनै प्रश् या । बड़ी शत्मारीने चत्रका अरक्ता किया था । इनके बड़ी बड़ होन्छ बबने जाने शानको बस्तिको बसले और शन्तनीहे बरमा नेवेसी हा प्रदेश हो। राज्यमार गुँगाको हो बढने वैदयन्ती (बनयनी) मे अपनी राजनानी बनामा और प्रकारिका (इस्ती) को बपराज्यांनी बनाया आक्रा-स्वरत्या होत की और वर्षप्रकार क्ष्मी करिय वहनैयें र्वकल हो क्या । इसी फारल परम्य राज्यका सल्यापक संस्थापक महुर वर्तन्त्रो ही बहा बाता है। बाला बातपाइनोंके जिन प्रदेशपर करानी-ना मनिकार या प्रवर्ध और नविक जिल्ला करके व्यू वय एक स्वतन्त्र वरेय वन क्या । वह बन्नूचं बातरीहरका स्वाबी ना । श्राम्बर्वेको परान्ति करके बनने काले भारतालका अद्देश किया और बनका अदल अधिकती ही बदा । बहने बहदबाल बैंगड, आहीर, नहिस्तान बंदस्थन केंग्रफ, कुबार और मीबॉर राजाबीको जी बुडीवें बराजित दिना बताया बाता है। वक्के पुत्र व्लंबताराविकारी बंदवर्तन्ते वकारकतरेण निज्यवन्ति दिवीतः भारतीय इतिहास । एक परि

के आक्रमणका निवारण किया । उसने महपट्टिदेवके लिए एक दान भी दिया या । उसके पुत्र भगीरयके कुछ सिक्के मिले हैं । भगीरथका पुत्र रघु भारी योद्धा या । उसने पल्लवाको पराजित करके अपने राज्यको निष्कण्टक किया । युवावस्यामें ही युद्धमें उसकी मृत्यु हो गयी और उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा माई बाबुत्स्यवर्मन् भी छोटो अवन्यामें ही राजा हो गया, किन्तु वह एक महान नरेश, योग्य शासक, यहा नीति-निपुण और दीर्घजीवो या । उसने गग, गुप्त और वकाटक नरेशींका अपनी कन्याओंके साथ विवाह करके तत्वालीन भारतके प्रसिद्ध राजवंदांसि मैत्री सम्बन्ध स्यापित किये। इस नरेदाके हस्ती ताम्रशासनमें वर्षसंख्या ८० दो हुई है जो इस राजाकी ८०वीं वर्षगाँठका सूचक प्रतीत होती है। इस अभिलेखकी विधि सन्४०० ई॰ निरिचत की जाती है और छेखसे स्पष्ट है कि यह राजा जैनधर्मका भारी पोषक या । जैनपण्डित श्रुतकीत्ति भोजभको इस ताम्रधासन-द्वारा राज-धानीके जैनमन्दिरके लिए दान दिया गया था। काकूत्स्पवर्मन चन्द्रगुप्त विक्रमादिखना समकालीन था और सम्मयतया राजकुमार कुमारगुप्तके साय भी एक कदम्ब राजकूमारीका विवाह हुआ था। स्वय कवि कालिदास इस विवाह सम्बन्धको स्थिर करनेथे लिए उज्जैनसे वैमयन्ती साथै बताये जाते हैं। काकुत्स्यको दूसरी काया गगनरेश तदगल मायवको विवाही यो और इस प्रकार गग अविनीत इस शदम्ब नरेशका दौहित या। काकुरस्यवर्मनके पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र धान्तिवर्मन् राजा हुआ । उसने कदम्ब राज्यके बन-वासी, त्रिपर्वत और उच्छगी नामक तीनों भागोंको सगठित करके केन्द्रीय शासनके भीवर ले लिया। शान्तिवर्मन् भी जैनपर्म और जैनगुरुओका समादर करता था। उसका पुत्र मृगेशवर्मन् (४५०-४७८ ई०) जैनधर्मका अन्यायी या । उसके कई उपलब्ध ताम्रशासनींमें इस नरेश-द्वारा खैन मन्दिराका निर्माण कराने, निर्मन्य जैनगुरुओं, श्वेषपट जैन सामुओं और जैनोंके कूर्चक नामक एक अन्य सम्प्रदायके सायुआको दान देनेके उस्लेख हैं। स्वम राजधानी पलाशिकामें उसने अपने पिता शान्तिवर्मनुकी स्मृतिने एक प्रका विशासन करणाया था। विशेषको काइ है जि कुटरर कैन्दुस्थोगा हो गरी मारा काफी निर्मास मुग्नित क्षेत्रो तीर सम्प्रमान सम्पर्ध निरम्भ ना। तम सारा करणेयाचे बीगुक्तांने जानून यार स्त्री भीति मोक्या है भी मुन्तिनित मोक्रिक के स्वाधान्याच्या है । देखे सर्चन होता है जि मुन्तिनित सारा किस्ता है स्त्रीत स्वाधान करणे है सीर न्यास नरित्रीत एकपुण्डेले स्वरूप प्रकार हो। इस प्रमास इस्तरीय स्त्रीकत सम्माद स्त्रीक स्वाधानिक विश्वासन है

पृथ्यपर्तन्ते कावनकावने वचने भागा कुम्बर्धन् वचनो स्टिब् frei in alt freie abert aftent ath ever eige ver रवाच्यि किया वा बहाँ बढके. बंबजीने बैजननीवाची एन बाबाने कर्य-बान स्थान्य राज्य किया । वह हज्यवर्तन् अपने जानाचे अनिनीत नेपने बहुत स्वेद करता का अतः वंदनरेड कराके ब्रह्मना रहे । बडावे नागाँकी भी परासित किया था। कुल्बुके बाद बक्का पुत्र विव्यवर्धन् प्रयम सम हवा, मुक्तवर मुरेक्त ही बादन पत्र पहा था। इव बाहरी परवर्गे, रीजाकों बीर बालीके परस्पर मुख्येके कारण सवास्ति रही । विस्तृपरंतृकी बहानवार्त बाने वंगी बीर फार्क्सोडी मुनेबने पराबित किया करने बहुती-को को करने करीर किया । क्वाफी राखी प्रमाध्यो केवलक्की राज-कार्या थी । शासनीय काल इस मुख्ये कर छनीका बाई क्रियमन्त्रियाँ हैं देवन कारा थवा था । फिर थी परवन दिश्वपर्यनथी बहानको ही निर्म-वर्षन् बन्ते राज्यको सैनर रख बन्ता । मुनेक्के स्वयह्य क्लूना पूत्र रहिन वर्तन् की कैनन राज्यकमा प्रभावतीचे कराज्यक्षा वा राज्य हवा । ४७८ के ५२ है एक अपने राज्य किया । बहुन्तर बैठकेके बयब अवसी बाहु क्षत्र की महरून वर्तने पाना पानकहरू पर्यान के क्षत्र है करा है है जा कार्य कमारका । करने नेप अमिनीतरे करिय कर की कीर करके कराराविकाधी र्वोत्तरियमे धरस्य दिन एनं बहसोची मना किया । अन्यक्रीयर रहिनर्वतर्वे राज्यकी बारवीर अपने हावरें की । वहायोगी विपर्वत बालानें विम्त

त्रमंन्, सिह्यमंन् और कृष्णवर्मन् द्वितीयका क्रमश धासन इनके समयमे रहा। रिवयमन् अपने इन सम्यन्धियाको उमरने नहीं दिया और उष्ण-वर्मन् द्वितीय तथा उसके सहायक चण्डदण्ड परुठवको बुरी सरह पराजित किया। रिवयमन् अपने माई मानुवर्मन्को हर्सीमें अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। दुर्विनीत गग परुठवोंके विषद्ध रिविवर्मन्का नित्र था। इस प्रकार रिवयमंन्ने अपने पिताके समय हुए राज्य और वंशके रिभाजनका अन्त करके पुन एक कर लिया। कृष्ण दिवीयके यश्च अजयवर्मन्, भीति और विष्णुत्रमंन् कुछ काल सक और विद्रोही सने रहे किन्तु उनका मी अन्त चालुत्य पुरुकेशि प्रथमके पृत्र कोत्तिवर्मन्ने कर दिया। रिववर्मन् एक महान् प्रतापी एव सुयोग्य नरेश था। यह जैनधर्मका भी परम मक्त था। हरसो, कोरमग आदि स्थानोंसे उसके कई ताम्रशासन मिले हैं जो उसकी उसकट जिनधम मिलत, धार्मिक आवरण, जिनमिदराका निर्माण, जैनगुक्जों और विद्रानेका सम्मान, वार्तिकी अष्टाह्निका आदि जैनपर्यों और उरसवीको मनाने, विविध दान देने आदिका सणन करते है।

रियवर्मन्के धमगुरु जैनमुनि कुमारक्ष तथा हरिदल ये और राजगुरु एव प्रमुख दानपात्र व धुमेन भोजक ये जो दामकीत्ति भोजकके उत्तरा-धिकारी थे। महाराजके भाई भानुवर्मन्ने जो हल्सोका धासक था, प्रत्येक पूर्णिमाको जिने द्व भगवान्का क्षभिषेक करनेके लिए पण्डर मोजकको दान दिया था। पण्डर सम्भवतया सन्धुसेन भोजकवा उत्तराधिकारी था। इसमें सन्देह नहीं कि कदम्ब्र नरेस रिवयमंन् एक प्रतापी, धर्मात्मा एव सिक्तशाली राजा था।

इसके उपरान्त इसका पुत्र हरियर्मन् (५२०-५४० ई०) राजा हुआ। यह कदम्बवशका अन्तिम महान् नरेश और अपने पूर्वजोकी ही भौति जैनधर्मका भवत था। उसके राज्यके चौये और पाँचवें वपोंमें लिखे गये ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं जिनमें इस राजाके द्वाराजैनमन्दिरों और गुरुआंको दान देने तथा जैनधर्ममें उपदेशित अन्य प्राप्तिक कार्योंके करानेको

न्यराना करवेडे व्यक्ति है। वृष्टें व्यक्ति बेगायार्थ यारिकेया या या वृद्ध सार करवा था। एक मोक्के जिल्लेक्टी वह वी क्या हैंग्य हैं कि उनका स्थान विभाग के प्रिकृत के उनका स्थान विभाग कर विभाग के प्राप्त हैंग्य कि उनका स्थान विभाग कर विभाग के प्राप्त हैंग्य के प्राप्त कर के प्राप्त के प्

वाना वाट्य है, निवेचकर हांनकके करान राजे ११वीं १२ वीं कडीयें वाकी

कार्यांच्य सकत बुवाद वर्ष पुरस्तिकत या। वर्षी वंधी में। तर्ष मेंचे बाद वर्षे मिरण्य दुव कार्य दर्ध मोर सावनाव्ये जा कार्यायें में कक्को युवा पहा क्यांचे कर्षे एक्सो क्यांच्या कार्यिकहीं मोर क्यांच्या की पूर्व। क्यांच्यात्मकाय मिरणे-मारा बुवंपीये में। त्ये मंत्रीकी स्वत्येक्ष्म किर से मूं । केव्यं स्वादा मेंची प्रश्न प्रमुप्ति-ग्राप कर्मनीक विकास एक्स कां मेंची क्यांचे प्रश्न पूर्ण प्रश्न प्रमुप्ति-क्यांच्यांच्या से मीर एक्सामा प्रश्न क्यांचे सावक एवं व्यक्ति में वर्षामी सुप्त कार्याव्यक्त मार्चिक द्वार्थ, बाव क्यों में

afferent û

व्याप्त गगवाडि राज्य पश्चिमी गंगवद्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ।

इम वशके नरेशोंके शिलालेखों व तामपत्रों, साहित्यक आधारो तपा अनुश्रुतियोसे ज्ञात होता है कि अयोध्यामें तीर्यंकर आपमके इक्ष्वाकृवदामें राजा हरिश्चन्द्र हुए जिनके पुत्र भरतकी पत्नी विजयमहादेशीसे गगदत्त या गरीयका जम हुआ। उसीके नामसे यह वश गरवश कहलाया। गगेयका एक वश्य विष्णुगुष्न अहिच्छत्रका राजा या और तीर्थंकर अरिष्ट-नेमिका भक्त था। उसका वदाज श्रोदत्त तीर्यंकर पादर्वनायका उपासकथा। श्रीदत्तके वधमें अहिच्छत्रका राजा कम्प हुआ जिसका पुत्र पद्मनाभ था। इसके ऊपर उठजैनीके राजाने आक्रमण किया अतएव पदानामने सुरक्षाके लिए अपने दद्दिग और माघव नामक दोनों यालक-पृत्रोको राजिचह्नों-सहित दूर विदेश में भीज दिया। प्रवासमें ये राजकुमार घीरे घीरे वहे हए और घुमते घुमते दक्षिण भारतके कर्णाटक देशस्य पेरूर नामक स्थानमें पहुँचे । नगरके बाहर स्थित चैत्यालयमें दोनो राजकुमार अपने कुलदेव जिने द्रका दर्शन पूजन करनेके लिए गये। यहाँ आचार्य सिंहनन्दि अपने शिष्य-समूद-सहित विराजमान थे, यह उस काल और प्रदेशके एक प्रमुख जैनाचार्य थे। दोनों राजकुमारोंने जब उन्हें नमस्कार किया तो उन्होंने प्रसन्न होकर उहें आशीर्वाद दिया, उन्हें अपने पास रखकर समस्त राज्योचित विद्याओंमें पारंगत किया, अन्तमें कर्णिकार-पुष्पोका मुकूट पहनाकर उन राजकुमारोंका राज्याभिषेक किया, अपनी मयुरिविच्छका उन्हें राजध्यजमे रूपमें प्रदान को और मत्तगयन्द उनका राजचिह्न निश्चित किया। उस समय उन्हें आचार्यने यह चेतावनी दो कि 'यदि तुम लोग कमी अपना वचन भग करोगे, कभी जिन-शासनसे विमुख होगे, पर स्त्रोके उत्तर कुद्षि ढालोगे, मद्य-मासका सेवन करोगे, नीच व्यक्तियोंकी सगति करोगे. याचक-जनोंको दान देनेसे मुँह मोद्योगे और रणमूनिसे पीठ दिखाकर मागोगे तो तुम्हारे कुछका नाश हो जायेगा।' राजकुमारोने गुरुवचनोंको शिरोधार्य किया और गुरुको मन्त्रणानुसार अद्भुत उत्साहके साथ राज्य निर्माणमें नींव शब्दी । एक विकासिक क्षेत्रकार इस जनार गाँव और सम्बन्धे मन्दिरिको बाला वर्ष कृषकाळ (कोलार)को जननी राज्यपरी १६ वंत्रक देवको अरला राज्य रजन्तिमें विजयको अरली विश्वतिकी जिलेका वी अपना इक्टोब जिनमत्त्रों जन्म। वर्त और आवार्त निवन्नेवरों जनम पुर बनाकर इस मुख्यीका सत्तरमें बाल्यमे पर्वता पुत्रमें वीक्येननपत्रम् तक ब्रिक्ट बॉबू देश तक बोर परिवनमें केर देशकी दिवाने महानानर पर्वम्त बोग किया। पैना बरीत होता है कि बहिवती मृत्यु राज्यविमोक्के बनलके बन्न

ही ही बनो भी क्षत्र वास्त्रभक्ष इस पतिवारी संबर्धकरा अपन वास्त्रीपत नरेंच और नंत्रवृति राज्यका प्रथम स्थानी बक्का झीटा बार्ड वाक्य कॉर्नुम्बर्ग प्रवर (१८९-२५ 👔) या । बहु वरेश गड़ा पराक्रमी 🔫 मनीत्वा का । बावति बाव वचके तिरत्वर कुद चक्के रहे । मंत्र अवि वेकोमें वर्ष 'शायकनी अनवे रिए दालानि' नदा है। वक्ते स्टब्सि मानक

धंतम्ब हो वर्षे । सन्दाने वाम-स्थानको नियम करने वंतवादि ९६ की

स्थानमें एक काम जिलावन एवं बैनरीज नरमामा जो विद्या और वंस्कृतिरा केल और निर्देश्य गुरुशोना समाध-स्थान या। यह मन्दिर नाहरी बनवाना नया बठाना चाठा है। बक्के क्लाइन्त बबका पूर किरिक्याना क्षितीय राजा हवा । इक्ते बस्ते रिश्तका प्रधानवस्य क्षिता । नह गीति-बारवर्गे निरुपात का और वश्चककृत वैवेदिक तुपोरट बचने होना क्लिके की । इनके दीव पूर में-इरिजर्बन, वार्तवर्तन और कृष्णवर्तन् । हरि वर्षनुत्रो निराका क्षाराविकार विका । क्वले क्रीकारका परिलाव करके क्षणाव (क्षामनपुर ना वाक्यनभार) को राजवानी बनाया। अपने बाई वार्ववर्धनको सबसे देकर दिवनका बाहक बनावा विवर्ध वैवर्धकरी नेकर बाला प्रारम्भ हुई । बूकरे बाई कुम्मनर्मनुको बैजार विवरण बाक्क बनाना जीर करने नकती नैपार काला जाएन्य हुई । कुलाने कुछ कमाने किन् पेकरपर जी अधिकार कर किया फिन्दू अस्त्रन विद्ववर्रण और उसकी

-

भारतीय इतिहास एक ग्री

त्र स्कन्दवर्मन् पेरूरके गगोंके सहायम रहे और उन्हें उन्होने फिरसे अपने ाज्यमें स्थापित पर दिया । मूलवंशमें हरियमेन् अपनी धनुविद्याफे लिए सिद्ध था। युद्धमें उसने हावियाका प्रयोग किया और राज्यको समुद्ध ानाया । उनका पुत्र विष्णुगोप नारायणका विशेष मक्त या और जैन-ार्मकी कोरसे उदासीन था। उसका पुत्र पृष्यीगग जीघ्र ही मर गया। ष्टिकीगगका पुत्र तदगत्र माघव या भाषत्र तृतीय एक महान् धायक या। -उसका विवाह कदम्बनरेश नाबुत्स्ययमन्की पुत्रीके साथ हुआ या । यह ध्यम्बक और जिनेन्द्रका समान रूपसे भक्त या । मतूर तालुकेके नीनमगरू स्यानमें एक प्राचीन जैन बमदिके भग्नावदीयों में प्राप्त इस नरेशके १३वें वपमें लिखाये गये ताम्रशासनसे प्रकट है कि उसने परव्योलन ग्रामके अहत् मन्दिरके लिए दिगम्बराचार्य वारदेवको कुमारपुर ग्राम तया षहत-सी अय मूमि प्रदान की थी। लूइस राइसने इस टान-प्रथकी तिथि ३७० ईं निरिचत मो है। सम्भवतया इन्हीं वीरदयने दिहारके राजगिरियर स्यित सोनमण्डार गुफामें भी जिनमृत्तियाँ प्रतिष्टित करायी यों जैसा कि चनत गुफामें प्राय उसी कालके एक शिलालेखसे सूचित होता है। इस राजाका एक दानपत्र ३५७ ई० का तथा दूसरा ३७९ ई० का प्राप्त हुआ है। अत इसका धासनकाल लगमग ३५५ ई० से लेकर ४०० ई० तक चळा।

३री ४यो घताच्दोमें गंगनरेशोंके द्यासनकालमें कई प्रशिद्ध जैनासायें हुए। उच्चारणाचार्यने कसायपाहु के यतिवृपम-इत चूर्णासूत्रोंपर वृत्ति लिखी, शामकुण्ड और बप्पदेवने भी आगर्मोपर टोकाएँ लिखीं। कृषि-मट्टारक और नित्दमुनिने पुराणप्रन्य लिखे। ये नित्द मट्टारक पेरूर विद्यान् विपयके गगराज आयवर्मन् आदिके गुरु थे। इसो कालमें जैन विद्यान् शिवशमें कम्मपयि और सलक नामक कर्मप्रन्योंकी रचना की। यशोमद्र, प्रभाचन्द्र और श्रीदत्त (जल्पनिर्णयका कर्ता) आदि विद्यान् भी इसी कालमें हुए। ४०० ई० के लगमग हो कविपरमेष्ठि या कवि

परवेश्तर ध्यमे वेशायार्थं हुए वो अबह बाताके जरून नमें नाने करें है भीर किसूनि पंत्रकृतनकार निरित्त सामाने वादर्गर्वकार वात्रकारण बात की धारूपाए (विचतिककारणुक्तारीय) किसा । परिका सामान्य पुन बातिनों केहिल सहस्यात्रकारण को वर्ष्ट्र सामान्य का सामान्य प्राप्तिकारण केहिल सहस्यात्रकारण तरकारणि वालिये वा वाली विकास सुनुष्ठे क्वार स्वाप्ती वीची कीटान्य सिंधु मात्र जा। विकासोंनी वोच कोटीन वहां कराई और वार्ष्ट

शासन बहुत रीर्वकासीन सूचित किया क्या है। सन्दर्भ Y ** ४८९ है। वर्तन जरने राज्य दिया। बहु तरेंच बहा पराक्रमी की मर्गारका था । सबके बुद वैन्यवार्थ विजयकोत्ति वे जिनकी देख-देखरे इन नरेबको विकानीना हुई थी। कह ४९ ई में वर्ज बले शेलमंत्रक तामबादल-दारा इत विजयमीतिको मुख्यंत्रके चलाव्येर बारि पुरुषोन्द्राच स्थापित करमुरके व्यक्ति मनिरर बीर निहारके लिए बान दिया था । ४४१ ई. में करने इक्त्रोड़े शामकानय-वाच एक मन व्यातास्त्रको सल विश या । इत अधिकार्वे स्वत्रस्थितम व्यापनी मारारा भी क्लीन है। यह सम्बन्धि वैदानार्व कर्मकी क्रोक-विकास (४९८ है) में वरिव्यक्ति विद्युष्टिंग ही महील होगी है। इन ४६६ हैं हैं विशिक्ष प्रवासी वावनसमारकी प्रविधे केंद्र बढरिके जिस् राल निष्य या जिल्ली सुरक्षा नर्पण वालापर यानी वाती है। नुरविक दिवस्थरावार्त देवसको स्थापाद (४९४-५९४ है) को बढ़के जानो पुन कुपान शृहितीलका विश्वक लिएका तिना वा वानिकेवीने वरिनीतको 'निवृत्त्ववीने व्यव मुख्यास्य साली कीर श्रीरवारवर्षे बाठि-सरस्य एवं वर्णवंत्रालीला प्रवान बंदणक विका है। एक स्वापने किया है कि इस गरेवके हरवने महान विशेषके पर अपन मेरके बनान स्वित् में ।" नेक्स्के दिनावन नुवादको येन नर्नारके

तथ क्षेत्र जिल्लामधीको को अस्त्री काम विकेशी । प्रमान कोर संगर्न

प्रतिस्पर्घाके बीच भी उसने अपने राज्यकी प्रतिस और समृद्धिको अक्षुण्य रसा। उसका प्रासन प्रबन्ध भी उत्तम था।

उसका पुत्र द्विनीत कोगुणी (४८२-५२२ ई०) गगवधवा एक महान मरेश या । यह वडा प्रतापी, महत्त्वाकांक्षी, बोर, विद्वान्, साहित्यरिक कोर गुणियोंका आदर करनेवाला या । स्वगुरु आचार्य पूज्यपादका पदानुसरण करनेमें वह अपने-आपको धन्य मानता था। महाक्य भारवि भी कुछ समय तक उसके दरबारमें रहे और उसने उनके किरातार्जुनीयके १५वें सर्गपर एक टीका भी लिखी । गुरु-द्वारा रचित पाणिनि ब्याकरणकी घट्यावधार टोकाका कानड अनुवाद और प्राकृत वृहत्कवाका सम्कृत अनुवाद भी उसने किये बताये जाते हैं। कोगलि नामक स्थानमें इसने चेन्नपार्वनाथ वसदिका निर्माण कराया था। उसवे कई ताम्रपत्र मिले हैं, गुम्मरेडिपुर ताम्रशासन उसके राज्यके ४०वें और सम्भवतया अन्तिम वर्षका है। कन्नड भाषाके प्रारम्भिक छेखको और यवियोंमें भी दुविनीतकी गणना है। चालुवयवीर विजयादित्यके साथ दुविनीतने अपनी बन्या विवाह दी यो किन्तु चण्डदण्ड त्रिलोचन परलवके साथ युद्धमें विजयादित्यकी मृत्य हो जानेपर दुर्विनीतने उपन पल्लव-नरेशको बूरो सरह पराजित मरके बदला लिया और अपने दौहित्र जमसिंह रणराग विष्णुवर्धनको उसके पिताके सिहासनपर स्यापित किया। भूजग पुम्नाटकी पौत्री और स्कृत्द पुष्ताटकी पुत्रीके साथ अपना विवाह करके दुविनीसने पुत्राट प्रदेशको दहेजमें प्राप्त किया था। अपने पराक्रम और विजयोंके द्वारा उसने पर्व पश्चिम दोनों दिशाओंमें राज्यका विस्तार करके साम्राज्यकी स्थापना की। यस्तुत अपने समयमें दूर्विनीत गंग दक्षिणाऽयका सर्वीधक श्रविनशास्त्री सम्राट्या। पुत्राट देश जो उसके राज्यका अग हो गया था, जैनवर्मका प्राचीन कालसे ही एक प्रमुख केन्द्र था। जैनाचार्योका एक प्रसिद्ध सघ-जिसमें हरिबदाकार जिनसेन हुए हैं, पुनाट सचके नामसे ही प्रसिद्ध था। दुर्विनीसके प्रधान धर्म एव विद्यागुरु पूज्यपाद देवनन्दि जैनवमके सर्वमहान् वाचारिके हैं। वेनेत्राधावाद, वाचावनाइव धाधावाद, वांदियें, बार्वाद्रिक बादि क्षेत्र बहुरपूर्व क्षायोग क्यूंने एका वो विकास राध्य काहरण काम बायुर्व, क्ष्यापण बादि विशिव्य विद्युर्वें निरमात के। वेद्याप्रमाणे तमस्याणे प्रमास केन व्यक्ति ने बाता वे बोट यह बंदाया वन वामने प्रीक्त आरावें बाता प्रमास प्रमुक्ति एवं बाद्युर्वें क्ष्याप्त काम कामने प्रीक्ति आरावें बाता वाच्या प्रमुक्ति की प्रमास विद्युर्वें क्ष्याप्त कामने विद्युर्वें क्ष्याप्त कामने व्यक्ति की प्रमास विद्युर्वें क्ष्याप्त कामने व्यक्ति की प्रमास विद्युर्वें कामने विद्युर्वें क्ष्याप्त कामने विद्युर्वें क्ष्याप्त कामने क्ष्य कामने क्ष्याप्त कामने क्ष्य क्ष्याप्त कामने क्ष्याप्त कामने

दुविशीतके सो पुत्र वे---गीलबीट स्टीट मुख्यर । दुविशीतके सामाई मुख बनव यस पोत्रवीरने शास्त्र किया प्रतीत होता है। स्ट्राप्ट मुख्य (भोरकर) राजा हवा । इतने ५५ ई के कनमन मैसारीके लिस कुष्कर बर्कात नामक जिलाकाच्या निर्माण कराया था। कुष्करका पूर मीरिक्स वा । इनके बक्पने चानुकांकि नृद्धिनतः जातके कम्मूच करान नेपका प्रान: सन्त हुआ और नेपछन भी पूछ इतप्रव हो नेपा। प्रा धराधी दो प्रतिकर्ता की कुछ चोक्र धारतूकारी क्लिके नवधन मुस्तिकर बरान्त हवा का बीर इनसे निन्तुसम्बो कन्ता विकास नरकामधे का थी । बोदिलयके बनार्ये वंदीको देवर और वेदार प्रान्तालीका बन्त हुनी और बोबाक्टर किरवे चलकार याचाका विकास हवा । इसी वर्ग बोबाब्दे बुक र्यन शक्ति पत बने बीए सबूचि शक्तिक बेक्टेंस्पी स्कारना को रामा नहीं अपना अंतर्वतर् मासू किया । बोलिशनके परमाह बक्का कोड एक प्रतिक्रम का प्रकार प्रतिकृत राजा हवा। बचने शतक नरेयानी नरामित करके बच्छे एक बहुनुन्य द्वार ब्रोता दिवमें बगोरन मानवा प्रतिक राज बचा था । बन् ६३४ है के बच्छे देशपूर सालपते बतना विश्वनत होन्य तुनिय होता है और बढ़ भी अब होता है कि बक्का बालना बावर्वको साथा विकास विकास को लिए को लिए की जिल्ला या । यह राज्य मध्तप्रदेशके क्षत्रमी पुरुत्तेन मुनिका यो मच्छ रहा महीच होता है। मुरिक्रम हा बत्तराविकाधी चवका क्रोप्र बाई क्रिनगर अपन

नवकाम जिप्टांत्रय पृथ्वीकोंगुणि हुआ। इसे नृद्धावस्थामें राज्य मिला था। यह राजा परम जैन था, सन् ६७० ई० में इसने जैनमन्दिरोंका निर्माण कराया था और जैनगुरु चन्द्रसेनाचार्यको दान दिया था। ये आचार्य सम्मवतया पचस्तुपान्त्रय शाखाके ये और स्वामो बीरसेनके दादागुरु थे। सन् ७०० ई० का शिवमारका हीरेमय ताम्रशासन मिला है जिससे गगोंके पूर्व इतिहामपर प्रकाश पहता है और जिसमें गग दुर्विनोस और उसके गुरु देवनन्दी पूज्यपादका भी उल्लेख है। ७१३ ई० का उसका एक स्वय अभिलेख मिलता है। उसके उपरान्त उसके पुत्र राचमल्ल एरे गगका अस्पकालीन शासन रहा प्रतीत होता है, तदनन्तर शिवमारका पीत्र श्रीपुरुष (७२६-७७६ ई०) राजा हुआ।

द्विनीतके उत्तराधिकारी और श्रीपुरुपके उपरोक्त पूर्वज गगनरेश चालुक्य नरेशोंके प्राय अधीन रहे, किन्तु उनके राज्यविस्तार एव राज्यकी शक्ति और समृद्धिको विशेष क्षति नहीं पहुँची । चालुश्य नरेश गंग राजाओं-का बहुत आदर करते थे । यह युग शान्तिपूर्ण रहा, अनेक विद्वान् जैनाचार्यो-ने ६ठों-७वीं शताब्दीमें जैनघर्मकी प्रभावना की और महत्त्वपूर्ण साहित्यका सृजन किया। गगराज्यमें निवास करनेवाले अथवा गगनरेशोंसे सम्मान और प्रश्रय पानेवाले इस कालके जैनगुरुओमें निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं-पूज्यपादके शिष्य गुणनन्दि शाक्त्यह्म जिन्होने जैनाद्र प्रक्रियाकी रचना की (ল০ ५५০ ई০) नवशब्दवास्यके कर्त्ता वक्रग्रीय (ल० ५७५ ई०), त्रिलक्षण कदघनके कत्ती पात्रकेसरि (५७५-६२५ ई०), नवस्तीत्रके रचिवता और मदुरामें द्रमिलसवके सस्यापक वकानन्दि (५८२-६०४ ई०). समितिसूत्रके टीकाकार सुमिति देव (ल० ६०० ई०), विव दण्डो द्वारा प्रशमित तथा चुडामणि शास्त्रके कत्ती श्रीवधदेव (६००-६२५ ई०), ज्योतिपाचाय गर्गाचार्य और ऋषिपुत्र (६५० ६०), पचस्तुपान्वयके गुरु वृषमनिन्द (६५० ई०) तथा चन्द्रसेनाचार्य (६७० ई०) आदि । परमात्मप्रकाश आदिके कत्ती अपभ्रशके महाकवि जोइन्द्र, सूलीचनाकपाके कत्तां नहाकेन वरानवरित्रके रचनिता नहानिहानन्तः नव्यागदशार रनिवेत, बन्दुरीपार्जाखके वस्त्री क्याचीतः विजनोत्तरा शैकाके वस्ती बन्दरानिकर्तुरी, बारमानके वर्ती नुबारतन्ति वर्धवाननुरावकार जिसकेन प्रथम दुवा-टर्नेग्री नामबाबाके क्यों कवि क्लान्त्रव यथा बीस्वेनके मुख्यार्वर्त्तर श्रमादि विद्वाल मी इनी कालने हुए । इनके हुछ उदार मा मध्य चारा की पढ़ें मतीब होते हैं। वंतररेक अं कृत्य कृतरक कपूत्रवंकर वृध्यीवीमृत्व वरम्यानी

(७१९-७६ 🜓 के बोबनाचीत बाहनपानमें नंबरात्म बन्धि की चरन बीवाफो नहूँन नवा । इत क्षमक बनोरिश राध्यमुद्र मरेख कर्मी यांका बढ़ावेरी नकम में बीर पानुबर बचाइ यक्के बहारीने बंदात ने कारन वंगीको साधिक बाद अस्ती बन्धि और तमुद्रिक बहुनैका अस्तर तिल बचा । श्रीपुरम योज्य श्रीक्षेत्रराजम दर्ग शर्जारना बावक वार्र शक्तमी और राष्ट्रकृति कड़े कई युद्ध भी करने वह । सन्कर्मको यो करने बुरी तरह राग्रीस्य रिना, बुढने पत्त्वस-नरेक माग्र स्वा और बहरा रामका यन्त्रको हात करा । राष्ट्रपुर्धी प्रदार्शना वी योगुरा बीरता बीर बुबिमलाने बाब निवारत करता रहा । बेस्टुन्बिके पुढाँ सद्भारती बायरायको क्यारे वराजित निन्दा व सराजनावृत्ता रिजित वास भी बक्के अपीन हुआ। विकासि मुद्रवें करर विके अनुवार पाकर-गरेके की बराबिया करवेरर बडाने बराबादि क्यांति बाला की। बीराबार, बोर कुर्व और शक्त करी करने सन्य विकास में और करका राज्य मीराज्य न्द्रमादा । नामकनरेम राजविषके पुत्रके दान जन्मी जन्मना विच्ये करके श्रीपुक्तने पान्कपति येथी क्षातन्त्र वसाया और फकरवक्त पान्यमं एका

में वैधोरर को अरवाचार रिक्के सक्तोंने ही पहे में क्यान करा हुगा, और काफे बाव ही वैदोनो प्रतिक क्षत्रिहितक जनुष्टितीका पुनवस्थान हुना । श्रीक बाराफे कई वर्ग-मेंड क्रमा इस बरामें बमारन रूपे परे मीर बन्दी रक्देरे सेन विद्रालींना हान निर्देश बनवे ना । विकास्तानपूर्ण

सादि कई स्थानोंके भग्न जैनमन्दिराका जीर्णीद्वार हुआ। गंगोंके सधीनस्य वाण नरेश भी जैनधर्मके भारी भवत थे। ७५० ई० के लगभग बल्लमरुई-में जैनमुनि अञ्जनन्दिने आचार्य भानुनन्दिके शिष्य और वाणनरेशके गुरु देवसेनको मृत्ति स्यापित की थी । इस समयके लगभग ध्वणनेलगोल प्रवास्ति-के आचाय प्रभाचन्द्र एक महान् धर्मप्रभावक एवं राजमान्य गुरु थे। विमलचन्द्र, बद्धकुमार सेन, परवादिमल्ल, तोरणावार्य, पूज्पसेन, अनन्त-कीत्ति प्रथम, वृहद् अनन्तमोर्य, महान् नैयायिक स्वामी विद्यानन्दि आदि इस कालमें कर्णाटक देशके प्रसिद्ध जैनगुरु थे। नर्रावहपुरा ताम्रशासनके द्वारा इस राजाने तोल्ल विषयके जिनमन्दिरको दान दिया था। ७७६ ई० में उसने श्रोपुरके पादवं जिनालयके लिए दान दिया, सम्भवतया इसी अव-सरपर उक्त जिनालयमें राजाके समक्ष हो स्थामी विद्यानन्दिने अपने प्रसिद्ध श्रीपुरपार्श्वनायस्तोत्रकी रचना की थी। इसी वर्ष इस नरेशने निर्गुण्ड प्रदेश-में स्थित योष्णिलस्थानके लोकतिलक-जिनालयको कई ग्राम प्रदान किये। इस जिनमन्दिरका निर्माण कदिचन नामक राजमहिलाने कराया था जो पल्लवािवराजको पुत्री थी और निर्गुण्डराज परमगुलको रानी थी। इस निगुण्डराजक पिताके गुरु विमलच द्वाचार्य थे जिन्हाने इसी गगनरेश श्रीपुरुप 'शत्रुभर्यकर' की राजसभाके द्वारपर परवादियोंके प्रति शास्त्रार्यका खला चैलेंन लिखकर लगाया था । इन्होंके किसी शिष्य-प्रशिष्यको उपरोक्त दान दिया गया प्रतीत होता है। महान् तार्किक स्थामी विद्यानन्दिका साहित्यिक जीवन और आचार्य-काल मी इसी वर्षसे प्रारम्भ होता है। श्रीपुरको ही जन्हींने अपना निवास स्थान बनाया या वर्षोंकि इसी समयके छगमग उस स्यानके निकट शुगेरीमें शंकराचार्य और उनके शिष्य सुरेश्वर अपने वेदान्त दर्ग न एवं नवीन धार्मिक आन्दोलनकी प्रधान पीठ स्थापित कर रहे थे। विद्यानिन्दिके प्रमाव, प्रतिमा, सिंहण्यूता एव सौजन्यके कारण ही शंकरा-चार्य और जनके सगठनका सारा कोप वीदोंको सहन करना पडा, जैनोंके - भाष उनका सीहार्द धना रहा।

राज्यका परित्यान करके और पुत्र शिवकार दियोज वैशोधकी विश्वका देशर मैंगनुदर्जीत निश्च क्याबीन माशको क्याने वर्गवायामें वैश मील निजाना । सम्बन्धना ७८८ ई के सम्बन्ध बस्की मृत्यु हुई । मीपुराने बीन पुत्र में, बिदमार दिवीय मैंबीत मुख्यार एवरल बीर विकासित । निगर्क बरधान दिवसर दिवीय सेमीत (७३६-८१५ ई.) यारा हुन्छ । बहरत बनव बुझ हो पका बा तिशके राज्यकालमें क्रेप हैं में से नद पुरुवरका बालीय धावक था । बच्छे तिहानतरर बैटी ही एडिं कूरोर्ने पृक्ष-पुत्र हुना । प्राृष्णे बरने बाई बोल्स विकेशने करण धार (त्यक दिया। फिलार बोरिन्दर्श सहावर का बंध मुले वेपराज्यार बाहतव किया होर ७८४ है। में दिशवारको इराकर वादी कर किया । जनका अधिकांक औरन राज्यक्टीके क्लीनुहर्ने ही बीटा । बारमबँ कटप-८८ है है अबसा कुछ बाब बंदसाविका बालक पा. वद्वारान्यं विरमारका पुत्र कृष्यंत्र नार्यनद्व अपने शिवाकी ओरवे याग करता रहा । बबका बाला दुलमार एक्टर बबना सहस्वक मा । कर्प र्वे में पाना प्राप्त करनेपर राष्ट्रकृष्ट बोल्न्ड कुरीबने व्रिवंशासी बुना कर दिशा और इब पराक्रमी चंक्ने शतानेता राष्ट्रकृत पानुस्य और हैर्सीके निय-बंबकी क्यांतित किया। बेरिके विद्या गोक्सिकी बहावता की और परकारिये भारता निय बताना रिच्यु शास्त्रकृतीने वहे फिरहे बन्धे बना किया। ८१ वे के बनवर बढ़ फिर मुख्य हो बचा। करने शीक्त-प्राप्तने वक्ते पुत्र गुत्रराज बार्रावाह और बाई दुग्तवारणी कृत् ही नवी मधीय होती है. बीर बल्यन क्योंने चनला टीक्स बाई विनय-मिल प्लिफिन बाका बाराम प्या । **वटा ८१५ ई. में वि**वसारमें कुनुसर बन्ता नाई निवसादित राजा हुवा क्लिनु दुल्य क्वरी नृष्ट ही क्या और कवका पुत्र राजनात सरकात्व प्रवस (८१५-८५३ ई.) मून नेपधन्तका त्यांनी हुआ । बतके बाव-ही-बाव विषयारका वितीप भारतीय इतिहास । एक घी ***

बन् ७३० ई. में ५. वर्षेत्रे अत्रर राज्य बन्धेके वररान्य मीतुरसे

पुत्र और मार्रीतहका छोटा माई पृथ्वीपित प्रयम अनराजित मी राज्यके कुछ भागपर अधिकृत हुआ और गंगवत फिर एक बार दी शाखाओं में विमक्त हुआ।

इसमें सन्देह नहीं कि शिवमार मारी योदा और पराक्रमी था, जैन-धर्मका भी वह महान् संरक्षक एवं मन्त या। वह स्वामी विद्यानन्दिका क्षात्रयदाता या, उसका पुत्र मारसिंह और मतीजा सत्यवाक्य भी उनके भनत थे। इन गगनरेशोंक नाम-सकेत विद्यानित्यके विभिन्न ग्रन्थोंमें पाये जाते हैं। शिवमारने श्रवणवेलगोलके छोटे पर्वतपर एक सुन्दर जिनालय भी वनवाया या निसे शिवमारन वसदि कहते हैं। ७९७ ई० में युवराज मार्रावह होकत्रिनेत्रके सेनानायक श्रोविजयने श्रीविजय नामक सुन्दर जिनालय राजधानी मा यपुरमें बनवाया या, उसके लिए पुवराजने विपुल दान दिया घा और कृन्दकृन्दान्वयके गुरु प्रमाचन्द्रका सम्मान किया था। ८०० ई० में युवराज मार्राधह और उनके चाचा दुग्गमारने अजनेय नामक सुन्दर मन्दिर बनवाया था। गजम दान पत्रके द्वारा इसी समयके छगमग इस शासकने जैनगुरुशको और भी बहुत-सा दान दिया या तथा नन्दि पर्वतपर आचाय कुन्दकुन्दका स्मारक मो बनवाया था। शिवमारके प्रातीय शासक विट्टिरस और विजयसक्तिरसने भी उसी कालमें जैनमन्दिराँका निर्माण कराया और उनके लिए दान दिया था। ८०१ ई० में वसवट्टिके ईश्वर जिनालयका निर्माण हुआ। ८०२ ई० में राष्ट्रकूट सम्राट् गोविन्दं तृतीयने गंगराज्यमें मा यपुरकी उपरोक्त श्रोदिजय बसदिके लिए मन्ने दान-पत्र-द्वारा दान दिया और उदारगणके जैनगुष्झोंका सम्मान किया। ८०७ ई० में राष्ट्रकृट गोविन्दके भाई कम्भने चामराजनगर दानपत्र-हारा अपने पुत्र राकरगणकी प्रार्थनापर सालवननगरकी सोविजयबसदिके लिए फ़्त्दक़्त्यात्वप्रके क्रुमारनन्दिके प्रशिष्य और एमाचार्यके शिष्य वर्षमान गुरुको दान दिया था। गोविन्दके कदव दानपत्र (८१२ ई०) से विदित होता है हि उस समय गगराज्यमें राष्ट्रकूरोंका प्रतिनिधि चाकिराज या निष्ठको आर्थनार राजाने बोक्कापके बोकनाम्बरके क्वि वार्षेत्र वेषके पुर वर्षकीरियो देशा दिया था । विवतार सारी नियम बीर हुँ या पर पात्रकारिके करियुक्ता अकलका परिवास बीर वार्यक क्याचा करों की वा ।

मुक्त व्यापने विश्वपारण क्षाव्यविद्यावे प्रमुख्य क्षाव्यवे में विश्वपित विश्वपित व्यापने विश्वपित विष्वपित विष्वपित विष्वपित विष्वपित विष्यपित विष्वपित विष्वपित विष्वपित विष्यपित विष्यपित विष्यपित विष

पुष्पामानि प्रभावन वास्त्यामके स्वतंत्र हं संबंदाये स्तित और स्वतंत्रका विद्यों करक साम्य हुता। सक्ते स्वतंत्र संवतंत्र के स्वतं सं प्रमानि निर्मत यदि संगादिक स्वान्त्रका यदि प्रमुक्ति साम्य स्वतंत्र, भीर हुत्यों और सम्बद्धार सर्व नीमार साम्य स्वतंत्र हो । सक्ते साम् स्वतंत्र नार्वात्र वर्षः क्षत्र स्वतः, गीरमानियास्त्र स्वतंत्र स्वत उसकी बहुन जबब्बे प्रतन्त्र नोलम्बराजसे विवाही थी । अपने पुत्र मुक्ताज बूटुन (मृतुन) का विवाह राष्ट्रकृट अमोपवर्षको काया चाद्रवेलकाके साय करके उसने राष्ट्रकृटोको भी मित्र बना लिया, यह मैत्री स्यायो हुई। कूड-सर जिलालेलमें इस नरेशको 'परमपूज्य सर्ह्युम्ट्रारकके चरणकमलोंका भ्रमर लिखा है, उसी चिलालेखमें युवराज मृतुगेन्द्र बुत्तरस गुणतुरंगको भी परम जैन लिखा है। उसी चिलालेखके निकट राजन् मीविमार्गकी जैन सस्लेखना-का प्रस्तरांकन भी मिलता है जिसमें उनका विस्वासपात सेवक अगरस्य उन्हें सम्हाले हुए बैठा है और सम्मुख धोकमग्न मुक्राज खड़ा है। इस राजाने अनेक युद्धामें बीरताके साथ विजय भी प्राप्त की बतायी जाती है. सम्भवतया वे युद्ध इसने राष्ट्रमुटोकी सहायताके लिए किये थे। नीतिमार्गन ८५३-८७० ई० तक राज्य किया । युवराज भुगुगेन्द्र सम्भवतया विताके समाधिमरणको देखकर विरन्त हो गया था, अत नोतिमार्गके परचात् चसका दूसरा पुत्र राचमल्ल सत्यत्रावय द्वितीय (८७०-९०७ ई०) राजा हुआ । यह भी सम्भव है कि भुसुगेन्द्र राजमल्लका छोटा माई हो और वयों कि वह स्वय निस्सन्तान पा अत उसके समयमें ही वह पुनराभ कहलाया हो । राचमल्लके धासन-कालमें भुतुग कोगुनाह और पुन्नाहका धासक रहा प्रतीत होता है। इस राचमल्ल सरपवास्य द्वितीयने सन् ८८७ ई० में बेल्र ताम्र शासन-द्वारा पेन्नेकडगके स्विमित सत्यवाष्य जिनालयके लिए शिस-मन्दि सिद्धान्त भट्टारकके दिष्य सर्वनन्दिको बारह ग्राम प्रदान किये थे। इन दोना ही माइयोंने वेंगिफे चालुनयों, पाण्डघों, पल्लवों आदिके साथ अनेक युद्ध किये और प्रधासनीय विजय प्राप्त की । राचमल्लके जीवनमें ही भूतगको मृत्य हो गयी अव भुतुगका पुत्र एयरण ऐरेयगग नीतिमार्ग हितीय सत्यवाक्य महेन्द्रान्तक युवराज हुआ और ताऊकी मृत्युके बाद (९०७ ई० में) दक्षिण मारत [१] 289

पर्वतपर गुकाएँ निर्माण करायों और उनमें जिन-प्रतिनाएँ प्रतिष्टिन करायों। उसके गरु बालचन्द्रके शिष्प आयंतन्दि थे । सम्मयतया यही प्रशासनास्तिनी-कल्पके रचितता थे। राचमलके बाद ऐरगंग नीतिमार्ग प्रथम राजा हुआ।

राजा हुआ। बनका विकास चानुकक-धानपुत्राचे सकत्वाके बात हुवी था। भरतवीने रिका कुत करने करने अनेत वर्ग बोटी है। इन सांग्रे मुख्युत्ति और ओरस्तुके निय-मन्दिरोंको दान दिने थे । वनका दुर हो कत्तराधिकारी करियमेर्डेन नर्रान्ड बत्यकारन का इसमें मीहे कमर है 1321 (841, 52 1 & neuer gurt) um gli unt i unb ge unter क्षेत्री विजयसम्बद्धान्य में । इत राजाके की पूर में, यामाना बारकार तुत्रीय और मुनुबर्गन समेत । राजस्तन बालवास्य तृतीय ९२ के ९१८ हैं क पत्रा प्रा: इक्ने वेरिके नाधुक्तीको सुद्धने नप्तांका किया। रणे तपर राजुन्द इच्य कुरोवने राज्यर प्रतिराधे कृषक द्वारा और नंद राष्ट्राच पर की साहत्वय किया। बुक्रमें राषतत्व्य साध क्या । शहुराज्य राज्युकी की बहानको प्रवत्ना जाई बुनुन दिलीय संग बंदैन राज्य हुना। ९१८-५९१ हैं। एक कार्य राज्य किया । सुनुषका निवाह राज्युक बसीववर्ष क्टीनकी पुरी और कृष्य दुर्गावकी नहीं नहत देशके कान हुआ का करका पूर्व रिशाइ सम्भारती नायक पानपुत्राधेने हुआ था । राजपुट पानपुत्राधि बार बबने पुनियेरे, बेक्सोबा, विजुक्त बने मारि विवय बोसने मारा कि वै । यह राजा को बक्त पराक्रमी का अतेल महीवें दक्षणे विजय हान्य की थी । बहु कुछ प्रमासकाती चालक का और बैनवर्गका परम बक्त की वैनवन्ति और पुरर्शको करने समेव दान दिने है । वैनदिवन्तना है। बहु ब्रीवा वा और परवादिनोंदे बहुनाई भरतेश में क्षे वान की कृत बीज विदानके बाव बनके पालगारके बनकेब विकटी है। वर् १३८ के बच्छे पूरी राजापंड पता पकता है कि बनकी एक सन्त रागी रिवसन्त्रिकाने ऐसी क्षत्र सैनसानिकानोंके किए भी बारसामें जीन में पर राम वर्गाता दिया था। करते बैरतुर शारीर परिकास क्या समार्थ मीरारार्ष् पार्व-कार्रीका भी प्रतिक हैं। अबके एक सम्बन्ध कार्यने चारियर है। अनु ९५ हैं के बाजूर शाननमें बुगुन-प्राय कोजीमें विवय और वनके देगानांत नीव राज्युकारके भारे नावेका अन्तेय है। भारतीय इतिहास इक रहि

इस लेखसे यह भी प्रतीत होता है कि सम्भव है अपने भाई राजमन्ल तृतीय-की मत्यमें उसका भी हाय रहा हो । उसके कुष्टलूर वाम्रपत्रसे प्रकट है कि उसके परिवारके अप व्यक्ति भी जैनधमके मक्त में। राजाकी बढ़ी यहन पमन्त्रेने, जो वहा विदुषो यो एव पीदियर दोरपय्यको रानी यो भीर गुणचन्द्र भट्टारक तथा बार्षिका नाणव्येकन्तिको शिष्या घो, तीस वर्ष पर्य त जैन आधिकाक क्यमें तपस्या को यो और अन्तमें समाधिमरण-द्वारा उसकी मृत्यु हुई थी। रात्राके हृदयपर इस घटनाका प्रभाव पढा। बुतुगके स्वयके तथा उनसे सम्बन्धित अन्य भी कई अभिलेख मिलते हैं। बुत्ग दितीयके पहचात् राष्ट्रकृट-राजकूमारी रेवासे उत्तन्न उसका पुत्र महलदेव (९५३ म ९६१) राजा हुआ। उसके अभिलेखोमें उसे 'जिनपदभ्रमर' लिखा है। इमका विवाह अपनी ममेरी वहन, राष्ट्रकूट कृष्ण तृतीयकी बन्या बीजब्बे-के साथ हुआ था और उसके उपलक्ष्यमें मुख्लका एक राजच्छत्र भी प्राप्त हुआ था। उसकी बहन सीमिदेवीना विवाह राष्ट्रकूट कृष्ण तुर्वीयके पुत्रसे हुआ था जिससे इ.ट. चत्यका जाम हुमा। राष्ट्रकृटोंके साथ कई पीढ़ियोंस चले आते इन विवाह-सम्बाधींकी भ्रष्टलाने गगवंशको शक्ति काफ़ी बढ़ा दी थी और इसोस गगनरेश वैंगिके चालुवर्शेको बार-बार छका सके, पल्लवोको दवाये रख मके और चोलाकी बढ़ता हुई धावतका निवारण कर सके।

मरुक परवात् उसका सौतेला भाई मारसिंह पत्नवमत्त्र नोलम्बकुलान्तक गृत्तियगग (९६१-९७४ ई०) राजा हुआ। उसका राज्यविस्तार बहुत वहा था। यह इस बधका अन्तिम महान् नरेश था।
राष्ट्रकूट गगोको अपना अवीनस्य सामन्त समझते थे किन्तु वास्तवमें इस
कालमें गगनरेश ही राष्ट्रकूट-साम्राज्यके सरक्षक हो रहे थे। मारसिंहके
गगकन्त्रपं, गगविद्याघर आदि और भी अनेक विरुद्ध थे। उसने मालवापर
आक्रमण करके सियक परमारको पराजित किया। अवणवेलगोलके कूगे
प्रह्मदेवम्तम्भपर उस्कीणं इस नरेशको प्रशस्तिसे पता चलता है कि उसने

इप्य शुरीवके लिए बुजर वैचको विजय किया हव्यके बक्षी चतु. स^{त्यका} समा क्षिमा सिम्पनप्रदेशके किरातीको क्रिमानिसमा क्रिया मामानीती नक्रमधीने नटककी रक्षा की - विस्मादार विरक्षमते कुढ किया - वननारीने प्रकारको गराज्य किया, नानुसँचा रमन रिया कर्णनीके कुछ प्र^{हेंसे} इत्तानत निया चनर राज्युत्रार नायना बाम किया नेर कीड चाराव और स्त्वकोधा दश्य विशा चाकुल विकासितका अन्त क्रिया शस्त्रीर। इत निजयोग्य कामेन कारी हुए केवारें किया है कि मार्रावहने स्वेतवर्वत अनुस्य क्रमीश किया था। और नई स्थानीमें क्रमीय जिल्लानिस वर्ग ^{मार्ग} स्टब्ब निर्माण कराने में । एक प्रकार मस्तिनुषक वर्तवार्व करते हुए मुन्ति कुत्र वर्ष पूर्व अबने राज्यका परिलास कर रिया और बवायेन नाज्यने कार्षे देव बीवन क्यांवा । बनावें तीन दिशको बानेक्ना इयनारा वैकी पुरने बच्चे करने मुख काँउठनेन अट्टारकके भारतीयें बनाविकाण किया। टुरक्र राजनाचे प्रकट है कि "बहाधन बार्राव्ह वरदिय-बावको बालवे केटा वा परभव परस्तीना स्थापी वा श्वरक्तींती किन्छ सुपर्वेतें वरिए ^{बा}र सामुको और प्राश्चानीको दान दका चरनाकरोंको अनव देनेने वर्षण उत्पर रहता वा i" वह रूपने एक कश्वरोतिका विद्वाल वा भाग वर्ष और केरिं राज-वेते करिनोंने कक्को अधिमात्री मुस्तक्को अक्का को है। मुनाउँकी बहु बधा सिनद करता था । बक्के मुननुद ब्राह्मच बीवर बहुके पुत्र वैसी नार्व श्रुंतार्व वारियंक्य यह थे। यह शायार्व निकास प्रवेष न्यार्थ ब्याबरण राजनीति बारि निरिय रियमेंकि बहारानिक और मेंड मेरे दे। यह मस्त्रवरात्र कृष्य-वैदे नरेडी वर्ष करने शुद्धक्रियों और कारणी हारा बन्मानित हुएँ है। मार्शसूबे एन्ट्रवृक्षेत्री सन्तत्रमय तक बहा^{स्ट्रा} की। १७४ है में काने राज्यान दिया का और १७५ है में १९ शार्क्स वैवकी मृत्यु वादी वी । मार्थेद्रके प्रतानन वंदराज्यों वहवारे क्रेन वरो । एक और

बतररतों पापुलोंकी और बुक्ती और पोण-बनायोंनी मानी हैं भारतीय इतिहास । एक धरि

त्यत शिवतर्यां थी, राष्ट्रकूट साम्राज्यने दम तोड दिया था और र्व कोई पोग्य व्यक्ति दिखाई नहीं पड रहा था। गग पवलदेवने, नारसिंहके अधीन सेब्बी विषयका शासक या और सम्मवतया वशसे ही सम्बद्धित था, गगराज्यके बहुभागपर अधिकार कर लिया. कि उसके ९७५ ई० के मूलगुष्ट शिलालेखसे विदित होता है, र २३ वपके भीतर ही चालुक्य तैलके सेनापित नागदेवने उसे . जित करके यद्धमें मार हाला। पचरुदेव मारसिंहका न्यास्य राधिकारी नहीं या वरन् राज्य-अपहत्ती था। मार्रीसहका वास्तविक राधिकारी उसका छोटा भाई राचमल्ल सत्यवावय चतुर्थ था. पचल ने उसे आच्छादित कर लिया या किन्तु पंचलको मृत्य (९७६--। ई०) के बाद राचमल्ल ही वस्तुत गगराज्यका अधिपति हुआ । सन 9७ ई० के उसके दो अभिलेख न जनगढ़ और मन्दयसे प्राप्त हुए हैं। १२२ ई० के सिद्धेरवर शिलालेखमें इस राचमल्लको मारसिंहका पत्र न्ह्या है। राचमल्लके राजत्वका बात ९८४ ई० में हुआ। गग इतिहासके न्याकालमें अव्यवस्या एव विपत्तियोंसे मरा यह युग राचमरूलके अद्वितीय न्त्री चामुण्डरायके कारण क्षमर हो गया । चामुण्डराय सम्मवतया गगवज्ञ-ही उत्पन्न हुआ था। वह एक महान् राजनीतिज्ञ, सुदक्ष सेनानी, धीर ोढा, परम स्वामिभक्त, कन्नड, सस्कृत और प्राकृतका महान् विद्वान्, कवि गैर छेखक, विद्वानों और कलाकारोंका प्रश्रयदाता, अद्भुत निर्माणकर्त्ता गीर जैनधमके सर्वमहान् प्रभावकोंमें-से **घा किन्तु गगोकों ऐसे व्यक्ति** का लाभ उस समय हुआ जब कि उनका सूर्य अस्ताचलगामी या। ऐसी विरुद्ध विषम परिस्थितियोंमें भी इस द्रुत वैगसे पतनशोस्र वशको रक्षा एव अभिभावकता च।मृण्डरायने सफलतापूर्वक की और साथ ही दक्षिण भारतमें जैनधमकी स्थिति भी सुदृढ़ कर दी। चामुण्डराय राचमल्ल चतुर्यका ही नहीं बल्कि उसके पूर्वज मार्रांसह और उत्तराधिकारी रायकस गंगका भी राजमन्त्री और सेनापित रहा प्रतीत होता है। अनेक युद्धोंमें सराहनीय रियम प्राप्त करके वहने गीरवार्याय कारफेयरी गोकाम-पुरस्कार करि स्वेक रिव्य प्रस्त क्षिते हैं । यह बढ़ा वस्तरिय और वरदेख के व मानुष्ताय दुवा अर्था विश्व के स्वीक्ष राविता, व अर्थि वरिते रा प्रमायका पुरस्का देवन और जिलेक्ट्रेकण गाय क्षा था। बच्छी स्वाधिकारीय कारब की यह गाहता दी राव्य बंगाध्यक्ष प्रस्ति हैं हैं तथा था। वस्त्री गाया कार्य क्षा पूर्ण करके सित वस्त्री व (% हैं से सम्बन्धिकारीय रंगाध्यक्ष क्षार कृष्ण कुर्वा हिस्स वस्त्री व प्रस्ति क्षा कुर्व प्रस्तु क्षा कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य कुर्व कुर्व क्ष्य क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य कुर्व क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य कुर्व क्ष्य क्ष्य

पेर रामा हुआ। जिन्तु जा वो पिरसणान या बोर करने बार्ट में योगीयों और एक समने विभागरण राज्य-नेपन जिला था। वर्ष्ट मंत्री बंध तोर रामको विचर रवनेज नयावच्य मनक किया। एकन-वेष राध्याचि पुत्र माधार्व देवनेज जिला श्रीतियक्तरे में। कर्ड क्याराधी वीट क्यान्याचि क्यांने राध्याचा प्रकार एक्ट कर्डिंग केला सम्बद्ध राष्ट्र प्रधान क्षित्र में हुए राभीर एक्ट क्यांने इत्तरिज केला वेश्यार स्वाप्त्री केला में हुए राभीर एक्ट क्यांने स्वाप्ति क्यांने वेश्यार स्वाप्ति क्षांने हुए स्वाप्ति क्यांने क्यांने स्वाप्ति क्यांने वेश्यार स्वाप्ति क्षांति राष्ट्र विद्या स्वाप्ति क्यांने क्यांने स्वाप्ति करने केला स्वाप्ति राष्ट्र विद्या स्वाप्ति स्वाप्ति क्यांने स्वाप्ति स्वाप्ति क्यांने स्वाप्ति स्वाप्ति क्यांने स्वाप्ति स्वाप्ति क्यांने स्वाप्ति स्वाप् भी एक छोटे-से उपराज्यके रूपमें चलता रहा प्रतीत होता है। रावकनके गद नीतिमार्ग तृतीय राचमल्ल राजा रहा प्रतीत होता है। १०४० ६० के एक घिलालेखसे ज्ञात होता है कि इस रामाके गुरु मूलसय द्रविद्यान्त्रय के वज्रपाणि पण्डित थे। १०२२ ई० के एक शिलालेखसे उस समय एक गग परमानदिका राजा होना पाया जाता है जो सम्भवतया नीतिमार्गका पुषवर्ती चवत रावकसगग हो होगा । एक गंग राजकुमारी चालुक्य सम्राट् सोमेदवर प्रथमको रानी और सुप्रसिद्ध विक्रमाकदेव (१०७६-११२६ ई०) की जननी थो। उपत राचमत्ल नीतिमागरे बाद रावकसगग दितीय राजा हुआ। उसकी पुत्रो ही चालुक्य सोमेरवरसे विवाही प्रतीत होतो है। इस रायकसर्गंगके गृरु जैनाचार्य अनन्तवीर्य सिद्धान्तदेव थे। उसका उत्तरा-धिकारो एव छोटा भाई निलग भी परम जैन या। सम्भवतवा इमी गंगनरेशने सन् १११६ ई० में मैसूर प्रदेशसे चोलोको निकाल बाहर करके अपने स्वामी होयसर नरेश विष्णुवर्धनका साम्राज्य स्थापित किया था। इस कलिगाके ही शासनकालमें उसका प्रधान सामन्त भूनवल गंगपरमादि बम्मदेव था जो जैनाचार्य मुनिच द्रका शिष्य था जैसा कि सन् १११५ ई० के उसके एक अभिलेखसे ज्ञाउ होता है। मुनबलका पुत्र निज्ञयगंग आचार्य प्रमाचन्द्र सिद्धान्तका विष्य या । निवयगगके सन् ११२२ ई० के शिमोगा-तालुकेके सिद्धेश्वर यसदि शिलालेखसे गगोके पूर्व इतिहासके सम्बन्धमें बनेक रोचक तथ्य प्राप्त होते हैं। घिलानेखसे यह भी ज्ञात होता है कि इस राजाने मण्डलि विषयके एहेदोर तालुकाके अन्तर्गत मण्डलि पर्वतपर स्यित उस प्राचीन जिनालयका कीर्णोद्धार कराया था जिसे गगवंश-सस्यापक दिहरा और माधवने वनवाया था, जिसके लिए सभी गग-नरेश दान देते रहे और सरक्षण करते रहे थे, जिसे कालान्तरमें काष्टसे निर्मित किया गया था और जिसे मुजवलके पिताने पुन निर्मित कराया या तथा जिसे मुज-बलने पट्टदइ बसदि (राज्यमीलि मन्दिर) नाम देकर उसे राज्यके समस्त मन्दिरोंमें प्रधान पद दिया था, और यह कि उसी बसदिको अब भुजबलके पुत्र महिनदंदने पारामानिवित्र कराकर विद्रम रागः रिया । व्यवस्ति चेत्स्वंती प्रवासमाप्रे नियु सम्बोतः सन्यः वितन्तिसासर मी वनसारे है। उनके बाई बानवंतने पूरणी गांध्यर चंत्र-दिलाक्य दिशीय कराय और

भाने पुत्र साववकात देवको दाव दिया ।

दम बचार बोलों बोर होएवबीके बाराबीके कार्व बंबरीय हुन बाद बेरबाल्य नरहार दिवरतहर बात बक्र अल्ने रहे। इब बेहरर वर्तनम ब्रांतिनिय कम्बनुरका संग गावा रहा प्रतीत होता है विवने वारे[‡] के बुरानेके निवट बिरवयुग्य बामक शापी अपनी मियति वर्गीय हुए कर जी भी और जिनका एवन अलाता दिवसमार नीय कुरवोट ग्रा

नहान्ते क्य १५११ ई में किया बा । वंतरंगकी पूर्वी याचा ५वी यशक्तीने ही वांक्य देवतर बाला कर रही थी । इस मरेडीने नकार्ति बताबि बारण की भी नेतर्दर्श

प्रचलित किया था। अनेक शानरच तिखाये और बनेक क्षेत्र-तीय देनते 🌠 रिकॉमन्डे एक प्रमुख सावर्गकड़े अपने बहु बंध देखी गड़ी तक कारी रहा । इत पूर्वी बालाफे राजराजा शासक अनितम ग्रेंश्यरेयने कोक-गरेब धर्मेन्द्र चोल देवनी पुत्रीये दिशाह किया । यसके पुत्र सक्त्यावाह चौकरी (१ ०८-११४१ () में पूर्वने बारकके नराकृत राजाओं कुन स्वार्ति विश्व और वरिषत्रमें देंनिके कारोल्ड्स राजारी ब्रह्मारा दिया। इव चीके र्ममशा पंच १६वीं बारीके मान तक चलता रहा और अलबा मुक्तमानीने बनका क्रमा किया। पंत्रीकी बहु वृत्री शास्त्रा की सैनवर्गके श्रीव क्रमा और विदेश्य भी । परिचर्ता सामानी भारत वह वर्त नहीं बाबायां

धानमर्ग और पुरुषम ब्रो नहीं ध्या किए भी समेक छने इस मन्त्रे अनुसारी रहे और बतके बांध करार क्ये बढ़िम्म तो प्रायः बनी रहे।

वेनोंची पाविष्य बाखांड वंतराज कावच्य जाति कावच भी कैन में ? इस जनार परिचय भारतका संदर्भत एक क्योंचिक रीर्वजीची पानपैस मा शीपनीयमें वस्ते बालाग्यासिशा कर की बार्य किया विर

भारतेल इक्षित्रसः । एक धी 404

पाल तक एक महत्वपूर्ण एव वलवान् राज्यशक्ति तो यह बना ही रहा। उसकी पैरवि, फैरवि, पासिण्डि, पूर्वी या कलिंगी आदि अनेक बालाएँ-प्रशासाएँ हइ, गगर्वशमें उत्पन्न अनेक व्यक्ति स्वय गगराज्यके तथा अन्य दक्षिणो राज्यवंशोंके सामन्त सरदार भी रहे और इस यशका कुलधर्म प्यं वहचा राजधर्म भी जैनधर्म ही रहा निसके धरक्षण और प्रभावनाके लिए गगवशके पुरुषों, स्त्रियो सामन्त सरदारा, राज्यकर्मचारियों शीर जनताने निरन्तर यथाशयप उद्योग किया । फलस्यम्व जैनाचार्योने कन्नह, तमिल, सस्कृत. प्राकृत-विभिन्न भाषाओमें विविधविषयक विवृत्त साहित्यका सुजन किया, लोक शिक्षामें प्रधान योग दिया और राजाओंका पय-प्रदर्शन किया, जनताके नैतिक स्तरको उन्नत बनाये रखा और अनेक लोकोपकारी काय किये। साथ ही देशमें रूप एव शिल्प-म्यापत्यकी अनेक गुन्दर कला-कृतियौ निर्मित हुई । लक्ष्मेश्वरकी रायराचमस्ल बमवि, गगपरमादि पैत्यालय, गगकन्दर्प पैत्यालय, तलकाह और मा यपुरकी धौविजय वसदि, सत्यवाषय जिनालय, श्रवणवेलगोलकी शिवमारन यसदि आदि अनेक मन्य मन्दिर इस सध्यके प्रमाण हैं।

अध्याय ट

इचिया मारत [२] पूर्व सम्पन्नने इस रेख पुत्रे हैं कि श्री घड़ी हैं के सम्बादक स्थित नारतने व नेवक आल्य बाउत्तरासीक अधूनका सन्त हो पूछा या वर्ण

क्रमके नाम महारूपी मही सल्झानूरम बरबार पानन्तीकी तता भी बच्च

ड्रो चुनी मी । तमिल रेडमें शास्त्र्य । पैर बीर बोक राज्य मी रहने ^{सर} एक वररकाकीर पर्यक्र दिखाकर पुरः इतारम हो। पुत्रे में । बान ही र्ये क्यों है के क्याराजेंने राज्य करान और भेर गानक गीम क्लेन राज्य र्ववीची स्थापमा हो। पुत्रों की बोट बाले १थेंडे केवर देवी. धाराणी हैं पर्यन्त परिवय सारतारा प्रतिदान प्रमा ६ राज्योंके बंधर बीर बरिप्रविकारी इतिहत्त मा । इसमें की एटि-प्रणी बड़ानियाँने कांग्रीके सम्बन् राने क्योंकिक क्रतिरक्षाओं रहें और बजार, शहकावें अधी-भूगों द्यागिरवीर्तें मन्तानीके करण्योत्ता वैचा ही चरमीत्त्वर्ग हवा. बीट ५शी-६से बराज्यां में तक्षणांकी नंतरोज बाहिन। बारतके क्योंनिक बाहितवाची दर्ज गरा^{के} बबाद् में। तिन्तु ५वीं बतल्यीके बत्तरार्वमें श्रीवन वाराके स्थापनी प्रदेवर्षे एक वर्गातः धान्यवन्तिता करतः हवा विक्ते १३ी वधानी^{हे वर्ण} पण्डा और को करी अग्रामीनें समितके ही नहीं कपून बाराप्ति क्तरिक वक्तिवाचे एवं वसूत वामान्तर्वे चीरवत हो नये । वह रा^{हर} वरित पाक्षानि को भीर बातायी (बदानी) के नविवनी पाक्षान नेकी कार्ने इक्स कम हमा था। बाटापीके प्रसिमी कालुक्य-पत बंदन दम्बन्स अनुकृतिहरू अनुमार चालुक्योका मूलपुरुष अयोध्यासे दक्षिण भारतमें आया मा । चालुश्य लोग अपने-आपको सोमयदी दातिय, मानव्यगोपी और हारीतके पुत्र बतलाते थे। वराहको इ होने अपना राज्य-चिल्ल बनाया था। ५वीं शताब्दी ई० के उत्तरार्धने विजयादित्य चालुक्य नामका एक साहसी सैनिक रहा प्रतीत होता है जो तल्ल्यारके द्वारा अपने भाग्यका निर्माण करना चाहता था। कद्रणा जिलेके मुहिवेनि नामक ग्रामको जी उस समय पल्लवोंके राज्यके अन्तर्गत या, उसने अपना मेन्द्र पनाया और अपनी धावित बढ़ानी प्रारम्भ की । कि तु पल्जबोंके हायों युद्धमें चनकी मृत्यु हो गयी। चनका पुत्र जयसिंह पिताकी मृत्युके पश्चात् उत्पन्न हुत्रा था । विष्णुभद्र नामक एक ब्राह्मणने उसका पालत पोपण किया इसलिए जयसिंहने विष्ण-वर्द्धन उपाधि ग्रहण की । वह भारी योद्धा या और सम्भवतया राजिसह और रणपराक्रमाक भी कहलाता या । युवायम्यामे महाकवि भारविका यह मित्र और साथो रहा था। दुविनीत गगने जो उस समय युवराज ही था, जयसिंहको वीरता और पराक्रमसे प्रसन्न होकर उसके साथ अपनी पुत्रीका विवाह कर दिया था। जयसिंह पल्लवेसि अपने पैतुक राज्यको जीवनेका प्रयत्न करता रहा, साथ ही महाराष्ट्रके राष्ट्रिकोंका कुछ प्रदेश छोनकर उसने वातापो (बदामी) को अपनी राजधानी बनाया। ऐहोल और अलमतकनगर (अस्तम) उनके छोटे-से राज्यके प्रमुख नगर थे। पत्लव चण्डदण्ड त्रिलोचनके साथ युद्धमें जयसिंहकी मृत्यु हो गयी। इसपर द्विनीत गगने अपने दौहित रणराग एर्रेयप्य सत्याध्यको, जो जयसिहका एकमात्र पुत्र या और सभी नवयुवक हो था, प्रथम दिया और उसकी कोरसे पल्लव-नरेशपर भीषण आक्रमण किया। चण्डदण्ड युद्धमें मारा गया और दुविनीतने अपने नाती रणरागको उसके पिताके विहासनपर विठाया भीर उसके राज्य एव स्थितिको सुदृढ़ किया। इस एर्रेयप्य सत्याश्रय रणरागके मुजगसेन्द्रकवशी सामन्त कुन्दशक्तिके पुत्र दुर्गशक्तिने प्रलिगेरे (लक्ष्मेस्वर) के शखतीर्थ जिनालयके लिए भूमिदान दिये थे। रणरामका पुत्र एवं कराराजिकारी कुनरेची जनन बढ़ा तार जनाची मोर बोटा बानर या और वर्षाय प्रश्न वासुरार्थसका कुल्लुस्य दिश्वकृतिस्य या समिति ही नंपना जनम बान्तरिक नरेय और राज्य-तत्वारक गुनीको न्या (मुदरात) प्रचन ही या । ३वके राज्यमें वैनवर्तरा वर्णाय प्रधार गर कैन-बुदबाँदा निरम्पर विदार होता या और वतके समैक सामन वर्गार सीर कर्मेशारी बैन में । बाब सं ४६४ (बन् ५४९ हैं) है बारराने माने रागके ११वें परवें बक्ते करने बंग्यवनी। बामन बर्वनकरें बह्रमोतने समस्तरमन्दर (अत्यन) में एक जिनासवरा स्थिति करल या और काके निए पाय-पान दिया या और चिताकेख अधित वराम ना दिनमें ननपोतन बानाफे सैनानार्ज निक्रमन्दि, विराज्यार्ज सार्ति बीर जिननानिक नामोल्केख हैं। पानवानी नातानीनें मी वर्षके क्रमानें

एक जिलापन नमा प्रचीत बीता है। बातायी और बातच्यानगरने वर्तित्वत देशील भी पुस्तेन्द्री अवन्ते बत्रतर्ते ही वर प्रमुख वैत्र देश

दन दमाचा। पूर्णनेत्री प्रधमना कामन ५३२ के ५६५ हैं के सरस्य कर एर मदीत होता है। इन रामाने अस्तनेत नव मी किया कराना बाठा है। वक्ता व्यवसाध बोलन जल्ली (स्थावस) तुरुद्र बनाने, अल्ले राजसी बुरजित रक्षते और यह समग्र मिना राष्ट्रिकों करायों और सम्बर्धी प्रदेशों ने बना-बनावर क्ली राज्यका दिल्लार करनेतें ही बीला । वनके कररान्य क्थना च्येड पुत्र कीतियर्तन् अयत राजा हुना और वर्ष ५६५ हे ५९७ ई. एक बढ़ने राल्य दिया । इक राज्यने समेन हैं क्षित्रे और पासुरक राज्यका विश्वाद किया । विश्वेषकर सम्मानीके स्टार्मी, कोर को मौती, नक्याहीके नकों श्रमा मंत्री और कल्पीकी परास्ति ^{करके} क्लके प्रदेश मीटी । नह राजा थी. मैतवर्यका अनुसानी था । वन् ^{५६४} E & seine und de-efect fabrit afeite tim unt 3% पूर्ण और बारिके निर्मेत्रके मुक्तके किए क्लिक बात दिना गा । क्वीके ज्यकालमें सन् ५८५ ई० में जनाचार्य रिवकोत्तिने ऐहोजके निकट गुतोमें एक जिन-मन्दिर वनवाया था और एक विशाल जैन विद्यापीठकी प्रापना को था। ऐहोल (ऐविल्ल या आर्यपुर) में स्वय एक वडा जैन हामन्दिर था जिसमें सहस्र फगयुष्त पार्श्व प्रतिमा स्यापित थो। ५९७ ई० कीत्तिवर्मन् प्रथमकी मृत्यु हुई । उस समय उसके पुरुकेशिन् , दिष्णुवर्चन ौर जयसिंह आदि पुत्र वालक ये अतएव उनके चाचा मगलीशने राज्य-. सहासन हस्तगत कर छिया और ५९७–६०८ ई० तक राज्य किया। गालीशने कलचुरी-नरेश शकरगणके पुत्र राजकुमार वुद्धको पराजित किया श्रीर रेवती द्वीपपर अधिकार किया । सम्भवतया इसी राजाके शासनकालमें महाराष्ट्र देशके अलक्तकनगर (अल्तेम) में चालुक्योंके लघुड्रव्य नामक एक उपराजाको पत्नीने सुप्रसिद्ध जैनाचार्य भट्टाकलंक देवको जन्म दिया या । वदामोको प्रसिद्ध गुकाओका निर्माण भो इस्रोके समयमें प्रारम्म हुआ । मगलीशके उपरान्त उसका मतीजा और कीर्विवर्मन् प्रथमका ज्येष्ट पुत्र पुलकेशिन् द्वितीय सत्याश्रय (६०८-६४२ ई०) चालुक्य राज्यका स्वामी हुआ। अपने चाचा मगलोश-द्वारा राज्यापहरण कर लिये जानेके कारण उसे वयस्क होनेके बाद कुछ वर्ष राज्यसे निर्वासित रहकर विताने पडे थे। सन् ६०८ ई० के लगभग कुछ शक्ति सम्रह करके उसने मगलीश-को गहोसे उतार दिया और उसे तथा उसके पुत्रको राज्यसे निकाल दिया। सम्भवतया इसी समयके लगभग मगलीशको मृत्यु भी हो गयो। राज्यको गृह-राष्ट्रकोंसे निष्कण्टक करके और अपनी स्थितिको सुदृढ़ एवं स्रक्षित करके उसने अपना विधिवत् राज्याभियेक कराया । तदुपरान्त उसने बाह्य शत्रुओ तया राज्य-विस्तारकी ओर घ्यान दिया। पूर्वमें महेन्द्रवर्मन् पल्लव कर्णाटककी ओर वढ रहा या और उत्तरकी औरसे हुए शिलादित्य आक्रमण कर रहा था। पुलकेशीने गर्गों और अल्बोंको अपना मित्र और सहकारी बनाया, उसने बनवासीके अध्यापिक और गोविन्द नामक कदम्ब नरेशोको पराजित करके कदम्योंकी स्वतंत्र सत्ताका अन्त किया.

कॉकन एवं पुरोक्षे बीबीं स्थानाट पूर्वर और बालगढ़े श्रासीम सम्म किया । ६१५ ई. में ही रिकार वर्ष भोतान सोनारे हरासा प्राप नगुर्ने जलप्रदेशकर प्रकृते अधिकार कर निवासीर नलप्रकी शहराने वैतिमें बार्क क्रार्ट आई पुरविष्णुवर्षतको साम्बीव ग्राम्तक निर्देश क्रियो बड़ी काचित वीनिके पूर्वी चामुकाबयका, बी काणान्ताओं बाजा के पूर् वंतने स्वतन्त्र हा नया नश्याक हुआ । वृष्योगीने वांचीडे ब्यूनार्सी प्रथम पानवका कृष्टे तरह राज करके प्राच्या चील, केरवके तिन राज्यों के क्लाक्षेत्र, बावने बुक्त दिया बीट आजिन बदान की । ५२५ हैं में बबने देरानके चाह लुक्से दिलानके बरबारमें अपने चारात केरें। पुचनेगोडा नगवाधीन सत्तरारवदा वसनी वालेग्वर---वनीजन पुटीय हर्गरमन शिनारित्व था । धुक्येशी कनका वयने अवन अस्तियी वा बनके जबके ही हमने बाबारीके बैंगक पामके बाल बरबी पूरीबा रिप्स करके बन्ने काला निय बनाया बाब हो बॉल्स बोननके ठालातीन देव नरेवरों मी अरमा नित्र काम्या । चुनग्राप्त कीर कॉन्स दोनों ही सार्ति इक्ते रक्ति भारतमें अनेव करतेश कई बार वसल दिना लिह पुनवेशीको बलित वर्ग पराजनके कारण शतकन ही रहा। इनके कर रिवय वाला करतेके बरवान वृत्यकेतीचे वरतेरवर क्यावि वारव की, वर्र बद्द एक महानु बताद् था। यह बढ़वा ब्रांति है कि हुई और पुलीवार्र कीन अविक नद्दान् या । फिन्तु दनने क्लोड़ नहीं कि रागरितहार, क्लिड़ बनुदि, बक्ता और बचार जारिने पातुरा बनाट त्यनेची रतन् हैं वर्षमी यम नहीं था। इर्पवर्षन नहि नीजपर्तना बारी कर्मन वा है वुनने यो बैनवर्नेश नदान् चेतक था । तिन्तु दन दोनों ही बतायीर येत इस बनानता भी में दीनों ही बाल क्वांत्रमेंके ग्रीत व्यक्त बचार मीर वर्दिन्तु मे । इक वर्षवर्त-वनप्रविद्यानें की नुम्लेकी इस्के पुत्र सार्व ही या। बन् ६६४ ई. में बलाद पुर्वाचीने बन्ती सिमानके कारण राज्यानी नाताधीर्वे प्रदेश किया। कतरवें चडके विकास सामाज्यानी

सीमा रेवा नदीको स्पर्श करती थी और दक्षिणमें ममुद्रते समुद्र पर्यन्त उसका विस्तार था, समुद्र पारके अनेक दोवापर मो उनका अधिकार और प्रभाव था। सन् ६३४ ई० में राजधानीमें प्रवेश करनेरे उपरान्य ससाह पुरुवेशी द्वितोयका मर्वत्रयम कार्य अपने गुरु जैनायार्य रविशीतिको उनके द्वारा निर्मित ऐहालके जिनमन्दिर एवं अधिष्ठानके लिए उदार यात देकर सम्मानित गरनेना था। इस समय गम्मयतया वर्ती विगी प्रवीन जिनालयमा भी निर्माण हुआ था । रविमीत्ति नारी विद्वान् एव महाकवि ये। उनयो काव्य-प्रतिभावी तुला। महावयि कालिदारा और भारियके गाय की जाती थी। इस दानके उपलक्ष्यमें स्त्रा रिवशीतिने ही ऐहालके जिनमन्दिरमें उत्कीण सम्राट् पुरुकेशीकी वह विस्तृत, भाष एवं कलापुर्ण सस्कृत प्रवास्ति रची थी जो उपत सम्राद्के परित्र और कार्यगलापोंके लिए हमारा संबद्रधान ऐतिहा आधार है। इस कालके सबमहान जैनाचार्य अकलेकदेव हैं जो स्वय रिवकीत्ति अपर नाम रिवभद्रके ही शिष्प रहे प्रतीत होते हैं। सम्राट प्लचे भोके बादरपूर्ण प्रथममें ही उनको प्रतिभा विद्वत्ता, वाग्मिता इस समय चमकनी प्रारम्भ हुई थी। इसी फालमें बदासी और अजन्ताक उन प्रसिद्ध गुहामन्दिरोका निर्माण हुआ जिनमें सम्राटके प्रथममें जैन एव बौद्ध फलाकारोंने उन विस्वविश्रुत भित्तिचित्राका निर्माण किया जो अपने फलापूर्ण सौन्दर्यके लिए अहितीय हैं। इन चित्रामें कतिएय ऐतिहासिक दूरम भी हैं। इसी वर्ष अदूर (घारवाड) मे नगरसेठ-बारा निर्मित जैनमन्दिरको समाट्ने दान दिया । सन् ६३८-४० ई० के लगभग चीनी यात्री हुएन सागर्न पुलवेशीके राज्य और राजधानीकी यात्रा की थी। उसके विवरणोंसे भी पुलकेशीकी शक्ति और महत्ता, राज्यका वैभव, समृद्धि और शान्ति, राजा प्रजा दोनोंमें ही विद्याओं और कलाओंकी साधना आदि-का पर्याप्त पता चल जाता है। इस घोनी यात्रीके ही विवरणोंसे इस बातमें भी स देह नहीं रहता कि चालुक्य-साम्राज्यमें बौद्धोकी क्षपेक्षा जैनमन्दिरो. उनके निर्पय साधुओं और गृहस्य अनुपायियोकी सस्या कहीं अधिक थी।

. 3

बस्तुतः बासूत्रः बश्चाद् वृत्तवैधीवी सवता बाव स्वीववेद नहीं सम्बूध मारावेष वर्षमञ्जू प्रमान्ये इसे वरेपीने की जाती है। वह ६४० रि के कारत अने किर मुत्रोंमें लंकान होता पहा । पाकन मर्शतहर्यन् अपने पार्पन्नरेगके दानों करने दिशाको बच्च स्वयं अस्तो वय परान्येके शास्त्र क्षण्या सुम्बदा । इतने पृत्ति-पृत्ते स्रतित इंग्रह की । यह बरहरू नी ताकर्त्र था । इत्तर कुल्केची कुटींचे निरान केवर बालिएर्च कार्यों रह वा और अनावसन हो बया । अलु, बन् ६४१-४२ ई वें रच्चर गर्रतिक्षत्रंपूर्व पासूपरीहर प्रीवय बास्त्रथ विना । परित्रक समित्रेगक बोर मुखार बारक स्थलांने वर्षकर बढ़ हुए । बन्दने नुकरेगी सर्व बुद्धमें बारा बंधा और बुद्धका पाना बन्दर नता। बन्दम केन्द्रपटि विवर्तीत बारुप राजवादी वाजारी तक वह शीम और जाने वह सम एवं विकास किया ।

पुत्रकेशीके पुत्र वार्युक्त विकासीलय अवन कार्युक्तक अवना टाइवे-र्तुष (६४१-६८ वं) को बाजे निवासी शृष्ट्र-धारा विश्व ब्रथम सम्पन्न बक्तचरिकार प्रत्य हवा, काफी तिबंद प्रदेश बोधबोड यो । राजवानीकी को बहुद इस बादि हो पुत्री वी । बहारि सरकर और दूरता बहार परे को में किन बनके बाजवर्गी, नहीं, दिवन बद-बार, बजादची नेप बादि बंदर्शने पायुरत कालाग्यको मत्ता-मत्ता कर दिया था, वर्षत अरा-बक्ता को । सार्व विक्रमादिताके नाई चलातिक वृत्रे वावितावर्वन राज्यके विकिथ कार्नोको बना की वे और सम्बंध बनान् बीलिए कर रहे से । किन्तु विक्रवादिता बढा बीट, वृद्धिवानु एवं ब्राह्मी था। बच कोरहे स्टॉसी बनेना बोर मिलाएन पांचर भी जाने साहब व बोहा । बोहा ही बचने मानी निवशिको बँगाना और माहनी तथा बन्द बान्हरिक बधुओंका दनन करके निवासन मुख्यित विश्वत । पालकों, बेटो, बोबों, पालकों, कलाई मारि नाक्ष प्रत्नीत की क्षत्र अने ने ही दुश करने नहें। अरहे नराजनी रथ बारनी नीएने कोई ही क्योंने बाले प्राथित विशेष सामाज्य और

प्रतिष्ठका पुनव्छार कर लिया और तभी (सन् ६५३ ई० के लगमग) अपना विधिवत राज्याभिषेक गराया । तदन तर भी उसे प्राय पुरे जीवन-भर युदोंमें रत रहता पटा धीर गायद इसीलिए घर रणगीसक भी कहलाना था । पन्छय ही उसके सबसे यह शत्रु थे । जाके विरुद्ध इसने पाण्डधनरेवा पराशुदा मारवर्मन्को मित्र बनाया, गग पालुक्योंके पुराने मैत्री सम्बाधको दृढ विगा । फलस्वरून उसने परलयोको एकके बाद एक युदामें पराजित किया । गगोकी सहायतासे हो उसने पत्छव नरसिहवर्मन प्रयमको चालुक्य राज्यमे निकाल वाहर किया और उसके पुत्र महेन्द्र-वर्मन दितीयको भी वृरी तरह पराजित किया। महे द्रवमन दितीयके उत्तराधिकारी परमेरवरवमन्का विलिडके युद्धमें पालुका सम्राद्की ओरसे भृषिक्रम गगने यूरी तरह पराजित किया और उसमे उग्रोदम नामक प्रसिद्ध रत्नहार छोना । दक्षिणकी ओरसे पाण्डपाने पल्लबोपर घावा फिया भीर स्वयं विक्रमादित्य परलय-नरेदाका पीछा करते हुए कापेरी सटपर उरैपुर तथ जा पहुँचा और वहां अपनी छावनी टाल दी। विक्रमादित्यने अपने बाजाकारी भाई जयसिंहको लाट देशका सासक बनाया । विक्रमा-दित्यको युद्धोंसे इतना विराम नहीं मिला जो वह विदीय दाि असे कार्य कर सकता। किन्तु वह भी अपने पूर्वजोंकी भौति जैनधर्मका पोषक था कौर प्रवयाद ककलंकदेवको अपना गुरु मानता चा।

महाराष्ट्र देश कोर चालुक्य राज्यके अत्तर्गत अस्पतकनगरमें सम्म-वतया चालुक्य वशको हो एक शान्मके नृपति स्वपुहृष्यके पुत्र अकर्लकदेयने ८ वर्षकी आयुमें ही ब्रह्मचर्य यत स्र स्थित था, तदनन्तर रिवकितिके ऐहोस्र विद्यापीठमें और कन्हेरीके बौद्ध विद्वारमें क्रमश जैन एव बौद्ध दर्शनोका गम्भीर अध्ययन किया। स्थाभग बीस वर्षकी आयुमें उन्होंने मुनि दीक्षा रू स्था अध्ययन किया। स्थापन बीस व्यक्ती आयुमें उन्होंने मुनि दीक्षा रे स्था पुरुवेशी और विक्रमादित्य प्रयमके आदरपूर्ण उदार प्रश्नयमें उन्होंने अपने विद्यास अध्ययन, अद्वितीय प्रतिभा एव उद्भट विद्वता-द्वारा भारतीय विद्वत्तमाजमें शीप स्थान प्राप्त कर स्थिय था। जैन रिक्रान्त बधन त्यावकारन व्यावस्य निविध नारतीय वर्क्टों वाचि निविध निपनीमें ने निज्ञात से । सैन स्थापके को में स्ताने मारी अतिपादन ने कि बहु 'जनसंक न्यान'के नामके प्रशिद्ध हुना । वरवार्थराज्यांतिक अहकरी, भावतिनिश्यम विद्वितिनिश्यम समीक्तम प्रमाणनेवह वादि वनेन प्रक्रिय स्थान वन्त्रीके में प्रकेश में १ मीखावार्य वर्सकीरी मान्याबीनकार कर्नुहरि बोर मोत्रास वर्षनके पुरस्कर्ती कुमारिकस्टू चनके वनकालेन दम प्रतिक्रमी में । सक्षमक वेरबंबके सामार्थ में और बहुवा देव' नामी भी कारा क्रफेश किया बाता था । विक्रमानित्व काइक्तुंद कर्षे अपना पुत्र मानदा ना और बतने बन्हें पुरूताओं बसाव बसाव भी नी। सह निक्रमारिकाके संख्य पासुका-गरेबोके समिवेसोने सम्बद्धका स्वकेत पुरवत्तार नामसे इसा है। सम्बन्धना ६४१ ४१ है से बर पुण्लेकी रत्वनोके साथ बुद्धाने बच्चा द्वार या और राज्यमें मधानि से वर्ष-संबर्धन सन्त नवीचे निहासीके बाल बारमानं करने और बैनमर्नका बसीत करनेके बहेराके निरेशका अनय कर रहे थे। वर्ग ६४३ हैं है वाज्यवेषके होरक स्टूपर स्थित कर देवजी स्टब्स्सी समर्थकराई कामानी ह्यूरे हुए से । तत्काबीन निकर्किमाविद्यि दिस्कीतको गीव

पुरमोली पुनीती स्तीकार करके ६ माधा नवेन्त्र वीळ स्तिलाँके बान नहीं जनकारी बारवार्थ किया और एन्ट्रें नराजित किया। कनस्यक्त दिन-बोत्तक बैती हो बना बोर ज़ैंकि इसी प्रश्न पुरुवेचीके नरामवता बनानार थी क्षेत्र केन कहाँ था कृषि कॉलनार माम्यान कर रिमा । हिराबीस्त बुद्धमें माध्य नवा किन्तु विक्रमावित्वकी तरारता और बक्षके बढ़नीची वैक्ति पाकुमोने रार्थ वह रहियदे किर प्रवेश न कर वश और नार्थ श्रीत क्या । कररोक्त नार-रिकाको क्यालकाने शक्कंकनी 'बहु' क्याचि जान्य हुई र कुछ नर्थ धनरान्य यन में फानमचे रनरेख जोटे शो बानों किन महान् जैनाचार्य थे।

६७८ या ६८० ई० में विक्रमादित्यकी मृत्युके पश्चात् उसका पुत्र विनयादित्य (६८०-६९६ ई०) गद्दीपर बैठा । उसके राजगुरु देवगणके चपरोक्त आचाय पुज्यपाद अकरका गृही शिष्य निरवद्य पण्डित ये जो मारी विद्वान थे। रविकीत्तिके उपरान्त ऐहोलके विद्यापीठकी अध्यक्षता अकलकमो प्राप्त हुई थी, उनके परचात् उनका शिष्य-समुदाय उनत झान-केन्द्रका सफलतापुनक सचालन करता रहा । विनयादित्यने पल्लव नरेश नरसिंहवमन द्वितीयको युद्धमें पराजित किया, कावेर, पारमीक और पिहल-नरेशोंसे गाउप-कर वसूल किया और उत्तरापयके प्रमु, सम्भवतया मन्त्रीजके यशोवमन्को भी पराजित किया। अन्तिम विजयका प्रधान श्रेय युवराज विजयादित्यको है। गग और अल्प राजे चालुवय-सम्राट्के सहायक थे और उसे अपना अविपति स्त्रीकार फग्ते थे। तत्परचात् विजयादित्य द्वितीय (६९७-७३३ ई०) राजा हुआ। पल्लवींके विरुद्ध किये गय युदोंमें उसने अपने पितामह और पिताकी ओरसे सगहनीय भाग लिया था । एक युद्धमें पाण्डघ-नरेशने उसे बन्दी भी बना लिया था विन्तु वह निकल मागा और उसने अपने दात्रुओंका दमन किया । पुज्यपाद अकलककी परम्पराके उदयदेव पण्डित इस सम्राट्के राजगुरु थे। सन् ७०० ई० में इस नरेशने उनत गुरुको शखिजने द्र मन्दिरके लिए दान दिया था। इसी समयके लगभग राजघानी वातापीम भी एक दानसूचक कन्नडी जन विलालेख अफित गराया गया । इस नरेशके हलगिरि शिला-छेखमें जैनतीर्यक्षेत्र कोप्पणका सल्लेख है। अकलंकके सधर्मा पुष्पसेन भीर उनके दिप्प विमलचन्द्र तथा कुमारनिन्द और अकलकके प्रथम टोकाकार वृहत् अनन्तवीर्य भी इसी कालमें और सम्मवतया इसी मरेशके प्रश्रयमें हुए थे। ७२९ ई॰ में उत्कीर्ण लक्ष्मेक्वरके शिलालेखसे विदित होता है कि विजयादित्यने पुरुषपाद अकलककी जिप्स-परम्पराके गुरुओंको पुलिगेरेके जिनमन्दिरके लिए ग्रामदान दिया था। उसीके शासनकालमें

करेर हैं में विकोर्कत शामक क्या राज्यमान्य व्यक्तिये पूर्विनेरेंके क्षेत्र जिलाक्यको पुरस्क दान दिना । समादको क्रीडो बद्दन बुद्देव महानेपीने मी एक गुन्दर जिलासन निर्वाण कराका या । इसी नासमें बुक्सन निकनारितन में काचीक पत्तान परमेश्टरपतन् हितानपर बाक्यन किया और वयर्डे कर समूज किया । तिराको मृत्युकर वही चासुरस-राज्यका समिति हमा । विक्रमादित दितीय (७३३-७४४ ई.) जी अपने पूर्वजीकी वॉर्सि वैन् वर्तका मन्त्र का बीर अवस्थिती। नरस्परान्ते लियन नरिव्य क्वाने पानपुर वै । ये मारी शती और ब्रिक्टल वै । रामले संविधानम शाहि मन्दिरी-का बीजेंद्रियर कराना बीर जैननुस्ताँकी राम दिना। इसके स्टरमें दिन्तके बरबोले बक्तिय सारक्ष्यर बाह्मान करतेका हकत किया कियाँ पाकुम पुरुषेशीरे थी इस केंद्रवी बाद वाश्वाला उत्स्ववीय वासक व बीर क्रिजादिसका बायस का क्याँ व्यक्तापूर्वत रीवे क्या देता। इसपर समारने क्ये 'सर्वानक्षमास्त्र' स्थापि थी । क्येने क्थाप गरिपरीय-वर्तनको को पराजित किया स्वर्ग कांचीयें प्रवेश किया और गईकि वनिर्देशी राम विद्या । इस स्टब्समर्थे कालै एवं कोविवर्तनों सी वर्षा नीय यात्र किया या । कीशियर्गन् क्रितीय (४४४-६५७ ई.) इस स्टब्स अनिय गरेव था। काचे वमको पानकाँके राजकार वाकाँको पश्चि बहुत वह क्यों थी। ७५१ वें में राजुकूद वस्तुहर्वि बीरियर्ल्ड़ो परामित करके धाकुक्त-मात्रा स्टब्से किल-निव कर दिशा और ४५४ हैं में धरातीने परिवर्ती वाकुमबीने राज्यका बन्त हुआ । क्रीतिवर्तन् निर्ण-न्ताल ना । काके पापा भीन नरव्यक्षको सन्तरित्वे स्वयक्ष बोर्टिनर्सन स्वीत् रीक स्थान निकासनित्व प्रतीम अस्था अस्थ और विकासीका गाउँ राज्यूनी वर्गन मेव बानची वा वरप्रवानीको व्यक्ति कर्य रहे । कविषके पुत्र रोज विज्ञानने १०नी क्लानीके क्लापर्वते राज्यकृतीस रूप करके पानुस्कानिका पुरस्कार क्षिमा और क्षमानीक बसारवर्धी पाकुरन संबंधी स्थारना को । पाठाशीके पाकुरन वैश्ववर्धे विकेश स्वताती

शासीय प्रतिकातः एव प्रति

144

ो हुए भी घैव वैष्णवादि घर्मोके प्रति उदार और सहिष्णु थे । बौद्धवर्भ कालमें पतनोन्मुस या ।

वेंगिके पूर्वी चालुक्य-आध्र देशपर पहले इक्ष्ताकुकों फिर लकायनों और अन्तमें विष्णुकुण्डिनोंका शासन रहा था। सन् ६१५ ई० चालुनय-सम्राट् पूलकेशी द्वितीयने आम्न देशकी विजय करके अपने जि कृटजिवएणवर्धनको उसका प्रान्तीय शासक नियुक्त किया था । वैगि । देशको राजधानी थी । पुलकेशीके अन्तिम वर्षीमें ही वेंगिके चालुक्य उशासासे प्राय स्वतन्त्र हो गये थे। नाममात्रके लिए वे उसके उत्तरा-कारियोंके अधीन रहे किन्तु ८वीं यतीके प्रारम्भे वे सर्वधा स्वतन्त्र हो वे । मुदनविष्णुवर्धनसे प्रारम्म होनेवाले इस वशमें सगमग २७ राजे हुए ोर उन्होंने लगभग ५०० वर्ष तक आन्ध्र देशपर राज्य किया। मृज्य-ज्णुवर्धन स्त्रय वहून योग्य और चतुर शासक या, उसने ही अपने वशकी वि मली प्रकार मुद्रुढ कर दी थी। चालुक्योंकी इस पूर्वी शाखामें भी लवराकी भौति ही जैनघर्मकी प्रवृत्ति थी। कुव्जविष्णुवर्धनकी रानी पने पित्रसे भी अधिक जैनवर्मकी मक्त थी, इस धर्मकी प्रभावनाके लिए सने कई ग्राम मेंट करवाये थे । मुञ्जविष्णुवर्धनके पश्चात् जयसिह प्रयम. वप्णुवर्धन द्वितीय, जयसिंह द्वितीय और विष्णुवर्धन तृतीय क्रमश राजा ए। अन्तिम नरेशने जैनाबार्य कलिमद्रका सम्मान किया और उन्हें तन दिया था। उसके पुत्र विजयादित्य प्रथमकी महारानी अस्पन महा-वीने ७६२ ई० में उक्त दानपत्रको पुनरावृत्ति की थी। तदुपरा त विण्यु-ार्धन चतुर्च (७६४-७९९ ई०) विंगि राज्यका स्वामी हुआ। राष्ट्रकटॉ-हे साप मो उसके युद्ध हुए बिन्तु वह उनके अधीन नहीं हुआ। उसके वेषद आक्रमणमें सहायता करनेके छिए ही राष्ट्रकूट गीविन्द तुनीयने ाग शिवमार द्वितीयको बन्दीगृहसे मुक्त किया था। विष्णुवर्षन चतुर्य जैनमर्मका वडा भक्त था। इस कालमें विज्ञमाषट्टम (विद्यासायत्तनम्) जिलेकी रामतीर्थ या रामकोंड नामक पहाडियोपर एक भारी जैन

कारहरीत केन्द्र निक्रमान या । जित्तिय (बान्ध्र) देवके रॉप प्रदेवकी बंगाल मुमिने लिए यह राजविरि वर्षेत्र बदेक वैतपुद्दामनिर्दे, दिनापर्ये धर्म बन्द प्राप्तिक पृष्टिनेषि मुच्छेतित था । अनेक निक्रम् केनसूनि वहाँ निवास रुग्ते में । विविध निवासा एवं विवयोगी क्रम्य विवास किए यह शरकान एक महानु निधानीठ या । विकित्त वासूच्य-गरेवीके संरक्षण वर्ष प्रपारं नेड बेल्यानं कर-पुत्र रहा था । इत कालमें बैरायान बीलनि इन विवालोटके प्रधाताचार्य थे । बढ बानुवेंद आदि विनिम्न विवसीने निप्पान में स्पर नदाराज विष्कृतवन बनके परमॉक्से पुता वरते में । स्त ब्रापानके प्रमान विश्व बहाहित्साचार्न के को माध्यक पूर्व विकित्साव्याप के बर्जर विक्रम् से । सम् ७९९ इ. के दूध पूर्व हो उन्होंने जाने पुर्वाबर नेवापाल नाव्यापारतयी रचना को नी । जन्म-वस्तिको शाह है वि मुख याचकी बाडोने वेशिनरेश किन्यूवर्गतके ही बाहनशास और अवस्ते रचा कर व वहुत्रराम्य विजयातिस्य क्रियोश सुनन (७९९~८४७ ई.), वर्षि÷

विष्युवर्णन पंथम विजयादित तृतीय (cvc-c९२ ई.) सम्बं राज्य हर । राष्ट्रपुर नोजिन्द तृतीन और वनते पुत बजाद अनीववर्गने वास्तार मेंतियर माजनम् करके कृषीं चानुस्त्रीको पराजितः विन्या और बन्हें मानाः बाने क्ष्मेल कर क्षिया था। तर्पराट्य पालुक्त बीच प्रथम (४९१-९१९ है) समाहता। यह सन्दर्श कृत्य हिरोदका प्रतिद्वाही का मीनके बत्तराविकारी विजनादित्व बनुवारी मृत्यु ६ बहीलेने ही ही वरी अगरन बान बचन (९२२-२९ हैं) राज्य हुआ। वाननार भीन दिनीन और दिए अन्त दिवीय राजा हुए। जान तिवीय नहा प्रवासी जीर समीना बरेब या। वर् १४५-१७ ई तक इनने राज्य किया। जाने पुण्योंकी ही माँति यह भी बैनयमपा नेतज बीर तरसक या बाँक इन विधार्ष बद्द जर्म पूर्वी पानुस्कारेपीके पूछ जाने ही बढ़ा द्वारा वार्थ स्वर्क यात्रमधानमें ठील अभिकेश प्रान्त हुए हैं भी यह प्रमाणित करते हैं कि कारतीय इतिहास । एक परि

१०वीं जती ई० में जैनवर्म आघ देशमें अत्यविक लोकप्रिय एवं उन्नत दशामें था। राजा स्वय शिव और जिनेन्द्रका समान रूपसे भन्त था। एक छेखके अनुसार इस नरेशने पट्टवर्धक घरानेकी राजमहिला माचकाम्बेके निवेदनपुर जैनगरु सफलच द्र सिद्धान्तके प्रशिष्य और अय्यपीटिके शिष्य अर्हतन्दीको 'सर्वलोकाश्रय जिनभवन' के लिए दान दिया था। सम्मका प्रधान सेनापति दुर्गराज था जा कटकाधिपति विजयादित्यमा पुत्र था। चालम्य-लक्ष्मीको सुरक्षाके लिए उसकी तलवार सदैव म्यानसे वाहर रहती थो । वह पर्वी चाल्वय राज्यका शवित-स्तम्भ कहा जाता था । उसके वंशने महादेश वेंगिके सरक्षणमें सदैव मारी योग दिया था। यह वश जैनवर्मका अनुवासी था । स्वयं दुर्गराजने धर्मपुरीके निकट 'कटकाभरण' नामका भव्य जिनालय बनवाया था और उसे यापनीय सघके जैनगर जिन-नन्दिके प्रशिष्य एव दिवाकरके शिष्य श्रीमन्दिरदेवको शौप दिया था। स्वय महाराज अम्म द्वितीयने मिलयापुण्डि दान पत्र-द्वारा इस मन्दिरके लिए ग्राम भेंट किये थे। अस्मके पश्चात दानार्णव, जटाचोडभीम और शक्ति-वर्मन फ्रमश वेंगिके राजा हुए। तदनन्तर १०२२ ई० के लगभग विमला-दित्यका राज्य हुआ। यह राजा भी जैनधमका भारी भक्त था। देशीय-गणके आचार्य त्रिकालयोगी सिद्धान्तदेव उसके गुरु थे। अनेक जैनमन्दिरींको इस राजाने दान दिये। उपरोक्त रामतीर्थ (रामगिरि) भी ११वीं शताब्दीके मध्य तक प्रसिद्ध एव उन्नत जैन सास्कृतिक-वेन्द्र बना रहा. जैसा कि वहाँके एक शिलालेखसे प्रमाणित होता है। विमलादित्यके भी एक कन्नडी शिलालेखमे ज्ञात होता है कि उसके गुरु विकालयोगी सिद्धान्तदेव तथा सम्भवतया स्वय राजा भी जैन तीयके रूपमें रामगिरिकी बन्दना करने गये थे।

विमलादित्यके उत्तराधिकारी राजराजनरेन्द्रके समयसे आप्टादेशमें जैनधर्मका ह्यास होने लगा । वस्तुत ११वीं धतीके अन्त सक वेंगिके पूर्वी चालुक्योकी सत्ताका भी अन्त हो गया । इस प्रकार लगमग ५०० वर्ष पर्तम् प्रक्रमाके स्व पूर्वी पाकुल अंबन्ने बाहतर्थे आग्रारेश्वे वेदस्ती धर्माच बलावि थी । व्यक्ति वे तरेड वस्त्रे-बारणी खूबा परकार्थेलर विकारी ने नामी से बात पहा ही बेदस्यीय प्रति वर्ति प्रवाद कीर विशिद्ध रहे बार बेतवर्थ बार केदस्योग आगर वार्ट के । तरेच परिच से वेदस्ति हो स्मृत्यारी वे आह हो एक्क्यके सम्ब कोन सीन्त्रम्थं, स्वरूप प्रशासन वार्ट्या, क्यान्यस्य राजकार्यारी क्षेत्रस्ति वर्ट्

स्त्रेण करारासे प्राप्तक-सरदार, कम्प्युक्त राजकांनाएँ स्वराधि कर्य स्वरों में । भूमी बाहुस्त संविधित स्वराज सी राज्याओं मीठा स्वाप्ति मिठा स्वाप्ति मिठाने पर काम्युक्त सविधान राष्ट्रण हाला और स्वर्ण वर्गा रित्त-सेटे प्राप्ता के पूर्व सम्बादाओं वरून सिवा। ११वीं काम्योजें सामायेजें सेनाकों स्वराधी के स्वराधी है को दिन्दर्शक स्वाप्तायों है गारी से बरण सेन्द्रास्त्री काम्योज राज्याचित्र है को दिन्दर्शक स्वाप्तायों है गारी से बरण सैनाकों स्वराधी को से सेनाकों के स्वराप्तायों के स्वराप्तायों के स्वराप्तायों के स्वराप्तायों काम्याया स्वराप्तायों काम्याया स्वराप्ताया स्वराप्ताय स्वराप्ताया स्वराप्ताय स्वराप

में राज्युद्ध समिवासके मार्थान रिवार्थ (राज्युक्धे) के संधान में 1 में सार्थ-सार्थ्य जानावर्थ स्वास्त कर है । मार्थ्य संधान एक संस्थान राज्युक्धा भा है में मार्थ्य कर सार्थ्य एक प्रकार प्राप्त है से मार्थ्य कर सार्था है एक सुरा कर सार्थ्य राज्युक्धा भा है में मार्थ्य कर सार्थ्य कर सार्थ कर सार्थ्य कर सार्थ्य कर सार्थ्य कर सार्य कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्य कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्थ कर सार्य कर सार्य कर सार्य कर सार्थ कर सार्थ कर सार्य कर सार्थ कर सार्थ कर सार्य कर सार्थ कर सार्य कर

रकर इसने दावितमयय करना आरम्म निया। उसका पुत्र दन्तिदुर्ग ण्डावसोक वैरमेष ८वीं शतीके प्रयम पादके रुगमग अपने पिताका त्तराधिकारी हुआ। यह बत्यात चतुर, साहसी और महत्त्राणांनी था। ४२ ई० के लगभग उसने एलीरा (एलउर मा ऐसपुर) पर अधिकार कया और उमे अपनी राजधानी बनाया। एलारा जैन, दौव, बैटगब और ीद चारो ही पर्मो और सस्कृतियोंका सन्धिस्पल या। उका धर्मीखे म्बिचत इस स्यानके पापाणखनित सुहा-मन्दिर भारतीय वलाके छद्रितीय उदाहरण है । सन् ८५८ ई० में रिचत धर्मोपदेशमालामें एक और अधिक पुरानो घटनाका उल्लेख है कि एक समय समयश नामक मुनि भूगुकच्छने चरुपर एलटर नगर आये ये और यहाँकी प्रसिद्ध दिगम्बर वसही (यसिंद) में ठहरे थे। इससे विदित होता है कि राष्ट्रमूटींके दासनके वारम्मसे ही एकोरा दिगम्बर जैनधर्मका प्रसिद्ध मेन्द्र या। कोर इसका कारण यही है कि राष्ट्रपूट-नरेश प्रारम्भसे ही सर्वधर्मसमदर्शी थे और चनका व्यक्तिगत या कुलधर्म धीय बैप्णवादि होते हुए भी वे जैनधर्मके विशेष पद्मपाती और सरक्षक रहे थे। दिलदुर्गने एलोराको राजधानी धनाकर नासिक विषयके मयूरखण्डी दुर्गको अपनी प्रधान छायनी बनाया ! ७५२ ई० में उसने चालुक्य-नरेश कीत्तिवर्मन्की पूर्णतया पराजिस करके महाराजािचराज परमेश्वर परममट्टारक पृथ्वीवल्लम खण्डायलोक वैरमेप सादि उपाधियाँ घारण कीं और अपने-आपको सम्राट् घोषित किया। अपनी मृत्युस पूर्व, ७५७ ई० तक उसने वातापीकी चाल्क्य सत्ताका प्राय अन्त कर दिया या और अब वही दक्षिणापयका समाट था। इसके अतिरिक्त उसने सिन्युमूप, श्रीशैलके चोड, परलय निद्वर्मन्, पाण्डच नेदुजलियन, परान्तक, श्रीहप, तथा परमार, बच्चार, कोसल, मालवा. लाट, टक आदि देशोंके राजाआको पराजित किया था । इसने पल्लवमल्ल-के साथ अपनी पुत्री रेबाका विवाह करके उसे मित्र बना लिया था। चित्रकृटपुरके श्रीवरुलभ राहप्पदेवको पराजित करके उसकी उपाधि और रोजका लर्ज बहुन हिया। इस्ते नवर तालावर्स इसे ध्याप्ते बहुन गीमलेक बा बेबहुर्ज हो महेने और साधी मोरिक्टे बालने तरिव हुए एक्टम पानवारीके निवह हो जावनार्थ बा को और बालि नपान्तु निवायन एवं पानतीर्थाले कृत्यानियोंने कृत्योंने साध्या दिखानित स्वर्धीय हिया। बेबायन विवयन्त्रत (०१५-७५) जो निवृत्य कृत्यानित स्वर्धीय वास्त्रत पुरागाके पानवीर्तिनृत से बीर को साथ साथ विवयन स्वर्धीय वास्त्रत पुरागाके पानवीर्तिनृत से बीर को साथ साथ साथ

इन बचार बोर्डन ही अनवहै राज्यूह सॉन्स्ट्रब्डे दिन्तिक वर्षे अपना साम्राज्य । स्वारित कर निया । एक्टन्ट नंपनी नीत सुरह कर थे बीर गायल-गरकता क्षेत्र करके शामणी स्थिति गुरवित कर यो । स्रोप ही निजानों बीर कृष्टियोका बारट करने बीर अन्य सामित्वर्ग नायीक बिद्र को अवस्त दिवास किया। ७ ७ ई. में क्रमधी मिलायान मूच होनेशर बनशा नावा कृत्य प्रथम अशास्त्रकी मुनानुंच विशासमार बैहा और ७ ३ ई. तथ बबवे राज्य किया । बालान्य तलाशे लियोप करने क्रमी रक्षियो बॉक्रममें अपने धिनातार बारशीको निवृत्ता किया। क्षत्र है के ब्रावस कार्य पुत्र गीनिक शित्रीकड़ाए। बेलिके पालुका दिवसादित अस्तरो नराजित हम समीम कराया । १८ ई. में मनगरिए बोबुरप मृतरक्षणे परानित करके मनोच किया । ७६५-३० हैं वे क्ष्मने एनोराने सहविद्ध केसाथ औरर' क्षाइनेने कारकर बनवाया। काफे रिका ही प्रमाणना और क्यान्याकृत्वा जाति मुस्कारण चैत्रुपूर मन्दर भी हवी कार्यक करता बच्ने प्रारम्य हुए । तुक्र विद्वाल् निसीहरू नोर्वनरेख राम्पाकी विजयका जेन इक्तको केरे हैं। पूर्वीका जैनान विकासनके स्थान परपारिकास के जिस्सी बीज विकासके सामविक्र

वर वर्गोतर-तास विशे को रियानवर करन किया जा १ व वस्तारिकार्य (५२०-८ - र्र) में वह बारो कार्यक और करी थे। वे दह

क्षियां का र

कृष्णराज प्रयम-द्वारा सम्मानित हुए ये। कृष्णके उपरान्त उसका ज्येष्ठ पुत्र गोविन्द द्वितीय प्रमृतवर्ष विक्रमावलोक (७७३-७७९) राजा हुआ। वह दुराचारी और अयोग्य था। उसने गग शिवमारको उसके भाई द्रगमार एयरप्नके विकद्ध राज्य प्राप्त करनेमें महायता दो थी अत शिवमार उसका भित्र या किन्तु गोविन्दक भाई ध्रुपने, जा अत्यन्त महत्त्वाकाक्षी या, गोविन्द-का उच्छेद करके राज्य हस्तगत करनेका पर्यन्त्र किया। पल्लव, गग, पूर्वी चाजूनय भीर मालवनरेश गीविदके सहायक थे कि तु ध्रुवने अपने पुत्राको सहायतासे युद्धमें इन सबको परास्त किया। सम्भवतया गोविन्दकी भो युद्धमें ही मृत्यु हो गयी । इस प्रकार ७७९ ई० में घारावर्ष, निरुषम. किष्ठवस्लम, प्रावन्लभ, घोर, धवलइय, बोद्गाराम (वल्लहराय) आदि चपाधियोंसे युक्त झूत्र राष्ट्रकूट राज्यका स्वामी हुआ। ७९३ ई० तक उसने राज्य किया। यह महापराक्रमी और वीर योद्धा था। राज्य प्राप्त करते हो उसने गोविन्द दितोयके सहायकोंका दमन करना प्रारम्भ किया। गग शिवमार द्वितीयको बरदी बनवाया, निष्दिवमन् पल्लवको पराजित करके उससे हायियोंके रूपमें कर वसूछ किया, वैंगिके विष्णुवर्धन चतुयको हराया और उससे पुछ प्रदेश तथा उसका पृत्री शोलमदारिकाको पत्नीरूपमें प्राप्त किया। तदनन्तर विष्याचलको पार करके वह गगा यमुनाके मध्यदेश तक जा पहुँचा। वहाँ गूर्जर प्रतिहार बत्सराजको पराजित करके उसे महदेशकी ओर भगाया और गौडके धर्मपालको पराजित करके उसे बगाल वापस पटाया । कन्नीजमें इन्द्रायुधको उक्त दोनों रात्रुओंसे कुछ समयके छिए सुरक्षित करके वह बापस दक्षिण लौट आया । श्रुवने इस प्रकार राष्ट्रक्ट शक्तिको सम्पूर्ण भारतवपम सर्वोपरि बना दिया । वह विद्वानोका भी बढा सम्मान करता था। उसकी राती चातुक्य राजकुमारी घोलभद्रारिका जैन धर्मकी भक्त थी और एक प्रसिद्ध एवं श्रेष्ठ कविषत्री थी। उत्तराप्यकी विजय-यात्रामें धूत्र सम्मवतया कन्नीजसे अपश्रश भाषाके जैन महाकवि स्वयम्भूको अपने साय सपरिवार लिवा साया या । स्वयम्भूने अपनी

रामायभ इरिवंच नास्तुवार वरित्र स्वतनम् स्वयं वाति व्यत्न् सर्वीकी रचना इसी नरेंडके बाजदमें राज्युक्ट राजवातीने की बीर मुक्ता करणान गामके अपर्ग इस मानानपारात्मा कालेना किया । स्वरम्युकी पर्णी वानिकामा जी वही विदुषी भी और बजादने जपनी धंजपुरिशीको क्रिका देवेंके किया पढ़े निवृत्ता किया था । जिल्हेन पुदारवंचीने करी हैं में माने हरिरेवपुराचको समान्य करते हुए इस नरेक्षका क्लीक क्रिम्मपूर्ण पुत्र भौतरणन को वस्तिवालकार स्थानी वा' इस करने किया है। पण्डाहर धनवलाने निकट ही बारमनर (बारबाजपुर) के पंकरतुरान्पकी स्थानी

बीरवेगका पुर्माबक्ष आक्लेज बा । वहाँ रहते हुए ही एव व्हान् बैना-पार्वने पून राज्ये बावतनावने बन् ७८ है में बच्चे नहीं हैं मीयसकती मून किया वा और दशनदार वयपनकता एक दिवाकि वयनन वंच तथा महावयक्यी कारेबा तैशार की थी। विश्वपुष्टित साहि सम्ब प्रत्य की कहीने रूपे थे। इस दिल्ला दिहातूने स्टेके करावन एक कर स्तीत प्रधान क्ष्म एवता की थी । वित्रावर सावत सन्वेंसी वर्तव्यून् एनं बन्तिक अहरकपूर्व श्रेकाएँ श्रीरहेशायांकी बन्दरेका वान हो हैं। बनके विकारीको एक विकास पुरस्कानंद्रश्च वा-वस्ताना वहा की पूर्ण

नाक्य कर नावरे पारतस्ति कम वहीं वा। वक्ता किन्त-वर्षा^{द हो} निवास था। वर्ष ९ व. के कावन स्थापी बीरहेक्सी नामू हुई। स्टें व्यविक्ति स्थानी विवासीत, परमानिकास और वृत्कुनारील क्य क्यानी राष्ट्रकृष राज्यके प्रक्रिय वैशासार्व से । भूक्का क्वासक्तिमधे क्वका तिश पुत्र बोलिन्ह शृतीय करतुंत निर्देश वर्ष बोल्स्सव भारत्यम क्रीतिवारायम विकास सबस्र (७९१-८१४ है) था । भूगो करण स्टान्स बोर एक बानके तील बोर पूर्व में कियू उन बच्छे भारत गोभा गोलिन हो या । मुक्ते राजा होनेके पूर्व ही बच्ने क्षानी मेम्बदा वर्ण मीरदाश कांग्य परिवन है दिना वा बीर निवासी

सहायक था। अत राज्य-सिंहासनपर वैठते ही ध्रुवने गोविन्दको युवराज घोषित कर दिया या और फलस्वरूप मयुरखण्डोकी प्रधान छावनीका अध्यक्ष तथा उसके अन्तर्गत प्रदेश (नासिकदेश) का प्रान्तीय शासक नियुक्त कर दिया था। वाटनगर विषय उसीके शासनमें था अत स्वामी वीरसेन-ने घवलाकी प्रशस्तिमें बल्लहराय (घुव) नरेन्द्रचूडामणिके साथ राजन जगत्तगदेवका भी उल्लेख किया । गोविन्द तृतीयने गद्दीपर वैठनेके उपरान्त गग शिवमारको मुक्त कर दिया क्योंकि अपने शत्रुओंके दमनमें वह उस वीर योद्धामी सहायता चाहता था किन्तु दिवमारने फिर विद्रोह किया और ७९९ ई० में फिरसे बन्दी बनाया गया। गोविन्दने अपने भाई कम्भदेव-को गगवास्का राज्यपाल नियुक्त किया। वस्तुत कम्भने ही शिवमार तथा अन्य दस-बारह राजाओंकी सहायतासे गोविन्दके विरुद्ध विद्रोह किया था म्योंकि वह स्वय भ्रवका ज्येष्ठ पुत्र था। परन्तु गोविन्दका राज्याभिषेक भी घुवने अपने ही जीवन-कालमें कर दिया था अत उसका अधिकार न्याय्य था। उसने अकेले ही बारह नरेशोंके उसत शत्र-सघका दमन किया, गग राजको बन्दी करके भाई कम्मको सन्तुष्ट करनेके लिए गंगदेशका शासन उसे सौंप दिया। तदनन्तर उसने लाटकी विजय करके अपने आज्ञाकारी छोटे भाई इन्द्रको गुनरातका शासक बनाया और मालवाकी विजय करके उसे भी गुजर राज्यमें सम्मिलित कर दिया। पल्लव दन्तिवर्मन्को पराजित करके उसने उससे कर लिया । विन्न्याचलके निकटवर्ती प्रदेशके राजा मार-धर्षको अपना करद बनाया । विंगिनरेश उसका आज्ञाकारी बना रहा और उसीने राष्ट्रक्टोंकी नव-स्थापित राजधानी मान्यखेट (मलखेट) की बाहरी प्राचीरका निर्माण कराया वताया जाता है। गोविन्दने ही प्राचीन राज-घानीको एलोरा और मयूरखण्डीसे हटाकर नवीन राजघानी मान्यसेटका एक विशाल सुन्दर एव सुदृढ़ महानगरीके रूपमें निर्माण किया। उसने गर्जरप्रतिहार नागमट्ट द्वितीयको पराजित किया तथा कन्नीजके चकायध और बगालके घर्मपालसे अधीनता स्वीकार करायो । सिंहल नरेशने भी बबंदे बरवारने राज्यान नेया और बने बनना व्यवस्ति स्वीवस्त किया सी बरायताचे एक बरिवसमें ब्रोटेट हुए बबंद ८ १-५ हैं में सीक्षण कांच राज्यों भीन्यत स्वास्त करनी बाते कांचा या बबंदे पूत्र वर्षोर वर्षात्र करने हुए । रित्तु जनना सीक्षणमुद्धे कराये पांच पुत्र-वर्णे-स्वय नरकेश थी वर्षे महत्त्व न तिया और करने गुण्य कांस्त हुआं स्वत्व क्रिया ८ ८ हैं में बहुत्यर केंद्रेस केंद्रेस में मार्ग कियु पूर्व भी सी से एक सार्व सेवा मा विश्व क्रान्तेश स्वत्य क्रिया कियु यू भी

बन्∠रेर−रं४ वें में बोलिय गुरीनकी मृत्यु हो मनी। यह दर्ग

वंदके बरमहान गरेपानिने था। भारतकांडी बनात राज-प्रक्रियों बड़वा कोडा बलती वी अपने सक्कता कर निवच ही वर्षपहल नरेंच था। कान ही निर्माता वाली तथा रिक्समों और वृत्तियाँका बावर करनेपाना या । वैश्वतिक प्रति वी यह अस्तरम् ब्रद्धिम्न और बच्चर था । उन्नै यन-पत्र-शास ८ २ ई. वें बचने मेंनस्पत्रपानी मान्यपुरकी श्रीवितन नामक चैन बनरि (बन्दिर) के किए बहारक्वके जैन-बहर्वोरी शुन्न दिश मा। ८ ७ ई. में बानधानकर सकावन्तारा बच्छे बाई एवं प्रदेशित करक देशने शायकानगरको सैन नगरिके किए अपने नुब सीवरकासी प्रार्मगरर पुरुषुण्यान्त्रको पुत्रारमन्त्रिके प्रतिन्त्र औरस्वास्त्रको विकार्यसम्बद्धाः बाव बेंट किये हैं। ८१२ ई. हैं करन बाननके हारा को अनुरक्षणीके पुरवे प्रचारित दिया पना या त्यमं समाद भोतित एतीयने ग्रीक्यामर्ने वैक्तिकरके निए कृष्टिनामानके अस्तिक और विजयक्रीतिके दिश्य सके कीर्तिको जर्मने मेंन बानका प्रविष्ठकारी जार्नशास्त जन्त क्षेत्र क्षेत्र का वर्तिक बक्त नुक्ते वर्तकरामके बातावे बातुकार्वको विवकातिको अत्रक्ते वनिवरणे उत्तरिका निवारम किया था। ब्रह्मनत्का केन व्यक्तिका तो बमार्च मारान्त्रे ही चंरवन बता रहा वा वहां वब सावी

बोरकेनके नहस्रिक स्थानी क्रिकेन क्षानिवर्षक पुरुदारा बच्हे क्षेत्रे

परस्य हमा ।

गये कार्यकी पूर्तिके लिए प्रयत्नद्यील थे। उनके समर्ग दशरथ गुरु, विनयसेन, पद्मसेन और वृद्धकुमारसेन तथा स्वामी विद्यानन्दि, अनन्सकीर्त्ति, रिवमद्र शिष्य अनन्तवीर्य, परवादिमल्ल आदि अनेक जैनगुरु राष्ट्रकूट राज्यको सुशोभित कर रहे थे। महाकवि स्वयम्भू भी मुिन हो गये थे और सम्भवतया श्रीपाल नामसे प्रसिद्ध हुए। वे आचार्य जिनसेन-द्वारा जयघवलाकी पूर्तिमें उनके परम सहायक सिद्ध हुए। उनके पुत्र त्रिभुवन-स्वयम्भू भी महाकवि थे। पिताके मुिन हो जानेपर उनके रामायण आदि महाग्रन्थोंका सम्पादन, संशोधन, परिवर्धन आदि इन्होने हो किया। सम्राट गोबिद तृतीयके ये विशेष कृपापात्र थे। उपरोक्त समस्त गुरु सम्राट्से आश्रय एव सरक्षण प्राप्त कर रहे थे। जैनधर्म उसके शासनमें सूद फल-फूल रहा था।

सम्राट् अमोघवर्ष नृपतुग महाराजशण्ड वीरनारायण अतिशयघवल भवंवमं वल्लभराय (८१४-८७८ ६०) जिस समय सिहासनपर वैठा ९-१० वर्षका वालक मात्र था। अत उसके चाचा इंद्रका पृत्र कर्कराज. जो गुर्जर देशका शासक था, अमोधवर्षका अभिमावक एव सरक्षक बना। अमोघको वाल्यावस्याका लाभ उठाकर साम्राज्यमें जगह-जगह विद्रोह हो गये। गंग, पल्लव, पाण्डच, पूर्वी चालुक्य आदि अघीन राजे भी विरुद्ध चठ खंडे हुए। ८१७ ६० में वेंगिके विजयादित्य दितीय और गगवाहिके राचमल्ल प्रयमके प्रोत्साहनसे साम्राज्यके दक्षिणी भागके अनेक सामन्तोंने भयकर विद्रोह कर दिया। किन्तु कर्ककी स्वामिमनित, वीरता, वृद्धिमत्ता एव तत्परताके कारण इन सब विद्रोहोका दमन हुआ और ८२१ ई० तक स्थिति काव्में वा गयी तथा शान्ति स्थापित हो गयी। नवीन राजधानी मान्यखेटका निर्माण गोविन्द तृतीयने ही प्रारम्भ कर दिया या किन्तु उसे राजषानीको पूरी तरह स्थानान्तर करनेका समय नहीं मिलाया। अव अमोघवर्ष वयस्क हो गया था, उसकी स्थिति भी अपेक्षाकृत सुरक्षित हो गयी थी अतएव ८२१ ई० में गुर्जराधिप कर्करामने नवीन राजधानी सामकेर्य हो सर्वास्तर्वद्ध विशेषम् चाराविते विश्वः। स्त्रेपेरं स्वास्त्र साम्त्र कराव और वीर नेतावि वीक्स्सर्वे सामान्यो साम्त्र एवं प्रस्कृत सामिति वृद्धि प्रस्तेतः तक्ष्य साम्त्र चित्र वीर तर्वे कार्य प्राम्पारीचे पूर्वः सामार्थे तरेगारी स्त्रणी सार्वि स्त्रीप्त राज्यो और साम्त्र विश्वः । १ विश्वेष्टिक सामुक्ति स्त्र विश्वः कार्यामधीर पर्वास्त्र (त्रा । स्त्रेसी तुर्वे चित्र विश्वः स्त्राप्त क्ष्या सामान्य प्रसाद पुत्र सुनुक्त्या स्त्रीप्ति सामान्य सामान्य ह्या मीति सामे तिल्ली सीति हो स्त्रीप्तास्त्र सामान्य प्रदार्थितः स्त्राप्ति सामान्य स्त्रीप्ति स्त्रीप्ति स्त्रीप्ति स्त्राप्ति सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य सामान्य स्त्रीपति स्ति स्त्रीपति स्त्रीपत

वनने वनगर नाम बाम विश्व वह वीरिश वहन कर राम मंदी प्रवस्त्रीते पुरस्क इन्य कोर पूर्वपील्य वहने पुत्र मुख्ये त्रित्र्यर वर्षण्य दिवा विक्र कुन्य सम्बद्धि कार रहा निर्माश्च के वरपार्टियों के बाव दरन दिया। प्रय पुत्र वे बाम नाम । वक्षते क्रमण्यां में कार विक्र क्षत्रार्थियों करायां में कार विक्र क्षत्रार्थियों करायां में कार विक्र क्षत्रार्थियों के सामान्य के कार वे भी दिव क्षत्रार्थ जाने कार्यक्र के विक्र क्षत्रार्थ के सामान्य के कार वे भी दिव क्षत्रार्थ जाने कार्यक विक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र की विक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र कार्यक विक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्ष क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्र क्षत्रार्थ कार्यक्ष क्षत्रार्थ क्षत्रार्य क्षत्राण्य क्षत्रार्थ क्षत्रार्थ क्षत्रार्थ क्षत्रार्थ क्षत्रार्थ क्षत्

भागील इतिहास एक ग्री

तदन तर सेनापित वरेचके पराक्रमंते समस्त प्रमुखोका सत्परताके साय दमन होता रहा और मामाज्यकी ममृद्धि एव द्यातिमें कोई उल्लेग्यनीय विन्न नही हुआ। यस्तुत स्वयं अमोषयर्ष एक घान्तित्रय एवं पर्मातमा नरेश था। युद्ध-कार्य उमके स्वामिभवन सेनापित और सामन्त मरदार हो सफलता-पूर्वक सचालित करते रहे। फल-स्वरूप उमकी शिवत, वैभय एव प्रतापम उत्तरोत्तर यृद्धि हो हुई।

८५१ ई० में अरव सीजागर मुलेमान भारत आया या उगने 'दीर्पायु वलहरा (वल्लमराय)' नामने अमोघवर्षका वर्णन िष्या है और लिखा है कि उस समय ससार-भरमें जो सर्वमहान् चार सम्राट् धे वे भारतका वल्लमराय (अमोघवर्ष), चीनका सम्राट्, वगदादका व्यलीका और कम (हुस्पुन्तुनिया) का सम्राट् घे। अलहिंदिसि, ममूदी, दन्नहोंकल आदि अय अरव सौदागरोंने भी अमोघवपके प्रताप और वैभय सथा माम्राज्यको स्थित एव समृद्धिको भरपूर प्रशसा को है। उनका ज्ञासन भी सुवाह क्यसे सुव्यवस्थित था। इसके अतिरिक्त यह नरेश विद्वाना और गुणियोका प्रेमी, स्वय भी भारी विद्वान् और कथि था। संस्कृत, प्राकृत, कन्नक्षी एय तिमलके विविध्विष्यक साहित्यके सुजनमें उसने भारी प्रोत्साहन दिया था। उसकी राजसभा विद्वानोंसे भरी रहती थी।

सम्राट् अमोघवर्ष जैनध्मिका अनुयायी और एक आदर्श जैन-श्रावक था, इस विषयमें प्राय कोई मतभेद नहीं है। बोरसेन स्वामीके पट्ट शिष्य सेनसधी आचार्य जिनसेन स्वामी उसके राजगुरु और धर्मगुरु थे। ये विभिन्न भाषािषत्र एवं विविध विषयपटु दिग्गज विद्वान् थे। छडकपनसे ही उनके साथ अमोघवर्षका मम्पर्क रहा था और वह उनकी वही विनय करता था। जिनसेनके सम्मुख सर्वप्रयम कार्य अपने गुरु-द्वारा अधूरे छोडे गये अयधवछ महाग्र यको पूर्ति करना था। सन् ८३७ ई० में अमोघवर्षके आश्रयमें सथा उसके प्रधानामात्य गुजराविष कर्कगकके सरक्षणमें गुरु-द्वारा स्थापित वाटनगरके ही अधिष्ठानमें उन्होंने ६०००० रहोक प्रमाण उयत

बन्दरी बनाय किया । भीताम बुदर्ने क्या बन्दरा बनारर किया ^{स्टा} बारन्या अझार्के बाववार बिनोरंप स्थानी सावकारी बान्कीर्ने ही माकर रहते अने मीर नहीं काहीने नावकीत्रहत्व नामक मुक्तिय क्या वान्त्रको रचना को बचा अहानुस्त्रको रचना प्रारम्ब हो । स्त्रि करा मांगीय पुरान-सम्बद्धी है पूरा म बार मुझे और सन् ८५ हैं है अनवर बनवी मृत्यु को पती । जनके नार्गात्मक आबाद मुचनक में जिल्हा अमीव को तथा यनवा कुछ पूरण दिलीय क्षेत्रों ही साम्यान करते के। वर्षे समीपकार्व साथि कुपना लिलाक नियुक्त किया बात कारोजे पुरुवारा शाराम रिवे मर मगारूगाको महोत्त्वे वृद्ध रिमा--इनके हारा निना परा नाम उत्पादमान करनाता है। इनके अतिरिक्त कान्यनुपराहरू विकासकारिक आहि बन्द भी उन्होंने उन्हें। जानार्व ब्रह्मारिकने असे बन्पारकारक नावक देशन कन्दरी रचना ८ दे के पूर्व ही कर की भी रित्यू समोपनारि मात्रद्वर अन्तर्तने बनको पात्रमधाने बाहर बनेन वैशो एवं रिप्रामीके समझ मध-बांच निवेचका वैशानिक विशेचन रिमा मीर दन ऐतिहारिक भारतको पहिनादिह स्थानिक नान्ते परिविध क्याँ मफ्ते कमाने क्रांकिल्क रिया । प्रतिक सैनः वरिवाकार्यः सहसीराकार्ये भागा नृतिरेत 'पनिवकार-नंदर्' इती बस्तर्के जानवर निया हम्प प्रवीदे आवन्त्रे नालीय-बंबदे बावानं ग्रास्टानन पालकीयने वन्ते र्नुनिकरात 'स्कानुपायम' ज्याकरच एवं सबकी समोरवृत्तिकी रचना ^{हो} स्वयं अयोगपनि वस्तुनमें 'अलोडर' एलम्बक्किया' सम्बद्ध नीमिनान और पत्रशिक्षे 'पविधाय-मार्ग मात्रका महत्त्वपूर्व सन्द वृत्र सर्वेत्रहरू यास्य स्था।

कारीला विज्ञानेताच अपने क्यों है वे वर्षो पुष्ठावीने कार्या के बार कार्या कर ने क्यों है। बाद काराया कर ने कि परिवाद कार्याने बाद पुष्ठ करा है। वर्षो है। बाद वीय-वीयने बादा पर्थनातीने कार्या किए पुण्यानीने कार्यायां कार्याले कार्य मंदित्य होता वर्षोनेता विश्व कर्या था, स्थाने द्याका रिसक था और अपने जीवनके अन्तिम वर्षीमें तो पुत्रको राज्यकार्य पंकर एक आदर्श त्यागी जैन श्रावकके रूपमें उसने जीवन व्यतीत किया । सन् ८२१ ई० में ही अमोधवर्षका राज्यामिपेक करके और उसकी व्यति सुरक्षित करके उसके प्रधान सामन्त, अभिभावक एव चचेरे भाई ज्ञेराधिप कर्कराजने जो स्त्रय जिनमक्त था सूरत दानपत्रके-द्वारा जैना-ग्रार्थ परवादिमल्चके प्रशिष्यको नवसारी (नवसारिका) के जैन विद्यापीठके लेए मूमि प्रदान की थी । ८५९ ई० के एक शिलालेखमें राज्य-द्वारा एक नैन वमदिके लिए सिहबरगणके आचार्य नागनित्वको दान देनेका उल्लेख है । ८६० ई० में स्त्रय सम्राट् अमोधवपने सेनापित वकेयरसकी प्रार्थनापर मान्यस्तेट राजधानीमें प्रैकालयोगीके शिष्य देवेन्द्र मुनीश्वरको दान दिया था। अय भी अनेक दान उसने दिये।

उसके सामन्त सरदारों में लाट (गुजरात) के राष्ट्रकूट, नोलम्ब वाही-के नोलम्ब, सौन्दत्तिके रट्ट, हुम्मचके सान्तार राजे, गगनरेश, पुत्री चाल्क्य आदि अनेक जैनधर्मावलम्बी थे। उसका प्रधान सेनापति एव राज्यका वास्तविक रक्षक घेल्लकेतन बीर वक्षेय (वंकेश या वंकेयरस) महानु वीर. मोपण योदा. कुशल सेनाघ्यक्ष और परम स्वामिभक्त था, साथ हो परम जैन भी था। उसके प्रपितामह बीर मुकुल राष्ट्रकूट कृष्ण प्रयमके, पितामह एरकोरि घ्रवधारा वर्षके और पिता धोर सम्राट् गोविन्द तृतीय जगत्तुगके राजमिचव एव सेनानायक रहे ये। प्रारम्भसे ही वक्रेयका वदा जैनधर्मका अनुयायी था । उसकी माता विजयाम्या मी वही धर्मारमा थी । वंकेय सम्राट् अमोचवर्षका अत्यन्त कृपापात्र एव प्रिय अनुचर या। उसकी सेवाऑसे प्रसन्न होकर सम्राट्ने उसे विशाल बनवासी प्रान्तका एकाधिपति सामन्त बना दिया था और वहाँ बकेवने बकापूर नगरका निर्माण करके उसे अपनो राजधानी बनाया था । अमोधनर्पका कोमूर शिलालेख (८६० ई०) चेनापित वकेयकी प्रार्पनापर ही लिखा गया था और उसीके द्वारा निर्मिन जिनमिद्दरके लिए राष्ट्रपति जयात्वके तत्वावधानम्

स्त्र ८५५-५६ के स्वतंत्र ६ वर्ग पात वालीक वारायः वालीक्ष्मी पात्रका वाली वाली स्वतंत्रका के सिंता और एक निराह स्वतंत्रकी स्वतंत्रका करनी कार्यक्र के सिंता और एक निराह स्वतंत्रकी स्वतंत्रकों के व्यंत्रकों सैंता के एक मिला के स्वतंत्रकों के व्यंत्रकों के व्यंत्रके के व्यंत्रकों के व्यंत्रक्ष के व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत्रके व्यंत्रकों के व्यंत्रके व्यंत

शासनमें ले लिया । कृष्णकी पट्टरानी चेदिनरेश कोक्कल प्रथमकी कन्या षी और उमने अपनी पुत्रीका विवाह आदित्य घोलके साथ किया था। कृष्णने वेंगिके गुणग विजयादित्यपर आक्रमण किया किन्तु अमफल रहा। उसके बाद चालुक्य भीमके विरुद्ध भी वह उसी प्रकार असफल रहा। अपने पिताकी भौति कृष्ण भी जैनघर्मका भवत था। जिनसेनके पट्टियाच्य गुणभद्राचार्य उसके गुरु थे। ८९८ ई० में गुणभद्रके शिष्य लोकसेन-ने उनकी उत्तरपुराणकी प्रशस्तिका सवर्धन करके वीर वकेयके पत्र बीर वकापुरके स्वामी लोकादित्यकी राजसभामें चक्त महापुराणका पुजोत्सव एव वाचन किया था। लोनादित्य अपने पूर्वजोंकी भौति ही राष्ट्रकूट-सम्राट्का स्वामिभवत सामन्त एव उच्चपदाधिकारी था । ८७५ ई॰ में पृष्णके सामन्त सौन्दत्तिके पृथ्वीरामने जैनमन्दिरोंके लिए मुमि प्रदान की थी। एक अन्य प्रमुख सामन्त तीलपृरुप विक्रम सान्तारने हमन्त-में पिलयनका नामक वसदि तथा कुन्दकुन्दान्ययके भौनी सिद्धान्त भट्टारकके लिए एक अन्य वसदि (८९७ ई० में) निर्माण करायी थी। सम्भवस्या इसी राजाने हुमच्चमें गुडड नामक वसदि वनवाकर उसमें भगवान वाह-बिलको मूर्ति प्रतिष्टित की थी । विक्रमवरगुण नामक एक अन्य सामन्तने पेरियकुडीके अरिष्टनेमि भट्टारकके छिप्यको दान दिया था। कृष्णके ही राज्यकालमें कोप्पण तीर्थपर (८८१ ई० में) एक चटु-गदुमट्टारकके शिष्य आचार्य सवनन्दिका समाधिमरण हुआ था । उस कालमें कोप्पण एक उन्नत तीर्थ एवं जैन-सेन्द्र था। स्वयं हृष्ण द्वितीयने मूलगुण्ड, बदनिके आदि स्थानोंके जैनमन्दिरोंको दान दिये थे। उसका सन् ९१४ ई० का वेगुमारा साम्रवासन एक जैन दान-पत्र ही है। इसी नरेशके आश्रयमें कन्नडी मापाके जैन महाकवि गुणवर्मने अपने हरिवशपुराणको रचना की थी। एक व्य जैन महाकवि हरिश्च द्र कायम्यने भी अपने धर्मशर्मास्युदय काव्यकी रचना सम्भवतया इसी कालमें की थी। ९०० ई० के चिक्कहनसीगे जैन वसदिके शिलालेखरे ज्ञात होता है कि क्रुग्णकी जविकयद्वे नामक एफ वेंग्यन्थना बायना महिला बन्दना कुळल ग्रामक थी। इंप्ल हितीयको प्रायः वृहासस्यानै ही सान्य ब्राप्त हुना या और कार्य पुत्र करातुनकी क्लाफे बीसनमें की जूत्यू की नकी थी। जान कराना कराय-

विकास कारा बोना कर मुनीक निरंपकी स्टूक्टर्स (ttr-१६ है) हुमा । रतने बालगांके क्लेपको पराजित करके बाने मधीन किया, वॅनिक पानुश्रांको मी बचनी समीलता स्थीकार अरलेकर निवर्त विस्ता बन्मीतर्के नदीराचके विचय वृत्रीमें भी मह विजयी हुना बक्क्स कारत है। कक्ते दुर्वर मेशार्गत मर्गनंद और मीवियव बीमी दी बैंगवकी मेर्ड बानी ने । नेनार्रात स्वीतित्रम् 'स्वरितिननीज स्रीर मनुष्य वृत्ति सी बरमाता था । वर पास और धारम दीनो ही विदानोंने बडिडीन वो है

जीवनके ब्रालिय जानमें भशारका स्वान करके बद्ध सैनमुनि ही क्या वां र न्द्र रामा (इन्द्र गृरीन) दल्ता भाग्रे दानी था कि ९१५ हैं. मैं क्ररावर्ष नायक स्थानने वन बनका बद्धान्योत्तव मध्यमः बना वी क्यने वर्तेतुस्त्री, वर्शकारों और नावक वर्णातों 😙 । बान बान दिने वे । बाने पूर्वजीवी गोरि नई में निरोपका क्या या । करने अबोहरी अधिकी हत्कार्य क्यने वर्द्ध् याजियामरा राजाय-विकित सुन्दर नाश्चीत दनवामा वां रे मणवानुके मेलक विविध्यमकट्ट तथा काफे रिता नेपानितामा मी की

विकास ना व

वक्के बनरान्त प्रकरा नुस अमोनसर्प द्वितीन (९२१-२५ हैं) यंग हुना सिन्तु वह नाने बोटे नाई बोस्निक्के वर्तनावरा विकार हुनी अगीय होता है। वोशित्र चतुर्व कुरुर्ववर्त (९१५ ३६ ई.) सो अन्यर क्या माले नहें कार्रिशे दृत्या करके राजा बना वा दूस पुरावाधे और समील बागक किस हमा । इसके ब्रावरी १३३ ई. में देवनेवने वर्धनवार-नी रचना की की । बातन्त्र बरशायेकी जार्नकार श्रवका जाना समीना वर्षे पुणील महिन (९६६ ३९ ई.) बोलिन्डको बहोचे क्यारकर सर्वे राजा हुना । व्य एक बान्धिक्त नरेख था । बदशा पुत्र कुमधन हर्ण गगनरेश राचमल्ल सत्यवाक्ष्य द्वितीयके विरुद्ध उसके भाई भूतुग द्वितीय-का पक्षपानी और सहायक था, अत अमोघवर्षने भूतुगके साथ अपनी पुत्री रेवाका विवाह कर दिया ।

कृष्णराज तृतीय सकालवर्ष (९३९-६७ ई०) राष्ट्रकूट वशके अन्तिम नरेशोमें सर्वमहान् था । अपने वहनोई भूतुग गगकी सहायतासे सल्लेयको पराजित करके वह पिताके सिहासनपर वैठा। वदलेमें **उसने भूतुगको अपने भाई राजमल्लका अात करके सिहासन प्राप्त** करनेमें सहायता दी, भूतुगको गगवाडि और वनवासीका राजा घोषित किया, उमके पुत्र तथा अपने मानजे महलदेवके माथ अपनी पुत्रो विजन्ता-का विवाह किया और उसकी पुत्रीके साय अपने पुत्रका। इन विवाह-सम्बन्बों एव मैत्री-व्यवहारोंके कारण गगनरेश भूतृग द्वितीय, मक्लदेव. मार्राप्तह बादि कृष्ण और उसके उत्तराधिकारियोंके सबसे वडे हिंदू और सहायक वन गये। उसे अपना अधिपति स्वीकार करनेमें उन्होंने अपना सम्मान ही समझा । कृष्णके लिए इन गगोने अनेक युद्ध किये । भृत्गने उत्तरमें चित्रकृट और कालिजर तक विजय की, दक्षिणमें कृष्णके साथ चोलों-पर आक्रमण किया और परान्तक चोलके पुत्र राजादित्यको हायोपर वैठे-वैठे ही वाणसे वेघ दिया । गगनरेशकी सहायसासे कृष्णने चोल, पाण्डप, केरल, कलञ्ज, कौच एव सिहलके राजाओंको पराजित किया तथा रामेश्वरममें अपना विजय स्तम्म स्यापित किया । उसकी ओरसे गग मारसिंह और उसके बीर सेनापित चामुण्डरायने बनवासी देशको विजय किया, नोलम्बीं. गुर्जरों और किरातोंको पराजित किया, चच्छगी-जैसे सुदृढ़ दुर्गीको हस्तगत किया, अल्लण, वज्जवल, मृहुराचय्य आदि सामन्तों एव उपराजाआका दमन किया । उसने मालवापर आक्रमण किया और परमार हर्पमियक्ने उसकी अधीनता स्त्रीकार को । कृष्ण एक बीर योद्धा, दक्ष सेनानो, मित्रोंके प्रति अति उदार, घर्मात्मा और पराक्रमी नरेश था। उसने राप्ट्रकूट साम्राज्यको प्रतिष्ठाको गिरते-गिरते वचाया । किन्तु दो-एक राजनैतिक मुखें परकों की बरनारों को स्थानित हो। दिया किन्तु बनका पूजाय बनक नहीं दिया पूरते एक प्रमुख्य बरायर है हैदानी साधारिक देवते। नामने एक ध्यारपूर्व साधेर हैरिक-तेनाकों के स्थित प्रदेशी और देव बरायी हरण कृषित एक स्थान पर्वेश को बाते अपने पूजीकों और देव बराय रोगक और दिहालोंना आनरपाडा था। वैचायार्थ साधिरकार्य ना यह बरा बनामा कराता का और उन्हें साता कुत कराता था। वर्षीय बरायर के से निरमण कर किन्ते और यून दिवारों दिया जोड़ की साधिर का किन्ते

भीर रूपरने प्रस्तारोधी द्वारा वितर ही. बीडिड चानुसर्गे वर्ष देवानीहे सन्त नहाती. तानवीचे असल राजनुष्ट साधान्यका सूच पहिन्दी

कृष्णने क्यारी वापाने जैन न्यानांच चोचकी क्रमानामानांची

सामि देशर मनमानित विशा को । वीर्यश्चने वार्तिनात्क वर्ष वीतिमान्त्रन्त्र पर सामानित विशा को । वीर्यश्चन विशा को सामानित विशा है विश्व के संस्था नार्या के थी । विश्व के संस्था नार्या के थी । विश्व के स्था नार्या के थी । विश्व कर्म नार्या के थी । विश्व कर्म नार्या के थी । विश्व कर्म नार्या कर्म नार्या के थी । विश्व कर्म नार्या कर्मा कर्म नार्या कर्मा नार्या

पानवेदे पितक वर्ष परमार्थ सरस्याहि हा पहुन्तास्यर कामनव कर दिनों और ९ २ हैं मैं कार्य अमनके पानवादीको नहा और सब्स दिना। कानराज्य पत्ने मुख्ये गोहिन थीं आग्रा नहा। वामनदेखों सुर्के कार्य महास्त्री पुनस्ता नहीं में और कार्युंने कह नुस्त नवधि दिनायन वर्ग

नालांच इविदाल एवं दर्वे

इस्तेनें तकत हो कहे ।

करण वित्रण किया है। समाचार सुनकर गंग मार्रासह राष्ट्रकूटोकी सहायताको पहुँचा, परमार सेना तुरन्त वापस छोट गयी और खोट्टिगका पुत्र कर्क दितीय (९७२-७३ ई०) राजा हुआ। यह भारी योदा था और घोडे ही समयमें इसने पल्लवो, गुर्जरो, हणी और पाण्डघोको युद्धमें पराजित किया। इन युद्धोंके कारण राजधानी फिर अरक्षित हो गयी कौर ९७३ ई० में चालुक्य सरदार तैलपने उसपर अधिकार करके कर्ककी राज्यक्यत क्या और सम्भवतया युद्धमें मार भी दिया। राष्ट्रकृट वंशका अतिम राजा इद्र चतुर्थ था जो कृष्ण तृतीयका पोता तथा गग मार्रासहका भानजा था। वह भारी वीर और योद्धा था तथा चौगान (पोछो) के खेलमें निपृण था। मार्रसिंहने उसे अपने पूर्वजोका राज्य प्राप्त करनेमें भरसक सहायता दी । एक वारको मान्यखेटमें उसका राज्या-मिपेक भी कर दिया । दोनोंने वीरतापूर्वक अनेक युद्ध किये किन्तु स्थायी सफलता न मिली। ९७४ ई० में मारसिंहकी स्वगुरुचरणोंमें सल्लेखनापर्वक मृत्यु हो गयी। अञ्च निस्सहाय इन्द्रराज भी कुछ वर्षी तक प्रयत्न करनेके बाद संसारसे विरक्त हो गया और श्रवणवेलगोल चला गया। हेमावतीके तथा श्रवणवेलगोलकी चन्द्रगिरिके शिलालेखोंसे शात होता है कि अन्तमें वह जैनमुनि हो गया या और ९८२ ई० में इस 'विश्वविख्यात इन्द्रराजने शान्त-चित्तसे सल्लेखना व्रत घारण करके देवराज इन्द्रके पदको प्राप्त किया। इस प्रकार इन्द्र चतुर्थकी मृत्युके साथ दक्षिण भारतके महान राष्ट्रकट वश और साम्राज्यका अन्त हुआ।

लगभग २५० वपके उपरोक्त राष्ट्रकूट युगमें जैनधमं और विशेषकर उसका दिगम्बर सम्प्रदाय सम्पूर्ण दक्षिणापथमें सर्व-प्रधान धर्म था। ढाँ० अस्तेकरके अनुसार साम्राज्यको लगभग दो तिहाई जनता तथा राष्ट्रकूट नरेशों एव उनके परिवारोके विभिन्न स्त्री-पुरुषो, अधीनस्य राजाओ, उपराजाओं, सामन्त-सरदारों, उच्च-पदाधिकारियों, राज्यकर्मचारियों.

महाजनों और श्रेष्ठियो सभीमें अधिकतर लोग इसी धमके अनुयायी थे।

दक्षिण भारत [२]

च्या था । चैक-बैन्सवादि-हान्य बाक विचेत्रों और अनेक-विचेत्री सैसीवर बीक्य बार्याचार किने जानेकर की और एक्ट पैनोके इन वसर्वे प्रश्न मनिक परिकल्पना होते हुए वी बनके हारा बर्जनोर्टर शामिक मन्त्राचार किये बालेका कोई प्रधाय नहीं जिल्ला । बाव ही बेलवर्व बाले बहुएं क्सिके मीकिक वर्ताओं बीएडा-पूर्वक तुब संबाधन स्वयेष हैन स्वयंत्र रवा वर्ष किशार जानकश्चरक बाहिने बावक हो हवा ही नहीं जावक ही हुन। बैन रिह्नाले जास्त्रीका सम्बार करा बीर बैन क्लाकार्यने महितीय कृतिबंधि देवको बर्कप्रस किया । अपने इस बागुरस एउसी बैंग-बंदर किने बारतीय बंदर किया बर्नेकेन्सी विशास किया। करपानीके उत्तरवर्धी बाहुन्य-१०वा को है ५ एउन पारके मन्त्रिय वर्ष पारतीय परिवासमें करवीयक महतापूर्व से । समेव राज्योंने क्लद-केर बर्ड, कई नरेकोंको बाब, बबीलीक राज्याविवेस, वर्ड स्थानोर्ने राज्य एवं वय-परिवास हुए। बस्तून बैक-सम्बद्धके बनुवार मह नुव कुपरे क्वानिको मानवा तुपन था। माने का प्रीवर पायारे इब कारने एक सहस्य चन्नाव्यक्ति हुई। १६७ ई में चारपुर्व बनाई हुन्त वृतीर नर्नचके श्रीवचनती बन्त्य मृत्यानक यूक्कर त्याची प

मोर-पिका थी बैन-परवी और बन्धियों-हारा खंबावित होती 🖷 🖰 वर्णनामाना प्रारम्भ बैनमना 'ध्रम्माः निक्रमा हे होता का मी म्यून राजने भाव तक बारा बारा है। पुत्रराजने केनर बालारेस पर्नेच और नर्वराने केवर सदसा पर्वता बनेब बैन निवासीत जन-वानारएको ही गरी राजपुतारों एवं अन्य क्षत्र वर्धीके श्वाप और शामाजीनी जी वार्निक एर्न सीविक विका प्रशास करते थे । अनेक वैताकार्य राजार्जी और नही-चनानोके समानुब और वद्यार्थक के (काहार अवन, कोर्या और रिद्यासन्तास नित्र माहिका बारक बाहिका कर अपूर्विक तम बीकोन-कारके नार्वेनि रत का । बाब ही धारितिहरू स्वक्रायालक एवं वहिन्तु बैनवर्य अन्य वर्तीके साथ बसारता । बद्धान सीर बहुगीवपूर्वक जनमी कर

िकन्तु दिसम्बर ९७३ ई० में इसका सम्पूर्ण राज्य उसके भतीजे कर्क दितीयके हाथोंसे अकस्मात् छिन गया और २५० वपसे चला आया विशास एव शिवतशाली राष्ट्रकूट साम्राज्य एक स्मृतिमात्र रह गया। उसके स्थानमें वातापीके प्राचीन परिचमी चालुक्य वशका चमत्कारी पुनहस्यान हुआ और इसका श्रेय चालुक्य कीर तैलपको है।

तैलके पर्वज कहाँ रहते थे या राज्य करते थे इसका कुछ पता नही चलता । पीछेके चालुग्य अभिलेखामें उसका सम्याध यातापीके पश्चिमी चालुक्य सम्राट् विजयादित्य द्वितीयके साथ जुड़ा मिलता है जिसका पौत्र की तिवर्मन् द्वितीय ७५७ ई० में इम वशका अन्तिम नरेश था। उसके चाचा भीमपराक्रमकी सन्ततिमें कीत्तिवर्मन् तृतीय, तैल प्रथम, विक्रमादित्य तृतीय, अम्यन प्रथम और विक्रमादित्य चतुर्ध क्रमण हुए। अन्तिमका पुत्र यह तैल दितीय था। कुछ विद्वान् इस वशक्रममें मन्देह फरते हैं। ९५७ ई० में यह तैल या तैलप राष्ट्रकृट कृष्ण तृतीयके अधीन तरद्वादी १००० प्रान्तका एक साधारण श्रेणीका अज्ञात कुल एवं निरुपाधि शासक था। किन्त्र ९६५ ई० में वही उसी प्रान्तको एक अणुगजीवि (जागीरदार सामन्त एवं सेनानायक) के रूपमें भोगता हुआ सत्याश्रय वशी महा-सामन्तात्रिपति चालुमपराम आह्वमल्ल तैलपरस वना मिलता है । मस्मवत्या अपनी महत्त्वपूण युद्ध सेवाओंके कारण कृष्ण तृतीयका कृपापात्र बनकर मात्र ८ वर्षमें ही उमने ऐसी अद्भूत उन्नित कर ली थी। उसकी मी वोषादेवी चेदिनरेश लक्ष्मणकी पुत्री थी। उसने स्वय अपना विवाह रास्ट्र-कृट सरदार वम्महाट्टको कन्या जनव्ये अपर नाम रूदमीके साथ किया था। देविदयोंको कृष्णने अपने विरुद्ध कर लिया था। इस प्रकार अपने मामा चेदिनरेश युवराज द्वितीय, अपने श्वसुर वम्महाट्ट, वॅगिके पूर्वी चालुक्य विद्या दितोय, सुयेनदेशके यादवराज मिल्लम द्वितीय आदिको मित्रता एव सहायतासे तैलपने अपनी धाषित बढ़ानी प्रारम्भ की । राष्ट्रकूटाँका सामन्त और सेनानायक बनकर उसने उनकी आन्तरिक दुर्वलताओको लक्ष्य किया भीर बरदारणे गांवमें रहा। बाक नातक कुक बह्मान बरधार हाजारे विच्छा हो नया जा अन्त चंत्र वार्यवहते बढशा दक्त दिन्स था। यद बहु भी वैचनते जा दिना। बारीनेयदा बहु बहुत बाक एक बहुत बीचा हुई विकास राज-

नीतित था। वेकाने को साने बहुको साका समाज निमुक्त निया और 'बहुत्यान सकरदक सीनाडिं' पर दिया। पाकने सर्वाधित दिवें 'बहुत्यान, बीनोधान सादि कार्योवर्ग राजां आह हुई। बहुन्द कर्ण तै केकार समाजायात् ही तथा था, राज्य-सहस्था वर्ग राज्य-करने पुरोग हार्योन कोइकर वैकर वर्ग पहुंचीन दरन की राज्य-निवासी केकार हुआ। असकर पुर कुल्य-सावक सार्वेद की बहुन् गीदा वर्ग पुरास केकारायत् था। कियानी केतारित असकर से सामाज सेमा एवं व्यक्तिक कर्म।

लोकपार बन्नवरण आहि एउट्टू रिंह कई बन्न बारण बरायों परें बन्नवर्धियोगों थी फैक्से बीट किया था। बक्के लीवनकी १ ६ है है हिंदक प्रधारों बन्नवर्धिया निवंध और व्यक्तियों हारा करके एड्ने-इट व्यक्तियों करंद कर दिख्य था। यानावर बहु बहुत्त प्रधानों नेतन प्रधानका विकाद हुई। ऐसी विश्वित १ ६ है कियाने बन्नवर्धरण वेश्वस बारा बेशा। एउट्टूट कई डिज्ज को बारी बीटा था, अनेकर बुद्ध हुइ किसे बक्के साथ बंध बीट केल्के एउट्टूट एउटकोलिंट बीटा दिख्य किया में बार्य बीटा केले प्रधान हिंदी बीट किया बीट एक प्रमुख्ती एउट्टूट विद्यालगार क्योंकि विकाद किया हुइ हुई अदिनों बार बैलाने एउड़ी निकादकर जानवेटों बाजा एउट्टे विद्यालगार क्योंकि दिल्टी एउट्टे

निरोक्ष करणाः वेपादर चीतुम्ब (९०६-४४ ई.) तैसन प्रान्तवा जना वर्त याः वर्धत्रका करे मनीविकोद्धा केना याः वार्गावद्व और व्यक्ति केनारिते मानुस्थापके प्रति वसके द्वारति सार्यन्तवान वार्षिन्त्य देशीसी वसके साध राष्ट्रकृट राज्यका अपहरण भी सहन नहीं कर सक्ते थे। अतः परस्पर युद्ध चलते रहे। मारसिंहने तो विरक्त होकर समाधिमरण कर लिया। वैलपने पचलदेव, गोविन्द, मुदराचय्य आदि गग सरदारोंका दमन करनेमें चामुण्ड-रायकी सहायता की और गग सिहासनपर राचमल्ल चतुर्थको तथा तदनन्तर रानकसगगको वैठानेमें साधक हुआ, अतएव ये दोनों गग नरेश और उनके महामन्त्री चामुण्डरायसे उसकी मैत्री हुई और वह उनकी ओरसे निश्धक हुआ । तदनन्तर तैलपको सेनाओंने करहाट, वोंकण, पिल्लकोट, भट्रक अादि प्रदेशोपर आक्रमण किया और राष्ट्रकूट साम्राज्यके अन्तर्गत जितना प्रदेश था उस सबपर प्रभूत्व स्थापित कर लिया। उसने गुर्जरदेशको भी विजय किया और मालवा नरेशसे युद्ध किये। मुज परमारने छह बार तैकपके राज्यमें आक्रमण किया और प्रत्येक बार पेछि हुटा, अन्तिम धाषेमें स्वय बन्दी हुआ। कहा जाता है कि तैलपको बहन मृणा-लवतीसे उसका प्रेम हो गया था और फलस्वरूप वह भाग निकला किन्तु तैलपने उसे युद्धमें फिर पराजित किया और उसी युद्धमें मुजकी मृत्यु हुई। तैलवने शिलाहार, रट्ट और नोलम्ब नरेशोका दमन करके उन्हें अपने अधीन किया। गग भी अब उसके अधीन राजे ही थे। केवल चोल सम्राद् उसके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी थे, उनका ध्यान बटानेके लिए उसने वेंगिपर आक्रमण किये, उसे पराजित किया और उसकी राजनीतिमें हस्तक्षेप करता रहा । ९९७ ई०में तैलप दितीयकी मृत्यु हुई । मा मखेटका त्याग करके कल्याणीको उसने अपनी राजधानी धनाया था।

वस्तुत, जैसा कि उसके वराजोंके अभिन्नेक्षोमें कथन किया गया है। तैलपने प्राचीन चालुक्योंके राज्यका अवहरण करनेवाले राष्ट्रकूटोंको परा-जित एवं निष्कासित करके चालुक्य वशकी साम्राज्य-लक्ष्मीको पुन प्राप्त किया और प्रतिष्ठित किया। निस्सन्देह वह एक महान् पराक्रमी और योग्य नरेश था। विद्वान् और गुणो पुरुषोंका वह आदर करता था। सेनापति मल्लप्प, मन्त्रो घल्ल, दण्डनायक नागदेव, बीर सेनानायक पोनकाव मृदेपरेव और पहुक्त दैल-वैद्वे साम्य-पराविकाये एवं नुवीन्य पुषस्त्र नत्याचव आदि पञ्जीर बोदाबी, राजनीति-वर् बमार्टी, दुवन यातमाजिकारियों कर्व स्वाधिकता केवलोंकी केवालोंका काव उने जान हमा वा जिलके भारत ही बड़े मैदा आस्पर्वजनक सम्बूदन बहुत ही जान हुआ। देवको नास्तृतिक वरानराको को बनने प्रकार एवं पूर्ववत् निवीव कारी रखा। यह क्षर्व-वर्गतदित्त्व, बसार और रानी वरेंच या। वैन वर्ती क्षाव तो बनने वैशा हो पछ। एवं क्याप्तानून बच्चान बनावे रखा बैद्या कि पूर्ववर्धी पदम्बों, बंबों, बस्विबी चालुक्यी एवं राजपूरीने स्वाने रका या. वेच्यारा दिक्षके हृहयांका राजुकेने कोनांक नामक स्थानने सिना केलरावर्गवर्गारमा क्यू ९९२ है. का विकासिक बुधिय करवा है कि गई रामा बैनवर्नरा सनुवासी था । बन्दाररा बैंद स्मार्थाद एन (स्टबन्ट) बद्दरा राजकरि या । ५९३ ई. मैं करिके अभित्तपूर्ण मा पुरायक्तिक महाराज्यको पूर्व करबेपर, बलाइने बने 'कविषक्रमार्डी' बचाविने वियुत्ति किया था और स्वर्थ-स्थ्य, चेंबर, क्रम नज बर्धार देकर पुरस्कृत किया था। नाइन बीगाईन रम्बरान्य आदि कान्य वी इसी क्लिवेर्ड में । बसी कर्डेड नीयबन्त विकासेश्व-द्वारा कोलहिएके किन् समान्त एक दिवास बास्टा निर्माण कराया का बोर क्लंके सिन् 'विश्ववद्य जुलि समाबी । राजासारा बन्तंबन करनेताकेको बनने बसरि (वित्रमन्दर) नायी सन्द देशकर सर्वारची हुर्वत स्मृत्रानेसान-वैद्या नातकी वृत्तं स्थानीय स्मृत्य विद्या गा ।

बहाताची बच्च देशाती जाता और शतदेव आदि वी वैद्यवेंद्र वर्ण में । सम्बन्धी पूर्ण जोर बन्तकी पुत्र-बबु तका कलदेशकी शारी और नपुरेत हैं नहीं बननी निपुत्तीराल कांत्रसमेको साहित्सनोता। वर्तनसमाना बीक-बरायरम एवं वार्विकताके बरहुक बारबी रीवका पालनगढ पन्त इसा समस्यालाग्यन्ती सहस्रोत मोलके सानिन्तानकी एक नरूम प्रतियों एन महिनाने अपने अपने बैबार कराकर रिपारित की की ह रूपर्वे गाँव मार्गिक्सारिको १५ - जिनमृतिको बनवाकर काले विवित्त भारतीय इतिहास । एक धी

मन्दिरों में स्थापित को थीं, अनेक मन्दिरोंका निर्माण एवं ओणींदार कराया था और आहार, ओपघ, अभय एव विद्यान्त्य चार प्रकारके अनवरत दानहारा वह दानचिन्नामणि कहलायी। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसके सतीत्वके प्रमावसे गोदावरीका प्रवाह रक गया था। उसका पित नागदेव गुवराजका अनन्य मित्र और सम्राट्का अतिमाय अनुचर था। अत इस देवीके धमकार्योमें सम्राट्की अनुमित, सहायता एवं प्रसन्नता थी इसमें कोई सन्देह नहीं। किसी भी धर्मवीर महिलाके लिए आदश नागे रत्न अतिमन्वेसे नुलना किया जाना परम सौमाय्य माना जाता था।

तैलप द्विनीयका उत्तराधिकारी नसका पुत्र सत्याश्रय इरिव वेदेंग (९९७-१००९ ई०) था। उमने अपने पिताकी आक्रमणकारी नीति चालू रखी। उसका प्रधान धात्रु राजराजा चोल था। राजराजा चोलने चालून्य राज्यपर आक्रमण किया, मत्याश्रयने उसका मुकाबला इटकर किया, साथ ही वेंगिपर आक्रमण कर दिया और भीमको पराजित करके धितवर्मनको राजा बनाया। चोलोकी धिवत इम समय द्रुत वेगसे वढ रही थी अत सत्याश्रयने उनमे सिन्ध कर ली। यह नरेश भी जैनधर्मका मक्त था। उसके गुरु सम्भवतया कुन्दकुन्दान्वय पुस्तकगच्छके द्रिमिलसधी मट्टारक कनकसेन बादिराज और श्रीविजय ओडेयदेव थे। सत्याश्रयने एक जैनगुदकी स्मृतिमें अगदि नामक म्यानमें एक भव्य निपद्या निर्माण करायी थी। उसका प्रधान राजकर्मधारो उसके पित्र नागदेव और अतिमध्वेका पुत्र पदुवेल तैल था, वह भी जैनधर्मका परमभवत और कवि रक्षका आध्यदाता था।

सत्याश्रयके पदचात् उसका पुत्र कुन्यमरस राजा न हो सका, उसके भाई दशवर्माका पुत्र विक्रमादित्य पचम (१००९-१३ ई०) राजा हुआ। सदुपरान्त इसके भाई अय्यन द्वितीयने लगभग एक वर्ष राज्य किया और फिर तीसरा भाई अयमिह द्वितीय जगदेकमल्ल चालुक्यचक्री (१०१४-१०४२ ई०) राजा हुआ। इसके समय भोज परमारने अपने चाचा मुजका वरण केनेके नियं करनाचीचर जाकनच किया। व्यक्तिके प्रोज्य नुष्टे-वचा क्या और रोजोर्जे तरित ही नवी। वैक्ति वाल वी क्याप हुन हुनों वोजित नेवान के हुन हुन किया के किया हिस्सी पूर्व किया हुन किया यो। व्यक्ति हुन्ति जैनवर्षन पियेन क्याप के कैन स्थिति हैं पुर्वाण करने समान किया क्या खाहिल-निर्माणको जीलाहन विचार

उत्तरां वारिकार प्राप्त का बहु बहुत करता करा करते प्रचलाते व रच्यांत्रिके वार करूरी करण प्रत्यक्त किने हैं। करके प्रचलते रच्यांत्रिके वार करूरी करण प्रत्यक्त किने हैं। करके प्रचलते कर्यांत्र प्रत्य के भी। रे २५ वें बहुई बहुके क्ष्य कर्य कर्य कर्यक्रिये एकंच्यांत्र रच्या के। विचार विद्याप्त कर्यक्रिये इस त्यांत्रीपत्र रच्यांत्र (विचार) वार्ति क्ष्य कर्य में प्रदर्शने दें। वर्षिक त्यांत्री प्रदेशका व्याप्त क्षयक्तर भी रही वस्त्य हैं। व्याप्त वर्षिक त्यांत्री प्रदेशका वस्त्यांत्र करणकर भी रही वस्त्य हैं। व्याप्त कर्यक्रम

मोर का बोर करने अधिकारों करियातीय पराचीन वस्तरि वासन कुलार

वित्तास्त्रास्त्र निर्देश कराया सा ।

कारणार्ट करवा पूर्व केलियर केल सहस्त्रास्त्र (१ ४९-८८६)

प्रश्न हुवा १ सु इस स्वास्त्री सा अपने नीलीसी पुत्रमें स्वासित विद्यासित विद्यास

विद्यापीठ वनी हुई थां। सोमेश्वर प्रथमने जैनाचार्य अजितसेनका सम्मान किया और उन्हें शव्यचतुर्मृख उपाधि प्रदान की। इस नरेशका माहामात्य छक्ष्म 'राय दण्डगोपाल' जो उसका दाहिना हाथ था तथा बोर सेनापित (दण्डनाथ) शान्तिनाथ भी परम जैन थे। इन्होंने कई जैनमन्दिर वनवाये और उनके लिए दान दिये। सोमेश्वरकी पट्टरानी वेतलदेवीने भी अपने सिचय चाकिराज-द्वारा सेनगण पोगरिगच्छके गुरु ब्रह्मसेनके प्रशिष्य और आर्यसेनके शिष्य महासेनको १०५४ ई० में दान दिया था। इस राजाने राजधानी कल्याणोको विस्तृत एव अलंकृत किया। अभीतक मान्यसेट मो कल्याणोके साथ साथ राजधानी वनो हुई थी, किन्तु अवसे कल्याणो हो चालुक्योको पूणतथा राजधानी हो गयी। १०६८ ई० में एक भयानक रोगसे पीढित होनेके कारण इस राजाने तुगभद्रामें जल समाधि ले ली। यह राजा इस वशके सर्वमहान् नरेशोमें से था। यह जितना योद्धा था उससे अधिक कूटनीतिज्ञ था।

उसका पुत्र सोमेंश्वर हितीय भुवनैकमत्ल (१०६८-७६ ई०) भी चीलोंके साथ युद्ध करता रहा। अपने भाइयोंके साथ भी उसका हन्द्र चला और राज्यके दो टुकडे होते होते वचे। सोमेंश्वरने कदम्बोका दमन किया और चोलोंपर भी विजय प्राप्त की। अपने पूर्वजोकी भौति वह भी जैन रहा प्रतीत होता है। उसने मूलसघके आचार्य कुलच द्रदेवको णातिनाथ बसदिके लिए नागरसण्ड प्रदेशमें भूमि प्रदान की थी और उक्त मन्दिरमें एक नवीन मूर्ति प्रतिष्ठित करायी थी तथा श्रीनिद पण्डितको भी दान दिया था।

१०७६ ई० में उसका छोटा माई विक्रम उसे यन्दी करके स्वय राजा वना। यह विक्रमादित्य पछ त्रिमुवनमल्ल साहस-तुग (१०७६ ११२८ ई०) इस वशके अन्तिम नरेशोंमें सर्वमहान् था। उसके दीर्घकालीन राज्यकालमें चोलो, मालवाके परमारों और वेंगिके पूर्वी चालुक्योंके साथ उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। गोड, कामल्प, केरल, लाट, चेदि तथा अपने साम्राज्यके मन्दर्गत बोर्ड-को बारनांत्रि भी मुख बतते रहे । यह बाब निवेद करते पाकुरतो और शोकोले बीच मुखी एवं मुटबीडिक राम-नेवंदि परपुर का पीकोको पराजित करके जाएनको हो क्याने कोख राजकुमारीके कार विवाह कर किया था किन्तु संपर्ध फिर जी चलता रहा। देखी राजाके किए सङ्गलान विकासने "विकासनेन परित" की रचना की थी। स्व राजानी निवारविकटान्ये क्यांत सूनकर ही बहु कवि कस्मीरवे नर्जावक माना ना । जिनामर न्यानका पुरस्कर्ता दिशानैस्तर वी प्रवीके सम्बन्धे हुमा । इस गरेवने अपने राज्याविषेत्रको दिक्ति पासून्य विकास नातका सरमा अन्तु भी अवस्थित किया । इक्ष्मे वैतानार्व नावश्यनप्रका बरमान करके जन्में बाक्तरस्वती' बपावि प्रधान की थी। राज्य जान्त करनेके पूर्व ही जब वह एक प्रान्तीय जातक बाव मा करने बस्ताओ मान्त्रके वरिकारचे नगरमे चानुस्य-वेत-परमान्त्रवि जिल्लाकम नामका चुन्दर नन्दिर दनदादा था । विश्वासन प्राप्त करनेके दनरान्त करने दन्तवादक बर्ग्य देवजी जार्बनावर राजले वधी अन्विरके क्रिय बैक्नुव रास्केनकी ^{साम} रिमा पा । मुख्यमाँ विकेश रिमदा प्रधानदी-पार्म्यमा सिमासम्बे विका-केक्ट्रे बड़ी गरेख करत अधिराना थी. तिमीता निज्य होता है। शहुरा स्वास्त्र विश्वको प्रविद्ध चासुस्य वैकीके विकासका श्रेप हवी गरेकको जनानतमा है : क्षत्रमावीको राज्यानी चम**ेन्द्र वरियाने क्रम क्ष्यमें** प्रतुष बान-रेन्द्र थे। चक्की निविद्य बस्तियों इसे स्क्रॉने विक्रित चारहीय ^{बस्}री एनं दर्शनोत्ती विका बान-साथ दो बादी थी । इस राजाहे इनकी बारतीन बंस्ट्रिक्स बहुनुवी बंदर्वत हुवा: नह मरेख वर्ववर्ध-बहिष्णु वा वीर क्य हो बनौंका प्रविपालन करता था। नवन्ति बबका निनी एरं कुलवर्त वैनवध था । वैनापार्य व/नित् वो अपने निवय-संगय वर्ण बक्तपरण्डे क्यि प्रक्रिय में विक्रमानित्वके मार्थन से । क्को कुतुरे स्तरात् कक्का पुत्र क्षेप्रेसर पृतीय सूत्रीसामा ११२८-१९ र) धामा हुना । बर्गन वजना विवर का अनिकास्तार्थ

चिन्तामणि अपरनाम राजमानसोल्लास नामक ग्रन्थका वह रचियता था। इसका शासनकाल धान्तिपूर्ण रहा, वह स्वय युद्धिप्रय नहीं था वरन् साहित्य-रिसक था। फलस्वरूप उसके होयसल आदि सामन्त स्वतन्त्र होने लगे। उसके पुत्र जयसिंह तृतीय जगदेकमल्ल (११३९-११५१ ई०) के समयमें होयसलोंने चालुक्य राज्यका बहुमाग दवा लिया और उसके छोटे माई एव उत्तराधिकारी तैल तृतीय (११५१-११६३ ई०) के समयमें स्वय राजधानी कल्याणीपर बिज्जल कलचुरिने अधिकार कर लिया। कल-चुरि, होयसल और ककातियोंके बीच चालुक्य-साम्राज्यके तीन टुकडे हो गये। और तैल तृतीयका पुत्र सोमेश्वर चतुर्थ (११६३-८४ ई०) नाम-मायका हो राजा रह गया।

कल्याणीके कलचुरि — कलचुरि भारतका एक प्राचीन राजवश या। इसका सम्बन्ध मूलत चेदि (बुन्देलखण्ड) प्रान्तसे था अत यह चेदि वश भी कहलाता है। चेदि सवत्के प्रवर्तनकाल सन् २४९ ई० से इस वंशका उदय माना जाता है। मध्यभारत, विदर्भ महाकोसल तथ सरयू-पार बादिके कलचुरि वशोंका वर्णन पिछले एक अध्यायमें किया जा चुका है। १२शीं शतान्दीमें इस वशकी एक शामाका उदय दक्षिण भारतके कर्णाटक प्रदेशमें हुआ। ११२८ ई० में कल्याणोके चालुक्य-समाद सोमेदवर स्तीयने कृष्णके वश्य परम्मदि कलचुरिको बोजापुर विषयका सासक नियुक्त किया या। उसका पुत्र विज्यल कलचुरि उसी पदपर उसका उत्तराधिकारी हुआ।

बिज्जल वहा वीर और महत्त्वाकाक्षी था। चालुक्य जयसिंह तृतीयने उसे महामण्डलेक्वर बना दिया और अपना सेनाध्यक्ष नियुक्त किया। चालुक्य सैल तृतीयको अयोग्यतामे लाभ उठाकर साम्राज्यके सामन्त सरदार स्वतन्त्र होने लगे। विज्जलने इस विद्रोही सामन्तोका सघ बनाया और उसका स्वय नेतृत्व किया। ११५१ ई० में उसने इस प्रकार सहज ही राज्यक्षित अपने हाथमें कर ली। अन्य सामन्त लोग उसकी बढती हुई प्रस्तिने प्रतम नहीं हुए। जता क्वने क्वन्डे जहाराज हैंड पृथीयरी क्ती कर किया और शिक्षी बानगॉका यसन नरके ११५६ ई में काने-बादनी कामानीका कामार् बोवित कर दिवा और काको सेन्त् में चनाना । वडी वर्षके एक पिनानेकों बसका स्वकेष 'कलपुरि सुन्तर' पत्रत रें विशुवनवाल' निवरके नाव हमा है। ११९७ ई. पर्वेल क्रावन १२ वर्ग बक्ते राज्य विना और इतने बनरमें ही बबने प्रमाणित कर रिया क्रियद एक गीर सोक्षा जारी दिवेता और महान् वरेख वां । कारी कुकरी प्रवृत्तिके अनुसार यह जैक्सनेवा कनुसारी था। राज्य-प्रति एवं बरक्षमाने विज्ञानका प्रमान बदायक क्लाना महानात्व वर्ष प्रवान केतारांति रेपिकास का । वनुकेत्रशालक सबसा विश्वर का और वह नही-प्रचार पंच्यातक नप्रपादां या । ७१ क्या नशक्तिगारी वक्के सबीव नार्व करते थे। बहु मन एवं बीतिपूरात, बीर मोद्रा रख केवा^{ही} चरित्रपत् और नहत्त्व धनी का, क्याध्याने करणहत्त्वे बहती दुवना की बागी थी । महाशास विश्वकर्त बतात होकर वते नावरकपर बाग्य कारीर में अराम किया था । रेपियम्य परव कैंग का और वैजवर्मकी अवस्थानि क्रिए क्वरी बर्गेक वार्त किये ।

मिरसम्बाद एक स्वयं के राजी शहाय करते था, पहणा करते। बाद भी के या। मकोरणी मुन्दे करना कर स्वरंग राज्यकी निर्मेण हुई। यह प्रकेषे सकते स्वयुक्ते बहुमारिके करने करों कर गाँ था। किन्नु सारद साम सहस्तानाची था। कर्म दुस्तानीई करों करों बीठिक स्वरंग्ये प्रीयाद सिदार्ग सिद्दी थी। वेदन्यनिक पाँच स्वरंगी की पूचा थी। या करते एक स्वीम स्वरंग स्वरंग राज्यकी निरंग्य की पूचा थी। या करते एक स्वीम स्वरंग स्वरंग राज्यकी निरंग्य साम्बादानिक साम वेदन्यकी कीठिक पांच्यानी स्वरंग साम्बादी साम्बादानिक साम वेदन्यकी कीठिक पांच्यानी हो साम स्वरंग मिर्ग्यन करते और राज मिन्यको साम स्वीम स्वीम्हण स्वरंग की स्वरंग स्वरंग सामित करते साम स्वरंग निरंगिक लिए उसने राजाका घ्यान अपनी अतीव सुन्दरी भिगनी पद्मावतीकी ओर आकृष्ट किया और राजाकी इच्छाका आभास पाते ही उसके माप राजाका विवाह कर दिया। पद्मावती अपने माईकी इच्छानुमार विज्जलको अपने धर्मसे विमुख और वामवके मतका पोपक तो न बना सकी किन्तु उसके मोहपाशमें बंधा राजा राज्यकार्यकी ओरसे असावधान हो गया। इमका छाभ उठाकर बासवने अपने मतके प्रचारमें सम्पूर्ण राजकोप खाली कर दिया और राज्यके विभिन्न पदाँसे जैन राज्य कर्मचारियों और पदाधिकारियों को ललग करके अपने माथी और सहायकोको नियुक्त करना आरम्भ कर दिया। अत्तत राजाकी मोहनिद्रा टूटी और वासवकी कुचेष्टाओंपर उसका घ्यान गया, बह बहुत क्रोधित हुआ। अतएव धासवके राजाको विपावत आम खिलाकर छलसे उसकी हत्या कर दी। एक मतके अनुसार विज्जलने राज्य अपने पृत्रको सौंपकर घेप जीधन धर्म-साधनमें वितामा था।

विज्जलके पुत्र सोमेदवर (११६७-७५ ई०)ने, जो वासवके कुकुत्योंके कारण उससे अत्यन्त रुष्ट था, गद्दीपर बैठते ही उसे धर्म और राज्यका धात्रु घोषित कर दिया। वासव माग निकला, किन्तु सोमेश्वरके सिपाहियोंने उसका पीछा न छोडा, अन्तत धक्कर वासवने एक कूँएँमें हुबकर आत्म-इत्या कर छी। उसके अनुयाधियोंने उसे हाहीद घोषित किया और उसके अन्तके सम्ब धर्म अनेक धमरकार एव किवदितयों प्रचलित कर दीं। विज्जल और उसके उत्तराधिकारियोंने वासवसे चिढ़कर जिंगायतींका क्रूरताके साथ दमन किया बताया जाता है। वीरहाँच लोग ब्राह्मणोंके भी विरोधी थे, वे जाति-ज्यवस्था, यज्ञोपवीत, वेद और वाल-विवाहको धमा य करते ये तथा विधवा विवाहके पक्षपाती थे। गुरु, लिग और जगम (सावर्मी) इन तीन पदार्थोंको सर्वोपिर श्रद्धाका पात्र मानते थे। वासव-पुराण और चेन्न वासवपुराण उनके प्रसिद्ध धर्मप्रन्य है। वासवके एक शिष्प पान्नुपतिने इस धर्मको खूव फैलाया। १३वीं से १७वीं हाती तक

पीक वाता के नितंत्र कराये हुए वर्षका बुद्ध अच्छा प्रश्ना प्रश्ना के प्राप्त की प्रतिक्र का विभाग की प्रतिक्र का विदेश की लग्न की प्रतिक्र का व्याप्त की विभाग कराये हैं विभाग कराये की विभाग कराये का विभाग कराये का विभाग कराये कराये की विभाग कराये कराये कराये कराये की विभाग कराये कर

(११६०-०५ ई.) तराम या ग्राप्य (११७५-७८ ई.) बीर स्वयन्त्र सम्बद्ध (१४८-८१ ई.) हे स्वयन्त्र प्राप्त क्रियाः । वर तीमीच स्वयन्त्र सम्बद्ध वृत्त करा वर्षप्त स्वयन्त्र प्राप्त प्रदा प्राप्त क्रियो हो। इर स्वयन्त्र स्वयन्त्र स्वयन्त्र स्वयन्त्र प्रदा प्रदा १९८ ई. वे पाइय-सावन्त्र स्वयन्त्र स्वयन्त्र प्रदा होगा द्या। १८८ ई. वे पाइय-सीचेक्टर प्रमुखे सम्बद्धांचर व्रियो स्वयन्त्र का स्वयन्त्र से दि इ. इ.स. स्वयन्त्र सम्बद्धांचर व्यवन्त्र प्राप्त क्षत्र स्वयन्त्र से सिक्यांचर स्वयन्त्र स्वयन्ति स्वयन्ति

अध्याय ९

दिचण भारत [३]

दक्षिण भारतके इतिहासमें चोलो और कल्याणीके चालुक्य-सम्राटोंके जपरान्त देविगिरिके यादव, वारगलके ककातीय और द्वारसमुद्रके होयसल प्रसिद्ध है। ११वीं शताब्दीमें इन वशोका जदय हुआ और १२वीं, १३वीं शताब्दीमें इन वशोका जदय हुआ और १२वीं, १३वीं शताब्दिमोंम सम्पूण दक्षिण देश जन्हीं तीन राज्यशक्तियोंके वोच वैटा हुआ था, इन्हींसे मुसलमानोने उसे अन्तत छीना। होयसलोंके अन्तके थोड़े समय जपरान्त ही विजयनगर राज्यकी स्थापना हुई जो १६वीं शतीके अन्त तक घला। जपरोक्त प्रमुख राज्यवशोके साथ-हो-साथ कुछ छोटे-छोटे राज्यवंश प्रमुख सामन्तो और जपराजाओंके रूपमें चलते रहे। इन सभीने देशके सांस्कृतिक इतिहासके निर्माणमें भाग लिया। अत प्रमुख राज्यवंशोक विवरण देनेके पूर्व पूर्वमध्यकालके जपराजवंशोंके विवयमें ससोपसे जान लेना विवरण देनेके पूर्व पूर्वमध्यकालके जपराजवंशोंके विवयमें ससोपसे जान लेना विवर होगा।

पूर्वमध्यकालके प्रमुख उपराज्ञवश—(१) पोम्बच्चपुर (हुमच्च) के सान्तर उप्रवंशी क्षत्रिय थे और सान्तिलंगे १००० प्रदेशके शासक थे। ७०० ई० वे लगभग पिक्चमी चालुक्य विनयादित्यके शामनकालमें इस विक्रित स्थापना हुई थी। इस वशके अम्युदयका श्रेय इसके वास्तिवक सम्यापक जिनदत्तराय (लगभग ८०० ई०) को है। यह जैनधर्मका परम भगत था, हुमच्चको जैन यक्षो पद्मावती उसकी इप्टेबी एवं फुलदेवी थी। इस देवोको साधनास जिनदत्तको अद्गुत मन्त्रासिद्ध हुई थी। बह और उसके वराज राष्ट्रवृटोंके और तदनन्तर चालुक्योंके प्रमुख सामन्तोमें-से थे।

विनायात पूर्ण का पीत तीनपुरत विकास सामार (८००-१ ६) एउपूर्ट कामार पंटर हुए मार्चिया एक समार कामान था। ८५० हैं के वाले नाए दिखाने को सामार पार की तुम्म प्राचीक हैं। ८५८ हैं वे बारे हुए दिखाने को सामार पार की तुम्म प्राचीक हैं। ८५८ हैं वे बारे हुए प्राचीक के नीए प्राचीक हैं। ८५८ हैं वे बारे हुए प्राचीक के नीए प्राचीक कामार किए प्राचीक कामार विकास प्राचीक की प्राचीक कामार कामार

नली बंगनदेशे (वा बोरल बडादेशे) के क्क्के चुनवळ (तैन) वॉल (बोरि), विक्रम (बोर्युन) बोर वर्ग्स नामके चार नव इप वे ज्लिसी

पायन-पाय करनो जीही जुन्हेदीने दिवा था। १ ६६ है जुन्हेस गायण जानूक शेनेकर करन वैतेकरमण्या हरनार था। दर्ज करनी प्रावणी प्रेम्बल जुन्हेस करना दिलाकरण हरनार था। दर्ज और काने स्थित करने नुद करन्यनित्रेस्तरों वृत्त क जात दिलाआ और काने स्था करने नुद करन्यनित्रेस्तरों वृत्त क जात दिलाआ प्रधान था। वर्ग विधाने करने समित के समित वृत्त करित हरना है। पुरस्क और मिल क्षण्यारों मेनी क्षण्य सामार्थ कुर्मादेंगे थी। प्रथमें पंत्रो पूर्व के ब्यूनी बहुत करनार रानी नौरक्तेशी क्षण्यानों रिक्क यो। काने हुरूक्त है। मुश्लेख एक्षण्य क्षण्यार थी। काने हुरूक्त वानी सार्थ क्षण्यों हो। सार्थ प्रस्तु क्षण्यार विधान करित है। विभाव स्थान । सार्थाद्व क्षण्यार विभाव करित है। राज-महिलाओं में पम्पादेवी, वाछलदेवी आदि भी अपनी धार्मिकता और दानशीलताके लिए प्रसिद्ध हैं। १०८१ ई० के एक लेखके अनुसार वीर सान्तरका मन्त्री नगुलरस जैनधर्मका भारी सरक्षक था। ११०३ ई० में त्रिमुबनमल्ल सान्तरने राजधानीमें पचकूट वसिंदके सामने ही एक नवीन बमदि बनवायी। ११७३ ई० में एक अन्य बीर सान्तरका विरुद 'जिनपाद अमर' था। इसके उपरान्त सान्तरींपर लिंगायत मतका प्रभाव हुआ। १३वीं शतीमें उन्होंने अपनी राजधानीकी हुमच्चसे बदलकर कलश नामक स्थानमें बनाया। तदनन्तर वे तुलुबदेशस्य कार्कलमें जाकर राज्य करने लगे प्रतीत होते हैं। ये उत्तरवर्ती सान्तर यद्यपि बहुधा लिंगायत मतके अनुपायी हुए तथापि जैनधर्म और जैन-गुरुओंके प्रति पूर्ववत् उदार वने रहे।

(२) सौन्दित्तिक रह राष्ट्रकूटोके प्रमुख सामन्त ये और सम्भवतया राष्ट्रकृट वशको हो किसी ग्राखासे सम्बन्धित थे। इस वशमें मी प्रारम्भसे लेकर अन्त तक जैन धमको प्रवृत्ति रही । रट्टवाडीके ये शासक थे और सौन्दिश इनकी राजधानी थी, ये महामण्डलेक्वर कहलाते थे। ८७५ ई० में राष्ट्रकूट अमोघवर्षके सामन्त मेरद्रके पुत्र पृथ्वीराम रद्रने सौन्दिल्सि जिन-मन्दिर निर्माण कराके उसके लिए दान दिया था। उसके गुरु इन्द्रकीिन थे। यह राजा सम्राट् कृष्ण दितीयका दाहिना हाय था-। उसके पुत्र शान्तिवर्मा की रानी चन्दकच्ये वडी धर्मात्मा थी, अपने पतिसे उसने एक सुन्दर जिनालय निर्माण कराया था । तदुपरान्त कलसेन, वन्नकेर, तीन कार्रावीर्य, कलसेन द्वितीय ब्रादि राजा हुए। ११६५ ई० में इसी वशका रट्ट महासामन्त महाराज कार्रावीय चतुर्थ दिलाहार-नरेदाके राज्यमें स्थित एकसाम्बीके नेमोध्वर जिनालयको प्रसिद्धि सुनकर दशनार्थ वहाँ गया और महामण्डला-चार्य गुरु विजयकोत्तिको उक्त मन्दिरको पूत्रा, सगोतवाद्य, साधके भोजन, भवनके सरक्षण आदिके लिए चदार दान दिया। ये गुरु यापनीय सघके पुन्तागवुस-मूलगणके साधु थे। इस सुदर जि्नालयका निर्माण

विचारत केसान्त बाक्तरे बाने नर पुतारवर्तन व रवर कारेपहे

सारके तरापुर-में प्राप्तिकाशासका संग्रह सारके बोर हमें दिन बाले दिन सारपुर्ध्योगर नाता प्रोप्त करती हो। नातान नाती होपा है करता सीर कम्पूर्ण होगीर करता प्राप्त कर था। करते आपितंत्र पातानी सारका प्रस्तु हुए सारको बारके दिन्दुर्ग । को क्रांद्रित पातानी सारका प्रस्तु हुए सारको बारके सारको दिन्दुर्ग करता सारको सार्व सारका प्रस्तु हुए सारको करते सारको दिन्दुर्ग करता सारको सार्व सह विकाश सारका । करता था। सीरकोई विकाश सारकों सार्व सर्वास्त्र सारका । करता था। सीरकोई विकाश सारकों सार्व सर्वास्त्र करता से सीर सारकोश्य सारकों कर । सम्बुद्धिक सराव्य करता है । स्वास्त्र हुए से स्वास्त्र स्वास्त्र कर में प्रस्तु हुए से सेक्सर स्वस्त्र सारकों है।

कैन ना । ११रो बनोने बन्दर्सास्य (१११०-११४ 💰) इत्र नंबस्य क्रिके नरेब हुना । यह बाद नावरों ही चानुवरीके बचीव या । चर्ची प्रयागमें उसने एक महस्र प्राह्मणोको भोजन कराया और उसके निकट ही अजरेना नामक स्यानमें एक सुन्दर जिनालय धनवाया। उसने एक विद्याल सरोवरके मध्य एक ऐसा देवालय भी चनवाया था जिसमें जिनेन्द्र. शिव और बद्ध तीनों देवताआकी मृत्तियाँ साय-साय स्यापित की थीं। इम प्रकारके धार्मिक समन्वयके प्रयत्नका यह पहला ही अयवा अकेला ही उदाहरण नहीं है, पूर्वमध्यकालमें अन्य कई देव मिदर इस प्रकार जैन. शैव, वैष्णव, बौद्ध देवी-देवताओकी साय-साथ मृत्तियोंसे युक्त वन थे। ये उस कालके भारतीयोकी उदाराशयता और विवेकके प्रतीक हैं। गण्डरादिस्यका प्रधान सामन्त और सेनापित बीर निम्बदेव था। गण्डरादित्यके उत्तराधिकारो विजयादित्यके राज्यकालमें भी वह उस पदपर आरूढ़ रहा विकि शिलाहार-नरेशका दाहिना हाथ वन गया था। शिलालेखोमें निम्बदेवकी बडी प्रशसा पायी जाती है। उसे 'विजयसुन्दरी-वल्लम'. 'सामन्त्रशिरोमणि', शत्रुसामन्तींके सहारमें प्रचण्ड पवनके समान, मज्जनोंके लिए चिन्तामणि, गण्डरादित्य-महायक्ष-दक्षिण भुजदण्ड आदि कहा गया है। राजाने उसकी सेवाओंने प्रमान होकर उसके नामपर निम्बसिरगाँव नामका नगर यसाया था। यह वीर इतना प्रसिद्ध हुआ

लनेक युद्ध किये, विजय प्राप्त की शीर रात्रुआसे अपने राज्यकी सुरक्षित रखा। यह भारो दानी और सर्व-धर्म समदर्शी था। कोल्हापुरके निकट

कि उपके कई सौ वर्ष बाद कन्नष्ट किन पार्वदेवने निम्बदेवचरित्र वनाकि उसकी यशोगाया गायी। साथ ही वह बढ़ा घर्मात्मा या और उसकी जिनेन्द्र-मिक्त अमोम थी, जिसके कारण सम्यक्त्वरत्नाकर और जिनचरण सरिस्ट्रहम्मकुकर-जैसे विशेषण उसने प्राप्त किमे थे। वह मन्त्रशास्त्रक भी ज्ञाता था और शासनदेवी पद्मावतीका उसे इप्ट था। वह धर्मशात्रक भी ज्ञाता था और शासनदेवी पद्मावतीका उसे इप्ट था। वह धर्मशात्रक भी ज्ञाता था और शासनदेवी पद्मावतीका उसे इप्ट था। वह धर्मशात्रक भी ज्ञाता था और शासकोंको धर्मानुकूल आचरण करनेके लिए सदैव प्रेरि एव उत्साहित करता रहाता था। कोन्ह्रापुरके आस-पास कोई वर्सा ऐसी न थी जिसने निम्बदेवकी दानशोलतासे लाभ न उठाया हो दक्षिण भारत [३]

क्यरं कोररापुर्ति मुप्तमित बहास्त्रस्ती-शरित्रके निषक हो वक्ये क्ष्यस्त्र मुख्य एक क्ष्यमुक्तं वैशिक्तिमध्य वक्यारा था। एवं विषक्तं पिमपणे अभिकारण ग्रीविक्तिको कर सहस्रका गृण्यां बीक्तं है। वर्णास्त्रमें कर मिल्ट देक्परीके हुमारे हैं और वैशिक्यणों वृक्तिं स्थापने क्ष्यमुक्ति स्वार्थित कर ही बत्ती है।

नग्वराशिक्षकं बनरान्य बन्नमा पुत्र विक्रमाधिक विकाहार (१९४० ११६५ 🕻) राजा हुमा । वसने चालुरनोची परामीनतामा मुन्ना क्वार चेंता और नह निरमक नकपुरिके पासुसीला बना करने और वस्ताची ना रामा बननेमें प्रमान तरावश्र हुता । किन्तु बद विश्वपने विकाहार गरेंपणो जी जबीन करना पक्षा को बोबोर्ने अनकर कुछ हका । विकास तें-की मोरवे चीर वेशायत निरुक्तेत कुळता संवाचन कर रहा वा । वसी बुक्ते वह मारा नवा निन्तु मरवै-वरवै वी नक्ष्मरिवोको अस्ता स्टानिय कर बना कि वे मैदल क्षोड़ बाज नते । विज्ञादित्व स्तर्न वहा बरावनी या । अपने कनुमोने किए नद् बनराज कहा गरा है । व किनाव निरमी वित्य क्षमका मिक्स था। जाने वार्तिक क्रवाहके कारण वह वर्ति हुटि के कहबादा व्य । यह पालको क्टॉका वाक्न करता वा और बक्ने केंग पुत्र नाणिकामन्दि परिकारेकको नहीं दिलम करता या । मेलहापुर तथ कार स्थानीक बैनशीवरोको बाली बानेक दान दिने थे। बाक्ने प्रस्ति वैन देनापति बोजनके बस्तन्त्रमें क्रियारपुर विकासकों क्रिया है हैं न्यु निवनाधितके किए वैद्या ही वा वैद्या कि हरिके किए नस्त धार्क कर पासी और शास्त्र किए बक्क । बुद्धवृति वे बनुवींचा बहार करनेते यह मदियोग था। रामाफे क्रिक्ट एक विश्वास दिलासन विशेष करमानेका कार्य वहते हाच्ये किया था किन्तु वसे कुछ करनेके हुई हैं क्यमी मृत्यु ही वर्गी । क्यिमास्तिका एक अन्य प्रमुख कैंग-नानी हर्ग केपामारक कालीवर या कालीरेव था। वह कार्यतीय हुवे विशेषकरे पुर्वरति मोर्श्वनका रूथ और क्रम्य क्याविकारी मोक्समा मामाता या।

कहलाता था। नेमिनाथपुराणके कर्ता कन्नडके जैनकि व क्याप्यायका वह आश्रयदाता था और उसक धमगुर नेमिचन्द्र मुनि थे। विजयादित्यके समयमें ही उसके एक अन्य धर्मात्मा सामन्त कालनने एक्सम्बीनगरमें सन् ११६५ ई० में नेमीरबर वसदि नामका सुन्दर एवं विद्याल जिनाल्य निर्माण कराया और उसके लिए प्रभूत दान दिया था। उनके गुरु याप-नीय सबके पुन्नागवृक्ष-मूल्गणके कुमारकीर्तिके शिष्य महामण्डलाचार्य विजयकीर्ति थे। रह नरेश कार्त्तवीर्यने भी उत्तन मन्दिरके दर्शनाथ वहीं आकर उसके लिए उक्त गुरुको दान दिया था। यह घटना रट्टों और शिलाहारोंकी मैत्रीकी भी सूचक है। इस वसदिमे चारो दानोंकी नियमित व्यवस्था थो। उसका निर्माता सामन्त कालन धर्मात्मा और दानी ही नहीं था वरन् शास्त्रज्ञ, त्रिद्वान् और कलाममन्न निर्माता

लक्ष्मीदेव राज्य प्रवन्धमें कुशल और युद्धभूमिमें निपुण मैन्यसचालक था। वह साहित्यरमिक और धर्मात्मा भी था और सम्यक्त्वभण्डार

विजयदित्यके उपरान्त भोज द्वितीय (११६५-१२०५ ई०) शिलाहार राजा हुआ। विज्जल कलचुरि और उसके उत्तराधिकारियोंने भोजको अपने अपोन करनेका भरकल प्रयत्न किया किन्तु असफल रहे। अन्तत दोनोंवे बीच सिंघ हो गयी। भोजके जीवनमें हो कलचुरियोंका अन्त भी हे गया। यह राजा भो अपने पूर्वजोंको भौति जैनधमका परम भक्त था विशालकीर्ति पण्डितदेव उसके गुरु थे। इसी बीर भोजदेवके शासनकालमें १२०५ ई० में आचार्य सोमदेवने जैनेद्व-ज्याकरणकी शब्दाणंत्रचित्रक्ष नामक प्रसिद्ध टीका रची थी। यह टीका गण्डरादित्यके बनवाये हु अर्जुण्ना ग्रामके त्रिभुवनितलक नेमिनाथ जिनालयमें उक्त विशालकीर्ति सहयोगचे लिखी गयी थी। राजधानी झुल्लकपुर (योल्हापुर) व मी इस राजाने अनेक सुदर जिनालयोंसे अलकुत किया। भोज उपरान्त इस वधका कोई इतिहास प्राप्त नहीं होता। शिलाहारों

स्वयं कोरहानुत्यं नूर्यास्त्र स्थानस्थी-सम्पर्क निवस ही उसमें बालन नून्यर एवं वन्तानुर्व नेतियिज्ञासन वरवाता था। इत सम्बद्धि ध्वासत्ये कवित्राहर तीर्वस्ताती को सहस्वस्य नृतियां विका है। बनानानने वह समित्र दोक्यों हुत्यों है और सैनियायकी मूर्तिने स्थापने विश्वपानि वर्षालय कर दी क्यों है।

बण्डगरितमा बण्डान्त बळ्या पुत्र विज्ञादित्य विकाहार (११४० ११६५ ६) राजा हुना । उद्ये चानुस्तीनी नधमीनदाना जुना स्प्रा चेंता और यह जिल्लाम बन्नवृतिके चालुलीका सन्त करने और करवारी-का राज्य बनतेने बचान नशाक्त हुआ। दिन्तु कर दिस्त्रकरे विकास-वरेंगको मी सबीन करना सद्धा को दोनॉर्जे सम्बद्ध कुत्र । विवस्तर्णे-नी मोरबे की वेगार्थन क्याचेत बुद्धका बंधावन कर पहा था। उसी बुदने वह नाध नवा निर्मा कछो-वस्ते की सम्बन्धिको हान्स वास्तिक कर क्या कि में केरान क्षोड़ जान करें। विक्रमाजित रहते वहां पराज्यों या । अपन चयुनोके लिए वह बनधन कहा पता है । वश्रिकाल विक्रमी रिन्त प्रथमः निरंत मा । अस्ते मानिक स्ताहके जारम सह पर्वेश्तुर्वि मी महमात्रा या । यह भारतके प्रतीवा बातम करशा चा और मन्दे वैक कुर वाविकायनि श्रीकारोक्ती वडी शिवर करता या । केल्हापुर तथा सन्द स्थानोड सैनवस्थितो वक्तो समैव दल रिवे में। वर्षके प्रवित जैन नेतापति जोजनके सन्यासम् विचारपुर विकासकारे विचा है कि बह विकासिको निय वैदा हो वा वैदा कि हरिके किए वार सकी तिए नार्थत और कानक किए वसना । बुद्धमुख्यि सम्बर्धेश सेवार करवेर्डे बद्द बर्द्धशीय था। रामाने किए एक विकास निवासन विश्रीत करनारेश गाउँ बनने हानवें किया का क्लिप क्षेत्र पूरा करनेके पूर्व हैं। क्षणी मृत्यु हो वसी । स्थिमानित्तका एक जल अनुब वैशनानी एर् केपारामक कानोबर या कानोबेर या। यह पार्वतीय दुर्व विकेत्राणे पूर्वरति वीरश्यकः पूत्र और क्रम्य नद्धविकारी वीरश्यकः बाचारा 🐠

प्रभाच द्रदेवको एक गाँव दान दिया था। १११५ ई० के लगभग वीर कोगाल्वदव देशीगण-पुन्तकगच्छके माघचन्द्र प्रैयियके छित्य प्रभाच द्र सिद्धान्तदेवका शिष्य था। इस राजाने सत्यवायम नामक जिनालय निर्माण कराने उनके लिए अपने गुरुको एक ग्राम दान दिया था। इसके उपराच कागाल्वोंका पुछ इतिहास नहीं मिलता।

- (४) चगारूच चश-इस यक्षणे राजे मैमूर कुर्ग प्रदेशके अन्तर्गत चगनादके दाासक ये और कोगाल्योंका मौति ही चीलोके और फिर होयसलोंके साम तथे। इस वशमें कुछ राजे जैन रहे और शेप कैस रहे प्रतीत होते हैं । १०९१ ई० में चगात्व राज मन्यिपेरग्गढे पिन्हुब्दयने पिल्डु ईददरदेवको मुनिआहारदानके लिए क्षेत्र प्रदान किया था । इनके प्रदेशमें हनसोगे प्रसिद्ध जैन केंद्र या। लगमग ११०० ई० के एक द्यिलालेखसे प्रकट होता है कि उस समय इस नगरमें ६४ प्राचीन जिन-मन्दिर ये जो इत्त्वाकुवशी दाशरयी-भीतापित राम-द्वारा निर्मित कराये गये वताये जाते थे। इन्होमें-से वन्दतीर्घ नामक वसदिको गंगनरेशोने दान दिये थे और उसी मन्दिरके लिए राजेंद्र चोल निम्न चगास्वने पूर्वोक्त दानोंकी पुनरावृत्तिको । इन वसदियोंका प्रयाच मूलसप-देशीगण-पुस्त-का वय-होत्तगगच्छके गुरुऑके हाथमें था। इस राजाने उक्त शाखाके तत्कालीन गुरु जयकीत्तिको उपरोक्त दान दिया था। ये गुरु व्रत-उपवासों, विञेषकर चान्द्रायण ब्रतके लिए विस्पात थे । इसी होत्तगगच्छके गुरुओंके अधिकारमें तलकावेरीको वसदियाँ और पनसोगेकी ४ वसदियाँ भी थीं। चपरोक्त चगात्व नरेझने स्वय भी १०२५ ई० और १०६० ई० के मध्य कई जिनमन्दिर निर्माण कराये थे।
 - (६) श्रलुप या श्रलुच चंश्रा भी इम कालका एक प्रक्षित सामन्त वंश था। ये तुलुवनाढुके शासक थे। १०वीं शतीमें इस वशका उदय हुआ, किन्तु उनके आगमनके बहुत पहलेसे ही यह प्रदेश जैनवर्मका गढ़ रहता आया था। मूडविद्री, गेरुसप्पे, भट्टकल, कार्कल, बिलिंग, सोदे,

माननमें बरहर कोन्हालुर, व्यन्तावी बार्डि अविश्व वैनवेन्त्र में ! (४) क्योपारम क्या—रन बंबके कारन धारे नुर्वत वता और शाम

विमेषे परित्राची विका क्षेत्रमानार ८ अलाके प्रावण में । ८८ है के श्रममन ग्रेंग राजदुत्रार एनरलने बच्च प्रालामें इन बंग्रंफ प्रथम लगिन को स्थापित रिया था रिल्यू कींशाओंका शानारिक जानुरह रे. ४ र्ड वे हुता वन समाद राजराज बोचने इस बंधक बंबन महारामकी बनामे brinit unn eine afgefunjufe niere fert fet, atrie त्रोत दिया और माना प्रमुख कामना प्रमाश । कॉनान्य-गोब, वनके नामना जोर राज्यक्षांक्कारी अक्लिका बैन में और वनके राज्यक

बटी बचल वर्ष वा शिकारेकोने रहा प्रकार है कि १ ५ है के ब्यूबर करियानी एक नरशार नपूर्वनराजके स्थानी और क्रिएंडके बानना सराने गाउ रितके गानिकाराज्ञपूर्वक श्रंतमच वक्षरिमें क्षमाधिकरण क्रिया गा, बीलिय केट्टी शायक वारी व्याचारीलें को जुरू-बरबीवें क्षत्रविवरण किया वर्ष। र ५८ ई. में राज्य बॉन्सल बध्यर्शास्त्रने मून्यूवरें बस्ते लिए-प्राप निवित पार्थनाच वसविके किए नई वर्षिती वृति केंट नी बी । वि राजाने पुर कुमान कानुरतन तथरिएन परवत्त्रे परवरित्तक विकासीत वै । काने अपने नामपर बच्चराहित्व वैत्यावयः बानदा एक जैनक्टिर स्वर्व भी मननावा मा और बनके निव् बंगवनिज्ञान्वराताकर बंधनियांगी कृति प्रमाणकः विकासको कृतिशाम दिशा का । इब समारी माता समी रीक्यरनि भी दश मनीन्य थी । इसके नद मनियांन इर्रन्यन्तरके क्यानेतरे विषय तुम्लेत सांस्ता थे। वे जारी वैद्यावरण से १ १४ है में इतरी मृत्यु हुई । इस रातीने मी एक नहारि बररानी थी निवर्त बरने नुबकी नृत्ति की श्रीप्रीक्ट की वी और दाल दिशाचा। चीक्पेंडे पापर क्षेत्राच-गरेव होबबचीके सबीव हो बने। ११ . ई. में

क्रीबारक्षात्र बुद्धकारको एक विवासको विश्वीय और संस्थानी निर्म 11

मारतीय इतिहास दश स्टी

गोल्वदेशका आग्रक त्वनमन्दिल्यशी नरेश मा जिनका गाम सम्मदावा भूषाल मा । किमो कारणमे मंसारमे विरयत शोकर गर राजा जैन मुनि ही यत्रा मा और गोल्लाचार्यके लागम प्रसिद्ध हुआ। प्रशिद्ध मुगालवगुविदानि स्तोषका रचिता सम्मयतया यही था।

- (९) प्रामीन यदम्बॉकी एक उत्तरकाली बाक्षा इन मारुमें कर्णाटको कुछ मागपर नामन करसी रही यो। उसके मीविदक आदि राजे जैनवमके अनुसामी थे। तागरमण्ड उनके प्रदेशका प्रवान नाम था और वह जैनममेका केंद्र मा। मदस्वराज कीत्तिदेवकी पट्टगारी मानल देवोने १०७७ ई० में मृष्पटूरमें पारविदेव चैग्यालव सनवागा, शानाये पधनन्दि सिद्धान्तको सम्बद्धा धम्यदा यनाया, राजासे दान टिलाया और वर्षेने अग्रहार ग्राह्मणामे मा । बराकर उसका ग्रह्मजिनालय नाम रखा । इस प्रदेशके अनेक गामस्त जैनयगनिवायी थे। इन सबमें अल्लेग्तनीय तेंबरतेष्पना नाष्ट्रप्रमु स्रोम गाबुण्ड था। ११७१ ई० में उसने अपने स्वामी वदम्बनरेदा सोविदेवक राज्यवालमें एक मुन्दर जिलालयका निर्माण कराया और उसमें 'रतनवष' को मूर्ति प्रतिकिटन की और उक्त मिदरके साम ही एक सुरोवर और एक पूप यनवाया संया प्याक और मयकी व्यवस्था की। मिंदरमें तित्य ब्रष्टद्रव्य पूजनके न्त्रिए भूमि प्रदान की। उसके गुरु मूलमध-क्राण्रगण-तित्रिणीगच्छके जैनाचार्य मुनि च द्रदेवके शिव्य मानुकीत्ति सिद्धातदेव थे।
 - (१०) गगधाराका चालुक्य चरा—यह प्राचीन चालुक्य बंदाकी एक लघु घाला थी, गंगधारा इसका राजधानी थी। खार० नरिवहाचार्यके मतानुसार इस धंशकी राजधानी पुलिगेरे ((लटमेरबर) थी, सम्मव है इसीका अपरनाम गगधारा भी हो। यह एक प्राचीन जैनतोर्थ भी था। इस बदाके राजे राष्ट्रकूटोंके महामण्डलेटवर थे, और प्राय वे मब ही जैनधर्मानुयायी थे। ९६६ ई० में इस धंशके राजा अरिकेसरी तृनीयन अपने गुरु सोमदेवको अपने पिता-द्वारा बनवाये हुए राजधानी लेंबुगाटकके

हार्ट्सिक हिमारर आर्थि एक ब्रिकेट मिंडा दूसर में जो वह ही सैनान-ते पूर्व पर में । देनी पार्टी मुक्तक आयुक्त (१९१४-१९ दें) के स्वाद्य मिंडा पाना था । १९६९ में ने पानपुतात दुवापार्थ केरिये मानव स्वापने को सैनार्थमा केम था, एक जिन्हतियां कार्यार्थ मानवा थे थी पुरुष्टीया सामेन्द्रिय साम्यु स्वाप्त (स्वाप्त १९४९-१९

हैं) के कमनी गुम्लेयन शिवारको प्रात्मीय ब्युल्या वरण थीं । हिं
पत्म बनवारिके मारक्या प्रात्मीय ब्युल्या वरण थीं । हिं
पत्म बनवारिके मारक्या प्रात्मीय बहुत्या वरण हैं
दिया था रिया था। बुक्येयन मार्ग्य क्षेत्र कुर्ति हैं हो कि स्वर्थि के वर्षि हैं
दिया था रिया था। बुक्येयन मार्ग्य कुर्ति (१९८४ हैं) वर्ष कैनव्याप्ती पत्म का बहुत्यानिक होत्र कुर्ति है। इस दिवार है) वर्ष या और दुर्विधीन वास्त्रावरिका नक्षा था। बाके और वीर्ड्डिया (१८८४ हैं) के नक्ष्म हम संग्रेष्ठ क्षायमते हुव और क्षा की

(८) १११५ हैं के एक विकासको का पत्रता है कि अब अपने क्रासीय हरिताल र कारी गोल्लदेशका शासक नृतनचित्रळवशी नरेश या जिसमा नाम सम्मातयाँ भूपाळ या । किसी कारणसे मंसारसे विरक्त होकर यह राजा जैन मुनि हो गया या और गोल्लाचार्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ। प्रसिद्ध भूपालचतुर्विशनि

स्तोत्रका रचयिता सम्भवतया यही या। (९) प्राचीन कदम्बोंकी एक उत्तरकालीन शाखा इस कार्रा कर्णाटकरे कुछ भागपर शासन करती रही थी। उसक मीविदेव आर् राजे जैनधर्मके अनुयायी थे। नागरमण्ड उनके प्रदेशका प्रवान भाग ध और वह जैनवर्मका केन्द्र या। कदम्बराज कीत्तिदेवकी पट्टगनी माल देवोने १०७७ ई० में मुप्पटूरमें पादवेदेव चैत्यालय बनवाया, आचा पचनन्दि सिद्धान्तको उपका अध्यक्ष बनाया, राजासे दान दिलाया हो वहौंके अग्रहार ग्राह्मणींमे मान्य कराकर उसका ग्रह्मजिनारूय नाम रखा इस प्रदेशके अनेक सामन्त जैनधर्मानुयायी थे। इन सबमें उल्लेखर्न तेवरतेप्पका नास्त्रम् लोकगावुण्ड था । ११७१ ई० में उसने अपने स्वा नदम्बनरेश सोविदेवके राज्यकालमें एक सुन्दर जिनास्रयका निर्माण करा बीर उसमें 'रत्नवय' को मृति प्रतिष्ठिन की बीर उक्न मन्दिरके साय एक सरोवर ओर एक कृप बनवाया तथा प्याक और सप्रकी व्यवस्था कं मन्दिरमें नित्य अष्टद्रव्य पूजनके लिए भूमि प्रदान की । उसके गुरु मुल्ह काणूरगण-तित्रिणीगच्छके जैनाचार्य मुनि च द्रदेवके बिष्य मातुकी मिळान्तदेव थे।

(१०) गंगधाराका चालुक्य यश-यह प्राचीन चालुक्य वर एक त्यु द्याखा थी, गंगधारा इसकी राजधानी थी। आर० नर्गसहाच मतानुसार इस बंशकी राजधानी पुलिगेरे [(लक्ष्मेरबर) थी, सम्म इसीका अपरनाम गगधारा नी हो। यह एक प्राचीन जैनतीर्थ भी। इस बक्षके राजे राष्ट्रकूटोंके महामण्डलेस्वर थे, और प्राय वे स जैनधर्मानुगार्थी थे। ९६६ ई० में इस बद्यके राजा अरिकेसरी तृत अपने गुरु सोमदेवको अपने पिता-द्वारा बनवाये हुए राजधानी लेंबुपा

(११) हास्त्येक्सी बेगासाविका वंश्यां — व्य व बार्के व व्या एक क्षेत्रमान्त्रियानी एट्टा। जातीयक बंग्यांकी वंश्यांकी वंश्यांकी वंश्यांकी प्राप्त क्षार्यानी किस्ता निर्माण होत्र विकार के एक्यूप्रके की एक्यांच्या क्ष्मणांकी साह्यांच्या होत्र क्षार्थ होत्र है। इस वेले प्राप्त व व जावांच्या वार्तिया वार्तिया कार्या क्ष्मण क्या क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण

वाचा मालवायु हो नदी हो ।

१२७५ ई० लगभग) मो इनने समुचित दिक्षा दो यो। मामिराय यहा विचारितम था। लाषायं अजितसेन लसके गुरु ये। इसो राजाके लिए उन्हाने शृगारमंत्ररी और अलंशार-चित्तामणि नामक संस्कृत साथोंकी रचना मो थो। उसीचे लिए विजयवर्णीन शृगारणवचित्रका रची थी। १६वीं दातीके अन्तमें विचाह-सम्बागोंके द्वारा यह येण कार्यलके नैरसस बदाने मयुक्त हो गया। उसमे उपसात भी सम्भवनया इसका मुख्य अस्तिस्व १८वीं पासी तक बना रहा।

(१२) वेजवाटाके परिच्छिर पाशुपित राजे और घायकटकके कोत राजे आप्त्र देशक प्रमुख मामन्त यश थे। ये लोग श्रीव थे और जैनयमँसे मारी विदेश रखते थे। आप्त्र देशम जैनयमँक पतनका अधिक श्रेय इन्हों सामन्त वदाकों है।

चारगलके फकातीय-११वीं शताब्दीके मध्यके लगभग तेलगानेमें ककातीय वदाका उदय हुआ। वारगलको राजधानी बनाकर इन्होंने शीछ ही अपनी चिक्त बढ़ायो और एक अच्छा स्थत त्र राज्य स्थापित कर लिया । १३वीं शताब्दीमें इस राज्यका अम्युदय ग्हा । स्ट्रका उत्तराधिकारी राजा गणपिवदेव (११९९-१२६० ई०) इस वशका प्रसिद्ध और शिवस्यारी नरेश या। उसके समयमें तैसेगु महाभारतके रचयिता टियकन सोमस्य नामक हिन्दू विद्वान्ने धाम्त्रार्थमें जैनियोंको पराजित किया वसाया जाता है। उसी समयसे इम राज्यमें जैनधर्मका पतन प्रारम्भ हुआ प्रतीत हाता है। राजा कट्टर रीव वन गया और जैनियोपर उसने भारी अत्याचार क्यि । उनके उपरान्त वारगलमें रानो स्ट्रम्मा (१२६१-१२९१ ईo) का राज्य हुआ। यह इस वंशकी अन्तिम द्यक्तिपाली एव महान् शासक थो, उसका उत्तराधिकारी गद्रदेव (१२९१-१३२१ ई०) था। १३२१ ई० में मुहम्मद तुग्रलुङ्कने वारंगलके अन्तिम कवातीय-नरेशको पराजिन करके तेलगानेके इस हिन्दू राज्यका अन्त किया । यारगलका प्राचीन नाम एकदौलनगर था। इस प्रान्तमे सम्बन्धित कैफ़ियतोंके आधारपर प्रो० पुरुषाय विमानस्के निष् वास्तानः दिया था । यह वास्तान्त्र्यो विमानस्के विश्व के प्रवाद वास्तु विमानस्के वास्त्रक वास्तु वार्षिका स्वाद्य वास्त्रक वास्तु वार्षिका स्वाद्य वास्त्रक वास्तु वास्त्रक वास्त्

सस्यापक तैल्य दितीयवा मित्र लीर महायक या और जिमने तैल तथा सत्ये पुत्र मरयायय चार्ज्यको ओरसे पारके परमारों (मृत और नीज) के साय युद्ध विये थे। मृत्की मृत्यू इमी जिल्लममें रायसे हुई बतायी जाती है। समका पीत्र भिल्लम नृतीय चार्ज्य-सम्याट् सोमेद्दर प्रसमका महासामन्त्र था और उत्तका विवाह भी सोमेद्दरको बहनके साथ हुआ या। इमी समयसे इन सुप्न यादकोंको जिवन चढ़नो प्रारम्म हुई। जिल्लम तृतीयको कीयो पोढ़ोमें सुग्न दितीय विक्रम पण्ठका समके मार्डके बियद्ध सिहासन प्राल्वमें सहायक हुआ था। चाल्डकाको अवनतिसे राम स्टाक्त यादव शिवतगालो हो गये। सुप्त दितीयका प्रयोग मिल्लम पचम (११८७-९१ ६०) देविगिर-

के स्वतात्र यादय राज्यका त्रास्तियिक सस्यापक या। उसने पत्याणीपर भी अधिकार कर लिया या किन्तु देविगिरियो ही अपनी राज्यानी बनाया। ११९० ई० में होयमल-नरेश बीरवल्लाल द्वितीयने सोरतूरके युद्धमें मिल्लमको पराजित किया और उमे उप्णाके पार मगा दिया। मिल्लमको पूत्र जैतुनि (११९१-१२१० ई०) ने बारगल्के कक्षातीय राजा उद्देशों युद्धमें मारकर गणपित देवको कक्षातीयोंके सिहासनपर बैठाया। जैतुनिका पूत्र मिहन (१२१०-४७ ई०) इस बद्धका सर्वमहान् और अपने समयक्ता सर्वाधिक शिवासालो नरेश था। उसने होयमल बन्मालको भी पराजित किया और १२२२ ई० सक बनवासी प्रान्तको अपने अधिकारमें रखा। उसने गुजरातपर भी आक्रमण किया, फलस्वरूप गुजरातके राज्य लावण्यप्रमादने १२३१ ई० में उसके साय मिष्ट कर छो। मिहनने अजुन लक्षीयर, मम्मागिरिके सिह तथा जज्जल, कक्ष्यल, हम्मीर आदि राजाले और सामन्तोंको भी पराजित करके अपने अधीन किया बताया जाता है उसका पुत्र जैतुनि उसके जीवनमें हो मर गया था अत उसके बाद उसक

पौत्र कृष्ण (१२४७-६० ई०) राजा हुआ। उसने भी मालया, गुजरात कोंकण और चोल देशोंकी विजय की थी। कृष्णका छोटा माई महादेवरा गीपावित्तापरे प्रशांतत दिशा का कि बार्यतम एक बक्त वैतार्विश एक प्रसम् केल रहा था । पून प्रान्तवे हिचा हिमामाहरून् वेर्टन वान-गरीदे समस्ये जैनकोडा महामा और बन्छे जनाँन ग्रासीवेरा हैन रावात हु नूर इस बन्दि बा इसी विशेष क्षेत्रपुर बरसी पूर्व देर नोस सम्मानप्ति सामानी शामानीति समान सामानी राजधान विशासन बासक वर्गादका दिस्तीय कराना या और ११८७ हैं. में बत्ते केपूर्णने प्रशासिक स्वास्तिन स्थान मान्तरके निष्ट् शास रिया गरे। ११९८ है में बतान्यु दिनके बारपंत्रनपते निश्ची बीमीन और वंशनादेशके बुद पार्थााचन जैनमन्दर और मुदब्दियो दान दिया का हारी बालने इसी क्रिकेट देशनीहा नवस्त्री सुर्वतिक बारवेंगांव बार्वी रियमान वी जिनके शत्सानीत अध्यक्ष दिस्तरात सहारक है। हेवारी दिवेते ता वर्द बैनवेरक में क्रियते. बोर्टीन प्रयान या १ दशकी वैकटारी-कर्माको गाँउन्हें चानुन्ती और तरस्पर होवनतीने मी बंदबन ह^{ाड} हमा ना । शोर् शोहर सारि सन्य देन्द्र में । स्रोतन शहा स्प्रेरिक मनव बैन वृद्धि अव्यानि विकेश अस्तानात्वावती एवता की की काराजिक्षेत्र राज राज्ये काराना तो काले रहे और वीकवीकी प्रति प्रकृति और उरकृत्य होतेका आक्रम की करते हो। अन्तक १४१९ है मैं वारंपको तेनंत राजके अगते नाथ नवस्त्रानी-दारा एवं देवरा ufer am gar :

सर्धांपक तैलप द्वितीयका मित्र और सहायक था और जिसने तैल तथा उसके पुत्र सत्याथ्य चालुक्यकी ओरसे धारके परमारों (मुज और मोज) के साथ युद्ध किये थे। मुजकी मृत्यु इसी मिल्लमके हाथसे हुई बतायी जानी है। उसका पौत्र मिल्लम तृतीय चालुक्य-सम्राट् सोमेश्वर प्रथमका महासामन्त था और उसका वियाह मी सोमेश्वरको बहनके साथ हुआ था। इसी समयसे इन सुएन यादवोकी कित बढ़नी प्रारम्म हुई। भिल्लम तृतीयको चौथी पीढीम सुएन द्वितीय विक्रम पण्ठका उसके माईके विकद्ध सिंहासन प्राप्तिमें सहायक हुआ था। चालुक्योकी अवनितिसे लाम उठाकर यादव शक्तिशाली हो गये।

मुएन द्वितीयका प्रपौत्र मिल्लम पचम (११८७-९१ ६०) देविगिरि-

के स्वतंत्र यादव राज्यका वास्तिविक सस्थापक था। उसने पत्याणीपर भी अधिकार कर लिया था किन्तु देविगिरिको ही अपनी राजधानी बनाया। ११९० ई० में होयसल-नरेश वीरवल्लाल दितीयने सोरतूरके युद्धमें भिल्लमको पराजित किया और उसे कृष्णाके पार मगा दिया। भिल्लमके पुत्र जैतुनि (१९९१-१२१० ई०) ने वार्रगलके ककातीय राजा उद्दकी युद्धमें मारकर गणपित देवको ककातीयों के सिहासनपर बैठाया। जैतुनिका पुत्र मिहन (१२१०-४७ ई०) इस बशका सर्वमहान् और अपने समयका सर्वाधिक शिवनशाली नरेश था। उसने होयसल बल्लालको भी पराजित किया और १२२२ ई० तक बनवासी प्रान्तको अपने अधिकारमें रखा। उसने गुजरातपर भी आक्रमण किया, फलस्वरूप गुजरातके राजा लावण्यप्रसादने १२३१ ई० में उसके साथ मन्धि कर हम्भीर आदि राजालों बीर सामन्तिको भी पराजित करके अपने अधीन किया बताया जाता है उसका पुत्र जैतुनि उसके जीवनमें ही मर गया था अत उसके वाद उसक

पोत्र कृष्ण (१२४७-६० ई०) राजा हुआ। उसने भी मालवा, गुजरात कॉकण और चोल देशोकी विजय की थी। कृष्णका छोटा भाई महादेवराः क्कि दासमें ही राजकार्य क्यानन करने क्या या त्रण इन्मारी सुद्धि परायक करने दूस राजकारों स्त्री में केदर यह दूसर्य उद्या कर या और उन्हों १२६०-- हैं है उद्या किया । स्वृद्धि की कारण राजका वर्धात्वके वह बुद्धि वर्धीत्र्य क्या । स्वृद्धि कारण इंड कारण की माण उद्याधिकारी करना पहला या कियु करने महीदि राजका में नामको नामा कर थिया और बहुस्तेको भूजूने समान् की हर्स्य उत्तर हुना।

धानकाराज (१२०० १६ ९ ई) के बनाये वर वेकार क्या साराज हुता । १८ ई में हिम्मल माहिन्ये धारतीये दिन सार्थान दिया किन्नु बनाये हो वर्ष धानकारों होस्ताओं सार्थान करते करते धानकारी हाराजुरात बात्रान कर दिखा । कामस्य केरीवित्त साराज कर्मा । १९६६ ई से बाराजीय कामीने साराज केरीवित्त साराज कर्मा धान धानकार सार्धान हुता वस्ते बार्यानों सार्थाना स्टेमल की सीट कर केशा नवर चित्रा किन्नु पूछ बात्र कर केरी साराज्य बर्गा दिवा करूद १३ कर्ष में बात्रा साराज्य केरी साराज्य कर्मा दिवा करूद १३ कर्ष में बात्रा साराज्य करते क्या साराज्य क्यो दर्भाव्या और ६ वस्त्र कर नामेन्द्रमा बना। धानकारे इन्हें संदर्भ (११ १-११ई) के सी वित्यों मुख्यमान पर होने साराज

कर हिया क्षापुर समिक बांगरने बने बुद्धवे बाद सम्य । योगरे काणी बनता बहुतेई हरदान (१९१२ १८ ई) वेशक्रिया एस हुता वजने पुरुषनानेशे जाने पानने नियान बाहर हिया दशर हुनारकार्य बन्धीने वेशक्रियर प्रवर साहबर हिया बीर हुप्ताक्री सा विश्वा

ती । इन जगर वेर्शनीके सारम-शास्त्र क्या हुता । परिवर्ष पाण्योरे कार्य सार क्यार इंडिस्तावर्ड इगरी क्यां इरिश्री को हैं में शास्त्रीते (स्कृत वर्ष व्यक्तिकार) बाहा-की स्थानी कर तो वो प्रोत्त्रकारि वे इस्त ब्रॉटासी है। क्यां पूर्व देवरें ज्ञानिक व्यास्त्रात्रम्य दश्व सामग्री स्कृतिके क्ष्मार वेस्पर्टें स्थाप

lle

भारतीय इतिहास । इत धर्डि

अयवा उसके पोपक रहे प्रतीत होते हैं किन्तु उनके वंशज देवगिरिके मादव नरेश प्राय सव ही हिन्दूधर्मके अनुयायी थे। किन्तु साथ ही वे जैनधर्मके प्रति भी सहिष्णु थे और साहित्य एवं कलाके भी रसिक थे। सिहन यादवके आश्रवमें ही ज्योतिपाचार्य भास्करभट्टने अपने प्रसिद्ध ग्रन्य विद्धान्त-शिरोमणिको रचना की थी। इस आचार्यकी ज्योतिपविद्याके शिक्षणके लिए उस नरेशने एक विद्यालय भी स्थापित किया था। यह राजा सगीत विद्याका भी मर्भज्ञ था और उसने सारंगघर नामक सगीताधार्यसे सगीत-रत्नाकर नामक ग्रन्थकी रचना करायो थी । कर्णाटकीय सगीतके सैदाितक पक्षपर यह सर्वप्रयम ग्राय माना जाता है। इसी समयके लगभग जैनाचार्य पाश्वदेवने भी सम्भवतया इसी नरेशके आश्रपमें अपना सगीत-समयसार नामक महत्त्वपूर्ण ग्राय रचा था। पाश्वदेव श्रीकान्तजातीय आदिदेव और गौरीके पुत्र तथा महादेवार्यके शिष्य थे और श्रुतिज्ञानचक्रवर्ती एवं संगोता-कर उनको उपाधियाँ घोँ । आधुनिक विद्वान् उन्हें सगीतकास्त्रका प्रकाण्ड विद्वान और उनके ग्रन्थको सगीत विषयको एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति मानते हैं। यादव नरेश महादेवराय एव रामचन्द्ररायका एक प्रमुख सामन्त क्चिराज या, इसे पाण्डघदेशको मध्यमें बेसूर प्रदेशका शासक नियुवत किया गया या । कृचिराजके गृद मूलसघ-सेनगण-पोगलिगच्छके पदासेन भट्टारक थे। उनके उपयेशसे कृचिराजने वेतूरमें रूक्ष्मी-जिनालयका निर्माण कराया या और उसके सरक्षणके लिए कुछ मूमि, एक दूकान और कई उद्यानोंकी आय दान की थी। अपने चत्कर्पकालमें चत्तरमें गुजरातसे लेकर दक्षिणमें त्ग-मद्रा तक यादव-राज्यका विस्तार था।

द्वारसमुद्रका होयसल वश-पूर्वमध्यकालमें दक्षिण भारत का यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं दावितशाली राज्यवश था। पूर्व दक्षिणमें मैसूरसे लेकर उत्तरमें तुगमद्रा नदी पर्यन्त सम्पूर्ण प्रदेशपर होयसल-नरेशो-का अधिकार था। द्वारावती (द्वारसमुद्र या दोरसमुद्र) इनकी राजधानी थी और ये द्वारावतीपुरवराधोष्यर कहलाते थे। ये लोग अपने-आपकी

नीतरु लये नहुष्ती आदित बनाते थे। प्रोपनार्थेश तूम विश्ववर्षीय परिवर्षाम्यास्य सुरेशे तालकेते दिवस अंबीत करण मान बक्ता रने या। यह स्थाप कर्मके ही विवर्षाम्य कहुम सेना एका सम्ब यो शैक्सकेत कृत्य जानिक राज्यूची वृत्त करणार्थी आहुचीहे सामर्थ सेनारे सामन साम वे और नावस्यास स्वीपिट ही सामर्थ थे। ११वी यार्थ के सामग्रास्य स्वीपिट ही सामर्थ

नवन्त्रक था। यह महत्त्वत्वाची और बलावी या किन्नु नित्त्वत्व भी सामन्त्रिति मा । १२५ हूँ के समयत क्षेत्रीमें ही दुरानुकार-हीयवक-तृत्वत्वत्वक्ष्में अंती कृत्त्वत्वे स्थित दिवस्य व्यक्तिये र्वातात्वत्व व्यक्ति हिला वा। वास्त्रत्वा स्थापित क्ष्मित्व ही हार्व्य रित्यात्वात्व क्षार्यित हिला था। वास्त्रत्वा स्थापित क्ष्मित्व हो हिल्ह रित्यात्वात्व होतील हुत्त्व स्थाप्त व्यक्ति को क्ष्में क्ष्मा हुन् है। वस्त्री क्ष्मा क्ष्मा हुन्य स्थाप्त व्यक्ति स्थापित क्ष्मा हुन् है। वस्त्री स्थाप्त क्ष्मीत हिला क्षमें क्ष्में स्थापित हिल्ह वस्त्रात्वा क्ष्मीत स्थाप्त हिला क्ष्मा हुन्य स्थापार्थ शिवाद रिप्याण या विवर्ष स्थाप्त है।

एक दिन नरवृष्टा यस नामधिरोधीकै मानिएकै मिन्दा कार्वे हुँ नुकाने बडेके ही निजी रियमका माराका गर रहा था। इतकें हुँ समानक निज्ञ बनकेंनी मिनकार पुरत्ने कार सम्दा। पुन्ने माना हुँग

(सा कर्पिका) कक्षणे बोर केंब्रस्ट कहा 'गोवका' है है कर रोते गए.)। बोर ककी पुरान का रमके प्रहारति ही किह्नी की विकास का बावता है कि कुने कर्तने पाउन और गोवकाओं रोजी परके किए ही मनसके कर जिल्ली गृहि को भी। यो भी ही उन्हें एक गाँके पूर्व पूर्व प्रदान हुए, कर्मी की आयोर्टर किए, कर नार्की विद्य स्थापन कर स्थापन करने साथे हिमा बीर किए हैं। विजय-चिह्न निश्चित किया। इस घटनासे सल, पोयसल कहलाने लगा को कालान्तरमें होयसल शब्दमें परिवर्तित हो गया और सल-द्वारा स्थापित राज्यवशका नाम हुआ। उपरोक्त घटना लगभग १००६ ई० की है।

पोयसल (१००७-१०२२ ई०) ने गुरु सुगतके उपदेश और पय-प्रदर्शनमें अपनी राज्यसन्तिकों नींत्र डालनो प्रारम्म की। पोयसल

कर्णाटकको एक पार्वतीय जातिसे सम्बचित था और उमको जननी सम्मवत्या एक गग राजकुमारी यो । इम कालमें चोलो-द्वारा गगवािंद्व राज्यका अन्त कर दिये जानेमें कर्णाटक देशकी स्थिति सक्टापन्न थी अत पोयसल अपनी बीरता एव योग्यतासे चालुक्योंका एक महत्त्वपूर्ण सामन्त हो गया और चोलों तथा उनके कोगाल्वर्धशी सामन्तांसे युद्धो-द्वारा धर्न-शनै प्रदेश छोनकर वह अपनी धन्ति बढ़ाने लगा। उसके पुत्र विनयादित्य प्रयम (१०२२-१०४७ ई०) और पौत्र नृपकाम होयसल (१०४७-१०६० ई०) ने पोयसल-द्वारा प्रारम्भ किये कार्यको चाल् रखा और वे अपनी धन्ति बढ़ाते रहे। गुरु सुगत वर्धमान हो उनके भी

सिक्तय माग-दर्शन करते थे।
नृपकामके उत्तराधिकारी विनयादित्य द्वितीय (१०६०-११०१ ई०
के गृह शाितदेव थे। श्रवणविल्गोलकी पादर्वनाय वसदि ११२९ ई०।
शिलालेखसे प्रकट है कि 'गृह शान्तिदेवकी पादपूजाके प्रमादसे पोयसह
नरेश विनयादित्यने अपने राज्यको श्रीसम्पन्न किया था।' १०६२ ई०
अगदिमें ही शान्तिदेवने समाधिमरण किया और उस उपलक्ष्यमें राह
तथा उसके समस्त नागरिक जनोंने वहाँ उनका स्मारक स्थापित किया थ
'इस राज-गृहके उपदेशसे महाराज विनयादित्यने प्रमन्नशापूर्वक अने

धर्मगृह एव गाजगृह ये और शासन-प्रजाय एव राज्य-स चालनमें उनक

जिनमन्दिर, देवालय, सरोवर, ग्राम और नगर निर्माण किये।'' निर्माण कायमें वह बलीन्द्रसे भी आगे यह गया।' उत्तरायण सक्रमण अवसरपर १०६२ ई० में ही इस नरेशने मेघचाद्रके शिष्य बेलवेके जैन अमनवन्त्रका को कृषिकत देवर कम्पान किया । इन राजने बाले राजने प्रयान बारबीय मन्त्रावर-वराडी विधारि किए एक नहर सुरक्ता की रे ६९ ई में नकर पूर्व होलार वह स्तर्व बतारा निर्देशक वाली किए बता और कामके निकट पहाडीपर स्थित विकासियके करण निर्वे वन महनरवर बनन बनरचे बाहित हेट्टी बादि वृत्तिग्राणी

पुत्रा कि क्लोने नरानी जलर विन्तानित क्यों बड़ी बनगरा। ^{करान} प्रमुक्ति सहाराज्ये प्राथना की कि कहा स्वयं वक्का में। बड़ा स्वयं नहीं एक गुन्तर जिस सम्माना मानिक हैंडी माने वृष्टियानी बनके लिए पान रिक्सामा और स्वतं तो कृति प्रमा, सामार मारिका बात दिया और नवरका बान क्विस्त्रील एखा। बार्टिकेटी पिन्य राज्यपुरुष स्थानी अस्तितन । ज्यारक्षण औ स्थाने सम्मान ^{हिन्} मधीत होता है। अस्ते बोक्कके विक्रम सामने क्यांगे बम्बवहारा राज्यार्थ माले पुत्र क्रेंप्रपद्मे बीरफर कर्मगावन किया था । यह कल्पने पान्य^{क्रिक}

यता नरेर्दव हो यह अब होवतुन नावे बेक्सवियोर्जन (बारोने रामानें मिरोबंच) और स्थानप्रकेशर सहस्त्रों हैं। र १४ र्र में इन बर्गधने नुपांबद सामांतड कार्यक वर्ष बारों मैन रिप्रान बोक्सीर-ना नामान विसा बोर रेपमील सीवंडी अश्रीराउँडी मरामाने निर्द वर्षे चौर दल विवे । वीपनियोह कारान्य करान्य प्राराच्यान्य प्रतिक वि^{व्या} मनियम दश धाराके नुव हुए

महाराज विनवर्गाहरत दिनीय और जनके नुम सुवान बहरेंगा मन् बीहेडी बनाने कराने हुई बतः तरान्तर श्रीवना श्रीक 💯 बन्तरक प्रथम (११.१-११.६४) राजा हुजा। इनके राज[ा] पारमीति परिवर्तते में । में महामुख्यां मुख्यतियं के विवास में क्या विश्वप्रदायरेका में बार्केट स्थानरम आस विदाल योग र्पे क्षणपान समीते शिलान से। जिल तका राजा बन्धान वृद्धर सनुसँ^{हर} वैद्य शक्ते प्रश्न पा, और बनाओं अप्रश्नेद्री बेना अनु-केरको जार्निहा कर रही थो, वह स्वयं एक जसाच्य रोगसे पोटित हो गया। चस अवसर-पर गुरु चारकीतिने उसे अपने सद्भुत औषि प्रयोगसे दोध्न ही नीरोग एवं स्वस्य कर दिया था। ११०३ ६० में वल्लाल प्रयमने मरयग्ने दण्ड-नायकको तोन सुन्दरी व याओंका विवाह सुयोग्य वरोंने माय स्वय गराया था। ११०४ ६० में उसने चंगान्य राजाओंको पराजित गरके अपने अधीन किया। जगदय मान्तरन स्वय वल्लालको राजधानीपर आक्रमण किया तो उनने उसे बुरी तरह पराजित करके मगा दिया और साथ ही उनके कोष और प्रमिद्ध रत्नहारको भी हस्तगत पर लिया। इस राजाने वेलुको अपनी राजधानी बनाया था।

उसका उत्तराधिकारी उनका अनुज सुप्रसिद्ध बिद्धिदेव (विष्णवर्धन) हीयसल (११०६-११४१ ई०) या । यह इन वरामा सव-त्रसिद्ध नरेश. भारी योदा महान् विजेता और अस्यत विविद्याली राजा था। द्वार-समुद्रको उसने अपनी राजधानी बनाया । उसने चालुययोकी अधीनतामे अपने आपको प्राय मुक्त कर लिया और चोष्टोको देशसे निकाल भगाया। स्वतन्त्र होषष्ठल-राज्यका वह बास्तियिक सस्यापक या और होयसल-माम्राज्यको नींय डालनेवाला था । उत्तरकालीन वैष्णय ग्रन्थों एव अन-श्रुतियोंके आधारपर आधुनिक इतिहास पुस्तगोमें प्राय यह लिखा पाया जाता है कि इस राजाके समयमें वैष्णवाचार्य रामानुकने जैनियोंको धास्त्रायमें पराजित किया फलस्वरूप राजाने जैनधमका परित्याग कर दिया. वैग्णवचम अगोकार कर लिया, अपना नाम बदलकर विष्णुवर्धन रखा. जैनियोपर अत्याचार किये, यहाँतक कि जैनगुरुआको घानीमें पिलवा दिया. श्रवणवेलगोलके वाहुबलिकी मूर्ति और अन्य जैन मन्दिर तुद्दस्ये. बैटणव मन्दिर बनवाये और बैटणवधमके प्रवारका अपना प्रधान सहय वनाया। किन्तु वास्तवमें ये कथन मिथ्या और भ्रमपूर्ण है। रामानु-जाचार्य सिरुविरापल्लीके निकट घारगम्के निवासी थे, काचीमें उन्होंने शिक्षा पायी यो, शकराचार्यके अहैत वेदान्तके विरोधमें वे विशिष्टाईत वर्धन और आदेश्वर मध्ये पुरश्का थे। धोरंग्यू वह वास्त्रे सौर्धार्थ के श्रीको वास्त्रों था। वह राजा नगर धेन या और मैंन क्यां नेत्र सौरा बकान को दिश्यों था। है सुर होड़ेने कोने के देवनिर करों गढ़ करता रिते व और रूपर प्रमानुत्रेंने कार्य स्वाधाराध श्रीव हैंन्द यह बाद बनावर नार्थकां प्रथम था। अ। बच्चा व्याधाराध श्रीव हैंन्द सेन्युन जो प्रमानुत्रन सानुष्ट था। अ। वह वस्त्रम्य पुरनेनार्थे १९६६ दे के मणवन कर्युन होत्राव्यक्तरें एत्या थी। संद्राव्यक्तरें प्रथमां श्रीवर्ष क्यां स्वाधाराध्या स्वाधार व्यक्तरें व्यक्तरें सावर द्वारा सावर्ष व्यक्त स्वाधार श्रीवर होता है।

स् नरव नरक्त विद्युत् और वनवर्थी था। बाने स्वानुसी जनन और नवर दिया। जातन है वक्षों प्रावनार्थे के खिरायें जार सान्तुरावर्थक सामाय की हुए हैं। और कस्पनवर पात्र रि मेंच्यारार्थकी (प्रायक्षे को कार्यक हुआ है। यस वक्षेत्र रहें के जा नवार जनने पात्र करतेयों कुर से ही है। बाने कार्य दें हैं के लिए मेंच्या की हारद्वार्थ को बीर वास्त्र है हि पात्र में नर्के निवर्षित करा जार्थि बहुत्वर हो है। प्रावनुक्त पात्र पहुं अधिक मेंच्या मूल १ में से हो तथी और एव राज्ये बक्शा वर्षण लिए हो पत्रेल कुमोर्ग्स मानवर्थ १११६ है जारेश एवं क्रांत्र होता है कि एक्ष्य कुमोर्ग्स मानवर्थ ११९६ है वासेश एवं क्रांत्र होता है कि एक्ष्य कुमोर्ग्स मानवर्थ १९९६ है।

किन्तु रास्त्युक्तों निरुश्तवे त्रस्यक्ति होने और वत्तरा बादर करकेर वी नियुक्तके न हो वेदवर्तका वीराता हो किया व व्यक्ते कार्य राज्या परस्का चौर त्रसर कराना सौर व देवन व वेदे हेर्निया समाना हो। वहके नाम सिल्युम्बेदका सो होई वस्त्य वक्के वर्त परिवर्तनसे नहीं है, यह नाम उसका पहलेसे ही या, अन्यया स्वय जैन शिलालेखोमें इस नामसे उसका उल्लेख न होता । यस्तृत कर्णाटकके राजा लोग बहुचा अपने मूल कन्नडिंग नाम (यथा विद्विग या विद्विदेव)के साय-साय विनयादित्य, विष्णुवर्धन आदि जैमे सस्कृत उपनाम भी रख छेते थे। प्राचीन चालुक्यों, राष्ट्रकृटो आदिमें बरावर ऐसा होता था, स्वय होयसङ वशम दोनों प्रकारके नाम पाये जाते हैं। इनके अविरियत ११२१ ई॰ में महाराज विष्णुवधनने अपने प्रधान सेनापति गगराजके अनुज सोवणके हितार्थ हादिरवागिलु जैन वमदिको दान दिया । ११२५ ई० में इस नरेशने जैनगुरु श्रीपाल त्रैविद्यवतीका सम्मान किया । चामराजपट्टन सालुहेके वास्य नामक स्थानसे प्राप्त उसी वर्षके शिलालेखके अनुसार मदियम, पल्लव नर्रासहवर्म, कोग, कल्पाल, अगर आदि राजाओं के विजेता इस होयसस-नरेशने मिततपुवक शस्यनगरमें एक जैन विहार अनवाया और उस वसदि-के लिए तथा उसमें जैन ऋषियों के सरक्षण के लिए वादी मसिंह, वादि-कोलाहल, ताकिकचक्रवर्सी आदि विरुदप्राप्त स्वगणनायक विद्वान् जैनगरु श्रीपालदेवको वही ग्राम तथा अन्य समुचित दानादि प्रदान किये। ११२९ ई॰ में इस राजाने बेल्रके मल्लि जिनालयके लिए दान दिया। ११३० ई॰ में इसके सेनापित गगराजके पुत्र बोप्पने रूबारि द्रोहघरट्टाचारि कस्ने-द्वारा राज्याश्रयमें चान्तीस्वर ससदिका निर्माण कराया । इस कालमें दण्हनायक मरियाने और भरत नामक मन्योंने पाँच वसदियाँ वनवायीं, जिनमें-से चार देशीगणके लिए और एक काणूरगणके लिए घीं, तथा काणूरगण तिश्रिणी-गच्छके गुरु मुनिमद्रके शिष्य मेघषन्द्र सिद्धान्तीको दान दिया । रानधानी द्वारसमुद्र (हलेबिड) के निकट वस्तिहल्लिकी प्रसिद्ध पारवनाय वसदिका सन् ११३३ ६० का शिलालेख भी इस राजाको परम धार्मिक मध्य सुचित करता है। इस लेखमें यह भी उल्लेख है कि स्वयं राजधानी द्वारसमुद्रमें महाराजके एक महान् जैन दण्डाधिपने विजयपास्वेदेव नामका सुप्रसिद्ध जिनालय बनवाया था और महाराज विष्णुबर्यनने उक्त जिनालयके मूल वांच्य विकासपेष्ठ वान्तर अपने वरवान राज्यवारमा सब विकासितिय एका मा। तथा चया वरवारमा सामग्री है वर्ष वर्ष विकास के वितास के विकास के विकास

नहाराज विरुक्षवेतको सहस्रियो धान्यलवेती जल्मा सुरक्षी ^{हिर्दी}। बतो नाम्यो और बर्गाता नारी-रात थी। बढ़के निरम संग्रेड कुन गाँव वर्ष भीनवंती क्यांत बुर बूर थी। प्रवच्न दिया नेरम्बरेगार्रानकर कटूर चैन का और मध्य मनिकाले क्यों बकार करन की मी। रानीके पुरु प्रवासना विद्याला वैद्यानक-पुरुष्टकरणको सेमबना वेरिकरेगी क्रिज ने । नहाराची बान्तनदेवीने चैनवर्तकी प्रवाननाके क्रिय स्थाने वर्त किये । वक्ष्मे चमुन्तमस (सृतिवर्ग स्रातिकायमें सामक्रमर्ग हर्ष मारिया वर्त) का करकर किया चार बराएक बात देने और अध्यात हाली पुरावधरित तुमनेने बने बना जानार बाता या । ११२३ है में बने प्रदेशकेल तीर्वतर बाल्व क्लिप्टको मूर्वि अतिहान को नहीं ब^{क्}रि क्रक्सारम नामश्री एक सन्त नुपर बनाई निजीव करायी व्हाराजनी मनुम्नीशुर्वक बनके निए रामुबको एक बान मेंट सिमा, क्यान्तार द्वार बाद सबि प्रशास को : बस्ते बनुव पुरुक्तरेगरे ठाल-गान एक वर्ण कल बीर-स्रीमान्य-विनायमके सिन् क्यान किया । अपने वर्तिक कार्योके चारचः बङ्ग राजनद्वियो सम्बन्धत्रपुराजनि और जिनकारयम्न कर्**या^{ती ।}** ११३१ है में बनने नियमंत्रानीर्यंतर समुदनी बचरिवर्टिने बमाविकाय किया । इतरर करूपी जनती वानिश्योते की अवध्येकतीय क्षाप्तर वर्ष मानवी सम्बन्धनापूर्वक संन्यानगरम क्रिया । क्ष्य समन बहुर्गे नूनि श^{ाह्यसूच} वर्षवाचीन और नियम पर्शनक में और क्यूंने इस बालांने ^{इस} बंदरकी मृष्टि-मृष्टि प्रचंदा को वो । क्षिप्यूपर्वनकी स्मेष्ट नुवी राज्युवारी

ाव्यरिस मी, जो सिंह सामन्तसे विवाही थी, वही धर्मात्मा थी। ह गुढ गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे। ११२९ ई० में हन्तियूरमें इसक्ष्मारीने गोपुर आदिसे मण्डित एक उत्तृग सुन्दर जिनालय बनवाया और उसके लिए अपने पिता महाराजसे नि शुक्क भूमि प्राप्त करके हको दान दी थी। महाराज विष्णुवर्धनके मन्त्रिया, सेनानायको, न्त सरदारो एव राज्य-कमचारियोमें-से भी अधिकांश जनधर्मानुयाथी वस्तुत विष्णुवर्धन होयसलकी महत्ता, धानित, समृद्धि और विजयोका क श्रेय उसके प्रचण्डवीर जैन सेनापितयोंको है। उन्होंने ही होयसलों- (क्षिण, दक्षिणपूर्व, पूर्व और परिचम्बर्ती समस्त दुर्दर घायुओका सहार ॥ सोर द्वारसमुद्रक नरेशोको एक शिवतशाली साम्राज्यका अधिपति

इन जैन-वीरोमें मर्वप्रमुख महाराज विष्णुवधनका प्रवान सेनापति राज था। यह कोण्डियगोत्री द्विज था। इसका वश पहलेसे ही जैनधर्मका न अनुयायी रहता आया था । गगराजका पिता एचिगक या वृद्धिमित्र ।सल न नकामका मन्त्री और सेनानायक था और मल्लूरके कनकनिद का शिष्प था। उसकी माता पोविकब्वे भी वडी धर्मात्मा थी, २० ई० में श्रवणवेलगोलमें इस साध्योने सन्यासमरण किया था। नी वीरता, पराक्रम, राज्य-सेवाओं एव धर्ममिनितके कारण गगराजने ासामन्ताघिपति, महाप्रधान महाप्रचण्ड, द्रोहघरट्ट, दण्डनायक, होय-जनरेशको राज्याभिषिक्त करनेके लिए पूर्णकुम्म चार दानमें तत्पर, स्तम्म बादि अनेक विरुद प्राप्त किये थे। शिलालेखोंसे प्रतीत होता है अपने वडे भाई बल्लाल प्रधमको मृत्युके उपरान्न एक अन्य भाई यादित्यके विरोध और पाण्डम एवं सा तराकी शत्रुताके कारण विष्णुवर्धन-स्थिति बड़ी डॉबाडोल थी और यह गंगराजका ही पराक्रम था कि . ।ने उन सब षत्रुक्षोंका दमन करके विष्णुवचनके लिए मिहासन निष्कण्टक या और उसका राज्याभिषेक कर दिया। वह महाराज विष्णुवर्धनका

बाहिना हाप ही पता बा । महाराजके संग्तुस वर्णजनन व्यान् समय तकारहरे जोलोको विकास सहर करतेची नो और यह नार्न कर्न वंतराजको सींचा को १११७ है में इसमें पूर्व सकत हुना। करो क्षमांत्रकर्मे स्थित राजेन्द्र चोक्के दोन्ते तानन्ती-सर्वेदव बानीवर बीर बर्रोतहर्षका पूर्वतमा समय कर दिशा और मंत्रवाधिको राज्यकी अचनात्रकर अनिकार कर तिला । स्ट्राराम विल्लुपर्वतने प्रतब होकर श्रवत नुरस्कार मोननेके निए कहा तो बढने वंत्रसात्र देवकी सौना स्पेति बंब प्रान्तिमें सनेक प्राचीन बैनतीने और क्वरियों मी क्लिकेंचे अवेरीकें राजेन्द्र और वर्षिराकेन्द्र शोकने यह करना दिना था। वंतराजको कार्य बीमीद्वार भीर बंरसम् कराना वा को क्लवे बड़ी करातापूर्वक किया। ननराजने कांनुरेव और वैनरिकी शिक्ष्य को और नई रूम दुईर हास्की-का रमन किया । होनवजीते पाक्षण किया पड़के कामान डाल्प विमुक्तवस्थ पानवपको परावित करने कन्त्रनीका प्रवित हुई क्रीन सिर्म था। इषका बदला क्रेनीके किए बालुसन-बजार्थ सर्व बाप्त पूर्वर तामनी-वरित क्षेत्रबक्तरात्तरार बाक्स्प्ये कर दिया । विव्यवस्थाने पुरस्य नगरामको पश्चिमधे बुक्तकर चालुलाँकि विदश कराउँ नेता सेर इव बीर देशानीचे जानुसन-बनाद् बीर क्वके बारमाँको १११८ है

ये मुरी तरक् पर्धास्त किया । पंपायको इन पानलारिक विज्ञीन महत्त्व वर्गीन वा इस्त्रोंने होनक्कोनो लाज्य हो वही जनस्य क्रीम बाली मी. क्या दिया, इसी कारण क्रिक्सकेबीमें वर्ड. 'विक्लुसर्वन दोनगर स्थापनमा सामीलर्गनगर्गे रहा का है। रेग्रीक प्रसान कुरपुरावन सम्मारीदेवके किम्म दर्शनमहोदी बुजम्म्यदेव वंदरायके पुत में । १११८ दें में इन मुक्ता पंतराजने एक बान बेंट दिया और धन-

वाली शारकमूलको नाध्येत्राच-वत्तविते स्वते स्वते वित-परिवार्षे ब्रह्मिक करानी पंत्रवाति १६ अल्य को को पुरस्कारने आज हुना या क्ष्मणे क्षमण्य मान काले नवपनेकारेक साथि दीव्योंची क्षमारि प्राचीन

बारबीय इतिहास एक दनि

वमदियोंके जीर्जीद्वार एयं सरदाण, मवीनांके निर्माण और विविध स्वीमें जिनधर्मको प्रभावनाके हित व्यय की। शिलालेम्बामें उनकी मुलना गीमद्रप्रतिष्ठापक गग-सेनापति चामुण्डरायसे की गयी है। किन्तु ऐसा धर्मात्मा एव जिनमनत होते हुए भी गगराजके सम्मुख राजनीति पहरे नीर धर्म पीछे था, उसका धर्म उनकी राजनीतिमें सहायक एव साधक या, बाघक नहीं। यह अनन्य स्वामिभनत था। गंगराजका पुत्र और पत्नी मो परम जिनमक्त थे। उसके पुत्र बीध और गतीजे एचिराज उसके जीवनमें ही प्रसिद्ध दण्डनायक थे। ११३३ ई० में गुगराजकी मृत्यु हो जानेपर एचिराजने राजधानी द्वारममुद्रमें ही अपने पिताकी स्मृतिमें द्रोह्घरट्र-जिनालयका निर्माण कराया जो अत्यन्त विद्याल, सुन्दर और कलापूर्ण या । यही जिनालय विजय-पाश्वदेवके नामसे प्रसिद्ध हुआ । इस मन्दिरकी प्रतिष्ठा होनेपर जब पुजारी जिनेग्द्रके अभिषेकका पृथित ग घोदक लेकर राजाके सम्मुख पहुँचा तो विष्णुवर्धन उस समय वैकाप्रमें छावनी डाले पड़ा था और यह मसण कदम्ब नामक एक दुईर शब सामन्तका सहार बरके निवृत्त हुआ या और तमी उसकी रानी उदमी महादेवीने पुत्र प्रसव किया था। राजाने अध्यन्त आनि दित होकर पुजारी-का स्वागत किया, खड़े होकर करवद उसे नमस्कार किया और ग बोदक-को भिवतपूर्वक मस्तकपर चढ़ाया तथा कहा कि 'भगवान् विजय-पाश्वदेवकी प्रतिष्ठाके पुण्य फलसे ही मैंने झाज यह विजय और पुत्र प्राप्त किये हैं। तदनुसार ही उसने नवजात शिशुका नामकरण किया और मन्दिर-को ग्राम मेंट किया। सेनापति बोप्प अपने पिता गगराजकी भौति चदार और वीर था। उसने शान्तीश्त्रर वसदि और प्रस्नोक्यरजन अपर नाम बोप्पन चैत्यालयका मिर्माण कराया । वह भारी विद्वान् भी था । उसके गुरु नयकीति सिद्धान्तचक्रवर्सी थे। बोप्पको माता और गगराजको पत्नी छवकले या रुक्मोमती दण्डनायकित्ति गुरु गुमचन्द्रकी शिष्या थी, सह अपने पतिके मुद्ध एवं राज्य-कार्योमें भी उसकी सिक्रय सहायक रही थी.

तान ही बड़ी शलपीका और वर्गतना थी। १११८ वें वें वयन्तेल्येन में वंत्रने देश जिलासन नगराना मा और ११२१ ई में स्ट्रॉ क्ले चगाविमस्य विकाशाः बद्दकी क्लिको बक्कने वी को बनग्रके माई रण्डमस्त्रक बन्मत्री क्ली वी. वडी वर्षाला थी। १११ ईस्वें क्येर्

एक विकास विश्ववृत्ति सीट एक सरीवरका निर्मीय कराया ^{सा} । मित्रपूर्वकरा दूसरा प्रमुख बैनककी दश्यमान पुणिवस्य वा । व्य पताना चन्तित्वहित्र था। बद्धते पूर्वत भी सतत्त्वी प्रदे स्त्

क्लके विद्यास्य सक्तक्यावनशासक-मध्यक्ती पुलिवशाच बल्बादीय वे और तिश नामराज्यभूग थे । स्थानान गुनिशको जिस्स मी स्थारनपूर्व ^{सी} नीकॉनरिके मुद्दोंन पाक-गरेशके नई शानन्तीको पर्शान्त करके बन्ते माने स्थानाता विकास बुनी ही बदान कर से के बीर खुर विकास नी पिनदोक्ने किए उदका कार्च प्राप्तत कर विद्याच्या बना बतन और कैरक्पर बक्का अविशार करा दिना का । पृथ्वित क्या कर्मनुसनी मीर वत्रारनेता था । वर्षे निवर्तनियर क्याने निर्माण कराने और सनेक निर्देशन म्मन्तिर्गानी बहापता को। वसको परोपकारमृतिका बाम बैक-मर्जन संबक्त बनान करव होटा गा । बक्रको पत्नी वच्चाननिर्दि बक्रवाने मो वही नर्गात्या मो । बीता बीर यस्तिमीते क्यमी धुक्ता की बांधी की । १९१७

र्दे में बचने नापाय-दिवित एक निय-मन्दिर बननामा ना । बढीके बदारी काके रांट पुनितने मुख्यमार-वस्ति सनस्तो । वह स्वति निम्पूर्णने नीरक्क-विलाधनके राज्य थी । महाक्वाल स्थानानक प्रनिवस्थनके दुर्व माजितकेय परिकारित थे । बन्धनावक संबरेतन्त्र नदास्तवः विरुत्तकातीयसः वेनासीतं वा । य धवा वास्ति वा नरकारित और बनवी सली आवानिकेका पूर्णि

पुत्र का और राजांक प्रथल सन्दिवींचें का क्या वड़ा और रेमानी का, वह जिलेक्टर जो परम क्या का । इसके अन्य दो बाई कल्पान और इंग्लिक तथा मर्ताजे माथिराज भी जिल्लाच तथा खडाड़ बीर डेमानी में। बालीय हरियाद । यह ही

भारद्वाजगोत्री मरियाने प्रथमकं पौत्र और दावरसके पुत्र आतृद्वयं मरियाने और भरतेरवर मी महाराज विष्णुवर्धनके द्रण्डनायक ये। मरियाने दण्डनायकको तीन पुत्रियाका विवाह राजा बल्लाल प्रथमने स्वयं कराया था और यह स्वयं गगराजके जामाता थे। ये दोनों भाई महाराज विष्णुके समयमें सर्वाधिकारी, माणिवभण्डारी और प्राणाधिवारी पदापर आस्त्र रहे। दनका सम्पूर्ण परिवार जिनमन्त था, अनेक जिनमन्दिरीवा इन्हाने निर्माण कराया। इनवे गुरु माधनदिये द्वाय्य गण्डविमुनतदेव थे।

गगराजका भतीजा और दण्डनाया बम्ममा पुत्र एच भी विष्णुवर्धनके समयमें ही दण्डायीश ही गया था। यह भी वटा धार्मिक शौर बीर धा किन्तु उसकी मृत्यू थोडी ही आयुमें ही गयी प्रतीत होती है।

होयगल एयरगके राजमन्त्री चित्रराज दण्डायीशका पुत्र इम्माह दण्ड-नायन विद्रिमय्य महाराज विष्णुया एक अप बैन बीर सेनानी था। बाल्यावस्थामें ही इसके माता-पिताकी मृत्यु ही गयी थी अत स्त्रय महा-राजो उन्तरा पाएन-योषण भिया था। यह गारफ इतना न्युलान था ि पोडी ही आपूर्ने अन्त्र धन्त्र तथा अ च विविध-विद्याओंने पार्गत हो गया । एक राध्यात्रीकी पुत्रीके साथ राजाते उसका विवाह कर दिया । युवा होनेवे पूर्वे ही यह बालबीर महाप्रनण्ड दण्डनायन, सर्वाधिकारी, मकन-अनीपकारी आदि पदिवयींग यिभूपित ही गया था। एक पानके ीतर ही दग बाल-गामितिने सीगुदेशपर नीगा बाबसा सरसे दावसी मुरी नशः पराजित करते अधीन किया था, अपनी धन राशी विजयोदि पारण चाही हो आयुर्वे यह बीर मणारालका बादिना सुव हा गया चा । मार्ग ही यह परम पानिक भी मा । श्रीपार वैविद्यदेग उनके नुम से और रदव राज्यामाँ झरमभूटमे उपने विष्णुक्यन जिलालयका तिर्माच कराया रा. सीर वा प्रात हम राज्ञान पुरस्कार-विकल निस्ट में अने उसने उत्तर मन्दिरम निष् एथा मुल्तिरे मारार-दानने लिए गमतित सर दिया था।

इस प्रशार अपन अष्ट प्रवान वैस राजमित्यों भीर धार सेनापतियांके

वास्तापूर्ण पूर्वोभा बार्यमाने माराज विन्तुपर्यन होनवकोन वेटण बार्ण यह बीर बाल माने पेट पुष्ट कर यो मान् दिलान्स्वारम्ये होन्यन तैयोडि निकासो समान्य करिया किया मान्य बार्यक्रिय क्या स्था बार्यक्राम्य कर्म क्यांचायक कार्यक्रो मी प्रेरवायून दिन्य, बायक स्वारम्य पुनार की बीर वेट्यक्टम मी ब्रिटीयूनो स्थाप दिन्य प्राप्त करिया क्यांचारम्य क्यांचारम्य वार्यक्रम स्थापित क्यांचार्यक्रम स्थाप यह नरिवर्षे स्थापनीय क्यांचारम्य वार्यक्रम स्थापना व्यवस्था स्थापना स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थाप

नर्रोत्पृदेश प्रयम् (११४१-११७३ ई.) राजा हुआ । बल्य-बनार्षे ही उपना राज्यामियेक कर हिंदा नवा ना । क्यांकी कुलुके क्ष्म कई केवक ८ वर्षका सामक था । वय प्राप्त करवेकर भी वह आवीर-अवीवनै अविक कारत क्यूका या । इसके नकार्य होत्रस्थ-राजानाती व्युक्त और प्रतिकारी रहा काचे काचे मुठ-प्रीयम, विजयीत्वास व्य सम्बंदिक चनुराधि नहीं हुई परन् बढ़के प्रक्षांचे निहाने बाक्के प्रकार और वक्के स्थानियका पूर्वान्य बूचे बीट बैन बन्तियों और वेतानादिनोंके नारण हैं। ही बड़ी : नरियमे, जरब बारि पुत्र ब्यादिकारी को बढ़के रियमे बनपत्रे हो ने । बांनालये देशपत्र हुएक, कान्तिसल्य और ईस्सर नानने चार अन्य रगामित्रका कुछल एवं बीर केवक प्रदे स्वयं आप ही न्ते । वैतराज शोधिकारोतीय व्या काल्के पुत्र वीकावार्य मुनिकात नहारत में। दिन-वरितर्वे देशप्रवरी तुम्ला बालुक्यपुत्र और बंतराज्ये साथ की वाती थी । राजाने इसे 'मुस्बद्दक्षित' बाल नुस्स्वारमें हिना, निष्ठे बक्ते बहुर्त कुल बीलाक्य बनवाकर बच्चे बुदके बालवर बलाई कर दिया। राजा वर्तादानै दीखावयके बदन करके क्या शानका नाम पर्वपूर व रिशा । बताराज नरविष्ठके केपार्याओं ने क्ष्मणीत वर्ग वर्गमहान स्टब् या। या प्रतिपूत्रवे करता हुवा था। वसने तिवारा शत स्वयान

माताका लोकाम्बिके और पत्नीका पद्मावती था। लदमण और अमर नामके उसके दो माई थे। यह पूरा परिवार जैनधर्मका परम ममत या। म्वयं हुल्ल न केश्रल उदारचेता, दानशोल, मन्दिरोका निर्माता और धर्मात्मा र्जन या वरन् वह व्यवहारफुदाल, राजनीतिज्ञ, योग्य प्रशासक और अपने समयका सर्वमहान् सैय-सचालक एवं बीर योद्धा भी था। राज्यको सेवामें यह महाराज विष्णुवर्धनके समयसे ही चला आ रहा था थीर अब नरसिंहके समयमें महाप्रधान, प्रधान कोपाध्यक्ष, सर्वाधिकारी एव महाप्रचण्ड दण्डनायक लादि पदोंपर आल्ड या । लपने युद्धो, विजयों क्षोर सुग्नासनसे उसने नरसिंहदेवके साम्राज्यको अक्षुण्ण एव सुरक्षित रक्षा। उसकी तुलना चामुण्डराय और गगराजसे की जाती थी। हुल्लके दत्तगुर कुषकुटासन मलघारीदेव थे। देवकीति मण्डलाचार्यका भी वह मक्त या और उसके स्वगुरु नमकीत्ति सिद्धातदेव थे। हुल्लने श्रवणवेल-गोलपर चतुर्विशति-बसर्वि नामका अस्यन्त सुन्दर एव क्लापूर्ण जिनालय निर्माण कराया था। ११५९ ई० में स्वय महाराज नरसिंहदेव जब दिग्वि-^{जयके} लिए निक्ले तो इस जिनालयका दर्शन करनेके लिए गये और प्रसन्न होक हुस्लकी उपाधि 'सम्यक्त्यचूडामणि' के कारण इस यसदिका नाम ^{'मठ्य}चूडामणि' रक्षा सथा उसके लिए एक ग्राम दान दिया। राजाने जन्त स्यानकी समुदियोंकी जिनेन्द्र प्रतिमाओं, गोम्मटेश्वर और पार्श्वनाय-की मिक्तिपूबक वन्दना एव पूजा की । सेनापित हुल्छने केल्छगेरे वंकापुर कोर कोप्पण तीर्थके अनेक जिन-मन्दिरोंका जीर्णोद्धार कराया, नवीन मन्तिर निर्माण कराये, मन्दिरोंने संरक्षणके लिए दान दिये और कई दान-पालाएँ स्यापित को । नरसिंहका तीसरा प्रसिद्ध सेनापित बान्तियण्ण या । उसका पिता पारिपण्ण भी एक पराक्रमी योद्धा और राज्य कोपाध्यक्ष षा। आहवमल्लको उसने पराजित किया था और उसी युद्धमें उसकी मृत्यु हुई थी। बान्तियण्णकी माता बम्मलदेधी मरियाने दण्डनायकको पत्री यी और वशी धर्मात्मा थी । उसके पिताकी मृत्युके बाद नरसिंहने दान्ति-

1 3

सन्दर्भ संस्कृतक वस्त्रम् और एक दाव अधन किया । स्थानन यान्ता लड़े पुर शतुरूमा निवालके दिया बन्नियेन र्याया है। यार्जना माने बाजी बादीर वरिष्ट्रकर्ते एक अन्य विचायन बनवाओं विवर्षे किए बनने स्वयं तथा बयनी बर्गन्त प्रमाने प्रमुख सन दिया । वर्रानहर्ग भीना देशाचीत क्रेंबर बजूरीत का र यह क्योंक्सिए एवं वेतासीत स्थ ना क एरेटनवरा पुत्र का । जनने नत्यार्थनरिके जिन्नानिरका कीमीहार कराता १६ ई व क्याची रची नाविवलाने को साहियों निर्देशकी पुत्री और राज्यविकारप्रकार दिल्ला की, एक जिल्लामिय निवीत ने छार दान दिया दा । नर्राहरूनेक्से क्षेत्र सम्बद्धकरूपी विवयन बीट क्षेत्रेड ने फिन्नाने ११६५ ई. में बानिवयोगाओं होस्वाम-विशासकी सुनि बागरफ निए राम विश्व का अर्थकारेडके एक सन्त बन्दी सामुन्तस्त् चारिकारची पानी बकारेने हैरनुने चेनापार्रधान-पानी वपरावर चारा-की समुख्याने नक्ता सरकारिक समझ अपने वृद्द नकर्वीति विद्वालदेवकी धन दिया था । इसी नाचने नर्राल्युंड बानन्त नोवको पत्थे विराजनिर्देते क्ष जैक-प्रतिवादा अतिका कराके त्यनुव चन्नाप्तवदेशको दान विश्रा था। इन प्रकार क्षेप्रचन का निक्षीय की बाल पुनर्वीको जाँचि विश्वन्यमको स्टा

वर्षात्वात दूर मूर्गाव्य त्रावार या ग्रेस्ट्राव्य विशेष (१४%) है। हो है राज्य विम्युवसरों मार्ग्य वा गारी सामार्ग वर्षात्री होंगा हो राष्ट्र के सारी सामार्ग वर्षात्री होंगा और सामार्ग्य वर्षात्री वार्ष्य दूर महिन्दा के सिंदा कि १९६६ हैं के स्वाप्त के स्वाप्त के सिंदा कि १९६६ हैं के स्वाप्त के स्वप्त करने स्वप्त के स्वप्त करने स्वप्त स्वप्त

भीर अवस्थात का भीर बढते. कंत-मिनवी, केसादियों एवं वर्धीर-वर्धीरमेंने कथान क्ष्में सेम्पडानुर्वेत बाबारमधा बंशबन क्ष्में क्षम विद्या। वेठगोलपर निर्मापित चतुर्निंशति बसदिके लिए दो गाँव दान दिये थे । ११७६ ई० में राजघानीके देवीसेट्टी नामक घनी सेठने वहाँ वीर वल्लाल-जिनालय नामका सुदर मन्दिर राज्याश्रयसे निर्माण कराया और उसके लिए स्वगुरु गालचन्द्र मुनिको दान दिया था। स्वय राजाने भी कई गाँव चसके लिए प्रदान किये थे। ११९२ ई० में राजधानीके अन्य चार प्रमुख सेठोंने समस्त नागरिका एव अप्य नगरोके व्यापारियोके सहयोगसे वहाँ नगर-जिनालय नामका विशाल एव सुदर मन्दिर निर्माण कराया था । इस मन्दिरका नाम अभिनव शान्तिदेव भी था। राज्यश्रेष्टिके साथ महाराज 'प्रतापचक्रवर्ती वीरवल्लालदेव' स्वय मन्दिरमें दर्शनार्थ गया और उसने चसके लिए गुरु वक्जनिद सिद्धान्तको कई ग्राम दान दिये । सदैवकी भौति इस समय भी होयसल राजघानी द्वारसमुद्र जैन धर्मका गढ़ और भव्यों (जैनों) का प्रधान के द्र थी । जैनाचार्य श्रीपाल देव और उनके शिष्य इस कालमें होयसलोंके राजगुरु थे। बल्लाल द्वितीयके समयमें भी होय-सलोंके शौर्य और पराक्रमकी प्रतिष्ठाके आघार उसके जैन सेनापति और मन्त्री ही थे। युद्ध सेनापति हुल्ल्के अतिरिक्त वसुर्धकवा घव रेचिमय्य वल्लालका सन्य प्रसिद्ध सेनानो था । इसके पूर्व वह विज्जल कलचुरिका प्रधान सेनापति था, क्लचुरियोंके पत्तनके परचात् वह धल्लालको सेवामें आया। यह दुईर योद्धा और भूशल सेनानी था, बल्लालकी अनेक विजयो• षा श्रेय उसे ही है। साय ही यह वडा जिनमक्त था। उसने भागुदिके रत्नत्रय जिनालयके लिए मुनि भानुकीत्तिको दान दिया, नागरखण्ड देशको अपनी राजधानीमें एक अति सुन्दर सहस्रकूट चैत्यालयका निर्माण कराया. १२०० ई० में इस म न्दरके लिए अपने गुरु सागरनन्दिको दान दिया और महाराज वल्लालने भी उस अवसरपर उन्हें एक ग्राम दान दिया। उसी वर्षे श्रवणबेलगोलमें भी उसने एक शान्तिनाथ वसदि बनवायी। मरियाने दण्डनायकके पुत्र भरत और वाहुविल भी बल्लालके स्वामिभवत जैन सेनानायक ये । बुल्लालका एक अन्य सेनानायक वृचिराज था, वह राजाका

वन्तिविवद्धि वा बाव ही बेरहत हवे क्यों वर्ण जातीय की और करि भी था। ११७३ ई. में बालामने राजाविके बाला मारिकमिनं विमुद्र-विकासय नवसावर समने स्मृतं वासुनारी वार् किर बान वान दिने में १ वस्थानका दक सक्त राज्यानी वानेता हैं चन्द्रमीक वा को क्रोफ़ विद्यानीने चारेला आग्रे विद्यम् वा केरवी मैंव होते हुए को बैतवबंके बाँठ बाँग बच्च था। वहामें करों प्राप्ति थो परम जिल्लाका कर्ष सुनि क्यमीतिको विस्ता हो। शुद्ध है मायकोशीनं सरकीयशीतनं सार्यशायका सूचर जिल्लामः विसीत क्राप्त मा निवर्ष किए श्रवके एति चन्त्रमोत्ति धनाने प्रार्थत करके नदशीने रिप्त बालपण्डरी एक बान समने रिकास था। बागरेबीय स्मार्थरी एवं नगर और बाहके अशिनिकिशीने भी इस मन्दिके निम् दान हिने हैं, स्वयं प्रशते बानो धोरवे एक तथा क्षत्र वो वल दिस वा। इत हर्ने र्वनमणी क्षणकी पानी बोमलकेशेले १२ क ई वे इस वसी निर्देश कराकर शास विधा था । क्यूबने स्था मी ११ ५ है में इंड पूर्वर जिनाक्य निर्माण कराना था। इसी राज्यकारमें बानाके बानाके बरहाने नहीं बरमान्य कार्रिया क्रियानीने वर्षरार्वे और बर्यावरार्व विमें में । अस्त्राक्ता एक मैनकनी नामरेन था मो सनी अन्तरेनम हैं मीर नक्तरियश विष्य था। सह जिल्लानरप्रतिशाम बद्दारा की werterint entalert tett f i unt merem mit राष्ट्र गर्ही सपर-विमालक अपर आगं बोलिकन बावक अवित क्यार्ड वर्तित स्त्रवाद्या सा । एक सन्य क्षणी स्थापेत बत्तवाय सा । वर्ष कर्त पानकाविकारितीके वरिवित कुळने कलक हुना वा । वह और ज्वानी पानी बोक्जरेची दोनी वडे अवस्थित में और पुत्रवृत्तको विश्व बंद्रमंत्रा बहुरफे किम के। ११६८ हैं में स्वीत वरक-हिसाबा नागर मांच्य पान रिनामीन्ट सारामा या विश्वके क्षित् सहस्रात्रनेतार क्रमकारको प्रथम क्रमीन धार रिया था । राज्यकेत स्टूमराजी, अन्त रेको, तैलव्यापारियो और स्वयं महामण्डलेख्यरने भी इस मन्दिरके दान दिये। १२०० ई० में राज्यके एक अन्य सर्वाधिकारी मन्मट य्यने अपने स्वसुर वल्लय्यके साथ परवादिमल्ल-जिनालयके लिए एक को समस्त तैलमिलोका कर प्रदान किया था। राजाका एक दूसरा विकारो 'महापायसम-विरुद—नामोत्तदिष्टायकम' आदि पदारूढ नायक अमृत मी नयकीत्तिका शिष्य था और वल्लालकी उपराजधानी क्रुंडोका निवासी या तथा जाति एव फ़ुल्से शूद्र था। अपने तीन योंके साथ १२०३ ई० में उस स्थानमें उसने एक्कोटि-जिनालयका िण कराया या और समस्त नगर-निवासियो एव कृपकोंके नायकोंके क्ष भगवान् शान्तिनाथकी पूजा और मुनियोके आहारके लिए भूमिदान ाथा। सेनापति क्षमृत इतना उदारचेताया कि उसने ब्राह्मणेंके १ एक अप्रहार भो स्थापित किया था एवं एक शिवालय भी बनवाया । वल्लालके राज्याभिषेकके अवसरपर उसके एक अन्य पदाधिकारी चराजने ११७३ ई० में बोगवदिक श्रोकरण–जिनालयके पादवदेवके ए गुरु अकलंकसिंहासन पदाप्रमस्वामीको एक गाँव दान दिया था।

धल्लाल द्वितीयने विद्वानोंका भी आदर किया और साहित्यको त्याहन दिया। उसके पूर्वजोंके प्रश्नयमें श्रीधरने जातकतिलक और चन्द्र। चरित (१०४९ ई०) की, नागवर्म प्रथमने चन्द्रचूहामणिहातक १०७० ई०) की, नागचन्न 'अभिनवपम्न' (११०५ ई०) ने मिल्लिनाथ रेत एव रामचन्द्रचरित नामक चम्पुओकी, ब्रह्मशिवने समयपरीक्षाकी, त्रित्रमेंने गोवैद्यकी और नागवर्म द्वितीयने काव्यालोकन, कर्णाटकभाषाग्ण तथा वस्तुकोपनी रचना को थी। स्वय वल्लाल द्वितीयके राजकिव मेचन्द्र थे जिन्होंने लीलावती नामक प्रेमगाथा लिखी थी, राजादित्य १६९० ई०) ने व्यवहारगणित, क्षेत्रगणित और लीलावती नामक गणित य रचे, महाकवि जन्न (१२०९ ई०) ने यशोधरचरित, जगदल्लिमनाथ-कन्नद्र-कल्याणकारक नामक वैद्यक ग्राय, वायुवर्म वैद्यने हरिवैशाम्य-

चय बाँद बीजवामीशन शितुमारको मेन्सामीत बीर तिपुर्तार सम्मानी नारानिया बीर बाको मार्ग मनिकार्युक्त दृष्ट्यपूर्वर (१९६५ हैं) और प्रचान की थी। कारोला पित्र नारा वह है के वे बीर क्या मार्गियको पुरस्ताप्री थे। बातके वसको निकार्यन्त होता कार्यक्त पित्र कीर मृत्तिकारके की मुत्रे हैं। और बातको सम्मानी कार्य विश्वकन्यामारको निकार्य-दिन्न भी ही विश्वकर बातनीकार्ये। १९९२ हैं में देशोगिक साम्लेग्य नार्योगिक साम्लेग्य कर्य बीराम्य कार्यामीय सीनायकार सर्वारिक स्वीत्रायको प्रधानिक कर्य

बीर सम्मापको मृत्युके कारान्त इन बंबरी जनगरि जारान है क्यो । १२२ व में क्लका पुत्र नरसिंह हितीय राजा हुमा, बान्यवारी भोडे बक्य नवपता हो बक्को मृत्यु हो क्यो । सरक्तार बक्ताम रिकेटम भीन मोनेस्वर समा हुमा । बनकी मृत्यु १२४५ ई. में हुई। बोनेस्सर्श यो रामिनो में एकता बाज विरम्बदरानी का और दूसरीका देखलेंगी। त्रवंतरा पूर्व वर्रावद् शुरीय का और पुनरीका राजवाय । विसर्हे चीरम-शायमें हो उत्तरप्रीवशायके प्रत्यारों सेकर बस्तई बाराज ही वर्ड दी जिनके नारच चारायें नरत्यानाना सारच ही नदी वी किन्तु तसके पुराने न्यापितका नेपक्षीके कारण पिछेत स्तरि सही हो । तसनि मी बीयके मं बोर्ड जिल्लाकेच जिल्ला है और व किसी प्रतिद्व सन्ववारि वर्णेन्य । कार्दिरर बीर निर्वाच कार्यके नाकवी-नाम सङ्करपूर्व पूरी और विकासी को का बात बात पूर्व हो का बोनेएएएके क्यां के बारान १९४५ में १९५४ में जब बबके दोनों नुशके क्यानार्वदाके बीच प्रतम चन्त्रा रहा बनीत होता है । सलता चारस्तरिक सम्बोतिके बार्चल कर्ण-इक नामाराका बेर्फ मात्र और राजवानी शारबबुर बर्शनंड तुनीर (११९४-१९९१ है) की बाल हुए और समिव देख क्ये कोवर हुना राम्बान (१९९४-१२९७ ई.) को विकेश बनले समापूर का निहन

पुरको अपनी राजधानी बनाया ।

में दोनों ही राजे जिनधर्ममनत रहे प्रतीत होते है। १२५४ ई० में नरसिंह राजधानीके प्रसिद्ध विजय-पाश्व-जिनालयमें दर्शनार्थ गया, देव-पुजन किया, मन्दिरके पूर्ववर्ती धासनों (फ़र्मानों) को देखा, चन्हें स्वीवृत विया और कुछ और भूमिदान दिया। १२५५ ई० में अपने चपनयन सस्कारके अवसरपर भी इम पचंदशवर्षीय राजाने भगवान् विजय पादवंती पूजाके लिए दान दिये । इस राजाके गुरु बलाहकारगणके कुमुद्दे दू योगीके शिष्य और कुमुदच द्र पण्डितके गुरु माघनन्दि सिद्धान्त ये जो मारचत्रुष्टयके रचियता और मारी विद्वान् थे। १२६५ ई० में राजाने राजधानीके किल होयसल-जिनालयमें उपस्थित होकर अपने महाप्रधान सोमेय दण्ड-नायककी सहायतासे त्रिकृट-रत्नत्रम-शान्तिनाय जिनालयके सरक्षणके लिए स्वगृहको १५ ग्राम दान दिये थे । इसी उपल्दयमें वह जिनालय नरिंडह-जिनालयके नामसे भी प्रसिद्ध हुआ। १२५७ ई० में राजधानीके जैन नागरिकोंने भी द्रव्य एकत्रित करके गान्तिनायका एक नवीन मन्दिर बनवाया या और राजान उसके लिए दान दिया था। १२७१ ई० में नरसिंहके उसी सोमस्य दण्डनायकने राजधानीके निकट एक प्राचीन वमदिका पुनस्तार किया। १२८२ ई० के एक शिलालेखमें उपरोक्त मण्डलाचार्य माधनन्दिको स्पष्टतया होयसलनरेशका राजगुरु वहा है। उम वर्ष भी राजाने गुरुको दान दिया था। १२८३ ई० मे नरसिंहके माधव नामक एक अप दण्डनायकने कोप्पण तीर्यकी चनुविशति-तीथकर-चसदिमें एक नवीन जिल-प्रतिमा प्रतिष्ठित भी और अपने गुरु उन्हीं माधनन्दिनो दान दिया । इसी राजाके प्रश्रयमें मल्लिकार्जुनके पुत्र वेशिराज (१२६० ई०) ने जन्दमणिदपण नामका प्रामाणिक कन्नड व्याकरण लिखा और कुमुदेन्दु (१२७५ ई०) ने कन्नष्ट जैन-रामायणकी रचना की ।

नरमिंह तृतीयका प्रतिद्वन्द्वी रामनाम हीयमल भी जिनसनत था। उसने कोगिलमें चेन्न-पार्श्व-रामनाथ-वसदिका १२७६ ई० में निर्माण कराया वर दिनहे जिन् जनहे तानहे द तनमु देतिनूनि मुस्ता कि वा भी तिर्वादित विवासने जन जिनावसे कि वर्ष ता यान्य हारा राज्य-तम दिने करीना वासेना कार्य है अधिने बेत्न वनस्थान्योग में कार्य व्यासन क्रियं था, और रोज्युद्धि वार्य विध्यान्यों भी क्ष्में वार्या क्ष्मा क्ष्मा हान्यू कर कर्य ग्राम विध्यान हो कोई ने बाद करायों की तुम्बावादि कार्यन कार्य-हारा देतिने के करायोंने क्ष्मान्याना यात्र हीन्दे कार्य होग्य-यात्रको यात्र वोश्यानीय वी। वार्षित तुमिन्या पुर बोर व्याप्येकारी संस्ताना होन्

(१२९१-१६६३ ई.) इब बंधका अन्तिन वालेमवीन सना वाः व्याले

मैनवर्गके प्रति क्याचीन पदा क्वीन होता है। धनवा नदान्यान क्वत्रिकार्य रेतेन रामानाक अवस्त ही मेन या । १९३२ हैं में इस अनीने व्हेंडर-की कोन्युनक-कवित् मानक विन्युक्तको तिल् हो वालीहा चाराक^{र हाउड} क्या था। १३ है में धारपानी हारबनुतर न्यापुनि स्थिपन नववारीरेवर्षे बंधाविवरम क्षिमा ना । इस नवकरवर सम्बाने नहां वर्ण भिना और मूर्तिको मूर्तिको सक्ताकर स्थानित को वाँ र हमी वर्षे ^{हैं} नित्रम् रहुपनिने मानिरिकालार रहुनुन ना रहुनाचा बावका क्ल क्लि था । फिन्यु एन पासमें होससन-राज्यको सरित जिसिय होती था पर थो । १३१ ई. में समाज्योंन कारोंके देशानी शांतव बाहर मीर करामा दानोने श्रीमनक-राज्यवर जीवन बाकनन जिला और धन^{सामी} शारवपुत्रको कृता एव नश्च-सन्द किया । राजानै निनव होकर वर्गनार्ज स्तीचार कर भी और कर देने क्ला किंदु और हो बनन स्वयाद स्वर कर fent i babbe. E ff garent gurgud gbeum vierric utfet. बाक्रमण क्या और एक राज्यसा अध्य क्ष्य ही कर स्थि। अराष्ट्र इस बीर सरकायका व वेथे जाँकत बीतन स्वराज्यकी रखार्व मुख्यनामीन बक्ते-कार्य ही जीवा और इसी अस्तर्य कवार १३१६ है के क्लान्य

बारबीय इतिहास पर हरि

राज्य एव स्यदेशको सीमारक्षाका भार पुछ ऐसे व्यक्तियोको सीव गया कि जिन्होंने उसके स्वप्नको उसकी बाशाओंसे यहीं अपिक चिन्तार्ध पर दिखाया । अपने राज्य एवं यशको रक्षा अन्तिम होयसल मोरवल्लाल मले ही न कर सका किन्तु भाषी विजयनगर साम्राज्यके बीज वह ही वी गया था, इस तथ्यमें विशेष सन्देह नहीं है।

उसकी मृत्यु हो गयी। किन्तु मरनेसे पूर्व यह ऐसी व्यवस्था कर गया और



अधिक हो उठता है। उनके प्रतिद्वन्द्वी उनके स्वदेशवाधी, सजातीय, साधर्मी पहोसी राजे-महाराजे नहीं ये वरन् वे विदेशी विधर्मी क्रूर आक्रान्ता ये जो न केवल तत्कालीन भारतकी स्वतन्त्रता और धनका एक अपहरण करनेवाले राजनैतिक शत्रु ये बल्कि भारतीयोंके धर्म, सस्कृति, साचार-विचार और जीवनके भी भयानक शत्रु बने हुए ये।

इस भारत-गौरव साम्राज्यके मूल सम्यापक सगम नामक एक छोटे-से सरदारके पाँच वीर पुत्र थे। १३८५ ई० के एक जैन शिलालेलमें इन्हें यादवराजवशोद्भूत कहा है अत देगीगरिके गुएन और द्वारसमृद्रमे होयसलाँकी मौति सगमके पुत्र भी यद्वशी सन्तिय थे। सगम और उसके पत्र यद्यपि होयसलोंके अति साघारण श्रेणीके छोटे-से मामन्त और उसकी सीमान्त चौकियोंके रक्षक थे, किन्तु साथ ही वे स्वदेश भवत, स्वतन्त्रना-प्रेमी, बीर, साहसी और महत्त्वाकाक्षी भी ये। मुमलमानोंके आक्रमण न होते तो स्यात् ये गुण सूपुप्त ही रह जाते या वे कोई होयसल आदि जैसा राज्य स्थापित भी कर लेते। किन्तु देखते-देखते ही एक दशकने भीतर दक्षिण मारतको तीनों महान राज्य-शक्तियोंका अत हो गया। इन वीरोंका रक्त चवल चठा, ये सबेए हो गये और पाँचों भाई मुसलमानोंके आक्रमणकी मोपण बाढको स्तम्भित करनेके लिए जूट पडे । इसमें सन्देह नहीं कि चनका यह उपक्रम विशेष रूपसे द्वारसमूद्र और सम्भवतया वारगलके भी मुमलमानो-हारा पतन किये नानेको प्रतिक्रिया था । इन पाँचा भाइयोंने दिशण देशके विभिन्न सामन्त सरदारोंका, जो उत्तर दिशामे आनेवाला इस सवमहारक ववण्डरसे खुट्ध थे, अपने नेतृत्वमें मगठन किया और देशसे मुसलमानोंको निकाल बाहर करनेमें जुट गये। इस प्रयत्नमें मह मुसलमानोंके हायो वन्दी हुए, मुसलमान भी वना लिये गये, बिन्तु छट निकले, और फिर स्वधर्ममें दोक्षित होकर पूर्वने उत्माहसे वार्य सिद्धिमें जुट गये। किन्तु कार्य सरल न था, दिल्लीक सुलतान राश्तिदास्मे कोर स्थान-स्थानमें उनके मुसलमान मूत्रेदार अर्धस्त्रतंत्र साव

विषयनगर-माम्राज्य

अध्याग 7 🌣

विजयनगर-साम्राज्य

रियमी विवेधी भूसकमानीने प्रसंकर बाकनमाँ और निर्देशायुर्व मरमापारी-वाच चमरत बसरापनगर अविकार कर केरेक बरावत पुर-राठके वनेको देवनिरिक्ष नादनी - नारंकको कवातीको और बन्दरें हार-बमुख्ये होक्तकोनी राज्य-कवित्रकाणी कन्त कर दिया वा किन्तु वै व्यक्ति पत्र विश्वेषकर क्षत्रीक के निसासिसींकी वेशवादित और स्थातन्त्र है गर् मन्त नहीं कर बने । दोनवक-एननकी बनान्ति बीने चीनहीं नानी में कि विकास एउनके कार्य वह स्थातन्त्रानीय तरीय सम और अलावी बान सर्वारत हो पता । मन्नराजना विजननर-बाहारन पारहीन एउँ नीतिको करनुष्कृत वर्ष सनुपत तृति थी । सन्दर्शको आसीत सारा^{हाहरू} ताल वंग करण्य परिचयी पासूनव रास्पुष्ट, बतारवार्धे पासूनव सीर होसक्षक प्रमृति राज्यकोची वनिश्चितः होतो ररप्रदर्शने करणा रिश्व नगरके राज्यको काले-कालको क्रत परानगरका सूचीला कारधारिकाणी विश्व फिना । राजगीति भावन-स्थरस्या श्रीवन श्रीर सन्त्यारमें क्योंनी चौरिको चुरिकवित करने सरमाना राज्यमें प्रचवित निवित्त वर्षोंके प्रति वैद्यो हो बमर्यावता तहिन्तुता हमें क्यावकराना चरित्रन दिना होर बरेफुक्कि वाहित्व कथा सोखबीयम आदि विशेषण अंशोका विशा ग्रेक भारके बसारता एवं अरबस्पूर्वक शोराब एवं विकास निमा । निम रिपर परिशिवतिमेकि योच निवस्तारर-बालाक्यकी स्थानमा निर्माण और रिकाण हुता जनार स्थान देनेने बचके अरेबोफे कार्य और बज्ज्ज्ज्ज्या नहरूर और

प्रजामें अधिकांश भाग जैन, उनके परंचात् श्रीवैष्णव और फिर लिगायत या वीरशैंव और कुछ सद्शैव थे। किन्तु विजयनगर-नरेश प्रारम्मसे ही सिद्धान्तत सभी धर्मोंके प्रति सिह्ब्णु, समदर्शी और उदार थे। स्वय राजधानी विजयनगर (हम्पी या प्राचीन पम्पा) के वर्तमान खण्डहरोंमें वहाँके जैन-मन्दिर ही सर्वप्राचीन हैं, वे नगरके सर्व-श्रेष्ठ के द्रीय स्थानमें स्थित हैं और अनेक विज्ञ विद्वानोंके मतसे उनमें से अनेक ऐसे हैं जो वहाँ विजयनगरकी स्यापनाके पूर्व ही विद्यमान ये । इससे स्पष्ट है कि यह स्थान बहुत पहलेसे ही एक प्रसिद्ध जैन केन्द्र था। हरिहरके शासनकालमें ही १३५५ ई० में भोगराज नामक एक प्रतिष्टित राजपुरुपने रायदूर्गमें अनन्त जिनान्त्रयकी स्यापना करके अपने गुरु नन्दिसघ बलात्कारगण-सरम्यती-गच्छके अमर-कीर्तिके शिष्य माधनन्द सिद्धान्तको समर्पित किया था। इस राजाके अन्तिम वर्ष १३६५ ई० में कम्पाके जैन-गुरु मल्लिनाथको दान दिया गया था । हरिहरका पुत्र राजकुमार विरूपाक्ष कोडेयर १३६३ ई० में मालेराज प्रान्तका शासक था। उस समय उसकी राजधानी अरगमें पारवंनाय वसदि नामक एक प्राचीन जिनमन्दिरसे सम्बन्धित भूमिकी सोमाके प्रश्तपर जैनो और वैष्णवोमें विवाद हुआ। राज्यको ओरसे प्रान्तीय सभाभवनमें महाप्रधान नागन्न तथा प्रान्तके प्रमुख सामन्त सरदारों, जननेताओं और जैन एवं वैष्णव मुखियाओंके समक्ष राजकुमारने सर्व-सम्मितिमे जैनोंके पक्षको न्यायपूर्ण घोषित किया, प्राचीन शासनोंमें जो सोमाएँ निर्धारित थीं वे ही स्थिर रावी गयी और एक शिलालेखमें अकित फरवा दी गयीं। इस कालके प्रमुख जैन विद्वान् महान् वादा सिंहकीत्ति, धर्मनाथपुराणके कत्ती उभयभाषाचक्रवर्ती बाहुबलि पण्डित, गोमटुसार वृत्ति-के कर्ता केशयवणीं और धर्मभूषण भट्टारक थे। सुप्रसिद्ध ग्रन्थ खगेन्द्रमणि-दर्पणके प्रणेता मगरस प्रथम भी इसी राज्यकालमें हुए हैं।

हरिहर प्रथमके बाद उसका छोटा माई बुनकाराय प्रथम (१३६५-१३७७ ई॰ राजा हुना। इसके समयमें भी वहमनी मुल्तान मुहम्मद और

निरंपूच शामन बण्डे समें थे । एक केन्द्रिय साध-शन्तिका निर्धीय वरण हरून आसारतमा स्रोत अन सीशान्ता संबान स्रोत सन्ति-संबद कर केनके बचराम्न १६३६ है. में जूनमात नडीके बनाडे सटार आपीय हुई बानेपुर के बावने दानी नामक स्थानको इस आहरोंने बारता केना बनाय और विकासकारी तीन बाली । १३४३ ई के समाम का विधान मुद्द एव बुन्दर नवरी (विकासनार विद्यालयर का विद्यालयरी) बनकर तैया हुई और १३४६ हैं में स्थाप दिस्ताहर सारको नहीं स्थापा हुई इन शेषमें तीन बाहरोड़ी सारास्थाताहै जिस दिये वर्षे पंति मृत्यु की पूरी प्रशेष क्षांत्रों है थेव की इरिक्टर और कुरकारा के की लग वै अन सम्मर्क राजांवक स्वास्त्रके वयर क्षेत्र जाता होयुरात इयन (१९८६-१६६५ ई.) दिज्ञकार राज्यका प्रयम अविधित नरेय हुआ। रिकाम्मरको स्थालाने प्रेरित होकर सक्ते ही वर्रे (१३४७ (में) रिन्मीके नुकतानके इतन नामक एक गुर्वी बरधारी, बी प्रारम्बरे बन् बाबके किया बाह्याचरा केरफ रहा बळावा बाटा के बीमा देवके वर्त्तये बारने योगताबार (देवनिर्देश) पर अधिकार करके और पुरूरवंको राजवानी बरावर सहनेसे सामग्रीवीय समी। स्व बकार बारम्बके हो विजनानामा ब्राह्मियों और निपट वन गर बुनपरानी शाम्य हवा बीर अलाग्ये से बक्रावियों तक सर्वे परानर बनतेशना पूर नंदर्व हो। तन्त्रानीय श्रीवय मारतका स्पर्नतिक क्षीत्राम है। इतिहर प्रवरका प्रतिहत्ती न्यून्वर प्रवर्ग वा, रोगीके बीच वर्षक बुद्ध हुए जिनमें नुषक्तानीको नुबंबताके कारन काको व्यक्तियोग बंशर दुशः । नदाधन इधिहरता प्रथमकती वर्ष स्थानिकार (प्रचान केपार्टी) मैंन बीर बैच या बैक्स का की प्रचार, क्राया बीर कर इन तीनों प्रतिकारि कुछ का बीर एनवेरने रामा इध्यि^{रहा}

हरिक्द और बक्के वंश्वजीका राज्यकर्त कासम्बद्ध दिन्तुपर्व व्य ।

गा वह राजद्रोहो, सपद्रोद्दी और समुदायद्रोही समझा जायेगा। जैन
र वैष्णव दोनो सम्प्रदायोने मिलकर जैन सेठ युमुियसेट्टोको अपना
मूहिक संघनायक बनाया और उपरोक्त राजाजाको राज्यकी समस्त
अदियोम अकित करा दिया। युक्तारायका यह महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक
। जिय उसके यदाबोकी धार्मिक नीतिका आधार बना। दोनो ही धर्मीके
नुयायियोंको धर्म-स्वानन्त्र्य और राज्यसरक्षण समान रूपसे प्राप्त हुआ,
। य ही उनमें परस्पर सद्भाव उर्यन्न किया गया।

बुषकाराय प्रयमका पुत्र और उत्तराधिकारी हरिहर द्वितीय (१३७७-(४०४ ई०) एक प्रतापी सम्राट्था । उसका प्रविद्वन्द्वी बहमनी सुलतान **भी शान्तिप्रिय या अत मुसलमानोको ओरसे उसे नि**ध्विन्तता रही धौर उसने इससे लाभ उठाकर सुदूर दक्षिणके सम्पूर्ण समिल देशपर, त्रिचना-पटली और काचीपर भी अधिकार कर लिया । शासन-अयवस्था और अधिक सुचार करके उसने अपने साम्राज्यका सगठन किया और यिविघ उपा-िपयेंसि विभूपित सम्राट् पद घारण किया । इसके प्रमुख मन्त्रियो और सेनापितयोंमें उसके पूर्वजोंके महाप्रधान धैनका पुत्र दण्डेश इरुग, जो क्षितीश और घरणीश भी कहलाता था, और उसके भाई मगप्प एव युवनन थे। दण्हेश इरुगने जो भारो धनुर्धर भी था, १३८५ ई० में विजय• नगरमें कृत्युनाय जिनेन्द्रका सुन्दर पायाण-निमित मन्दिर बनवाया था। मन्दिरके सम्मुख दीपस्तम्मपर इस अभिप्रायका लेख उत्कीर्ण है। कालान्तर-में यह मन्दिर गाणिगित्ति-वसदि (तेलिनका मन्दिर) नामसे प्रसिद्ध हवा, सम्भव है पीछे किसी समय किसी तेलिनने इसका जीर्णोद्धार कराया हो। इरुगके गुरु आचार्य सिंहनन्दि थे। १३६७ ई० में भी इरुगने एक मन्दिर चेलुमल्ल्रमें बनवाया था। उसका वड़ा भाई मगप्प भी जैनागमका परम भक्त और जिन-धर्मका स्तम्म कहुलाता था। इकाका नामधारी क्षोर मसीजा तथा मगप्पका पुत्र दण्डाधिनायकेश इरुगप्प अपने पूर्वजोसे मीर परचीय पनवी बर्गाचर्या थी । वृत्ती और व्यवसी गाउँके सम्पर्गी बार्च प्रधार कुलाराचा क्यांकाच था । १३ ४ व वन सामे पीनके निवरंगी बचाए नाइन्लंब सरवारके साना राजरूत जेना वा इन राजाचा नारा बोदन बदर्शनहादे साथ भीषभ सुद्ध करते बीरा । इर्न Bur ant uties de dit traffentag du gut das ding? कारेग्र करन, क्ष्यानक अंव और क्ष्यानक मुख्य ही अवनी में । मैंब बारने बाहब कारणा बचारणा विद्वारा बीट बर्बनुनीहिक बीर्टिक विद afes et : aut ge eres 111 f Res fantfer anter यान दिशा था १३६८ हैं में नहाराज बुल्हा प्रश्ने बस्तुम कुड सहिन बान नाप्त्रमांतक बनाना क्राप्तित हुई । राज्यके बनाव नाहुनी (जिली) के बारों (बेंगा) ने बनके क्षी प्रश्नी (बांनेस्स्सी)नास किसे परे मनाबीरा प्रांतकार करानेके तिव शामानी केवाने एक प्रानेशनना वेद्या चताचे महारहा नाइबाँके बक्ता, उनके बानावी नवबाँ, पुरीहिती पुनि बाजोंडी बचा बरने प्रमुख कारनीति क्यम करते बैनिवीति हात बैपनोंते हापने दिया और बोलवा को कि हमारे राज्यने बैनरर्राव और बैक्सरप्रांत-के बीच रिसी प्रचारका केर बता है । जैनहर्यन पूर्वक्त बंबब्द्यायण बीर रमवरा व्यवसारा है। बाले-बारा बैनरर्पकरी दुर्बन या वृद्धि प्राच वैग्यरम्य माने ही बनकी हाति वा पूर्वह बनहें । वेब बीर वैमार एक है करके बीच कोई अन्तर करना ही ही पाहिए। अववहेनतीय टीमें

की राजांचे नेप्यावन करती औरते हैं [नेप्यान्यास्त्र निवृत्त करती । राजके बेदी वह 'इम जॉट माने दिवारों एवं वार्यके क्या करती वर्षित । राज्योंके देशके मंदिरात्म प्रमान करतीन विकासीरार्धित निर्मात् पूर्ण-साम्यान सामिते निर्माण सामका । कारण नामक एक प्रमान देश जाने पुनर्शित करते और कार करवेचा भार क्षीर करते भी हमाने

क्यके बलसाविकारी। सुप्राहितके बाद कुद हुए । युक्तसम्बद्धां में न्यान प्रयास क्षेत्र सम्प्रवेतार्थित क्षेत्रमा क्षराविकालक ही का कर्मेण, व्यानिक मो इसी कालमें हुए।

हरितर द्वितीयके परचात् उसका उपेष्ठ पुत्र युवराराय द्वितीय (१४०४-६ ६०) और तदम तर द्वितीय पुत्र दवराय प्रयम (१४०६-१० ६०) और फिर देवरायका पुत्र विजय या वीरियंजय (१४१०-१९ ६०) राजा हुए। इन राजाओं के समयम बहमनी मुलतानों रे गाय बरायर युद्ध चलते रहे। १४०६ ६० में सो बहमनी फिरोजने विजयमागपर ही आक्रमण किया। चार मास तक वर राजधानीया पेरा हाले पढ़ा रहा और एक बार नगरमें भी पुत्त आया, किन्तु निकाल बाहर किया गया। अन्तत मन्चि हो गयी और वह बायस और गया। यहा जाता है कि देवराय प्रथमने अपनी क्याका विवाह उसके माय करनेका चचन दे दिया था, किन्तु मुमलमान बादणाहका देवरायने मम्मान नहीं किया, इसीसे धन्नुताका अन्त न हुआ।

षुष्ठ इतिहासकारोने इस कालमें विजयनगर राज्यमें दिलाणमुजा और वाममुजा नामक दो जातियोंका उल्लेख किया है और उन्हें राज्यके दो प्रधान वर्ग वताये हैं। धस्तुतः ये जातियों या वर्ग 'मन्य' और 'भन्त' धार्ट्रोसे मूचित जैन और वैण्णव ही थे जिहें विजयनगर दे राजागण अपनी दिल्ला और बाम भुजाएँ समझते और मानते थे। राज्यको अधिकांटा जनता एवं सम्भ्रान्त जन इन्हों दो समक्रम और प्राय समसस्यक वर्गोमें बेंटे हुए थे। हरिहर और बुक्काको आदर्श नीतिका प्रभाव उनके वहाजों- पर भी हुआ, फलम्बस्य इस वराके राजे, रानियों, राजयुमार और अय व्यक्तित तथा सामन्त सरदार राजकर्मचारो और प्रजाजन सभीने जिनधर्मको उम्भन्त प्रथम दिया। राजा लोग व्यक्तिगत स्पत्ते अधिकत्तर शिविवस्पाद्यान के उपामक थे किन्तु राज्यधर्म जैन और वैद्याय दोनो हो। धर्म थे, और साम हो विभिन्न धर्मोमें परस्पर सद्भाव और सहयोग था। १३९७ ई० के एक शिलालेखमें सेनापति इक्पके साथो गुण्ड दण्डनायने लिखाया था कि 'जिसकी स्पासना श्रेष लोग शिवने रूपमें, बेदान्ती सह्योंके, बौद्ध बुद्धके,

बी बाने बढ़ गाए । बाँखा दियोग वे बयवने ही वह मान नेपारे निहुण क्षेत्रका था। १३८१ ई. में पर तर शारते दक्षिया प्राध्ये शास्त्र शबदुवान बृबदाराज शिक्षदवा दरावराज का अबदे विषयमुत्र विवेद केंग्रेस्प्याच बर्बाट बरवापी थी। १३८७ ई. में बच्चे बावे पूर्व पूर्णित वर्ष के कारेग्से प्रका बर्गाये सामग्र ह । मुन्तर जारा वरराया । वर बर पुरुष कांबरूना (दानी वर) की का १९९४ हैं से पररे क्य किराम स्रोत ा वानुष्ट बॉच बननारा वा व बेन्द्रण्या की वर्ष गारी निराम का बोर करने 'मारानीप्याहर' नामक बोच कानदी एपरा की wit bie a aufre glat fichen ummer net चितारी वा प को बन्ता । नाम कालबी बाक्षी वही वर्णायाँ है दमका जाई वैकर की सामका राजनावर का, बान ही अमादनी और वर्गमान्द्री वर्गवर कारेवाला कहा कारा बां। १४० है में शब्दाना करवोत्री बन्द्राम कावी - कृतिराज भी तरम बैन वा, यह - माहकीतिकार ब्रिय वा बोर बेन्स्य हैं बड़े जिर बनने सन रिस या । राज्ये सीह बैमरीबीरे सबल्दे होत हव माज मी मर्वप्रमान का अनीवरा मारी इन तीर्वेदी बालाओं बानी में। ही १८ ई में बार प्रामाने दानाड राज्यके सैक-मास्त्य से जो काकि अध्यक्त बादकोति वर्तवपरेतके किया

 २ ई० में देवशयके एक उपराजे कार्कल नरेश भैरवरायके पुत्र एवं उत्तराधिकारी धीरपाण्डघने कार्कलमें जो लोकविश्रुत वाहविलकी वत्तृग मृति प्रतिष्टित करायी थी **उसके समारोहमें महाराज देवराय** स्त्रय सिम्मलित हुए थे। जैनाचार्य नेमिचन्द्रने राजसभामें अन्य विद्वानोंके साथ शास्त्रार्ध करके इस राजासे विजय-पत्र प्राप्त किया था । .इस राजाके जैन होनेमें प्राय कोई सन्देह नहीं है, अपने राज्यके प्रथम वर्ष (१४२० ई०) में ही इसने वेळगोलके गोमट्रस्वामीको पूजाके लिए एक गाँव दिया था और वपने जैन महाप्रधान वैचप दण्डनायकको, जो सेनापति इरुगपका बडा भाई था, उसका उत्तरदायित्व सींपा था । ये दोनों माई राजा हरिहर द्वितीयके समयसे ही राज्यके महत्त्वपूर्ण स्तम्म रहते आये थे। १४२२ ई० में महा-सेना शत इरुगपने भी बेलगोलके गोम्मटेशकी पूजाके लिए गुरु श्रुतमनिके उपदेशसे एक गाँव प्रदान किया था। १४४२ ई० में इरुगप गोआ प्रान्त-का शासक बना दिया गया था। इस प्रकार इस नीर, विद्वान, विविध विषय पट् क्रबल प्रशासक एव प्रसिद्ध सेनानीने लगभग ६० वर्ष पर्यन्त राज्यको सेवा की । राज्यका एक अन्य तत्कालीन सेवक महाप्रधान गीप चमुप या गोप महाप्रभु भी परम जैन था। १४०८ ई० के पूर्वसे ही वह राज्यका एक उच्च पदाधिकारी था। उसके पूर्वज भी राज्यमें उच्च पदो-पर रहे थे। गोपने स्वगुरुके उपदेशस कई मन्दिर वनवाये, दान दिये और अत समयमें घर-वार छोड त्यागी वनकर धर्मसाधन किया था। उसके अभिलेखोमें उसका उत्कट देश प्रेम भी स्पष्ट क्षलकता है। मसनहल्लिका कम्पन गौड एक अन्य तत्कालीन उल्लेखनीय जैन सामन्त था । १४२४ ई० में उसने स्यगुरु पण्डितदेवको गोम्मट पूजाके लिए दान दिया था। इस राज्यकालके अन्य अनेक अभिलेख उस कालमें जैनधर्मकी प्रभावना. राज्यात्रम एवं प्रतिष्ठित पुरुष स्त्रियों तथा जनताकी जिनसमित और जैनगुरुऑके लोकोपकारी कार्योंके उल्लेखोंसे मरे परे हैं। जैन विदानीम

तलक आदि कई अन्य जैन वसिंदयोको भी भूमिदान दिये थे। १४३१-

वैराजिक वर्ताके जिन सामगढे अनुवाबी अर्जुके और मीसोबक कमेंद्रे माने बनते हैं के फेसबरेन मुन्तारी मनीवासता पूरी करें। देश की में बीरबंद बन्छे बन्धि विहान बन्नान-बाबवेरवरने जी सिर्विदात सारी मन्त्रा व वनानीतो दीववर्गके काय-नाव बैतवर्ग होत्रका नात्त्री बताना था । १५वी यानीके जो सनेक सजिवेशीने विशिक्ष वसीके अनुरामितीनाय विनेत्र विक विरामुक्ते एक बाद स्मृति इस वालमें वर्षवर्व-वय-बारकी परिचारक है। राजा जोत जबन वर्षानुजयक श्रेरब्रद अपना 'खरेंपर-सरदाक वहनानेने बोरव बान्छ थे। दश्य ब्यास्ट्राट देवरान प्रवस्ती नदारानी चीवारेची बैतवर्वती वरत्र जला वो । ध्यवप्रतेनदीनके बाध्यीप पश्चितापार्व समय पुत्र से। १४१ हैं में इन बहारानीने इन होर्चकी संगति वर्षात (निर्माणकाल १३२५ है) में व्यक्तियानकी प्रतिया प्रतिक्षित करायी नी और राम दिया ना । क्वन राजाविराज नवनेत्वर वेपराव प्रका नैन्य-यान वर्षमान सुनिक्षे वर्णातान और सद्दाम् श्यामताना सर्वभूवम मुत्ती भरत पुत्रका था । वर्ष तासम्बोध प्रिमानेशोर्व इच अरेस-हारा वैश्ववंदे प्रवि कप्तर रहने और बैननुष्यीका बाहर करनेहे उस्तेल हैं। १४ ७ १४०% रेशे. रेश्रंक मारि क्योंके समेक शिवामेख वार्यरेक्नोस बीवेरर वनेष्ठ राज्युवर्गे एवं राज्यज्ञान्य प्रतिष्ठित व्यक्तियोशास्य क्रिये क्ले वार्तिष्ठ

हणी एवं विनोध नार्येश कर्मन कर्मा है। विभिन्न पुर मीर क्यानिकारी वेश्तर दिखेन (१४१९ १४९६ में नार्ये पुरमेर क्यानिकारी वेश्तर मिल्य अनुसान विचा। १४९६ में नार्ये पुरमेर वेश्वर नार्य नाय नहींगे नार्य-विमान- तिलक आदि कई अन्य जैन वसदियोको भी भूमिदान दिये थे। १४३१-३२ ई० में देवशापके एक उपराजे कार्कल नरेश मैरवरायके पुत्र एव चत्तराविकारी बीरपाण्डयने कार्कलमें जो लोकविश्रुत वाहुविलकी चत्तृग मृति प्रतिष्टित करायी थी उसके समारोहमें महाराज देवराय स्त्रय सम्मिलत हुए थे। जैनाचार्य नेमिचन्द्रने राजसभामें अन्य विद्वानोंके साय शास्त्रार्थ करके इस राजासे विजय-पत्र प्राप्त किया था। इस राजाके जैन होनेमें प्राय कोई सन्देह नहीं है, अपने राज्यके प्रथम वर्ष (१४२० ई०) में हो इसने बेछगीलके गोमट्रस्वामीको पूजाके लिए एक गाँव दिया या और अपने जैन महाप्रधान वैचप दण्डनायकको, जो सेनापति इरुगपका वटा माई था. उसका उत्तरदायित्व सींपा था । ये दोनों माई राजा हरिहर दिलीयके समयसे ही राज्यके महत्त्वपूर्ण स्तम्म रहते आये थे। १४२२ ई० में महा-सेना रित इहगपने भी वेलगोलके गोम्मटेशकी पूजाके लिए गुरु श्रुतमृनिके उपदेशसे एक गाँव प्रदान किया था । १४४२ ई० में इरुगप गोला प्रान्त-का शासक वना दिया गया था। इस प्रकार इस वीर, विद्वान्, विविध विषय पटु क्राक प्रशासक एवं प्रसिद्ध सेनानीने लामग ६० वर्ष पर्यन्त राज्यको सेत्रा को । राज्यका एक अन्य तत्कालीन सेवक महाप्रधान गोप चमूप या गोप महाप्रमु भी परम जैन था। १४०८ ई० के पूर्वसे ही वह राज्यका एक उच्च पदाधिकारी था। उसके पूर्वज भी राज्यमें उच्च पदीं-पर रहे थे। गोपने स्वगुरुके उपदेशस कई मन्दिर बनवाये, दान दिये और अन्त समयमें घर-वार छोड त्यागी वनकर घर्मछाघन किया था। उसके अभिलेखोंमें उसका उत्कट देश प्रेम भी स्पष्ट झलकता है। मसनहत्त्विका कम्पन गोड एक अप्य तत्कालीन उल्लेखनीय जैन सामन्त था। १४२४ ई० में उसने स्त्रगुरु पण्डितदेवकी गोम्मट पुजाके लिए दान दिया था। इस राज्यकालके अय अनेक अभिलेख उस कालमें जैनधर्मकी प्रभावना. राज्याश्रय एव प्रतिष्ठित पुरुप-स्त्रियों तथा जनताकी जिनमसित और जैनगुरुओंके लोकोपकारी कार्यीके उल्लेखोंसे भरे पर हैं। जैन विद्वानोंमें

जीवनारानिति वार्ची नावार (१४२४ ई) कारणाल्याय वार्क्स वर्षे अनुराधे विकार्ण्य और वार्मीवार्ड्स वार्ची करावार्डीयि (१४१६ है) वेरिक्सप्रिके वार्ची विकार्ध (१४५४ ई) अग्रास्त्रपृथ्वीर्के बार्ची दिवस बतानुषारी विधायकांत्रि आर्थि क्रम्प्रेताल्यों के विकार्यक में बारणिया वार्षी आप्रकारीय कीर्याद्वार्थ अग्रियनारान्त्रीर कीर्याद्वार्थ है वर्षी वार्मा गीरणाल्य मीत्र-वेराराक्ष साधिक है। एत्रके क्रम्प्रेस वर्षी वर्षात्रपृथ्वीर वार्म्स वर्षी क्रम्मु करान्त्र वर्षात्रिक वर्षीया बार्म अमित्रपार वृद्ध बर्चारिक वा ब्रह्माच्यांच्या कीर्याद्वार्थ कार्म्स्य कर्मा कर्मा वर्षी वर्षात्र के अप्रकार कर्मा कर्मा वर्षी वर्षीय क्रम्प्रेस वर्षीयों क्रम्प्येस वर्षीय क्रम्प्येस वर्पीय क्रम्प्येस वर्षीय क्रम्प्येस वर्षीय क्रम्प्येस वर्षीय क्रम्प्य क्रम्प्य वर्षीय क्रम्प्य क्रम्प्य क्रम्प्य वर्णीय क्रम्प्य क्रम्य क्रम्प्य क्र

रियान वैधीनपर क्रीयांची विशेष बहुवरी स्थानबंध या मुंबंध विधाप था। दिवा दिन सर्थाव सद्याप स्थापि १ ट्रिन्यू स्थाप था। दिवा दिन सर्था दिवा विधाप स्थापित है । विधाप स्थापित दिवा । वर्णने दिन स्थाप प्रतिकृत दिवा । वर्णने दिन स्थाप प्रतिकृत दिवा । वर्णने दिन स्थाप दिवा दिवा या स्थापित दिवा । वर्णने दिवा । कर्णने दिवा । कर्णने द्वार पर्थे । एक्पने द्वार पर्थे । एक्पने दिवा । कर्णने द्वार पर्थे । एक्पने द्वार पर्थे । एक्पने व्याप दिवा दिवा है । करा वर्णने व्याप दिवा है । करा वर्णने व्याप दिवा है । करा वर्णने व्याप दिवा है । करा वर्णने वर्णने

विस्तार या। इटलोबाधी पूर्यटक निकोलो कोण्टो और ईरानी राजदूत बज्दुरेजाक इसीके सामन-कालमें विजयनगर आये और उन्होंने राज्य एवं राजधानीके प्रताप, सौदर्य एवं वैभवनी पूरि-मूरि प्रभंसा की है।

देवरायके उपरान्त मगमवदाकी अवनित होने लगी। उसके पुत्र एव उत्तराधिकारी मिल्लिकार्जुन इम्महिदेवराय (१८४७-६७ ६०) के ममवमें १४५५ ई० से सालुव नर्रामह राज्यका प्रधानमन्त्री हो गया । इस्मिंड-देवरायके उपरान्त विरूपाक्षराय (१४६७-७८ ६०) और फिर पदियाराय (१४७९-८६ ई०) राजा हुए। ये शासक निर्वेष्ठ ये और ये बाहरसे वहमनियोंके आक्रमणों तथा भीतर गृहवलह एव पर्यन्योंसे ग्रस्त रहे। अतएव १४८६ ई० में मन्त्री नर्रांसह सालूबन जो अत्यन्त श्रामिनशाली हो गया या और उस समय भन्द्रगिरिका प्राय स्त्रतन्त्र शासक भी था. अन्तिम नरेश पदियारायको गद्दीसे उतार दिया और स्वयं विजयनगरका राजा वन वैठा । नरसिंह सालुव (१४८६-९२ ई०) ने योडेसे समयमें ही दक्षिणके सम्पूर्ण तिमल देशकी फिर विजय करके राज्यकी प्रतिप्राका चढार किया और अपने सुशासनसे साम्राज्यकी जनताके हृदयपर ऐसी छाप वैठा दी कि युरोपवासियोंने बहुचा विजयनगर राज्यका 'नरसिहका राज्य बहुकर उल्लेख किया। मुसलमानोंके साथ भी उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। इस कालमें बहमनी राज्यका मन्त्री महमूदगर्वी अत्यन्त योग्य था किन्तु १४८२ ई० में पड्यन्त्र-द्वारा उसका वस हुआ और उसके मरनेके घोडे वर्ष बाद ही धहमनी राज्य पाँच टुकड़ोंमें विभक्त हो गया । इनमें से बीआपुरके मुलतान ही विजयनगर राज्यके निकट पढोसी और आगेसे उमके प्रधान शत्रु हुए। शत्रु राज्यको इस क्रान्तिके कारण नरसिंहको अपनी स्थिति मुदुढ़ करने और धक्ति बढ़ानेका अच्छा अवसर मिल गया । उसके पुत्र और उत्तराधिकारी इम्मिड नरसिंह (१४९२-१५०५ ई०) ने भी प्राय शाति-पृत्रिक राज्य किया, किन्तु उसके समयमें अरसनायक नामक एक मुलुव सामन्त चिक्तिशाली हो उटा और गारका केमानि कर पान । १ - ६ हैं की शार्तक अर्गारको अगार पाने निकासकार पूर्व हुएते अर्गत् कान्य रेक्का की अगा व । निरा

ता है वे सम्मद मानदे क्षत्र कामद क्षत्रेवर होते हैं। सम्मद द सावा वा के दे से मानदे क्षत्रेवर होते क्षत्र वर्ष सम्मद्र मानदे सावा वा के दे से मानदे क्षत्रेवर होते हैं।

Lands if gan to white botten on that if it about committee density place of the date of desire from the क क्वन्ति अर्थन्ति पृष्ठ । अनुन क्लाप्ट्री के वर man and altitude to mind to the transfer, and against my and of evertees on sites to the the prime or such have been put on the first बनार के अपने हैं है के क्षेत्र क्षावर कारण कि प्रार्थित water a transf fit homes & dens & almain extensit traver 1615 mines, 8, 31 Spanis just er a die er bentemmentellefte mint unkerte dast mydre ferenters an magin, segulati and the graph of the graph of the control men is sel davigle, to an exert eres care se atest fer eer a mit acceptant afreien fie titere timiter ereenem uter 1 mit. ang unt & remeiter meil & greit fet. ... I mer if ettfet का है शाम के ब्राप्त कान्त रें पर बा । राजनी तब प्रथम बावना आरवे क्षा पर देशन क्षमानाती सारम्याने को पुत्र बेलवारिय हैं नार्वेश एर aprepa ecrem tar erme fejur bub um ubr fere unt a all et. I ben fe fement augen afer en abwat-

wint and amos (tage () www. aret't and are

सगीतपुर नरेश सगमके आश्रित कोटीक्वर (१५०० ई०), घर्मशर्मा-म्युदय-टीकाके कर्त्ता यश कोत्ति, नरपिंगलीके कर्त्ता शुभचन्द्र आदि इस कालके अन्य जैन विद्वान् और ग्रन्थकार थे।

१५०५ ई० में अपने स्वामीकी हत्या करके अरसनायक राजा हुआ था कित् उसके इस क़त्यसे राज्यमे एक व्यापक विद्रोह भडक उठा और एक वर्षके भीतर ही वीर नरसिंह भुजवल (१५०६-९ ई०) राजा हुआ। तदुपरान्त कृष्ण देवराय (१५०९-३० ई०) विजयनगरके सिंहासनपर आरूढ़ हुआ । विजयनगरके नरेशोंमें यह सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रतापी, शक्ति-शाली और महानृ था । इसके राज्यकालमें विजयनगर साम्राज्य अपने चरमोत्कर्षको प्राप्त हुआ। राज्यामिषेकके चपरान्त लगमग डेढ वर्ष तक राजाने राजधानोमें ही रहकर अपनी स्थिति सुदृढ की, अपने कर्त्तव्यों, उत्तरदायित्व और समस्याओंका सूक्ष्म अध्ययन किया तथा राज्यको अभिवृद्धिकी योजनाएँ वनायों। तदनन्तर निश्चित कार्य-क्रमके अनुसार उसने कौशलसे अपनी विजय-यात्रा प्रारम्म की और थोडे हो समयमें नेल्लोर जिलेके सुदृढ़ चदयगिरि दुर्गको हस्तगत कर लिया और फिर अय अनेक दुर्ग विजय किये। उसका सर्द-प्रसिद्ध युद्ध १५२० ई० का रायपूरका युद्ध था जिसमें उसने बीजापुरके सुलतान इस्माइल बादिलशाहके कार बढ़ी शानदार विजय प्राप्त की। उसने वह दुर्ग तो छोना ही, स्वय वीजापुरपर भी अधिकार कर लिया। इस युद्धमें उसके सोलह हजार सैनिक काम आये। उसने बहमनियोंको प्राचीन राजधानी कुल्बर्गाको भी भूमिसात् कर दिया । उसके सैनिकोंने बीजापुरको लूटा बोर क्षत विक्षत किया । किन्तु सम्राट् कृष्णराय एक उदार चेता शुरवीर नरेश था। उसने अपनी विजयका भी मानवता एय दयाके साय उपयोग किया। उसने शत्रुकी प्रजाको नहीं सताया, निहत्त्यो और आत्म समर्पण करनेवाले शत्रू सैनिकोको भी अभय दिया, मुसलमानो-जैसी क्रूग्ता और वर्वरताका उसने किसी अशमें भी प्रदर्शन नहीं किया। पुतगाली इतिहास-

बार बृद्धिने कुम्परेपके ६व मह रिवय और नावागया अधि देशी बाग्य पर्यत रिवा है

र २२ दे व नुपतानी प्राविती शासने इच शामकी प्रविध प्रशास बीर को करी को न्यूरि बर्शका है। अपने निवा है कि -- रव निवा को राज्यात्राकः अस्यात्राचित्रक आदि प्रशासन केवल हवीचिए गरी है कि यह जारबंध लक्षा नरेकाने सांचत शांदरवाची मीर वैदर-कारब है बनवी मेश अनुसाहै अवदा शास्त्रविशाह समाचे बना वर्तन वर्गावर (रहाम है वर्गा वरेग्र जरे जाना प्रविचीर गारते हैं और बढ़ पन नवन अधिक बन्दानो है बरमू दल कारण औ है कि बढ़ दल्ले बाप-त मृत्यार, बरारकता और बरनुवन्ताना है, एवं बहुत्त् बहार व बनी रण प्रवर्ष हैं . शिक्ष सार्थ सेरेश्व प्रशासकारोंने की प्रव गुरहे र्पारका बरधाना को है। एक बाब प्रीमानकारके सम्मेन-'इन राजी-को वर्धनक वर्ग समझीता। भी समन्त्रविष्ठ की । बचना न्यतिहरू मुदाप बैच्यव बक्ती बोर होते हुए की वह बर बारतीय बचीता बचान करने बारर करता या । वर्तित सबुधी और विश्वित प्रदेशीकी अनताने नान रवानून करार अरुहार और वरदेके बुद्ध नरावनने वर्ष अनु, दिन्द रसाधा बीर बारण बरराएँ बनाया दिव बना रिकामा र विदेशी राजपुत्रो इव १२१९) हे । सारत-सम्बद्धा इब अपना प्रवास्थाओं स्थितित्त्व, nen ern fenn urer nit unverger und afen er umb बीवनके बहिताबढ थे । बाहित्वजीव विद्यापीडे बादर वर्वपरित मीर त्रज्ञानान्यान्तरे यह बहिनीय या । देशकरी मुख्यी और वार्यनींको स्व बाल्योरने बनार यन बाबने दिया था । इन प्रभार इतिहासके नुसंकी क्रमुरस्ता करनेरावा वह ब्रह्मा रहित भारतके वरेगीयै वर्षस्मा वर्षः।

कनुराना करणाया यह बाता बांबा आरक्ष वर्षाया बान्यून वर्षा सैनवन मी इच नरेकरी द्वाराह्य वर्ष महिनकार्य मानवे सेंग नहीं रह करणा या बतारे दृष्टि सारके कर्ष वर्ष करने में १९६६ है वे कक्षे रिक्ताहर हिक्के स्थित वैभोजनार-वर्षारों से बाता में किये थे। १५१९ ई० में फिर उसी मन्दिसको और दान दिया था। १५२८ ई० में वेलारी जिलेको एक अन्य वसदिको प्रभूत दान दिया था और शिलालेख अंकित कराया था, उसने मृडबिद्रीकी गुरु-वसदिको मी स्यायो वृत्ति दो घी। १५३० ई० के एक जैन-शिला-लेखमें स्याद्वादमत और जिनेन्द्रके साथ-साथ आदि वराह और शम्मुको नमस्कार करना इस नरेश-द्वारा राज्यकी परम्परा नीतिके अनुसरणका परिचायक है। १५०९ ई० में उसके सामन्त चगाल्व नरेशके -राजमन्त्रो चेन्न-योम्मरसने बेलगोलपर एक सुन्दर मण्डप वनवाया था। इसो कालमें चगाल्य-नरेशका सुप्रसिद्ध सेनापति मंगरस था। वह बडा वीर और पराक्रमो थातया अपने पिता महाप्रमु विजय-पालकी ही मौति परम जैन था, साथ ही विद्वान् और कवि मी था। चमने सम्राट्के कई युद्धोमें घीरता दिखायी थी, कई जिनमिदर और सरोवर निर्माण कराये थे सथा जयन्पकाव्य, प्रभजन-चरित, नेमिजिनेशमगति, सम्यक्त्यकौमुदी (१५०९ ई०), सूपशास्त्र आदि प्रयोको कन्नडोमें रचना करके कन्नड साहित्यमें अपना नाम अमर किया था। कृष्णदेवके सामन्त संगोतपुरके सालुव-नरेश भी बढे जिनभक्त थे, इसो प्रकार काकलके भैररस-नरेश थे। एक अन्य महिला सामन्त एव प्रान्तीय शासक काललदेवी (१५३० ई०) भी वटी जिनसमत था। १५१७ ई० में चामराज नगरके शासक वीरय्य नायकने वहाँ एक जिनमन्दिर यनवाकर दान दिया था। गैरुसप्पेके ओडेयर शासक भी परम जैन थे, १५२३ ई० में इन्होंने कई मन्दिर चनवाये और दान दिये। जैनगुरु वादी विद्यान द इस कालमें सर्वे प्रसिद्ध थे। महाराज कृष्णदेवकी राजसमामें विभिन्न दर्शनो एव मतोक विद्वानोंके साथ कई बार शास्त्रार्थ करके वे सम्रार-प्रसिद्ध हो गये थे। महाराज स्वय उनका धटा आदर करते थे। अनेक राज-समाओमें इस गुरुने बाद विजय की थी। इसं राज्यकालके प्रमिद्ध कन्नही जैन ग्रायकारोंमें भारत, शाग्दाविलास,

र्कमस्वरत्वातः भेरः वैद्य-धारपकं नदाः बालः चलानुपरित्ये वर्षा योग्यः करमोवरं नदाः बायरत्वात्वारं बलोक्योनः है निवृत्ति प्रमा-सन्ते वाहित्यं निर्दानं हिन्दाः । इतः चिरस्तरतीतं नदान् वीयर्थे वाहतः बायने वाहवादीतं जानतीतं नोल्हीत्योः बर्वहोतूमी बड्डी हूर्वं ।

हार्यालो नृष्टे बारान्य बनाः वर्षे बच्छात्व (१६१०-४६)

दे) प्रमाहमा वर दूरक वरीर बारार वर्षे बच्छात्व वर्षे वार्षास्य वर्षे वर्षे वर्षे हुए क्रिक्टे बाराव्य वर्षे वर्षे वर्षे हुए क्रिक्टे बाराव्य वर्षे वर्षे

प्रसाद्य इस्तरेष्ठं यूरीम रुपी हैन्सप्त स्वाप्त्य प्रमुख्य दुव या सि स्वाप्त स्वाप्त्य प्रत से प्रत्य के स्वाप्त्य या। तर पू करे-की-स्वाप्त्रिक प्रत्य कर से प्रत्य १९ में हैं प्रत्यावनी स्वाप्त्य की पोक्नुमार्क पुरालांकि यार प्रत सीच की है होनी निकार सीम्प्राप्त स्वाप्त पर्दे, हिन्यु पेक्युमंत्र गुरीमा क्ली क्षण्य हिन्दे प्रति की सी निकाय बीट स्वाप्त्यस्य रामा बोक दिया। निकारपारी केली सीम्प्रप्त पानमें किर्माल्य क्लाइ की। हम्म्यं प्रत्या कर्म स्वाप्ति कृत्यस्य पुरालांकि कृत्यस्य हो। हम्म्यं प्रप्ता कर्म स्वाप्ति कृत्यस्य पुरालांकि कृत्य प्रता प्रता कर्म प्रमाणिक प्रद प्रति क्षण्य कर्मा से प्रता प्रया प्रता प्रति की पानींकि प्रद प्रीप्त की स्वाप्त कर्म से प्रयास क्षण प्रता प्रता कर्म रे प्रता कि क्षण्य पुरी प्रता कार्य से प्रतास्त्राप्ता कर्म पर है

चन्छ) के द्वारने बनी क्वी ।

राज्याको तदय जायेंगे। १५६४ ई० में यह समझौता पनका हुआ। **चेवल बरारका मुलतान इसमें सम्मिलित नहीं हुआ। उसी वर्षके** बन्तमें बहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदरके मुलतान अपनी सेनाओं के साथ विजयनगरको और चल पहे, और जनवरो १५६५ ई० में कृष्णा नदीके उत्तरमें बीजापुरकी हदमें हो स्थित तालिकोटा नगरमे से सब एकत्रित हुए । विजयनगरवाले आत्म-विस्वस्त और अमावधान ये । वे समझते ये कि मसलमान उनका कमो कुछ न विगाड सके. अब भी कुछ न कर मर्केंगे। राजघानी श्रीर राज्यमें सब कार्य पूर्ववत् शान्तिसे चल रहे थे। विजयनगरकी सैन्य शांक्त भी सर्वोपिर थी। जहाँ मसल-मानींके लिए यद अत्यन्त महत्वपूर्ण या, हिन्दू इसे खेल समझ रहे थे। किन्तु विश्वासघात, जासुसी और पड्यात्र मीतर ही-मीतर उनकी प्रवितको सोवला कर रहे थे। रामराजा विशाल सेनाके साथ रणक्षेत्रमें उतरा. कृष्णाके दक्षिण और तालिकोटासे २५-३० मोलको दूरीपर सग्राम छिटा। रामराजा वीरताके साथ लहा, एक बार तो मुसलमानोंके पैर उखड गये किन्तु वे सैंभले और प्राण हथेलीपर लेकर पिल पडे। रामराजा पक्डा गया । बहमदनगरके सुलतानने अपने हायसे तुरन्त उसका वध कर दिया। विजयनगरकी सेनाके पैर उखड गये। मुसलमानोकी दन आयी और वे राजधानीके ऊपर धौह चले। विजयनगरके एक लाख मैनिक खैत रहे और राजधानी विजयनगरको मुसलमानोंने इस वूरी तरह लूटा और विध्वस किया कि जिसका अन्य उदाहरण नहीं है। देव-प्रतिमाओकी पवित्रता. शिल्पकृतियोंकी कलात्मकता, स्त्रियोंके सतीत्व, बच्चोकी मासूमियत, बुद्धोंकी असहायता, ग्रन्थ-मण्डारॉके महत्त्व, किसीकी भी रक्षा न हुई। उनकी वर्मा ववर्यरता, नृशंवता और अरूरता पैशाचिक थी। प्रत्येक मुसलमान सिपाही इस खुली लूटसे मालदार होकर छौटा। पाँच महीने तक विजय-नगरकी यह लूट-मार जारी रही । अलकापुरी-सदृश इस नगरीके धन-जन-भवन और प्रत्येक वस्तुका सर्वेषा नाघ करके ही दम छेनेपर आततायी दुत्रे हुए के अवरेज विद्वान् निर्देशके स्थाने "विचन्ने बन्द्रण स्तितनने की तराम् एवं बन्धक नगरके इस बदारफ बन्धवारी जातालक बीर सर्वकर विशेषका कुमरा प्रशासन नहीं जिल्ला !" बगाप्रवंदा मुनाचार मुनने ही श्रमराधारा आई लियन - राजा बया-सिवके शाब राजवानीको खोडकर भाव नवा या और इन रोलॉने केनुयोग्या-ने बाहर धरन की मो । १५७ ई में ज़िरमन स्वर्ग राजा का नेस ! निश्चनपरका बद्ध बीचा बद्धन्यत्त्रिक्त बा। बन्त्वे बत प्रवण पुष रेख वा भीरवराम वयन (१५७३-१५८५ () शाहा हुवा । बारव्याः रनावा बार्र देवट बयब (१५८६-१६१७ ई०) वस बीवे बंगस सर्क-प्रतिद्व गांत्रा था । क्ल्युनिरियो यनम बल्ता प्रतियानी मनाथा । ग्रस्म सन्दर्भ संपूर्णि गोरी पुत्राचा विल्लुक्षत मुक्तानीकी बीरवे नीई विरोध भरका ही चा। बनाए इनने बार्निन राज्य क्या। इनके मागरवे तीतृत्वास्य बोर वैस्तव-माहित्तको बच्चा बोत्ववह निर्मा हे वपुरसन्त वेंश्वराम वितोव (१६१७-१६४१ ई.) राजा हवा । वर्षाने एक मानक्य १६४९ है. में से बानक अंबरिय मान्यारीको दुख स्थान है रिया का कहा बहान बना जनशानुत रेपान दियाँन (१६४६-१६८४ हैं) बा, बाल्य मेनरेबोरे पानें बा, प्या स्टीता वर निया। मय से ब्रोटेनी बातफ रह करें से । विकास करें किया निम होनेंसे बीर वा कई ऐते ही ब्रोटे-ब्रोटे साम मुद्दर वस्त्रिय कर करे हैं। ऐस रिगोक्ते महार्थेन अपूर्णके मानक पुत्र प्रथित हुए एवर्ने वी निरम्ब वानक पुरार मश्त-निर्माताके करने प्रसिद्ध हुवा । वर्गनाय बयालाने सानेपुर्याः

ना जीतन चना चनचन्त्रों पंप्रचा जीतन प्रतिविध का। हुन्बरमके बराज्य वाकियोदा मूख पर्वताचा ६५ वर्षेता नाम बलाभक्षे बर्निज परस्थानकरः साः सारके धर्वेश्वर्यः सम्पर्यसाः सारा काल मुक्तमान तुब्बालीतः बाद राय्य-इयाके नूज्योतिक डोक्नैंच क्षेत्रम कोर कालों केन्य बेरवायो कालेकी और या । इस पार्की वर्ष पारबीय इसिदान वृत्त परि गानेक उल्लेख मिलते हैं। १५६० ६० में गेरखणेके जैन राजा साह्य इम्महिद्ददरायके बाध्यवमें नमये राजसेठ तथा आय घनी व्यापारियोनि वस नगरमें कई सुन्दर जिनालयोका निर्माण कराया या और अप धार्मिक नार्य किये थे। इस फालमें धवणवेलगोल तीर्थना प्रवन्य भी गेर्यप्रेने जैनमेठोंके ही हायमें रहा प्रतीत होता है, बीर उमना प्रारम्भ उपरोक्त सालवराज-द्वारा १५३९ ई० के लगभग गोम्मटेस्वरका महामन्तकाभिषे महोत्सव मनाये जानेसे हुआ प्रतीत होता है। इस कालमें मुर्राबदी औ शृगेरीको जैन-वसदियोको भी दान दिये जानेके कुछ उल्लेख मिलते हैं इमी युगमें अने पराजाओं से सम्मानित महान् वाद-विजेता, बादो-विद्या नन्दिने यत्र-तम जैन-शासनका उत्मर्प किया। श्रोरंगपटूनमें ईसा पादिन्योंको भी मास्त्रार्थमें इन्होंने पराजित विमा या। ये प्यकारां प्रमिद्ध बादी विशालकीत्तिके शिष्य थे। काव्यसार नामक ग्राथ इन्हींब कृति वतायी जाती है। १५५७ ई० में रत्नाकरनिस्ने प्रिलंक्यतक नाम का दस हजार रहोक प्रमाण ग्राय ९ मासमें रचकर तैयार किया य मरतेश्वरचरित और पदजाति इनकी स्य रचनाएँ हैं। १५५९ ई० नेममने ज्ञानभास्करचरित्र और वाहुबलिने १५६० ई० में नागकुमाः चरित्रकी रचना की थी। इस कालमें भी जैनोने अपनी सहिष्णुवा श्री सहन जीलताक कारण धैवो और वैष्णवीक माध सद्माव चनाये रखा विजयनगर-साम्राज्य

चाहित्व, फला बादिकी और ग्यान देनका राजाओं और उनके माम अकी कोई अवसाय न या । अतः उस मालके जैनप्रमक इतिहासमें कतित्य उन छोटे मोटे सामन्तों या उपराजाओं और मेठ-ध्यापारी आदि प्रमाजनावे ही कविषय यामिक कार्योका उन्नेय मिलवा है। इस योगके शिलालेय एव साहित्यिक रचनाएँ भी विरल ही है। महाराज अच्युतरायके समयमें १५३१ ई० में मुदगिरिको जैन वसदिका और १५३३-३४ ई० में तमिल देशकी कुछ अप बमदिवाको दान दिये गये थे। मदानिवशयके शामना-रस्मम, १५४२-४३ ई० में, तुलुब देशकी बुछ ससदियोंका दान दिवे उनेपाल विकासके शाह ही है कि साहित्य और कहाएँ सेनवे रन वाण्डे वैत पुत्र विकास मही कर नामें ।

रियम है के विरायपार्थ मुद्रके चालस्वा राजवानी वार्य-प्रम लामान्य मी किम्पिन हो स्था । विज्ञानक मानाम्य मुक्तामी विराय का नही कारण वर्णन्य मीर वीच परस्य कीन्त हुए किया । विराय का नही कारण वर्णन्य कीन्त के परंच्य गानपार्थ मोदी हुए बंदन चार्यायों कारों के व्यवस्थ कार्या के परंच्य गानपार्थ मोदी विद्यानक चार्यायों कारों है। वहर्णने कुल कारण सम्बद्ध समुद्र विद्यानक मोदी मोदी विरायणा कर्म मान पूर्व मानाम्य वार्या विद्यानक में विरायणा कर्म मान पूर्व मानाम्य कार्या कार्यायों के किंदिन कारणा हो मान मानाम्य वर्णा-कार्यों क्यांक्रमीय केवल बहारणा हो वर्ण मानाम्य वर्णा-कार्यों क्यांक्रमीय केवल बहारणा हो वर्ण मानाम्य क्यां हो। हो। वर्णिकिसीय वर्णा कार्याय कार्यायों कींग्री मीदी मीदी माना मानाम्य पर्या कार्याय कार्यायों कींग्री मीदी मीदी माना हाथा। (१०११ में वर्णायों केवल मोदी मीदि राजवें केवल मानाम्यों

एवं विवादीक स्थापित केवा बीट क्यांके सिए बर्चन वृत्तियों तथा में विकास विभावकों जुन स्विकारीक स्मृत्यकों करमा बना । वर्षे कर विकादमार केवा कर कर कर कर कर में महिता केवा सम्मादक स्वादकों को कि सम्मादेन स्वादकात पुर और सम्मादक नेवार सीर्पीत्तरकार की की स्थापित स्वादकों केवा हात्रकार केवा स्वादके वित्त पूर्णिकार विवाद केवा स्वादकों केवा हात्रकार केवा स्वादके वित्त मुक्तिया का १८८४-८५ है के महास्त की स्वादकों कर स्वादकों किया स्वादकों कर भगवान सादीश्वर, शान्तिनाथ और चन्द्रनाथकी प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित करायो थीं । विजयनगर-नरेश वेंकटराय प्रथम (१५८६-१६१७ ई०) की राजसभामें जैनगृर भट्टाकलकने सारशय और अलकार-त्रयका व्याख्यान करके कोति समाजित को थी। कर्णाटक शब्दानुशासन नामक प्रसिद् क्ना हो व्याकरण भी इन्हींकी कृति है। १५८६ ई० में कार्कल नरेश इम्मिंड भैरवेन्द्र बोडेयरने कार्कलमें सुप्रसिद्ध चतुर्मुख वसदिक निर्माण कराया था और १५९८ ई० में उसी तथा अन्य वसिदयोंको दान दिये थे । इसी वर्षका एक अन्य शिलालेख जिन शासनकी प्रशसा औ वीतरागदेवके साथ-साथ शम्भुको नमस्कार करनेसे तत्कालीन जैनोंक सिंहणताका परिचायक है। १६०४ ई० में पाण्डय-नरेशके भाई तिम्मरा जने वेजरमें वेलगोलके मठाबीश चारकीर्ति पण्डितदेशके उपदेशसे गोम्मटे बाह्य लिकी उत्तृग विशालकाय प्रतिमा निर्मित करायी थी। यह मूर् दक्षिणको सुप्रसिद्ध विशालकाय गोम्मट मृत्तियोंमें तीसरी है। मृत्ति-प्रतिष्ठ पक तिम्मराज गंगकालीन प्रसिद्ध चामुण्डरायका वंशज या । १६१० ई में महाराज वेंकटरायके प्रान्तीय गासक एव राज प्रतिनिधि वोम्मन हेग्हे मेलिगेमें अनन्त-जिनालयको स्थापना की थी। १६१२ ई० में श्रवण वेलगोलके गोम्मटेशका महामस्तकाभिषेक हुआ था। १६३८ ई० के प रेखरे जात होता है कि इस कालमें प्रसिद्ध जैन-केन्द्रोंमें भी लिगा। कादि अजैन मतावलम्बी जैनमन्दिरोंमें अपनी मूर्तियाँ या चिह्न आ स्यापित करके उनपर अधिकार कर छेनेका प्रयत्न यदा-कदा करते रह थे. किन्त उनके मुखिया और उत्तरदायी नेता ऐसी प्रवृत्तियोंका अनुमोर नहीं करते थे, यहाँतक कि उन्होंने सर्वसम्मतिसे यह विज्ञप्ति प्रचारित ह दा यो कि 'जो कोई जिनधर्मका विरोध या अनादर करेगा वह महानह (वीरशैवधर्मके सबसे वहे अध्यक्ष) के चरणोंसे बहिष्कृत कर दि . जायेगा, शिव और जंगमका द्रोही माना जायेगा और विभूति, रुद्र तथा काशी एवं रामेश्वर तीर्घोके लिंगके प्रति अभवत समझा जायेगा निरामीय मा निर्मय त्यावधारी वीर्योत सामोकाके कामाना निर्मय क्या पर, समित स्थान निर्मय क्या पर समित स्थान निर्मय क्या निर्मय निर्मय क्या निर्मय

में भीर बनेफ राजाबॉबे सम्बाहित इस वै ।

रंग बानके सेन लिहामी और बांधुन्यकारोंने बार्केसकीय है— विवयुक्तारपरिवाहे कर्ता जुतकीर्त (१५७५ ई.) अन्त्रप्रपुष्ट्रपति कर्ता थेन्ड (१५७८ ई.) म्यूनारक्षके कर्ता नवरक (१५९९ ई.) मी ब्यूप्टबंफके किन्तु में और जो डॉडब मन्त्रियामधी मॉर्टि ही देंगे मसाम्बद्धिक में कि सरकानुत्के कन्त्रगासनिमात्रकों रचे की बाले कारीला क्रमके प्रारम्बने अन्त कार्वे प्रभूति विचनार्वती और वर्वेडरी मी स्पृति की है। प्रविद्ध स्थापारम कर्पाटक-सम्भानुकालको नागी गृहे-कर्मक स्थानस्थारियास्य इतं वर्षं विकारेनंदिः रचनिता सूपासन्तित इते विविध-विधानम् वर्वका सामानीतासस्य बान्य बीनके वर्ता देवीतान (१६ है) स्तावसारीकारके कर्ना इंबसाव (१६ है) क्वीरक बंग्रेसको कर्ता गुजरकी (१६ ई.) वानक्वरीनुरीके वर्धा सम्बद्धी (१६ ई.), वस्त्रास्त्रिक वर्धा प्रश्राम (१६ कि) कार्यारपरितर्क कार्र पानवृति (१६ ६ है) बुज्यनिवरिक्षे वर्ता चंच्यान (१६१४ ई.) ग्रेनुस्परेश पानराजने बारेबरर इन्सरक्ष्युच्यत सामक सरस्कात्मक कर्ता नगरम प्रमित (tite fo) grematick and bern (tit f.) seafe !

वीरर्शक वाहित्य और वीकर्तनाना प्रतिदर्शका थी इस कामने विचीत हुन।

सत्तरीय इच्चितन दन परि

विजयनगरके इतिहासके प्रधान आधार इटलीवासी पर्यटक निकोलो कोण्टी (१४२० ई०), हिरातके सुलतान शाहरुखके विद्वान् राबदूत लव्दुरंजाक (१४४३ ई०), पुर्तगालो लेखक डोमिगो पाइध (१५२२ ई०) और नूनिज (१५३५ ई०) आदि कई विदेशी यात्रियो-द्वारा लिखे गये आंखो देखे वर्णन, फरिस्ता आदि मध्यकालोन मुसलमान इतिहासकारा-द्वारा दिये गये विवरण, तरकालीन शिलालेख जिनमें जैन शिलालेखोंकी हो अधिकता है, तरकालीन साहित्य प्रन्थ—इनमें भी कन्नधी भाषाकी जैन घामिक एव लीकिक रचनाओंको हो बहुलता है, स्वय राजधानी विजयनगर और उसके आस-पास दूर-दूर तक फैले हुए मग्ना-वर्शय, मुसलमानोक प्रकोपसे बच रहनेवाले कन्नड, सुलुव, तिमल प्रदेशोंक जैन, शव, बैल्णव तीय एवं मन्दिर आदि और इनके आधारपर वर्तमान शतीके प्रारम्भमें लिखे गये रावर्ट मिवेलकी पुस्तक तथा एव० कृष्णा शाम्त्रोके लेख हैं। तहुपरान्त मी अध्ययन और अनुसन्धान चलता रहा है और अनेक विद्वानोने इस सम्बन्धमें कार्य किया है।

उपरोक्त साधनोंसे पता चलता है कि राजधानी विद्यानगरी (विजयनगर) अपने समयके सम्पूण विदवमें अद्वितीय नगरो थी। ६० मीलके
धेरेंमें फैंजी हुई, एकके भीतर एक मात परकोटोंसे घिरो हुई, अनेक
सरोवरो, वापी, कूप, तड़ाग एवं कलप्रणालियों, उपवनों, उद्यानों, उत्त्त्ता
कलापूर्ण जैन, क्षेत्र, वैष्णव-देवालयों, अत्यन्त दर्धानीय राजप्रासादों (एक
भवन निरे हाथो दाँतका ही बना हुआ था), सामन्त सरदारों एव धनी
नागरिकोंक सुन्दर भवनों, पद्यासो हाट-वाजारों और वीथियो आदिसे
समलंकृत एक लाख घरो और लगभग दस लाखको जन-सख्यावालो इस
अलकापुरी-सद्दा महानगरीमें मिं मुक्ता और सोने-चौदोंसे छेकर छोटीसे
छोटी प्रत्येक वस्तुका खुला ध्यापार होता था। लोग ईमानदार थे, चोरीडाकेका भय नहीं था, प्रजा प्रसन्न, सम्पन्न, सुखी और शौक़ोन थी।
धर्म, कला और साहित्यमें विद्यानगरी अपने नामको चरितार्थ करती

स्वत वनि नुकावे वृत्ते था । वैश्वकृता रोति-रिवान आचार-विकार नुपार एवं तुरस्कृत में। तामादक पात पराधिकों अस्माधिको मीर र्रावाल हावियोची कममन वन कांच बैना वरेन वैनार रहती थी । वन्तर बाग्राच्या सम्बन्ध होन्ती प्रान्तीये निकल्य वा विकार बनाट्यो भीरवे इंदर्के और शास्त्यपम बाहन करते हैं। बाझान्त-नरमें नहीं बन्तरी की द्वांत समुद्रत दक्षावें की और कल-बन मानीवें देखी-विदेशी ज्यातार अपना वहान्या मा । विविध प्रशासि वश्चीन-धाने कम्पून भी है। प्रवासी समुद्रिके सारम राज्य-कर अधिक होते हुए सी सरमानों तरन ही भारी में । बच्छतिमान बाबुनिक नुक्की नरेका कहा का चिन्तु बान ही राज्यमे अचलक मपरामीकी किरकता थी। मापती बनाईका लियेर श्राम इत्यापुरको भी किया काठा था । अवर्थ मर्दनियों और कैन्दार्मेंसी प्रमुख्य को । १६वीं प्रकारीने इन नदानलधेने नप्रश्रीका करिनन दिन्हें वन्तिरोवें पर्वकि कन्तानें मोद्यक्षारं बोर महत्तन बारिका की गहुँच प्रचार वह बना था । विज्ञानवरके सम्राद्धने संस्कृत क्षत्र और लेन्द्र रोगो हो पापालेके बाहिएको जेल्हाहन दिया वेद-माध्यकार बागय बीर क्षत्रा कार्रे सावव कुला और इरिट्रेट क्षित्रीको सावी गई थे। नप्रविद् बानुसर्वे रीकेन् करिलोको बहुतः जीतकाह्म दिना । क्रम्पदेन रूपर्वे एक बच्छा सनि और केवल मा क्या निवासीना सावर करवा था। क्लाम राजकी कावालिक करने वस्तमा क्वेंबेड वादिरकार वा । शतरावा बौर करके भाई भी तुविभिन्न एवं विदान है । क्वेंने योगीन्तर वर्तनी ब्यून शेरबाइन विवा । काले येवर्व विज्ञानारके क्रमम् प्रारम्को हो सरकत सरकहो थे। स्थमन पूर्व विव श्रेपीय आदि सम्रो कमाजीका कर्मा अस्तरी निकास हुना । स्रोत हुई महत्र अधिर मुस्तिनी बीच अहरें मादि वने नियमें कारण विश्वनकार-प्रमाद वाचे निर्वाता पहुंचाने । इच्चतेषका इचाय

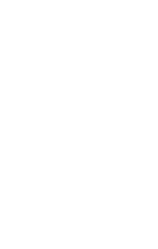
...

शासीय इतिहास एक राहि

नी । बजाद और बतके करवारती याल निराकी वी राज्योग स्वर्क

रामस्वामी मन्दिर (१५१३ ई०) अपने प्रस्तराकर्नोके लिए प्रसिद्ध है। सत्कालीन विदेशी यात्रियोने विजयनगरके शिल्पियों, रूपकारो, चित्र-कारों तथा अन्य कलाकारोकी भूरि-भूरि प्रशसा की है। इस सबके अतिरिक्त ये सम्राट् स्वदेशभक्त, सर्वधर्म सहिष्णु, उदाराशय और प्रजा-वत्सल भी थ, अत प्रजाके सभी वर्गोने साम्राज्यके बहुमुक्की उत्कर्षमे

योग दिया । मध्यकालोन भारतीय राजनीतिकी यह अद्वितीय सृष्टि विजयनगर और उनका साम्राज्य तालिकोटाके युद्धमें भस्मसात् हो गये। लगमग सौ-सवासौ वर्ष तक चन्द्रगिरिके महाराजाओने उसकी स्मृतिको सजीर बनाये रवा। १७वीं शतीके अन्तमें वह स्मृति भी निर्जीव हो गयी। किन्त निर्जीव होनेसे पूर्व ही वह मराठा बीर शिवाजीको राष्ट्रोद्धारकी प्रेरण देनेमें सफल हो चुको थी । महाराष्ट्रमें जब शिवाजी दक्षिण और उत्तरह मसलमान नरेशोके विरुद्ध विद्रोह एवं सघप करके स्वदेशो स्वधर्मी राज्यव . स्यापनाका उपक्रम कर रहे थे तो चन्द्रगिरिका छोटा-सा अवशिष्ट विजय नगर-साम्राज्य भी विखरकर समिल, तैलेगु और दक्षिणी कश्चस्र प्रान्त अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्योमे परिणत हा गया था। इस काल राजनैतिक पतनके फलस्वरूप नैतिक पतन भी हुआ जो इन साम सरदारोके व्यवहारमें चरितार्थ हुआ। इन छोटे-छोटे राजाओंमें अधिव तर बीर रीव, सद्रीव या श्रीबैष्णव थे और तत्कालीन श्रीव वैष्ण ग्राचोंसे ही पता चलता है कि इन्होंने जैनधर्म और उसके अनुपायियोप अमानुषिक अत्याचार किये, बारुकुरु, मारुढिंगे, कल्याण आदि नगरो एक एक दिनमें सैकड़ा जैन-मन्दिरों, मूर्तियो, ग्रन्य-मण्डारो, विद्यालयं दानशालाओ आदिमे युक्त जैन-धमदियोका घ्यस कर दिया गया, जैनो बरवंस धर्मत्याग कराया गया, उनका वध कर दिया गया, बाहकू जैसे अनेक सुन्दर जैन-केन्द्र चजाड हो गये। समर्थ आश्रयदाता केन्द्र राज्य-राक्तिका अभाव हो गया था और जैन गुरुओंमें युगान्तरका



राजवंशोंमें प्रमुख ये-

- (१) सगीतपुरके सालुव या कटम्बराजे भट्टकल इनको राजधानो थो, मोतियोंके व्यापारके कारण यह मोतीभट्टकल भी कहलाता था। सगीतपुर, भट्टकल, गेरुमप्पे जिसे उत्तरकाशी भी कहते थे, मूडिबिद्री जिसे दक्षिणकाशी भी कहते थे और जहाँ १७वीं-१८वीं शतीमें भी सात-सी चैत्यालय और सात सी सतहत्तर घर जैनियोंके थे, और मगलूर प्रसिद्ध जैन-केन्द्र थे। इम वशमें पुत्रियाको भी राज्यका उत्तराधिकार मिलता था। १६वीं शतीमें तत्कालीन कदम्ब-नरेशकी मृत्युपर यह राज्य उसकी सात कुमारी कायाओंके बीच सात भागोमें बेंट गया था और १७वीं शतीके प्रारम्भमें उन सार्तोंने योग्यतापूर्वक शासन किया।
 - (२) कार्फलके सेरस्स राजे—मयुराके राजकुमार जिनदत्त रायकी सन्तितिमें से और वहे धर्मभक्त थे।
 - (২) वेणूरका अजिलवश इसीकी एक पाखा वगवाहिपर वग वशके नामसे राज्य वरती थी और एक नन्दावरमें राज्य करती थी। यह वंश विजयनगर नरेशोंसे भी सम्बन्धित था, और अवतक वर्तमान रहा है।
 - (४) उम्लालका चौटवश—१२वीं शतीके मध्यसे लेकर १८वीं शतीके अन्त तक चलता रहा।
 - (४) चिलिकेरेका श्ररसुवश १९वीं शताब्दीके अन्त तक चलता रहा। इस वशके राजा देवराज (मृत्यु १८२७ ई०) वडे वीर योद्धा और आत्मकत्वपरीक्षण नामक ग्रन्यके कत्ती थे तथा मैसूर-नरेशके प्रधान अंगरक्षक थे।
 - (६) वारुकुरुके पाण्ड्य राजि—इस वशके कई राजे प्रसिद्ध ग्राय-कार भी हुए हैं। इनकी राजधानी वारुकुरु वही समृद्धिशाली सुन्दर नगरी थी। इक्केरि वशी वेंकप नायकने, जो शैव था, इस नगर और वहाँके जैनोंका १६१९ ई० में विष्वस किया था।

(७) मैसरके बोर्डेचर राजि-अवनदेवनात शेकी प्रवान बंदाव ने ही रहे । १८वीं धरीने ईपराली और होए नुमक्कन वर्ने वस किना पर । बेंबरेबेले इस बंध एवं राज्यका बदार फिना और वह वर्तनान तक 9887 187 (

(a) नगरीके बन्द्रवंशी राजे। (९) स्वतंत्रर (विक्रिये) के जैन राजे ।

(१०) वेर्जनविके सक्षा (११) महिनके सार्वत इत्याहि ।

इत एक वर्षतके करवब वीवन्धानांने तहेचीय ठीवी एवं हेतीका

संस्थान किया कार्यारहीका बीचींजार निर्माण क्षेत्र करता की वर्माहरूकी

रवता क्याची निवासी और नुष्योत्ता बावर क्रिया और मध्यक्त

वीनवर्षणी क्य देख्यें वीकिन रखा ।

खराड २

विदेशी-शासनमे भारत

[मुसलमान ऋौर अँगरेज़ी-शासन



अध्याय १

इस्लामका भारत-प्रवेश और दिल्लीके सुलतान

१३वी शतीके प्रारम्भसे लेकर १८वीं शतीके अन्त पर्यन्त, लगभग ५०० वपके, इस मध्यकालकी सबसे वडी ऐतिहासिक विशेषता इस देशमें उत्तर-पित्वमी सीमान्तको पार करके मध्य एशियाई मुसलमानोंके आक्रमण, यहाँ उनके राज्योंका प्रारम्भ और विकास और फलस्वरूप स्वदेशी राज्य-सत्ताओंका घीरे-घोरे अन्त अथवा पराधीनताकी बेडियोमें जकड जाना है। मारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था, संस्कृति और समाअमें एक प्रवल्न, नवीन, अपरिचित, विरोधो अथवा प्रतिकृत तस्य प्रवेशने विविध प्रकारकी उथल-पुथल, क्रान्तियों और आन्दालनोंको जन्म दिया। देशका स्वरूप ही बहुत कुछ बदल गया।

गुष्तकालके अन्त तक मध्य-एशियाके बहुमागपर भारतीय सस्कृतिका प्रभाव था, वहाँ हि दू, जैन, बौद्ध आदि भारतीय घर्मोका प्रसार था और उसके कई भाग वृहत्तर भारतके अंग थे। िकन्तु पिछली दो-एक शता-व्यियोंसे भारतकी ओरसे उक्त भारतीय प्रभावका पोपण होना एक गया था। आर्यजनोको म्लेच्छ देशो और नातियोंसे सम्पर्क रस्तना पाप है, ऐसी भावना हिन्दुओ और जैनोंमें वल पकड़ती जा रही थी। परिणामस्वरूप वृहत्तर भारतके मध्य एशियाई भागकी सम्पूर्ण भारतीयता शनै शते थे। दे स्पर्म ही अवशिष्ठ रह चली। वह भी स्थानीय तथा अवशिष्ठ हिन्दू जैन आदि प्रभावोंक अत्याधक मिश्रणके कारण वौद्ध सस्कृतिक भी अत्यन्त

परिवर्तित वर्षे रिक्टन अपने ही बारत हो रही थी। ६टी बती हैं में मध्य-एविशके नह देवींने बरन देव ही अधिक पिछडा हुआ ना । पद्रकि सीन सनिष्ठ गरिभवी - गुड-जिम और सरझ-स्वतानो हो में तिनु बाप ही बहुत परीच में अनेत प्रमोधीने मेरे हिं में और बारतर अपने पानेंदें हो उक्ता थे। सनेक अन्य-विश्वासीके वे बाब में। ऐसे सम्बन्ध ५० ई में बारबके सरका सामग्र स्थानमें नुरामर बारवका बान हुना । होत्र संबक्तनर अन्ते देख और वार्तिसे बयाने बनका फिल दु बी हुआ। मैं क्राबे कुछ क्रमीनिक मेता हुए और देख्या दक्षा नुवारमेड किए उन्होंने प्रचनित काचार-विचारी^{हे} है ^{के} रार्थोंनो चुनकर और बनरर बाली बुद्धिका प्रशेष करके कार्ने बनना रेक्ट-बाइसोंकी सकती बाने तावह एवं सरस सीवन्त नवीन पर्वता प्रभार फिस्स । 'इन कर्नुर्व सन्द्र (विश्व) और बन्नमूड (प्राणियों) था बनानेपाल, बक्की रखा करवेवाना और बन्हें बारनेपाना गुरा एक है और मुसमार बाध्य ही बनके एकबान बन्ने रत्त्व वा नामार है। इन रोक्स-सन्दार बांब सुरकर हैशन समी किर पीप पड़ा ननाव नहीं रजवानके नहीनेने रोका (कारान) रखी अस्ती अस्तरा एक बंद रोकनुविद्धिके किए बक्ता (बाव) है। बनावस्था स्वता-

वरीनेची हम (बारा) करी । वृश्तने मुसम्बर्फ हारा वी हरान वानक पर्वतन्त्र प्रयद्ध क्रिया है क्षेत्र देश्वरदालय बनावी । स्ति दरसान पर्ने हैं रकार पूज निरमाध रक्षतेगाठे मुख्यमान "मुक्तकन देशल है जिल्ला

19

राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक, तीनों सत्ताओंको एकत्र (सयुक्त) करके अपने धर्म-राज्यको स्थापना की, व स्थय उनके पूर्णतपा स्वेच्छाचारी और सवशक्ति एव सत्ताधारी नेता बने और उन्होंने अपने अनुयावियोको एक हावमें कुरान और दूसरेमें तलवार लेकर इन वर्मके प्रचारार्थ निकल पड़ने की आज्ञा दी। इस मतमें विवेक और तर्ककी विशेष गुजायश नहीं थी, पैग्रम्बरकी आज्ञा ही प्रमाण थी। जैमा प्राय होता है, मुहम्मदका बिरोध मी वहत हुआ और फलस्वरूप ६०९ ई० में उन्हें मनका छोडकर मदीनेको पलायन कर जाना पडा । तमीसे हिमरी सन्की प्रवृत्ति हुई । अन्तत इस्लाम जोरोंके साथ फैलने लगा । मूहम्मद (मृत्यू ६२२ ई०) के उत्तरा-धिकारी खलीफा कहलाये । अरबॉम नवीन जीवन और उत्साहका सचार हुआ । नवीन धर्मीन्मादसे मत्त होकर वे देश-देशान्तरके काफ़िरोको बरवस मुमलमान बनानेपर तुल पहे । खलीफ़ाओंकी शक्ति, घन, राज्य-विस्तार बीर अनुपायियोंको मध्या दिन दूनो रात चौगुनी बढने लगी। घोडे-से समयमें ही इस्लाम विश्वकी एक प्रवल शक्ति बन गया। अलममूर, हारूँ-अलरघीद आदि कुछ खलीका नेक, उदार और विद्याप्रेमी भी हए और विभिन्न देशोंके ज्ञान-विज्ञानका लाम उठाकर अरव सस्कृति एव साहित्यका मा अच्छा विकास हुआ । किन्तु उनके धर्मकी नीरम एकागी कठोरता और उनको घर्मो च कट्टरता दशन, न्याय, तत्त्वचिन्तन तथा स्यापत्य, मृत्ति, चित्र, सगीत, कान्य आदि ललित-कलाओंके क्षेत्रमें अनिवार्य एकावट बनी रही।

हजरत मुहम्मदको मृत्युके हुछ ही वर्ष बाद, ६४४ ई० मॅ, मकरान और बिलोचिस्तानके मार्गसे अरवोने भारसके सिन्धु देशपर सर्व-प्रयम आक्रमण किया। तत्कालोन सि धु-नरेश सिहरसराय युद्धमें मारा गया। ६४६ ई० में फिर आक्रमण हुआ उसमें सिहरसरायके पुत्रकी भी वहीं गित हुई। दोनों बार मुसलमान लाये और चले गये। ७१२ ई० में जुन्नैहके सेनानी मुहम्मद बिन क़ासिमने एक प्रवल आक्रमण किया। सिन्यका प्राह्मण राजा दाहिर बीरवा-पूर्वक लहा किन्तु मारा गया और

प्रन तार वर्षके प्राप्तर बरावेंग बहिकार वर किया। किरवान कर रूपत बहिक कराक्षेत्र वाहास पोर पॉर्डाडी नारार कुर विस्तावराते और रेडिक-कराके स्टास हुवा स्थान स्थान हूं। बरावेंक करते मुक्त-सारेंगे का केपते क्षा बाग्य करना राज्य वाहा किया। वारांगिक स्थान्य स्थाने का कर करावेंन बंगुकन्तु कर व्यास्त वर्ष तारंगिक करावें विस्ता। गिल्म बर्गाव्यक्ति सामान्यका एक बान्त कर समा गीर कर्षे विस्ता। गिल्म बर्गाव्यक्ति सामान्यका एक बान्त कर समा गीर कर्षे वर्षा स्थान करावेंग कराव करावें प्राप्त करते पूर्व नेक्स मार्ग क्षा वर्ष कर्मा गीर स्थानेंग क्षा क्षा क्षानें कराव करावें प्राप्त करते पूर्व कर्म कर्म कर्मा स्थानकर क्षा क्षाव्यक्ति क्षाव क्षा क्षा क्षा कर्म कर्म कर्म क्षा करावें कर्म क्षान्ति क्षाव्यक्ति क्षाव्यक्

ही बाजुह रहे। बाबीराजमांचा काम डीमेंके बाव विकास मध्य बावन कोर्ने-बोटे बजीरो के कपने बातानियों एक पत्ती है। येर माराजी ताब बारबोका नेवाब जातारिक बायान्य रहा। राष्ट्रका समीनक्ति

राजर्म गुमेशन बक्दारिंड ज्यूपी इन्युर्गक्त बार्सि बरंग बेरानार्धित जाना पाता हो। क्येंच ज्यूप बार तक वो में बार्ग यह । क्यूप माराक्ष में बारुक्ताच्यारी को बक्ताचा और क्षित्रपूर्ण के प्रति में पाराधिकों पूरा न क्यें दार्गकर ने अपने पुरस्कों को नाने नामी हों इन्या कर की है। 'श्री कांचे बारुक्त करका आयुक्त का उसी पाराधित है करपार्थिं कर्यानार्थिं कर्मा कर्मा कर्मा पर्योग्धा क्षेत्रपार्थिं कर्मामार्थित विकास क्षेत्रपार्थिं कर्मामार्थित वालिंग क्षा वालिंग व्यवस्था प्राच्या कर हुया। १८० हैं वे क्यान्शित्रपार्थी वीमार्थमें पर कर्षे प्राच्या वीमार्थ स्थेष कर्मामार्थी क्षा व्यवस्था

कंपणा अरवर पूजाबका तिया भीर को पीछे हता दिया पटा घटा घटा है हैं रेमरे स्थानेपर साक्रमण किया किन्तु हारकर दोकों की बामा। गार १९९ प्रस्तीय हमिसमा पण पी

दुर्ग और पुछ हामी अमीरनो देकर उसने मन्यि कर हो और तुरान एवं तोड भी दिया । फल-स्वरूप मुमलमानोंने गोमान्त देशके जलालाबाद विलेको तहम-नहुस कर दिया। ९९१ ई० में जबपालने राज्यपाल प्रतिहार और घग चन्देल आदि नरेगोंका एक मुख्लिमिनिनोधी सम बनाकर गुजनीयालकि माथ कुर्रम घाटोमें भयंकर गुढ किया और मुसल-मानोको पेशायरसे आगे न वयने दिया । ९९७ ई० में मुबुबनगीनका वेटा महमूद गुजनीका सुलसान हुआ। मध्य-एशियामें अपने राज्य बिस्तारसे उसने बहुत प्रक्षिन बढ़ा ही यो और वह अपने समयका मर्वाधिक प्रक्तिक दााळी मूमलमान नुलतान समझा जाता था। भारतक धन-वैभवकी कहानियोंने उस अत्यन्त छालची बना दिया था। बिन्तु यीर-योदाओंने इस महान् देशमें पुसने और छूट-मार करनेके छिए अपने नैनिकोमें पर्याप्त साहम पैदा करनेके लिए केवल अतुल लूटका सीभ दिखाना पर्याप्त न धा, अत उमने उनवे धर्मी मादको भटकाया, युतपरम्तींपे नुतीको सोहकर, उनके कल्पनातीत दौळतसे भरे मन्दिरोको छूटकर और वाकिरोंको मुसल-मान बनाकर या तलवारके घाट उतारकर गांजी वन इस जीवनमें घन, विजय और धर्मभिवत तथा मरनेके बाद जम्रत मिलनेकी महज आद्या दिलायो । ९९९ से १०२७ ई० के बोच महमूदने भारतपर लगभग १७ आक्रमण किये । भटिण्डेके यीर साही राजे प्राणपणसे उसका प्रतिरोध करते रहे और इसो प्रयत्नमें होम हो गये। १००१ ई० में जयपाल पेशावरके निकट युद्धमें पराजित होकर बन्दी हुआ, महमूदने उसे मुक्त भी कर दिया कित् उस अपमानधुः व नरेशने चितामें प्रवेश करके जीवनका अन्त कर लिया । उसके पुत्र बानन्दपालने महमूदका प्रतिरोध करनेके लिए अजमेरके बोमलदेव चौहानके मेतृस्वमें मालवा, खजराहो, कन्नौज, शाकम्भरो बादिये भारतीय नरेशोका एक प्रवल सघ सगठित किया। पेदावरके निकट ४० दिन तक दोनों सेनाएँ आमने-सामने पही रहीं। पजावके लोमरोंने भी भारतीय सधको सहयोग दिया। सुलतानकी सुदृढ मुरक्षित

अन्तरीतर पहले बालेके कुछ रिक्रिडोर्ने ही बास्तीन गैरोने व्यक्ती नुबक्तानोंकी कृत्के बाद क्यार दिशा। फिलू बन्धवें झवियोंके निवह वारेने बारतीय केनामें बक्बड अब बड़ी और मुख्यमल निक्ती पर्दे फिर भी बारत सीट व्यनेनें ही बन्हेले रखा बनती। १. ९ वें में नवनुत्ती कानोके कुर्नर अस्तामन किया और नवृत्ति सुप्रविक रस्य-मन्दिरको द्योरा और कृदा । ३५ वर्ष तक इब कूर्वपर मुक्कमाधेका मनिकार मी रहा जिसके सपरान्य मास्तीजनि इसे कर्मा किर कीन किया । १ १८ ई. में (बंब व्हिस्टेन्डे वाहीलंब और सम्बन्ध बना हो भवा था) नहतूनने बरमके राजा इरस्तको परास्तित करने अपने अपीन किया तथा बबुराने अधिरोको कुछ और विश्लंद किया । नवरके बच्चमें क्षण्यत्या कृत्य मन्द्रानुका बालना विचाय क्यापूर्व एवं सक्रितीय सन्दिर मा विदे माराताचीने मध्यकर साम कर शाका । मगार मन-बन्नरिके वरितरिक्त क्यू विवरणी पीच विद्यालकात स्वर्थ-प्रतिमानीको वी न्यू वान के नवा । इक्ष बाह्मजनमें अनुरान्ते जीरावी नावक स्वाप्तर स्तिक एमा क्यके मुख पूर्व हो जिसिंद बैनानीयर बीर जुलियों न बाने वेंचे युर्विया

क्षेत्रीकर मान्स्य किया बीर वही कुदा है एवं। रास्त्रमाले कर दो कर । पार नंत्रा था। वहारी कर करवायकों किया निवाद जाने का वि वर्षित्री की कर दिया। कर वस्त्रे वही खुदाने वनेथीया सानस्य दिया। क्षेत्र गरेवारी कुदाने वातुक करका हुना बीर वहुन्यार कार्य प्रभा का। वात्री कारकार्यते भी कर कर पार वाले की बीरा दिया। १ १४ ई. वें बातुकों नुपाराने प्रसिद्ध दोनमान-निराणी वृत्रा और दिवाद किया। जीन वीकों। इसे वीवादे कर व्यक्तिक देखी विवाद करवी देखाने करवा करवा कर व्यक्तिक देखी

प्र क्यों । तस्त्र है कि सन्द सुन्दिरीकी क्रका कर ही। वस्त्रे वेशके न तेमका और इन वेशकीकरीकी व्यापक बता। वजुपके कर वस्त्रे भारतके इन आक्रमणोंमें अपार घन उसके हाय लगा था जिसके कारण मारत-बाह्य समस्त ससारमें वह सर्वाधिक धनशित-सम्पन्न नरेश हो गया था। भारतके लिए उसके आक्रमण प्रलयकर किन्तु अस्यायी ववण्डर थे। देशके असस्य जन-धन, मन्दिर, मूर्त्तियों एव अनुपम कला-कृतियोका विष्वंस इस नृशंस लुटेरेके हाथो हुआ, किन्सु देशके साधन ऐसे असीम थे कि थोडे समय पश्चात् हो उसकी दशा पूर्ववत् हो गयी और इन मर्यकर आक्रमणो एव लूट-मारका चिह्न भी न रहा। इसमें भी सन्देह नहीं कि तत्कालीन राजपूत राजाओंका दुरिभमान और उनमें परस्पर सहयोग, सगठन और एकताका अभाव तथा अश्वारोही सेनाकी अपेक्षा गजदन्त्रप अधिक मरोक्षा रखना ऐसे तथ्य थे जो मुसल्यानोकी सफल्ताके उस समय भी और आगे भी प्रधान कारण हुए।

व्यक्तिगत रूपसे महमूदमें राजनैतिक और धार्मिक उदारता भी थी।

तिलक नामक एक हिन्दू के नायकत्वमें उसकी सेनामें एक हिन्दू सैनिक दल भी था और उन्हें मुसलमान छावनी तथा राजनीमें भी अपने धर्म-पालनकी स्वतन्त्रता थी। महमूदने साहित्य और कलाको भी प्रश्रय दिया, गजनीमें सुन्दर महल और मसिजदें वनवार्यों और फारसीके फिरदौसी आदि कियाोंको प्रश्रय दिया। उसके एक महान् विद्वान् अनुचर अस्वेरुनीने, जो उसके साथ कई बार भारत आया और कुछ समय यहाँ रहा भी, भारतीय धर्म, दर्धन, साहित्य, इतिहास, ज्ञान-विज्ञान आदिका प्रशंसापूर्ण विवरण दिया है। इस विद्वान्ने सस्कृत-भाषा भी सीखी और भारतीय धर्मशास्त्रोंका भी अध्ययन किया था। फिर भी भारतीय इतिहासकी दृष्टिसे तो महमूद गुजनवी एक धर्मान्य विध्वंसक एव द्वंदर लुटेरा हो था। पजाबके कुछ भागपर उसका अधिकार भी स्थायी हो गया।

इस भारतीय प्रान्तके सरक्षणके लिए उसके पुत्र और उत्तराधिकारी मसूदके समयमें भी भारतपर कई आक्रमण हुए। हिन्तु जब पजाबसे आगे बढकर पूर्वी-उत्तर प्रदेशमें उसकी सेना पुसी तो बहराइसके युद्धमें यान्तरीन वैन नरेस मुहिस्तेन्द्रारा स्थानित हुई और वस्त्र निर्माणा करने नाम नया । यह विद्युक्तर है हमान्या देश कार्य मुरा साहित वाली प्रतिक है। १ ८ ई के नरना न्यूर्ग करने वाली मिल्रा साहित है। १ ८ ई के नरना न्यूर्ग करने वाली विद्युक्त हों करने हैं स्थान कर प्रतिक करने हैं स्थान कर प्रतिक निर्माण करने हों करने करने हैं करने हों से करने हों हैं से साम करने हैं करने हों से करने हों से करने हों हैं से करने हों हैं से करने हों हैं हैं से करने हैं से हैं से करने हमाने हैं से हमाने हमाने

केरक रंधारे हे इक मारार ही। कहारा पान पार । ११७६ हैं हैं हैंगेंं पुराना बरापुरित सम्बद्धांत्रास्त्रा आग देश देश प्रविकासी नर्दा वा केशा कि सामें कारते पहुरू बरानी था। क्यी वर्ष करने सामें पाने वा पूर्ण पान जित्रों करवे और वाहुक बीलवित्र के नाले मार्ड नाले किन साम विद्युप्ति मुद्दुरित कोरीओ है रिया। वह मान्या होते पुरंदु हुएसी और प्रवासकीयों था। आपतानी मेजब करते हैं विधान

भारतीय इतिहास पुत्र दृष्टे दृष्टे

लिए गुजरातको मुसलमानो आक्रमणोसे प्राय सुरक्षित कर दिया। ११८७ ई० में मुहम्मद गोरीने खुशरूशाह गुजनवीको, जो उस वशका अन्तिम प्रतिनिधि था, पदच्युत करके पजावपर अधिकार किया। पंजाब और सिन्वयर अपना शासन सुदृढ़ कर लेनेके उपरान्त ११९१ ई० में उसने एफ भारी सेनाके साथ उत्तर-भारतके मघ्य भागमें प्रवेश किया। शपुको उसकी इस घृष्टताके लिए दण्डित करनेके लिए दिल्ली और अजमेरके सयुक्त नरेश वोर पृथ्वीराज चौहानके नेतृत्वमें उत्तर-भारतके विभिन्न राजे आपसी वैर-भाव भूलाकर एक हो गये और मुसलमानींको देशसे निकाल वाहर करनेके लिए यह मयुक्त सैम्यदल दूत वेगसे चल पहा । कर्नाल और बानेश्वरके मध्य तराइन या तलावहीके मैदानमें दोनो दर्लोकी मुठमेड एवं भयकर युद्ध हुआ। पृथ्वीराजके वीर भाईने स्वय मुहम्मद ग्रोरीको द्वन्द्व युद्धमें उलझाया । ग्रोरी सुलतान वृरी तरह जख्मी होकर रण-क्षेत्रको छोड प्राण बचाकर भाग निकला, उसके सैनिक भी पराभृत एवं तितर-बितर होकर भाग निकले। मारतीय शूरोने भागते हुए शबुओका पीछा भी न किया और उन्हें सुरक्षित वापस छौटने और नवीन आक्रमणके लिए शक्ति मग्रह करनेके लिए छोड दिया । अगले वर्ष (११९२ ई॰ में) ही और अधिक सेना, वल एव उत्साहके साथ ग़ोरीने फिर आक्रमण किया। पृथ्वीराजने इस बार भी पूर्ण उत्साहके साय तलावहीके मैदानमें उसका मुकावला किया। किन्तु जहाँ इस बार मुसलमानोंका वल और सकल्प द्विगुणित था, कन्नौज-नरेश जयचन्दके असहयोगके कारण पृथ्वीराजको बाचु नरेशोकी पिछले वर्ष जितनो और जैमी सहायता प्राप्त न हुई। फिर भी वह बीर और उसके सूरमा अत्यन्त वीरताके साथ लडे। प्रजीराज आहत होकर वन्दी हुआ और मार डाला गया। भारतीय सेनाके पैर उल्लंड गये और विजय मुमलमानींके हाथ रहो। तलावडीके इस युद्धने भारतके भाग्यका निर्णय कर दिया। पंजाबको पार करते ही दिल्लीके उत्तर-पश्चिमकी ओर फैली हुई

इम्डामका भारत-प्रवेश और दिल्लीके सुलतान

बालेराच्या साम्राज्या पंचारकी गरिशोंको अधिकार सहय ही इन स्थाप तक वा नहेंच्या है। जारतीय वन की बार को करा वर्धी नुसर्गीतर ही रोज में तुरे हो होड़ बनों बेहानची नहीं बहिसोंके बनी चार्टीकी रका करना अन्तरमञ्जा हो शना है। तथा समृत्यं वक्तिरोव करनेके निष् न्द्र इत्ती स्थानसर बनकी अनीचा करता है। बुद्ध-निक्रामसी सुदिने न्द रुवान है. भी बर्ववा कायुरन . मोरी मंत्रे मुळके डिब्ट पर्मान्त विस्तृत सर्वे मन्द्रम बैद्या जिल्हे क्लार्ज ब्लून द्वित्रका वर्षेत्र एका क्लिकी बीहर जरवरिक बारव मार्ग वस्ते या रोडे सीटवेडे मस्तिरश वान परि करों । शासन्तर परि नयमित होता है हो वहे प्राप्त क्यांपर नीई ही नामना पहला है और क्ष्ममें भी बाधे इसी बढानी पहली हैं। बीर बॉर वह रिक्रमी हमादी भारतका बकावल विवास करायान क्रमें नदम ही इस्तमा ही बाता है। यही इस बार हमा। मॉर्स्स मेरी प्रथम अपवार का अब मारा इन क्षेत्रमें बनुवाँका प्रतिरोध करने अनवन हुन और चरियान-स्पन्न काने अस्ते-असकी कामीनार्थी निक विशेषणी क्षेत्र विश्वविश्रीची क्षेत्रीक्ष प्राचीनकाचे जुन्हें कर रिया - इन पराधारका कारण वी व्या नहीं व्या कि व्यास्त्रीय वैतिक ना इनके बेनाली निर्वीकता, बीरता, धीर्व ब्यान मुख्यीबन कीर बन्दे मुक्कामोति कुछ कर थै। या वर्षशाम क्रम है कि इन पुनीरी वे करते अपूर्णने करी अस्ति केष्ठ वे । किन् बनवा वैन्य-वेश्वने नेगाओंडे व्यक्तिका पूर्णतराम, रेप्सी शामारमान साविके कारण निर्मित मा । सभने एकपुत्रता दर्व एक्नेपुन्तका अकाव का । वहनावालीने करोने बनवानुकृत एवं विशिष्ठीके अनुका नुबार करना बाँ तीका

बलीय इंजिल १३ वर्ष

न्द्र रिप्पूर ऐप्टिम्पिक बनर पृथि बहाँ महाबाद्य सूत्रका पुरस्का इन सार्वीक मुक्ताद्य पृत्रीची क्षेत्रको बीट बास्त्रकार कर देन नामुत्रीक पार्मप्त क्षांक्रिक हैं बाद्यको सम्पन्ति पूर्वी बीट कार्यी सम्बन्धिको देखी बारी हैं। विश्ववीहर बोस्त्रको हरीकी यह करके या। ये राजा होग अपने या अपने राज्यके लिए स्टले थे, समग्न देशके लिए स्टनेकी भायना उनमें न घी। बौद्धधर्मके प्राय मर्यथा अभाव और जैन प्रभावके अपेमाकृत माद पह जानेके कारण ब्राह्मण-पिस्टिशको कृपाने इस कालमें जाति-पौतिका भेद कुछ ऐसा पृष्ट हो चला या कि राजपून जातिक अस्पादा अन्य कोई व्यक्ति मैनिक ही नहीं हो पाता या जिममे देशके मैन्य माधन एकागी और सीमिन हो गये, और अन्त देश पराधीन हुआ।

शीघ्र ही गोरीकी सेनाने अयचादको मी पराजित किया जो स्वयं मसलमानोकी क्रान्तिकारी विजयका एक प्रधान यद्यपि परोक्ष साधक बन चुका था। ११९३ ई० में ही मुहम्मद ग़ीरीके सेनानी कृत्वहीनने मेंग्ठ और दिल्लीपर अधिकार किया तदमन्तर कन्नीन, वाराणमी और ग्वालियरपर अधिकार किया, अजमेर भी दिल्लीके साथ-हो साथ ममल-मानीके अधिकारमें आ गया । ११९७ ई० में कुतुबुद्दीनने अन्तिलवादेपर फिर आक्रमण किया किन्तू भीम द्वितीय-द्वारा नाममात्रकी अधीनता स्वीकार कर लेनेपर वापस लौट आया। उसी वर्ष उसके उपमेनानो मुहम्मद विन बिल्तियार खलजीने विहार प्रदेशकी राजधानी बिहार दुर्गप्र अधिकार कर लिया। यह स्थान उस समय बीढींका प्रधान केंद्र रह गया या और यहाँका बीद्धम इस कालमें अपने अति अवनत एक विष्टन रूपमें या । थोडे से ही परिश्रमसे मुसलमानोका विहार प्रदेशपर अधिकार हो गया, अनेक बौढ-विहार, पुस्तकालय, मन्दिर और मृतियौ मष्ट कर दी गयीं, बौद्ध भिक्षुकोको तलवारके घाट उतार दिया गया, जो किसी प्रकार वचकर भाग निकले उन्होंने नेपाल, तिब्बत आदि देशोमें आ-कर शरण ली। ११९९ ई० में इस खलजी सेनानीने संगासकी राजधानी निवयाको भी मात्र १८ अस्वारोहियोंके साथ छल-कौदालसे हस्तगत कर लिया कहा जाता है। वूढ़ा म्नाह्मण राजा लक्ष्मणसेन बिना लडे ही महस्ट भौर राजधानी छोड भाग गया । निदयाको तहस-नहस करके खलजीने

कुनुहीन प्राण करेण बामामको बस्तांत्रण करवाकर वर्तानकरका हुनि पूर्व हारतन किया । वसी वर्ष क्यानुहीन कोरीची मृत्यू हीनेवे नहाना नोरी रुपके भी राज्यका स्थानी हुआ और इस अगर गर यर यस समयका नर्रोचिक शांनप्रधानी वरेख हथा। यथका बाजान्य जी वर्रोचिक किन्तुर्ग का । हमी वर्ष वह काराने बारव बोटा । यहा बाता है कि वर्ष बहुआर बोरी मारतन इकर करने नेपारियों द्वारा देखके विविध मानीती विवर करा हावा तो क्षत्रे अल्लो स्तिकाके बातहरर क्ष दिवावर जैन नानुको । रिप्टे प्रनाने प्रतिकानो अनुकार क्यूबंक्सावे पास था। अन्ति कर-शासे बुनावर नामानित विकास । बागम है बक्त मानुके प्रजापनी नुसार अवसा नेत्रम विकालाके लिए चवले बैंगा विवाही। वो स्थाना वीरी बीर सबके नेपानियोंने को जिल्लाजन राजपानियाँ बनारी, हुवी मास्पर व्यवपार दिया कार्डे सह-प्रष्ट किस और नदा । सन्दिर्धे और नृतियोंको होइना और सूरमा दे जुननक्तन कन्ना वर्ष जनाने है । आर मधी प्रमुख स्थालीये दिल्लू ब्रोट खेन-मिन्स्रीर) अल्डीवरीके करने परिवर्तन विना नवा । अन्तरी पृष्टिने प्राप्तान परिचल ना संस्थानी। वैन नालु जीर बोड मिलू समान करते. कांग्रर में बीर क्ष्यू अरमा बगब मार दिए भी मुश्यत वीरोक्षा प्रयास करेरच सुर-भार और अस्टिर-मृति बोवना नहीं चा नरम् राज्यनवाचना करना का, बता अनके देने व्यव-नार्व बीर्जन ही रहें। दो वर्ष बाद हो की नेशवरी सोबद बादिया दक्त नदकेंदें किर पारन साला पटा किन्तु शास्त्रीमें बन् ११ ६ हैं में झेनल जिमेके पति नाव मान्य रसानी एक रेस अर्थ और मार्ग-नाम बोरने मर्गन से

जनगोडी वा गोरडी अलीय राज्यानी बनाया । ११ ६ ई. वें डोरीने

कारपीने पुतरर सूरभार डोटोशा यह वह स्थि। । वनशे मृत्युके तात्र ही । प्राप्ताके मृत्युक्तमी राज्यों साम्य कारा स्थानि हो । पुत्तासम्बद्ध (१९ १-१९९ ही) वचर आपने युक्तमार तुक्त-राज्यों । क्षेत्रक वंश्व था। यह सिंदश निर्मा वार्ति स्थ क व नहादेशको सर्वप्रथम गुलामीको वेडियोंमें नकडनेवाले स्वय गुलाम ये । मुह-मद गोरोको मृत्युके उपरान्त उसका प्रिय क्रोतदास (जरखरीद गुलाम)और प्रधान सेनानायक कृत्युद्दीन ऐवक (१२०६-१० ई०) गोरी द्वारा विजित भारतमें उसोके द्वारा स्थापित मुमलमानी राज्यका सर्वप्रयम स्वतात्र शासक हुआ। ग्रोरोके उत्तराधिकारीने स्वय उसकी स्वतन्त्रता स्वीनार कर ली बौर उसे सुलतानको पदवी दो। खलीकाने मी स्वीपाराविन दे दी। वास्तवमें भारतमें मुसलमानी राज्यका प्रथम सम्यापक ऐवक ही था, उसी-ने स्वय तथा अपने उपसेनानायका द्वारा, जिनमें से अधिकतर उसीकी माति गोरीके गुलाम ये, पिछले १५ वर्षीमें उत्तरी भारतक विभिन्न वेशी राजाओ को एक एक करके पराजित किया या और इस दशमें दिल्लीको वेन्द्र एव राजधानी बनाकर मुसलमानी राज्यका विस्तार किया था तथा ग्रीरीके वाइसरायक रूपमें शासन किया था । विहार, वगाल-विजेता एछजीवा आसामको चढ़ाईमें १२०६ ई० में ही अन्त हो गया था। यल्दुजको लडकी-के साथ अपना, क्वाचाके साथ अपनी वहनका और इल्तुतिमशके साथ अपनी पुत्रोका विवाह करके ऐवकने प्रधान मुइपिज गुलाम सरदारींको अपना सहयोगी और सहायक बना लिया था और इस प्रकार अपनी स्थिति सूदढ कर ली थी।

ऐवन और उसके साथी तथा उनके उत्तराधिनारी ये प्रारम्भिक
मुसलमान सुलतान और सग्दार धर्माच, क्रूर, निर्दयो एव धर्यर मध्यएशियाई योद्धा थे। जो मुल्ला मौलवी अनिवार्यत इनके परामर्श-दाता
और इतिहास-लेखक रहते थे वे उनके धर्मोन्मादका और अधिक प्रज्वलित
करते रहते थे। प्रत्येक मुलतान या सरदारके महत्त्वपूर्ण और प्रशंसनीय
कारनामे यही होते थे कि उसने कितने सदास्त्र या निहत्ये काफिरोंको मय
उनके निस्सहाय स्त्री-अच्चोंके दोजख पठाया, कितनोंको जन्नरदस्ती
मुसलमान बनाया, कितने मन्दिरों और मूर्तियोको सोक्ष और लूटा आदि।
उनकी दृत सफलताका कारण भी उनके निर्दय अमानुषिक व्यवहारसे

तरकाबील या क्राइकर्ती भारतीको कियो हो नहीं । राजस्थाकको करियन स्तारों और विकासिकों आहिते ही वह प्रकार बोहा-वा बच्छा अल देखा है। इन नुवकतान दुस्तालॉने दुक बचने मलेरे किय और दुक शक्ते नाम और नालके किए प्रारमको हो। वहाँ क्लाबिवें और सकतरे नालाने पूर्व निने । इव कार्नेत किए क्योंकि हाए कारत बनानिका हिन्दू दर्ग वैक-मन्दिरान प्रपुर बालको बल्ह्य की । स्वयं पैकानो क्रम-विवासी कुरुवसाई क्रमीरको स्मृतिमें विकासी कृतुकास्तावर, कृतुकरोतार साथि रचार्से नगनानी भूक भी । अनेकी भूगुतकार्तिवर्ते सरावित स्थानीय दिगा भीर कैनमन्दिरोची बानदी सनी है। पुरुषनीबार व सन्य इवारतीर्ने सी सनेन दिन्दु और वैय-पन्टिएस यामानकेर बान वाले । अवनेरको वर्गी नववित्र हो। बहुद्वि कुछ विकास जैत-सम्बद्धि ही हहूद परिवर्तित करके भी कार्चवर कार्र जन स्वामीक थी बवेजों सुन्दर वैक्-वर्गरोने मधारवेरीले क्रफारीन बनेड क्लबनल इवारते दनी । सालेशके भागेनर मी हाना चारतीय ही वे फिन्तू बनावटके कीविक किहान नुक्तमानी में । मता इस प्रकार नुकार नुकारतीके सम्बद्धे ही मास्टीन नुस्करात कवाला की विकास जरू हो तथा। जुलुक्किम क्लके बार क्लब पर आध्यस्य (१९११ €) पुरुषान हुआ। यह बनोज ना करा पुरु हो ज्योगीं को भरणूर करके ऐस्क्वा पूजान और शक्तद स्वयुद्धांत इत्युवनिय (१९१९-१९१६ हैं) को यस क्यान क्यानुंबा सुनेतार ना सुन्यान वन की।

कर्तु व पुराचा मानि मुस्तिव बीर पुत्रवी मुकान शरदार वी वसके प्रवट

भारतीय इविदासः पुत्र रहि

नारतीय बनता और धनाबोने हुम्बन्ने श्रम्पत्र होनेनाका धीवन वार्यंत्र हैं यो। अमेतता स्वीक्तर कर केनेश्तर थी हम जर्मकर बन्ध्यपाधेत्र गर्म पाना वर्षत्र वास्त्र न का बहु बारतील बीर प्रामीनी वाजी स्वामान करने और तर रितारे थे। दुनतिन्त्री वृत्तान्त्रोत्री रूप दिस्ती वीरी बन्ध्यापाधे तथा स्वत्रे विशेषके स्वित्त्य प्रारतील वृत्तान्त्रोत्री प्रतिद्वन्द्वी थे उनका उसने दमन किया और उत्तरी भारतके बहुमागको अपने अधीन किया। यह एक योग्य 'यायी एवं जुशल शासक था। इसके समयमें भयकर मगोल सरदार चगेजुखाँने मारतपर सर्व-प्रयम आक्रमण किया विन्तु इल्त्तुतिमशको चत्राईसे यह सिन्यसे ही नापस छौट गया। इस स्लतानने ऐवक-द्वारा प्रारम्भ की हुई कृतुवमीनार आदि इमारतोका परा किया, अजमेरकी विदास मसजिद जैन मन्दिरोको तोडकर धनवायी और दिल्लोमें अपना मज़बरा बनवाया। इल्तुतिमशका पत्र रुक्तुद्दोन लयोग्य और दुराचारी या अनएव कुछ ही महीने राज्य करनेके वाद सरदारोंने उसे मारकर उमकी वहन सुलताना रिजया बेगम (१२३६-३९ ई०) को गद्दोपर बैठाया । वह योग्य और बुद्धिमती थी, पुरुष-वेपमें ही रहती थी, युद्धोमें भाग लेती थी, किन्तु मुछ सरदारोंके प्रेमपाशमें पष्टकर उसने अन्य सरदारोंको अपना विद्रोही बना लिया और जीवनसे हाथ घोया । तत्कालीन मुसलमान इतिहासकारोने उसकी वही प्रदासा की है और उसके पतनका कारण उसका स्त्री होना लिखा है। उसके बाद चसके माई बहरामने और फिर एक भतीजेने थोडे-घोड़े समय तक राज्य किया। ये दोनों हो निकम्मे शासक रहे। तदनन्तर इल्तुतमिशका ही एक अन्य छोटा लडका नासिक्होन (१९४६-६६ ई०) सुलतान हुआ। उसके एक मुल्ला राजकर्मचारी मिनहाज सिराजने 'तदकाते नासिरी' नामका प्रथम भारतीय मुसलमानी इतिहास-प्रनय फ़ारसी भाषामें लिखा। सुलतान नासिरुद्दीन एक बहुत सीघा नेक और धर्मात्मा व्यक्ति कहा जाता है। समस्त शासनकार्य उसके श्वसुर एव प्रधान मन्त्री उलुगुर्खी यलवनके हायमें था। उसीको सुलतानने अपना उत्तराधिकारी भी बनाया। नासिरुद्दीनकी ओरसे बलवनने भी हिन्दुओंके विरुद्ध अनेक जहाद किये. असस्य काफ़िरोंको मारा, कितनों ही की मुसलमान बनाया, उनके मन्दिरों और मृत्तियोंको तोड़ा, उनका धन छूटा और राज्यकोप भरा । मल्ला इतिहासकार इन जहादोका वर्णन करते अघाता नहीं। इस कालमें भी संगोलीके कई साहत्रमा हुए १ साहीर एक बन्दोने मूर-बार की । वसीवर समस्पने बीजान्त्रप्रदेशकी व्यापी जीर सवित्र स्थान दिया।

स्तार नैतिके यह कारचं (१९६१-८६ र्ड.) में दुर्वजन कर स्वानंत स्वानंत स्वानंत कर स्वानंत स्वानंत कर स्वानंत स्व

क्तपेंन्ड क्लेफ नुबलगान बन त्यी । वंदाकरें के ती बाते पूर नुकराजीके

मुस्तार बनाय विकाद बंदन बार्ड कर रहर (१६८ दें कर परते हैं) करनाने कार्न कुनार जार्थ और रूप एवं है। जाराविकों में राजनेवार्थ निकृत नहीं करण जा। यू माने राराव्य करनानेकार्य स्तेर में कुन करन रखना था। मेरीमीन तर्य नाते हुए तर्यक कर स्त्रीय पाराविकींक कर सहित कर हुए तर्यक कर हुए स्त्रीय पाराविकींक कर सहित कर हुए तर्यक कर हुए मेरीमी बात दिन्दा किए मुक्तारियों की अधिक वाम्युर्गक कर्यक्ष मेरीमी बात दिन्दा किए मुक्तारियों की अधिक वाम्युर्गक कर्यक्ष मेरीमी बात दिन्दा किए माने स्त्रीय हैं रिजे कुमार्थ पाराविक्य मेरीमी कर कर कर हैं किए क्यार्थ मेरी कर स्त्रीय और अध्याप्त कर्यक्ष कर्या। बक्या क्यार्थ कर कर है के स्त्रीय कर स्त्रीय क्यार्थ कर है। स्त्रीय कर कर क्यार्थ कर स्त्रीय कर स्त्रीय और स्त्रीयक्ष स्त्रीय स्त्रीय क्यार्थ क्यार्थ कर स्त्रीय क्यार्थ कर स्त्रीय कर स्त्रीय क्यार्थ कर स्त्रीय क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ क्यार्थ कर स्त्रीय क्यार्थ क्यार्

प्राप्त था। बड़ १२९ है वें क्यते मूर्यन वसके बाब इन देक्स मन्त हुया। इन गुल्पानीका चान इस्ताव और गुल्बानीके कि ही बा त्यार और गुजानका बान भी बन्हीके किंद्र था। बार्सा बन्ही

मतार्थाय इतिहास एक प्रति

आसेट क्षेत्र और भारतीय जनता आसेट मात्र थी।

खलजीवंश (१२९०-१३२० ई०) -- कैकुवादका वध करके सरदारो-ने समानाके हाकिम वृद्ध खलजी सरदार जलालुहोन फिरोज (१२९०–९६ 🕏) को सूलतान बनाया। अगले ही वर्ष दिल्लीके आस-पास भीषण अकाल पडा जिसमें अनेक भारतीयोने यमुनामें डूबकर प्राण दे दिये। फिर मगोलोंका आक्रमण हुमा। उन्हें सूलनानने घूम देकर वापस स्रोटा दिया किन्तु उनमें-से कुछ मुसलमान बनकर यही बस गये और नव-मुसलिम कहलाये । इस सुलतानने मिदिमौला नामक एक मुल्लाको मरवा हाला, इससे मुल्ला मौलवी महक उठे। वैसे वह नम्न प्रकृतिका था। हिन्दु आपर उसने अधिक अत्याचार नहीं किये प्रतीत होते। सुलतानकी नरमीके कारण राज्यमें ठगोंका जोर वह गया था। १२९४ ई० में उसका मतीजा एव दामाद अलाउद्दीन सुलतानको अनुमितसे मालवा विजय करनेके लिए गमा किन्तु तदुपरान्त दक्षिणमें घुसकर उसने देविगिरिके बादव राजा रामच द्ररायको भी पराजित किया और लूटका विपुल घन लेकर वापस लौटा । कड़ामें प्रेमविह्वल वृद्ध सुलतान यगस्वी उत्तराधिकारीका स्वागत करने गया तो उसीके हाथों छ नसे मारा गया।

अलाटहोन खलजी (१२९६-१३१६ ई०) ने लूटके घनको सर-दारोमें बाँटकर उन्हें अपनी आर मिलाया और अपनी स्थित सुदृढ एव सुरक्षित करके अपने बिद्रोहियो एव निरोधियों का गर्न को कुचल हाला। १२९७-१३०५ ई० के बीच मंगोलोक कई आक्रमण हुए, एक बार तो वे दिल्लीपर ही आ धमके, किन्तु छल-बल, चतुराई और घूस आदिके प्रयोगस सुलतानने उनसे नाण पाया। १२९८ ई० में नव-मुसलिम मगोलोंक विद्रोह करनेपर उसने सहस्राकी सख्यामें उन्हें मरवा हाला। उसने स्थय तथा अपने मिलक काफ़्रूर, उल्लाखों, अलपखां, जफरखां, नसरतखां आदि सेना-नायकोंके द्वारा राजपूतानेके रणयम्मोर (१३०१ ई०) और विसीड (१३०३ ई०) जीसे प्रसिद्ध दुगोंको अधिकृत किया। राज- पर बच्चेरो विश्वित्यो बाह्य पर व्यावक वाचे का है। होरें हैं वे प्रथ वरिकेश परिवार वाके वृहराज्ये कार्य वाह्य वाह्

रत बीर- बरस्त बीरताने एके बीर-बलात बीहर-द्वारा अस्ते रिवर्डे

बल्लीय इनिहास स्वर्धाः

कर लो घो और विद्वानोका आदर करता था। सुप्रमिद्ध अमीर खुनरो उमकाराजकवि था। राघो और चेतन नामव दो ब्राह्मण पण्डिनोंका भो मुलतानके क्रवर पर्याप्त प्रभाव रहा, उमका एक हिन्दू मध्यो माधव घा। जिनप्रभमूरिके विविधतीथङ्गल्पके अनुसार मः स्रो माधवकी प्रेरणापर हो सुलतानने अपने भाई उल्पासीको गुजरातको विजय करनेके लिए में गथा। विल्लीका नगरसेठ उस समय पूर्णवस्त्र नामक अग्रवाल जैनी था कौर सुलतान भी उसे काफो मानता था। इसी सेटसे यहकर सुलतानने दिगम्बराचार्य माधवमेनको टिल्ला बुलवाया या, सुलतानने अपन दरवारमे चनकाब्यान्यान मुना और सम्मानकिया। राघाऔर चेनन नामक विद्वानोंक साथ शास्त्राधमे जैनाचायन विजय प्राप्त का बतायी जाती है। दिल्लोमें याष्टामधकी गद्दोके सम्यारक भी यही आचार्य थे। इस सुलतानमें इन्टोने कई फ़रमान भी प्राप्त तिये बताये जात है। नन्दिमधि आचार्य प्रभाषन्द्रने भा इसी समयक लगभग टिस्लीम अपना पट्ट स्थापित किया य।। गुजरातके अपने पहले आक्रमणम भडौंचके दिगम्य जैन साचू श्रुत-वार स्वामीम भी इम मुलतानका साक्षात्कार हुआ बताया जा ॥ है। द्वेताम्बराचात्र रामच द्रमूरि और जिनच द्रमूरिका भी उसने सम्मान किया था, ऐसो अनुश्रुति है। उसीके शासन-वालमे मठ पूणचाद्र सुवतानके फरमात एवं महायताको प्राप्त परम जैनाका एक वडा नथ गिरनार तीथ-की सावाय लिंग के गया था। उसी समय पयडशाहके नेपृत्वमें वहौं गुजरातका सब भा आया था और दाना सघान सद्भावपूनक साय साय तीय दादना को या । गुजरातक मूबेदार अलपखौन भी पाटनरे सेट सम्र-घाहको शत्रुजय तीयका जीर्णाद्धार करन एव यात्रामध ले जानेके लिए महर्प सैनिक महायना भी दी थी। इन तथ्योंम विदित हाता है कि विजयाय या विद्रोह दमनाध किये गये युद्ध अयमरोको छाडकर सामा यत इप कालमें भारतीयाका स्वधर्म पालनकी सीमित स्वन प्रता दा जाने लगी थी, और भारतीयोकी राज्यमे यदा-कदा पदादि भी दिये जाने लगे थे।

स्थावर्शकों वर्ष नगिवर्षे जरण सारि यो समाने मेर धीर पार्क स्थापन वर्गी दिस्तीके निर्माणना वार्षे यो सारण किया था। मुक्त स्था क्यानेक दीवास्त्रकरण गी। उसे सारि से तुल कर हो नवें यो तरे साथ परायोंके पूल तो स्थाने प्रकेश रच निर्मारित दिने के कि समाने स्थान करण स्थान करने स्थान सामाने स्थाने कर स्थाने कर स्थाने कर स्थाने कर स्थाने की ना समाने करने करने सामाने स्थान स

क्या कर दिया था। निर्मा वह शिलुमोरा सक वो क्यां मा उपारे में के व बरावातूमी दिख्यी दुमावर को वको का कमा रहर निर्मा के वा वा प्राथमित कर पर पर कि वा कि कि विकास कर कि का बर्गिक पुरित्यम् वणा किया था। वह स्मित बुरुपेक्षि मारके अनिके कुता गोर कर वा रामध्य पर करके कला कुत्यारा का किशा वर्षे करायाच्या कमावित क्षिमा बीर बाच्या पार्था और बोर्च कर किया। पर किया। दुमावर क्यां क्यां कर किया। स्मान कर प्राथमित कराया कर किया। सुच्या क्यां हुए एक्स कर कराया क्यां क्यां क्यां कर किया। सुच्या क्यां कर क्यां क्यां कर क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां कर किया। सुच्या क्यां क्यां क्यां कर करायों क्यां कर किया। सुच्या क्यां क्य

ही नवानुहोन तुबकुमबाह (११२१-११२५ ई.) के बासत तुकतान

12

जारतीय इतिशास एक द[ा]र

राजा दूरपान देवली कहने बान जिल्ला की नी और पारम राज्यका

यना । वस्नुत उसका वाप वलवनका एक तुर्क गुलाम था और भाँ एक जाटनी थी, भारतमें ही इमका जन्म हुआ था, अत वह अय प्रारम्भिक मुलताना जैमा निर्देश कर और घर्माच नही था, साथ ही एक योग्य शासक भी था। थोडे मे ममयमे ही उमने आन्तरिक शासन व्यवस्थित कर लिया और मगीलोंके निरन्तर होनेवाले आक्रमणोंसे राज्यको रक्षा करनेके उपाय भो कर लिये। कतिपय भारतीयोंको भी उसने उच्च पदों-पर नियुक्त किया था। पाटनके मेठ समग्शाहको वह पुत्रवत् मानता या और उमे उमने तेलिंगाने भेजा था। सोमचरित्रगणिकृत गृहगृण-रत्नाकर ग्राय (१४८५ ई०) के अनुसार सूर और नानक नामके प्राग्वाट जातीय दो जैन भ्राता भो उनके प्रतिष्ठित सरदार थे। अपने पुत्र जना। मांको उनने दक्षिण-विजयके लिए भेजा। वारगलके प्रयम युद्धमें तो

जूनाखौ बुरी तरह पराजित हुआ कि तु दूसरे आक्रमणमें उमने ककातीय राज्यका अन्त करके वारगल और वीदरपर अधिकार कर लिया। इस समय मुखतान स्वय वंगालके उत्तराधिकारकी समस्या सुख्झानेक लिए

गया हुआ था। उसके लौटनेके पूर्व हो जूनाखी दिल्ली लौट आया। मुल्तानके स्वागतके लिए राजधानीसे वाहर उसने अपने विश्वासी अनवर ध्वाजाजहाँ-द्वारा एक अस्यायी काष्ठमण्डप वनवाया । मुलतान जब अपने छोटे पुत्र महमूदके साथ उस भवनमें शयन कर रहा था तो जुनाखीके पट्य त्रसे वह मण्डप गिरवा दिया गया और मुलनात व उसका पुत्र उमीमें दवकर मर गये। मुमलमान फक़ीर निजामूद्दीन औलियाका भी इम पर्यात्रमें हाथ रहा बनाया जाता है। गयासुद्दीनने दिल्लीके निकट ही तुगलकावाद नामक एक सुदृढ दुर्ग वनवाया या और उसमें अपार घन सग्रह कियाया। वहाँ उसने अपना मक्कदरामी पहरेमे ही बनवा लिया था।

अस जूनाखी, मुहम्मद विन तुगुलुक (१३२५-५१ ई०) के नामसे मुलतान बना। इम बनका यह सर्वमहान् शासक या। उसका व्यक्तित्य

हरार प्रमुख प्रमुख स्ट्रीय दिवसीके सरसाय



चावने सुनता था और उनत विद्वानोंसे स्वय भी बाद करता या।

विविधतोधकल्पके कर्ला जिनप्रमसूरिका सुलतानने सम्मान किया बौर उन्हें कई फरमान टिये जिसमे उन्होंने हस्तिनापुर, मयुरा बादि तीयाँ-की समघ यात्राएँ की और अनेक धर्मोत्सव किये। राजा-मनामें उन्होंने वाद विवाद भी किये। उनके शिष्य जिनदेवसूरि बहुत समय तक सुलतानके साथ रहे और सम्मानित हुए। इनके कहनसे सुछतानने कन्नान नगरकी महावीर प्रतिमाको दिल्लीमें स्थापित करवाया । यह प्रतिमा कृछ दिन तुगलकाबादके शाही खजानमें भी रही। एक पोपधशाला भी उस समय सुलतानकी आज्ञा और महायतासे दिल्लोमें बना । मुलतानकी माता मसदूमेजहाँ वेगम भा इन जैन-गुरुआका आदर करती थी। जैन यति महेन्द्रमृरिका भी मूलतानने सम्मान किया था। पाटनके शाह समरसिहकी सुलतान भाई-जैसा मानता था और उमे उसने तेलिंगानेका शामक नियुक्त किया था। ज्योतियी घराघर भी सुलतानका कृपापात्र था। १३३४ ई० की एक जैन-प्रन्य प्रशस्तिमे दिल्लीका नाम योगिनीपुर मिलता है। राज-घानी तुगुलकाबादके धाही किलेमें ही 'दग्वार चैत्यालय' नामका एक जैनमन्दिर त्रिद्यमान था जिसमें १३४२ ई० में उस चैत्यालयके निकट रहनेवाले पाटन निवामी अग्रवाल जैन साह सागियाके वशजीन एक महान पुजीत्मव किया था । इन लीगाके गुरु काष्टामधी जयमेनके दिाव्य भट्टार्क दुर्लभनेन थे। मूलतान भी उनका आदर करता था। इस अवसर्पर -अनेक ग्रायोंकी प्रतिलिपियों करायी गर्यी जिनका लेखक गन्धर्वका पुत्र पण्डित बाह्छ था। इस मुलतान के समयमें दिल्लीमें निन्दसंघक पट्टाधीश प्रसिद्ध मट्टारक प्रभाचाद्र थे जिनसे सुलतान बहुत प्रसन्न था।

अपने शामनके प्रथम वपमें ही इस सुलतानने अपने राज्यके जैनियो (सयुरगान = सराओगान, श्रावकों) के हितार्थ एक फर्मान भी जारी किया था। १३२७ ई० में ही सुलतानने दक्षिण देशस्य दीलताबाद (देयगिरि) को राजधानी स्थाना तरित करनेका निश्चय किया और रिश्वीको माली करनेवा हुनन है दिया। सम्बद बन-बनवी हुन्ति हुई रिन्दु प्रजीव बाइला अही हुना। हो १३९० ई. में ही जनने झारवतुरु बोदनसारा कल काके बांबन भारतका मंत्रीकड बहुमान मी. मुक्तवाणी माननके अन्तरन चरित्रतित तर नित्रतः। मनोक्रके आज्ञानके नारन भूनवालको गुरुता कत्तर आला पता और पुत्र देशर हो कक्ष्में अंगोर्केले प्रैका स्टाना । इंगन और जैलनर माहनम् करनेत्री बोजवार् वी दव नुस्तालने बनावी . विन्तु दोनोने ही लनकन १हा । १९४ . ई. के अर्थ-वर किर दक्त सिलीनो क्षोडकर बीमताबादको राज्यानी बनानेना बयल रिना बीर इब बार में रिक्स हुता । इनके धावन-रावतें क्रांप-पबनें जीवन दूरशान पड़ा सबस्य प्राची मूनों कर वर्षे। संबोधिने भारतको नुक्यानको सटक्या कोजनाको स्वरूपको शतकास्त्रा और राजवानी-परिकास कारिके सारच राजकीय खाली हो नवा था अल्ल क्यते नोते-नांदीके स्थापने धांने और पीतानकी प्रधीक तुता पनानी पाड़ी । यह बोजना जी विषय हुई । क्यर पाइम-जनस्या जी नरी-न्यस्य हो नदी । स्टिन्स श्रेष्टाल पश्चिम साहि बालानको निवित्य साहिती निर्देश होने तमें जिनके दवन करनेके जनतमें बनका बीचन बीटा बीर किर भी बनके बन्दतः स्वतन्त्र इति भीर बालामके किना-बिन्य होनेरी स्य न रोज करा। इब प्रकार विक्रान् मुनोन्न वराक्ष्य और बहुरेस्य क्षेत्रे हुए भी भूदम्मद पुत्र सुक्ष के क्यू मी, महति पुत्र देन - वत्र ने निकार देवी दिवस परिस्तात बलान कर वी कि बच्चे तत बोर विजिल क्योंने करने बचुनी-बचु रीख पहने करें नह विकिन्त-वैद्या हो नवां क्यांची प्रतिदिशा परूप करने और मन्त्री धनुवी एवं विरोधिकाके निर्माणीय रक्ततातम् वह कुर नवा । व्यवस्थानं भृतस्थानं इतिहासकारं विवास्तर्भनं बरनी सिक्या है कि क्षेत्र हो बढ़के विकार निश्चेष्ठ करने नहीं अपने में भीर मुक्ताल कर्नुं कडोरचे कडोर वस्त्र वेते नहीं जबता या । इब अकार कर विश्वके निवीदका दाल करतेके सरासर्वे का सिन्तुनरके कियाँ

छावनी टाले पढा था तो बोमार पढ गया और वर्डी १३५१ ई० में उसको मृत्यु हो गयी।

यह निम्सन्तान था अत उसका चचेरा माई फ़ोरोजशाह तुग्रलुक (१३५१-१३८८ ई०), जो उस समय छावनीमे ही उपस्थित था तथा बडा सूवेदार था, मभी उपस्थित हिन्दू एव मुमलमान सरदारोके आग्रहमे गहोपर बैठा और सेनाके साथ दिल्ली छीटा । वहाँ वृद्ध नगरपाल ख्वाजा-जहाने एक शिशुको सिहासनपर विठा दिया था, अत विद्रोहके अपराधर्मे चन दोनोका वध करा दिया गया । १३५८ ई० में फ़ोरोजन वंगालपर आक्रमण किया और एक साल तक युद्ध चलता रहा, लाखो व्यक्ति मारे गये कितु वह सूबा प्राय स्वतः न हो यना रहा और सुल्तान दिल्ली लौट आया। १३६० ई० में उसने वहाँ फिर आक्रमण किया, पिन्तू पीघ ही सिघ हो गयी और वगालका मूबा पूर्णनया साम्राज्यसे वलग हो गया। दक्षिणको फिरसे अघीन करनेका उसने प्रयत्न ही नहीं किया, विक्ति यहमनी मूलतान और माबरके सुलतानकी स्वाधीनताको ही प्राय स्वीकार कर लिया। १३६१ ई० में उसने सि घपर आक्रमण किया। प्रयम बार तो अपनी भारी हानि करके उसे गुजरातकी ओर हट जाना पडा किन्सु दूसरे आक्रमणमें सिन्धका शासक पराजित हुआ और स्लतान उसे बादी नरके दिल्ली ले आया, फिर भी सिघका सूबा उसके अधीन न हुआ। इसके उपरान्त फीरोजने युद्ध एव आक्रमणोको तिलांजिल दे दी और अपने सकुचित साम्राज्यपर शान्तिसे शामन करने लगा। वह अपने मजहवका वहा प्यका था, मुल्ला मौलवियोका बढा आदर करता था तथा उन्होंके परामधासे क्रुरान घारीफ और घारीयतके अनुसार राज्य-काय करता था। आत्तरिक शासन प्रयन्थ सब उसक मुयाग्य सन्त्री खौजहौंके हाथमें या जिसकी मृत्युके बाद उसीके पुत्रने वह कार्य सम्हाला । सुलतान स्वयं भी नरमदिल था । अपराधियोको भीषण दण्ड और नाना प्रकारकी यात्रणाएँ देनेकी प्रधा उसने बन्द कर दी।

वनने क्रिनुबोचर कविया नर मनाना को मुतकनान बनवा स्वीरा कर हैते में चल् वह एत करने मुक्त कर देखा जा। इन हवार सक्तरना और सन्याचारके स्वानमें भूत और जनका क्षेत्र देकर कनने मुत्तनवानोत्री नक्या-वृद्धि को । वालीर बचा और ग्रहानोक्स प्रवाली की वंपने प्रोतलहरू विमा । बयने मुख्यमान वनीमी और वेदाओरे निए वृत्तियाँ हीं औ सगरमानात सिए प्रकास । लालाई तथा बरस्तान मुक्ताई । वह नहुर पुत्रो ननकनान का और धिमा कार्रि कच्च मुनकनानी बन्दरावीके वर्ट वी वैना हो बर्नाहरू वा बैना कि द्वित्तुनीरे प्रति । एक बद्धामको बन्हे वित्या समया दिशा हुक मन्दिरों दूर मूर्तिगोंना थी दुरशाना तथ नवीन सन्दिरोके निर्मानगर प्रनिवश्य क्या दिया। सन्तानीकीयोहि निगन्तर पद बाइछ मुजननात मुक्तात वा । देवने वी मान्ति प्री प्रशा भी स्पेश्राकृत सुनो को । नवरी और बमारवोके विमालका त्री स्वे बीक वा बीतपुर दिलार धीरीजाबाद बादि सबरोता क्यां विवर्त किया बनुनाको नद्वर न्तिकक्यानी कई बीच बनवाने जनेक बननिर्वे क्रिके वास्कान्त्व (विकासन) साहि वरवाने । वेच्छ और धोराने स्मीत-नगरनेली चन्द्रशासर यह रिल्मी के नगा। मेन ननिरतंत्रके वहारह प्रभावत्वती की दिवस्तर कृति के जगमें भाने नडकर्ये नक्तावा का । क्या माता है। कि मृतिको इब अपनरपर बाज बारम करने पत्र में और ठाउँने क्लर बारतके सम्बद्धारी बहुएक प्रकार प्रमुखी हुवा। किन्दीने

सहारकोय करियों खुने हो। स्वाधिक हो चुनी थी। तुम्मान बीर वस्त्री सेन्सीमें मुंगिके वर्षण दिने मीर तमामा दिया। तुम्दीर प्रत्यीवपार्टिया भी दत्र तुम्मानी तमामा विचार कर्याल स्वाद है। उन्होंने स्वाधिक तमामा विचार त्यानी में मारे प्रदानों के तिल्ह दिन दिन्दू दिवाली है। तमामा वालानी सक्त्राम वीमानी कर्तित्वाल केंद्र (तमुद्दान) दिवाल भी है। इस मुक्तानी सक्त्री रामानामा रहिताल वर्षण तमा है भी दिनार्द्रीण वर्षणी नामक इतिहास ग्राय भी उसीके वाश्ययमें लिखे गये।

१३८८ ई० में ८० वप की अवस्थामें फीरोजशाहकी मृत्यु हुई और उसके मरते ही राज्यमें अव्यवस्था एव अराजकता उत्पन्न हो गयी। सव सूवेदार स्वनात्र वन बैठे। मित्रयोंके पह्यात्रोस एकके वाद एक कई नाममात्रके सुल्तान हुए। एक माथ कई-कई दावेदार मी चल्ते रहे। अन्तत फीरोजका पोता महमूद तुगलुक नाममात्रका सुलतान बना रहा। उमके समयमें १३९८ ई० में मध्यएशियाके मवगिवत्रशाली एव रवन-पिपामु अमोर तैमूरलगने भारतपर आक्रमण किया। पजाव, दिल्ली, मेरठ, हरदार आदिको लूटता-पाटना, असहय नर-नाग्योको तलवाग्के घाट उता-रता, यह भयानक नर-महारक देशकी रही-सही दुदशाकर गया। अब सर्वत्र अराजकता, दुव्हाल, भुत्वमरो और त्राहि-त्राहि मच रही थी। तुगलुकोके नाममात्रके राजत्वमें १४१४ ई० तक प्राय यहा हालत चलती रही।

सैयद्वशं (१४१८-१४५० ई०)—१४१८ ई० में पजावके सूवेदार खिळाखांने, जो अपने-आपको संयदवशमें उत्पन्न हुआ कहता था और तैमूरलगका प्रतिनिधि घोषित करता था, दिल्लीपर अधिकार कर लिया। दिल्लीके आस-पासके थोडे से प्रदेशपर उसका राज्य था। उसने और उसके तीन उत्तराधिकारियोने न अपने आपको सुलतान घोषिन किया और न अपने नामके सिक्के ही चठाये। सैयद मुवारकशाहका एक मन्त्री हिसार-निवासी अग्रवाल जैनी हेमराज था जो भट्टारक यश कीर्तिका शिष्य था। इस वशका अन्तिम शासक अलाउद्दीन १४५० ई० में पदच्युत कर दिया गया और वह दिल्लीका परित्याग करके वदायूँमें जाकर एक साधारण जागीरदारकी तरह रहन लगा।

लोदीचश (१४५०-१५२६ ई०)—अफ़्ग़ान सरदार बहलोलखी लोदीने, जो मैयदोंके शासनकालमें पजाबका स्वतन्त्र सूबेदार बन वैठा था, १४५० ई० मे दिल्लोपर अधिकार कर लिया और अपने आपको सुलतान घोषित कर दिया। उसने दिल्लीका जो छोटा सा राज्य बचा था उसमें

न्द्रमोत्रके कराल्य क्रमरा पुत्र निवासको सुन्तराल निरम्बर बाडी (रेप ९ १५ है) दिल्लीके निरामगार बैटा। बर बन बंबरा त्रवंदे समिक बोर्च और पश्चिम्हाली पानक था। किन्तु बनकी ती राज्य मिता बनाव बाक्या बुबरान बहुनरी बारि वृश्ववारी राजी और येवाक न्यांत्रवर, विकासकर आदि किन्तु राज्योंके के विभीने जी नक्ष, ष्टिकार या चनुविषे विद्येष साहित्व नहीं थी । सक्ते शौनपुरने साले मार्ट-को निकासकर को निरूपी राज्यके निका किया और विदारके सुवेकी औ बपने बचीन किया । बैदावरा राख्य दुवन । सक्तिवरमा बार्गासङ्ग तावदः नाक्यारा नातिरहीन और पुत्ररात्रशा महनूर देनहा सनके प्रवस प्रतिहती रहें । काफ बाव बनके बॉर-नेंच बोर बुद चनडे रहे । किर वो निकन्तरों किन्मे राज्यको प्रतिद्धा पूछ बना वी । **बच्चने ब**त्रमस्य कि के बनाव्य तथ मानराका निजटकर्ती स्थान निजन्दरा बनीने बाज्ये बनित हुना । तन् र्दे में बनीके नक्तमें एक अबंद्यर देख-क्यारी दुनमा बाचा मा वह मुक्ताम अपने वनका बहुद एकाली का जिल्ह्योंके प्रति बातानकी नव्यक्तिम् वर और मुख्यमानी कानुस्तर अनुसरम् तरहा दा । इस बार

नपुरावरं बाळनम् वरके वर्डाके मन्तिराँकी हो। उपने होदा और बनके स्थानके महर्किर बनवावी विकास सामग्री को बहुत दिस्तवस्थी थी। कर्णाटकके बुछ तत्कालीन शिलालेकोंने पता चलता है कि वहाँके महान् बादी एव वक्ता प्रसिद्ध जैनाचार्य विशालकोत्ति मुलतान सिकन्दर लोदोको राजसभामें आये थे और उसके द्वारा सम्मानित हुए थे। सिक-दरके राज्य काल्यमें अत्यधिक सुकाल था, सभी पदार्थ अत्यत सम्ते थे और अस्य साधनवाले व्यक्ति भो सुखन रह सकते थे, ऐमा उस कालके इतिहास-ग्रन्थींम पता चलता है।

उसना पुत्र इप्राहीम लोदो (१५१७-२६ ई०) निदयो और अयोग्य वागक था। उसके ममयमें भी बम्नुएँ अत्यधिक सम्ती थी किन्तु उसन अपनी उद्घडताम अपने अफग़ान अमीरोंका कष्ट कर दिया और उनस निगन्तर लड़ता-झगडता रहा। जब कभी उनका अपने हाथमें कर पाता तो उनपर बड़े निदा अत्याचार करता। धुन्य अफग़ान सम्दारान पजावक मूबदार दौलता लौ लादाको अपना नेता बनाया और उसने काचुल्के वादकाह बाबरको भारतपर आक्रमण करनेना निम प्रण दिया। बाबर आया और १५२६ ई० मे पानोपतको प्रसिद्ध रण मूमिमें इष्टाहोमको विवाल सनावो उसने पराजित किया। इब्राहोम मारा गया और उसके माप हा लादोबंदाका अन्त हुआ। दिल्लीमें मुगल्यदाको स्थापना हुई किन्तु अस्थापो रही। १३ १४ वप बाद ही बाबरके उत्तराधिकारी हुमायूँ-को एक अन्य अफग़ान सरदार देखरौन निकाल बाहर किया।

स्रियंग — (१५४०-१५५५ ६०) — लोदी मुल्तानीमे शामनवालमें पूर्वी भारतम अनव अधस्यतात्र छाटे-छाटे अप्रगान अमीर उत्पन्न हा गये थे। उन्हींम बिहार प्राप्तस्य महसरामका जागीरदार इसन था। उनका देटा परीए अपनी सीतारी मीचे दुस्पवहारम निद्वर घर छोडवर जीनपुर साला आगा। वहाँ उम तानहार गुवक्ते योध ही समयमे शामन एय राजनीति-सम्बन्धी विविध शान और अनुभव प्राप्त निया। छोटकर उपन अपन बापया जागारमा बहा निवृण्याम साम प्रवण्ण किया और उस अपनुष्त वापना जागारमा बहा निवृण्याम साम प्रवण्ण किया और उस अपनुष्त वापना क्या रिया शामरा वाष्ट्र साम प्रवण्ण विवस परिस्थितिये

तमा बढके चएराना हुवार्यूनी दुर्वसताबीने चनन पूरा नाम कराम। मुनार और भारताबक मुद्द दुवीतो अस्तिकृत करके उसने मने स्टें मन्दर्भ विद्या पर सपना संविधार क्या विद्या और पहने में जो दन विर रीन्यादम् (५३९- ५४५ ट) के मानने जाने-नारणे नुनठान पाणित किया । इस में धैरसाहको इस प्रमुक्ति सेने नडन कर नवता का जनत विद्यारत (१ ६८ ई में) अतामक विकासका कुमारके पूर्वता क्रम क्रि. नदसम्बर म्याना असून्य सबद बनावती राज्यांची नीवम बाच नेश दिशा अध्यक्तन १ दूर है से चीनाय गुढ़ते छैलाए में इस र्युका सुरी सं परनांत्रण किया जनकी केना लिए दिनए का सरी ी र पारंप हुन बाल बन्धारण धाना अपने बार समीनके सुनी दम कि परादिस दिया परिमायन्त्रकत हमायेंशे पारतायन वाहर नाम बाना पण औं ये शाह हिण्योचा गुजवाना बनावर ।ज्य करने कता पत्रारुप काजनका कविकार हो नग सर वह राजनुकन्य मानवा बीर मुन्दनराश्चन्न दमनमे नारन हवा - श्रीन नगढ भीतर वनन अनेक यह सर । बदस्थीरक ब्रह्म इन सु दानन वर्शन प्रतिक वैन वैद्यान रेपा परिवारत बाजान विका बा । सम्बन्दका इन वैदर्ने मुस्तातका इमात्र की विदा था । अध्यमारतये रावमानक वृर्वेश स्थापन करनेये बनत दिव त्रवात करक वर्षणा धापूर्व वेताला प्रत्येशाय वर्ग रिया । १५४५ है ज आसंग्रहे इवेंपर शास्त्रण करते हुए यह स्पर्व BITTET BEST A

प्रस्तात ५६ म री बोजा और पुरोग छैन-नंबाहब हो बही जा प्राम्त-सम्भन्ने भी निमृत को। बन्ती प्रशासकों डोटी-नी बाधारी बन्तों भी बदी हिन्दे के बुंब का प्राप्तकों बुक्त तिथा बन्ते स्रित्त ट्रेंडरमच्या बहुम्म्बने बन्ने मुन्ति ताथ बोन करतरे एवं बोन्तीया बन्ती-बन्ता विकार विकार विकार सम्बन्ध बन्तरी

अध्याय र

पूर्व-मुगलकालके प्रादेशिक राज्य

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है मुहम्मद सुग्रलुक समयमे ही दिल्ली-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा या और अनेक नवीन एव स्वतन्य मुसलमानी राज्य यत्र-तत्र अस्तित्वमें आ गये थे, जिनमें वगाल, जीनपुर, गुजरात, मालवा एव कदमीरके राज्य और दक्षिणका बहमनो राज्य

चंगाल (१३४०-१५७६ ई०) — पृष्टमय पुग्रनुत्रके समयमे वगालके मृवेदार फ़ख़रहीनने १३४० ई० में विद्रोह मरके अपने प्रान्तको साम्राज्यम प्राय पृथम् कर लिया था। १६५३-५४ ई० में फ़ीरोज़शाहने वगालके मृवेदारका अधीन मरनेका विफल प्रयत्न किया था, १३६० ई० में फिर उमने एक प्रयत्न किया और अन्तत उमकी स्वतत्रता स्वीकार कर ली। तमीसे लेकर अकवरकी विजय पयात मृवेदार फख़रहीनके बंधज सिकन्दरशाह (१३६८ ई०) आदि जो अरवदशीय संयद जातिक से स्वतत्र मुलतानोंके रूपमें उस प्रात्तपर राज्य करते रहे। देशके अर्थ राज्योंके साथ उनके प्राय कोई युद्ध नहीं हुए कि तु तत्कालीन सर्म

मुसलमानी राज्योकी भाँति गुष्त हत्याएँ, गृह-कलह, उत्तराधिकार सघर्ष पड्यन्य, विश्वासघात आदिसे इस वंशका इतिहास भी ओत प्रोत है धासन व्यवस्था भी प्राय दिल्ली-सस्तनत एव अन्य सभी भारती। मुसलमानी राज्योंके प्रतिकष्प ही थी। उसमें मुसलमानी एवं इस्लामक हित प्रधान था और धासन प्राय नागरिक ही था। असस्य ग्रामीए

गर्भ गराजकायके भावेशिक जन्म

रल्लेखनीय हैं।

वार्षि नारण करके स्वर्षण हो रिक्कोश समान पीनित कर दिन। हिन्तु १५५६ है में स्वरित्तक दुवने करकर और देशकोबार मानित हिन्द प्रताद स्वरण करण और उनके बार हो स्वर्धीक्य कुरिने दिन्दी राज्य कर्षा कर हो नया। देशकाश कृत कर प्रतेत हिन्दी राज्य की सामके ही नृत्यक व्यक्तियाला संदानों स्व सेर सामके तीवनों से मानित है नृत्यक कर्षा राज्य हो होती से करके बार सरकार्य का प्रतास के स्वारण राज्य कर्या राज्य निर्माण कर्या स्वरास्त प्रकार सामन्त्रक कर दिना और सक्यारों को स्वारण क्या

अध्याय १

पूर्व-मुगलकालके प्रादेशिक राज्य

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है मुहम्मद सुग्रलुङके मनयसे ही दिल्ली-साम्राज्य छिन्न-भिन्न होने लगा था और अनेक नवीन एवं स्वतन्त्र मुमलमानी राज्य यत्र तत्र अस्तित्यमें आ गये थे, जिनमें वगाल, जीनपुर, गुजरात, मालवा एव कश्मीरके राज्य और दक्षिणवा बहमना राज्य उल्लेखनीय है।

वगाल (१३४०-१५७६ ६०)---मृहम्मद तुग्रलुक्षके समयमें वंगाल-के सूवेदार फखरुद्दीनने १३४० ई० में विद्रोह करके अपने प्रान्तको साम्राज्यमे प्राय पृथक् कर लिया था । १३५३–५८ ई० में फ़ोरोजुशाहने वगालके सूवेदारका अधीन करनका विफल प्रयत्न किया था, १३६० ई० में फिर उसने एक प्रयत्न किया और अतत उसकी स्वतन्त्रता स्वीकार कर लो । तमीसे लेकर अकबरकी विजय पयन्त सूवेदार फ़खक्द्दीनके वंदाज सिकन्दरशाह (१३६८ ई०) बादि जो अग्वदशीय सैयद जातिवे ये स्वतन्त्र सुलतानाके रूपमें उस प्राप्तपर राज्य करते रहे। दशके अप्य राज्याके साथ उनके प्राय कोई युद्ध नहीं हुए कि तु सत्कालीन सभी मुसलमानी राज्योकी भौति गुष्त हत्याएँ, गृह-कलह, उत्तराधिकार संघर्ष, पढ्यन्त्र, विक्वासघात आदिसे इस वंशका इतिहास मी ओत-प्रोत है। धासन व्यवस्था भी प्राय दिल्ली सल्तनत एवं अन्य सभी भारतीय मुसलमानी राज्योंके प्रतिरूप ही थी। उसमें मुसलमानो एवं इस्लामका हित प्रघान था और शासन प्राय नागरिक ही था। असस्य ग्रामीण

त्रवाणी मुस्तिकर देनेके सांतिरका यात्रको सन्ध कोई निरोप डार्न-काम नहीं था। किन्तु इन तृता राज्योंके नुक्यान दिख्योंके गुक्यानीमें करेया कार्यकारधा स्विक वहिष्ण होते थे।

संवापके पुक्रवापोर्गे वर्त-विक्र हुकेबाइ (१४९१-१५९६) । या। वर पूर्वणी पुक्रवान प्रशास्त्रवाहुम प्रशास कर्मी या। पुत्रप्रत्ये स्वापार्गारे के वार्त करे के प्रशास करे करा या कर किया बीद वर्ताणेजी क्यांनिक त्यां पुक्रवान वर्षा या। वर्षा प्रशास कर्मा स्वाप्त क्यांनिक वीद वर्गापुर्व या। वर्षा त्रा वर्ष के क्यांनिक वा व्याप्त क्यां पुर्व क्यांनिक वा। यू यो प्रशास क्यांनिक वा। यू यो प्रशास व्याप्त कर्मी द्वार्गिक व्याप्त व्याप्त व्याप्त कर्मी द्वार्गिक व्याप्त व्याप्त व्याप्त कर्मी व्याप्त व्याप्त कर्मी व्याप्त व्याप्त

हारा पर्यान्त हुवा और दुवर्ष बारा पता। व विकास इन पुन्तानीचे बाराजावनी विकास वहां, पाँची हुनेजवाइमें कारण वर्ष कीरों पुरादों नवीला, नवरकपादणी बयी पुन्ताचे स्वतित्व बीर कारणहरू करा प्रवासी भीड़ एवं कर सुबब स्वति निर्मा कारण करानून वर्ष प्रवासी भीड़ एवं कर सुबब स्वति निर्मा कारण करानून वर्ष वर्षनीच है। इन्होंने राजवाई होश्ये हैं वै वर्ष क्षितावां निर्मा प्रवास कारण कारण है। इन्होंने प्रवासी में क्षितावां की स्वतावां की विकास स्वतावां की कीरण वाल्या कारण । इन्होंने में के कारण कारणीय स्वासीन कारणीय कारणीय कारणीय कारणीय कारणीय कारणीय किवानों में मीरावां किया। वेचानी नव बीर बीर कारणीय क

जौनपुर (१३९९-१४७६ ६०)--फ़ोरोजवाह तुगलुक्कने अपने भाई जूनखाँकी स्मृतिमें जौनपुर नगर वसाया था। १३९४ ई० में उसके उत्तराधिकारी महमूद तुगलुकने अपने कृपापात्र खोजे सरदार ख्वाजाजहाँको मिलकुरुशक्की उपाधि देकर जीनपुरका मुवेदार नियुक्त किया। तैमरके आक्रमणसे लाम उठाकर १३९९ ई० में ख्वाजाजहाँका दत्तक पृत्र और उत्तराधिकारी मुवारकशाह शर्की स्वतन्त्र हो गया। इसके उपरान्त उसके भाई इयाहीमशाह शकीं (१४००-४० ई०) ने शान्तिपर्वक राज्य किया। वह पक्का मुसलमान था, रक्तपात तो उसने अधिक नहीं किया किन्तु हिन्दुऑपर अन्य सुलतानोंकी भौति जोर-जुल्म किये ही। उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमूदशाह शर्की भी सफल शासक रहा । सम्मय-तया इसी सुलतानके दरबारमें कर्णाटकके जैनाचार्य वादी सिंहफीत्तिने बाकर शास्त्रार्थ किया था और जयपत्र प्राप्त किया था। सिंहकीत्तिका समय १४५० ई० के लगभग है । 'अश्वपतेद्दिनतनय-वगाल्यदेशावत-दिल्लीपुरेष्ठ महम्मुद सूरीत्राण'-वर्णन उस कालके सुलतानींमें सबसे अधिक इसीपर लागू होता है। तदुपरान्त हुसैनशाह शर्की सुलतान बना। १४७६ ई० में दिल्लीके सुलतान बहलोल लोदीने उसे पराजित करके जौनपुरसे निकाल दिया और उसने जाकर वगालके सुलतानको शरण ली । वहलोलने जौनपुरका सूबा अपने बेटे बारवकशाहको दे दिया, किन्त् सिकन्दर लोदीने बारवकशाहको भी मारकर जौनपुरको दिल्लो राज्यमें ही मिला लिया। जौनपुरके शर्की सुलतान अरबी और फ़ारसी साहित्यके मारी प्रश्रयदाता थे। उन्होने जीनपुरमें अनेक सुन्दर एव विशाल मसजिदें भी वनवायों जिनमें अटालादेवो मसजिद अति प्रसिद्ध है। इनकी निर्माण-कलामें भारतीय प्रमाव स्पष्ट दृष्टिगीचर होता है।

मालवा (१३८७-१५६४ ई०)—मध्य भारतका वह वहुमाग जो उत्तरमें चम्बल, दक्षिणमें नर्मदा, पूचमें वृन्देलवण्ड और पश्चिममें गुजरात-

क्रपनि वर्णनी संपन्त बाहिके क्रमान्य परकारीके राज्यसानके वारा नवरीका कलार्च हुना । इल्लाहियाने १६वी बाहोके पुर्वार्वने सकसारर मामनम तिया या और तारान्धेन परमार-परेखरी मदीवता स्पेर^{ार} करवेदर बाध्य किया था . १६१ वें में बसावदीत शबसीने मानगरे क्षिपुराञ्चला मन्त करके वसे बालाज्यका एक प्रस्त बना किया मीर नहीं एक नुमसमान मुर्वेश्वर निवयत कर दिया । क्रोशेय सुक्लुपके करिन बजरने रिफानस्या (११८७-१५ 💰) माक्साम सुनेवार या। यर नामनात्रको ही दिल्लीके बनील का बीर ग्रीवरके बाजनको कारान्य नुबद्धन विद्यावरीत बोरी (१४ १–१४०५ द^{ें}) के नामने बनने बनने बारही नाक्ष्याचा स्वतन्त्र नुस्तान भौतित कर दिया तथा बारास्य वरित्याम करके जान्यु (अन्वयंतुर्व) को अश्मी श्रास्त्रामी बनाया । वयके पुत्र बातपन्ती वा 'सरनंदाक्षि' दपनाव सुक्तान होसीएधाइ होरी (१४०५-१४६२ हैं) ने लिताको निय बेकर राज्य आध्य किया सीर मान्यू राम वानीको सुन्दर-मुख्यः क्वलीके सर्वद्रत किया । वृज्यस्तके सुन्तान कार्के बवान क्षण थे। १४ ८ ई. वे नुजरतको बुनवान अवश्वरते वर्ष पर-दिन करके बन्दी कर लिखा किन्दु एक वर्ष बाद मुक्त कर दिया । मार्क्स और पुजरतको बीच नावर्त की विरत्तार मुख चलते रहे, कभी एक स्वाप्ने बोत होती कवी दुवरेको : होरांव बोरीका पुत्र महरमब बोरी (१४३२-१४६५ ई) सरोग ट्रम्पनदे और नवनाये था। ब्यक्ट बली न्यून्त बच्नी (१४१६-१४८१ हैं) वे लिए देवर क्षेत्र साम और स्वत सुल्हान दन देश । बाक्शके बुक्हानीमें वह ब्रव्हिक बीम मार्लि वा । नुद्रध्यके सुक्यान बहुक्यो सुक्याव और श्वास्थलके श्रवसूर्ण

राजे बढके प्रचान प्रमुचे और क्षमके बाद कक्के विरस्तर मुद्र परे। इतिहासकार करिकामें बढके लाग बादन और वरिक्के वडी प्रवेचारी

*1=

बालीय हरिहात । दह परि

वे वेदिन है जानमा पदवाता है। बद्द वर्षर व्यवस्त नुसन्द गरेन विश्वास तक जारी सांस्कृतिक नेन्द्र भी रदा । आसीन सामर्थानी

है। उसकी हिटू और मुसलमान प्रजा समान रूपसे सुखी और सम्पन्न भो। चित्तीड़के राणा कुम्भके साथ उसके जो युद्ध हुए उनकी स्मृतिमें राणाने चित्तीहर्मे कीत्तिम्तम्भ वनवाया और महमूदने माण्ड्में । उसका पुत्र सुल्तान ग्रयासुद्दीन (१४८३-१५०१ ई०) दिल्लीके सिकन्दर लोदी, गुजरातके महमूद वेगडा, खालियरके मानसिंह तामर और चित्तोडके राणा रायमल्यका प्रतिद्वन्द्वी था। उसका पुत्र नासिरुद्दोन (१५०१-१५१२ ई०) भी अपने पिताको विप द्वारा मारकर सुलतान बना, वह बहुत दुराचारी और निर्देयी था। उसका पुत्र महमूद द्वितीय (१५१२-३१ ई०) -इस वशका अन्तिम मूलतान था जिसे १५३१ ई० में गुजरातके बहादुरसाहने पराजित करके मार दिया और मालवाकी अपने राज्यमें मिला लिया। १५३५ ई० में हुमायूँने मालवाको गुजरातसे छोनकर अपने अघीन किया और मालवाके राज्यवदाके ही एक व्यक्तिको जो उसके आश्रयमें चला गया था अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया। मिन्तु हुमायूका अधिकार अल्पम्यामी ही रहा । अन्तत मालवाके बाजबहादुरको १५६४ ई० में बक्दरने समाप्त करके इस प्रदेशको अपने राज्यमें मिलाया । वाज्यहाहर और रूपमतीको प्रेम-गाया सुप्रसिद्ध है।

मालवाके इन सुलतानोंने माण्डूका विशाल सुदृढ़ दुर्ग एव नगर, हिंहाला महल, जहाज महल, बाजवहादुर और रूपमतीका महल आदि सुन्दर राजप्रासाद, मध्य जामामसजिद, होशा गोरीका सुन्दर मक्रवरा आदि अनेक कलापूण दशनीय कृतियोंका निर्माण किया जिनमें माण्डूके प्राचीन जैन एव हिन्दू मन्दिरोंकी सामग्री भी प्रयुक्त हुई। वे धर्म-महिल्णु भी ये और हिन्दू ऑपर उन्होंने धर्मके नामपर विशेष अत्याचार नहीं किये। सुलतान होशाग गोरी अलपखांके समयमें, १४२४ ई० में दिल्लीके मूलमधी मद्वारक शुभवन्द्रके उपदेशसे इस सुलतानके राज्यके सघपित होलीचन्द्र आदि अनेक धनी धावकोंने देवगढ़में सीथकरों और गुहलांकी कई प्रतिमाएँ निर्माण कराकर भारी प्रविद्योत्सव किया था। शिलालेक्समें

पुण्यानको यो बहुत प्रशंका है । साक्ष्माने इस नावमें दिसम्बर मान्यानेके तरित नाहा बीर सैतर्समीके नई पट्ट विश्वमान में । समेक दिला बीर चैन माध्य राज्यमें कुछ। राजकीय वरोपर जी। निमुक्त में जिनके ने एवं बैनबंध बहुत प्रतिब हुआ--गंबर्धन शत्मन तुबैशर विकारति पुत्रजोके नमाने राजनानी मा । क्यका पुत्र नाहर स्वयं स्थितरात्री क्यमान विकानुद्देल क्षोरीचा कभी वा और क्सना व्याई रुव की । बाहर का पुत्र नच्यन भूमतान होर्घन होरीका बहाप्रकान मा प्रवास सन्ती जा ह नंत्र नदा साध्य पुराक्ष और शाम हो नदान् विक्रान वर्ष बाहित्यकार को । काम्बरधन वा कीरव-याग्यनीरवर्कना ग्रांबारवयम कंगीतकान ताधन्तःस्त्रम् वर्ततः निविवदिसम्बद्धं स्त्रूरस्तुर्वं सन्तेनी अस्त्रे रचना नी वो और वह प्रविद्यारिकास्त वहकता वा । स्थानके नवेरे कार्र र्वपरित मनदराजने वो १४३४ ई. वें सत्तक्रवनकी रचना की गी। तम्बरतया बन्दरके ही बोक्स सेव राजक अवस्ति सुकाल का<mark>न्द्रर</mark>ि बक्रमेना क्यी वा और एवं 'क्यूरक-स्थित मी उपाव अप्त वी। इतरा अतीजा पुंबराज भी क्षम्य परपर बाडीम मा वह दि<u>त</u>ा राम वजीर कहनाका मा और आधी निवास मा । १५ - है में करने बारस्यक्रक्रिय गायक आकरमधी दीवाची एक्सा की वी और क्वकी वेरणातर ईस्तरबृरिते सक्ति।तथरितको रचना को थी। वस्तुर्शनके तमको हो १४९७ ई. में भूतकोत्तिके हरिलंडपुरामको एक प्रदेशीयी वैद्युद नगरमें करानी क्यों को । बदा स्तप्त है कि नुक्कनमां पूरेपारी और गुक्तालॉड नाव (क्याप १६ ---१५५ 💰) में गावनाने मित्र बीर वैन बच्ची बस्तवानें वे । इब शतके बनंब वैक-प्रीवर वी वापू व क्षण स्वानीमें पाने कार्य है। कुलाकॉरी वार्तिक क्याच्या सन्तर है रवर्षे कारक की । ग्रजारात (१६९१-१५७३ ई.) या क्वरंतीय जिले दुरान ची नहां बाठा या बीर तिक्रमें काहिमाबाह बरिमकित हैं. माकवानी कॉर्रि

भारतीय इतिहास । एक परि

हो समृद्ध, सुरम्य और उवर प्रदेश रहा है। समृद्रतटके निकट होनेके कारण विदेशोंके साथ समुदी व्यापारका भी वह प्रमुख द्वार रहा है। १२९७ ई० में अलाउद्दीन खलजीके सेनापति चलुगर्खा और नसरतर्खा ने कर्ण बचेलेका बन्त करके इस देशको दिल्ली-साम्राज्यमें मिला लिया था, और सभीसे दिल्लीके सुलतानोंके सूवेदार यहाँ शासन करते थे। १३९१ ६० में जफ़रखीं गुजरातका सूवेदार नियुक्त हुआ। वह नाम मात्रको हो दिल्लोके अघीन था। १४०१ ई० में उसने अपने पुत्र तातार-खौको सुलतान नासिरुद्दीन मुहम्मदशाहके नामसे गुजरातका स्वतन्त्र वादशाह बना दिया। किन्तु १४०७ ई० में स्वय ही उसे विप देकर मार डाला भीर मुजपक्तरशाहके नामसे स्वयं ही सुलतान वन गया। १४११ ई० में उसके पोते अलपर्खांने उसे भी विप देकर मार डाला और अहमदशाह (१४११-१४४१ ई०) के नाममे सुलतान बना । कर्णावतीको अहमदा-वाद नाम देकर उसने अपनी राजधानी बनाया और उसे इतना सुन्दर बना लिया कि विदेशी यात्री इस नगरीकी भूरि-भूरि प्रशसा करते थे। वहमनी सुलतान फीरोज उसका मित्र था तथा मालवाके सुलतान, चित्तीह-के राणा और असीरगढ़के राजा उसके प्रधान राष्ट्र थे। वह निरन्तर युद्धीम संलग्न रहा और प्राप सदैव सफल रहा, फलस्वरूप अपने राज्यका उसने काफ़ी विस्तार कर लिया। हिन्दुओं के मन्दिरों को तोडना, उनपर **अत्याचार करना और इस्लामका प्रचार एवं मुसलमानोंकी सस्या बढाना** सभी सुलतानोंका ख्व्स था, उसका भी था। किन्तु ये कार्य युद्ध और विद्रोहदमन आदि अवसरोंपर, सो भी प्राय दिखावेंके लिए ही अधिक किये जाते थे। सामा यत अपनी हिन्दू, जैन प्रजाके साथ उदारता और सहि-ब्णुताका ही बर्ताव होता था। उसका उत्तराविकारी सामान्य श्रेणीका व्यक्ति था, किन्तु पोता सुलतान महमूद वेगझा (१४५९-१५११ ई०) अपने दोर्घ-कालीन शासन, विशाल काय, दानवों-जैसे भोजन, चारित्रिक विशेवताओं बौर कार्य-कलापोंके लिए दूर-दूर प्रसिद्ध हो गया। राज्यकी भी उसके क्षत्रमें तनस्थिक क्षप्रति हुई। यह बहुर मुख्यिन वा और पुर्दोने अन्यः वर्षत बक्तम वी द्या । कामूलेट, बहुदेश और जुसामुके दुवाँको करने इरवन्त किया । वुशीची चढानठाठे चचने वूर्वगाविन्दोंचो मी इरामा कियु बारवंदे क्यू बाहर क्याक्रमें बद्धमन छा । बन्दलंदे ही सिंदणन करतेकी मारतके कारण बढ़का शिवाला क्यीर विकार जल्मी मी ^{बैडरी} ही अर माठी मी जिल्लाका रख-मार्थ्य केर क्रोब जोजल, कमर तक कटनायी राही बीर बिरने पेडे क्येटकर बॉबनेवाडी मुँडॉने क्ले बंबारका मार्स्स क्या दिया का । बदका राजकति राजकितोहका कर्ता वरवराज वा। इड कुक्तालका काराविकारी विकास का किन्तु कीटा बहादुरवाई (१५२६-६ 👔) बन्तिय तुक्तानीने वर्गीयक महत्त्वपूर्व रहा । वस्ते माकाले महनूर बचनीको पर्यावत करके ६-४ वर्ष माकालो वसने राजनें किसने रखा। १५६४ ई. में बचने विशोह निजय किया और नहाँके गोरोने बोहर करके जनता जन्त किया। किना १५६५ हैं में हरानुंचे वर्षे बुरी राष्ट्र पराजित किया और वहने मानकर शक्तवार्वे परण जी। हुमानुँके सोट जानेपर वह किए काले राज्यपर अधिहाय हो। ^{बह्म} । १५६७ ई. में ११ वर्षको बाजुरे पूर्वगानिकालि जिनके बाग करने वैशी तरिव कर क्री थी, किरशक्षकान्तारा बहुत्युरवाह्यका वस *कर* शिक्स । वर्षे निस्ताचन या । काने बार देवने बराजकता और क्रमशस्य हो। सम्बं च्या कई पूर्वत बारक हुए, हत्यामी और अन्त्रकारिक मोज्याक च्या क्या १५७३ में बच्चरने पुत्रराजको विका करके अपने बाराधार्मी क्या किया ।

पुरारण कुलानों एक्सनों बहुक्सातरों वह आक्रमें क्रिकेंट पुरारण कुलार क्रांतिय था। क्रमेंने बहुक्सात क्रांति क्रांति क्रांति इत्यार क्रांतियों क्रांति क्रांति क्रांति क्रांति क्रांति क्रांति क्रांति प्रमुख्यार केंद्र क्रांति क्रांति क्रांति क्रांतिय विद्यु क्रांति केंद्रकामा क्रांति क्रांति क्रांतियां क्रांतियां क्रांतियां वर्ष क्रेस्टमोंक क्यांति क्रांति क्रांति क्रांतियां वक्रमानी क्रांतियां वक्रमानी क्रांतियां वक्रमानी क्रांतियां

बाह्यीय इविद्वास । एवं धीर

हुछ नवीन मी बने । इस फालमें दिगम्बर आम्नायके लाटवागट सपका -नी इम प्रदेशमें काफी प्रभाव था। १५वीं दाताब्दी तक सूरत, सीजिया, मटीच, ईडर आदि कई स्वानॉमें दिगम्बरी भट्टारवोकी गहियाँ स्वापित हो चुकी थीं और उनमे-से आचार्य संग्लकीत्ति, ग्रह्म श्रुप्तसागर, ग्रह्म नेमिदत्त, ज्ञानभूषण, गुभवन्द्र आदि अनेश विद्वानोने विविध्विषयक विपूल मस्कृत-साहित्यकी रचना की यो। इनके अतिरिक्त जिनेश्वर और भद्रे-व्यरको कचावलियाँ (लगमग १२०० ई०), प्रभाच द्रका प्रभायकचरित्र (१२७७ ई०), मेरतुगको प्रबन्ध चिन्तार्माण (१३०५ ई०), जिनप्रम-सूरिका विविधतीर्थक्त्य (१३३२ ई०), राजदोखरका प्रयाधकोष (१३४८ ई०) आदि महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्राय भी मुसलमानी कालमें ही लिस्ने गये । उपरान्त कालमें भी जैन मुनियों, यतियों श्रीर विद्वानी-द्वारा साहित्य-सुजन होता रहा । १५वीं घतीमें अहमदाबादमें जैन-प्रयोंकी प्रतिलिपियाँ करनेका कार्य कई सस्याओमें घडे पैमानेपर होता था । इमी कालमें बहमदावादके लींकाशाह (१४२०-१४७६ ई०) नामके एक जैन सुघारकने मुनलमानी शासनकालको मन्दिर और मूर्त्तियोंके प्रतिकृष्ठ समझ-कर मन्दिर और मूर्तियोका विरोध किया । उसके द्वारा प्रचालत लुकामत-में, जो कालान्तरमें जैनोका स्वेताम्बर-स्थानकवासी सम्प्रदाय कहलाया, मूर्त्तिपूजा निषिद्ध मानो जाती है। नारायणके पुत्र मण्डनिमद्र (१४३० ई०) अहमदशाहके राजवैद्य ये और चनके पुत्र अनन्तने १४५७ ई० में काम-समृहको रचना को थो। क्तयमीर (१३००-१५८६ ई०)—कइमीरमें १३वीं पाती ई० के अन्त तक उत्पलवशी हिन्दू राजाओका स्वतन्त्र राज्य धना रहा। १४वीं पासी-के प्रारम्ममें स्वातके शाह मिर्जाया मोर नामक मुखलमानने जो अन्तिम पूर्व-सुगलकालके प्रादेशिक राज्य

४३३

ात कृति चार जनक किंदू आर जात राज्यम चन्नवारापर भा आसीत वे । जैनियोंके देलवाटा, आपू, रात्रुजय, निरनार, अन्हिलवाडा, अहमदा-गद आदिके प्रसिद्ध मर्दिर उस कालमें भी अधिकांशत सुरक्षित रहे और प्रशास सनी दन नहां या प्रशासी जाएकर विद्वापन होंगा दर दिया और पालीपात पुरुषात वन देहा । इन स्थान कहा पुरुषात दिवापतर (१८८६ १४) हैं) बता कर, जावापती की सर्थाण था। तैपाले जावनाले जीवापति पालीपती रखा हो गयी कियु विभावते जगावपति विद्यापति पालाशे पुरुषात कर्मपर विद्यापत पितापति कर्मा पालीपति कर्मपति पालाशे पुरुषात कर्मपर विद्यापति क्या और वही पूर्वामी कर्मपत्र चीचन सेता। जावपति बीच वृत्तिमीता हो प्रद हैगा पत्र चार विद्यापति कर्मपत्र विद्यापति क्या कर्मपति क्या विद्यापति क्यानी पुरुषात वैद्यानामति (१४१०-१४५०) । क्यो विद्यापति क्यानी पुरुषात वैद्यानामति (१४१०-१४५०) । क्यो

कारणा प्रस्ता पुकाल की प्रकार की (१९६०-१९४५) के कर सिंद्रम मिराएस था। यह बार प्रीयुल की र क्यार था। वसने दिन्दु की राज्य वरिया कर कहा दिशा कि स्थितिक दिनु दीनों कि दि देशों दरम्य पुका किया और उन्हें करीन मनेत्रार्थ निर्देशियों के बार्ड क्यारियों हो। वसने राज्यों नेत्रार कर का हिएता यह वसने मी का म बारा वा स्वत्यारियों और बार स्थापारी था। वसने बंद्रका और अपने स्थिति बार्युल कर कर की का स्थापारी था। वसने बंद्रका और अपने स्थापार कराने कहा स्थापारी था। वसने व्यवस्था कर कि स्थापार कराने कहा कराने कर कि स्थापार कराने कहा कर की का स्थापार कर स्थापार वसने कहा हुए। इस्पूर्ण क्यारियों पुष्पाई कर वाह की क्यार्थ है। वसने सुरू कर की का स्थापार कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। वसने सुन्द कर की बाराय कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। वसने सुन्द कर की बाराय कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। इसने क्यार्थ की स्थापार कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। इसने क्यार्थ की स्थापार कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। इसने क्यार्थ की स्थापार कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की क्यार्थ है। इसने क्यार्थ की स्थापार कर सरीमा याला हुए। इस्पूर्ण क्यार्थ की स्थापार की क्यार्थ है। इसने सुरू की स्थापार की स्

सामान्ति निका निका। स्वानीतात्व्य (१६४०-१९५६ ई.)—हण्य सानद कर तुर्व य एउटी क्रियापी क्रीतात्वाको मेंतु मानव सहारूपा क्रिय सा । वर्ष प्रदर्भ-गी हानी हानारा करतां हुए। वर्धा यह वर्णनेत्वापरी हानारी करती वर्षा अत्राद्धी कारीम शांत्र करते वह बोध-वर्षक स्वेत करते करा बीर कारीम स्वानीता

नो क्योरका पालक निपुत्त फिया । तनुष्टान्य दश्च देववे आक्रमण राज्य जमा निवास १५८६ ६ - ये यक्तरते तन्त्र करके क्योरको अले १३४७ ई० में जब मुहम्मद तुग्रजुक सामाज्यमें सर्वत्र विष्लव एव विद्राह हो रहे पे जकरखीन दौलताबादपर फर्रजा गर लिया। वह अपने-सापको ईरानमें बहुमनशाह-अरदशीर-प्रगज्यस्तका वंशज कहता था अस. अलाउदीन बहमनशाहचे नाममे दिग्गणपथना स्त्रतत्र सुलतान वन वैठा। उसने हो बहमनी-राज्य और यशकी स्थापना की और कुल्यर्ग (गुन्यम) को बहसानाबाद नामने अपनी राजधानी यनाया। १२४७-१२५८ ई० सक उसने राज्य किया।

दिसाणमें १३३६ ई० में मगमके पुत्रा-द्वारा विजयनगरके हिन्दू-राज्यकी स्यापना बहमनी राज्यकी स्थापनामें प्रधान प्रेरक थी। उत्तर, दिहाण, पूर्व और पिट्चममें प्रदेश विजय करके उनने अपना पर्याप्त राज्यविस्तार कर लिया। अया मुलगनोंकी भौति बहमनी-मुलतान भी कहूर मुसलमान ये, हिन्दुना और उनके धमके विदेषों धनु ये तथा निर्देगों एवं रमविषामु ये। उनके प्रधान राजनीतिक धनु विजयनगरके हिन्दू सम्नाद् थे, जिनके साथ प्रारम्भसे अन्त तक उनके निरन्तर युद्ध चलते रहे। उत्तर और पिचममें मालवा एव गुजरातके मुलतानोंके साथ उनके राजनीतिक मम्बाध कभी मित्र रूपमें और कभी धनु रूपमें चलते रहे।

उसका उत्तराधिकारी मुहम्मदयाह प्रथम (१३५८-१३७३ ई०) अत्यन्त नृश्य हत्यारा था, नरसहार करनेमें उसे आनन्द आता था। विजयनगरके साथ उसके भीषण युद्ध निरन्तर घले जिनमें लासो ध्यिषत मारे गये। इस नरपशु सुलतानको पाँच लास हिन्दुओको हत्याका श्रेय दिया जाता है, देशको जनसख्या अत्यधिक कम हो गयो अन्तत दोना पर्योन यह निर्णय किया कि मुद्ध-बन्दियो एवं युद्धमें भाग न लेनेबालोको हत्या न की जायेगी। राज्यका सुयाग्य मन्त्री सैकुद्दीन ग्रोरी प्रथम सुलतानके समयस हा चला वा रहा था और छठे सुलतानके समय तक उसी पद्यर चलता रहा। उसके कारण आन्तरिक शासन बहुत कुछ सुल्य बहियत रहा।

१३०१ ई. मे १३९७ ई. के बोच २४ वर्जनें बोच मुख्यल नहीगर वैदे। इब कामने निजयमनरका मझार हरिहर दितीय या वह मी मालितित ना बन, दोनों राज्योंके बीच प्रायः बान्ति रही। बाहरी मुनगर कीरोब (१३९३—१४९९ ई.) वा को महत्त्वसम्बद्ध प्रवस्थ ही एक मनीना का कनके राज्यके बारज्यने ही नहाराज्ये हर वर्षण मीरम बसान गरा । यह मुनतान मी वहां वृद्धंह वर्ष हिन्तु-स्वितीः या । वड विजन्तवाके नाव रिल्वर वृद्ध करना रहा । एवं बार वी व्य ^{व्या} नाम शंक विजयमनाचा पेरा काले बड़ा रहा और मुख बन्धीके जिए नवर्षी प्रवेश करवेले को सकत हुआ। जनने ही हिन्दु-करकारीने की निकास निया वा जिनमें ने एक विजयनवरती राजपुत्रारी बदावी बाडी है। गर र्रतारबीकी बार्रास्थ को चारने बहुता था, धराबचा बडा निवस्तर थी. वर्गमारा यो मारो त्रेमी या। बनके हरनमें शिवत देवोंनी तैरारी निषयों भी और बढ़ते हैं कि बढ़ बंग करने बन्दोंनी जारामॉर्ने बार्टकार नर नशक्त चाः सूरेंपणी नारियों इसं अन्य कर्नुमोन्से यह बीमा सीर पंजीतके शारीने बारत करता था। सीमाके किमारे झीरीवाबार वर्ग उनमें बनाया और बार्ड युक्त हुन और महत्त सन्तवादा । पुरस्की वर्णा सरेव बुन्दर प्रमन बनवाने जिनमें बायानवजित्र वर्धनीय है. बीर बागूर्य भारतमें फिन्हों संबोर्ने बर्द्धतीय बनहीं करती है। बडके बनहर्ने बडक्की राज्य अपने परमीत्वयपर था । विजयनगरके काम अपने सन्तिन मुक् (१४२ ई.) वे बद्र वृत्ते तरह बरहीका हुआ जिसके बरहेरे वर्ष चीम ही यर बंबा।

कर्युगः एत पृत्र पृष्णालको सबके साई अवस्थाय (१४१६-१५ ई) में प्रत्यन-सार अध्युन करके सार श्रवन वा और यह लाई पुरुष्ण कर केंद्र। हिन्दु-विदेश कर लावे पूर्वती को भी कर करा । होरिक्की पणनत्त्र बस्सा केंद्रेके लिए कही दिवसकर राज्यर पीला जनकर किया और शिवस्था प्रस्तुके को कर्यों मुझे निके केंद्र कर्योंच लाताको सम्यामें वध किया, खेती जजाही, जननाको सूटा और इस सम्बायमें पिछली सन्धियोंको मी अवहेलना की । उसके १४२४-२५ ई० वारगलके हिन्दू राज्यका भी अन्त कर दिया। इसके राज्यकालके प्रारम्भ-में भी नयकर अकाल पडा। गूजरात और मालवाक सुल्हाना तथा कॉक्यके हिन्दू राजाओंके साथ भी उसने युद्ध किये। तदनन्तर गुजरातके साथ मैथो-सीच कर लो। उसने राजधानी मुलकर्मका त्याग करके बीदरका स्थाना-नित्त का दो। यह नगर अधिक स्वास्थ्यप्रदेशा और इस उसने सुदर वनानेका भा प्रयत्न किया।

उसर पुत्र अलाव्हान दितीय (१४२५-५७ ई०) ने विजयन राज्य साय फिर युद्ध छेट दिया चिन्तु दोना राज्यों में आसत सिंघ हो गर्या। सुलतान मद्यान और विययभोगम फैंग गया। यन्यारम दिल्ला अमेरों, जो अधिकांसन सुमा थे, और विदेशों अमेरों, जो अधिकांसन विषय थे, के बोच बटा समर्प और कलह चलन लगी। दक्षिणी दलने हजारा विद्यों मैयदों और मुगलोका विद्यामधानपर्वक वध कर दल्ला जिनमें अत्मद्याहका सहायक और मुगलोका विद्यामधानपर्वक विध कर दल्ला जिनमें

थलाउद्दीनका पुत्र हमायूँ (१४५७-६१ ६०) भारी हत्यान धा और अपने उमुक्त जुल्मान धारण यह जालिम कहलाता था, म्त्री-पृष्य आवाल वृद्ध सभोको जिसपर तितक भी विद्रोहका मन्देह होता वह भीपण यत्रणा देनर मरवा डालता। अत्तत उसके सेवफोंने इम मद्यपायो नर-पृष्कुका वध कर दिया जिससे सारी प्रजान आनन्द मनाया। किन्तु उसका मत्रा एवाजा महमूदगर्वो अन्यन्त योग्य व्यक्ति या और उसके उत्तराधिकारियोंके समयमें भी कुद्यलतापूर्वक धासन-भवालन करता रहा।

हुमायूँका उत्तराधिकारी योट समय ही राज्य वर पाया, तदनन्तर मुह-स्मदशाह तृतीय (१४६३-८२ ई०) सुलतान हुआ और उसका सफ्रता एव उन्नतिका प्रधान कारण उसका राजनीतिनिपुण, कुशल सेनानी, मुयोग्य शासक एव विचक्षण मात्रा महमूदगर्यों था। १४७३ ई० में उसने वेलगाँव- का नुबुध वर्ष निजय जिला जोजातर जीवकार किया। अनके वर्ष पडके क्षके जीवन सकावका बालना क्या १४८१ ई. में श्रीकानीतर माकनम किया उड़ा गुलगारने अन्ते हापने प्रमुख विश्व-पर मीर क्यानी पूर्विको तीहा तथा ब्रह्मान पुत्रारियोंका वय करके वह वात्री बन्धाः व्यवस्थाः बनने परित्र सङ्ग्रनस्य स्वयोगः स्वयनम् विस्थ बीर बड़ीक क्रवान मन्दिरीका दोधा मुख नुपारियों बीर रक्षरींका वर्ष किया तथा बनायो बहुत हुछ विचात विज्ञा। यह बुक्तान करेंडर धानशे ना - रशियो रक्षमें बहुधान करके स्वनुस्तरोती, वो हराती वा. भरात्री गुज्यानको स्रोपानिका कारो विकार बनवा दिया । सनीयी द्^{त्या} करमानके बाद जुलजान बहुत सकतामा और संशक्तके नारम ही कार्नि तर करा । तहनुष्यविक नारों हो बतानावा पान आरम्ब ही करा ! मुरम्बरधाइके झारकार्वीत पुत्र सहमूख्याह (tvz२-t५t८ ई) के नानमानके किए ही घाक्य फिना । यह समीला और निकास था, रिपे एक चीव-विकासने ही संस्य एका **।**

क्ये-पर्न ध्याने निष्क वृत्ते करण है को भी बहुकी कुछले का निष्कार परास्त्रकों निष्क सामाण मोहि नेक्यर है या नाम। वहाँ भी वर्ष्ण परास्त्रकों एक नामाण पूर्व सरवार प्रशिव निर्मा हामले या । वहाँ बार करण पुर सर्गाद कोर मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग क्ष्मण सहूपणी मुक्के मार एक्टर कोर का ना मार्ग मार्ग मार्ग मार्ग क्ष्मण क्षा मार्ग मुक्के मार एक्टर कोर का ना मार्ग मार्ग मार्ग क्ष्मण क्षा प्रशिव कुछल कोर कोर स्वाधिकार प्रमान करण कोर कामाण, नामाण क्षामण क्ष्मण का कर्म मार्ग कर्म कुछल क्ष्मण का के निषद या एक क्षिणिका स्वाध मार्ग कर्म मार्ग करणे क्ष्मण हुम्मण क्ष्म स्वाभागी, नाम्बाह क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण क्ष्मण का ना क्ष्मण का क्ष्मण क्ष्मणाणी, नामाण क्ष्मण का ना क्ष्मण का ना दुर्ग, ममजिर्दे, महल आदि उन्होंने अवस्य वनवाये, मुमलमानी विद्याको भी प्रोत्साहन दिया तथापि धान्तिपूर्ण सास्कृतिक कार्योके लिए नृशस स्लतान उपयुक्त ही न थे।

बहमनी-साम्राज्य विखरकर जिन विभिन्न स्वतन्त्र मुमलमानो राज्यों में परिवर्तित हुआ उनमें सर्वप्रयम वरारकी इमादशाहों (१४८४-१५७४ ई०) थी। बरार (प्राचीन विदर्भ) वहमनी-साम्राज्यका युर उत्तरी मूबा था। १४८४ या १४९० ई० में फ़तहुल्ला इमाटुन्मुल्कने, जो पहले हिन्दू या, अपनी स्वत प्रता घोषित की। उसके वशमें चार सुलतान हुए और १५७४ ई० में इस राज्यका अन्त होकर यह अहमदनगर राज्यमें ही मिल गया जिसने इस सूबेको १५९६ ई० में अकवरके पुत्र मुरादको है दिया।

वीद्रकी वरीद्शाहो (१५२६-१६०९ ई०) — अन्तिम बहमनी-सुलतान महमूदका मन्त्री कासिम वरीद १४९२ ई० से ही सर्वेसर्या हो गया था, १५२६ ई० में उसके पुत्र अमीर वरीदने बहमनी राज्य और बदाका नामके लिए भी अन्त कर दिया और अपने-आपको हो मुलतान धोषित कर दिया। १६०९ ई० के लगभग इस वशका अन्त करमें उमके राज्यको बीजापुरने अपनेमें मिला दिया। बोदरमें अमीर अरीदकी दरगाह तथा एमाध अय इमारतोंको छोडकर इस छोटी-सी सल्तनतके सम्बन्धमें कुछ उल्लेखनीय नहीं है।

गोलकुण्डाकी छुतुवशाही (१५१८-१६८७ ई०) वारगलके प्राचीन ककालीय राज्यके प्रदेशपर स्थापित हुई। मन्त्री महमूदगर्वा-द्वारा नियुक्त इस प्रदेशका सूवेदार एक तुर्की सरदार सुलतान कुली-कुतुवशाह इस यद्य और राज्यका सस्थापक था। १५१८ ई०में वह स्वतन्त्र हो गया और ९० वर्षकी आयुमें अपने पुत्र जमशेद (१५४३-५०ई०) द्वारा मार हाला गया। जमशेदका माई इब्राहीम (१५५०-८०ई०) इस वशका सर्वमहान् शासक था। गोलकुण्डाके सुलतान विजयनगर, वोजापुर और अहमदनगरके

र्तनर्ग एवं युवनि प्रायः सनम् ही रहते में किन्तु १५६५ हैं के निवन-नगर विरोधी चंत्रमें इप्राहीन भी सम्मितिय सा । इतका याना वर्णा प्टा दिन्तुवॉनर निमेच बरनाचार नहीं हुआ बरन वे पान्त वेपार वेपा बहुनंदवानें निवृत्त होते में बीर क्रयी-क्रमी होने कर की जाना कर केंद्रे ने ! तनर पुत्र मुक्कार कुली (१५८०-१६११ ई.) के बपान्य दन गरन को मरतित होने बनी। और यह मुल्ल सम्राटीनी जाम बनीवनान ही चन्ता रहा । १६८७ वं में बोरंग्डेबने बतना बर्ग्या बल वर दिया। जनम पूर्वमात्रने हो पारंकारा स्वाब करके मोक्यून्याणी राज्यानी बनामा का नुक्तान इत्राहीमके नमक्ते इन समरकी बहुन कमति हों। हुनुषयाही कुलानार्क तुमार सहस्रों नीतनामर और गुरू कि^{के} सिंद तथा सपनी होरेली सामके | सिंद बोस्क्रम्बा प्रतिज्ञ है । बार्ट वीस्क् रिजने वाता-विवरमके अनुवार इस नवरमें वय नाम्य नहीं द्वार वैत्रतन्तर को थे। १५८९ हैं में बढ़के अस्तास्थ्यतर होनेके पारण मानगवर (ईवराबार) यो शामवामी बवाबा बना की बाजान्तरमें वरिवार के निवास बदावींची प्रतिद राजवानी बना

महामहानारकी निहाससाठी (१४९०-१६६ है)—तैया के बहनां स्वारंग के प्राप्त हुँ थी और के सा निहास्तुक्त बहुके दर्शना कार्यकारी हुए हुँ थी और ते तर्थ की कार्यकार परित्र कराया करें कारत नार साथ करा या कार्यके के मंद्रक बहुकरों से कि पूर्वत्य गुर्वेदार सा १८६ है में निहाद कर सिंधा कर कार्यक्र क्यानीयों पर्याप्त कर्षक कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार कार्यकार प्रकार कर्षक कार्यकार कार्यकार कार्यक विद्याप्त करें के स्वीवन्त कार्यकार राज्योंके साथ वरावर लहता रहा और १५५० ई० में उसने विजय-नगरके साथ सन्धि करके बीजापुरके विरुद्ध उसका साथ दिया। उसके उत्तराधिकारी हुसैनशाहने १४६५ ई० में विजयनगर विरोधी मधमें सिक्रय भाग लिया और उम महानगरीकी लूट तथा हिन्दू-राज्यके प्रदेशों-में अपना हिस्सा प्राप्त किया । १५७४ ई० में उसने बरार राज्यको विजय करके अपने राज्यमें मिला लिया। तदुपरान्त निजामशाहोकी अवनति होने लगी। सम्राट् अकवरके पुत्र मुरादके आक्रमणोमें अहमदनगरकी राजकुमारी और तत्कालीन वालक सुलतानकी वुआ चौंदबीवीने, जा कि वीजापुरके सुलतानके साथ विवाही थी, अहमदनगर आकर अपने भतीजे-के राज्यकी बीरतापूर्वक रक्षा की थी। अन्तत १५९६ ई० में बरारका सूवा लेकर तथा चौदसुलतानके साथ सन्वि करके मुराद लीट गया। १६०० ई० में मुगुलोने फिर आक्रमण क्या और इस बार चौंद सुलताना युद्धमें मारी गयी। किन्तु पूरे राज्यपर मुग़लोंका फिर भी अधिकार नहीं हुआ। १६३७ ई० में शाहजहाँने इस राज्यका सर्वधा अन्त किया।

धीजापुरकी श्राविलशाही (१४८९-१६८६ ई०) इन समस्स सस्तानतों में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। इसका मस्थापक वीजापुरका बहमनों सूबेदार यूसुफ आदिलखाँ था जो १४८९ ई० में स्वसन्त्र हुआ ओर यूसुफ आदिलकाह (१४९०-१५१० ई०) के नामसे बीजापुरका प्रथम सुलसान हुआ। वह शिया मुसलमान था और १५०२ ई० में उसने इसी धर्मको अपना राजधर्म बनाया। विजयनगर तथा दक्षिणको उपरोक्त मुसलमानी सस्तानतोंके साथ उसके निरन्तर युद्ध चलते रहे। सुन्नी होनेके कारण उन्होंने उसका और भी विरोध किया। गोबाको उसने अपना प्रिय आवास बना रखा था, जिसके लिए पूर्तगालियोंके साथ इसके युद्ध हुए, अन्तत उन्होंने १५१० ई० में उस नगरको अधिकृत कर लिया और यहाँके मुसलमानोंका बुरी तरह सहार किया। इस सुलतानने मराठा

नारार कुन्यराज्ञीयो बहियके बात निराह किया क्या नार्यी की सन्य दिवृत्तीको राज्ञी बन्य वर्गिर जो नियुक्त निया। बन्ते राज्ञी स्वेत्रस्थारीय निराह के साम्या के स्वेत्र के स्वा वर्ग कर क्यान्यस्थारी बन्धा कुरिक्मा, जाती कुनर, तुर्वित्व, विचारिक कीर मैंत्र निराह के पान हो करा और बहित्यु तो जा। वीरानुष्ठे कुन्य नार्य कुन निर्माण कराया ना।

वनना नुन सम्मास्त्रपाद (१९१०—१४ ई.) को नागर गर्फी बराब जा जाने रिपारी बोर्डि हो नुरोक्त था। नुकान जानेंड वर्ग वर्ष वामन जा मतः वर्षेत्र कार्यक्र कारकार्यक्र कर्म कर्म कर्म इस्तरफ करवा जाता रिन्तु केर सुन करवा मीर यह तथा चर्चा। समार्थ-मी कोगी पान्योंके वाच वर्षानर स्त्राण था। दिस्त्र वर्ष्यक्र कर्म करवा करवा वर्षा वर्षा क्रिके सेंत्र करवा कृता। रिक्ति प्रकृत वर्ष्यक्र कर्म करवा स्त्राप्त क्रिके प्रकृति कर्म करवा विधा।

ज्यका पुत्र मधी मारिसमझ (१५५७-८ ई) स्मूर क्या ज बीर कुविरोंका निरोत्तो जा। १५५८ ई में राजधानने सब निर फरके उसको सहापनामे उसने छहमदनगरपर आक्रमण विया और वहीं निर्देवताके साथ लूट मार को । इस अवसरपर रामराजाने मुसलमानापर जो अन्याचार किये और उनके प्रति जैसो घृणा प्रदर्शित को उसस सभी सुलतान आपसो सग्टाको मुलाकर उनका अन्त करनेपर कटिबद्ध हो गये। इसी उद्देश्यमे आपसी सम्बन्धोका और अधिक पृष्ट करनेके लिए उसने अहमदनगरके हुसैन निजामजाहको बहिन चौरवीकोके साथ अपना और उसको पृत्रीके साथ अपन पृत्रका विवाह कर लिया।

१५६४ ई० क दिसम्बर मासमें बीजापूर, अहमदनगर, बौदर और गोलकुण्डावे स्लतान अपनी-अपनी सेनाओ-सहित सालिकोटामें एकपित हुए और १५६५ ई० के प्रारम्भमें मंगलवार २३ जनवरीके दिन तालि-कोटासे २५ मोस दूर उनका विजयनगरको सेनाक माय भीपण युद्ध हुआ। वृद्ध रामराजा और उसके थीर मैनिक अत्यात वीरताके साथ लहे और उन्होंने मुसलमानोंके पैर उद्याह दिये । किन्तु विजयनगरके दुर्भाग्यसे मूछ हापा भडक गये, गडबडमें रामराजा बन्दी हुआ और तुरन्त उसका सिर काट दिया गया, हिन्दुओमें भगदंड मच गयी, मुनलमानीने बड़ी निर्दयताके साथ हिन्दुऑका सहार किया और लूट-मार करते हुए विजयनगरपर चढ़ दौड़े तथा कई सप्ताह पर्यात अम महानगरीया ऐसा भयकर विध्यंस किया जिसना बन्य उदाहरण नहीं। सभी मुसलमान सुलतान घनी यन गये और विदोपकर अली आदिलशाह अपार धन लेकर बीजापुर लौटा। १५७० ई० में सुलतानने अहमदनगरके साथ मिलकर पुतगालियाकी यस्तियोंपर अधिकार करनेका विफल प्रयत्न किया । १५७९ ई० में एक खोजेके हाथो अली-वादिलसाहको मृत्यु हुई ।

जसका पुत्र इद्याहीम आदिलज्ञाह द्वितीय (१५८०-१६२६ ई०) राज्य प्राप्त करनेक समय यालक ही पा और १५८४ ई० तक जसकी मौ चौदवीबी ही सब राज्यकार्य करती रही। तुत्तदुपरात्त वह अपने मायके अहमदनगर चलो गयी और उस राज्यकी रक्षामें हो जसका अन्त हुआ। १९९९ है में मेशहर और महरहालाई सेन अधित हुए क्यां पुरस्ता पीताहर है क्षेत्रम प्रोत्पासी एउटा पूर्व कर सेर हुए के पुरस्ता ही को स्वाम कर है। यह मुख्यल बहुर और समस्य के परवर्ष हिल्ला में या अपने बहुरम और सप्ते करने एउटे स्वाम क्षित हुए में अपने मुक्ता क्यां करनेका दिना और पूर्वपत्ति हैं। जैनी सम्बन्ध रहे। दिनक्षाभी में बढ़े बच्च दिना। इसके समस्य में मेहन हमार स्वाम करने प्राप्त करने स्वस्था दिना। इसके समस्य मेहन हमार स्वाम प्राप्त करने कर स्वाम करने कर स्वाम करने कर साम कर साम करने कर साम कर साम

वर्ष पुत्र पुराना वारिष्या (१९६६-१९६६) है रही। है बाह्यां स्वाप्ता स्वीता स्वीता क्रिका का बी क्षित्र कर्या है हिस्सोर्क क्षित्रके प्रदानविका कर हुआ से क्षेत्रपुर्त कर्यों प्रमान वारत वर्षा। कर्यं पुत्र क्षेत्र सांवक्ष्या हिर्मित (१९५४-कर्षा क्षेत्र क्षेत्रक हुम हुए। स्वका स्वित्रक क्षेत्रक क्षेत्रक कारत-प्रान्त्र कर्या कर्या क्षेत्रपूर्व क्षेत्रपा कर्या पूर्व। क्षेत्रव

नगरर धनारतें भी बनवानीं ।

बनावर बीबापुर-राज्यका बन्च कर दिया ।

योजपुर्ति मुख्यानीने वीजपुर तरह, जबके अक्त-व्यक्ति हुन्हें स्थान प्रदर्शन क्यांजि की स्ववद्र कराये शोजपुर्द एक पहुंची स्थान प्राचनका परिकार कर्ष अपूर्ण कराय अपूर्ण किया मुक्ति वर्ति है। प्रविद्य प्रित्यूचनार प्रश्नितानी काले व्यूप्तपूर्व स्थापी एको प्राच्यान कीतने वालयों काली आजाते ही भी थी। वर्षण प्राचन कीत वर्षीन पर पुत्रजानीन एक्टबें ही हिन्दू बण्याने व्यप्ति कार्य की थी।

नुष्याम विश्वन्दर मारिक्नाइ (१६ ३-८६ ई.) को मीरंपरेटने वनी

काल्येतका प्राकारिका (११८८-११ १ १)-श्रीचेन पुत्रकृष्णे मृत्युक्ते वस्त्र कार्यका श्रुवा स्थान ह्या। या स्थानी क्षत्र स्थान स्थान मुसलमानी राज्य अपने मुदृढ असीरगढ़-दुगके लिए प्रसिद्ध था जिसे १६०१ ई० में अकबरने विजय करके इस राज्यका अन्त किया। फ़ाल्की मुलतानोंकी राज्यानी बूरहानपुर थी। साप्तीको घाटीमें स्थित यह छोटा-सा मुसलमानी राज्य भी पडोमी राज्योंके माय युद्धोंमें सलग्न रहा और कुछ काल तक गुजरातके सुलतानोंके अधीन भी रहा।

राजपूत राज्य-उपरोक्त मुसलमानी राज्योंके खितिरिक्त इस कालमें कुछ शक्तियाली हिन्दू राज्य भी ये जिनमें सर्विषिक शिवतशाली एव महत्त्वपूर्ण दक्षिणका विजयनगर-साम्राज्य था जिमका वर्णन पिछले खण्डमें किया जा चुका है। उसके अतिरिक्त कोकण, कर्णाटक, तूलुव और सुदूर दक्षिणमें कुछ छोटे-छाटे हिन्दू और जैन राज्य थे। गोआकी पूर्तगाली जन्ति भी अपने ममुद्री वलके कारण महत्त्वपूर्ण थी। उत्तरापयमें राजस्थानमें कई प्रसिद्ध राज्य घे यथा वीकानेर, जीवपुर, जयपुर (अम्बर), हाहार्वेदी, रणयम्भीर, चित्तीह आदि । इन सबमें चित्तीद राजघानीस राज्य करनेवाले मेबाइके गूहिलीत या सीसोदियावशी राणा सबसे अधिक पानितशाली एव महत्त्वपूर्ण ये। बास्तवमें मे ही सम्पूर्ण राजम्यानके नेता ये और मुसलमान मुलतानोंके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी ये। दिल्लोके तथा गुजरात और मालबाके सुलतानोंके साथ उनके निरन्तर युद्ध होते रहे। महमूद गजनवोके लूटेरे बाक्रमणो, मुहम्मद ग्रोरी और उसके सिपहसालारोंके देश विजयके लिए किये गये हमलों तथा गुलामवदाके दासकोंके घावांसे भी अनमेर और रणयम्भीरको छोडकर प्राय सम्पर्ण राजम्यान सुरक्षित रहा।

१०वीं शिक्षोमें मेवाहका राजा शिविकुमार था। उसकी दसवीं पीड़ोमें विजयसिंह (११०८-१६ ई०) प्रसिद्ध राजा हुआ। इसका पुत्र अरिसिंह था जिसके प्रपीत्र रणिंहह (कर्ण) के पुत्र क्षेमिंमहके बद्दाज रावल कहलाये और मूल राजधानी नागहद (नाादा) से ही राज्य करते रहे। रणिंसहके एक पुत्र राहपके बदाब राणा कहलाये और वे मिसोदमें एमानि धानस्ति कार्ने एक्स कार्य हो। १२वीं कार्री है कार्यार्थं में सेनिहार्ड पूर्व पत्रक धानशिक्ष्य मुक्तिपत्र कार्यार्थं में सेनिहार्ड प्राथमित कार्यार्थं प्रतिपत्र कार्यार्थं कार्यार्थं प्रतिपत्र कार्यार्थं कार्यं कार्यार्थं कार्यं कार्यार्थं कार्यं कार्यार्थं कार्यार्थं कार्यार्थं कार्यार्थं कार्यं कार

समर्गावह सक्ती बीरताके किन इतिहास-महिन्द है। ध्यातालेके अन्यात्रदेशमें प्रचेच करतेशाचा सर्वत्रका मुख्यात्र मुख्यान बकावहीन खबनी या निवने १३ 📫 वे स्वयंत्रीतर भीवन मात्रमन किया किन्तु राज्युतीकी बीरताके कारन वंड वार *की* निकार होकर बोटना परा । जनके नर्ग करने और व्यक्ति बोनन जानना निमा भीर कई ताह एक पेरा आहे खुनेके हुन रान्य कर शास्त्र सामूर्य सीहर-बाध कर भरे तब नह दुर्वनर व्यवकार कर क्या। इत व्यव रहे वस्त्रीरफ स्वामी कुशीराज चौद्धानका बंदाव बीर विध्येत्रनि शना हम्मीर देश (१२८६-१६ १ है) वा भी बुज्यीरमहाकान्द्र, बुन्दीरफर्क बादि काल प्रश्रोचा नावक है । भूक बंबके बहुरत्व नर्यवन्त्रका वह स्वर्ट का । स्वराज्यको समावे अवदे-वरते हो इनके बीरवर्त अस्य की क्यान्तर बननीते विचीद्वरर बाधनम् क्रिया । क्ष्य बस्य राज्य बीनींबी का बावन था । कहा बाता है कि करकी सहाराती परिलोक संपूत्र ^{कर्म} बीन्वर्वनी पर्यावे सुकदानको विस्तोदको बीए बाइड किया था । धनकूरी की बीरताफे नारम कई बार क्यके अस्ता निकल हुए, बन्तरा १६ 👫 ने बहाराची परिनी सब्बों रिनरीके बाव दुर्गके वर्ज-मुहर्गे विद्यानें बस्त

गया बार वार राजपून कसारया बाना पहन छड़ते छड़ते जूस मरे ।
भयकर जोहरमें चित्तौढके समस्त स्त्री-पुरुषोका अन्त हो जानेपर ही
लमान फ़िलेपर अधिकार कर मके। चित्तौढपर फुछ वर्ष तक अलाउद्दीन-पुत्र पिजरखों मूबेदार रहा और उसपर मुसलमानोका अधिकार रहा।
नन्तर राजपूर्तीने उन्हें निकाल बाहर किया। १३२५ ई० के लगभग
सोदिया शास्त्राके राणा हम्मोरके समयसे चित्तौड राज्यका उरकर्ष वेगके
य हुआ। और फिर कई धताब्दियों तक मुमलमानोको उसकी ओर

१४थीं घतो ६० के उत्तराधमें मेबाइके विषेण्याल जीं। माहजीजाने तौइमें प्राचीन चन्द्रप्रमु चैरयालयके निकट एक ससराना उत्तृग एय यन्त कलापूर्ण कोतिम्मम्भ (मानस्तम्म) यनवाया या पुरातन अपूर्ण ममका जीर्णोद्धार कराके उसे पूर्ण किया था। यहा जाता है कि इस र्रात्मा सेठने १०८ प्राचीन मन्दिरोका जीर्णोद्धार, उतने ही नथीन न्दिरोंका निर्माण एव प्रतिष्ठा करायी थी, अठारह स्थानोंमें अठारह शाल श्रृन मण्डार स्थापित किये थे और सवालाख बन्दियोको मुक्त राया था। उसके गुरु दिगम्बराचार्य सोमसेन मट्टारक थे।

१५वीं घातीके प्रारम्भमें राणा लाखाके सममसे मेवाड-राज्यकी छिवत । स्वित बढ़ने लगी। रायदेव नामक जैन भी इनका एक मन्त्री था, खाका उत्तराधिकारी राणा मोक्ल भी योग्य शामक था। तदन तर हाराणा कुम्म दिल्ली, मालवा और गुजरातके मुसलमान सुलतानोंका वल प्रतिद्वन्द्वी हुआ। मालवाके सुलतानपर विजय पानेके उपलक्षमें इस गाने चित्तीहमें एक नौ-मिजला उत्तुग कीत्तिस्तम्भ या जयस्तम्म नवाया था। इसीके आश्रयमें उसके एक ओसवाल महाजन गुणराजने ४३८ ई० में जैन-कीतिस्तम्भके निकट स्थित महावोर स्वामीके प्राचीन न्दिरका जोणोंद्वार कराया था। स्वयं महाराणा कुम्भने मचींद हुगींमें क सुन्दर चैत्यालय चनवाया था। महाराणा कुम्भके प्रतापक आगे

वरोडी नुन्यान बर-वर वस्ति थे। १४४४ ई वें सबके क्षेत्रप्रे (कोवायस्त) बंगालने, जो बाह केस्तुत्वा पुत्र वा साम्महतके निकर ही एक ब्रोटान्सः कलगुष जिल-मन्दिर बनसावी व्य । वान्तिनानकै स्व वन्तिरको श्रोतार-वेंदरी वसते हैं। इतको प्रतिका चारतरवणके बालाई विनक्षेत्रपूरित की वी । कुन्तको कत्तरप्रविकासी राजा शक्तक वहुनेक बीर निकलर सोरीका प्रशिवनी वा । वहीलो नुसन्तानीके साव दनके वी अनेक मुद्र हुए । इनके शबरने विश्तीत पुर्वके वीमुक्कीवंके निवट १४८६ ई. में एक प्रेस-गोलएका निर्माण हमा मा जिसने प्रीमण्डे क्षत्रीहरू देशने लाकर विश्व-मूर्ण स्थापित की वरी की ह रायमकास असराविकारी अद्यासका बंदानकित था सामा क्रमा दूरी भूकानाकके राजानीमें बनानिक प्रक्रिक है। यह निकारर कीरी प्रासीय भीती जावर बुक्क और बुक्ताको न्यूक्त वेनाम वर्ष बहापुरवाह तथा माववाफे क्ष्यानुहील नात्रकाहीन कोर नुसमान शिरीनका वरिश्वनी को । लाजिन स्व पन पनन नार्वोद्ध क्षेत्रस्ता राज्य वर्ग क्ये हस्तानीर हिन्दू एवं नुबरनान नरेपीने बहाराना बांगाबी बायना क्षतिहा से । शरने बीरनमें एक डीने अविश्व मुद्राने इक गीर राजाने जान किया ^{वह}, क्वके अधेरतर बक्तार बीर वरके कार्य करनेके मानगर क्ली निश्च में नृद्धोंने प्रवर्ता एक बांच एक द्वार और एक टॉन मी

वार्ती रही थी। करके सर्वाम कम्बर वृष्ट थी सीव क्रीटेनों एकी मान्स्य बीर वरदार में और बड़की हेगार्वें समस्यत नामी तीवकी बीतीरण ८ सामाधीत तथा ५ हान्ये थे। १९१७ हैं में बार मिलाचें साम्य मुक्काम केनार शामिक्की मन्द्र दुवी दिस्स प्रोमोर्क वर्षाम्य मुक्कामाच्या समस्या सम्बद्धां स्पर्वेशी उसके राज्यको स्पर्ध करनेका उसे फिर मी साहस न हुआ। इस युद्धके परिणामसे राणाको वडा सदमा पहुँचा और १५२९ ई० में उस वीरकी मृत्यु हो गयी । इस महाराणा सागाके राज्यकालमें ही दिल्लीके मुलसघी पट्टाचार्य जिनचन्द्रसुरिके शिष्य अभिनवप्रमाच द्र (१५१४-१५२४ ई०) ने चित्तौडमें स्वतन्त्र पट्ट स्यापित किया था। मण्डलाचार्य धर्मचद्र (१५२४-१५४६ ई०) उनके उत्तराधिकारी थे। इनके प्रशिष्यके समय चित्तौडका पतन होनेपर यह पट्ट आमेरको स्थानान्तरित हो गया था। चित्तीटके इस पट्टके आश्रयमें अनेक ग्राथोंकी रचना हुई । आचार्य नेमि-चन्द्रन गोमट्टसारको सस्कृत टीका १५१५ ई० में चित्तीडमें हो जिनदास-शाहके पार्विजनालयमें की थी। लाला वर्णीकी प्रेरणापर नेमिचन्द्र दक्षिणसे यहाँ आये थे। राणाने जैनाचार्य घर्मरत्नसूरिका भी हाथी, घोडे. सेना और वाजे-गाजेक साथ स्वागत-सत्कार किया था तथा उनके उपदेशसे प्रभावित होकर शिकार आदिका त्याग कर दिया था, ऐसा कहा जाता है। इन जैनाचायका ब्राह्मण विद्वान् पुरुपोत्तमके साथ सात दिन तक राजसमामें शास्त्रार्थ भी हुआ था। राणा सांगाके पुत्र मोजराजकी पत्नी ही कृष्ण भगवान्की परम भक्त सुप्रसिद्ध मीरावाई थीं जिनके कारण राजस्यानमें कृष्ण-मनितकी अपूर्व सहर दौष्ट गयी थी।

सांगाक उपरान्त उसका पुत्र रत्निस्ह राणा हुआ। उसके समयमें उसके भन्त्री कर्माशाहने १५३० ई० में रात्रुजय तीर्थका जीर्णोद्धार कराया और इस कायमें गुजरातके सुलतान बहादुरशाहने भी उसकी सहायता की थी। कर्माशाहके लिए तत्कालीन शिलालेखों में लिखा है कि वह 'श्रीरत्निसहराज्ये राज्यव्यापार-भारघीरेय' था। इसका पिता तीलाशाह राणा सागाका मित्र और मन्त्री था। राणा रत्निसहको मृत्युके कुछ ही समय पर्वत्त १५३४ इ० में गुजरातके बहादुरशाहने चित्तीहपर भीषण आक्रमण किया। इस विपत्तिमें राणा सांगाकी विधवा महारानी कर्णयतीन मुगल-वादशाह हुमायूँक पास राखी भेजकर सहायता मौंगी। हुमायूँ उस

परियो पुराना पान्यर परियो थे। १४४८ ई से प्रायक्त केयरी (जीतास्त्र) वेतास्त्रों, यो तहा नेत्रपुरत पूर्ण पा प्रायक्ति निव्ध है एक क्रियन्ता अवस्तृत्र विकरतीत्वर प्रवादा कर । प्रतिक्रमार्थ कर्म स्त्रित्वर प्रेमार-वेदरी वहाई है। इससे प्रतिक्षा कप्रायक्ति कार्य विजानपुरित को थी। क्रूम्पण क्रमप्रीक्षाण प्रायम्भ क्रमप्रेम सी तिक्तर केरिया अविद्यात्री था होती पुरानमेंत्रे क्रम्प क्रम्म सी सनेक पृत्र हुए। इससे वस्त्रमें विचाह दुवित बोजुक्योचेंत्रे निव्ध १४८६ ई में एक बेनक्लीक्टरमा विक्रा हुवित बोजुक्योचेंत्रे निव्ध वस्त्रित क्रम्म क्रम्मप्रदान क्रमप्रेम क्रमप्रेम क्रमा विवर्ध विकर्ण

ध्यमकता असर्प्रविकारी अञ्चलका बंदानविक मा यना काच हुन

नुकारराज्ये रामानोनं क्वीरिक प्रक्रित है। यह विकास नीग्रे प्रामीन कोरी आवर नुबक और पुत्रस्तको न्यूनूर नेवड़ा एवं बहापुरसम्ब तन्य बारकाके प्रवानुद्दीन वाविषद्दीन बीद बुक्त्यव विवीयका प्रतिक्रां का माकियरमें उन तमन मामिड तीयरमा राज्य या। बनी कराजीन दिन्तु एवं शुक्रणमान वरेकोंमें बद्वाराना कोनाओं करनमा प्रतिका थे। बस्ते बीरमने एक **बीदे जरिक मुद्रोंने इव दौर राजा**ने जान विश्वाना, क्को बरोरसर बक्तार और करके आदि मत्त्रीके ब्यानाके मत्त्री निश्च में नुश्चीमें बनकी एक बीच एक द्वार और एक डॉम मी मानी रही थी। बक्के समीन सरवर एक वी बीव क्रेसे-वह राज्य, नामाच और बस्धार में और पढ़णी देवानें समीत्रक पंछति देशियोंने अतिरिक्त ८ करवारोद्धी तथा ५ द्वाची थे। १५२७ हैं में बर रिस्कीको बर्गस्य मुख्यमान केरारार शामीसके ज्ञान सुवर्ग विस्त वालेवाले वर्तिवास्त्री सुवक-सारवास् बायरचा करवास्त्रे रक्तेपने इन प्रशन्त राज्ञुल दूर-पोरने शाला हुआ हो प्रशन्त रिम रहत ^{करा ।} क्को बाजन धरावरो व क्लेसे प्रतिशा की राठ-वर मुखरी स्वारत को बीर लंकेल्डे ही यह वस मुख्ये दिवसी हुआ । किन्तु रामा बीर

114

बल्तीन इत्यास वर्ग परि

व्वेताम्बर जैन साघकोंका सम्पूर्ण राजस्थानमें जामुक्त विहार या। अनेक स्यानोंमें उनके तीर्थ, सास्कृतिक के द्र और भट्टारकीय गहियाँ यो। राज्य-वंशों एवं सामन्तवशोंके अनेक स्त्री-पुरुप और कभी-कभी कोई-कोई नरेश भी जैनधर्मके अनुवायी या भक्त होते रहे। उस कालमें वहाँ जैनोकी सहया अवकी अपेक्षा कमसे कम दुग्नी थी, और वर्षोंकि उस कालमें जैनी प्राय क्षत्रिय और वैष्य जातियो एव मध्यम वर्गमें से ही थे, अतएव उस वगमें आधेसे अधिक उन्हीकी सख्या थी और इन जैनोंने मेवाड तथा अय राजपत राज्योंके सरक्षण, उन्नति, शासन-प्रवाध, धर्म, साहित्य एव कलाके क्षेत्रमें और सास्कृतिक विकासमें स्तृत्य योगदान दिया। स्वय मेवाह गज्यमें हो जब-जब किलेकी नींव रखी जाती तब-ही-तब राज्य-की ओरसे एक नवीन जैनमन्दिर बनवाये जानेकी रोति थी। राज्य-भरमें राजाज्ञासे रात्रि-भोजनका निर्पेष था। कोई भी जैनसाध राजधानीमें पधारता तो महारानियाँ उस राजमहरूमें आदर-पुरक आमन्त्रित करके उसके आहार आदिका प्रवाध करती थीं। राज-समाओं में जैनसाधकोंके भाषण और शास्त्रार्थ होते और उनका सम्मान किया जाता था। उनके तीर्घीका सरक्षण राज्यकी ओरम होता था। प्राय यही ध्यवहार अन्य राजपूत राज्योका भी था। इसी कालमें सन् १४९१ ई० में राजस्यानके एक घनकृवेर साह जीवराज पापडीवालने विल्लीके भट्टारक जिनचन्द्रके उपदेशसे धातु और पापाणकी असस्य जिन-मृतियोका निर्माण और प्रतिष्ठा करायी थी और भारतके विभिन्न भागोंमें वहुसंख्यामें इन मूर्तियोको भेजा था। आज भी उत्तर और मध्यभारतके अनिगनत स्थानोमें इन मृत्तियों में-से अनेक पायी जाती हैं।

राजपूतानके अतिरिक्त क्वालियरमें तोमरवशी राजपूतोका राजप भी इस कालका शक्तिशाली राज्य था। क्वालियर (गोपाचल या गोपिगिर) का प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्ग कमसे कम गुप्तकाल-जितना प्राचीन है। गुर्जर प्रतिहारोंके वाद चन्देलोका और कच्छपपट राजपूर्तोका इस प्रदेश १५३५ हैं में की ब्यापुरवाहको बुधे तथा पराबित करके बबते रिसीन विभवका वरका निया । तरमन्तर वितीदका राजा आगांका एक कर्ण पुत्र विक्रमाओच इसा निल्यु शासीनुत्र बल्लीरले क्याची इत्या कर ही बीर स्वयं पादा वस वैद्धा। बढते बागके अर्थावड पुर वाकर करने विद्वरी इत्या करनेका भी जकता किया. किन्तु स्वामित्रस्य प्रमानामने स्मृतरी तकि देवर स्वापीके पुत्रती रक्षा की । राजहूनारको केतर वर्ष सबैक बाइन्छोके राख ग्रएक-प्रान्तिके स्थि नहीं किन्तु सरवाचार्थ वर्गनी हैं पनवे पित्रीने भी राजकुनारको करण व वी । अन्तर्ने नुस्त्रकोरके वैनी विकेश बाबाधार नेपस और बसकी थीर कार्यने सम्बन्धारको सम्ब दी । यह और शामीची परशा व करके बक्का तरक्षण किया वंदा नक्त दीनेपर बढाओं नितीरके विद्वादनपर बाबीन कराना। चारतक कार्यक्रमाओं राजा करवॉब्यूने मर्पया अवान बनाना । राज्य बाराने से वदे बक्तरहे बुक्रकर रचनागीरका विमेश्वर विदुश्त किया वा । न्य-पुरुषकार्या वैद्यालके क्षत्रोत्तव बीट धावाबीले बारवीय स्थाताना क्षेत्रवंशो संबोध रखा और में जाने नेतृत्वमें अनते कर राज्यानीकी त्राम कलट दिनुराज्य-कतितथेको एकपित करके बुक्तालीचे वरावर नोहा केरो रहे, और एक प्रकारने करने बार्निक जलापारींगर प्रक्रियान का कार्य भी करते रहे। राजावीरा पुष्टवर्ग देव वा वसके शत्यते हमी राज्युतलेके बान राज्युद राजीने भी देश बीट बेंग्यर पर्योकी बक्राना ही चर्चाथी। समारि वैत्वर्जके प्रति प्राप्तः वजी राज्यः और बन्य समै

गमा क्षामच-बरकार पूचवचा कदार और तक्षिणु में। रिनम्बर मोर

**

नारठीय इविदास एक धी

धनन प्रेरपाहके विश्वत मिहारमें जेंबा हुना गां, किन्तु कब परित्व राजेशी बन्नान राबनेके किए पुरात निर्माणकी राबाके किए कब दिया। निर्मी यो पिकान हो ही बना। वोरा नहारानीले और बक्के और राहोजी बीहर करके कराना बना किया केनक एन हो बहारुटावा हुईयो स्थितन कर कथा। किन्तु करानी दिक्का स्थानों हों। हमाने वो प्रोती श्वेताम्बर जैन साधुओका सम्पूर्ण राजस्थानमें उन्मुक्त विहार था। अनेक स्यानॉर्मे उनके तीर्थ, सास्कृतिक केन्द्र और भट्टारकीय गहियाँ थीं। राज्य-वशो एव सामन्तवशोंके अनेक स्त्री-पुरुप और कभी-कभी कोई-कोई नरेश भी जैनधर्मके अनुयायी या भक्त होते रहे। उस कालमें वहाँ जैनोकी सस्या अवको अपेक्षा कमसे कम दुगुनी थी, और वयों कि उस कालमें जैनी प्राय क्षत्रिय और वैश्य जातियो एव मध्यम वगमें से ही थे, असएव उस वर्गमें आधेसे अधिक उन्हींकी सख्या थी और इन जैनोंने मेवाड तथा अन्य राजपुत राज्योंके सरक्षण, उन्नति, शासन-प्रवन्ध, धर्म, साहित्य एव कराके क्षेत्रमें और सास्कृतिक विकासमें स्तुत्य योगदान दिया। स्वय मेवाड राज्यमें ही जब-जब किलेकी नींव रखी जाती तब-ही-तव राज्य-की ओरसे एक नवीन जैनमन्दिर वनवाये जानेकी रीति थी। राज्य-भरमें राजाज्ञासे रात्रि-भोजनका निपेध या। कोई भी जैनसाधु राजधानीमें पघारता तो महारानियाँ उसे राजमहरूमें आदर-पूर्वक आमन्त्रित करके उसके बाहार आदिका प्रबाध करती थीं। राज-समाओं में जैनसाध्योंके मापण और शास्त्राय होते और उनका सम्मान किया जाता था। उनके तीर्थोंका सरक्षण राज्यकी ओरसे होता था। प्राय यही व्यवहार अन्य राजपुत राज्योंका भी था। इसी कालमें सन् १४९१ ई० में राजस्थानके एक धनकुवेर साह जीवराज पापडीवालने दिल्लीके भट्टारक जिनचन्द्रके चपदेशसे घातु और पापाणकी असल्य जिन-मृत्तियोका निर्माण और प्रतिष्ठा करायी थी और भारतके विभिन्न भागीमें बहुसंख्यामें इन मूर्त्तियोंको भेजा था। क्षाज भी उत्तर और मध्यभारतके अनिगनत स्थानोमें इन मूर्तियोंमें-से अनेक पायी जाती है।

राजपूतानेके अतिरिक्त ग्वालियरमें तोमरवशी राजपूतोका राजप भी इस कालका शक्तिशाली राज्य था। ग्वालियर (गापाचल या गोपिगिर) का प्रसिद्ध सुदृढ़ दुर्ग कमसे कम गुप्तकाल-जितना प्राचीन है। गुर्जर प्रतिहारोंके बाद चन्देलोंका और कच्छपघट राजपूताका इस प्रदेश



ग्रजनवीका इन भार-राजाओंने इटावाके निकट मुजके दुर्गसे भीपण विरोध किया था, तदनन्तर असाई दुर्गसे भीपण युद्ध किया, अतत महमूदने उन्हें पराजित किया, दुग और मिन्दिरोंको लूटा और विध्वस किया। उस ममय राजपूत नत्री-पुरुपोंने जीहर करके अपना अन्त किया था। तदनन्तर फ़तह-पुर, इलाहाबाद, अलीगढ आदि जिलोंमें भारोंने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये। महमूद ग्रजनवीके समयमें मेरठ, हापुष्ठ, बुलन्दशहर (वरन) का दोर राजा हरदत्तराय प्रसिद्ध था, उसोने मेरठका वह सुदृह दुग बनवाया था जिसे तरमेशरीनक्षां भी नहीं जीत सका था और जिसे सर करनेमें तैमूर लंगको काफ़ा कठिनाई हुई थी। इसी राजाने हापुष्ट नगर मी बसाया था।

स्वय असाईखेडामें भारोंना अन्त होनेके बाद उसके निकट चन्दबाड (चन्द्रपाठ) में, जिसे रपरी-चन्दवाड भी कहते थे, चाद्रसेनके पुत्र चन्द्रपाल नामक चौहान राजपूतने अपना राज्य स्यापित किया. और चन्दवाह दुर्ग एवं नगरका निर्माण करके उसे अपनी राजधानी बनाया। राजा चन्द्रपाछ जैनी या और उसका दीवान रामितह हारुल भी जैनी था। १३वों-१५वीं शतियोंमें यह नगर बढ़ा सुन्दर समृद्ध और प्रसिद्ध था। इस राज्यमें चन्द्रमाडके अतिरिक्त ५-६ अप महस्वपूर्ण दुर्ग एव नगर थे जिनमें रायवद्दीय, रपरी, हविकन्त, शीरीपुर (वटेश्वर) आगरा आदि प्रमुख थे। अटेर हियकन्त, (हस्तिकान्त) और गौगीपुरमें जैन मद्रार-कोंको गहियाँ स्थापित यों जा महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक येन्द्रोंका काय करती थीं। वहाँने मट्टारकॉने उत्तर मध्यकालमें साहित्यरचनाको भी मारी प्रारसाहन दिया । शौरीपुरको गद्दी गत शताब्दी तक विद्यमान थी । अत चन्दवाड राज्यमें जैनधर्म और जैनोंकी पर्याप्त मान्यता एवं प्रतिष्टा घी। राजागण प्राय सब स्वय जैन ये और प्रधान मन्त्रो सादि भी प्राय जैन ही होते थे। राज्य-सस्यापक चन्द्रपालके उत्तराधिकारी भरसपालका नगरसेठ हल्लण था । उसके उत्तराधिकारी अभयपालका मन्त्री हल्लणका वना रिपानका और नामावदीत इस्ती अना रवसाँ है। ती नव स्वार्धि ती ने वह वस वसाई कार्या है। वह वस वसाई कार्या से वह है। बहान हिन्दा में इस्ते में देश के वह वह वह रहा वह देश हैं के बता के वह किए वह देश की कार्या के रामि कार्य के रामि का

भानियार्थ सन्ध्यंत्रे सरावारी तो इव वही था। शास सर्वार्थ सार्व द्वाराह्य सोर सामान्त्रको निर्माप्त निष्क स्तित है। संदेश-सार्थ हैंदू साम सोर तामान्त्रते सो इव एनिक मरेवड सामान्त्री है। वन्त्रते सामान्त्री सामान्त्री सो इव एनिक मरेवड सामान्त्री वन्त्रते सामान्त्री सामान्त्री सोर शास्त्रीचा वित्तरीय सोर-नेरी सामान्त्रता सामान्त्री सोर शास्त्रीचा वित्तरीय सोर-नेरी सामान्त्रता हो सामान्त्री सामान्त्री सोर शास्त्रीचा वित्तरीय

वर्षन्य निर्माण करायो बोर बनको प्रतिष्ठा करायो । नय कोतिके विष्य नणनकोति जोर उनके विषय भूषकाने नो जनेक क्यांगी एका की ह

बार्यन मो वर्ष बारे-बोरे शिन् पार थे।
या पर पर नराई पूर्व-दिल्ला मोर प्रान्तियर पानवंत बारां में मूर्ण सीर पानवंत मार्ग्यन को वर्षनानी शिक्षा सामार्थन दरेशा मार्ग्यन पर्वा एवं नेन्द्रिय स्टार्स सार्थ विश्वने पूर्वण सीता है। एक काल-मा व्यन्तियामी हिन्दु-राज्य था। यह पहले मोर ना मार्ग्य की पानवंति मार्ग्य मोर्ग्य ना मार्ग्य की पानवंति मार्ग्य मार्ग्य पर्वा मार्ग्य की सार्विक सामी मार्ग्य की है। स्वर्धार्त्त में मार्ग्य मार्ग्य की प्रान्ति कार्य मार्ग्य की है। स्वर्धार्त्त में मार्ग्य की पानवंति मार्ग्य मार्ग्य की सार्विक सामी मार्ग्य की सार्विक किया था, तदन तर असाई दुर्गसे भीषण युद्ध किया, अतत महमूदने उन्हें पराजित किया, दुग और मन्दिरोंको लूटा और विच्वंस किया। उम ममय राजपूत स्त्री-पुरुपोने जौहर करके अपना अन्त किया था। तदनन्तर फ़तह-पुर, इलाहाबाद, अलोगढ आदि जिलोंमें भारोने अपने छोटे-छोटे राज्य स्थापित कर लिये। महमूद ग्रजनवीके समयमें मेरठ, हापुड, चुलन्दशहर (वरन) का दोर राजा हरदत्तराय प्रसिद्ध था, उसोने मेरठका वह सुदृढ़ दुर्ग बनवाया था जिसे तरमेशरीनक्षों भी नहीं जीत सका था और जिसे मर करनेमें तैमूर लंगको काफ़ा कठिनाई हुई थी। इसी राजाने हापुड़ नगर भी वसाया था।

स्वय असाईखेडामें भारोका अन्त होनेके बाद उसके निकट चन्दवाड (चन्द्रपाठ) में, जिस रपरी-चन्दवाड भी कहते थे, चन्द्रसेनके पत्र च द्रपाल नामक चीहान राजपुतने अपना राज्य म्थापित किया, और चन्दवाह दुर्ग एव नगरका निर्माण करके उसे अपनी राजवानी बनाया। राजा चन्द्रपाल जैनी या और उसका दीवान रामसिंह हावल भी जैनी था। १३वीं-१५वीं शतियोंमें यह नगर बड़ा सुन्दर समृद्ध और प्रसिद्ध था। इस राज्यमें चन्दवाहके अतिरिक्त ५-६ अय महत्त्रपूर्ण दुग एवं नगर थे जिनमें रायबद्दीय, रपरी, हचिनन्त, शीरीपुर (वटेश्वर) आगरा आदि प्रमुख थे। अटेर हथिकन्त, (हस्तिकान्त) और शौरीपुरमें जैन भट्टार-कोंकी गहियाँ स्थापित थी जो महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक केन्द्रोका काय करती थीं। वहाँके भट्टारकोंने उत्तर मध्यकालमें साहित्यरचनाको भी भारी प्रोत्साहन दिया । शौरीपुरकी गद्दी गत शताब्दी तक विद्यमान थो । अत चन्दबाड राज्यमें जैनघर्म और जैनोंकी पर्याप्त मान्यता एव प्रतिष्ठा थी। राजागण प्राय सब स्वय जैन ये और प्रघान मन्त्री आदि भी प्राय जैन ही होते थे। राज्य-सस्यापक चन्द्रपालके उत्तराधिकारी भग्तपालका नगरसेठ हल्लण था। वसके वत्तराधिकारी अभयपालका मन्त्री हल्लणका पुर सन्तरास ना। जिससे चनवाइने एक तुमर जिलाकारा में निर्यंत्व करामा था। वर्षके वराराधिकरावियों साहद कोर बीकामान्ते राज-वामोंके सन्तरासान पुत्र कोर प्रकारति साहद कोर बीकामान्ते राज-वामोंके सन्तरासान पुत्र केर प्रकारती ना राज्यान करनी कोर कराया बीकामान्त्र केर प्रकारति का प्रकार करना करनी कोर केराया केर यो में कोर पुत्र प्रकारतिक राज्यान करना केरी कोर केराया गां। पुत्राम सुनाराधिकर विश्वास करना तथा वर्ष करना केराया मंत्रीय प्रवाद केराया का स्थास का वर्ष करना केराया मंत्रीय प्रवाद कोर किया का स्थास का मोर सम्मे जिल् राज्यान के कारणा राज्येक का था। कामार राज्या कीर सम्मे जिल् राज्यान केराया राज्या केराया प्रकार का स्थास का मोर सम्मे जिल् राज्यान का स्थास केराया प्रकार का स्थास का स्थास का स्थास का मोर का स्थास का स्

नियुक्त में । करते पूर्वजानी बर्जिय तथानर भी बद्दा बर्जान्या ना बर्जेय निम्न अभिरोक्ता करने भीगोज्ञार कराया एक नदीन कुमर किताम में राज्याचीने कराया और बुद्धाराओं करिय पराधकों भी बीरोपूर डीगी मानार्के बामनार्के नाल्याकों जा रहा जा बराईय प्रसारक माहारी मारिय विकासना । जिस्सीक सुरुपार्थ स्टार्मकों भी बासामस्यो बेटारार्थ

नामधानावारिकार रचा मा ।

भर्माको से किन्नुकान से समस्य एके विकास के पुरावारिक निर्माण करने किन्नुकान के स्वाद किन्नुकान के स्वाद किन्नुकान करने करने किन्नुकान करने किन्नु

...

वासीय इतिहास । एवं गी

इप्राहीम लांदीने अपने माई अलमसांको चादवादका सूवेदार बनाया किन्तु वह वादरसे मिल गया। चन्दवादके हिन्दू राज्यकी रसाके लिए राणा सागा भी आये थे किन्तु हुमायूँके साथ चन्दवादके युद्धमें पराजित होकर उनकी सेना लीट गयो। मुगनवालमें इस राज्य और नगरका अन्त हो गया। आगरे जिलेके ह्यिकत नगरमें इन्ही चौहानोंको एक बाग्या भदौरिया राजपूनोंका राज्य था जिसका संस्थापक राजुलरावत (१२वीं दाती) था। सीकरीमें मीकरबार राजपूनोंका राज्य था। क्टेंहर (क्हेंसखण्ड) में कटेहरिया राजपून सर्वेनवीं थे।

हम प्रकारके और भी कई छाटे-छोटे हिन्दू-राज्य यत्र तम उस कालमें रहे प्रतीत होते हैं जिन्हाने दिल्लीके मुलतानोंका नाका दम किये रखा। प्रत्येक सुलतानकी मृत्यु, दुर्बलता या अमावधानोका लाभ उठाकर ये स्वत-न्त्रताका झण्डा लडा कर देते थे।

लगमग ३५० वर्षके इस मुमलमानी शासनकालके प्रारम्भिक हेढ़-सी वप (लगमग ११९०-१३४० ई०) तक ता इम्लाम और उसके राजनीतिक प्रमुखका दुत बेगसे प्रसार हुआ यहाँतक कि सम्पूण देशको, अटकम् करक और हिमालयसे कन्याकुमारा पयन्त उमने आण्छादित वर लिया। ये नवामस मुसलमान धर्वर विदेशो थे, घर और राज्यके लोभ तथा इस्लामके प्रचार और कुफके विनाशको भाषतासे उन्मत थ। उनके रोमावकारी अध्याचार और उनको अमानृधिक क्रूरता भारतवयके लिए सम्या नथीन वस्तुएँ थीं। घम एव त्याय्य युद्धके आदो भारतीय बीर इन नृशंस धर्मा धर्वराको उस पैशाचिकनाको समझ हो न पाये जिसमे आत्म-समयण करने वाले या युद्धमें बन्दी हो जानेवाले योद्धाओंकी भयानक यन्यणा दे-देकर अनिवायित हत्या कर दी जाती थी, भागते हुए शत्रुओंका पोछा करके उनका मेहार कर दिया जाता था, निहत्यो प्रजापर लूट-मार आदि भीपण अत्याचार किये जाते थे, स्त्रियोंकी लाज लूटना और असहाय बच्ची, स्त्रियों एव वृद्धोंका प्राणान्त कर देना एक खेल था, खेतीको उजाइ देना,

नोर्वीरो अस्य कर देना. विद्याल वनरोंको विद्यंत करना. देशनीनरों कीर नृतियोको तीवना कापुत्री नृतियो, बाह्यनी बीर बार्धियोनी मी केल रेना और उनका यस कर कालना जन्म-वरकारोंको कम बाक्ता वर्ड-वैने वर्तः कालेली पनुष्का समान करना इरवादि सावारम वार्ते थी। कम्पून न्यास्त्र बुद्धने एक-एक बारवीय वीर एक-एत बनुवीरा काला करवेत्रै समय या का भीरता एवं निर्भीतवार्त वह सक्ते कही सर्वि भेष्ठ या तिल्लू जाले प्राप होत देवेचर अवसा परामीच्या स्तीतार कर केनेतर जो इन कलनार्तिजोठे अरने चन देव हदी और बण्डीची एड करनेमें धरण नहीं या । संबद्धन करके विरोध करनेमा थी बारडीओं बक्तर नहीं निका फलस्यकर इब तुमानी। बाँबीके बम्मूल भारतीन बी^{क्र} वकरम स्त्रीम्बद हो बना । असके राजनीतक मार्थिक रूपे क्रोस्टिंग सन्ति-मोत मुख्य बानः हो वने और नैतिक वर्षकता वह रकाने क्यों !

क्टी कर बारबोर्ड करमद १५ जब वर्गना जातानै इत्यान करारेटर

दल **देवरता गया** । किन्तु कर्न-कर्नः मारतीयनि बद्धा वेका कि मृद्धि विवेक स्टेर र्तितिक सकते कर्मा में बातु बनको मर्गमा होन हैं : वैकनी वर्षि सेंप िक्तीमें बार बंध परिश्रांत हुए और अलोक बंधके अविश्रांध बुक्तान सन्ते बारतीसी-दार्ध वय विने वये । पुष्ठ इत्वार, पर्वन्त नुषे वर्ष्यस् लाविकार, इराबार, बनाबार क्यी का नुकालींने वर किने हर है। बुधरे, स्वति जुलकाराशाची संस्थाने स्वतिश वृद्धि हो वयी थी लिये बंदका नुक्त कारण मी. निषेद्यो नुक्तमालीका मानात. वहीं वा वस्त की देवने बन्दर्भ वर्ष-गरिवर्धन एवं एक-विकासी ही वैद्या हवा चा र 👯 विवेदी प्रकारकोला बनुरात तो और-और कम ही हीया का रहा ^{बहु ।} तीकरे, दिन्तु बोर केंग वाकु बन्ती इन आनासीने भारतीय जनता रा क्षत्रिष्ट बारशीय राजावीके हुएको वर्ष-तेन वेद्य-तेन, संस्कृति-तेन स्पं स्थानमञ्जासको को जननिक्त निर्मे रखी । अनुमि नुस्करात कुननार्थे

पुनेदारों बोर मरदाराको भी अपनी विद्वता एवं पारिम-वलमे प्रभावित करके उनको ह्रूर धर्मा धतामी हरूमा विषा और इस देशको अपना ही समझकर इसरो सस्कृति और जन साधारणका झाटर करनेकी प्रेरणा दो। बलाब्दीन खलजीवे समप्रेगे ही मुन्त्रा-मीलवियाँका प्रमान राज्य-सार्धा में घटने लगा था। फलस्यमण भारतीय जीवा किर बल पगडने लगा। मु॰म्मद तुग्रकुषके अमयम ही दिल्लीया मुगलमानी माम्याज्य छिन्न-भिन्न होने लगा। वस्तुत परे दशपर यह पठिनाईसे तास पालीस वर्ष हो रह पाया था । अनेक नवीन एव स्वतात्र हिन्दू और मुसत्रमान राज्य स्यापित हो गये और पुनने हिन्दूराज्याने भी वल पवटा। दक्षिणमें विजयनगर-या रावित्रदाली हिन्दूमाम्राज्य मुगलमानीको उस दिलाम प्रगतिका लगभग सथा दो सौ-वर्ष पयन्त सफल अयरोपक रहा। उत्तरमें मेवाडके बीर राणाओंके नेतृत्वमें राज्स्यानके अनेक विभिन्न राजे, गुजरात, मालवा और दिल्लीके मुसलमानोंपर मवल एवं सफल निवन्त्रक रहें। म्बालियर, चन्दबाष्ट, बरन, फटेहर आदिके अनेक छोटे-बढे हिन्दूराज्योंने मुक्तानामा मुख्यो नींद न मोने दिया । दिल्ली, वंगाल, गुनरान, माल्या खानदेशको तथा यहमनी-राज्य एय उसके पतनमे उत्पान दक्षिणको पाँच मुसलमानी सस्तान्त जो प्राय मब ही समान बोटिको बीर स्वतात्र मीं, जपने आचरण और व्यवहारमें दिल्लीके प्रारम्भिक सुल्तानोंसे यहुत कुछ मिन थी। इनके शासक नाम और दिपायेक छिए हो मुसलमान थे, इस्लामने नियमोंके विगद्ध मद्यपान, व्यभिचार, सगीत, चित्र, मूर्ति आाद फलाश्राकी रसिकता, हिन्दुश्रो और जैनोको महुलताक माथ शासनके विभिन्न विभागामें नियुक्त फरना, उनके धर्म और जातीयताक प्रति उदार बोर सहिष्णु रहना, उनके गुरुऑका सम्मान व रना, प्रादेशिक भाषाओंनी प्रोत्साहन देना, प्राचीन मारतीय ग्रापॉके अनुवादादि कराना, मारतीय आयुर्वेद, ज्योतिप आदिमें विश्वास करना, इत्यादि कार्योस वितिपय अपवादोंको छोडकर वे आधे भारतीय ही बन गये थे। युदा और विद्रोह-

प्वं-सुगलकालके प्रावेशिक राज्य

दनको तमब हो वे अपनी वर्तान्य वर्तरताना प्रवर्षन करते वे अन्यम सामानवस प्रशापे दिवसा प्रशास रक्ष्ये ही थे । श्रंप्यामें मुख्यमान स्र राजमें बारतके प्राय किसी वो प्रदेशमें पूरी करवाके स्थापनके वर्तिक नहीं में । ताम हो स्वतन्त्र हिन्दु-बसाटी एवं राजाओंके महिरिक्त अनेक नुकरमानी राज्यन भी अनेक वरं-पूराने दिन्तु बामना-सरदार, बनराने बीर वावीरशार वे । इब प्रकार नुबुम्मत तुक्कुको बमवडे केवर नुबक करते, सकता तरका सनस्य दी-की वर्षका काळ जारतकांचे राज्यस और मुक्तमानी राजनीतिक सन्तिक प्रतन एवं हिन्दु-राजधनित दर्व सार्योज वर्गी और बन्कृतिके प्रवस्थानका वय वह । रित्योके नुष्यान्त्री नृष्यम नुष्यानीती वातीयता वनिवेदा है नवरि में मांबवायतः तुर्व रहे प्रतीत होते हैं, बचनी भी तुर्व में तुरहरू एक तुर्के और जिल्हु बाटतीकी बताति में बैस्स असी-सांतरी अरही वैनरोका मध्य भवते वे बोदी और लुधै पठल वे । अर्थान सुब्दानार्ने विजिल वार्तिकोत्रे बीर बहुका बारतीय एका-निवक्ते वरलल स्वक्ति वे । इत तह नरेपोने अविकास्त तुन्ती और दक्षिनश्रकोने कुछ विधा ने।

ने प्रकृत का का के प्रकारिकों पूर्वजन स्वस्त स्वार्ध प्रकृतिया द्वार परिवार के स्वीर के स्वर्ण की स्वार स्वार्ध स्वार्ध है, एमें वार्ज हैं सर्वार्ध की स्वरूप है। कुम्पानीकों तथा मोटा परिवार, हैए तमें वार्ज हैं सर्वार्ध कर का निवार कर का निवार कर का निवार कर कर कि स्वार्ध की स्वार्ध के स्वार्ध के

वार्त्तान इतिहरू : रह^{दर्शि}

वनवाये जिनमें अवश्य हो हिन्दू एव जैन-मिन्दरोंके विघ्वससे प्राप्त अतुल सामग्रोका ही बहुचा उपयोग किया, तथापि एक नवीन भारतीय मुसलिम स्वापत्य-कलाको भो जन्म दिया और उसका विकास किया। प्रान्तीय भेदोंसे प्रान्तीय सुलतानोने उसमें और भी विचित्रताएँ उत्पन्न कीं। मारतीय भापाओका भी प्रोत्साहन मिला और विशेषकर जन-भापाके रूपमें अपभ्रश्नासे विकसित दिल्लोके आस पामको जन-भापा (खडो बोली हिन्दी) में अरवी फारसी तुर्की शब्दा और लहजोंके समावेशसे एक नवीन जन भापाके विकासको प्रात्माहन दिया जो उस समय जबान हिन्दवो कहलातो थी।

मुसलमान-सुलतानोका शासन चाहे जितने वहे या छोटे प्रदेशपर रहा वह मुख्यतया नागरिक ही था। राजधानियो, प्रमुख दुर्गों और नगरो-पर लपनो-अपनी सेनाओं के बलपर मुलतान और उनके सुबेदार या सरदार निरकुश धासन करते थे। सामान्य नागरिक शासन पूर्ववत् ही देहातो एवं नगरामे हिन्दू अधिकारी करते थे। जो हिन्दू-राजे, उपराजे या सामन्त-मरदार पहलेसे चले आते थे वे उसी प्रकार चलते रहे और प्रजासे मूमिकर बादि पूववत् वसूल करते रहे। उन्हें केवल अपने प्रदेशके मुलतानकी अधीनता स्वीकार करनी पडती थी और उसकी या उसके प्रतिनिधयों को जैसा जितना निश्चित होता कर देना पडता था। अल्पसब्यक मुसलमानों के लिए इससे अधिक सम्भव भी न था, विशेषकर जब शासित हिन्दू-जनता जनकी अपेक्षा वीसियों गुना अधिक थी। इस प्रकार उस कालका मुसलमानों शासन प्रधानतया फ़ौजी और शहरों हो था। बहुभाग जन-साधारणको वह युद्ध, बिद्दोह, लूट-मार और कर आदि वसूल करने के अवमरोंपर ही, सो भी उसी सम्बन्ध में, स्पर्श करता था।

वहुसस्यक भारतीयोंके वोच विदेशोसे सागमन, प्रजनन और धर्म परिवतन आदि कारणोंसे षढती हुई मुसलमानोको सस्या एक नयोर समस्या थी। प्राचीन यवन, पह्लय, धक, कुपाण, हूण आदिकी भौति मुसलमान भारतीय समाजमें आत्मसास् न हो सके। वाहरसे आते रहने पत्ने पृथ्य-बीविधियों बनाये कहुर पर्यावकाओं बाधीय क्यों तर्थं बीर शहरीयोंके पति बनेते तीन मिरोतां क्या मुस्ताकां के राव्य गाराधीय मिरोतां कर शिक्षा कर्याहरण वीर विशासकार्यों हुए पर्धे प्रदार ही समय प्रवान बहेरत बचा रखा था। बचा माराधी प्रवान के मुस्ताकार्य भागत साराधीयों और साराधीयांकों कर्याहर पहुंची हुने पूर्व उनके विश्वामी बनेते स्वकृत विशास अहिल्युमा बीर बर्जाविस्त मिरा विशेष सम्बाद न मा। प्रतीन हुक्त्याल पहुंच स्वता दें वह मिरा विशेष सम्बाद न मा। प्रतीन हुक्त्याल पहुंच सहस्ता में प्रतिकार करें न है स्वता ह

पंचायनक हिन्दु बारिक्के को ने बाबाजिक बराई व रखता ना ।

आर्थनक दिन्दु बीर चैन-करियाने बरखद्ववर्धक गीरवागार्थे वर्ष शांतिक ऐतिहासिक रावी अन्तीता प्रचलन बोकवाता बराबंबने वर्षे

मोपाडे प्रवासना शतन विशा

जहाँ बोरोंके स्वातन्त्रय-प्रेम, युद्ध और देश-प्रेमको प्रज्वलित रखा और चनके धर्मभावको पुष्ट बनाया वहाँ उनके उत्तराधिकारियोने मुसलमान सूफ़ो-सन्तोंके सद्श निर्गुण भिक्तका, किन्तु उनके प्रतिकूल उसके प्रेम-मार्गका नहीं, वरन् ज्ञान-मार्गका प्रचार किया। इस भारतीय धर्म एव समाज सुधार आन्दोलनके प्रमुख पुरस्कर्त्ता पूर्वोत्तर भारतमें रामानन्द, सन्त कबीर, पजावमें गुरु नानक, मध्यभारतमें सन्त दादू, सन्त सुन्दरदास, दक्षिणमें ज्ञानदेव, नामदेव, तुकाराम और रामदास थे। वंगालमें चैतन्यदव, बिहारमें विद्यापित ठाकूर, गुजरातमें लीकाशाह, वृदेलखण्डमें तारणस्वामी थे । इन सभो सन्तोने अपनी बोल-चालको सघुक्कडी भाषामें पदरचना और व्याख्यानों एव सत्सगों द्वारा हिन्दू मुसलिम विद्वेपको दूर करनेका भी प्रयत्न किया । चन्होंन मन्दिरो और मूर्त्तियोंका विरोध किया, सरल निर्गुण धर्मका प्रचार किया, जाति-पौति और अन्य सामाजिक कूरीतियोंके विरुद्ध आन्दोलन किया। इनके शिष्य और अनुयायी हिन्दू, जैन, मुसलमान सभीमें-से होते ये। अपभ्रश भाषास हिन्दीके विकासका भी इन सन्त-कवियोंने भारी प्रोस्साहन दिया। उन्होंने भारतीय जीवनमें एक नयी स्फूर्ति भर दी, हिन्दू-मुसिलम वैमनस्यको बहुत कुछ कम कर दिया। इनके अतिरिक्त ब्राह्मण पण्डितो, जैन मुनियो, भट्टारको और यतियोंने भी अपनी-अपनी धर्म-सस्याओंमें समयानुकूल परिवर्तन करके तथा अपने प्रभावसे जनता एव दासकोको प्रभावित करके और अपने कार्यों एव प्रेरणासे देशके नैतिक स्तरको उन्नत करके तथा धर्म, कला, साहित्य लादि क्षेत्रोंमें उसको सांस्कृतिक अभिवृद्धि करके देशके पुनर्निर्माणमें स्तुत्य योग दिया। उन्होंने कमसे कम भारतीयताको सलग और अक्षुण्ण बनाये रखा। उपरोक्त अच्छाइयाके साथ ही आततायियोंकी कुदृष्टिसे अपनी बहु-वेटियो-की रक्षा करनेके लिए परदेकी, वाल-विवाहकी, संवीकी, छूतछातकी जैसी कुप्रयाओंका जन्म भी हिन्दुओंमें इसी कालमें हुआ और जाति-व्यवस्या भी अधिकाधिक जकडती चली गयी।

पूर्व-सुगलकालके प्रादेशिक राज्य

अध्याय ३

मुप्रस-साम्राज्य—ऊर्ष्णय

१६वी बातारणे हैं के द्वितीय बारके बारण्यमें ही बारतीय छेटाएं में बक बचीन महत्त्वपुत्र राज्य-बारीय हुई सीर मुद्रश-मंबके जाने दर्ग

हेगो नरोज एव नवळ एउन्ध्योत्तरण बरव हुआ कि निवर्ष न ने वर्ष कामोजून पुननदानी उद्यादी इत देवते नता औरच एदं क्योतित इत्ये निजा पानु का देवको राजनितिक आविक वर्ष वास्त्रतिक क्यातिके से विकारण पहेचा दिया। निवर्ण दोन्ही वर्षोन जाएउन्हेंने मृतकार्योती। एजनिक स्टें

साम्ब्रीकर बता बोरे-बोरे श्रीचमन वर्ष अनवत होंगों या यों से बीर गिनु-बंगिन बतारेवल सम रहताती वा दो है। मुख्यमांकी मार्गिकर तिस्थान साम्ब्रामी बीर सुप्तान्त रिकारेल कुण्यानी कण्यान सम्ब्रामी सामित्र हार्गिक्य वारादीन कराता जब मुनियर होने बारों मार्गिक स्वत्यकारी कुण्यानाजीन भी क्यान ही पूर्व की और सकते रावा हो कर्ममा मार्गिकर साम जो जान कराती का दोने ही। श्रीचनों कर्मी स्वीचन कुण्यानाजी सामन और सम्ब्रे तिर्मुख अस्पाराधीन वार्मु कर्म की कर्ममा कराती कराती कराती कराती कराती कराती वर्ष कराती कराती हो। कराती कराती कराती कराती कराती वर्षनीयकार कोई कराती हो। कराती कुण्यानाजीन का स्वार्थन स्वीचीयन कोई कराती कराती हो। कराती कुण्यानाजीन का स्वार्थन

ना नद्दशरी बोर का हो थ प्रश्ती में नहीं कई दाना ना । इर्न

भारतीय इतिहास एक धी

मारणीसे उनमें धर्मा पताया जमाद और अनुदारसाया विष भी पुछ पम होने लगाया। किन्तु वे यह भी समझते पे और उनमें मुकामील्यी उन्हें यह नमझानेम रभी न पकते थे कि इन दानो उपायोंके जिना उनकी बीर सनके धर्म एव राज्यका रक्षा दम देगमे असम्भव है, अस स्वरधार्य ये इन उपायामा अवसम्बन ऐते ही थे। उनकी राजनैतिक एकपुत्रता भी

कभीकी नग हो बुकी थी। दगाल, मालया, गुजरान तथा दक्षिणावधके उत्तरी भागकी मुमलमानी मन्तानतें और दिल्लीके मुलतान सब एक ट्रमरेसे मर्ववा स्वतात्र और प्रवासे । उन सबमें ही परम्पर फुट, ईव्या, हैप, थैमनस्य और युद्ध निरातर चलते थे। उन मयका प्यान अपने अपने राज्यको अक्षण बनाये रखने और हो गका तो अपने निकट पदीसियोकी क्षति बरके अपनी-अपनी शनित और विस्तार यदाने तक हो सीमित था। मियम अनेक छाटे छाटे अरबी अमीर इसा प्रगार परस्पर कलहमे ब्यस्त ये। पंजाबमे लेकर बिहार तक पठान मरदार पैले हुए थे। दिल्लीके लोदी मुलतान उनमे मुलिया थे। बित्त पंजाब और पूर्वी भारतमे पठा। मरणर नाम मात्रका हो उनके अधीन थे। वे लोदियोंके पतनके ही द्रच्छन

ये और परस्पर भी कलन्म रत थ । भारतकी इन सभी मुमलमान राजा व्यक्तियोका उस ममय एक सूत्रमें संगठित हाना असम्मय या । इसके विपरीत, जन-साधारणमें गैर मुमलिम भारतीयादा अस्यधिव सम्या-बाहुत्य या । विभिन्न मुसलमानी मुस्तनतोमें ये राज्य-कमचारियों उपराजाओं एव सामन्तों, जागीन्दारो आदिके रपम भा वाफी संस्वाम घे इसके अतिरियत, दक्षिणापधके आधेसे अधिक दिलाणी भागपर विस्तु एव शक्तिशाली विजयनगर-माम्राज्य या और उत्तरापयमें सम्पूर्ण राज स्थानके अनेक स्वतात्र राजपूत राज्य थे जिन्हें मेवाहके कायिसशाल राणाओंका नेतृत्य प्राप्त था। दक्षिण पूर्य भारतमें गोडवानाव विस्तृत हिन्दू-राज्य या, यु देलखण्डके यहुभागपर ग्वालियरके तीमः

राज्यका दासन या तथा चन्दनाह, घरन, तराई आदिके अन्य अने

मगछ-साम्राज्य--- कर्ध्वगत

स्थानसम्बद्धाः विभूतसम्बद्धाः वे । सामृद्धाः वनने बद्धः वत्र जनसम्बद्धाः नामदिक नाग-वालिने नहीं अधिक नदम के। बढ़ि कर करा कोई केना सारतीति-विकास देवनेवा हवा होता को इन वार्यान प्रतिकाश एक मूच दिसी लक्ष्मा की बोर्डिक ही प्रचार्थ बल्ल नुननवाना राज्याना अन्य कर दिशा का अवन्य बांग नाह्य बागवर्ष निष्कार क्षम बह्याची मारतीय करता. भारतीय मरकार बीर. व्यवहारी नरज ही बारत पान इरेक्टर नृगण्यांची बालगडर जान कर बडते हैं। विज्ञवनकः राज्यसम् को पांडवाताको मध्यिनिक ग्रां^{च्या} कृष्ण^क मानवा मृहरात और राजनावा मान्यनावा नममानमे मान वर बंदी को इसी बचार राजन्यान सानितर चन्दबाद शाहिके चान निकर्ण बतार बारशन बटलाक्षा नरगको अधिनगढ बङ्ग कर बवते में १ दिन्तु दु^{र्वीता} न भारतीयोज कम नजर तक सक्तिम कारतीय राष्ट्रीयताका बार्व कारी ही नहीं हुन्छ वा - विकास दिश्रीकवान सरहत और न्यामंत्रिकी रक्षांत्री नाव उन्हें एक नुपने श्रीपता वा अस्तर निन्तु वह भी दशका क्रमार ने था को बनके राजनीतिक संबागका स्टब्स नार्माण नगा सदछा। स्टब्स

चा ना काहे प्राथमिक के हात्राचा इसस नागांग का वा बांधा। क्यों में हुंग हुं हुं सर्थके-को पारंग होय बोर बय एक ही क्षित की स्थान पर काहे को स्थान एक हैं कि की को से बार का हुनकानोंग नारत्यन बयूर्ग एक स्थानित करवें ने कक्षीत की मांचा के प्राथमिक का मांचा के प्राथमिक का मांचा के प्राथमिक की मांचा की मांचा की प्राथमिक की मांचा की मांचा की मांचा की मांचा की प्राथमिक की मांचा मांचा की मांचा मा

रिल्मो व्याप्त मार्ग्स कर बहुत ही अपने व्यवहारण विकास कर केना । ४६६ वासीय प्रतिस्था एक सी

ऐसी परिस्थितिमें यावर आया, सहज हा उमने लोदियोगा अन्त वर्गे दिल्लीवर अधिवार वर लिया और इस देशमें गुगल-वश एव राज्यकी नींय ढाली। यह शोध्र हा मर गया। उसके उत्तराधिकारीको दग यणके भीतर ही देश छोड माग जाना पडा । १५ वर्ष बाद बह पुन आया और उमके पुत्र अववरने मुगल्वेश और साम्राज्यको इतना मनितगाली और स्वायी बना दिवा कि घर अपन ग्रमपकी मगारकी एक स्पृहणीय शक्ति हो गया। मुरा ठवंदाका अस्तिस्य और दिल्लोपर उसका अधिकार तो लगमग तीन सी दव पयन्त बना रहा कि तु मुगुल गाग्राज्यका चरमात्क्य नाल स्पामग एक भी वप हा रहा । अवस्य राज्यमालये मध्यो सेकर बीरंगजेवके राज्य-कालक मध्य पयन्त भारतका मुगल माग्राज्य और उमके गम्राट न पेवल भारतीय इतिहासमें हो यरन् सम्पूण सरदाशीन विद्यमें गर्नाधिक शक्तिशाली प्रतापी और वैभव-सम्पान प । भारती म्गलमानी राज्यवशाम इतना दीघकालोनयम भा अप काई म हुआ। श्रीरगञ्जेयम राज्य-शालव उत्तराधमें साम्राज्यमें अनेश दुवराताओंने पर कर लिया था और शोघन्पतनक चिह्न दृष्टिगोचर हान रुगे थे। उसकी मृत्युक कृष्ट वप उपरान्त ही साम्राज्य दूत वेगसे छिन्न-भिन्न होने छगा। उत्तरयतीं मुग्नुस नरेशाको अयाग्यता एव अकर्मण्यता, उनक मुसलमान सरदाराके विद्याम-घात और स्वाथपरता, जोघपुरके राठौड राजाओंके नेतृत्वमें राजप्ताका उत्थान, महाराष्ट्रक पदावाजा और उनक सन्दारोको हुत प्रगति, राज-धानीके निकट ही जाटाका और पजावमें सिक्तोंका उदय, नादिरशाह और सहमस्ताहके बाक्रमणा और सात समुद्र पारमें ज्यापारार्घ आनवाले अँगरजाको छल-यलपूर्ण सूटनीति, समने मिलकर मुगुलाका पतन सम्पादित किया । सम्पूण भारतके एकच्छत्र दानिनदाला सम्राट औरगजेवकी मृत्युको साठ वर्ष बीतते-न-चीतते उसमा यराज पाहमालम नाम मात्रका हो मुगल-मन्नाद् रह गया था और मात्र दिल्ली आगरापर उसका अधिकार रोप रह गया था। १८५६ ई० में अन्तिम मुग्र सम्राट बहादुरशाहका राज्यान शिद्राज्य के। मान्द्रिक करते वह वह अन्त्रमारी मा दिव पान-धारिने कही अधिक नवल के। वह कब व्यक्त में दि का वार्य के भी दिवा पान्नी रिवेश्य के दिनों हुआ होना को का वार्यों के भी दिवा पान्नी के दिवा के कार्यों के पान्नी के पा

बसर भारती बरामाधी महाना अधिनवर बहु वर बसते वे र दिना दुवीन्ति में बारतीयीन वस समय श्रेष्ठ असिन भारतीय रास्तीवराज्या वाद वीर्यी वी मेरी द्वारा था । विदर्भी विदेशियात रचनव और स्ववाधिकी स्वाधी

वार नहें एक मुख्ये बीचना पर बराव निर्मु वह भी एतमा जाया वें मा वे बचने पर्यक्षित बंदानका एक्ट नामांत्र करा बचना। व चण्ये में मुक्ति हों बचने बचन राम्य बंदा और वंद एक हो भीतिक थी। हमें बारन बुक्तियोगेका सारम्य कर्ता एम्स ब्लाग्ति क्योंचे बचनों नामी तही नामी बहु हम देवन बंदे कि विक्र पाने क्योंचे कराये वर्णे मानी बचारों हो जी बीट क्षेत्र अस्था हुएंची बची है के सारम्य प्रमाण मानी बचारों होंगे विकास हम हमें हमें के स्वापन व व्यक्तियोगे बार बरे। बेचाइन एम्स नामा सीरावार बच्चे बचने पाने मी वहा व बेट्ट के से बचने हमें स्वापन सारा सीरावार बच्चे बचने पाने मी वहा कि ब्यंद्रियों से सारम्य सीरावार सीरावार सारा सीरावार क्या क्या करायोगे मी वहा कि वहां हमें सीरावार सिंग्य हमें सीरावार सीरावार सारावार सीरावार सीरावार सारावार सीरावार सीर

तो भूँद राजा । यह करवाना या कि तैनूरको वांति कावर औं लेटिवर्वेश कान करके जबार बाववा बीए ठव यह सर्वे ।११ बार्य एक बहुत हो करने ब्रियंत्रास्थ्य निकार कर केया ।

कर्तात इतिहास पुत्र परि

ऐसी परिस्थितिमें बाबर आया. सहज ही उमने लोदियोका अन्त करके दिल्लीपर अधिकार कर लिया और इस देशमें मुगल-वश एवं राज्यकी नींव डाली। वह शीघ्र हो मर गया। उसके उत्तराधिकारीको दस वर्षके भीतर ही देश छोड भाग जाना पडा । १५ वर्ष बाद वह पून आया और चसके पुत्र अकवरने मुगुलवश और साम्राज्यको इतना शक्तिशाली और स्यायी वना दिया कि वह अपने समयकी ससारको एक स्पृहणीय शक्ति हो गया। मगञ्जवशका अस्तित्व और दिल्लीपर उसका अधिकार तो लगभग तीन सी वर्ष पर्यन्त बना रहा किन्तु मुगल साम्राज्यका चरमोत्कर्ष काल लगभग एक भी वप ही रहा। अकवरके राज्यकारके मध्यसे रेकर कोरगजेवके राज्य-कालके मध्य पर्यन्त भारतका मुगल साम्राज्य और उसके सम्राट्न केवल भारतीय इतिहासमें ही वरन् सम्पूण तत्कालीन विश्वमें मर्वाधिक शिवतशाली प्रवापी और वैभव-सम्पन्न थे। भारतके मुसलमानी राज्यवशोमें इतना दीघकालोनवया भा अप कोई न हुआ। औरगजेबके राज्य-कालके उत्तराघमें माम्राज्यमें अनेक दुवलताओंने घर कर लिया था और शोध-पतनके चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे थे। उसकी मृत्युके कुछ वर्ष उपरान्त हो साम्राज्य द्रुत वेगसे छिन्न-भिन्न होने छगा। उत्तरवर्ती मुगळ-नरेशोको अयोग्यता एव अकर्मण्यता, उनके मुसलमान सरदारोंके विद्वाम-घात और स्वार्थपरता, जोधपुरके राठौड राजाओंके नेतृत्वमें राजपतीका उत्यान, महाराष्ट्रके पेशवाओं और उनके सरदारीकी दूत प्रगति, राज-धानीके निकट ही जाटाका और पजावमें सिक्खोंका उदय, नादिरज्ञाह और अहमदशाहके आफ्रमणा और सात समुद्र पारसे व्यापारार्थ आनेवाले अँगरेजोंको छल बलपूर्ण क्टनीति, सबने मिलकर मुगलोका पतन सम्पादित किया । सम्पूण भारतके एकच्छत्र शनितशाली सम्राट् औरगचेवकी मृत्युको साठ वर्ष बीतते-न-बीतते उसका वैद्यज बाहबालम नाम मात्रका ही मुग्रल-सम्राट् रह गया था और मात्र दिल्ली-जागरापर उसका अधिकार घेष रह गया था। १८५६ ई० में अन्तिम मुग्रल सम्राट् बहादुरशाहका

नामाज्य दी दिल्पीके भी नेत्रभ बाल क्रिकेडी नहार-वीतारीके नीदर ही नीमित या । यह यह होते हुए जी इसमें हन्देह नहीं है कि मुख्यानाल भारतीय इतिहानका एक बत्तना बहत्त्वपूर्व तुन है । अन्ते नुदीर्थ धारार्थ बावमें इत्तर देशकी बक्तोनुनी बन्धीत देखी । १ बाबर (१५२६-३ र्ड) तबरक्रमके तुर्व नुमदान वैदर्दनकी

पोपपी पीडीमें रूपक हवा था। ब्रबस्त दिया निजी बनरमेत रीमुस्के र्थया (सन्त्रप्रतया पीत्र) श्रीरमबाहरा वृत्र वा श्रीर नम्प-एप्रियानै प्ररक्षणाची क्रोडी-सी (रवानरका स्वाधी बा । क्रांतरकी मी प्रसिद्ध मेंनीक

तरशर चेनेडक्षांके बयान चक्ताईड्रोकी दुवी थी। इस जनार वांदर तुक सीर मनोल १९ल-नियमशः सूच वः। वदस्य वयः सूचक सहसास्य और दसके किए कबी-सभी कहताई सावका भी प्रतीन इसा । विश्वी मुबलोशी एक बामान्य क्यांकि छो। १४८३ ई. में बाबरता कर्ण हुंका मा । तेराह वर्षकी अस्त्यामें हो यह क्रावमाने मनने छोटे-वे नैपुत्र राज्यस रधानी हवा। बचको नहरूनायांका अपने प्रतासे पर्वन वैजरके बाजस्याको प्राप्त करके बनरहानके विद्यालनगर मैठनंकी भी र वो बार जबने गगर इन्दर्भ विश्वय किया निरंगु बोधों हो। बाद यह उनके हाक्ने निकस नेया । उपनेत सरक्षारीकी धानवाके कारक अरेचना की बगते किन नवा और बलात बढे शाम बनावर स्परेक्षने मानता गरा । १५ ४ वे में यह बच्चानिस्तान बाह्य और वर्गके जरवनीको निकासकर क्या वेच वेचपर काम राज्य स्वास्ति किया देश कारकको राजवानी बनाया । करीहे भी ईरानके बाद परनायनकी बहानताने बसने बच बार बनएक्नाओ

बिर इलास्त किया जिल्ला स्वादेशनी बाँग किर लिखान बाह्य लिया जीर बढ़ फान्यर काबुस गारब बीट जाना । अब इब दिवाने नड पूर्वेतका बाजोंकोंके भारते नाजुनमें जी क्षत्रको स्थित ब्रुप्तिक न थी। ऐसी निर्देशिये पारतपूर्व ही वह प्रभाव बुरक्षित आला दीख बार और उपने

निधव हो बग सा

-

बार्त्सन प्रतिशत पर रेजे

इस देशकी ओर घ्यान दिया। भारतकी तत्मालीन राजनैतिक परिस्थिति भी सयोगसे उसके अत्यन्त अनुकुल थी। दिल्लीका पठान स्लतान इयाहीम लोदी अयोग्य, मुख और अत्याचारी था। उसने स्वय अपने पठान सरदारो और सम्बन्धियोको भी अपना शत्रु बना लिया था। उसके वशके हो बालमर्खा लोदी और दालतर्खा लोदी जो पजाब प्रान्तपर बिंघकृत थे उसका विनाश चाहते थे। उन्होने इसी उद्देश्यसे वावरको आमन्त्रित किया। वे समझते ये कि तैमुरकी मौति वावर भी इब्राहोम लोदीका अन्त और दिल्लोकी छूट मार करके चला जायेगा और वे फिर सरलतासे दिल्ली राज्यके स्वामी वन जायेंगे। राणा सागा भी ऐसा ही समझता था। अत ये लोग वावरने आक्रमणामें तनिक भी बाधक न हुए। किन्तु बावर वीर योदा और फूशल सेनानी ही नहीं था, वह चतुर राजनीतिज्ञ भी था। १५१८ से १५२४ ई० के बीच उसने भारतपर चार बार आक्रमण किया। प्रारम्भमें उसने सीमान्त प्रदेशका अन्वेपण करके उसे अधिकृत किया, फिर शनै -शनै पजाबमें घुसा, दौलतखाँ लोदीके विश्वासघातसे रुष्ट होकर उसका दमन किया और १५२४ ई० तक काबुल से सम्पूर्ण पजाब पर्यन्त उत्तने अपना अधिकार भलीमाति जमा लिया । तदनन्तर १५२६ में नसने दिल्लीपर आक्रमण किया। इब्राहीम लोदीने अपनी विशाल किन्त निकम्मी सेना छेकर पानीपतके ऐतिहासिक रणक्षेत्रमें उसका सामना किया. किन्त पराजित हुआ और मारा गया । दिल्लीपर मुगुल वाबरका अधिकार हो गया । पठानोंको आपसी फूट, इब्राहोम छोदोकी अयोग्यता, उसकी सेनामें उचित सगठन एव क्राल नेतृत्त्रका सभाव, बावरका तोपखाना जो युद्ध विद्याका भारतके लिए उस समय एक नवीन आविष्कार था, और उसका कुग्रल नेतृत्व इस विजयमें प्रधान कारण थे। छोटे-से किन्तु अत्यन्त अन्यवस्थित छोशो साम्राज्यको उसने अपने सेनानायको-द्वारा शर्न शर्न जीतना शुरू किया। जो सरदार जिस प्रदेशको जीतता उसे ही वह उस 🛴 प्रदेशका शासक नियुवत कर देखा।

पर वर्ती हु-लार करेक के नोर्देव दिन की मान वा नत्य करा। स्थारी एटन क्यांत्र करें के मान से ना करें दिल्ल करेंचों मेर स्थारेश दिल्ली करेंद्रे से विरेट मूटनार और मुख्यारा करतेंचा हरने सीर्दे दिला सीर्थ करामार्थ गुरुवा और मुख्यारा करतायत देवर मान्त्रपूर्व करेंद्र पर्वेक्षण सीर्थ गुरुवार मान्यपत्र देवर सीर्य कराया करींद्री देवर के सामने क्यांत्रक करोंचे देवर सेत्रांत्र करा-व्यांत्रीच करते हिंदा पूर्वत यह मान्द्रे हैं इत्योध्य सेत्रक प्रधानमें विरोध कर है सामें वार्त्यांत्र मान्य के साम प्रधान करों कर सामने कर से सीर कराया करामान्य पान करेंद्रे सामने सार्व्यांत्र के सिर्थ कराया कराया है से सामने कराया हो से सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया हो सीर्थ कराया है से सामने कराया है सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है से सामने कराया है सामने कराया है से सामने कराया है से सामने स

कर किया (

चसने मुल्लानके धनाय बादशाह च्याघि घारण की, अपने अधिकारके लिए व्यलोकाको स्वीकृतिको भी कोई अपटा न की और इस प्रकार धर्मको राजनोतिसे पृषक् रखनेका प्रथम चयक्रम किया।

षह लत्यन्त यन्त्राम्, वोर, साहमी, वृद्धिमान, सुनिक्षित, विद्या और कलाका रिक्षक, धार्मिक, उदार, सर्विष्ठिय और स्नेह्दील था। उमका मुजुकेवावरी या वावरनामा नामक आरमचित्र्य एक अत्यन्त दिलवस्य रचना है। अपने पुत्र हुमायूँकी रोगसे प्राणरक्षाके लिए उसने अपना जोवन उत्सर्ग कर दिया। १५३० ई० मे मुगल-वदा और साम्राज्यके मूल मस्यापक इस जहीरहोन मुहम्मद बादर बादधाहकी मृत्यु हुई। बाधर मारत और मध्य-एशियाक बीचकी कही था। कावुलसे उसे स्नेह था। अस उसने अपने शवको कावुल ल जाकर दफनानेकी इच्छा अन्त समय प्रकट की थो, वैसा हो किया गया। ईरानो सस्कृतिका भारतमें प्रविष्ट करनेका श्रेय भो उसे ही है। आगरा आदिमें उसने कर्म वाग्र भी लगवायी।

२. हुमायूँ (१५३०-५५ ६०) वाबरका प्येष्ठ पुत्र और उत्तरापिकारी था। वह मुविक्षित, नम्न, दयालु, उदार और स्नेह्शोल था,
किन्तु उत्तना ही जितना कि उस कालमें एक मध्य-एशियायो मुसलमान
रामकुमार लिकको सिक हो सकता था। शासन और युद्ध विद्यामें भी
वह साधारणतया याय था किन्तु साय ही लालसी, अफ़ीम खानेका
अभ्यन्त, कुछ अदूरदर्शी और भावुक भी था। इन दोपांके कारण जिन
परिस्थितियोंमें उसने राज्य-भार मभाला और जा विकट समस्याएँ उसके
सम्मुत्र थीं उनके योग्य वह नहीं था। वायरने उत्तर भारतको पजायसे
विहार पयन्त विजय तो कर को थी किन्तु वह राज्यको सुमंगठित नहीं
कर पाया था और शासन-प्रवाधको भी कोई योजना कार्यान्वित न हो
पायो थी। राजकोप प्राय खाली था जिसक कारण खाधिक कठिनाईका
सामना था। उसके तीन अन्य भाई कामरान, अस्करो और हिन्दाल उस

सदैव तंग करते रहे, विशेषकर कामरान और अस्करोने उसके साथ

यपुरा कारेंसे को कहर न एवं किया हुनसूरि पुष्ट करेंसे छोड़ियों नय एक्सर और पुष्ट निकारें करियन अमेरका एक्सरें कहाँ वर्षण कर दिया और पर्ने इस्तिन मुद्देशकों। कर्मरांतें मुद्दें एक्सर्य एक्सर स्टार्स्ट के क्सर्यों निक्षीत्र केंद्र दिया और ने मुद्दें परस्ता प्रकार स्टार्ट एक्सरें किए क्रिक्ट के केंद्र विकार की एक्सरें निकार नामुक्त एक्सरें किए का का निकार की की

नुबन में गांतक इस बंबमें बन हो न नावे में और अनुसा उन्हें लियों हैं नवजरी को । कामरामधी कामक और कश्कारका मुखेशार विमुख्त कर दिया परा का जिल्ल उद्योग चेजावपर की अधिकार कर लिया और दह मरार हुमार्नुरो प्रतके क्याबारते ही गरिश कर दिशा। इन बनर नीकानरका राजा राज बैन्हीं का । जबका एक बादका बेहनी करनेरका बातर ना । बतन नहांक वैश्वितीय यह रोफर बश्वर वर्ष अत्यापार विशे और सबस्य बर्दनी मी बरुवा शाला । १५१४ ई. वे कामरामने बटबेरपा बाज्यम क्या । मुद्रमें क्षेत्रमी मारा बना अस्थलार बाजरातने स्तर्म बाबालरपर बाना कर दिया किन्तु पर्धानत होकर बीह लगा। इपर हुवलुँदी मी जन्मी न्यांतरी तुरवारे निर् मेरत्वर बुद्ध करते राजा बद्धाः चित्तीवरर इश्ची श्वनं गुनरताने नशुनुरक्षात्ने बीदन सक्षानंत कर दिया । महाराष्ट्रमें हमार्गेडी एक्टीवन्य मार्ड बसाबर बहानकांके किए बबाधा । यह गुरुत बबर यह देशा दिन्यु इक्षक्रे गुरुवेदे पूर्व ही ब्रह्मस्त्याद निर्योदका विकास कर पुत्रा या । हुमाईना सामका सान बहु बुक्कार पानव बीट क्या विन्तु हुक्युँके उत्तरा बीका व बीटा बीट १५६५ ई. में गुमरातार मामप्य कर दिया बचा बानानेरके शुप्र क्षेत्री विका किया । बहाइएसाई परान्ति शावर बाज्याकी और भाव नमा । इसर्वे हरे पूजरतको रिजन करना नम्रता ना किन् दिशाओं पदल बरशार बेरखी पूर्विके बंगामधी सुबना निकारें इस कार्वकी मनुरा ही कीड़ को फिर क्यर बाबा बड़ा । १५१७ ई. में कहा

ग्रेरकोडी इरामा मीर बंबाबके भी बहुबलको फिसब कर बिसा रिन्तु

त्यनन्तर लगमग एक वर्ष गौड नगरमे ही ध्यर्य आलस्यमें विता दिया। इस बोचमें दौरवाहने शिवन सग्रह फरक उस वहीं रोकनेया उपक्रम किया। १५३९ ई० में चौमाक गुढ़में बुरा तरह पराजित होकर हुमायू थोडे-से सैनिकोंके साथ प्राण बचाकर दिल्ला पहुँचा। १५४० ई० में दौरशाहके साथ कन्नीजके निकट उसका फिर भाषण गुढ़ हुआ। इन गुढ़में मी बह पराजित हुआ और साथ ही उससे उमका भारती राज्य मी छिन गया।

अब वह निराश्रित और असहाय था। उसके भाइयाने उसकी कोई सहायता नहीं की । ऐस हो ममयमे उसने हमीदाबानूके साथ अपना विवाह किया। पत्नी और मुट्टीभर सावियाके साथ यह सिन्धकी ओर भागा, फिर मारवाह आया और जोधपुर-नरेशसे आश्रय चाहा । एनके बाद एक कई राजाओ और मुसलमान-परदारोसे उसने आश्रय और सहायताकी याचना की फिन्तु किसीन महारान दिया। दोरघाहकी सेना पीछे पडा हुई थो, बत फिर उसे मिन्यका मरुभूमिकी घरण लेना पडी और वहीं बमरकोट नामक स्यानमें १५४२ ई० में हमीदावानू वेगमने अववरको जम दिया। किसी तरह वचकर हुमायूँ कावुल पहुँचा कि सु उसके भाई कामरानने भी उसे आश्रय नहीं दिया, अस बालक अकथरका कामरानके ही आश्रयमें छोड १५४४ ई० में वह ईरान पहुँचा और शाह तहमाह्यसे सहायताको याचना को । शाहने इस शतपर कि हुमायूँ शिया मत धारण कर ले और कन्दहारको विजय करके उस सींप दे सहायता दनका वचन दिया । अत १५४५ ई० में शाह ईरानकी सहायतासे हुमायूँने कन्दहारपर अधिकार कर लिया। उसके बाद काबुलपर आक्रमण किया। कई वर्ष तक फामरानके साथ युद्ध चलता रहा । उस दुष्टने अपने भतीजे बालक अकवर-को क़िलेकी दोवारपर सीरोकी नौछारमें बैठाया कि सुअकबरका बाल र्थोका न हुआ। अन्तत कामरान पराजित हुआ, वन्दी हुआ और अधा कर दिया गया । कुछ वर्ष हुमायूँने कावुलमें रहकर ही अपनी स्थिति सुदृद

नी बीर ब्रांशन नंपन को। रान्यहारको प्रको देशांवियोंने वानके अनुसार दिया होत्र का। १९५५ हैं के वस्त्री मारक्टर जाकरण दिया हुने जीवरा जरानन का विद्यानको गीननीत सर्वपार के, जा, वार्तिकारी अनुस्त्र को खदर हो। राजस्तर कोर दिय दिलानी और बारवेगर की इस्त्रान्त कविष्यार हो गया। किन्तु हुन्त हो। नाम कर १९५६ हैं के प्राप्तन हो। दिलानीय कार्य पुरस्तकारको बीडियाँगे विश्वकार निर्मेष्ठ

च्छू बचने स्थिति प्रास्तीय राज्यविकारको नामस्वकं किन् ही दुव्य-प्राप्त करनेवें पासन हो पाना ना । बचने निशासी वार्ति सकतान वरसार्थे-की पारस्त्रीक कुटमें उकने भी काम कामना सा । वकना माराजें कुर्ण

सायक स्वरं जिहारकत्वांक किया गंगेल हो जा वहनों गोई जाय है। यो। वसून करने रंग गून पंत्रावानीय मुस्ति यह जायान मुक्तांव कर्म बड़ो कुंपेसी मुक्काम साह्यानीय एमं मुक्तांव संपाधी प्रदेश कर्मीयत कर्मांत रंगीसी मुक्तांव आहे. 3. सक्तार (१९९५-१९) १.)—िया वस्ता हुस्तांकी मुद्द हुई परुद्धा पून सम्बर्ग १९ कर्मीय मानव साह या और इस बार वेग-ती पंत्रावीं मान पेत्राव विकास पुरेष्ट्रा प्रक्षा करते वारत मानव समुक्तार सम्बर्ग कर्मांत कर्मांत कर्मांत मानव स्वरंग स्वरंग स्वरंग सम्बर्ग स्वरंग हो। हुस्तांत क्षांत्री स्वरंग स्वरंग साह स्वरंग स

हुनापुंचे मुख्य हेरों हो बारिक्यम्मके क्यो एवं देशलीय हेर्नुनंदक्रवारिक्यों बातरें कोर सिक्मेरर स्वाम्यक कर दिवा। दिक्मीके तुवक प्रस्तक एर्टिन्से को मारक्यान्येंक कर दिवा और हेंगुमा बहै व्याच्या हो पत्ना रिक्कापर, गोम्पुर, बारुक्यमर कोक्युपमा बीवर, करार, सामिय रणयम्मीर, जैसलमेर, बुँदी, जोधपुर, बीकानेर, अम्बर आदि स्वतन्त्र राजपुत राज्योंका समृह राजस्थान सजीव आतक वना हुआ था । पश्चिमी-तटपर पुतगालियोंकी शक्ति भी उपेक्षणीय नहीं थी। और स्वय दिल्लोके सिहासनके लिए तीन प्रतिद्वन्द्वी दावेदार थे, आदिलकाह सूरी, सिकन्दरशाह मूरी और हेम्। हुमायूँकी दिल्लीपर अधिकार कर लेनेकी अल्पस्थायी सफलताने अकवरको भो उन जैसा हो किन्तु उनसे कम साधन और शक्तिसम्पन्न एक दावेदार मात्र वना दिया या। अत १४ फ़रवरी १५५६ ई० के दिन जब पनावके जिले गुरुदासपुरके अन्तगत कलानीर नामक गाँवके बाहर एक बाग्रमें ईंटोंके कच्चे चयुतरेपर अकवरका राज्या-मिपेक किया गया तो उस चौदहवर्षीय नरेशका राज्याविकार आस-पासके दस-बोस गांबोंपर ही था. वह धन और जन दोनोंसे ही हीन था. मद्रीमर सेना हाथमें थो और वैरमखा-जैसे इने-गिने विष्वासी, स्वामिमक्त और उत्साही सरदारोंका भरोसा था। अकदरकी कुछ शिक्षा दीक्षा भी नहीं हो पायो थी और बह प्राय निरक्षर था। उसी समय उत्तर प्रदेशमें भीपण अकाल भी पढ रहा था। ऐसी विषम परिस्थितियोमें अकवर और उसके माथियों के सम्मुख तीन ही मार्ग ये या तो हुमायूँकी मौति देश छोडकर भाग जाय, या सब आकांक्षाआको विलाजिल देकर सामान्य जनोंकी भांति यहीं वस जायें. अथवा राज्योद्धारका प्रयत्न करें। उन्होंने यह तीसरा योरोचित मार्ग हो पसन्द किया । इस दिशामें सबसे पहला क्षदम दिल्लोको हम्तगत करना था क्योंकि भारतकी राजधानीपर अधिकार कर लेना ही अकबरके राज्याधिकारके औचित्यको सिद्ध कर सकता था और अन्य प्रदेशोकी विजयमें प्रधान सायक हा सकता था।

वतएव अकवरको लेकर वरमर्खी ससैन्य यानेश्वरके मागसे होकर पानोपतको ऐतिहासिक रणभूमिमें आ दटा। एक विशास सेनाके साथ दिस्लोसे निकलकर हेमू भी आ पहुँचा। दोनों सेनाओंमें घोर युद्ध हुआ, हेमूको विजय हो रही थी कि शत्रुका एक तोर आकर उसकी आंसमें बुत बया और बद्द नेहीय क्षेत्रर निर बड़ा । नैताके विरवे ही बबकी बेगार्ने क्यारत गय नगी । हेन् बली हुन्छ । वैरमझीने बक्रमधी पाकिए राज्यो करने शामी मारकर काती बननेके नियु बद्धा । एक नशके सनुष्टार बीर बदवरने विद्वाले चन्दर हाव डठाना स्तीवार व मिना और स्पर्ने वैरमलाने हेमका कब किया एक बन्द मतके बनुनार वैरमलाके बाप्यूनर अकारते उत्पर बावल किया और किर बैरम्लाने क्यावा किर बाद बाना । विजयी मुक्क-हैना श्ववजीकी जारती-कारती जिल्हीमें प्रविद्य हुई, हेनुवा वह नवर-हाटरर बटवा रिवा बया और बडके बस्त्व हैनुके इत मैक्टिके तिराँका वर्ष बनामा नवा वैद्या कि इन पर्वकर्ती सुकाल करते बारे के फिल्में बोर अलगार क्षत्रांका अधिकार हो क्या। बारिकपाइ मुरोले बत्तका यह कीई विधीय बही किया और विकल्पर मधेने भी बाल-कर्मन कर दिखा पत्र खन्म कर दिना बच्च कीर की क्य बारीर मी है से क्ये । बारवरका अवान करकार, केमापति सन्ती और व्यक्तिकारक वैरमणी ही व्याः वरीके नेपूरको अकारने करती विजय-धारा प्रारम्य की । हेनूकी प्रशास और विकल्परके अवर्तमने पेपानरके जावरा परना कन्नव पंजान

प्रथम कार राज्यन्य कारण प्रशास कारण पराय करून करून है। बीर मीरपी करण रेक्टर कारण कारण मेरिका र मा हिया है। पूर्वी मनेपार मीरपार किया रमा । पूर्वि कोन्द्र सरिको देशक हैना बाम मीर र मकार प्रथम किया है। पूर्वि कोन्द्र सरिको देशक बाद कारण के एक मार परायम किया है। बाद कारण कारण के प्रथम के एक स्वार्थ के एक स्वार्थ पूर्व भीर कारण कारण मेरिका के प्रथम के प्रथम के प्रथम कारण कारण है। इस कारण कारण कारण के प्रथम के प्रथम के प्रथम कारण कारण है। इस कारण कारण कारण के प्रथम के प्रथम के प्रथम कारण कारण है। वस कारण कारण की प्रथम कारण की है। अस्त्र कारण कारण कारण की स्वार्थ कारण मा । कारण की प्रथम कारण की है। किया की प्रथम कारण की है। किया की प्रथम कारण की है। किया की प्रथम कारण की है।

...

बारतीय इतिहास वृक्त प्रति

निरपराघ रक्षक तर्दिवेगको हत्या करने और उसके सामान्यत उद्धत स्वमाव एव वढ़ते हुए प्रभावके कारण अय सरदार भी वैरमखींमे कृष्ट थे। अत अकवरने १५६० ई० में उसे पदच्युत करके मक्का चले जानेका परामर्पा दिया और राज्यकार्य अपने हायमें ले लिया। थांको ऊहापोहके बाद वैरमने स्वीकार कर लिया किन्तु पजावमें पहुँचकर विद्रोह कर दिया। अकवरने तत्परतासे उसका दमन किया और फिर समा कर दिया और मक्का चले जानेका हो आदेश दिया। मार्गमें एक श्रवृके हाथो वैरमकी मारा गया।

वैरमखौंके अंकुशसे तो अकवर मुक्त हो गया किन्तु अब अन्त पुरकी वेगमोंके प्रभावने उसे बाच्छन्न कर लिया । उसकी माँ हमोदावान् वेगम तो उमे पुत्र-स्नेहवश परामर्श देती ही थी किन्तु उसको घाय माहमअगा चसपर शासन हो करने लगा और चमका पुत्र आदमखौँ निरंकुश अनाचार करने लगा। पीरमुहम्मद आदि उसके साथो थे। स्वय अकबर आर्पेट आदिमें मान रहने लगा। १५६२ ई० में अकवरने आदमखौ और पीर-मुहम्मदको मालवा विजय करनेके लिए भेजा। मालवापित वाजवहादूर पगजित हुआ और मालवापर अकवरका अधिकार हुआ। आदमखौ और पीरमुहम्मदने इम अवसरपर क्रूर नरमहार और अत्याचार किये किन्तु वाजबहादुरको अकवश्ने क्षमा कर दिया और अपना एक मनमब्दार बना लिया। उसकी प्रेमिका सुन्दरी नर्तकी रूपमदीकी भी रक्षा हुई। इसी वर्ष अकवरने राममुद्दीन अतकाको अपना वजीर नियुक्त किया था. किन्तु दुष्ट आदमर्खी वजीरमें जलता या और एक दिन गराबके नदोमें महलको कचहरोमें घुसकर उसने वजीरका वध कर दिया। शब्द सुनकर अकवर स्वय वहाँ आ गया, एक ही घूँसेसे उमने आदमखाँको गिरा दिया और फिर किलेकी दीवारसे गिरवाकर उसे मरवा हाला ! उसकी माँ माहमअंगाकी पुत्रशोकमें मृत्यु हो गयी। पीरमुहम्मद आदिको भी दण्डित कियागया और स्वयं अपने मामा ख्वाजा मुअपनमको भी जो एक नामिनिक हत्यारा वा सकराने साम-पान देवा। वह समार १५४४ है से सम्बद राजेवा स्वकान बीचह पूरे महोत्रोकरे सामान्य-मिर्मान के मार्थेत कर मा। इर मार कार्यों को सामान्ये करियान राज्यानीने प्रसिद्ध दुवें नेपालों और विद्यारके दुवंड पूर्व पुरायों करने हरावन मार्थिकर मा। मूक्तमान क्लोर मुस्तूमेल विकास सकसर एक सामार्थ वह

क्ला या जोर प्रत्येक कर यह गोरको बरमाहकी विकास करमेंके किये सक्तोर बामा करता जा। धेरै ही एक सहस्ररार १५६२ हैं। में सम्बद्ध के कक्ष्मका रामा जारकार्य सक्तोर साकर स्वेचको समाहकी समीच्या

स्थीकार कर स्थे। इतना ही सहीं जरकारी इच्छानुसार राजाने वडके बाम बननी पूर्वोशः निमातः सी कर विवा । सत्र प्रबन्दा राली ही मक्यरनी ज्यान कामाओं और क्लंडे क्लचिकाधी वहाँगीरनी कर्तनी हुई । इब राजीके बाई राजा जनशानराह बीर करोजी बहाराज नार्तीकई अकारके शाहिते हाथ और वसके सामानको प्रकार स्टान्स हुए । अन्वरके बचाइरचना वह प्रमान हुना कि वैदलमेर बोल्पनेर बोलपुर मानि राजनतालेके बाल वर्षिकाल राज्योंने बोडे-के प्रवासके हो। अक्षवराधी सबी-नता क्वीबार कर बी : बचने भी बनके बाब बबारताना अर्थाव किया । वे बचने शास्त्रके चारतमें वर्तमा स्वतंत्रत थे, केवल चाराहको मध्या अस्तिह स्थोबार करना होता था कहें वर्क बुड़ों और विजय-गामानेलें बैन्य-सहयोग देना होता या. कुछ निरियत कर तथा क्रमी-क्रमी राजगायी-के बाकर सम्राद्धी मेंद्र बादि देवी पढ़ती की वे पड़ते हो राजनीन क्षेत्राचे की कर्ने कोई कच्च पर बीए मनबंध ने दिना बादा ना । बन्नादकी इहिमें और बामस्थानें बनका बन्नान और प्रतिद्वा जानः किसी क्वकनात बरवारवे कम नहीं होती थी ।

सर्पुतः जनगर वटा दूरवर्षी या । यह मरकत् प्रहरशास्त्री वा बीर बक्रमर्थी बक्राइके शामीन प्रास्त्रीय बज्जबंधीः प्राप्तः करवेली बक्रमी नहीं

100

सम्बोध इतिहास एक प्री

अभिनापा थी। साथ ही उसने यह भलीभौति समझ लिया था कि इस उद्देश्यकी सिद्धि तथा उसके वश एव साम्राज्यका स्थायित्व तभी सम्मव है जब वह पूर्णतया भारतीय एव भारतीयोका वनकर राज्य करे, मुसल-मानों और ग़ैर मुसलमानोंके बीच कोई भेदभाव न करे, विल्क अपने व्यवहारसे मुसलमानेतर भारतीयोंका विस्वास, आदर और राज्यभित प्राप्त कर छे। ओर ये सब वातें उसकी अपनी उदारता, समदिशता, सर्वधर्ममहिष्णुता एव कुशल नीतिमत्तासे सम्पादित हो सकती थीं। अत अपने राज्यके इन प्रारम्भिक वर्षौ (१५६०–६४ ई०) में ही उसने युद-विन्दियोंको गुलाम बनाये जानेकी पुरानी प्रथाका अन्त कर दिया, समस्त हिन्दू एव जैन तीर्थोपर-से जो यात्रीकर सुलतानोंने लगा रस्ना था चसे चठा दिया, इसी प्रकार जिंच्या नामक अपमानजनक करका भी जी समस्त मुसलमानेतर भारतीयोपर लगा हुआ पा अन्त कर दिया। जिजया-का प्रवर्तन खलीफ़ा उमरने किया था और भारतके सभी मृसलमान सुल्तानोंने भारतीयोंपर यह कर लाद दिया था, फ़ीरोज तुग़लुक़के पूव ब्राह्मण लोग इस करसे मुक्त ये किन्तु उसने उनपर भी यह कर लगा दिया था। यह कर अतिरिक्त आर्थिक भार तो था ही होनता और अपमानका भी सूचक था। जिजया देनेवाले भारतीय थे, वे शासकोकी जाति मुसलमानोंकी समकक्षता नहीं कर सकते थे। दूसरे, करके भारसे दबे रहनेके कारण वे कभी धनसम्पन्न नहीं हो सकते थे, अत विद्रोह नहीं कर सकते थे। अकवरने इन मेदभाव सूचक एव अन्याय-पूर्ण करका अन्त करके अपने-आपको लोकप्रिय बना लिया। राजपूत कन्यासे विवाह करके और अन्य मुसलमान पत्नियोंके रहते हुए भी उसे ही साम्राज्ञी पद देकर, तथा हिन्दुओको राज्यमें उच्च पद देना आरम्भ करके उसने भारतीयोंका विक्वास प्राप्त कर लिया। साथ ही उसने मुसलमान सरदारोंपर, जो प्राय विदेशी ये, नियन्त्रण रक्षनेके लिए एक घमितपालो भारतीय दल राजपूत-राजामां मादि हि दू सरदाराँका निर्माण

वरणा बाराब कर दिया। बावारी बचने व्यूतके मेदा ही जि्नू-विरंट रामित वरणा हैया होता होता होता है बारावी वादि वारावी कांचारियों पण केया वादी द्वीवारी वादी वारावी है बचने प्रकारी कुम बारावीय करिया वादी बारावीय होता है कि बारावीय है कि बारावीय करिया है कि बारावीय है कि

कर्षी जरूर हो । इन स्टार्टिक दे बहुन इन है । इन बहुनेरिंग और इन्द्रा सामान्दे हो वर्ष किया क्यां हुए। इन्द्रा सामान्द्र हो क्या क्यां कर्म क्यां क्या

कर केले बररान्य हैं पिरहोडरर नुवर्शीया अधिकार होने दिया। किन्तुं तेवाह और बर्ड्स निर्देशिया सम्बद्ध कि तो महीन मा हूए। वस्त्र हिंदू देव स्थापना करने महिना तेवाह सिरहोड़ के बार्ट्स कि हम् दूस्त्रों के बाद महत्ते रहे। १९६६ हैं वि रचनामीत्वा हुमेर भी सकरते हात मा मध्य मीर बर्डी वर्ष सम्बद्धारको प्रतिक क्षात्रिका हुमेर भी सक्त्रों स्विच्या हो बार्चा, १९५१ हैं के बहु दुरावाची दिवस में बीट हुमें मन्दराहुन हो। बर्डिकार कर सिंधा। बर्डक मन्दर्स बर्टिकों हुमें कन्त्रमा होने मीर्पार कर सिंधा। बर्डक मन्दर्स बर्टिकों हुमें कन्त्रमा विद्या मार्चीरिक्ट कुरावाची दिवस कर रिमा सब सम्प्रदार करा कर स्व दिया। इस प्रकार १५७३ ई० में गुजरात-जैसे अित समृद्ध प्रान्तका प्राप्त करनेसे साम्राज्यकी समृद्धि और शिवन अत्यधिक वढ गयो। समुद्रतट और प्रमुख वन्दरगाहोंपर भी उसका अधिकार हुआ। राजा टोडरमल गुजरात-का सूचेदार नियुक्त हुआ और वहीं सर्वप्रथम उसने अपने भूमि-व्यवस्था सम्बाधो महत्त्वपूर्ण सुधारोंका प्रयोग किया। गुजरात विजयके उपलक्षमें सीकरोमें बुलन्द दरवाजा वनवाया गया और उस नगरका नाम फतहपुर रखा गया। १५७५-७६ ई० में वगालकी विजय हुई, वहाँका सुलतान दाक्टखाँ युद्धमें मारा गया और वगाल प्राप्त साम्राज्यका एक सूचा वन गया।

इमी वर्ष महाराज मानसिंहने हल्दीघाटीके सुप्रसिद्ध युद्धमें घीरवर महाराणा प्रतापको वरी तरह पराजित किया । इस युद्धमें सिसोदियोकी वही सित हुई। हल्दीघाटीके युद्धमें राणाकी ओरसे उसके कई जैन-सामन्त यथा बीर ताराचन्द, मेहता जयमल चच्छावत, मेहता रत्नचन्द खेतावत आदि भी वही वीरतापूर्वक छडे थे। पराजित होकर राणा अपने परिवार कौर बच्चे-खुचे मेवकोंके साथ पहाडों और जंगलोंमें चला गया जहाँ अत्यन्त कष्टमें उसके दिन बीते । मुगल-सेना उसका बराबर पीछा कर रही थी। राणाने अकवरकी अधीनता तव भी स्वीकार न की, किन्त अन्तत निराश होकर मेवाडको छोटकर अन्यत्र चले जानेके लिए उद्यत हुआ। ऐसे समयमें उसके स्वामिभकत दीवान भामाशाहने अतुल द्रव्यसे राणाकी सहायता की । कहा जाता है कि यह घन इतना था कि इससे १२ वर्ष पर्यन्त २५००० सेनाका निर्वाह हो सकता था। और यह सब सम्पत्ति भामाशाहकी अपनो पैतृक तथा निजो घी। उसने अपने भाई ताराचन्दके साथ मालवापर आक्रमण करके भी कुछ द्रव्य प्राप्त किया था। राणा उदयसिंहके जैनमत्री भारमल कावहियाके ही ये दोनो पुत्र थे। इस अप्रत्याशित सहायतासे राणामें नये जीवन और आशाका सचार हुआ और उसने नये उत्साहसे प्रयत्न करके चित्तीड और पाराक्षाको क्षेत्रकर रामुर्थ तैयावस्य कुन अविकार कर किया। ध्य स्थानको नारम नामाबाई वेशास्त्र प्रतास्त्रमी कामामा। एवा बमारिको कामामा कुन मही मामामा नामी नामा दा। कुन थेयर मी कुर्व पीरियोग्ड प्रान्तवानी वर्षे पूर्व और बन्डा परामा हो पर्वकर काम तर्क संबाद पान्नवे बमारीस्त्र पहा। पाना प्रतासिक वर्गो विकार हारा बार्को कर क्षानुरुखी हो पान्नवी कामार पान्नव कामा पर्व किन्तु विचीक-बहारके किन्त बाराम प्रभावोगी कामार पाना पर्वकर पर्वा पर्व कीर वर्षेक्षणीलिक हवा पर्वा बाराम प्रभावोगी कामार बारा पर्व

१५८१ वें में अस्पारत काबुलगर आक्रमण निवा और अपने पार्वे निरवा इसीमको नराजिए करके समीत किया । १५८५ वें में इसीमकी

बुरपुके परवात नावक की बाधानवना एक तुवा बन नवा । १५८६ वें वे weite the & Austan thee & & tore att thee में विकोधिकाल और क्रमकारपर को अक्चरका अधिकार हो पना। दरनन्दर बढने शक्किको मुझनमान मुख्यानोके पात राजपूत मेवे और क्षमें क्षम्य क्राविक्त स्थीलार कर केलेके किए कहा । अवस्थानर और बोबाएरको क्रोडकर बचने बचनी बचीनता स्वीनार कर की। वर्ग १६ 📫 में बहुबस्तवरपर बाक्रवय हुआ । तुल्यालने पर्धावत होन्दर अधीनका स्तीलार कर भी और वशार बान्त अभागको है दिना । बान देवके समाहारके पहले ही अचीतार स्पीतपर कर की थी किया क्रम कार्य विश्लोब करना चळा मते १६ १ है में बचके अनल एनं ब्रक्ति वर्ष बतीरकाको पेरा क्रम कर निवय कर क्रिया पता। इत प्रकार महार्थ विजेता असमारते बक्ते भीवत-नावर्षे ही कते नहीं माथ- हानाथ भारतकी दिवन कर की । केवल बरियका पुत्र बाद स्वयंत्र अभिध्यत्ये शहर रहा । करका विस्तृत संबंदित कामान्य अवसी विकास कर्ग-संबंध कमरा पनि नामा प्रकारके श्रुवि एवं चनित्र वरनावनी अनैकवित्र वस्त्रीक-सम्बा समयत

भारतीय इतिहास एक प्रति

अन्तर्देशोय एव समुद्रो व्यापार आदिके कारण तत्कालीन विश्वका सर्वाधिक महान्, प्रक्तिशाली एव समृद्ध साम्राज्य था । उसने भारतका चक्रवर्ती सम्राट् वननेको अपनी महस्याकाक्षा प्राय पुरी कर ली यो ।

इस विशाल साम्राज्यका सगठन, शामन-व्यवस्था एव प्रवन्ध भी उसने बडे कौशलसे किया। दमन और समझौतेपर आधारित उसकी विजय-नीति दुनाली यो । जिन नरेशाने सरलप्तासे उसका आधिपत्य स्वीकार कर लिया और विद्रोह न किया उन्हें उसने वने रहने दिया, जिहान ऐसा नहीं किया उनका अन्त कर दिया। हिन्दू राज्य प्राय सव ही वने रहे और मुसलमानी मल्तनत प्राय सब हो नष्ट हो गयीं और चनके प्रदेश सम्राट्-द्वारा नियुक्त हिन्दू एव मुमलमान सूबेदारोके शासनमें साम्राज्यका अग वन गर्य । उसने शासनको पुणतया के द्रित किया, अधीन राज्यांके अतिरिक्त अन्य समस्त देशको १५ सूर्वोमे विभाजिन किया, प्रत्येक सूर्वेको सरकारोंमें, प्रत्येक सरकारको परगनी या महालोंमें और प्रत्येक परगनेको थानोमे विभवत किया । प्रत्येक थानके अन्तगत कुछ गाँव होते थे । प्रत्येक सूवेका शासक सूवेदार होता था, सैनिक-शासन, न्याय-व्यवस्था और शान्ति-स्थापन उसका कार्य था। उसके साथ ही एक दोवान होता था जो उससे स्यतन्त्र रहता और भूमिकर आदि वसुल करता तथा सूत्रेके आय-व्ययको व्यवस्था करता था। एक वाकानवीस होता था जो सूवेके समस्त समाचार सम्राट्को वरावर पहुँचाता रहता या । सूवेदारके नीचे फ़्रीजदार, कोतवाल, यानेदार आदि अधिकारी रहते थे और दीवानके अघीन तहसीलदार, क़ानूनगो, पटवारी आदि कार्य करते थे। सम्पृण शासन-यन्त्रका अध्यक्ष और सचालक सम्राट्स्वयं था और अपने मन्त्रिमण्डलको सहायता एव परामर्शसे यह समस्त राजकार्य करता था, यद्यपि सिद्धान्तत सम्राट् साम्राज्यमें सर्वोपरि शक्ति था, सवया निरकुश और स्वेच्छाचारी था और समस्त पदाधिकारी उसक वेतनभोगी सेवक थे। राज्यके समस्त उच्च पदाधिकारी मनसबदार कहलाते थे। और मै ननवर १ अध्यारोष्ट्रियोने मेक्ट ५ अस्तारोक्षियों तकना नायकन्य एवं स्थानित्व मृचित्र करते है । जिल्ह्या बडा अधिकारी होता वयशा जनवाडी डॉवा मनदव होता का । वासीके जनतरिक प्रकार. ध्यक्षण एवं स्थावके सिए प्राप्त-वंदावर्गे स्वकृत वी नृत्रक्षणा प्रदासनम् नार्नात्व हो या । चित्रिप्त अधिकारियोंचर निकारन रक्तेसी मो पुरी म्यक्त्या को । नेवाका आवश्विक निर्माण क्रोता का । वैक्ये बरर्गेलो समनेवा निजय भी चान विज्ञा नवा च्या प्रशासिक अस्तारोही नजारोडी और शोरकालेके क्यां मुनंबदित एवं क्यांक पनुष्टिय नेता थी। राजा टोबरमक्की बस्बक्रणमें कृति-अभिकी नार-बील वर्षीकरण प्रक्रिकरको स्पत्तका साथि मुखान वर्गके चान की वर्धी मी । मनिन्तर बनाबा प्रानः एक-फिहाई होता था । नरकारी हकतानमें मुहार्दे निर्माण की बान्डी की । स्थानार आदेशर की बनित निरम्बन का । न्या-शान्त्रता सदस्य गाडो स्तान रखता था शहरूवर्ष बालामणी नवीच्य बदानच वर । शासान्तवः नरही सीन न्यावरहीय होते ने सीर जाय - इन्नामके ब्राह्मतके अनुकार गाउँ करते में १ इन प्रकार जकरते बामान्यर प्रवृत्ताके बाद देवरो तुवाद वातत-वाक्तक वी मधन

बानावा बीर बार पर्नेत क्या बाता है।

अवस्य पुण्यास्त्र में बीर बारवें पश्चिमत्त्रा था। क्या मन क्या में नेमाना पत्ता हैं। बारी व्यवसे सूरी। अन्तर को क्ये मुनोब न्यारक बीर निक्त बाता हुए। अनुकारक डीजी अनुस्त्रीय बान्त्राना क्रेम दिवारी क्यानेक विविद्याता क्यारे गुण्यास्त्र प्रधानस्थान प्रधानमध्या होत्यान करी, वीरक नारी, वीरक नारी (स्पू बनके प्रथम वारसी एवं क्यान्सांक्यारी से वै। प्राचेन सिका-

नश्लेका प्रसन्त किया । याँगानाकायणी सुविधे कानकी न्यास्त्या बहुंच हुक मरोज वर्ष भृतिपूर्व भी मिन्नु जब बाजने दो बाद क्योंतान की भी और बहुत दुक नकन भी गद्दी । याहुदाः नहीं क्षीया स्मूक न्याने बीपरिजीने भी दित्यको भौति नव नर-रत्नोंसे उसने अपनी राजसभाको सजाया था।
सगीताचार्य तानसेन उसके दरवारकी शोभा थे। मुसलमान होते हुए भी
चित्रकला और मूर्त्तिकलाको भी अकवरने प्रोत्साहन दिया। आगराका किला
और उसके मातर सुन्दर महल बनवाये, १५७०-१५८५ ई० तक वह
फत्तहपुर सीकरीमें रहा, उसे ही वह अपनी राजधानी बनाना चाहता था।
यहाँके घोखसलीम चिस्तीको कृपासे ही १५६९ ई० में उसका पुत्र
(सलीम—जहाँगीर) उत्पन्न हुआ था, अत सीकरीमें उसने अनेक सुन्दर
भवन बनवाये और घोखसलामका सुन्दर मक्तवरा बनवाया, स्वयं अपना
सुन्दर मक्तवरा उसने सिकन्दरेमें बनवाया। इन प्रकार कला-मर्मज्ञ सम्राट्
अकवरने कलाके विभिन्न अंगाको प्रभूत प्रोत्साहन दिया और भारतीयईरानी मित्रतास एक नवीन मुग्नल-कलाको जन्म दिया। साथ ही अनेक
कलापूर्ण दस्नकारिया एव उद्योगाको सम्राट् एवं उसके अमीरोंसे अभूतपूर्व
आश्रय मिला।

विद्वानो और विद्याका तो वह इतना आदर करता था कि उसके समयमें और उसक आश्रयमें विपुल साहित्य-सूजन हुआ। अनुलक्षजलका अक्षयतामा और आइने-अक्षयरी, अल्वदायुनो और निजामुद्दीनके इतिहास प्रन्य रचे गये, फ्रेंजीको सूफ्तो कविताएँ, और रहीम एव बीरवलको हिन्दी रचनाएँ हुईं, स्वय अक्षवर भी कविता करता था, नरहिर, गग आदि अनेक हिन्दी कि भी थे, महाभारत तथा कई अय प्राचीन भारतीय प्रयक्ति भी उसने फ़ारसींमें और फ़ारसी ग्रन्थोंके सस्कृतमें अनुवाद कराये। फ़ुज्ज-भिवतके महाकिव सूर व अष्टछापके कविजन, राममित्तके गोस्थामी मुलसीदास और जैन-अध्यात्मके बनारसीदास आदि इसी कालमें हुए। पाण्डे रूपचन्द, पाण्डे राजमल्ल, प्रह्म रायमल्ल, कवि परिमल आदि अन्य अनेक जैन विद्वान् और ग्रन्थकार भी उस कालमें हुए।

अकवरने दराकी सर्वतोमुखी सास्कृतिक अभिवृद्धि करने और उसे सास्कृतिक एकत्व प्रदान करनका स्तुत्य प्रयत्न किया। प्रजाके उत्यानके

लिए मतीको अन्। बालप्रभा काल-विकास बार्डि क्रूब्याओंको राज्ञान क्षारा निषद्ध रिजा और विश्वमानिकाह अल्प्यानीय विशय बचा विद्यानी बन्दाको नरमान केनेको प्रवाको बोल्लाहन दिया । बाई मुननमान हिन् क्षाने बना विशास कर नकता का बन कह क्यों कार्य नवका हो। हैर स्वयक्षाने नवणनान वननेके निग नैवार हो। जन्यवा मही। १५७९ ई. में नर न्वत इमाने-बाहिस भी धन नदा । अब नुनुस्तानी घम बीर इ*स्*नुर्हे

नामन्त्रमे दनका अन सरमान्य वा कोई मुन्ता-मोलकी वनके कार्योकी वान्यवना की कर नरना वा बढ़ राज्ञा ही अध्यक्त नहीं वर्षका की अध्यक्त कन नदा । कृष्या-नीनविशे और बहुर वृत्यवानीने बहुतेय विरोध रिया दिल्ल बनकी एक व बनी बरन बनकेन ही बनैक नमान्हें ननपत्र हो सबे हैं। यह सरवरने बारने राज्यमें बनी बनींकी पूर्व रक्तन्त्रज्ञात है हो ब्रन्द्रपुर जीकरीके बारत प्रवादननावेचे वह धीप वैभाव बीर पारको हैकई शिक्ष, नुक्री नुक्री वादि बनी बनो उने नहींने निहानी-

को क्रम किया करता या बीर कनके पारस्तरिक शब-विधार च्याडे नुसता वा बदान्दर्श त्यमें मी बन बाद-निवारोंने बान नेता वा । निनिध वार्तिक विचार-वारामीके इन प्रशानके सम्प्रवस्त सन्ते जन नवरा बरमाद करके बार्ने सर्ग-बन्मधी नायक अञ्चल कालो बन्न दिया। बालाइमें बैना कि वर्षन निप्रान बीन नीप्तरका काम है यह कोई रप्रकृत का नवस वर्ग पा सम्प्रचार नहीं वा बरन 'कान्यविक एवं राज-क्षीतक दिशीना बरवर्ष बम्पारन करनेक बहैराने मिनोडीना विवेधनात वर्ष बोदिक क्षीरियोंका चलकृतिक लेखन मात्र था । अक्षारे अनेक बनी एवं बान्द व्यविकारी दन नेपटनके क्याप में और बर्ग्य-वर्ग्न विजी वर्गका कालन भी ने करते और कर अच्छे में। सनवर्तने स्वर्ग भी इस्तानका वर्षमा चौरत्याय नहीं फिना था । रिन्तु बद्द बनरा भूनगरन्तय वर्ष ही रह बद्ध का। बहु स्थ्यान निवारता व्यक्ति का विश्व वर्धने की बाउ

अच्छी लगती उमे ही अपना लेता। सभी धर्मी और उनके दिहानी एव गुरुओंका वह समान रूपसे आदर करता था। परिणाम यह हुआ कि हिन्दू लोग उसके राज्यको हिन्दू राज्य हो समझने लगे और अपने धर्मी एव बाचार-विचार, त्योहार, उत्सवी बादिका स्वतन्त्रतापूर्वक पालन करने लगे। मुसलमानोके लिए मुहम्मद नाम रखनेका निषेध करना, नवीन मसजिदें न वनवाना, पुरानी मसजिदाकी मरम्मत भी न कराना विलक अनेक मसजिदोका अस्तवलके रूपमे उपयोग करना, कुरानको टीकाओ. वरवी भाषा और शरीयत आदिके अध्ययनको हुतोत्साहित करना. स्वय अपने लिए सिजदा करवाना, इस्लामके रोजा, नमाज, हज आदि नियमीका पालन न करना और इनके विपरीत जीव-हिसा और मास मक्षणपर कहे प्रतिबन्च लगाना, गोवघ बन्द करघाना, सूर्य, अग्नि और प्रकाशकी चपासना करना, हिन्दू, जैनो, पारिसया, पूर्तगाली जैसुइट पादरियो आदिको अपने-अपने धर्मायतन बनाने और धर्मोत्सव मनानेमें प्रथय देना, उन सबके गुरुआका आदर करना, अन्य घर्मवालोको यह छुट दे देना कि वे स्वय मुसलमानोंको भी अपने धर्ममें दीक्षित कर मके, अपने आचार-विचार. वेप भूपाको बहुत कुछ भारतीय बना डालना, इत्यादि ऐमी बातें थीं कि कट्टर मुमलमान उसे काफिर कहने लगे थे, कोई उसे पारसी कहता. फोई जैन, कोई हिन्दू कोर कोई ईसाई। और वह सब कुछ या और कुछ भी न था।

तथापि इस विषयमें भी कोई मन्देह नहीं है कि जैनवर्म और उसके ।
गुरुबोंका प्रभाव अकवरपर पर्याप्त पढ़ा था। उसके शासन-काल के जैनोंसे
सम्बिध्यत जा निम्नोक्त तथ्य प्राप्त हैं उनसे यह भलो प्रकार स्पष्ट है।
१५७९ ई० से सम्राट्-द्वारा धर्माव्यक्षका पद ग्रहण करनेको महत्त्वपूर्ण
घोषणाके तुरन्न उपरान्त राजधानी आगराके दिगम्बर जैनोंने वहाँ एक
मन्दिर निर्माण किया और बढ़े समारोहके साथ बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव
किया। स्वय राजधानी दिल्लोमें निदस्य और काण्डामधकी भट्टारकीय

टक्कालको एक व्यवसारी या और सम्बद्धना सम्राद्धा स्थापन में था। धमादची बहानदारे बहते वनराध्यत्रके किए एक विवास बानावीन विकास या गौर अमुख्य अवस्थ ५ । श्राप्तम वैश-स्तुनोका सीथाँडार कराने समारोहपूर्वक सनकी प्रतिहा की या। इस्ते स्वकार्वे क्वाने शास्त्रे रामस्त्रके स्टब्स्ट भावाने वास्त्रवाधीशरिष्ठका रणना भी करानी यो इंड प्रन्यमें बाप्रभूकी प्रवटा करते हुए करिये किया है 'मध्के जमानी तत्राद् बक्तरते वशिषा वारक कर कन करके व्यक्त क्लार्वन तिना हिंछक स्थम बढ़के मुख्य मा न निकालों में दिवाले बढ़ बधा हुए रक्ता वा बच्चे वर्गराज्यमें बढ़ने बत्र बीर शब्द-राज्या में जिले कर दिया ना कोईक लक-धनत अनुस्पकी नदि प्रति हो। कही है और क्यू कुमार्थने अनुस्ति करता है। शक्तु शीवरने नाप्ये किल्यान वास्त एक बन्द निहान्त्रे क्षिमी मानामें बानुस्तामीनरित्र विश्वसाना गा। क्य कविये भी सक्यरके सुराज्यको और डोडर बड्यके बांनरलॉमी प्रवास को है। १५९५ ई. न मासिना-निवास कवि गायकने अवस्परी रहकर बारव योगाजवरिषकी रचना को यो इस क्रमने थी प्रमाह क्षकरको प्रचंदा चलने ग्राप गोपक्रके कार्य गोर अलग नगरको सुन्धरताका वर्षन है। जानरेने समेक व्यानोका बनामन क बीर विद्ववरीक्षी होती को १ वयरोन्य गर्म्ब शवसकार्थ कुछ बन्द बालनकार नाबीर-गरेक राज्य बारनारू था। यह योत्रास्त्रको आहः प्रदेशपर यान करतेराके बोचान वादीय एककारायका पूर्व था और वहा प्रवर्तिया छ । बोबरका बनस्य इक्टाका नारमान्ये अविकारमें या बीले बीर बनाइध्य-का न्यापार को बच्छे हामने का बीर क्यूबी देखिन बाव हक साब ह्या (प्रस्ता) थी । प्रकृति नगरी केना थी और क्यूने सिनके प्रकृते में । एवर्ग बजारके कोनने का प्रतिनित पत्राव हवार हका देशों या । बजार क्याना बाल बामल करता था और स्था नगराज स्थीन स्था और करते हैं हिए मारवीम इविकास । एक रहि -

नीं(नो थीं । घटानिया क्षेत्र-विभाषी महत्त्रास बीनी क्षाङ्क टोउर बन्मदर्गे

नागौरमें उसके दरवारमें जाया करता था। धार्मिक कार्यो और दानादिमें नी भारमत्ल लाको रूपये खर्च करता था। किय राजमत्लस उसने महस्व पूर्ण पिंगलशास्त्रको रचना करायो थी। दिल्लो, आगरा मशुरा, महजाद पूर, जीनपूर, मेरठ, हथिक त, धीरीपूर, श्रीपथ आदि अनेक नगर माञ्राज्यके कदीय प्रदेशमें हा जैन धमके उन्नत के द्व थे। दिल्लो, खालियर, घीरीपूर आदि कई स्थानोंम तो भट्टारकाय गहियों भी स्थापित थीं और इन दिगम्बर मट्टारका एव साधुआका भी समादप प्रभाव पहा था। जैन जाति इस कालम व्यापार प्रधान हा चली थी और प्राय सभी नगर-प्रामोंमें उनकी छोटी-बही बरितयों थी। स्वय अबुल्फ्जरने अपनी आइन-अक्तरोंमें जैनाका वर्णन और उनकी मायताआवा विवचन विया है। महाक्षि वनारसीदासक अधकयानर नामक आत्रमचरितसे भी सम्राट् अक्तरकों लाकप्रियता, तत्कालीन लोकदशा आदिपर मुन्दर प्रकाश पहता है।

इस कालमें अनेव जैन विद्वाना और विवयाने भारतावें भण्डारकी, वियोपनर हिंदी साहित्यकी, स्नुत्य अभिवृद्धि हो। क्मचन्द्रकी मृगावती चोपई, पाण्डे क्पचन्द्रके परमार्थी होत्राज्ञतक एव गीतपरमार्थी, पाण्डे राजमल्लके पञ्चाध्यायी, लाटोसिहता, जन्बूम्बामीचिरित्र, अध्यात्मकमलन्मार्त्तण्ड एव पिगलशास्त्र, भट्टारक सोमकीत्तिका यशापरास, ब्रह्मराप्तस्त (१५९१ ई०) के हृनुमन्तचित्र, मीताचिरित्र और भित्रव्यदत्त चित्र, विद्यालकीर्त्त (१५६२ ई०) का धर्मपरीक्षारास, विजयदवसूरिका सीलरासा (१५६६ ई०), कल्पाणदव (१५८६ ई०) की देवराज वच्छराज चौपई, पाण्डे जिनदाम (१५८५ ई०) का जम्बूचित्र, जानसूर्योदय, जोगीरासा और फुटकर पद, किंव परिमल (१५९४ ई०) का श्रोपलचिरित्र, मालदेवसूरि (१५९५ ई०) को पुरन्दरकुमारचौपई, जदयराज जतोके राजनीतिके घोहे (१६०३ ई०), विद्याहर्पसूरि (१६०४ ई०) का अजना-मुन्दरी

रात बारि वनेच धन्योका प्रवतन श्रवकारके राज्यसावर्ते हवा। बाही-अक्रमधेके निर्माणमें स्पर्व अवुक्रमात्रकने चैत-विद्वानीतम सहयोग किया ज. बंदान बारिके गरेलोको बंधानको बन्हीके सहयोगके बंधकित को समी क्वादी बाती है । बीकानेर-गरेबका प्रवृत्त कर्नवन्त बच्छाका राजले बच्चन होनेके

कारण बजारकी बारजर्म आ क्या वा और बतने वहे जरम एक

प्रतिक्रित संस्थी अना तिया या । कर्मसम्बन्धे वृत्रवर्ती सुकतानी-द्वारा जन्द्व वनेक पहुचनी निवन्तियों जो नुक्कमार्थींके प्राप्त की बीर कर्षे बीटानेर बारिके जिनवर्गियरोने जिल्ला क्रिया । १९८१ में में बजादने बेन्यपाने द्वीरविवनतृरिको बुनानेके किए बुनरातके सुवैदार बाह्यकाँके पात क्रन्येस नेना । उप्रादके निवन्तकार बानार्न सुवरायते रेडक हो। नक्कर धारण आवे । ब्रमाटने कावा वय-वाववे स्थानत किया और बन्नी व्यक्ता स्र् कारेवलि प्रशासित होतार कहें समञ्जूतारे क्यांवि प्रदान की । जानार्य बीर क्षमके कई विका को करने बाप माने में बसाइफी निरावर वर्धविका केरों में । विजयतेन पन्ति बजादके बरवारमें 'ईस्पर कर्ता बर्ता नहीं है विकास क्षेत्र समेति विद्वाली समेत बतायात रिने स्थितकर बहुमाध्य प्रक्रिय क्षाराम निहानांको नारमें नरामित करतेके बस्करानी क्योंने 'दबाई' क्यांवि शास की । कमादने बाडोरमें की दन्हें बचने पत बुकाना था । वति मानुसन्तमे बनाएक क्लि 'पूर्वत्यक्षमान' की एवना थी और इसी कारण ने 'पालबाई बरवर सम्बद्धीन मुर्वेद्यायाना-

स्वारक करवारी में । वे ब्रारमीके मी बहुमर फिल्मू में बीर बहुस होकर तमार्थे कर्षे 'कुवपान बनावि प्रधन की थी। नहां बाठा है कि एक बार बचारको बनालक विराह्म हमा मानुष्णा शुमाने वर्षे बन्होंने नहा कि बह हो कोई वैश-क्कान नहीं है, किन्दु कराएंने पड़ा कि बनपुर कराय दिल्ला है, यह कह हैरे हो दीवा दूर ही मारेगी । बालि बसाहके सराय-पर हान रखा बीर बतको पीड़ा दूर ही नहीं । राज्यके बनारानीने अतम

बारतीय इतिहास पुरु इति

**

होकर कुर्बानोके लिए पशु एकत्र किये किन्तु मूचना पाने हो मन्पाट्ने वह मुर्वानी तुरन्त रक्तवा दो और पशुओका छुडवा दिया। उसने पता कि 'मुसे सुख हा इन खुशीमें दूसरे प्राणियोंका दुख दिया जाये यह सर्वेषा अनुचित है। मनि धान्तिचन्द्रका भी अकवरपर वहा प्रभाय था। एक वर्ष ईदके त्योहारपर वे सम्राट्के पाम ही थे। ईदसे एक दिन पहले उन्होंने सम्राट्से कहा कि अब वे वहाँ नहीं ठहरेंगे क्योंकि लगले दिन ईदके उप-लक्ष्यमें हजारो लाखों निरीह पश्योका वध होनेवाला है। उन्होंने फ्रान गरीफ़को आयतोसे यह सिद्ध कर दिखाया कि कुर्वानीका मास और खुन खुदाकी नहीं पहुँचता, बह ६म हिंसासे प्रमाग नहीं होता, बल्कि परहेज-गारीसे प्रसप्त होता है, रोटो और शाक खानेसे ही रोजे फबूल हो जाते है। अप अनेक मुसलमान ग्रन्योंके हवाले देकर उन्होंने मम्राट् श्रीर उसके उमराबोंके हृदयपर अपनी बातकी सचाई जमा दी, अत मम्राट्ने घाएणा करा दी कि इस ईदपर किसी जीवका वध न किया जाये। यति जिनचन्द्र सूरिने अकबरना प्रतिबोध करनेके लिए 'अभवर प्रतिबोधरास' नामक यन्य लिखा था । जिनचन्द्रको सम्राट्ने 'युग-प्रधान'को उपाधि दो थी । मुनि परासुन्दर भी सम्राट्से सम्मानित हुए थे और उन्होंने 'अकवरशाही र्श्यगारदर्भण' ग्राथको रचना को थी। कहा जाता है कि एक बार शाहजादे सलोमक घर मृत्र नक्षत्रके प्रयम पादमें कन्या-जाम हुआ। ज्योतिपियोने कन्याक ग्रह उसके पिताके लिए अनिष्टकारक बताये और उमका मृख देखनेका भी निषेष किया । सम्राट्ने अवुलक्षजल आदि विद्वान् अमात्योंके साय परामर्श करके मन्त्री कर्मचाद्र वच्छावतको जैनधर्मानुसार ग्रहशान्तिका । चपाय करनका आदेश दिया । मन्त्रोने चैत्र शुक्ला पूणिमाके दिन स्वर्णरजत कलकोंसे तोधकर सुपास्वनायकी प्रतिमाका समारोहपूर्वक अभिषेक किया। पूजनकी समान्तिपर मंगलकीप और आरतीके समम सम्राट् अपने पृत्रो कोर दरवारियोंके माय वहाँ आया, उसने अभिषेकका गमादक विनयपूर्वक अपने मस्तकपर जड़ाया और अन्त पुरमें वैगमोंके लिए भी भेजा तथा उक्त

क्ति-पन्दिरको दन काच नहाई बेंट की। बजार्ते नुजरान प्रान्तके निरकार, यनुजय बर्मात जैनदीवींकी रखा-में लिए बहुमदाराहर नुवेशार बाह्यकारिक हरपाल मेजा मा कि बेरे राज्यमें बेन्साओं बेनमन्त्रियों भी अस्तिवादी कोई भी अर्थन किसी वकारको धानि न पर्तन्य नके बोर बड़ कि इन आद्याशा प्रश्यानन करने-बाका बोबय बन्द्रमा मानो ब्राह्मः उत्ता काउन्हे मेहना बुबके बैन-मन्द्रिएके विनारकार्वे किया है। अरवस्त्रे जैत-मुक्तियोंको यस्त्रवान पर दिये प्रतिवयं बागादकी सहर्महरूराये बार्सार (बीवॉबनानिवेच) वीवदा की, प्रतिका नव किराकर बाद नाम वर्धना समाना अनवे हिन्स बन्द कराती. करपात्रका सामीचे अवस्थितेना विकास करा करवाता समाव्य वाहि तीओं सा सरबोजन किया अस्तर मोरबाका असार किया आहि। १६ है अपन अन्यन निराह्मप्रमुख्य की विकार है कि विजानित बार्टर जेलपुरस्ति प्रमापत सरपाने साथ बैता भैतः वरपी शादि प्रमृती-को हिमाना निराय कर दिया था, पुरान कैंक्शिको जुन्त कर किया था, वैनपुरक्ष क्रांत् वर्तित प्राचीयत की की दान-मुक्तके नागीये वह बचा क्यानर रक्षण का दरपादि १५६५ हैं में पूर्वताली बैनार शहरों लिहेरीन बरन प्रचल बनावके अनगर असे गारधाहक नाम वनमें निका ना कि बकदर बेंबबर्नेका अनुपादी हो नया है यह बैंद-सिववायर वालन करता है सैपवितिके आन्यक्रियन को जानारायनमें बहुबा नात रहता है बता बाद और अगरे रियारणो करन बाद्या प्रचारित कर दी है। वंदबी, क्षत्रही चन्त्रती तीन बर्गाक्षका रचकानी व्यक्ति बैनाली अर्थ बन्दित राज्यां बचेन्द्रित राविवार तथा अन्य वर्द विनोत्तर, बी बन विचयर वर्षि आवेषे बनवय हो जाते हैं। जनवरने बीचहिनाका निवेत विका का और इन बाजाबॉक शतकान करनवाओंको जारी बच्च दिया बल्य का । बाइने-बरुवपैमें अरवरको अपनी वर्षणानी कहनी बदानतिही मलीर इतिहास न्य सर्व

परिनापक है। यह कहा करता हा कि 'यह निवत नहीं है कि मनुष्य वपने स्वरंको पशुआको कल प्रनाय । मानक अतिरिक्ता याजपनीके जिल् कोई बाय नोजन नहानेपर भो उस मामभधाणका दण्ड अल्पायुक्त रापम मिलता ह, तम मनुष्याका जिनका स्था गविक भागत मान पर्टी ई इस अपराधका गया एवड मिलेगा ८ एनाई, यहेलिय आणि जीर्याहमा परनेवाले जब नगरा बारर रहत है ता मामारारियाको नगरने भीतर रहनेगा पया अधिकार है ? मरे लिए यह कितने मुखकी बात तानी कि यदि मेरा भरोर इतना बड़ा होता कि मत्र भागाहारी बेबल चने ही साकर सन्तृष्ट हो जाते और अप जीरानी हिमा न परते। जीपहिमाका राक्ना अत्यात आपरवक है, इमाजिए मैंन स्वय माम खाना छाड रिया है।' रियया-प सम्बाधन यत पहा परा। चा 'यदि युवा अयस्यामे भी मेरी चित्तवृत्ति वय-जैमी हाती ता बदाचित् में विवाह हो न यरता। किमम विवाह करता? जो आयमें वही है य मेरी माताम समा है, जो छाटी है बे पुत्राय तुल्य हैं और जा समयवस्या है उन्हें मैं अपनी यहनें मानता है। वस्तुत जीवहिंसा अकबरवा प्रिया थी। यह अधिवनर मांस नहीं खाया करता था और गोमास तो छूना भी न या। उसके मामे गामान अवाद्य पदार्थ था । वषय गुछ निश्चित दिनोंमे पशु पिक्षयोकी हिसाको अकवरन मृत्यु-दण्डका अपराध बना दिया था । बिसिण्ड मिमयके अनुसार अकवरका छगभग पूण ऋषम मांसाहार-त्याग और अशाकके समान सुद्रादिश्रद्र जीविहसा-निषेधवे लिए कडा आजाओका जारी करना अपन जनगुरुत्राके सिद्धान्तारे अनुमार आचरण करनेक ही परिणाम थे। हिमका-का कहा मजा देना भी प्राचीन जैन और बौद सम्राटोंके अनुसार ही था। इन आजाआमे जमकी प्रजाके बहुत-से लोगाको, विर्णेषकर मसल-मानाको बढा कष्ट हुआ होगा। जैन-धममे प्रमावित होकर हो अपने अन्तिम जीवनमें अकवरने मानाहारका सर्वेषा त्याग कर दिया था इसमें सन्देह नहीं कि वर्षा पर्यन्त जैनगुरुओने अकवरको घण्टो उपदेश प्रक्रिय हो बना कि 'अक्टबरने चैन-वर्त कारण कर किना है। प्रो. एम्प-स्वामी बावबर बादि अन्य अनेक प्रतिप्राचनार्शिक बतुबार की अनवर बैश-वर्तपर बडी सञ्चा रकता था । 'बरुवर और बैश-वर्ध' 'सुरीस्टर और एकार 'अरुवरक बैश-बुद मादि बुस्तकें भी देनी सम्बद्धा बनर्वर रप्ती है । ब्राप्त्र बीसरीके मध्नोले बन्नाटने सबने बैश-बहर्शक बैठनेके नियं एक विधिष्ठ तथा वैश-रकार्य्य सुन्यर क्षती समस्ती थी की ^{क्र्}री-विवासी देशक पहुंबाठी है। 'बुडक-बाग्राम्मने सकते सारव नामक पुरुषकों को एक विकासन्तर्भविका स्थम है कि सक्यरके सहिता करेंचा नामन परमेके शारम हो शुस्ता-गोश्मी बदन बसलूह हो सबे में भीर क्लीनी हेरना का बारनेल्डे बब्रोको निहीत दिना या । वस फिर्मिन क्रमीयको क्षत्रकता भी ऐसे ही नुक्कमानीके बाल्योग्से जिल्ली को सर्वपारी रवास्त्रके नारभ वस्ते बदन्द्र में । बनार्के बन्तिय वर्ष दुर्जाने बीटी । १६ -१६ ४ ई बाद बनाया कोछ पुरस्कीन विदेशी क्या यह विश्व १६ ४ ई में विद्यानुपर्ने तृत्व को बनी । इत बीचवें बदवरके बन्द पुत्री-राजनुवार मुख्य और वानियालनी मृत्यु हो पुरी थो । १६ २ ई वें स्थानके पहरूपके बीर बिद्ध वानेकेवे बाह्याके नरम प्रिन निष्य पूर्व बातन्त्व निकासकार सम्प्रद बयक्करकता यम करा दिया। जिल्हा सबीय जिल्हा वरता वी भी-क्षेत्र मी अम्बूबा कि कहीं क्षेत्र पुत्र वृत्रकों ही क्ष्यप्रिमाधे ⊀ बना दिया कार्य । क्या १६ प्रश्नी में बक्रीयने बाह्य-बर्काय कर दिया । तिक्य कलेवर वृद्ध सम्राद्वे पुरको सन्त्री हाक्ष्टे कर्शक्रमामा सौर रङ् कर्मांचे बन्द कर दिखा किन्दु अन्तर्ने खना कर दिया और वस्त्रे क्या क्ये ही जाना बचराविकारी पुलिस किया। इब अकार १७ वस्तूबर वर्षे १६ ५ ई. ती. ६३ क्यती मानुनै नारद्यता यह न्याल कुळन बनाई

वालीय इक्षित्रक एक धीर

च्यि जिल्ला बनके बीयनपर जरपन्त प्रवाप पड़ा और क्ष्म्यूनी बजब्रूकी बच्चे निदान्तीके इति इतवा जविक कावन कर नियाचा कि न्यू पातशाह जलालुद्दोन मुहम्मद अकबर इस सधारसे कूच कर गया। बह न केवल अपने कालके ही अथवा केवल भारतवर्षके ही, वरन् सम्पूर्ण विश्वके सर्वमहान् ऐतिहासिक सम्राटोमें परिगणित हुआ।

४ जहाँगीर (१६०५-१६२७ ई०)—सम्राट श्रकवरकी मृत्यु होते ही साम्राज्य-भरमें प्राहि-प्राहि मच गयी थी। किय बनारसीदास-जैसे अनेक सह्द्य प्रजा-जन उसकी मृत्यु से दु खी हुए। किय उस समय जीनपुरमें थे। अपने आत्म-घरिसमें उन्होंने छिखा है कि 'सारे नगरमें घोर और भगदह मच गयी। छोगाने अपनी-अपनी दूकानें ब द कर दीं और घरोंके किवाह बन्द कर लिये, अच्छे-अच्छे बस्त्र, आभूषण और नक्षद रुपया-पैसा मूमिमें गाह दिया, घर-घरमें ह्यियार खरीदे गये, सब लोगोने मोटे मामूला कपढे पहन छिये, धनी-निर्धन ऊँच-नीचमें कोई मेद ही नहीं दोख पहता था, सब ही आतिवत एवं आशिकत थे।' किन्तु पिताको मृत्युके एक सन्ताह पश्चात् ही नृरुद्दीन मृहम्मद जहाँगोर पातधाहका धान्तिपूर्वक सिहासनारोहण हुआ। उत्तराधिकारके प्रश्नपर किसी प्रकारका कोई सगहा या मतभेद न हुआ

राज्याभिषेकके अवसरपर सम्राट् जहाँगोरने प्रजाके आक्ष्वासन और अपनी उदारता-प्रदर्शनके लिए द्वादशसूत्री घोषणा की जिसके अनुसार मूमि-करके अतिरिक्त अय समस्त कर माफ कर दिये गये। केन्द्र-द्वारा शासित समस्त खालसा क्षेत्रको सष्टकोंके किनारे तथा निर्जन स्थानोंमें सराय और मसजिद बनवाने, कुँए खुदवाने और लोगोको वसानेका आदेश दिया गया। आदेश हुआ कि किसी यात्रीका सौदागरी या अय माल उसकी विना अनुमतिके न खोला जाय, यदि उसकी मृत्यु हो गयो हो तो उसकी सम्पत्ति चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान उसके क़ानूनी वारिसोंके सुपूर्व कर दी जाये किन्तु यदि कोई वारिस न हो तो राज्य-द्वारा इस कार्यके लिए नियुक्त कर्मचारी उस सम्पत्तिको अपने अधिकारमें लेकर उसका उपयोग सराय, तालाव आदिके निर्माण एव अन्य लोकहितके

मुन्तं किया क्या बोर सराज्यके विशिष्ट विशेषि प्रमुख्य कर किया क्या - रम मान्यकों समये कहा कि 'मेरे कम-मार्थी बारे पारणे मानावार मिरिक्स रहेवा कराहत्वे एक-एक किया का प्रकारक रहेवें

क्लिंद्र नहीं प्रशासने कानुस्ताद्य निषंत्र है, मेरे एजार्डिकेंद्र निष् पुरुष्पारों मेरे एक्साएके भी रोई माजाए न करेंगा करीत कर जिले संस्थान पूर्व-कृत्य कर्मुम्द हुआ आता उन्हें कि किसी में ज्ञानुम्य सामग्रा करना क्लाव है जैरे पूर्ण स्थित क्लाव करीत जिले के जिले कर कर किसी का उन्हार क्लाव है, सिरामारों को यह कभी में माजाया क्ल्वी करने में आप में भी काम एकते करनेला दिखें मेरेम्स्लानी निर्माणक पर्युप्पाल कराता है। जानों का सामित्रक मेरेम्सलानी निर्माणक पर्युप्पाल कराता है। करने का सामित्रक मेरेमानंश ज्ञानिकों करने करनायों यह कारनावन दिखें किस्ता करने एक्सी है करने करने क्लाव करने माजारे एक कारनावन दिखें किस्ता करेंगा भी तो क्लाव करने करने किस करने क्लाव करनेला भी ती क्लावर करनेला भी तो क्लावर करनेला भी तो क्लावर करनेला भी तो क्लावर करनेला भी तो करने क्लावर करनेला भी तो क्लावर करनेला भी तो करने करनेला क्लावर करनेला करनेला करनेला क्लावर करनेला करनेला करनेला करनेला करनेला क्लावर करनेला कर

वें क्षण व्यक्तित्व जोर कंश्यारीकी साथ प्रत्यक्ता व्यक्ति होगी है। परपुरः जनने जनवरकी हो राजनीति सातन-करवस्या बोर काल अनेक स्पादहरिक एवं वैतिक परस्तराज्ञीको अञ्चल रता। राजकी पराविकारी नीर कर्मचारी मी मभी प्राय पुराने ही चत्रते रहे, जिनका मृत्यु हा जानी या जी पदच्युत कर दिये जात उनक न्यानमे ही निर्मान नियुवित हाता थी। इस प्रकार गामनय प्रमें प्राय चोई परिप्रतेन नहीं हुआ। अपने आपको यायपरायण मिद्ध करनका उम बदा चाव या, इसी उद्देश्यमें मोनेकी एक जजीरते बैंघा घण्टा उमने अपने महलकी विद्यक्षीये लटक्या दिया था।

अवतक मुगुल-नरेशामें जहाँगीर हा ऐसा या जा अपने माता-पिताका अनेक मनोतियाँ मानन और पीराकी पूजा बरनसे प्राप्त हुआ था और जिमका लालन पालन जनमने ही अपार वैभवके यीच हुआ। या । उमकी शिया-दीक्षा भी विविध एव नच्चकोटिकी हुई यी। ग्राह्मण पण्डित, विद्वान् नैनगुर, जैमुहट पादरी, मूझी यात्र और मुमलमान मीलबी उसके शिक्षक ^रहे पे । वह मेघावी, प्रतिभागाली, बुद्धिमान्, दूरदर्शी, भावुस, कलाममझ और विद्यारिक था। उसका आत्म चरित ही उसके अनुरू ज्ञान और विद्वतारा परिचावक है। अपने जानीय स्वभावके अनुसार कभी एभी वह क्राधमें आधा एव अत्यन्त कर भी ही उठता था, किन्तु माथ ही बडा नरमदिल और दयालु भी या और पशु-पशिया तकसे वहा प्रेम पन्ता था। दर्शनशास्त्रम भी उस वडा प्रेम था, जिनसिहसूरि आदि जैनगुरुआ और जयम्य नामक प्राह्मण योगीके साथ वह घण्टो टार्शनिक विवेचन ित्या करता या । जिनसिहसुरि सम्राट् अकवरसे सम्मान प्राप्त जिन्च द्व-सूरिके शिष्य थे। जहाँगारन उन्हें युगप्रयानकी उपाधि प्रदान की थी। अपन पिताको भौति ही वह स्वतन्त्र विचाराका व्यक्ति या और इस्लाम उसका कुलपरम्परा धर्ममात्र था, बहुधा मुल्ला मौलवियोंकी उपस्थितिमें ही अपने दरवारमें वह ब्राह्मण जैन, ईसाई आदि विद्वानोंसे इस्लाम धर्म, कुरान शरोफ और पैग्रम्बर मूहम्मदकी कटु आलोचना सुनता और जब इमपर मुल्ला-मौलबी लोग झुब्ध हो जाते तो उनका उपहास करता। त्तथापि अकवरको धर्म-सहिष्णुताकी नीतिको एक प्रकारको प्रतिक्रिया उसके बनवर्गे शुरू हो वदी वी । इस्काद-बन और मुक्तन्यलींका वह अस्वरहे वनिक एक मेशा वा । देव-विजयके विक्रतिमेर्ने वक्तने कुछ बन्दिएँ और मृतिनोको भी शोडा । रजोरी नावक स्थानमें द्विष्युक्षेत्रे बहुत-ही मुख्यमन कनामोडो हिन्दू ब्लाकर स्थाहा वा श्रद्ध बमाचार श्राप्त होनेपर नहींगीर में माता निकास दो कि वहि कोई पनिष्यमें ऐना करेगा हो को नारी रख निया नामेशा । वो दिल्लु शारि इस्तामने वीरिका द्वेत्ते पूर्व्हे वह वजीना मी क्षा या । तयारि जैवरेशदुत वॉव शक्तिनका बनने एक मुक्तमान रनवी-के बाद विवाह बच्नेकी और बसे ईनाई बनानेकी बनुमाँत है दी थी। क्लके त्तवर्वे अवक नदीन द्वित्यू एवं वैक-वन्तिराच्या निर्माण हुवा । देशक व्याप-नभी नवरमें हो बतके राज्यक बॉलम वर्जीने बतार नवीन मनिश मने में है रिन्तु जैन आविकाको कपने वर्गोत्तव बादि बनानेकी था कर्न रकानका थों इत्सी दिशानी सादि त्योदारोंने भी बन्नाट् मान केता या । दिन्द बैंग मारिका बाने दीवोंडा बावाएँ करनेनी वी पूरी स्वामीका। में ह मुजरात बारि प्रान्तिके सैनियोंने सबके प्रान्तीय धासकी दिसानियेक कर्र करवान को कार्य करावे थे। हिन्दू बीक्लेरके वृक्ष बैक्कीर मानर्किन ने निर्देश राजपूर्वार संबद्धका पढ़ किया था। बतीके परावर्धने बोक्लीए का राजा धर्मीबार की बढ़ांतीरका विरोधी की बना वह और निरामी क्षोडकर बीकालेर क्षम बना था । क्षापर्वे शाबीदत क्षतवरके क्षणी सीर बनने १०में यह रमनना सम्बन्धनंत्र होती पुत्रीको मी पुरस्कारर बोजलेर क्रिया के बचा या और बड़ों सब में निर्माण होकर करनी हमेंगी-में रहने कमें हो राजविद्दने बर्गन्त इवेलीको और किया। बन्हापत बीर बोरताके बाय अपने-महते कर करे और समर्था किस्तेने बीटर विमान बन्कानत मुख्य बद्धार्के माधित वे । इन्हें वब मारलॉने बहोबोर निर्म मानविद्व और राजा रामनिद्ववे अत्यन्त रह हो नवा । सामनिद्ववे कांप्र-दानके व्यक्तियोंका इसने बचने पामन्त्रे थी निवर्तन्त्र कर विवा । वान्यन्तर में रागोंबहनी बनने कमा कर दिया। मैंनीके एक बहुन क्रोहे-से वर्षार 114 वालीय श्रीदास वृद्ध ग्रीह

किये गये जहाँगीरके ये अत्याचार राजनैतिक कारणोसे हुए थे। वैसे जैनोंके साथ वह उतना हो उदार और सहिष्णु था जैसा कि अन्य घर्मावल-म्वियोंके साथ। उसकी घार्मिक नीति अकवर-जैसी उदार न होते हुए भी अनुदार न थी।

उम कालके जैन कवियो और साहित्यकारोमें मविष्यदत्तचरित्र, भक्तामरकथा और सीताचरित्र (१६१० ई०) के कर्ता ब्रह्मचारी-रायमल्ल, भविष्यदत्तचरित्र (१६१० ई०) के मर्त्ता मासनपुर-सतौली निवासो पं० वनवारीलाल, सुदर्शनचरित्र (१६०६ ई०) एव यशोधरचरित्रके कर्त्ता आगरा निवासी कवि नन्द पचमीय्रतकथा (१६०९ ई०) के कर्त्ता चर्जन निवासी कवि विष्णु, मगवतीगीता (१६१२ ई०) के कत्ती विद्या-कमल, कृपणचरित्र (१६१४ ई०) के कत्ती कवि ब्रह्मगुलाल, ढालसागर (१६१५ ई०) के कर्त्ता गुणसागर, जीव घररास (१६१९ ई०) क कर्त्ता त्रिभुवनकीर्त्त, रविव्रतकथा (१६२१ ई०) के कर्त्ता भानुकीर्त्त मृति, सुन्दर सतसई और सुन्दरविलासके कर्ता कवि सुन्दरदास (१६२३ ई०). मृगाकलेखाचरित्र, टण्डाणारास, चुनहो, ढमाच आदि लगभग बीम-इक्कीस रचनाओंने कर्ता प० भगवतोदास आदि उल्लेखनीय हैं। उपयुल्लिखित क्षि नन्दने अपने ग्रन्यमें आगरा नगरकी सुन्दरता, 'नृपति नूरदी शाहि' (जहाँगोर) के चरित्र एवं प्रताप और उसके सुख-घान्तिपूर्ण राज्यमें होनेवाछे घम कार्योका सुन्दर वर्णन किया है। उस समय आगरेमें हीरानन्द मुकीम राजधानीका प्रतिष्ठित रईस था तथा शाहजादा सलीमका कृपापात्र और निजो जीहरी था। १६१० ई० में जहाँगीरके वादशाह हो जानेके पश्चात् **उसने उस अपने घर क्षामन्त्रित किया और** भेंट दी थो। उस अवसरका रोचक वर्णन भी कवि नन्दने किया है। महाकवि वनारसीदास और उनकी विदृद् गोष्ठी जहाँगीरके शासनकालमें आगरामें जम रही **षो और कवि अपनी उदार का**ञ्यधारा हारा हिन्दू-मुसलिम एकताको प्रोत्साहन द रहे थे तथा अघ्यात्मरस प्रवाहित कर रहे थे।



कि दन प्रातास उसकी विशेष क्षति नहीं हुई। मामाज्य अझुण्य बना रहा इसका काई विशेष श्रेय जहाँगारको नहीं है। इतिहासकाराने उम पिराधी तत्वोका मिश्रण और मुगल सन्माटीमें सर्वाधिक पुढिमान् मूर्व प्रतिपादित विया है।

पिहाननपर चैठनेके अगले ही यप (१६०६ ई०) उसके पृत्र राज-कुमार सुमक्ते विद्रोह बर दिया । अकारके जीवनमें ही मलीमके विद्रोहके पारण मुसम्को राज्य प्राप्त बानेका आका हो गयी था बित् उसके प्रयान महायम उपके समूर अजाज कोका और मामा मार्नामह उस समय अक्यरमे प्रतापम चुप रह गये और जहाँगीरमो चन्हाने वान्याह हो जान दिया। अब खुमच्च स्वय कुछ माथी और ब्रब्य इच्ट्रा करने पजाबकी कोर कूच फर दिया और अपन पिताक विरुद्ध मिद्रोह कर दिया । जहाँगीरने वडी तत्परतामे तुरन्त स्यय जाकर विद्राहमा दमन किया, खुमस्को बदी किया तया उसके साथियोका निर्दयतामे माथ महार किया । सियवाँरे गुर अजुनमिहन खुसम्बरी सहायता की थी अत उन्हें भी यात्रणा दवर मार हाला, एक दवनाम्बर जैन यति मानसिंह भी उसका समयक था अस चसके साथियो और अनुयाधियोको राज्यम निर्वामित कर दिया गया। एक वप बाद फिर सुमक्ति सम्बाधमें एक पड्यात्रका सन्दह हुआ अत राजकुमारको अधाकर दिया गया और राजा अनीरायको सुपर्दगीमें जीवन भरवे लिए नजरकैंद्र रखा गया। १६१६ ई० में उसे उसके पृष्टु आसफलींक सुपुद कर दिया गया जिसन उसे शहजादे व्हर्मको १६२० ई० में मीप दिया श्रीर खुरमने १६२२ ई० में दक्षिणमें ले जाकर अपने इस अभागे बढे भाईको गुप्त रूपमे हत्या करवा दी। राजकुमार खुमरु मुशिक्षित, सुसस्कृत, उदार, कोमल हृदय और वडा सच्चरित्र या। सभी छोटे बडे उस चाहते थे। लोकने उसकी मृत्युको एक सन्तका विलदान माना।

१६०७ ई० में बगालके एक विद्रोही सरदार धेर-अफग्रनका दमन

नरमके निष् वर्गातीरने बतने कालको हुनुबुद्देन कोकाफी मेंगा . स्टिन जन प्रयुक्त पाका बीट घर सहसन सेलां हो नारे नव । घेर बद्धानमी कुपरी पन्नी मेहर्रायमा और बनकी कुछैको बन्दी करके समय ^{बाज} नवा बीर थाती. जल बुर्ग्न रच दिया बना । मैहरको देवते ही न्हींकी जनपर नादिन ही नवा किन्तु बार बय तह यह बबाब निवास कराये पति सन्तरः १६११ ई में बैदर्शनस्ति सम्राटने स्टिप्ट कर किय सीर यह याँचया मुरजहाँके नामने इतिहानमें प्रतिह हुई। मृत्यहाँ साम्य नुगरी हो नहीं बाबरम् बन्धना मुख्यिना सुविज्ञत यस्तीतिनी दन कार-कुछान जो जो । मुख्यमके इसके ब्राविपकार अक्रमानार विकास काराज काव कारिका मेंव क्षेत्र किया कामा है। बीरे-बीरे क्ष्मण राज्यकार्व उनने बाले हावने के किया और बद्दियार बर्विकटर विकास ही बुध गडते कता । जनते शहरे चरित्रे जराज नरपाची कान नहींगीरहे पुत्र बहरवारके बाब विराह दिशा । मुरतहोत्रा बान बकानीन वरिश-सन्दामें बच्द-एविजले आना वा, मध्यरने उन्ने घरन वी वी और ^{बुद} क्रेने परपर शिकुता कर विधा या । सब नह शतकात्रहोताके नामने नहाने ना प्रचान कना हुआ। अनको मृत्युके अवस्था वक्ता पुत्र सीर मुस्बर्धन का मार्ड शास्त्रको प्रकार करने हुवा । शास्त्रकोती पुत्री सुरुपात नहर राज्युकार लुर्गको नाव रिस्ता की जल बडाँगार्क माललसकी

निर्मागर को उनका नाम बीचन होने कहा था। १९११ है १९१९ है कर मानुन नृत्यांगि हो बन्दा । वहीं। आपने बहुति (जातों के देव करने नेतृत्व कार्याव्यक्ति का है का या निन्नु की कहा नामन् हों। उनने किर करता हुए किस्पर्य मून गर हो। कार्य वाहिक विशोध करने करने बाल-नान हैन्साम की सुध्ये हों कर की बहुति के दुर्ग करने

क्तरार्वने पूरका बाल्क्षत्रा और मुदंग (बाहरूहों) ना बंयुक्त वर्ष ही मर्नेनारों था। पुरवहाँ मान्यों मान्या बरवार वो करतो यो और राजनीतिक उद्देश्य था । यह पश्चिमी तटके पूर्वगालियोंसे मैत्री बनाये रखना चाहता था, इमीलिए १६०८ ई० में उपने अपना एक राजदूत गो**आ** भेजा। किन्तु उस दूतके पुर्तगाली गवनरसे भेंट होनेके पूर्व हो इग्लिस्तान-के राजा जेम्म प्रथमका राजदूत मर जॉन हाकिन्स जहाँगीरके दरबारमें क्षा पहुँचा, उसने २५००० स्वर्ण-मुदाएँ सम्राट्को भेंट दी और अपने देश-वासियोंके लिए मारतवपर्मे च्यापारिक सुविघाओंको याचना को । सम्राट्ने उसके साथ वही सज्जनताका व्यवहार किया किन्तु उसका दूतकार्य सफल न हुआ, जिमका प्रधान कारण पुर्तगालियोका सीद्र विरोध था। हाकिन्स १६०९-११ ई० तक दो वर्ष यहाँ रहा। ' उमके विवरण महत्त्वपूर्ण है। तदुपरान्त अँगरेजों और पुतगारियोंमें भारतीय सागरमें युद्ध हुआ । पुर्तगा-िल्योंने सम्राट्के मी चार जलपोतोंका अपहरण कर लिया इसपर सम्राट् चनसे रुष्ट हो गया और उसने उन्हें दण्ड दिया। ऐसी स्थितिमें जब र्वेगरेजोंका दूसरा दूत सर टामम रो (१६१५-१८ ई०) मुगल दरबार-में आया तो वह आसफर्सा आदि मित्रयोंको कुछ घूस आदि देकर अपने देशके लिए व्यापारिक सुविधाएँ प्राप्त करनेमें सहज हो सफल हो गया । टामम रोके अपने वृत्तान्त और उससे भी अधिक उसके सेवक टैरीके लेख जहाँगीरके इतिहास और उसके दरवार एवं दरवारियों आदिके रोचक चित्रणके लिए बडे महत्त्वपूर्ण हैं। राजकुमार खुमरूके भी व्यक्तित्व एव चरित्रकी इन अँगरेजोने बढ़ो सराहना की है।

१६१२ ई० में बगालके बिद्रोही सरदार उस्मानखांका दमन विया गया और दक्षिणमें अहमदनगरपर आक्रमण किया गया, किन्तु उस राज्यके सुयोग्य हन्त्री प्रधान मलिक अम्बरके कारण विशेष सफलता नहीं मिलो । मेवाहके विरुद्ध भी प्रारम्भसे ही युद्ध चल रहा था। राणा अमरिसह अपने पिता बीर प्रताप-जैसा दृद्धपित एवं चारित्रवान नहीं था। यह कुछ आलसी और विलासो था। राज्यकार्य मो कम ही देखता था। मामा- साहका पुत्र जीवादाह उसका प्रधान था। चूडावत आदि सामन्त सरदारोंके

करों जिन करती हो रामा बरवण नुगकी के पिछा पूर्व करता गिल है। किन्तु जन एक्सी भीर उनके राज्या अंकित हरती का रहे भी । किन्तु एर १९४८ में अपवास मुख्यी किन्तु के तिल कोरात और मुक्ते किन्तु एक्सी करीनता स्त्रीकर करतेगर किन्तु कर दिया किन्तु चार्च कराई स्वर्धिक राज्यार्थ करतिक होने काले बंद्यार्थ कराया का तिला हानीर राज्यों एरज्यार देशेत अनता सीचा अनता का तिला हानीर राज्यों परामस्त्रा लोगरर कर सेने ही असला जान का वा करने नामी कराये

तम स्वाध्या कर को में मुन्य कर पूर्व कर कार्य के बार कार्य कर कार्य कार्य कार्य का कार्य कार

वीनांग नगा था। १९६६ में में मारापांग जेन तानक महामारी नेता। क्रिन नगाणी नगाने नोते सात्ववीरियों दन बीचन महामारीका नीना देगा तानींव नगाने नाते हो। नारणव्यंत्र पूर्वती जैन्नेनाते दन रोजका गई। वर्ष तकन प्रकोर ना। हीत-नार वर्ष ठक नगर नातान (वेदना नह स्तीन ता)

वार्गी वय राजपुनार लूर्गको निवासमझीकी राजपानी स्वाप्तव्यक्ति भीवार वर तिला। भावानो प्रतब्ध हावर वहे राजप्त्विति व्यक्ति बीर ग्रीवनकारी समय विद्या १९५१ है में तीवरावि प्रतिब एरे पुत्र पूर्वर बाहोगीरका विचार हुया। वन स्वरूप्त कडकारी बरस्यके ब्युविरित का पूर्वत और ही एक स्वाप्तव कनकारी बरेर वर्ष

जलर्गाच इतिहास । दुङ देखि

था कि राजा और राज्यका वास्तविक धर्म इस्लाम ही है। पिछले दिनोंके ऐसे कार्योमें उसके परामर्शदाताओका प्रभाव भी काफ़ी था। १६२२ ई० में राजकुमार ख़ुसरूका वघ हुआ । उसो वर्ष ईरानके शाह अव्वासने मुगलो-से क़न्दहार छोन लिया । इस घटनासे जहाँगीर वडा क्षुन्ध हुआ, वह स्वय वोमारथा अत शाहजहाँको एक वडी सेनाके साथ क्रन्दहाग्का उदार करनेके लिए आदेश दिया, किन्तु शाहजहाँने स्वय विद्रोह कर दिया। क्रन्दहार-बद्धारका कार्य बीचर्मे ही रुक गया । जहांगीर अत्यन्त क्रोधित हुआ और विद्रोही राजकुमारके दमनमें जुट गया। दिल्लोके निकट १६२३ ६० में शाहजहाँ पराजित हुआ और उसका प्रधान सहायक सुन्दर ब्राह्मण युद्धमें मारा गया । शाहजहाँ राजपूतानेकी ओर भाग गया जहाँ मेवाडके कर्णीं हुने मित्रता निवाही और उमे आश्रय दिया। तदशन्तर मालवा होता हुआ वह दक्षिण पहुँचा, वहाँसे तेलिंगाना होता हुआ वगाल पहुँचा और वगाल एव विहारपर उसने अधिकार कर लिया। किन्तु वहाँ भी शाही सेनाने उसे पराजित किया अत फिर दक्षिण चला गया और वहाँ उसने मिलक सम्बरसे मित्रता की । १६२५ ई० में पिताके साथ उसकी सुलह हो गयी, अपने पुत्र दारा और औरगजेबको उसने अपने सदाचरणके आस्वासनके रूपमें सम्राट्के पास भेज दिया किन्तु स्वयं उसके सम्मुख उपस्थित होनेका उसे साहस नहीं हुआ और जहाँगीरकी मृत्यू पयात मेवाड-नरेशके आश्रयमें वा अन्यत्र गुप्तरूपसे ही वह रहता रहा।

१६२६ ई० में साम्राज्यके एक प्रधान सरदार महावतस्त्रीसे, को धाहजहीं कि विद्रोह-दमनमें और उसका पीछा करनेमें सफल हुआ था, मिलका नूग्जहों कह हो गयी। उसने अपनी स्थिति भयप्रद जान जहाँगीर और नूरजहाँको, जब वे झेलमके तटपर छावनी डाले पढे थे, घेर लिया। किन्तु नूरजहाँकी चतुराईसे उसका प्रयत्न विफल हुआ और उसे प्राण वसाकर स्वय भागना पडा। वह भी जाफर शाहजहींसे मिल गया। १६२७ ई० में कुछ दिन रोगी रहनेके उपरान्त कश्मीरके मार्गमें सम्राट

स्पृतिहरों कृष् ही नदी । स्पृतिहरू उनके महत्वती को रहन्यत नता । सन्दर्भ नदेश नया समस्य रहेंके ही। साहा का स्वरं का 1875 हैं

यनरा स्पेश पूर नुगक पहुँचे ही बादा जा पुरा था १६१६ हैं मैं पूर्व पूर्व परवेशों जो नुपंत्रके ही स्थापित बहुद है दिया क्या बा। दीनरा पूर पहरचार नुपन्धीय पासार या यह निवाहन निरम्य या सामकर स्थापित निरमार यान बया और सम्राह चीरिय कर दिया

वा मानवर स्थानि नैविकार गान वया बोर तजारू वारीस्त वर स्थि। वया । विशु वर्गन करना भानत्त्रति में यायद्याना स्तुर वा स्वाप्त्र स्याप्त्रदा रिक्शन कार्य मुक्तके पुत्र वास्तवकारी स्त्राव्यक्त स्त्रिक्त स्थि। व्याप्त प्रतरा रिपाल करने वका यो बालकारीने वहे स्वर्थ कार्य क्षाप्त करना निया। याद्यारी दुल्ल पानवारीके विद्युवकारी

कार्क समा करवा रिचा। यहाँ गुरूल 'राज्यमीके स्थि वस कर सा सोर माँव अम्मान सार्व अमरे उन्होंने मोत्र मेंग रिचा कि बारी वसके हर्वेत मुख्य प्रतास्था निवस्त्र कर कर दिवा सोर । यहाराज्य तो बान कपान्य दिसके यहाँ में पायत्र प्रभा नया भीर मुख्य बांधे कम बार मांच बाहरारे मुख्ये मार बता कि नवे। यहांच्या प्रतासे कम तावारक करिक्क करियो भीर कि रिचाने कर्या की सोर सर्थाय सम्बद्धमाने एक सार्वाएको कप्रवर्धने कहता सी क्यों। यहांच्यांच्या नार्वे निकस्त्रक हुवा।

अध्याय ४

मुगल-साम्राज्य-अधोगत

साहजहाँ (१६२८-१६५८ ई०) इस प्रकार अपन गाई मती गों-के रक्तसे रिजत मुगल निहासनपर आसीन हुआ। आमफ़र्खों उसका प्रधान मन्त्री या, उसकी बेटी मुमताजमहल जो साहजहाँकी अत्यन्त चहेती पत्नी यो साम्राज्ञी हुई। शाहजहांके दाराधिकोह, औरगजेव, मुराद और शुजा नामके चार वयस्क पुत्र तथा जहांनारा और रोशनआरा नामकी दो पृत्रियाँ सुनिक्षित, राजनीति-निपुण और राजकायमें सहायक थे।

राज्यके प्रयम वर्षमें ही जहाँगीरके कृपापात्र वीर्रासह युन्देलेके पृत्र जुसार सिंहने बिद्रोह कर दिया। उसकी दबा दिया गया किन्तु यह फिर बिद्रोही हो उठा। जय बाही सेना उसका पीछा कर रही या तो १६३५ ई० में गोहोंने उसका वध कर दिया और कुछ कालके लिए चीर वुदेले पान्त हो गये। १६२९ ई० में खानजहाँ लोदीने अहमदनगरके मुलतानके साथ मैत्री करके सम्राट्के विकद्ध विद्रोह कर दिया, उसका भी तत्काल दमन कर दिया गया, चार वर्ष वाद उसने फिर विद्रोह किया और इस वार वह मारा गया। १६३०-३२ ई० में जब दक्षिण विजयके उद्देश्यसे सम्राट् वुरहानपुरमें छावनी हाल पडा या तो दिखन और गुजरातमें मयकर अकाल पड़ा। इस भीपण दुर्भिक्ष और उसकी सहयोगिनी महामारीके पारण प्राहि-प्राहि मच गयी और असख्य मनुष्य कुत्ताकी मौत तहप-तहपकर मर गये। सम्राट्ने कुछ कर माफ कर दिये और कुछ द्रव्य दान किया, किन्तु दुष्टालकी भीपणताके समक्ष यह सब महायता

मनाव मी। १९६१ वें वें बादकांकी चौती केता बहुकत्वानी करणान मुखानव्यक्ती बहुकिताने मृत्यु ही चर्चा। वक्के बादकर्ति देर करणां हुई की चौत्रवीहत कहाद नामवा नामित नामा मौर १९६१ है के ही बस्की दिव व्यवसार्थ करको सुर्विका रक्तेताने बाहुकर्त कराव व्यवस्थान विजीवस्था काने मारण कर दिना।

प्रश्नि के की व्याप्याणि क्षिणके क्यांक्र प्रकार प्राध्मा माथ करेगी और लाग रिया। ब्राह्मणणस्या बुर्विक माने विकास कर रहेगी और तार रहा था। व्याप्त पुर्व करेगी विकास कर रहेगा है है जिस करना था। व्याप्त पुर्व करेगी कर रहेगा है जिस करने विकास कर रहेगा है जिस करने विकास कर रहेगा है जिस है जि

बालाँच इतिहासः एक धरि

. .

स्वोकार कर ली, किन्तु बीजापुरके साथ निरन्तर युद्ध चलता रहा। अन्तत १६३६ ई० में बीजापुरने मी सम्राट्की शर्तीपर सिन्ध कर ली किन्तु वह उसके पूर्णतया अधीन नहीं हुआ। उसी वर्ष राजकुमार औरगजेब दिसणका सूबेदार नियुवन किया गया। खानदेश, बरार, तेलिंगाना और रीलताबाद प्रान्त उसके धामनमें थे और १६४४ ई० तक वहाँ उसने गामन रिया। वह वहाँ निरन्तर युद्धोमें सलग्न रहा। अन्तमें सम्नाट् उससे एष्ट हो गया और उसे कुछ कालके लिए बेकार एव तिरस्कृत रहना पद्या। १६४५ ई० में वह गुजरातका सूबेदार बनाया गया और १६४७ ई० में बल्ख और यदस्वांका सूबेदार बनाया गया और १६८७ ई० में बल्ख और यदस्वांका सूबेदार बनाया गया। मम्मवन्तमा यह औरगजेबको बढ़ती हुई शक्ति और उसके स्वभावको देखकर उसके प्रबल्ध प्रतिद्वन्द्वी भाई दाराके सकेतपर ही हुआ था जो कि उस मम्य पिताका मर्यांविक कृपापात्र था।

१६३८ ई० में कुन्दहारपर यहाँके शासकके विष्वासघातसे मुगलोंका फिर लियार हो गया था। १६४५ ई० में राजकुमार मुराद और सेना-पित लियार हो गया था। १६४५ ई० में राजकुमार मुराद और सेना-पित लियार हो वल्ख और वदख्यांपर भी अधिकार कर लिया था। किन्तु और गलोव जन प्रदेशोंको अधिकारमें रखनेमें असफल रहा। वल्ख और इन्दहार दानों ही मुगलोंके हाथमे निकल गये। १६४९ ई० में कुन्दहारपर फिर आक्रमण किया गया किन्तु ईरानियोसे पराजित होकर मुगल सेना फिर लौट आयी। इन असफलताओंके कारण और गलेव और अधिक तिरम्कृत हुआ। १६५२ ई० में फिर कुन्दहारका घरा बाला गया, इस वार भी असफलता ही मिली। तीसरी धार १६५३ ई० में दाराको मेजा गया वह भी असफल रहा। इन मध्य-एशियाई प्रदेशोंको अधिकारमें रखने या हस्तगत करनेमें शाही-कीपका विपृत्त द्रव्य व्यय हुआ और अन्तत विफलता ही मिली। मुगलोंने कुन्दहारको लेनेका फिर प्रयत्न नहीं किया।

राणा जगतसिंहने वित्तीष्ट दुर्गका नवीन परकोटा निर्माण कराना पृक्ष किया था किन्तु बाहजहाँने उसे नष्ट करवा दिया । राणाके विद्रोहके

कारण वसके प्रवेशको सनाह दिया नथा निष्ठते रामा वस मेंगा। १६५३ ई. में औरंबबेंब फिरके फ्लिक्का मुनैपार बनावर चेनी नना और उसकी इस बारकी भार सर्वकी सुनेदारी सहकेंद्रे की समित कर्किनाईपूर्व औ । बक्के पूर्वतर्ती काक्योंके क्रुपाचनके नारण वेक्की मेदोनो नाये अवि हुई मी राज्य-बर प्राप्त नहीं होता मा त^{र्मम दुर} प्रकारको श्रम्भक्तमा वी । नोककुच्या और बीचापुरके साथ पुरुष सी निरन्तर पाक रकते पत्र । संबोधने वसे मुखियकुमीका वैदा पुरीना थोनल सार्ग हुना जोर पक्ष्मी सहायताचे चलने चात्रम अमरिया किना तमा बेतीनो नर्माण कमति को । मीरंबबेंग कहर मुली वा मीर रक्षिमधी बस्तवर्गे किया भी किन्दू वह बस्ता दिन्दुबो-लेखा दी वर्ग-बहु सम्बद्धा था महा वह निर्धान्त-किसी नहाने क्यार बाक्सव करता ना और सनके मन्त करनेके सनाम सोनता. पतता ना । इस नार्वतं करना

प्रयान बद्दानक भीरजुवना वानका नशीरित बरचार वा । वह पहेंचे दर्ग न्यानारी का, टिंट मोक्कुम्बाके सम्बादकी बेसामे एक तरहार बन दस, वरान्वर चन्निरिके मिश्रकानर नहीं प्राथक बहुत है जरेक्पर अधिकार करके स्वरं बस्ता वर्क-स्वतन्त्र राज्य कथा वैद्य । बोक्कुरक्रके सुकतार हारा दवाने आलेपर गृह औररचेंकी निर्म गरा और वसका एक प्रवास करतार क्य नका तथा वर्ग कर्न अपना नामी बाहुत्वरकांकी मृत्युत्र, बामानका प्रवास मन्त्री वर तया । बस्तु, दशी चीरजुरकके क्यूबीयके मोध्यचेत्रने बननी नित्तावदाती नीविन्द्राच्य मोळकुच्या चल्लको सब करता जारम्य किया वर्षके हैवयवार साहि समैक क्यारेंकी कुछ और १६९६ है से भोतपुरम्मका ही पेरा स्थळ दिना । बलावें स्पर्न बस्तुनहर्णि ही मुक्तालकारा को नही अन्य-आर्थना न्योकार कर की और औरंपवेसकी इच्छाने निक्क नेया कार्यनो बाह्य है थी। फिर वी ग्रीक्ट्रपा राज्य बर इन बरक्त निर्देत बीर बर्नन् राज्य रह क्या या : बीजापुरके बाय जी

T 1

युक्त नकता ही पहुंचा वा निश्त १६५६ है है बुक्तान बुहम्बर साहिक-

बाल्डीय इतिहास एक दरि

शाहकी मृत्यु होनेसे औरगजेबके हाथ अच्छा अवसर साया। उसने मीरजुमलाको साथ लेकर बोजापुर राज्यपर तुरन्त आक्रमण कर दिया। १६५७ ई० में बीदर और तदुपरा त कल्याणपर उसका अधिकार हो गया। बोजापुरको पूर्ण पराजय निकट ही थी कि द्याहजहाँकी आज्ञासे उसे इस सुलतानके साथ भी सन्धि करनी पढ़ी।

उसी समय शाहजहाँकी गम्भीर वीमारीका समाचार ज्ञात हुआ और औरगज़ेद दक्षिणकी समस्याको वहीं छोड उत्तरके लिए चल पढा । दक्षिण-की अपनी इस सूबेदारीमें उसने भीरजुमला और मुशिदकुलीखाँ-जैमे नवीन योग्य सहायक पैदा कर लिये थे और धन और धिनतका भी सचय कर लिया था। उसकी वहन रोशनआरा उसकी पक्षपातिनी थी। किन्तु सम्राट्का विशिष्ट स्नेहपात्र उसका ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह या और उसे ही वह अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था, वही वहन जहाँनारा भी चसीको पक्षपातिनो थी । राजकुमार मुराद और शुजा भी शिक्तियास्त्री भूवेदार थे और राज्यके दावेदार थे । चारो हो राजकुमार वीर याद्धा और अपने-अपने प्रदेशके प्राय अर्घस्वतन्त्र स्वामी ये। उन सबके अर्घान अपनी-अपनी पर्याप्त सेना थी। किन्तु जब कि दाराशिकोह उन सबर्मे अधिक ^{विद्वान्}, वेदान्तो आध्यात्मिक एव सूफ़ी विचारोंका प्रेमी, चदार, सज्जन और जनिप्रय था, औरगजेव कट्टर सुन्ती, धर्मान्य मुसलमान, अनुदार. छल-कपटमें कुशल एव कूटनीतिज्ञ था, मुराद शराबी या और शुना सामान्य वृद्धिका व्यक्ति या । शाहजहाँकी आसन्न मृत्युका समाचार पाते ही गुजाने बगालमें और मुरादने गुजरातमें अपने-आपको सम्राट् घोषित कर दिया। राजधानी आगरामें दाराने सारे अधिकार अपने हाथमें कर लिये । अब औरगज़ेवने खुला विद्रोह कर दिया और शाहजहाँकी आजाके विरुद्ध भीरजुमलाको वन्दीगृहमें रोक रक्षा। तीनों राजकुमार ससैन्य राज-धानीकी और चल पछे। औरगजेवने मूर्ख मुरादको भूलावा देकर अपनी बार मिला लिया । उउजैनके निकट घरमत नामक स्यानमें १६५८ ई० में दन दीनोंकी देताओंकी समादकी बोरते राजा वदक्तार्विक राठीह जीर क्राविन्त्रानि रोका, मुख हुवा और स्मारी तेना पराधित हुई। प्रव पुत्रने राजन्तीरी ही ब्रांत बॉवर हुई । राठीर राजा वैद्यन क्रीडकर नाव क्या विन्तु बाली बीट रानीकी बलाबा नुनकर धनुका सालता करवेके निर किर अन पर। इन बीचनें प्रद्रवारोंकी तेना अल्याके निकट बहुँच नहीं फिनेने ८ मीक वृर्व तानुवड़नें साराक्षिकोड्डने बनेन्य बनका प्रतिरोप किया। प्रमची मीरके रामपुरा प्राच प्रवेतीयर एमकर सप्त । बारा करवी करा-वी मुनके बारण पराज्ञिन हवा और बानराओं और जान बना। ग्रुप्तन औरनजेनने बालराधर बाळजन कर दिना और पूर्व एवं राजनातीको हम्मान्त काचे निता श्राह्मकारीयो क्रिकेमें हो हीए कर दिवा नहीं १९६४ है में बतनी मृत्यु हुई। मुश्मरको मो जीरनकेवने कनमे बन्दी करके न्याक्रिक्तक पूर्वी क्रीए नर दिया चक्की तीन वर्ष बाद उनका वय बार विशासका । सन्ना पर्रातिक क्षेत्रक सराव्यवस्था और बाप बना सीर बड़ी बराशामिकीन कुनशा क्यरियार एवं कर दिला। बीर्यबोतने स्वयं कार्य पर महामद मुफ्तानती, जिनमें ग्रेमाना क्या किया का सामन बन्दीनहर्ने कन दिना और १६ ६ ई. में बंतनी कुछ हुन्या करा है। वार्त्यके पुत्र मुख्यान विश्वक्रिये नहशासके क्षित्र राजाची वार्य की वी किन्तु धाळके पुत्रने निरमानमान नरके वते बौरंगबेशके क्रिक्ट कर दिया। मुनेबालको त्यानिवरके कृतने और विश्वा नना और कलवाएँ देवर गार बान्य नवा । बाराके क्षेटे पुत्र निवक्षिरविकोक्षको और मुखबन्ने पुत्र वरिक् बक्कानी, को बारनपरक में आम-दान है दिया क्या और स्वय अस्ती एक-क्क पुत्रीके ताल करना क्याप कर दिया गया । यादाव्यक्रीकृता अनक वीका भिना नवा वह बंजाबने भिन्तः शहरुक्तर बच्छ और किर बुजरान वहँगा और दूस रेमा दलम करके अवसंदर्भी और बद्धा। राजकृति लेखे को बाला की बहाबता से निसी । वह पर्श्वित होकर किर बावा और सकेक विपरियों एवं बंबर केवते हुए, बनेक निवस्तवारोंका विकार होते हुए ब्याचीन इतिहास एक छी 410

बन्तत वह पकडा गया। अपनी प्रिय पत्नी नादिरा वेगमकी मृत्युसे वह विक्षिप्त-सा हो गया था। और गजे बने उसकी जितनी वन सकी दुर्गित की और अन्तम उसका वघ बण्या दिया। इस प्रकाण शाहजहाँका राज्यकाल उमके जोवनमें हो ममाप्त हा गया, उमकी मन्तितका बहुमाग भी नष्ट हो गया। वृद्धे मम्राट्ने आगराक किले में अपने प्रिय ताजमहलकी और वृष्टि लगाये हुए हो अत्यन्त दैन्य, अपमान, शोक और सन्तापमें जीवनके पेय दिन विताये, और मृत्युके उपरान्त ताजमहलमें ही मुमताजकी वग्रलमें बह दक्षना दिया गया।

गाहजहाँने ३० वप पर्यन्त शामन किया। यह अत्यन्त धनी और ऐस्वर्यभाली था । जवाहिरात सम्रह् करनेका उसे वडा चाव था । अपने दरवारको शान शीकतको उसन चरम शिखरपर पहुँचा दिया या । कोहेनूर होरा उसके ताजकी गाभा वढाता था और मुप्रिमिद्घ रत्नजटित मयूर-^{सिहामनपर वैठकर} वह दरवार करता था (इम सिहामनको कल्पना एक चैन-कयामें वर्णित विमानसे छी गयी वतायो जाती है)। आगराके क्रिछेके र्क्ड विशाल तहखाने मोने-चौंदो और हीरे-जवाहरातसे पटे पडे थे । अपने चस अतुल वैभव-प्रदर्शनमें चसे वहा थानन्द आता था। म्यापरगकलाका भी वह वडा प्रेमी था और भारी निर्माता था। दिल्लोका लालकिला बिसके दीवानेखासकी छत चौंदोसे मढ़ी थी, दिल्लीकी वि**गाल जामा**-मस्जिद, मुन्दर चौदनोचौक जिसके बोचने दोनो ओर वृक्षोंसे ढकी नहर वहती थी, आगराकी जामामस्जिद, आगराके क़िलेको मोतीमस्जिद, दोवानेखास, सम्मनवुर्ज आदि इमारर्ने और मवसे अधिक विष्वके आश्चयाँ-में परिगणित ताजमहरू इस सम्राट्की अमूल्य कृतियाँ हैं। अपने भवनोंमें सगममेरका उपयाग करनेका उसे वहा चाय था । शिल्प-स्थापत्यको मुगल-^{फलाके} विकासमें उमका महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार चित्रकलाका मी अच्छा विकास हुआ, उसके समयके चित्र अधिक सजीव हैं। उसके प्रथयमें अव्दुलहमोद और खफीखाने अपने इतिहास-ग्रन्थ भी लिखे।

कारानी-मारिक्को पुरस्त करक बार्ज या तिरुत्त याहानहाँ स्वयं व्यक्ति सेरिक्टर, स्वर्धि क्षांत्रिक्त स्वर्धि स्वर्धि क्षांत्रिक्त स्वर्धि क्षांत्रिक्त स्वर्धि क्षांत्रिक्त स्वर्धि क्षांत्रिक्त क्षांत्रिक क्षांत्रिक्त क्षांत्रिक क्षांत्रि

न्याबारराज्य बननेना प्रमान करना वा बीर क्रवच प्रशासकारियोंको की

क्षि बोली भाना हो। क्या पण बेना । बहु क्षमक काबीनर दृष्टि एकता था और निर्देश मन केते या सन्दाय करते पाने वाले तो क्यों समा नहीं करता ना । राजपानीके कोलपालका कियमा तथा इक्षेत्रतरावकी परमार्थ इन बार्ड करावरण है। काका प्रयास समी प्रारम्बने बाकार्थ मा तरमध्य प्रमुख्याची हुना । यह सन्दो न्यूनीके मन्त्रियोजे सुर्वाचिक जेल्य माना बाता है। चोर-बार्ज़ीना बिरुबीर बनके बनके नहें निरीय पूर्व बना दिने कर्ज में । तनापि स्थानीय ब्यानक प्रश्न-नीशन करते ही में । वानान्ता' बना यान्त करूड और तथी थी स्वत्यार और बडोन-कर्ने मी कलत में किन्तु सकतर बीर सहीदीरक बनवची अरेका प्रनावी बड़ा इक करका हो थी । नवनि बाह्यहोनी मां और दानी क्षेत्री राजपातिको भी क्षत्रीर क्रमके स्वयानमें नवन-वृधिनाई कराता वार्तिक नद्वरता बीर दिन्दु-विदेश माने पूर्वजीकी मरेका करी बविक या । बनके बानग-कार्क्स कर्ते व्यक्ति वैशे वानिक स्थापना नहीं अ वदी थी। बचने वर्ग्यर में गुरुपने भीर मधीन वर्णिरोक्ति विश्वविद्या की प्रतिकृत्य कराया । इत्त्यानि मरिक्ति सन्द वर्गों और वक्तीमें बड़े बोई बॉच न को बता किसी

कुतकार्तितर वर्ष-पुर था विद्वालका सक्ते हारा सम्बानित होना नहीं चाना

212

बारबीय इक्सिन एक प्रीय

जाता। वैसे राज्यके अनेक अघोन राजपूत राजाओं, सामन्त सरदारों, हिन्दू एव जैन पदाधिकारियों, सेठों और व्यापारियों आदिको सहन करना ही पडता था। उनको तथा बहुमस्यक प्रजाको सन्तुष्ट रखनेके छिए सामा यतया अपने पूर्वजो द्वारा प्रचलित सिंहण्णु और उदार नीतिको भो वह बरतता हो था। जब वह अपने पिताके समयमें हो गुजरातका सूबेदार था तो उसने वहकि जैनोको प्रार्थनापर जीवहिंसा निषेषक कई फरमान निकाले षे, चाहे उनके लिए वहाँके घनो सेठोंसे राजकोपके लिए विपुल घन लेकर ही वैसा किया हो । कहा जाता है कि आगराके कवि बनारसीदास (१५८६-१६४३ ई०) शाहजहाँके मुसाहब थे और उसवे साथ बहुधा पातरज स्रेला करते ये । अपने अन्तिम वर्षीमें जब उनको चित्तवृत्ति राज-दरबारसे विरक्त हुई ता सम्राट्ने उन्हें दग्वारमें उपस्थित न होनेकी सहर्प अनुमित दे दी । बनारसीदास न केवल श्रेष्ट मित, प्रकाण्ड विद्वान् एयं अत्यन्त घाभिक थे, वे एक मानवताबादी विचारक भा थे। उनके नेतृत्वमें आगरामें दिसयों उच्चकाटिक विद्वानोकी विद्वद्गोप्टी होती थी। पाण्डे स्पचन्द, चतुभुज वैरागी, भगवतीदास, धर्मदास, कुँवरपाल, जगजीवन आदि उन विद्वानोंमें उल्लेखनीय हैं। टिल्ली, लाहीर, मुल्लान आदि विभिन्न प्रमुख नगरोंके विद्वानोंसे इस सत्सगका सम्पर्भ बना रहता था । वाहरके मो अनेक विद्वान् समय-समयपर वहाँ आते रहते थे। महाकवि तुलसीदास कोर सन्तकवि सुन्दरदासके साथ भी वनारसीदासकी साहित्यिक मेथी थी। इसी समय शान्तिदास नामके एक नग्नजैनमुनिका भी आगरेमें आना पाया जाता है। वैसे उत्तर भारतमें नग्न जैनमुनि उस कालमें विरले ही थे, चनका स्यान दिगम्बर भट्टारको, यहाचारियो और शुल्लकोने ले लिया था। इसी धासनकालमें स्वय वनारसीदासफ अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थोंके अतिरियत चनके विभिन्न साधियो और कथि सालिवाहन, पाण्डे हरिकृष्ण. मट्टारक जगभूपण, पाण्डे हेमराज, यति लूणसागर, पृथ्वीपाल, वीरदास, कवि सद्यार, मनोहरलाल, खरगसेन, रायचन्द्र आदि अनेक दवेताम्बर-

दिस्तार प्रमुख्यें, बर्डियों स्थानियों और बुद्ध विद्यानी सामल्यें पितिय प्रदेशीयें पंत्रूव का दिलों एक एवं नवने सके वर्डिय कर्यों कर विदेश कर विदेश कर विदेश कर विद्यान के तो। दिल्कीन कर विदेश कर विद्यान के तो। दिल्कीन कर विद्यान के ता कि दिल्कीन कर विदेश कर विद्यान के ता कि दिल्कीन कर विद्यान कर व

इयमें नर्गेड नहीं कि मीरनवेंस चीर-मीर कुडल हैनलाक्क मोडी

राक्तीं कर पूर्व मेरिया पूर्व वर्षण बार मानदास और कियांची मान्य प्रतान मानदास मिल धाँनायांची मानदा धाँनायांची मानदा धाँनायांची मानदा कर मानदा धाँनायांची की स्वाप्त कर मानदा धाँनायांची की स्वाप्त कर मानदा धाँनायांची की साथ प्रतान मानदा धाँनायांची कर मानदा धाँनायांची धाँनायां

415

यार्त्ताच इतिहास *प्*त धी

गया है तथा ईरानियों और शियाओंका प्रभाव भी वहुत यह गया है, और इन सबके कारण इस्लामघर्म और मुसलमानोकी सत्ता खतरेमें पढ गमी ह, ये सब विरोधी प्रभाव मिलकर शनै-शनै उसे हडप लेंगे, अतएव इस्लाम बोर मुसलमानोंको रक्षा उसका प्रथम ध्येय है, जो अपनी शक्तिका ययाशक्य अधिक से अधिक विस्तार करने, मुसलमानेतर धर्मी और जातियो-का अत्याचारपूर्वक दमन करने और इस्लामको प्रभावना एव प्रसार करनेसे ही सिद्ध होगा। उसकी दृष्टिमें साध्यका महत्त्व था, साधनोंके अीचित्यका कोई मूल्य न था। राज्य प्राप्त करनेके प्रयत्नमे ही उसने अपनी यह प्रवृत्ति चरितार्थं कर दो थी। अपनी अभीष्ट प्राप्तिके लिए स्वय अपने जिता और राजाका बन्दा करना, अपने सगे-सम्बाधियोका क्रूरतासे वष करना, विराधियोंको घोर यन्त्रणाएँ दकर नष्ट कर डालना, विश्वास-पात, ढाग, छल कपटका भो अवसर पहनेपर आश्रय लेनेसे न चूकना, वादि उसके काय प्रारम्भसे ही सर्व-विदित थे और उसको जीवन-नीति एव शासन-नीतिके परिचायक थे। किसी भी व्यक्तिका विश्वास करना वह

लाद उसके काय प्रारम्भसे ही सर्व-विदित ये और उसको जीवन-नीति एव शासन-नीतिके परिचायक थे। किसी भी व्यक्तिका विश्वास करना वह जानता ही न था, विशेषकर घटेसे वटे हिन्दू सरदारोंका भी वह सिनक विश्वास नहीं करता था और उनको अपमानित करनेके किसी अवसरको तो चूकता ही न था। अकवरका उदार, सिह्ण्णु, समदर्शी एव विवेक और बुद्धिमत्तापूर्ण नीतिको प्रतिक्रिया जहाँगीरके समयस ही होने छगी थी, किन्तु बहुत हलके रूपमें। शाहजहाँके समयमें उसने और अधिक वल पकडा विन्तु औरगजेवने तो उसे चरम शिखरपर पहुँचा दिया। उसने यथा-सम्भव अकघरकी नीतिको पूर्णतया उछटनेका प्रयत्न किया। फल्स्वरूप अन्यरभी नीतिके कारण जिस साम्राज्य-शिक्तका इतना सुदृढ़ निर्माण एव अद्भुत विकास हुआ था कि वह बावजूद इन प्रतिक्रियाओ, मूर्खताओ और अय अनेक दोषा एव मूर्लोके हेढ़-सी वर्ष पयन्त सर्वप्रकार अक्षुण्ण वने रहो और उमके आगे भा और डेढ-सी वर्ष पर्यन्त सर्व-स्थायित्वकी रक्ष कर सकी, औरगजेबकी नीतिके कारण वह साम्राज्य शिवत उसके जीवन बावनें ही पुनवर कर्तर हो नवी. बीर चनको मृत्युके चरशन्त सारान

कारवार्थि काव्या पर १६८ है (२००६ है करवी कुल करें यह बीवन कारवर्ष पर बीर यूनी कारवार्थि कुरावर्थ काव्या पर । विद्याल करव करते हैं क्यों कार्युवार हुए केक्स्यू की दिन्तें कुरावर करवार ८ राज्याची का बक्तानीय वालिक रहे हैं महतुर कह करवा काराज्यों कितिय कार्यों काल करवा पूर हो क्या यह सी १६६०-६१ है में बात अर्थाय हो कहा अर्थ्या कार्युवार करियोग्य कार्यों पर्यों कर काम कार्याविक है है है है है से से बातों में सी कार्यों कार्यों कार्यों कर कार्युवार करवार कीर्या कार्युवार कीर्याल सी कार्यों कार्यों कार्यों कर कार्युवार करवार कीर्या है कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता की की की किस्ता कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता है कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कीरवार है कर इस्ता कर इस्ता कर इस्ता कीरवार है कर इ

प्रत्याचीय रहिष्क्रप्रकारके कममानुवार हो इब मान्केला वी नोई गरियाँ य हुवा स्थानीय सावक वन करीतो प्रशाहे किर श्री वतक कुछे पै

सीरंपनेबक्त राज्यकाण यो मानीने विवस्त क्रिया का क्या है. १६५८ के १६८१ के तम वह बतारमें ही रहा और मुख्याना गीनी

बोर बाली की बच्चे थी।

अपने प्रतिदृन्दिगोंके विरुद्ध औरगजेवकी सफलतामें उसका प्रधान
सहायक मीरजुमला रहा था, किन्नु इसी कारण वह अत्यन्त धानित शालों
मी हो गया था। अन ओरगजेवने उसे मुदूर वगालका सुवेदार वनाया
और शुजाके अन्त करने एवं आसामका दमन वरनेका भार भींपा। णुजाको तो सपरिवार भीरजुमलाके प्रयत्नांसे नाश हो गया किन्तु आसामके
युद्धमें १६६३ ई० में वह स्थय भी मारा गया और औरगजेवका एक कण्टक
दूर हुआ। उसके स्थानपर उसने अपने मामा धाइस्ताखाँको नियुक्त
किया जो लगभग ३० वप तक उस पदपर रहा। १६६० ई० में शाइस्ताखाँको शिवाजीका दमन करनेके लिए दक्षिण भेजा गया था, किन्तु पूनामें
उसको उपहासास्यद असफलताके कारण वहाँस वुलाकर फिर वगाल मेज
दिया गया।

दक्षिणमें १६५७ से १६६० ई० पर्यन्त मुग़लोंकी बोरसे प्राय शान्सि रही थो जिसका लाभ उठाकर बीर शिवाजीने बीजापुर-नरेशकी हानि कर-करके अपना राज्य जमाना प्रारम्म कर दिया था। शाइस्ताखाँके उपरान्त राजा जयसिंह और शहजादा मुझजज्म शिवाजीके विरुद्ध मेजे गये। जय-^{सिहके} परामर्शवर १६६५ ई० में शिवाजी आगरे भी आया किन्तु सम्राट्-को विश्वासघासी नीतिका आमास पाकर निकल भागा। १६६७ ई० में बोरगजेवने राज्यके महान् स्तम्भ जयपुर-नरेश राजा जयसिहको सम्मवतया विधीके पुत्र कीरतिसहसे विष दिलवाकर मरवा डाला। जयसिंहके चपरान्त पात्रबादेके सहायकके रूपमें जोधपुर-नरेश जसवन्तसिंहको शिवाजीके विरुद्ध भेजा गया। यह भी असफल रहा, बल्कि शहजादेने स्वय घूम लेकर सम्राट-से शिवाजीको राजाको पदयो मी दिलया दो। शिवाजीको शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गयी, साम्राज्यके सूरत, सानदेश आदि प्रदेशोको भी उसने कई बार सूटा । साम्राज्यको ग्रामन-स्यवस्या इतनी गिथिल हो चुकी थी कि सम्राट् शिवाजीका कुछ न विगाह सका। १६७४ ई० में शिवाजीने अपना राज्या-मिपेक करके स्वतः त्र राज्य स्थापित कर लिया।

१६६६ ई. में मनुदा विकेषे बोकुक बाटके नैतृत्वर्ग मार्टीने वर्षकर शिक्ष कर रिया वा भीर नहाँके क्रीन्यारको नार रिया वा । रोली बीर

के महनो व्यक्तिकोंको हरपाके क्षत्रान्त काँठनाहित विश्लोक्षक बन्त हुन्य । १६८१ है में बाद जिए बहक बढ़े और दिए बाहो देनाने करना रान किया . १६८८ ई. में बनवा विद्रोह एक बार बिर महवा और बनाएंग्रे मृतु वर्णन पासू रहा । इसी बीच १६९१ ई में बाहले विकलाने मफबरके नक्रवरको सूरा बोर चन बजादुके धननो ना अपने सिराम कर विदाये जन्म कर विवा, देखा बदा माता 🕻 ।

१६ २ ई वे नारमीक्ये सर्व्यामधीने बनानक नित्रोह निर्मा । प्रश पत्नमें सनेक कोटी शादिनकि कोन में प्राष्ट्री क्षेत्रा बारी करि कडानर क्षत्र नित्रीहणर काम् कर गाना । अन्ते हामधे क्रुरानन्धे कामग्रीक सामीव काने बरदारीको देकर भी औरंपश्च भारतो स्रति कम न कर सर्ग ! इडी श्रमपंत्र करनन श्रोमान्त लोघक नदान क्रमीकॉर्न निर्मेष ^{कर} निया। आहे देनाका एक वसा मान दय वर्षी कर वहाँ करवा रहा । धरा

बक्रमार्थिह तथा अल्ड बरेक देनारविश्वीरो क्षेत्रा पत्रा किन्तु वर्ष विकर रहे। १६७४ ई में बामाद स्वयं वहीं नवा और क्रमोर्कोंना दवन विका-किन्तु क्रानित १६७८ है। तक ही बाकर स्वानित हो बका । १६७५ है है बार्रवर्वेचने विक्वांपर भरनाचार फिना बोर वृद्ध सेक्वाइन्युरका वय करवा दिया । इन मुक्ते उक्की दिन्तु विदेशा-नीतिका विदेश किया या और वर्षे व्यक्तिर मुक्तमान क्षमा मस्यासार कर दिसा या । १६७९ व में राजस्थानके राजस्थाने विशेष कर दिया। सारवाने नरेव करनगरिवृत्ये औरनवेदने बह्नवानित्यालकं बह्नवानीका दक्त करने वैन दिना था। जिल्ह् वर्षणे राजाको मात्रकात बहानका वही सेजी और १६७८ (ने वयस्त्र तमार्क हो इकारेनर इक राज्यका मानान्त हैं।

नना । जनके दो पूर्वी और राजीको बजार्ज़ काहीरमें रोज रखा । सन्दी इच्छा राज्युवार्रेको बुरस्ताल स्था आस्त्रेको यो । विज्यु स्कॉनकरः दीर बारतीय इतिहास । एक ग्री

22

हुर्गादासके प्रयस्न कौर कौदासमें रानी स्रोर राजपुत्र सुरक्षित मारवाष्ट पहुँच गये। औरगजेब बहुत शुन्ध हुआ। और उसने उनके पकटनेके लिए सेना मेजो । मारवारके सेनापति दुर्गादास राठौए, उसक माई मुकुन्ययास-सीची तया अय सरदार अपने राजा और राज्यकी रहाकि लिए कटिवड हो गये। उहान अन्य राजपूत राज्योंने भी सहायता मांगी। समय ऐसाया कि ओरगजेबको घामिक नीति और राजपृत विरोधी चालाम समस्त नरेरा ससन्तुष्ट हो उठे थे। राजाओका अव पहले-जैमी आन्तरिक स्वतन्त्रता नहीं रही थी, अ)रगजेय उनके राज्योका भी सीधे के द्वसे हो षासन करनेका इच्छुक था। जयमिह और जसय तसिंह-जैसे साम्राज्यके प्रयान स्तम्भ और धिवत-सम्पन्न एव प्रभावधाली नरेशींका एक-एक करके उसने अन्त परवा दिया था। जसवन्तसिंहकी मृत्युकावह पुरा लाभ च्टाना चाहता या और मारवाडपर पूर्ण अधिकार करना चाहता था वयोंकि वह देश मालवा और तदनन्तर दक्षिणन मार्गके बीचमें पडता था। चेसको नीयत और इरादे छिपे नहीं थे। अत समस्त राजस्थान स्वातन्त्रय-प्राप्तिक लिए उठ वड़ा हुआ और स्वय मेवाए नरेश राणा राजसिंहने युदका नेतृत्व ग्रहण किया। श्रीरंगजेव जिस मात्र जाघपुरक रामात्रिहीन राठौर सरदारोंका बिद्रोह समझता था उसन एकाएक जयपुरको छाड प्राय सम्पूर्ण राजस्यान-द्वारा घोषित भीषण युद्धका म्प्प ले लिया । सम्राद्ने अपनो सारी सै यदाक्ति केद्रित करक अजमेरमें टेरा डाला और स्वय युदका समालन किया । किन्तु इसी बीचमें उसका पृत्र राजकुमार अक्षर राजपूर्तींसे मिल गया । इससे सम्राट् अत्मन्त चिन्तित हो उठा । अपने छल-भौराछसे उसने राजपूरोको विवदा कर दिया कि वे शहकादेको अपने आश्रयसे निकाल दें। लाचार अक्बर दक्षिणकी ओर भाग गया। इधर वीर राजपूत युद्धोमें सम्राट्की भारी क्षति कर रहे थे। अन्तत १६८१ ई० में औरगजेबने राणाके तथा राजपूतीके साथ सन्धिकर छी । राजपूत राज्यों-को जिज्ञासे भी मुक्त कर दिया, उनकी सत्ता भी पूर्वसत् स्वीकार कर

यों और बाब मामानम भी भी प्रवर्श जान औ। तर्निव प्रवर्श का बारावर्शिश बागब कर थी था कि रावशुमीनों देखानियों कुरेन्सार्थ बानायां और बाने पूच बागान कुरीने भी शामानम बारा हैं . गिय मा नि वह बागब रिजारे का बहुमाना बागायां का मा बारा में में नारा या बहुबर रिजारों और बाग बारा मा बारा मा बारा में क्लार त्वाव विशेष करनेरी बाजायां मा बीर बारावर्श होंगे रावेचे राजके मुश्ले के बोरारी महाबार विश्वेशों भी काम बीं भी का उसने प्राथमको रावशुमी नार बार्जिंग कर में वह में विश्वेश वैसी प्राथमित करने का बात का स्थान मा बीर बारावर्शियां सिंगे क्लार्श करने का बारावर्श स्थान का स्थान करने बाराव वार्श करने का बीर बार पर में किल्यु वेश करवार की मा बारावर्शियों की बार पर मा स्थान रही हैं है बोर्श्वेश की साथ बीर बारावर्शियों की बार पर मा कर रेटर हैं है है बोर्श्वेश की साथ विश्वेश के बारावर्शियों की बार पर महर्ग हैं हमा कर बीर पर।

क्षाने प्रदेश पुरोग निर्देश को पहिला और कुम्बना पार्टेश बाज कर्मम कार गोरियों पार्ट्रमा क्रमा है वा प्रमुख्य करार है। क्षाने मान मिट १८८ में निर्देश पार्ट्रमा करार हो। क्षाने क्षान मिट १८८ में निर्देश पार्ट्रमा पुना पुनी के कार नामें हैं। यह कर्मा क्षान करा की है। इस मिट क्षान करार के प्रमुख्य प्रदेश में क्षान पर्देश में क्षान पर्देश की क्षान करार की स्थान करार के स्थान करार किया है। इस की पार्ट्स में मिट क्षान करार के स्थान करार की स्थान करार की पार्ट्स में मिट क्षान करार की पार्ट्स में मिट करार की पार्ट्स में मिट करार की पार्ट्स में मिट करार की स्थान करार करार की स्थान की स्था किया तो मुअरचमको मुक्त करके काबुलका सूबेदार वनाकर अकवरके विरुद्ध मेज दिया । अकवर पराजित होकर वापस लौट गया । १६८९ ई० में बौरगजेबने राजा शम्भानोको पराजित करके उसे उसके ब्राह्मण प्रधान मन्त्रो सिह्त बन्दो कर लिया और तदनन्तर उसका वध करवा दिया। शम्भाजीके वालक पुत्र साहुको उसने अपने महलोमें ला रखा और वहीं उसे पलवाया। अब औरगजेव प्राय सम्पूर्ण मारतका एकच्छत्र सम्राट्या, किन्तु इसी समय समस्त मराठा जाति उसके विरुद्ध भडक चठो। अदतक केवल मराठा राजे ही उसके शत्रु ये और उन्हींसे उसका युद्ध या किन्तु अब समस्त दक्षिणापयकी जनता उसकी विराधी थी। धम्माधीके माई राजारामने सुदूर जिजीको अपना के द्र वनाकर इस जातीय विद्रोहका नेतृत्व किया और उसके पश्चात् उसको वीर पत्नी तारावार्ड युद्ध संचालित करती रही । औरगजेबने मराठोंके इस देशन्यायी विद्रोहको ^{कुचलनेका} भरसक प्रयत्न किया । उसके मन्त्रियोंने उसे दिल्ली वापस लौट जानेकी सलाह दी, किन्तु वह मराठोको िन रोप किये विना दक्षिणसे टलनको सैयार न हुआ। अन्तत दक्षिणने ही उसका अन्त कर दिया। सन् १७०७ ई० में विकल प्रयत्न और निराशाग्रस्त वृद्ध सम्राट् औरगजेव बालमगोरकी औरगावादमें मृत्यु हुई और वही वह दफ़ना दिया गया। ः उसके साय ही महान् मुगल साम्राज्यकी महत्ताका भी अन्त हो गया।

श्रीराजेवको विफलता और उसके राज्यकालके उपरोक्त लाट, सिल, वुन्देले, सतनामी, राजपून, मराठा आदि युद्धो एव विद्रोहोका प्रधान कारण उसकी अपनी राजनीति थो। उसकी सकीर्ण धर्मा बता, अस्यत्व अमहिष्णु एव अनुदार धार्मिक नीति एवं मुसलमानेतर जाति-विरोधी राजनीति उसकी अपनी असफलताओ एवं उसके उपरान्त महान् मुगल साम्राज्यके द्वृत पतनके प्रधान कारण थे। वह भारतमें मुगल-साम्राज्यको विश्वद्ध अरधी सस्कृतिपर आधारित एव इस्लामके नियमोक अनुकूल एक पक्का मुसलमानी राज्य बना देना चाहता था। प्रारम्भमें ही यह ध्येय एव तदनुसारी

वारिक प्रमाने वारच रक्तान बीट मुक्कानिक निर्मा करि कार्य है । देने बनेक हिन्दू करके रित्य पाने थे । लिल्लू कर्ड क्यान मीट पार्थित । प्रमान कर्म के कर्म क्रिन पान पानु है थे । इसी मोम्बर्स करने मुक्का मोमिरिका एक मार्थित मितुका क्रिया कि वे बनला पुत्र कर्माने मोसिका एक मार्थित मितुका क्रिया कि वे बनला पुत्र कर्माने पार्थित क्यानिक क्यानिक कर्म क्यानिक क्या

निरीमी नहीं का कि के जिल्लू है करन इसकिए कि क्याची तता और

राज्योज रिक्टींगर कमतेचे तथा बनुष्य वाट्र बाह्र्य साझ्डीवरीमी स्विण् बारोपर विरोध क्या दिया । वंगीत बोर गुरुपर प्रतिक्ष्य क्या दिया विरो बोर मुर्गिकवर्गी हुटीरवाहित किया और शेरपुता व गोरोसे वार्वारीर निवरीरा क्या निर्दिक किया । मुक्किक बोरासरिता बोरामी क्या

कारबीय हरियान पुत्र पति

राज्यकरसे मुक्त कर दिया गया। जो हिन्दू अपना धर्म-परित्याग करके मुसलमान वन जाते उन्हें पुरस्कृत करने और राज्यकी नौकरी देनेकी ^{ब्यवस्}याको । हिन्दुबोंको राज्यसेवासे वचित कर दिया गया और एक प्ररमान निकाला कि महकुमें-मालमें यथासम्भव केवल मुसलमानोंकी ही नियुक्ति को जाये। महाराज जयसिंह और जसवन्तसिंह-जैसे शिक्तशाली हिन्दू नरदारोंका अन्त करना घुरू कर दिया। सभी मुसलमानेतरोंपर जिज्ञा कर लगा दिया। हिन्दुओं कधार्मिक मेले बन्द कर दिये और उनके होली, दिवाली आदि त्यौहारोका खुले रूपमें मनाया जाना वन्द कर दिया। नाट, सिल, सतनामी, राजपूत, मराठे आदि हिन्दुओंने जिम धर्गने भी जहाँ विद्रोह किया उन्हें निर्दयतापूर्वक कुचल दिया गया और इन विद्रोहोको कूर घामिक अत्याचाराका अवसर बनाया गया। हिन्दुओंके समस्त मन्दिरो, विद्यालयों एव अन्य वर्मायतनो और सास्कृतिक सस्यानोंको नष्ट करनेके लिए एक आम आज्ञा जारी कर दी गयी। हिन्दुओं के तीग्र विरोवपर धनारस फ़रमान-द्वारा इस आज्ञाम यह संशोधन कर दिया गया कि पुराने मन्दिरोंको रहने दिया जाये किन्तु नवीन मन्दिर कोई न बनाया जाये और जो वन रहा हो छसे गिरा दिया जाये। राजा जयसिंह एव जसवन्तसिंहकी मृत्युके उपरान्त यह सशोधन फिर बापस छे लिया गया और अनेक प्राचीन मध्य मन्दिरोंका विनाश करा दिया गया। जहाँगीरके समयमें वीरसिंह वुन्देले-द्वारा ३३ लाखकी लागतमे निर्मित मथुराके अप्रतिम केशवदेव मन्दिरका, काशीके प्राचीन विश्वनाथ मन्दिरका तथा अयोध्या आदि अन्य अनेक स्यानोंके प्रसिद्ध मन्दिरोका घ्वस करने उसने उनके स्यानमें उन्हीं स्यलोंपर मसजिद निर्माण करा दीं। हिन्दू आदिकोंके घमंप्रचार, घामिक शिक्षा और उन्मुक्त धर्मपालनपर कडे प्रतिबंध लगा दिये। सस्कृत और हिन्दी साहित्यका तो प्रश्न ही मया, उसने फ़ारसी साहित्यके सुजनको भी हतोत्साहित किया, यहाँतक कि इतिहास-प्रयोंके निर्माणपर भी कहा प्रतिबाध लगा दिया। खक्कीखी आदिके छिपाकर लिखे गये इतिहास.

वनियर देशनियर अनुषी अदेशी बाहि सुरेशिय वाहिबोर्क वृद्याला सर्व भौरेंबजेंदके भारते कर राक्षा सारत करकर सामन सम्मानीन र्रातराक देक-दया जोर नार्वजनिक सक्तरोक्चर प्रकास दानते हैं । बरकार बीर वर्र वारियाका बाहरवरका राज-मध्य तेमामे सम्यानमहीका सर्वकारी-क्यमें अञ्चलार जी दिनानिया दिश्यानयात और दशकेंगरता वर्ष मार्विश-प्रदश्या वर्षे निद्धान्तोची क्षेत्रा आदि मन्य कार्य कार्यान्त्रके च्याने नामक हुए। निक्योंके मोद्रिक नंगहन माटोके परिपर्वकी नारपापके राह्मेशाची जनरपती अवतता और नराह्में बारपरंता नेप मीरमबेबची इच पुनीर्राको ही है। निन्दो-नादिश्यके बहारांव केवाच विहासी देश जूनच अतिराव सर्विर इसी कामग्रे हुए। रीतिकामीम हिन्दू कवियोंने आग- श्रृंबार रहवा मोर्ड हो प्रचाहित दिया और राप्ता-र्युद्धेको विचावितान बुक्तेमें बहानका थै। इक्षके विराधित सेवा असोनीचाम आनन्तमान सक्षोत्रियस विनय निवर सहतीयना देश ब्रह्मचाधी अवनगण विशेषीयकात बोदराज वादि वैन कृषियेते राज्य विरायपूर्व मान्यात्मक विवासेशा बीवम विवा । वर्षे हारा वानिक वन्तीके बांतरिका अंबान निर्माणीय धकुन वरीका नामृद्रिक धारमः राजदरीका, बचनबीय काळ बादि महरणपूर्व बर्दिकर बान भी एने नमें । बानस निवादी नैसा सरीतीस्तव (१९७४-९८ ई.) नै बनमन ६७ रफनाएँ थीं को बनके दिखासकाय बक्रादिलावर्ने संस्थित हुई । बाजार्व नदीवितय (१६२६-८८ ई) भारतवादि विविध विवर्धी-के प्रभागत निवास में दिल्दी जानाके क्वारिताको बहिरीका बीहरी मानाने क्योंने क्याम ५ - डोडे-वर्ड प्रकास का राज रचे बाटने बाडे है। क्षेत्रुरके बरसार अस्त्रजाकि सैन श्रीयान क्षरायनके किए क्यांने-चलने बल्धर्पेर नामक धीनरिष्यक ब्राचीन बन्दरा बालानुपार एवं म्बास्या को यो । इतिकन्तरे विस्तर्गय - सुरेत्वनुषय आदि स्ट्रारक बाबरेंके निकट ही स्ववर्षका अंश्वाम और वाहित्वका ग्रीत्वाहन कर धे बालांच इतिहास एवं धी 444

थे। साहिजारपुर-निवासी कवि विनोदीलाउने जिस्होंने कई प्रस्थोकी रचना को ह, अपने श्रोपालचरिय (१६९० ई०) वे अन्तर्मे लिया है कि 'उस समय औरगदाह बलोका राज्य था जिनने अपन पिताको धन्दी वनाकर राज्य पाया था और चक्रवर्ती के समात समुद्रमे समुद्र पर्यन्त अपने राज्यका विस्तार गर लिया था। काई विशास नवीन मन्दिर जैनाका उस कालमें नहीं बना, युष्ठ प्राचीन मन्दिर तोडें भी गर्मे होंगे कि तु किसी प्रमिद्ध मन्दिरका व्यम या तोघरा विनास नहीं रिया गया प्रतीत होता। नागरा और दिल्लोमें किलांग निकट ही उस गालक पूर्वके वने हुए विशाल जैनमन्दिर सुरक्षित एव विद्यमान रहे । दिल्लोक शाहजहाँकालोन उद् मिर्दिरमें दोना समय पूजन आरती आदिक अवसरपर वाद्य बजते थे। बौरगज़ेवने उनका निर्पेष किया। कहा जाता है कि बाजे किर भी बनते रहे बोर ओरगजेवने अपनी निर्पेषाज्ञा वापम ले ली । अहमदाबादके जीहरी गानिदासको, जो धहजादे मुरादका पृपापात्र रह चुगा था, भीरगजेवने आगरे वुसाकर रखा और उसने अपना दरवारी निमुक्त किया। कन्नडी मापाको एक प्राचीन विखदावलोके अनुसार औरंगजेबने कर्णाटकक एक दिगम्बर जैनाचार्यका भी आदर-सत्कार किया था।

राजस्थानमें तो जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, योकानेर, वूँदो, जैसलमेर आदि प्राय सभी राज्योंमें हिन्दुलोंके साथ-साथ जैनो भी पर्याच्य उन्नता- यस्यामें थे। मेवाइके राजा राजिसहका प्रधान दोवान सपयो दयालदास या। कर्नल टाइके कथनानुसार 'यह अत्यन्त साहसी और चतुर था, मुगलों- के अत्याचारोका अदला लेनेकी प्यास उसके हृदयमें सदा प्रज्वलित रहती यी। उसने तेज धृहसवार सेना साथ लेकर नर्मदासे वेतदा सक फैले हुए मुगलोंके मालवा प्रात्मको लूटा, सारगपुर, सरोज, देवास, माण्डू, उज्जैन, चन्देरी आदि नगरोको विजय किया, किसी मुसलमान शत्रुको झमा नहीं किया तथा काली-मुललां और उनके धमेग्रन्य क्रुरानको मो न वख्या। उसकी प्रचण्ड मुजाजोंके सम्मुख कोई धम्युनहीं टिकता था। लूटका यह

निपुत्र थन कावर चवने ज्यने स्वामी धनाको अल्ब किया। धरमार धनदुनार वर्ताबङ्घे बाव केवर विश्वीतके निवट बहुवारे बाहनको व्यप्ते तेनको नराजित किया चलस्पका आजनको चलकर रचपानीरमें घरण केमी नहीं । ये बहनाएँ बीरवरेवके सम्बद्ध नुस्त (१९७५-८१ () वी हैं। दराष्ट्राप्ट प्रमाना को गा। जबने 'सजस्त्रनवरी पासके निवह परपार मारियानका एक निकेनुका स्पेक्षपर्यस्का विद्याण मन्दिर को बननावा का १६९६ ई में महाशाना राजिल्ला इक अरबान आये किया वा विवर्ष आप राज्यके वस हजार बाजाके बरधारी सन्दिमों और परेनी-को बाज्य से बच्चे को कि शाबील बावके वीवीले व्यक्ति वीर स्थानीकी को यह अभिकार निका हुआ है कि कोई मनुष्य अवकी हरके चीदार निवी जापीका नव व करे, वह जनका नुस्ता हुई है और नान्य किया कार्य । वो जोव नर ना जारा वस होनेके किन इनके स्वामीके निकटी के नाम बाता है यह अनर हो नाता है, क्षत्रण अब नहीं दिया का क्षत्रण। वीतिमंत्रि वरावरेमें बरन केनेवार दियो राज्योगी नुहेरे मा कार्यपुरि भागे हुए और संश्रापोणी की धामकर्तनारी बर्डी न नवड़ बंधने । प्राप्त में गूँची करामाची मुट्टी समझे निव्ह बान की हुई मूर्ति रामा वर्षीनी विवनल रुगके ब्रह्मकर बादि गुवरम् श्राचम रहेंचे । यह ब्रह्मल जैन सर्वे मानको दिया नवा निन्हें चान ही बहुए-का जुनियान मी विका नवा । जोवपुरके नहाराज जनवनानिह राधीको सेन बातना नहतीत सैक्कीको भक्ता दोराल बनामा ना । वैननी कुचक दासक बोर बोर नोजा होनेडे नाय-बाब महानु इतिहासकार वी व्या ४ वन्ते १६५६-६५ ई के बीप राजन्यानके बस्पे प्रविद्ध प्रावानिक हुई निवास इतिहास बन्द 'स्पात की रवता को । यह मुतानेक्को राजपुतानेका अनुवाहका बहुआता है और क्षमध्ये स्थात क्षत्र वैपक्षे माहने-स्वत्रत्ता । वैस्त्वीका क्षम क्षत्र महर्व वैक्ति हालिक बेब्द है। बैनबीका बार्ड बेड्सा कुन्दरस्थ नहाराज्या वार्वेड देलेंडरों ना और पुत्र नीरकरतनी क्षत्रके बाब बोर्रगर्वेडके दिस्त कार्येडके माराजेन इतिहास पुरु हरि 43

युद्धमें घायल हुआ था। रघुनाथ मण्डारी जमवन्तिसिह पुत्र महाराज अजीतिसिह (१६८०-१७२५ ई०) का प्रधान दीवान था। जैसलमेर राज्य- में एक विशाल जैन ग्रन्थ-भण्डार था। वीकानेर-नग्शे राजा अनूपिसिह जिनचन्द्र सुरिको गुष्वत् मानता था। महागाज जर्यसिह के समयसे हो आमेंग राज्यकी नवीन राजधानी जयपुर जैनोका एक महस्वपूर्ण केन्द्र बनना प्रारम्भ हा गयी थी। वुन्देलखण्डमें ओडछाका वुन्देलानरेश वीरवर छत्रमाल भी जैनधमेंके प्रति अति उदार और महिष्णु था। जैन मन्दिरों एव वीर्षोंके सरक्षण, उन्हें दानादि एव प्रश्रय देनेमें वह तत्पर रहता था। १६५९ ई० के, जेरठके चन्द्रप्रम चैत्यालयमें वस्त्रपर लिखे गये, एक सिवन्न प्रमित्नि-पत्रसे ज्ञात होता है कि उस कालमें जैनी वुन्देलखण्डके राज्योमें प्रतिष्ठित थे और निविद्य धर्मपालन करते थे।

मराठोंका उत्कर्ष १७वीं शती ई० के उत्तरार्धकी एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है और मुगल-साम्राज्यके पतनका सर्व-प्रधान कारण। दक्षिणापयका पिवसी घाटकी पहाडियोंसे निर्मित वह उत्तर पिह्नमी भाग जो प्राचीनकालमें रिट्ठकों और तदनन्तर राष्ट्रकूटोंका केन्द्र रहा या और पूर्व-मध्यकालमें जिमपर देविगिरिक यादयोका राज्य रहा या तथा मुमलमानी कालमें जो बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुण्डा राज्योंके अन्तर्गत पहता था, महाराष्ट्र या मरहट्टा देश कहलाया। छोटे किदके स्यामवर्ण, वलिष्ठ, फुरतीले, परिद्यमी, चतुर और चालाक मराठे ही इस प्रदेशकी जन सक्याका बहुमाग थे। उनमें-से अधिकतर खेतिहर और धेय गौवांके पटेल आदि मुखिया थे। उनके अतिरिक्त चतुथ-पचम जातियोंमें परिगणित मोदी धनिये, मजदूर आदि ये जिनमें-से अब भी बहुतने जैन थे। काकणके चितपावन माह्मण भी जो अपने-आपको मराठोंसे भिन्न प्रकट करनेके लिए दक्षिणी कहते हैं, इस प्रदेशमें बढने लगे थे।

राष्ट्रकूटोंके ही नहीं, उत्तरवर्ती पालुक्यों, होयसलों एवं यादवोंके

क्लम तक मो इब प्रदेशमें वैनोंकी बंदगा क्यांना वो राज्य-नार्वीने मी कनका पूछ नोवाना और अनेक सामस्त सरकार थी कैन ने। किन्दु १२वी-१३वीं क्रवास्त्रियोरि राज्यासवती बसरोत्तर वनी और सीर्वज्ञयों सन्देनी राजा किनामर्गाने जनक विरोध पत्रं बीयम जलापारीके नार्प वैमोधी सक्या एवं जनाव दल प्रदेखने मेनमे भटने बना । १४वी बडीने वकारहीय क्षमणी और मुहानय गुरुसको आक्रमणों और गरमगर बद्रमणी राज्यकी स्मापनानै इस अदेवकी मुख्यमानेतर व्यवसार की क्षत्रानुचिक वार्तिक सरवाचार किने क्यारे वैनी और वी व्यक्ति निर्म नमें । अन्यरके एकालीन रीम-नैरममोके और नाहरके मुनामनामीके वर्षर समानारीने इस प्रदेशने सैनवर्दको लिस्पेय शास कर दिया । क्रीडे स्पॉर्ने बर-यम बीलक्ष्यते में सम रहें। किन्तु बनके प्राप्तते क्रिल्लाकि भी रही न हर्दे मुख्यमानीके सत्तात्मारीको चन्तीने रिवकर वे जी निस्त वासिने हो गर धरे । वैत्रवर्त स्थरं जनक वादि-पादि आल्केका विद्राची था किनायत को एक बकारके बीनवर्गके ही बक्क और बजानित में में मी कार्रिन्दर्शिके निरोधी थे। जतः बाजान्द सूत्री-वैदी तात वक्त ही नराज्ञी

क्लामीन विवक्तपराणी देवारों जो रहे और तुझ वार्चन वायन्वीस्परूप कामीन वावन्यरायों के बेंदर होतेला वायन वर्तन करें। मुक्कामोंकी मानेक्ष्म हिंदर विरोधने कर्षों एक्सावीन्वर्गित दुसर्व बांच विराध कर्षों वायन्तिकों कराधोंके विवर्णन कर्मा एक देव-वायका वी निवास होने नहां जो स्पाध महावाधी। वालेन वार्चन्य मुख्यपर एक्साव रास्ताब-विकासवाकीन कराने स्थाधी नामान

वार्टि इस देखनी बन-बंकाके बहुताको जाने इह नदी। बहुक्कर देवेचे आएक नुक्करण नुकारतीची बाकाने विस्तवन कारीए कर्ने कर्ने केना ही पहार था। बहुक्करण, बीज्यूर की प्रोत्यक्त के व्य नुकारतीने ही वर्षे कुछ केरी पर बीजेगा प्राप्तक कर विना था। हिं प्रशासकार वरवारी कोच क्रोटे वह करना हो करे। इसके कुछ सरल छ दोंमें अपने उपदेशा द्वारा महाराष्ट्रचे निवानियानी एकता, विधर्मी मुम्लमानाके अत्याचाराँमे स्वपर्म, स्वजातिकी रूगा वरनेकी एकोट्देरमता, प्राचीन गारतीय धर्मयोरोही गोरव गायाण नुनायर हीनता, निरामा एव हेतीत्साह-जैसे भागोपा बहिष्यार आदि मनोवृत्तियाका पोषण किया श्रीर धनै -दानै जागृतिको एम छहर देशमें फ़ुँकनी आरम्भ गर दी। विजयनगरके महान् हिन्दू साम्राज्यका अमानृषिय अन्त लोगाको स्मृतिमें गजीव या—विजय नगर परम्पराके उत्तराधिकारी चार्त्रागिके राजा तो अभी भी स्वतात्र बने हुए ये। आक्राता धर्मशत्रु मुसतमानीके क्रूर हाथांत स्वपर्म, स्वजाति और स्वदेशकी रक्षावे लिए तीन भी वर्ष पर्व शायमल, सादय, पकातीय आदि भार-तीय राज्योंके फ़्रतापृण अत्तमे प्रेरणा पाकर जिस प्रकार सगमर्ग धीर पुत्रोंने चफन प्रयत्न किया था, मया अब कोई अन्य भारतीय वीर वैसा हो नहीं पर सक्ता ? यह प्रदन लोगोंके हृदयमें उठ रहा था। विछले ५०-६० वर्षीते उत्त[े]के मुग्रल मझाट दक्षिणके मुमठमान राज्योंपर निरम्तर बाक्रमण कर रहे थे और इस काल्ब ये दक्षिणी मुमलमानी राज्य पहले-जस असहिष्णु एव अनुदार नहीं रहे थे, कि तु अब औरगजेबके रूपमें जो एक सर्वाधिक प्रयस्त मुमलमानसत्ताने नवीन आक्रमण एवं अत्याचार प्रारम्म हा रहे थे वे पूर्व कालके अत्यन्त धर्मा ध मुसलमानीके अत्याचारीका भी अतिरेक कर रहे थे। दक्षिणकी अपनी सूबेदारीमें उसने यह स्पष्ट कर दिया था। फिर यह स्वय सम्राट्हो गया और उसने अपनी हिन्दू-विरोधी नाति उन्मुवत रूपसे कार्यान्वित की। दक्षिणस उसकी सेनाएँ भी एक क्षणके लिए न हटीं। ये सब कारण और परिस्थितियाँ थीं जो इस्लामकी इस विनादाक्तारी प्रगतिका सफल प्रतिरोध करनेवाले उपयुक्त नेताकी मौगकर रही थीं। और मराठा धीर शिवाजी के रूपमें वह नेसा आ उपस्थित हुआ ।

अहमदनगर सुलक्षानकी सेवामें मालोजी मोसले नामका एक छोटा-सा मराठा सरदार था। शिवनेरका दुर्ग उसकी जागीर थी। उसके पुत्र

🔨 يەغر

प्रवर्ग प्रशासी मुनलादे रोपाडी भी परवाद न अरके बावने प्रका स्वासी राग्यका सीवित समाय रामनेका सर्वारमक्कान किया का । सन्ततः विकान प्रयम्प होनेपर समय बीमापुरदे मुलनामको भीवरी कर भी। प्रशस्त मार्थितान बार बार वाद वाद मान बार बतार वा । राज्यनेवार्वे निमुबीयी प्रमंत भागी बोल्यानम दिशा या । राजा शाक्षणी मानमा बनशा नव प्रमन समान्य हो गया और यमे पुनाको सामी जिल्ही । १६२ व व विकिक्तर-के पूर्वत बाहबोची बागी जिल्लाहोंने विकासीकी बन्द रिखा। बीजासी स्वयं एक प्रायोग क्या मावान बागनेकी बन्या की की वजी बार्नामा एवं विविधाना की । वृत्रार्थ काली जाना क्ष कृद कालीकी कीडरेस्ट अविचान-करकी तिवाजीका कान्यकाल बीता और विकानीका हुई । विवाजीकी विभा-रोजा बदार क्वं भागित हुई को । साम पात्र और मुख्यियाँ त्री माथ-द्री-माथ उसने निक्तमा प्रान्त की । बालाके अभावने को नग्य-ित करार और बहुरव बनाना नुर काररेवन क्वक हुरवने पूर्वशीरा नीरम बानन विका और बनको महत्त्वानांधाको बनेजिन किया स्था बबर्व राजशास बाहिके नागर्वने वसे सामाणारी विश्वविद्याला निरीय दर्व मंद्रार करके काके द्वापंत्रि वर्त और वातिको रक्षा करवेची बेरवा निर्मी ! रिवाचे क्षेत्र राजनीतिक नग्ता कर्व कुट-मानुर्व अंश्वारमें निवे में । प्रशास वय-तम और मिधेवकर १६-१४ वर्षको बावके रिलाके मान बीजगुर वानेपर वर्षे म्यानमानीरी पृष्टिने सरमा और अपनी बादि एवं वर्षरी होक्या वर्ष पश-पनपर विशे बानेवाले अपवासका अनुबद हुना । यह देशको मुक्क स्वासानिक कर-नेता था । राज्य दर्व करिन-क्रिया कर्य बालीन संस्थार ने विशासीको पश्चिम लाग्य का सब-एक का सामनेति मीरिक्वामीविक्की बोर यह स्थल बर्टी देना या । दन निविध तरकों निकित क्ले रिला-द्वारा क्लेकित दल और वरामा कुमारने १५-१६ वर्ष को बानुवे ही। सजीक्ष-बिद्धिके किए प्राप्तन प्रार⁵⁸

411

भारतीय इतिहास एक स्टि

पानुको जीनकेने और संबर्धि थी । निशानपारीके बल्लिय दिनोने तो वर्षने

भर दिया । उसन पूनाम ही रहते हुए अ।स-पासके अपने समवयस्क मावले ^{...} ^{...} ^{...} लडके एक छोटो सेना सुगठित को और १६४६ ई० में १९ वर्षको आयुमें ही निकटके तोरनदुर्गको आदिलशाहके किलेटारसे छोनकर हस्तगत कर लिया । इस विजयसे उत्साहित होकर उसने शनै -शनै अपनो पूनाकी पैतृक जागीरका विस्तार एवं शक्ति वढ़ानी प्रारम्म ^{कर दो}। मावले बडे सादे, तगडे, चतुर और पहाडी एवं जगली युद्धोंमें अत्यन्त निपुण थे। अतएव एक-एक करके शिवाजीने अनेक दुर्गहस्तगत **फर लिय और कुछ नवीन भी निर्माण कर लिये। शाहजहाँने १६३३ ई०** में अहमदनगर राज्यका अन्त कर दिया या और उसके पुत्र औरगजेवने दितिगको अपनी प्रथम सूबेदारी (१६३४-४४) में अविशिष्ट बीजापुर एव गोलकुण्डा राज्योंको एक पछ शान्तिकी सौस न लेने दो थो। इस परिस्थितिमें शिवाजीका लडकपन बीता था और उसके भावी कार्य-क्रमकी योजना बनी थो। पूनाके निकटवर्ती ये दुर्ग राजधानी वीजापुरसे दूर थे और औरंगजेब उत्तरकी ओर वापस चला गया **या**। शिवाजीका पिता षाहजी सुलतानका प्रभावशाली क्षामात्य था, अत छल-वल, घूस और ^{सिफ़ारिश बादिके प्रयोगसे शिवाजीने इस अवसरका लाभ उठाया और} सायहो वह बीजापुर दरबारकी ओरसे चपेक्षित रहा। इसी बीचमें शाहजीसे सुलतान रुष्ट हो गया और उसे बन्दीगृहमें हाल दिया बत फुछ समयके लिए पिताकी सूरक्षाके खयालसे शिवाजी शान्त रहा।

१६५३ ई० में औरगजेव फिर दक्षिणका सूवेदार होकर आ गया।
मुख्तानोंके उससे उलझे रहनेके कारण शिवाजीको अवसर मिला और
उसने अपनी पिक्त और अधिक बढानी आरम्म कर दी। अब उसने
उपने अपनी पिक्त और कोलावा आदि प्रदेशोपर भी आक्रमण किये
और १६५५ ई० में जाओलीके राजाको, जिसने मुख्तानके विरुद्ध युद्धमें
उसका साथ देना स्थोकार नहीं किया था, मार डाला। अस मुख्तान
अब सहन न कर सका और १६५८ ई० में औरगजेयके आगरेकी और

रयाना होते ही शांबापुरने विशाशोके पतनका वीतवार्य बन्ते क्यों। क्याच मानुका मरशाराको तो विकासीन का ही बाद क्याचा अग्रा १६५६ हैं में बक्रवलको नामके एक बढ़े बरदारको दिवान देनाके बाद विचामीको पंतर बानके नियु येत्रा बार । हिन्तु विवासन अपने क्वन-क्योपणे सफ्रायच्या वयं कर दिया अवये आवर्ष ोरावे बीमापुरवी हैनारो वितर-वितर कर विश्व और उसकी विदुक्त मुख्य-गामधी अस्तर्मत कर *की ।* बंध मियानोचा प्रतिदेश स्त्रीता और बातक बाड्य बंद बने, वह पुरूप प्रदेशमें भी कार्ष नार्श कता - बीजानुरकाके ता विकालीकी कीरके शतका ही हो बैढे थे. मुक्तमप आदिसम्पादका मृत्युके बाद कर्न्यु सर्व वाली स्वित नेवाकरी करित हा रही वा चित्र वीरियेव विवासीकी बुद्धारी बान व कर बक्ता का । बबने करने पाना नवाब प्रायस्तानांको विचारी ना रमन करनेके तिन् क्षेत्रा । तिन्तु कम कार्रात्ताची तुनाके नर्कने बारामन पहा को रहा था विवासिन कापा नारकर प्रवर्ध स्वीत की, मधाब आम बमाबर मान क्या १६६४ ई. में विकासीने बुक्तके बन्दरबाहुको बुधी धरद कृद्ध । सब सार्थ्यवेतने सहवाने नुसरकर और स्थारात नगरिएको इतके विषय भेता । नगरिएको पुरुगरि वर्ण 🗗 बीर सुरकाका मारवायन देकर सबन विद्यानीको आवश कानेनर समे कर किया । १९६५ हैं में बालक क्षेत्रकेटर विशासीको अन्त हुन्छ कि बारपात विश्वनायात करना पाइया है और बार्निक्काण दिने स्मे बक्तको कोई स्था व करेशा । बदः यह सकते पुत्रकार्दश अधीनहरूँ पूर्व रामहिक्करी बाराना। वर्ष अपने कोदावतः वैच बरवकर निवळ गांगा और बहाराष्ट्र पहुँच क्या वारी पुरेचकर करूरे बीर्रवक्तके विकास सूचा हुन मुक कर किया । कर नुकरताको साथ पाता बनालप्रविद्यानी अवके विश्व बेबा बना फिन्दु वे दोनों हो दर्शना बुध केवर बच्छे तरि रिधेयरें विविक्त हो नने, मान्त्र प्रधाद्वे बहु-मूनक्षर प्रवृत्ति को शताको पर्य वो दिवार से और एक बरेपके करने बनको बता। स्वीकार करा की ! मालांच इतिहास एक गाँउ 111

गायगढ़का नवीन दुर्ग-निर्माण करके शियाजीने अपनी राज्य सत्ता अप भेली प्रकार जमाला। अनेक दुर्गऔर विस्तृत प्रदेश उसके अधिकारमें थे। १६६७-७० ई० तक उसने अपने राज्यके आग्तरिक नामन-प्रयापको व्यवस्थित किया । १६७० ई० में उसने खानदेशपर धावा निया और चौप वसूल का तया भविष्यमें भी दिये जानेके लिखित वचन स्यानीय पाही अधिकारियांने ले लिये। उसी वप सूरतको फिर लूटा और अँगरेजो-को कोठोसे विपुल धन प्राप्त किया। १६७४ ई० म उसने रायगढ दुगको वपनी राजधानी जनाकर उसीमें प्राचीन प्रधाके अनुसार समाराह-पर्वक अपना राज्याभिषेक कराया और छत्रपति महाराज शिवाजीके नामसे सिहासनारोहण किया, तथा अपना राज्य सवत्सर प्र**प**लित किया। १६७६ ई० में महाराज विाताजीने अपनी सुदूर दक्षिणकी विजय यात्रा की और गालकुण्डा पहुँचकर यहाँक सुलतानको अपना अनुवर्ती बनाया। मिनी, वैसोर, वेलारी आदि दुर्गी और प्रदेशोंकी अधिकृत करता हुआ वह बीजापुर पहुँचा और वहाँके सूलतानवे साथ भी चमने मैशी सन्धि कर ली। यह यात्रा अत्यन्त सफल रही । अब शिवाजी दक्षिण भारतका एक स्वतन्त्र एव मर्वाधिक प्रक्ति-प्राली नरेश था । बीजापुर और गोलपूण्डाके मलतान उसका मुह निहारते थे । उनको साथ लेकर उसने मुग़लाको देशसे बाहर निकाल देनेकी योजना बनायो । औरगजेब सीमान्तके अफग्रानो, साम्राज्यमें होनेवाले अप विद्रोहीं और राजपूत-युद्धोंमें उलझा रहनेक कारण कुछ न कर सका और,वोर शिवाजी अपनी शिवतके शिखरपर तथा अपने लक्ष्यके निकट पहुँच गवा । १६८० ई० में शिवाजों की ५३ वर्ष की आयुमें मृत्यु हो गयी ।

सीरगजेब उसके एक वर्ष उपरान्त दक्षिणमें आ पाया। शिवाजीका उत्तराधिकारी उसका पुत्र शम्माजी (१६८०-८९ ई०) हुआ। वह वीर और बोद्धा तो या किन्तु क्रूर, दुराचारी और विलासी मी था। अपने पिता-जैसा चरित्र, आदर्श और बुद्धिमत्ता उसमें न थी। विद्रोही शहजादे अकवरको उसने आश्रय दिया था। शिवाजीको सफलता और इस प्रवल दिन्द्र राज्यको सबोके समयमें इन प्रकार सरगीत है औरंशबेद भरवन्त कृत मा । वत बीजापुर बोर नोकन्त्रामा बला करनेके बनरान्त १६८६ हैं। ने वनने मराठीका कल करकेता निश्चन किया। याजाबीको परान्ति गरके क्षत्रे करके गामपुरी काहान नात्री शक्तिमुकनहित नाती गर स्थि और दिर बायल करताचे ताब क्षम नाविधी-महिन क्षमना वय वर विश बना । धून प्रवार विकासीय राजाका क्रन्यतनः क्रन्य कर दिवा वया । धानातीके बाल बचके पुत्र बह्मणी ७ । या सम्बद्ध देकर बाद्धा मन्ति पूर्ण में पननेके किए राम किया गया . शिन्तु सकताओं और बनके राज्यका में ही सन्त हो नवा नरास्त्र सन्ति और शरासीका सन्त व हुना । नह वर्ष बुता सबिक बेक्ने तारे श्रीत्यारवरे केंद्र कही विचानीके दूतरे हुन धनायन और बनके बरराना चतकी चला ताराबाहित बेनुनार्ने असने बोरनदेवको सबको मृत्यु नर्मन्त बुरो स्टब्स वरेसान करते रहे । इसमें बन्देह नहीं कि बीर विशाली बत्तर-सम्बद्धानके प्रविद्यवर्गी क्ष महान् रावर्गनिक विकृति है । क्ष्यरी सर्वमहान बच्चमहा नहीं भी वि बहने बच-दन महि दोन होन हर्ष रचयोग करने जिन्हों हो गराज्ञ क्रिक्ति प्रतिन एवं बुवनिक्षित करके बन्ने स्पृद्रवास राज्यक्रीला पूर्व भारीय क्रिकेट कर है। विदा या । जाकरा दिवस विरोधी परिवित्तीओं और जाकः काकनिवरील रूपये जीवल-गार्थ प्रारम्य करके बक्षने काल्ला

वर्ष वर्ष वर बाँउ रोव होन हो नहां प्राचीय काहे जिलती हुई नहां धरिनारी करिना वर्ष वृश्वीतित करि कहे बहुततार राज्याजित हरें धारीय करिना कर है दिया था। कर्माच्या दिवस विश्वीती बीद जाया वावर्गाचीन कर्मा वीकानार्थ प्राच्या करित वहने वे बीद जाया वावर्गाचीन कर्मा वीकानार्थ करित हुई क्यां बीदिदांची कुट्ट क्यांनियास क्यां अदिशा दिवा और वहने देखें देखों ही बाँदि जानकारा नावक कर्मुद्ध वर्षा क्यांची क्यांदि एवं बीदियां क्यांचीय स्थान विश्व प्राचा क्यांचित कर्माच्या करीया हुं हुई क्यांचीय क्यांचीय क्यांची क्यांची क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय हुई क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय हुई क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय हुई क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय हुई क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय क्यांचीय एव प्रमावीत्पादक था, मनुष्यकी पहचान भी उसे अद्भुत थी। अर्घसम्य बितिक्षित हीन मावलॉको उसने दुईर योद्या बना दिया या । उसका नैनिक संगठन अति उन्नत था । उसका विशाल एप प्रवितशाली सेनामें स्त्रियोंके रहनेका सर्वया निषेध था। नौ-राफ्तिका निर्माण करनेवाला भी मध्यकाल-में वही प्रयम भारतीय नरेश था। देशका शासा प्रवाय सुचारु था। अष्ट-प्रधान नामक आठ प्रधान अमात्याके मन्त्रिमण्डलकी अध्यक्षतामें प्राचीन भारतीय एव मुग्रन्थ दोना सासन-पद्धतियोंके उचित सम्मिथणसे अपनी पासन-व्यवस्थाका उसने विकास किया था। शत्रुको क्षमा करना यह नही वानता था, छल-यलसे जैसे बने उसका दमन करके ही दम लेता था। अपनी आवश्यकताके लिए लूट पाट करके धन लेनेमें भी उसे कोई संबोध ने पा। क्लिनु किसी महिलाका कभी अनादर या अपमान वह नहीं करता षा चाहे वह कितने ही कट्टर शत्रुते सम्बन्धित क्यो न हो । गो, प्राह्मण कौर हिन्दू धर्मको रक्षा उसका नाराथा तथापि वह समी धर्मीके प्रति चेदार और सिहष्णु या और उनका आदर करता था। जन आदि सिहन्दू मारतीय घर्मोंका तो प्रस्त हो क्या यह मुसलमानीकी मस्जिदोका, क्रुरानका एव उनके धर्मका भी आदर करता था। शत्रुके रूपमें मुसलमानीपर उसने पाहे को बत्याचार किये किन्तु घार्मिक ब्रत्याचार कमी किसीपर भी नहीं किया। स्वयं उसके मराठा-राज्यमें जैन विद्यमान सो ये, कि तु उनकी स्थिति विति गौण, हीन एव अनुल्लेखनीय हो चुकी यी और अब मराठा राज्यके षाह्मणोंने उन्हें उमरने नहीं दिया। किन्तु सुदूर दक्षिणके दक्षिणी कर्णाटक, तुरुब एव तमिल प्रदेशोंमें अब भो मैसूर, भट्टकल आदि उनके दर्जनो छोटे-छोटे राज्य, श्रवणवेरुगोल-जैसे महान् तीर्थ और जैनविद्री, मूहविद्री सादि सनेक महत्त्वपूर्ण सास्कृतिक केद छन्नत दशामें फल-फूल रहेथे। नाना प्रकारके षाह्याम्यन्तर अत्याचारो एवं विरोधी परिस्थितियोंके कारण पहले-जैसी चनको दशा नहीं रही थी फिर भी वे प्रायः अच्छी दशामें विद्यमान थे। कन्नहो मापामें कितने ही श्रेष्ठ जैनग्रन्य इस कालमें भी रचे गये।

अध्याय ५

अरामस्त्रा कारत (१७०७–१⊏४७ ई∙) भीरंपन्नेवयी मृत्युके साथ ही भूतन बासारतकी बहुता वैत्रय कीर प्रचानका ही अन्य नहीं हुवा भारतीय । इतिहासके सभ्यकालया की बन्द हैं नमा । इत्रया ही नहीं नहिन्न सम्पूर्ण प्रारम्भे नुनक्रमान सारमक्तितना के

रचनव हो वदा । कुनक्षमानीके बारक-अवेशके अवधानाकालमें स्ट्रा हुवा एवं **रहकेदे अ**दिक प्रदेश दिन्यू नुसदन्तान तुन बा । १२ ६ वे १४०७ हैं? वर्वनाफे वॉच-को वर्षके मुख्यमानी सावनकावर्ते भूतक सामान्त्रके हेर्दि वर्ष (१५५६-१७०७ ई.) ही हैंचे में कि फिनमें देवते वुच ब्रधारची

एक-पूक्ताका सनुभव किया, जुब-धारियरी कुछ बांद की बीर अर्थ ufen er finen eren feren um unmilet ferfen ere til धव बीवर्ने की बक्तवरवे बाह्यवहाँ पर्कत धवनव इन्ह्र-को वर्तवा हमने हैं

देवा या निवे करने सर्वोर्वे अध्यक्तकोतः जायत्वा स्वर्वत्व व्यक्त क्रीस है। इस मुक्ते देवको पामितिक वार्तिक एवं सांस्कृतिक कर्वतीनुके क्रमित हुई और देव भारती थान्ति हुन सेवरके नाम विकास सूच

क्या । इनका प्रचान भेग बन्नाद् अक्यारको है और अंब्राः बबके पूर्वन बानर और इनापुँची तना नवात बहातीर और सहावहांनी है। सनगर बारिने विरेधी निवर्गी दर्व बराना सहकर इक बेस्पर सामन करना नहीं भाग और न महोको स्थानाम मानतीम सनदाको काम बार्तित हैं। बनका, परम् अवनि भारतमें पहचर भारतका ही हीकर और बारतने ही किए देवका पातन वर्ष सम्मूचन किया, पर्वकरों एवं पातकी

114

व्यक्तीन इतिहास पुत्र धन्द

प्राव बोई लानीय या धार्मिक भेद नहीं रसा और देशको मस्पूच ननतान मुख्योग और सुद्भाग प्राप्त करनेका प्रयाम क्या । लाहोंने दान हितका केवल अपना निजवा या पुगलमार्थ प्राप्तका लोग सामानिय दल्यामका हो दिन नहीं समझा यर पुजर्म सन्पूच पारतका लोग सामानिय पर्भो एवं शांतियोंने निमित्त अनिन भागीय जागाका किए मानिका प्रयप्त दिया। अत्युव ह्यरोक्त मध्ययक्तीन स्थलपुगका निर्माण पाराचे अव-क्या। अत्युव ह्यरोक्त मध्ययक्तीन स्थलपुगका निर्माण पाराचे अव-क्या। सत्युव ह्यरोक्त मध्ययक्तीन स्थलपुगका निर्माण पाराचे अव-क्या । अत्युव ह्यरोक्त मध्यवक्तीन स्थलपुगका निर्माण पाराचे अव-क्या । अत्युव ह्यरोक्त मध्यवक्तीन स्थलपुगका निर्माण पाराचे अव-क्या । अत्युव ह्यरोक्त मध्यवक्तीन स्थलपुगका निर्माण निर्माण स्थलित स्थलपुगका स्थलपुगका स्थलपुगक्ति स्यापुगक्ति स्थलपुगक्ति स्यापुगक्ति स्थलपुगक्ति स्यापिति स्थलपुगक्ति स्थलपुगक्ति स्थलपुगक्ति स्थलपुगक्ति स्थलपुगक्त

ित्तु औरगडेयको विदेश एवं पक्षपाठपर आमारित गुनीतिने स नेयस उसक जोवनमें हो उक्त स्वर्णमुगकासो अन्त कर ही दिया बरम् स्थय मुक्त साम्राज्यकी मीवकी द्वारा सोलला और उसके शरीरको द्वारा जजर हर दिया कि उसकी मृत्युके उपरान्त ही यह हुत वेगने साथ पतनके गम्भीर ^{गृ}द्धरमें हुवने लगा और अपने साम सम्पूण देशको मी *छे दू*वा। आगामी देइ-भी वर्ष (१७०७-१८४७ ई०) का बाह्य गारतीय इतिहासका स्राध-कार युग है, इग्रलिए नहीं कि उस कालके सम्यन्यमें हमें गुछ शांत नहीं है बरन् इसलिए कि जो कुछ झात है उससे हमारे मम्नक लज्जास अनु र जाते हैं। इस पूरे कालमें अराजवता, अध्ययस्या, छष्टाचार, विलागिता, सूट-मसोट, मार बाट, षट्यात्र और विस्थामपात, परम्पर पूट और वैमनस्य-षा बालवाला था । इन्ही दुगुणा एव दूषित प्रवृत्तियोंस उस कालका सम्पूर्ण रितिहास भरा पड़ा है। देशमी राजनैतिक एकसूपता और संगठन हो नष्ट नहीं हो गये थे और उनमें स्थानमें अध्यवस्थित विमे द्रीकरण और विश्रृ-षतता ही उत्पन्न महीं हो गयो थी धरन् सम्पूर्ण देशका उत्तरोत्तर धोर नैतिक पतन होता चला गया । जिस हिन्दू पुनवत्यानके नेता एवं पुरस्कर्ता मराठा दोर शिवाजी, सिषणगुरु गोवि दसिंह, जाट नेता गोकुल, मेवारके राणा राजिसह और उनके प्रयान नाह दयालदाम संवयो, मारवाडके दुर्गायस राज्ञेर, कुरेकचन्त्रकं बीर क्रव्यान शाहि स्वतन्त्राके दुर्गा नरराम में बढ़ी पुरस्त्याप क्षत्र क्यति कामादित हो मानेरर थी उन्हें बत्तराविकारियोची वरस्तर कृत वैत्रमात स्ताता एवं सपूराविका^{र्} कारण इतना समाना और अहमक हो बया कि बात तुनुत चारते अलेगा^{है} मुद्रीमर अंपरित आरान्ये इन वर्ष्य विद्यात देवके स्वामी वन केंद्रे। स्र नवीन्ति दिन्दू र्यान्त्रयोतं पदोत्ती तृतस्थान द्वतिनवीके साथ ही नदी ^{बदर्} रवर्ग परकारने की बाह-सदकार बालूब देवको दक्ता निर्मित विकास बोर पांतर क्या दिया कि क्षेत्रको बांस्ट्रतिक प्रवति कोमी शिक्षा वरी. वार्तिक एव बानानिक बोक्तवे अन्तिनतः कृषेतिनां प्रदेश कर नहीं, देवके म्यासार पूर्व वचीन-कर्ने महाही नवे और वतना देता वर्णिक बोरन हुआ वैद्या रहते. कतो नहीं हुआ था। अतीक व्यक्तिया डक्प्स क्टरिया हो नवा । पुराचार, अवाबार क्ष्यं आवाबारका कार बीकराना चाः न कोई स्थातनं चा न न्यत्रत्याः राज्य-तया वती कृति वे वीर भरतेचे व्यविक सरकी-प्रास्त क्षती कृते. वा रहे से 1 निकास काली प्रवेशी मैंस यो । सीर यो सबसे अधिक अधिकेशी कृती मूर्त और पपुर कृते ने वे बॉवरेज ही करी-कर्त- महत्तर हाती होन्डर देवको नरायोजवादी ऐसी नुष्ठ वेडियोर्ने सक्तवेदें सक्तव हो नवे सैसी पहले कवी पत्नी मी ^{संस्}

कर्म थी। मार डेड्डो वर्षक इस वाध्येत क्षत्रकृतका रहिन्दक बदान्तर, रिपूर्णका क्याँच, रिहेट कर बच्च बर्चम अर्थित सोनी विदेशित प्राप्त इस नार्यक्रम एरानेस्वामी नीतील कराई जानेता है क्यांच्य क्या रहिन्द है। यह रहिन्दक ने मुख्य पात है क्यार्थ कुरते निर्धे हुए कप्रत्यों पुरुक्तीय क्यारे क्यारेस्ट्रोडोड़ों वर्ग स्वार्थ व्यक्त विद्या जीर कुरेटा यी सम्बन्ध करों हो स्थान एस्स बारे हैं स्तित् वर्षी स्थान कर यह में प्रतिस्था पूर्णि और सहस्त्रमध्य क्यार्थ की स्थानेस्ट्री हों एर्स स्पेर सम्बन्धिकार्य होटे, बीस्ट्र सहस्त्रमध्य स्थानों के सुर्वा अल्स्स्यामी वल प्राप्त करनेवाला राजस्यान, मराठा घिषतको चरम-धिखर-पर पहुँचाकर हुवा देनेवाले पशवा और उनके भोसले, गायकवाह, होल्कर, विन्यमा आदि सरदार जो अपने स्वतन्त्र राज्य जमा बैठे किन्तु उस स्वत त्रताकी भी रक्षा न कर सके, भरतपुरके जाट, पजाबके सिक्ख जिन्होंने रणजीतिंमहके नेतृत्वमें चरमोत्कर्प प्राप्त किया किन्तु उसको मृत्युके साथ ही परामूत मी हो गये, मैसूरमें हैदरअली और टीपूकी अल्पस्यायो मुसल-मान शक्ति तथा पूर्तगाली, हच, फ्रान्सीसी और अँगरेज आदि युरॅपोय व्यापारी जिनके व्यापारार्थ किये गये परस्पर संवपमें और दो अन्तत विजयी रहे और फिर भारतको हिन्दू एव मुसलमान धिषतयोको पारस्परिक पूट, अहूरद्यांकता एव देशको गम्भीर पतनावस्थाका लाम उठाकर उसके पूरे भाग्यविधाता वन वैठे।

उत्तरवर्ती मुगलनरेश-ओरगजेवके प्रयत्नोंके वावजूद उसकी मृत्युके पश्चात् उसके पिता तथा उमके स्वयंके द्वारा डाली गयी प्रयाके अनुसार उसके अविशिष्ट पुत्रों मुअज्जम, आजम और कामवरूशके वीच चत्तराधिकार-युद्ध हुआ ही जिसमें आजम और कामवएश मारे गये और मुजप्जमने शाहमालम बहादुरशाह (१७०७-१२ ई०) उपाधिके साथ ^{सिहासनारो}हण किया । अपने पूर्वजो द्वारा सचित आगराके विपुल राजकोप-में-से छेकर सरदारों और सैनिकोंमें उसने घन वितरण किया और उन्हें ^{सन्तुष्ट} किया। उसके सौमाग्यसे मुनीमखौँ और जुल्फिक़ारखौँ-जैसे दो सुयोग्य और बुद्धिमान् अमात्य उसे सहायक रूपमें प्राप्त हुए थे। उनके परामर्शसे ^{चसने} चिजया-कर चठा दिया । १७०९ ई० में जोघपुर-नरेश अजीतसिंह राठौरके अधिकारको स्वीकार करके और उसे राज्य सेवामें छेकर तथा ^{गुनरातका} सूवेदार बनाकर तीस वर्षसे चले आमे राजपूत-विरोधका अन्त किया। जुल्फिकारके परामर्शपर मराठामें परस्पर फूट डालनेके उद्देश्यक्षे धम्माजीके पुत्र साहुको मुक्त कर दिया और उसे दक्षिणमें जाकर अपनी भाची ताराबाईके साथ राज्याधिकारके लिए लडनेकी अनुमति दे दी।

पुनीशब राहीर भूग्वेतप्रकड बीर क्षत्रमाण बाहि स्वरत्यप्रके पुनारी नररान में नहीं नुमारचान बाब काम बागारित ही बानेपर ती वर्ष बत्तराविकारिकाकी परत्पर कृत वैजनान अलेडा वर्ष अपूर्णायकारे कारण इतना बावका चीर अवस्थ हो तथा कि बाल बजूड गारवे आनेगाँक मुद्रीवर बेनरेड स्थाराचे इन बच्चे विधान देखते. त्यांची बन बेडे । इन नवीरिका दिन्दु र्वाकायने बरानी समझ्यान र्वाकायीके बाब ही नहीं बरम् क्षत्रं परकारम् भी अदन्यदक्षर कृत्युच देशको दुवता निर्मात निरम्पण बीर पांतर बना रिका के देखनी बारपुरिक प्रपति कीची रिका पर्या मानिक एवं बाराजिक जीवनवें सर्वावनत कुधितियों प्रवेश कर वर्धी देलके स्थापार वर्ष बयोज-बन्ते नष्ट हो वर्षे और ब्रवका देशा वार्विक बीरम हवा बैदा रहते कभी नहीं हवा था। इत्येख व्यक्तिया यम-सन सर्चका हा नवा । प्राचार, अनावार पर आवाचारण वर्तन बीवनाना या । म कोई पावन का म न्यरत्य । राजानामा बची लुहेरे से और वरनेवे व्यवस्थानाम् सनी मुद्दे था रहे है । जिल्ली वाडी वरणी बेब की । बीर को बच्छे अधिक अधिकेशी क्रमी अने और पन्र नहेरे में वे मेंगरेज ही करें नकी। समयर हाती होचर देवको पराचीनकाड़ी ऐसी नुरुष्ट वैशिवाँचि सक्युवेनी बाहन हो करे. केंद्री बहुके करते वहीं की न सा CS1 48 1 बार, देव-को पर्यके इत आस्त्रीय सम्बन्धका स्टिशास सराज्यका निर्माणका, बसानित मैतिक भाग तथा वर्षमा स्वीतिका बोहे-हे विदेशियों-शारा इन नहारेक्को नराबीनताची बैदिनोवें बकरते बानेना ही स्मर्गान बनक दिल्हान है। इन इन्द्रिमके प्रमुख गाम है अपनीत कुनमें निर्के हर बत्तरवर्षी वृत्रज्ञ-वरेक अवके स्टानिहादी एवं स्थानी बालमा बरचार और तुरेशार को अवसर गाउँ हो स्थान्य राज्य करा क्षेत्र किन्तु काकी की रवा न नर को बारिएमाइ दुरीनी और महनदथाह कमाबी-वेडे मूर एवं वर्गर गरम-वृक्तियाई सुरेरे, बीवपुर गरेश सत्रीवर्तिह राग्नीरके बेलूरवें

बारबीय इतिहास : एक वीर

व्ययस्याने वस प्राप्त कर्नावाला सामस्यान, मराठा धारिनको परम निगर-पर पहुँपावर पुषा दनवाले धेनवा बीर उनके भागले, गायद्याप, होन्वर, निषिषा आदि सरदार जा ज्ञान स्वताल राज्य जमा धंठे विन्यु उस स्वतावताको भी रहा । कर गर्ने, भरसपुरन जाट, पजावके सिक्स जिन्हाने रणजीतिन्ति ने नेतृत्वमे परमोत्स्य प्राप्त किया किन्तु उसको मृत्युके साम ही परामृत भी हो गये, मैमूरमे हैन्दबली और टोपूकी व्यत्प्यामा मुसल-मान घिषत सवा पुत्रमाली, एल, मान्तीमी बीर अगरेज बादि पूर्वभेय स्थापारी जिलके रयापाराच किये गये परस्पर संघपमें बँगरज हो बन्तत विजयी रहे बीर फिर भारतको हिन्दू एव मुसलमान धिनतगको पारस्परिक पूट, बदूरदिना। एवं देनको गम्भार पतनावस्थाका लाम उठाकर उतके पूरे भाराविधाता बन बैठे।

उत्तरवर्ती मुग्रलनरेश-श्रीरगजेयके प्रयत्नोके बावजूद उसकी मृत्युके परचात् उनक पिता तथा उत्तमे स्त्रयम द्वारा हाली गयी प्रयाके अनुमार उनये अवशिष्ट पुत्रा मुअवतम, आजग और मामयएशय योच उत्तराधिशार-पुत हुआ हो जिनमें आजम और कामबएश मार गये और गुअरजमने शाहआलम बहादुरणाह (१७०७-१२ ६०) उपाधिके साध सिहासनारोहण किया । अपने पूर्वजो द्वारा सचित आगराफे विपूल राजकोष-में-मे छेपर सरदारों और सैनिकोंमें उसने घन वितरण किया और उन्हें सन्तृष्ट किया। उनके भौभाष्यसे मुनोमदाँ और जुल्किकारदाँ-जैसे दो सुयोग्य और वृद्धिमान् अमास्य उसे सहायण रूपमें प्राप्त हुए थे। उनके परामदासे चसने जिल्लान्यर उठा दिया। १७०९ ई० में जोपपुर-नरेश अजीतसिंह राठीरके अधिकारको स्वीकार फरके और उसे राज्य-सेवामें छेकर सुवा गुनरातका मूबेदार धनाकर तीस वर्षसे घले आये राजपूत विरोधका अन्त किया । जुल्फ़िकारक परामर्शपर मराठामें परस्पर फूट डालनेके उद्देश्यसे पम्भाजोपे पत्र साहको मुक्त कर दिया और उमे दक्षिणमें जाकर अपनी भाची तारावाईके माय राज्याधिकारके लिए लड़नेकी अनुमति दे दी। क्षासरका नार्विति पुरुष्ठ विकृ कर बीर थे करते क्षात्र के बार मार्वित्व वृत्तिकारणों ही विकास गुरेशार गिनुस्त कर रिक्ष बीर वर्क स्वार्टन नार्वित्व वर्षार नार्वाण १ देश हैं है बार बीर दिस्ति केंगुरुर्ध विकासी वर्षार रिवेह किया और गुरुक्तारोटर करेड व्यवस्था नित्ते कात्राव्य होर गुर्नावाली करते नारत दिस्तिका प्रकाशित वर्षा वर्षाय हैएसी वर्षार पार्टिक प्रकाशित करता दिस्तिका प्रकाशित कर्या नार्व्य वर्षार्थी कर्म हो पार्च विकास है एक प्रकाशित क्षाय करते नार्व्य वर्षार्थी कर्म हो पार्च हो एक प्रकाशित क्षाय करते व्यवस्था नुवेह त्रहरू था। नियास वर्षाया है एक प्रकाशित क्षाय करते नार्वेद त्रहरू था। नियास वर्षाया है पार्च निर्माण क्षार क्षा

पुन बहीपायब (१७६१ हैं) शरवाह हुया। अब सामण विश्वास विद्यापति था। साम्य सामने स्थापत हैं अपने आदीन प्रविक्त कि विद्यापति था। साम्य सामने स्थापत हैं अपने आदीन प्रविक्त सर्व वह विद्यापति एवं में निर्माणकों अस्ता स्थापति हुएनारों निर्माण साम विद्यापति हुएनारों निर्माण की सिर्माण की साम कि वृद्धापति हुएनारों निर्माण की प्रविक्त स्थापति हुएनारों निर्माण की सिर्माण करने सि

444

भारतीय इतिहास १४ हर्ति

प्रसन्न होकर फ़र्छंखिस्यरने अँगरेज कम्पनोको मारतमें ग्यापार करनेको मूल्यवान् सुविधाएँ दे दीं और उनके मालको भी तट-करसे मुक्त कर दिया। १७१९ ई० में सैयद भाइयोंने ही उसे पदच्युत करके उसका यम कर ढाला। तदुपरान्त इन सैयदोंने नेक्नुसियर, रफ़ीउद्दैलत और रफ़ीउद्दरजात नामक तीन शहजादोंको एक-एक करके बादशाह बनाया और थोडे-थोडे दिन बाद प्रत्येकका वम कर दिया। इसी कारण ये सैयदबन्धु 'राजा बनानेवाले' कहे जाने लगे।

अन्तमें उन्होंने फ़र्रुखसियरके एक अन्य चचेरे भाई मुहम्मदशाह (१७१९-४८ ई०) को वादशाह बनाया। वह भी वहा निकम्मा, दुराचारी और बिलासी था, इसी कारण मुहम्मदशाह रंगीलेके नामसे प्रसिद्ध हुआ । किन्तू उसने सरुतपर वैठते ही सैयद हुसैनअलीका गुप्तरूपसे वघ करवा डाला और उनके माई अन्दुल्लाको बन्दोगृहमें हाल दिया। १७२० ई० में एक अन्य शहजादे इग्नाहीमने बादशाह होनेका विफल दावा किया। राठौर-नरेश अजीतसिंहका प्रभाव और शक्ति इस समय पर्याप्त वढ़ गयी थी। जयपुरके सवाई जयसिंह और उदयपुरके समामसिंह भी धिवतशाली हो रहे थे। इन तीनोंने मिलकर एक राजनैतिक समझौता भी किया था, किन्तु वह सफल न हुआ। मुग़ल-सम्राट् और उसके दरवारकी ओरसे राजपूत उपेक्षित होते गये और स्वय अपने-अपने राज्यकी शक्ति बढ़ानेमें व्यस्त रहे तथापि सवाई जयसिंह आदि राजपूत राजाओंके प्रभाव-से इस बादशाहने जिजया लगानेके प्रश्नको सदाके लिए समाप्त कर दिया। राज्यके जैन-धनिकोके आग्रहपर उसमें पशुवधपर भी कहा प्रतिबन्ध लगा दिया था। मुहम्मदशाहने १७२२ ई० में चिनकलीचला आसफजहाँ निजामुत्मुत्कको अपना वजीर वनाया, इसके पहले वह दनिखनका सुवेदार था किन्तु साम्राज्यकी पुन शासन-व्यवस्था करनेका दुस्तर कार्य उसे अपने बूतेके बाहर जान पढ़ा अत अगले ही वर्ष वह फिर अपनी दिवसनिकी . सुबेदारीपर चला गया और वजीर भी वना रहा । १७२४ ई०में हैदराबाद- बरक्तर और क्षत्रके अध्यानाव ब्रुएक्स्स कार्य अपना राज्य बनामा।

पुनेक करने एवं करना हरेगा (मोदी कर इस का) पुनवा नी ।
सम्माने बहुसारा राहे पान्द्रीया बीरमा रहा और निर पुन्ने स्था पूर्व होता व्यवस्थ कर प्राव के स्था पूर्व होता कर प्राव के स्था पूर्व होता कर स्था के स्था पूर्व होता कर स्था कर प्राव कर प्राव कर प्राव होता प्रवाद कर प्राव होता कर प्राव कर प्राव होता होता है स्था प्रवाद कर प्राव होता है स्था कर स्थ

सेनाने उसका प्रतिरोध किया। दो घण्टेमें ही युद्ध समाप्त हो गया, दिल्लीके लगमग वोस हजार सैनिक युद्धमें मारे गये, और बादशाह महम्मदशाहने स्वय दुरिनोकी छावनीमें जाकर हाजिरी दी । नादिरशाहने उससे नरमीका वरताव किया और मित्रता प्रदर्शित की। दिल्लीके शाही महलोंमें अत्यन्त सम्मानित अतिथिके रूपमें वह ठहरा । किन्तु पुछ लोगोने उसकी मृत्युकी झूठी अफ़वाह उहा दी और यत्र-नत्र उसके सैनिकोंको मारना शुरू कर दिया । इसपर नादिरशाहका क्रोध भटका और उसने क्रत्लेजाम-की आज्ञा दो । दिल्लीके प्रमुख वाजारकी सुनहली मस्जिदमें वैठकर वह नी घण्टे तक लगातार दिल्ली निवासियोका निर्मम सहार देखता रहा। अन्तत मृहम्मदशाह और उसके मित्रगोंके अत्यन्त अनुनय विनय करनेपर असल्य निरपराधाके रक्तसे अपनी प्याम बुझाकर उसने यह पैद्याचिक नरसहार रोका । तदन तर ५८ दिन तक धाही मेहमान रहकर उसने दो सी वर्षीमें सचित किये गये मुग्नलोंके अपार धन-वैभवको उन्मुक्त होकर ल्टा। शाही कोप और महलोंके अतिरिक्त दिल्लीकी जनताके भी सभी वर्गीको जितना बना लूटा-चसोटा । और सब कोहेन्र हीरा तथा मयुर सिंहासनके साथ साथ अन्य विपुरु धन सम्पत्ति, जो अनुमानातीत है, ऊँटो. गघों और खञ्चरोपर लदवाकर वह ले गया।

दुर्गनोकी इस मयकर नादिरताहीसे दिल्ली धन-जनहीन हो गयी और दिल्लीका वादशाह भी जो साम्राज्य और अधिकारिवहीन तो पहले ही हो चुका था, अब धनहीन दिरही भी हो गया और उसकी प्रतिष्ठा भी समाप्त हो गयो। सि चुनदके पित्रचमका अफ़ग्रानिस्तान आदि समस्त प्रदेश नादिरताहके राज्यका अग वन गया। मुहम्मदशाहके अन्तिम दिनोम अहमदशाह अन्दालीने, जो नादिरताहकी मृत्युके उपरान्त उसके साम्राज्यके पूर्वी भागका स्वामी वन वैठा था, पआवपर आक्रमण किया किन्तु शहजादे अहमदशाह और वजीर कमालुदीनने उसे पराजित करके पीछे हटा दिया। इसके एक मास पश्चात् हो मुहम्मदशाहकी मृत्यु होनेपर उसका पुर

काम नेक्यांनी केनावा नानीनगरी अधिक रमजुर्गिने अर्थकर मुख हुआ । विशव नुष्यकार्तिक हाथ ही रहा । इस पराजवने देशकार्तीको समर सीव यो । मध्या बन्तियो को बन्ति हुई बढ़ तो नेवचा तक ही स्रोतित थी. बढ़ोर विनिध्या क्षेत्रकर मार्थि बरदार स्थान्त वनिष्ठकामी चाना वन स्टि । धारतीय प्रतिकास । एक परि 411

बारबाह्य क्षारा । मन्दानीये थी वर्षः स्थीनार कर विकार १७६१ ई. में बहुबरपाद अम्पानी नियान कैन्यप्रान्तिक बान किर बारतके बन्दाजरेवने जाना इस बार नह नराठींका बन्ध करनेके परेशको हो पाला च्या । १७६१ ई. वे बाजालीके बेलुलारे मुक्तवारीके

थीनका बनानो । बन्धानो स्वर्त पारवत्तर बालन करनेवा अनिकानी ना । इती बीचने बालमबीरका अब कर दिशावना और क्याचा वृत ब्रह्माचा असी नीहर, बाहमानन विशेष (१ ५९-१८ ६ ई.) मान्छे विस्तीया

बारबारकी विषय कर दिया । १ ५४ ई के क्योर बाबीजरीयने बारबाइ बाहबरमाइको नरकान करके नक्तनी बारबाइ बडीग्ररपाइके पुत्र जाननपीर शियोज (१७५४-५५ हैं) की बारबाद बनाया । १.४५६ है. मैं बन्दांभीने बाना शीलरा बाजनच किया हुई बार उपने तिन्तीको ही इस्तवतः करण चनः राजवानीके वर्णकरः सटावानी तका बच्चा बारिने भी मजबर नरमेदार और मरबाबाट किये । सब बच्चा विधेष करनेवाची इब बेसमें बीई मुजनमान सारित नहीं थी। सबके नवाब मीर रहेने बने अपना अविचान आन्ते बाने बारे वे । नरार्टिंग

वे वरेताल के वेतवाहीको सन्ति इत बक्त सामे बरम-विकासी गाँव रही की और क्ल्डीन नेजाबकी भी १७५८ हैं. में बिजब कर किया ना) बाउर भारतीय सुनवस्थानीये अध्यानीयोः सदायताचे अस्तातीको हुनवस्येती

सरवरवाद (१७४८-१०५४ र) रिन्नोरा बारवाद हुमा । स्वी का ईरराबारके निवास और दिल्लीके बजीर आनक्ष्यद्वींकी भी मुख ही बनी की । जब बनका बीता जारी होता बारी र हुन्छ । सन्दानी में बंजाबार बुबरा बाहरूम दिया और यब कामाबी बहे ही दे देनेहे निए

अवधका नवाब शुजाउद्देशा दिल्लोके बादशाहका बजीर मी बन गया या और क्योंकि वह अव्दालोका सहायक एव समर्थक या इसलिए उसकी इस विजयसे उसे तथा नज़ोबूद्दीला रहेलेको ही अधिक लाम हुआ। उत्तर भारतको इन विषम परिस्थितियोंका लाम उठाकर चालाक अँगजोंने वंगालपर प्रायं पूर्णिधिकार कर लिया था। १७५७ ई० के पलासीके युद्धके उपरान्त अब मीर जाक्रर आदि वगालके नवाब उनके हाथकी कठपुतलो मात्र ये। दिल्लोका वादशाह शाहक्षालम मात्र एक तमाशाई था। अहमदशाह अव्दालोका मारतके साम्राज्यको भोगनेका स्थप्न भी उसके सैनिकोंके यिद्रोहके कारण भग्न हो गया और उसे अपने देशको लीट जाना पहा। वह फिर वापस न आया।

१७६५ ई०में इलाहाबादमें वादशाह शाहआलमके दरवारमें उपस्थित होकर अँगरेजोंके गवर्नर क्लाइवने २६ लाख रुपये वापिक करके बदछेमें उससे बगाल और विहारको दोयानी और कडा एवं इलाहाबादके जिले अपनो कम्पनीके नाम लिखा लिये। वास्तवमें दिल्लीका बादशाह अव नाममात्रका हो बादशाह और सम्राट् था । वह अपने पूर्वओंके प्रताप और अधिकारको एक गोण एव उपेक्षणीय छाया-मात्र रह गया था। घटना-क्रमपर उसका कोई प्रभाव न था। दिल्लो दरवारका परम्परागत अधिकार-मात्र इतना ही रह गया था कि विभिन्न पर्झो-द्वारा किये गये वलात एव अन्यायपूर्ण कार्योंको उन-उन पक्षोंके कहनेसे अपनी शाही मुदाकी छाप-द्वारा याह्यत न्याय्य रूप दे दे । वादआह शाहआलम कभी किसी मसलमान सरदारका या नवायका, कभी मराठा राजा सि चियाका और कभी सँगरेजी-का बन्दी या आश्रित रहा । गुलाम क्वादिर नामक एक रहेले गुण्डेने, जिसने चसके दरबारमें थोडा प्रभाव पैदा कर लिया था, शाहबालमकी दोनो आंखें फोड दीं। महादाजी सिधियाने उसको क्षेत्रसे वादशाहको मुक्त किया और अपनी ही एक प्रकारकी कैंदमें रखा। १८०३ ई० में वह अँगरेज कम्पनीका आश्रित हो गया और उससे प्राप्त वार्षिक पेंदानसे अपना निर्वाह करने छगा।

बहानुरबाद दिवीन (१८६७-५७ ई.) नामनामके बारबाह के। वे बेंबरेंब म्यानारिवर्षिः गैंदनशेनी नेवच बालके किर बारवाह वा बनाद प्यका प्रयोग करनेके मनिकारी थे। महापूर क्रियोके बन-स्वर्गितीन नामक्रिकेमी पहार-दैनारके बीवर ही बनवी बतस्थान्त और बामान्य ब्रीनिक में । वर्तीर्ने बनने नर्नजीके क्रारीत गोरवकी स्पष्टिमें बाँतु बहुत्या, बारी क्रोडे-वे परिवार राज्य कुछ बावरों और मुख्यकोरे चारुकार नुवाहरीये बने बरबार और फटे-पुरावे काई पहले ति अस्य बोरे-वे शीवर-नाकरींने

बाब रिक्टीके एक बामान्य एडिकी श्रीति दिन विद्यामा ही बचके भागाने रह नवा ना । १८५७ ई. के धनारुक्ति विहोर्ड करराना क्वमा मी

क्षत्रमा पुत्र मनवर द्वितीन (१८ ६-३७ वे) मीर तवनतार गीत

कल हवा । मन्तिम बादयाह बहानुरदाक्षके पूर्वी बाविका क्य कर विवा कता को एको रंगुनारे निकारित कर दिल्ला नवा और बार्डि केंबरेडीके करोफे क्याने हुन वर्ष बाब बनको कुन् हो बची और बनके बान नुसर्के भी बारधाइतका बन्त ही क्या । मुशलमान नवाच-१. देवरावावके निकाम-देवरावाद रविनारे निवासीका नुक्करानी राज्य मृतक-साधानको प्रतरके स्वत वसकर षत्रीके अपनेपॉरर स्थापित होयेगाना वर्ग-प्रवत मुख्यमानी राज्य व्यानीर नहीं राज्य क्योंपिक स्वामी भी रहा बाद हो क्योंपिक बनी एवं वसूड यो । बहुगुरवाहने रेक्ट वे ने चुनैनकार बचीको अस्ता बबीर मीर

यक्तिमना नुवेपार बनाया वा अभिन्नकारने अपनी ओरवे बाजवाँ पनाप-को सुदेश पालन करनेके किए निवृत्त्व कर विद्या था। किन्तु अल्बाद क्रस्त्रधिवरने कृतिनक्षारको वरना बाखा बीट १७१५ ई. के अनलन निर्मा

भाषातेच इतिहास : एक गाँउ

कमीनवाँ मानकमाना प्रतिकारा सुवेशार निप्रका किया । १७२१ ई. में बाबपाद महानदमाक्ष्मे वामक्रमद्वीको क्रिकी बारच मुस्तकर मन्ता बनीर बनाना फिला पढ एक का बाद ही आपस करने मुदेने पड़ा बना

और १७२४ है में बनने निवासक्तरकती बनादि नारम करके मत्त्री

41

स्वतन्त्रता घापित कर दी, हैदरावादको अपनी राजधानी बनाया और मुगल साम्राज्यके दिक्तनके पूरे सूबेपर अपना राज्य स्थापित कर लिया। आसफजहाँ बहुत योग्य, चतुर और वृद्धिमान् था । अपने शासनके अन्तिम २५ वर्षीम मोरगजेय दिवलनमें हो रहा या अतएव उसकी वहस-सी धन-सम्पत्ति वहीं रह गयो यो । दक्खिनको मुसलमानी सल्तनतोंका अन्त नरके जो यिपुल सम्पत्ति औरगजेवने यहाँ प्राप्त की थी उसका भी वहत-सा अश नहीं रह गया था। यिजयनगरको लटसे प्राप्त अपार धन इन सुछतानोके पास था। अँगरेज आदि अभोतक कुछ छान नही पाये थे. शिवाजी और उसके उपरान्त पेशवाआन ही जा योडा-बहुत छीन पाया था उसके अतिरिक्त शताब्दियो क्या सहस्राब्दियोंसे संचित्र होतो आयी दक्षिण भारतकी अपार धन-सम्पत्तिका बहुमाग निजामके ही हाथ लगा था। उसके प्रवल प्रतिद्वन्द्वी पेशना थे, उन्हींका उस सबसे अधिक भय या। पेशवा बाजोराव भारी विजेता एव पराक्रमी था, उसके कारण मराठों-में परस्पर फूट हालनेकी निजामको चाल असफल रही। अब उसने उनसे मित्रता बनाये रखनेमं ही कुशल समझी । १७२८ ई० में उसने पेशवाकी नियमित चौथ देते रहना भी स्वीकार कर लिया। १७३८ ई० में उसने पेशवाको दिल्लीको ओर बढ़नेसे रोकनेका भी प्रयत्न किया किन्तु भोपालके निकट पराजित होकर चुप बैठ रहा।

१७४८ ई० में वृद्ध निजामको मृत्यु हुई और उसके दूसरे पुत्र नासिर-जंग और पोते मृजपक्ररजगके बीच उत्तराधिकारके लिए सध्यं हुआ। फ्रान्सीसी क्यापारियोंने मृजप्रकरको सहायता की। युद्धमें तो वह हार गया किन्तु १७५० ई० में नासिरको मृत्यु हो गयो और मृजपक्षर निजाम हुआ। उसने फ्रान्सीसियोंको बहुत-सा धन व जागीरें दों और उनको एक पलटन मी अपने राज्यमें किरायेपर रख छी। इस प्रकार फ्रान्सीसियोंका प्रमाव उसके दरवारमें घढ गया। मृजप्रकर भी शोध्य हो एक युद्धमें मारा गया। उसके स्थानमें उसके लड़केको वैचित करके आसफ्रजहोंके तीसरे पृत्र

बब्धनवर्गको क्रम्वीविगोके प्रविनिधि पुत्रीने महीपर र्वद्यमा । १७५८ है में बुधीनो बक्की बरकारने बास्त बुका निमा और निशान धाराने कुम्सीवियोंके अध्ययका सन्त ही नथा। बकारवर्षनको आस्कर क्सना माई निकासकरी बनाव बन नवा । बन निकास, बराडे और नैतृरता हैपरमध्ये ब्रांसम् मारसम्। अनुसाने लिए परल्पर का रहे थे । औपरेजीन अपनी करणोतिके कमी विश्वीका और कभी विश्वीका पक्ष केवर और वन चाहा बहुना क्वन अंब करके का विश्वतत्त्वात करके का बन ही दी नन्दीत करका बीर करनी बल्डिको बडावा प्रारम्य किया। भारतीम रामार्थे और नचनोत्री शक्ताके शारत करों बाबाओर कुबनदा निक्ती नवी । १.९५ वें में निवासको क्यूनि मानी बहावकशानि-वीतनार्के धायमें चैदावर गेंचु क्या दिला। अब नद्र धनश्र माजिस को एक प्रकार के मधीन ही ही नदा । कर्न-धर्म यह मंद्रेगी नदारीनता दतकी नुर्व ही वर्ती कि निवास सैंगरें होता एक माद्याला है अनुवरस्था रह बता की बनकी कार्ष रेतृत्र राज्य-वैतरका क्रांपिक वर्गमेल कर वस्था वा । क्रारी कुछ वर्ष वर्ष शब्दानका प्राध्यक्ष उत्तराक बन्धार बोकामे विश्वस्त होईको सन देशी राज्येकि बाय-ताम अब नाम मामग्री राज्य बस्ताना सी क्षण कर दिया । ध्वतिकार कार्ये शिवासका पर्तमान बंदान बाज वो शिवाने पर्या-विक बनी व्यक्तिपर्नेमिन्ते हैं । विक्रम नी क्योंने सेनरेनोकी क्रम-क्रामार्वे हैंच्यानके निजाम ही मारक्यमें इस्थाय और मुख्यानोके बचान नेता बंधाय वर्ष अधिवासक वर्ष रहे । हिरशबादको निकालके साववंके बाव-बाब ही परिवरने पुष्ठ करा होते-होते नुबकशन भगाव भी वे वो नवन निवासके बाग्रीन में लिग्तु कवानी मृत्युक्ते बाद ताम: समस्यक्रमा हो परे वे : इस्मैं क्रमीतक्या वराम अववद्गील प्रमुख वर्ग थोला था। जालकाम्बी-की मानके कर्ममा ही गाँध ब्रह्मके को बहुत्वे क्यारकर लाई शामार वविकार करवेका अक्त किया और वक्तवीर्विक्तेंकी बहाबता की । बननसीय रूपार है में बादा बना। वक्के दुन शहरकरवर्ताना रक्ष

बारतीय इतिहास पुरु धरि

Ľ٩

अगरेजोंने लिया। इस प्रकार कर्णाटकको इम छोटो-सो नवायीके आन्तरिक सगर्होंमें पहतेके द्वारा ही अँगरेजों और फ्रान्सीसियोका भारतको राजनोति-में सर्वप्रथम प्रवेश और हस्तक्षेप हुआ। मफलताने अँगरेजोंकी राज्य लिप्पा-को चत्तेजित किया। १७५१ ई० में फर्णाटकके उत्तराधिकार-युद्धके सिलमिलेमें क्लाइव-द्वारा अकटिके सफल घेरे और विजयमे ही मारतमें अँगरेजो राज्यका सूत्रपात हुआ।

२ अवधकी नवाबी-निजामके साथ हो, १७२४ ई० म मबादतवा नामक सरदारने अवच प्रान्तपर अधिकार करके अपनी स्वतात्रमा घोषित कर दी थी । अवधके नवाबीन पहले फैजाबादको और तदनन्तर लखनळ को अपनी राजधानी बनाया । दिल्ली वादशाहीको अवनति, नादिरशाहके आक्रमण तथा देशकी राजनैतिक अस्त-व्यस्ततारे लाम उठाकर मबादतर्था-के उत्तराधिकारो सप्टदरजगने, जो बादशाहका वजीर भी सन गया था, अपनी धावित पर्याप्त बढ़ा ली और अवध प्रान्तके अनेक छोटे-छोटे हिन्दू एव मुमलमान तालुफेदारोको अपने नियात्रणमें रसकर तथा उनकी सहा-यता-सहयोगसे अवधकी नवायीको उत्तर मारतकी प्रधान शक्ति बना लिया। निजामके पौत्र गाजो उद्दोनके पश्चात् सफ़दरका उत्तराधिकार अवचका नवाव गुजाउद्दीला भी दिल्लोका बजीर वन गया। इसीलिए वह और उसके कई उत्तराधिकारी नवाव-वजीर अवध भी कहलाते थे। सह मदबाह अन्दालीका वह सहयोगी और पक्षपाती या। पानीपतके तीस युद्ध (१७६१ ६०) में बह ससैन्य उपस्थित था किन्तु युद्धमें उसने की मिक्रय भाग नहीं लिया और उमके समाप्त होते ही पुपकेस अपने राज्या लीट आया । १७५९ ६० में उसने शहजादे शाहआलमके माय बिहारप भी बाक्रमण किया या किन्तु महाइयके नेतृत्वमें अँगरेजी सेनाके प्रतिरोध कारण विफल होकर लीट माया था। १७६४ ई० में यक्सरके युद्धमें उस मोरक्रासिमको अगरेजॉके विरुद्ध सहायता की थी और उसे बादशाह शाह बालमकी भी स्वीकृति प्राप्त गी। फिन्तु इस युद्धमें अँगरेजोंको ही विज हो ननी । १७७३ वें से बनारतको शन्तिके शनुवार नशको नवाच काण वनमें वयोजें सवरेबंधे क्या और रक्षाद्वाराको विके बारदावते किन-नाकर अपने नान किया किने और अवने वर्ष अंदरेशोंकी सहस्रकाने खेळेली बन्तिका बन्त कर दिया। वक्के बत्तराविकारी आवपूर्वकाको १७८१ ई वे अंतरेच नवर्तर गारेन देखिन्छने पूर्वतवा चंतु बना दिया। कवी बेंबरेक्षी केवाके म्याने wiff alle wall frent untill wif und nemb ferme grant. सीव कारी रखी । वदावकी मी बीर दारीकी की सिर्वदशके काम करा । क्षत्रको देवलेकि साथ किया वदा बद्ध सम्पानपूर्व एवं स्वयंग्रह-सम्ब

बरतान वैतिराधका एक महिरिक्त क्याब बता। बातकृतीका करने क्यानकः के प्रसिक्त बनावयांकी निर्माणके किए प्रतिक्रि है बीए कक्षणक नयरमें एक बार्ग नवालो करने बचनी प्रतिक्रियान तक पत्री बार्ग है। बढने क्यापिकाचे समावे महान अमरेबेकि माद्रकार एका बालना विकासी और निकामें थे। अस्तिम नवाम माचीवसकीबाहकी १८५६ हैं। में बीवन रेकोने जनकरोंके महिला पूर्ववे के बाकर करों कर दिना बीर बसके

हुई । युवादर्शकाने पुसार और इकक्षातारके दुर्व क्लि क्ले । बह्यानको मो एव प्रशास्त्र अवदेशीला बंदबल स्तीवार कर किया । १७६५ है मैं दम्मद्वाबारको चपद्रावाभार बन्तिके हारा क्याइक्ते इस्तहाबाद और नहाँके विकास अधिरिक्त ५ साथ स्त्रमा बुद्धके इरवालेके फर्पी देनेका नवालके नवन के किया और फिक्षों भी तीवरें नवके निवस परस्पर एक-पूचरेकी तहानता करनेकी वर्त वो करवा की। मधावती बीजाकी रखाके स्थि किरानेपर अंबरेजी बेबा रखनेको बात यी तब हो नहीं और इन प्रकार बारको बारावकी को कामान पार्चा कर्षके जोतार हो स्थानकार गष्टवान

भागनायके जविकारका अन्य करके अववको अवरेको राज्यके स्टिन-व. क्याक्रकी नदावी-tv १ ई. वे बोर्डकर पूर्वस्तुनी

floor and floors o

भारतीय इतिहास १७ धन ***

खाँको वगालका सुवेदार नियुक्त किया था। विहार और उड़ीसांके प्रान्त भी धनै -शनै उसीके अधिकारमें आ गये। वह एक योग्य शासक था। दिल्लोकी राजनीतिसे प्राय पृथक् हो रहकर उसने अपने सूवेका मली प्रकार शासन किया । उसका पुत्र और उत्तराधिकारी शुजाबद्दीन (१७२५-३९ ई०) अपने पितासे भी अधिक योग्य शासक था, वह सहिष्णु, उदार और दानशोल भी था। उसके शासनकालमें वगालने सुख शान्ति और समृद्धिका अनुभव किया । यह नवाच पक्षपातरहित और अत्यन्त न्याय-परायण भो था। उस कालमें ऐमा व्यक्ति अपवाद ही था। दिल्ली या शेप भारतको क्रुराजनीतिसे उपने कोई सम्पर्क नहीं रखा और यद्यपि वह एक सर्वया स्वताय शासक हा या तयापि अपने-आपको दिल्ली बादशाहके अधीन और उसका सूबेदार हो मानता रहा और वार्षिक राज्यकर भी नियमित मेजता रहा। उसका पुत्र सरफ़राजलां (१७३९-४१ ई०) धार्मिक प्रवृत्तिका व्यक्ति तो धा किन्तु एक अयोग्य शासक था। उस समय उसका अधीनस्य बिहारका नायव सूवेदार अलीवर्दीखाँ या जिमे गुजाउद्दीनने ही तरक्की देकर उस पदपर नियुक्त किया या और अपना प्रधान वजीर भी बनाया था।

सलीवर्दीखां बीर, सुयाग्य और महत्त्वाकाक्षी था। नादिरकाहके वाक्रमणका लाम उठाकर उसने अपने स्वामी सरफराजखांक विकद्ध विद्रोह कर दिया। युद्धमें सरफराजखां मारा गया और अलोवर्दीखां (१७४१-५६ ई०) ने वगालके निहासनपर अधिकार कर लिया। अष्ट दिल्ली दरवार और बादशाहको पूस देकर उसने अपने लिए बगाल, विहार और उद्योसको सूवेदारीका अधिकार-पत्र भी सहज हो प्राप्त कर लिया और उद्योसको सूवेदारीका अधिकार-पत्र भी सहज हो प्राप्त कर लिया और उद्योसको सूवेदारीका अधिकार-पत्र भी सहज हो प्राप्त कर लिया और उद्योसको सूवेदारीका राज्यकरके नामसे सन्नाटको न भेजा और स्वतन्त्र उसने एक पैसा भी राज्यकरके नामसे सन्नाटको न भेजा और स्वतन्त्र नवावको हैसियतसे राज्य किया। हिन्दू, मुसलमान, सभी प्रजा उससे सन्नुष्ट थो। मुर्शिदाबादको उसने अपनी राजधानी बनाया।

मार करनी प्रारम्भ कर थे। और न्याद्ध वर्ष तक वह वरहींके प्रनिरोधि मान गा । माना १७५१ ई में बगारींको बहीबा बाल देवर यहने क्षमंद्रे आर्तिन जीन ली । बंशासकी चीचके अपने कार्ट्स १२ तरन कारा pfren bher ift und eine feit : aud auf ant mu nit @ कि समने बंगामके जेपायीको प्रथम दिया । ८ करनी आपूर्व कुछ आमीपारियो मुख्य होनेपर यसके हारा बनोमीत एव बनवा बाक्य स्मेहबावन बीहिय विराज्यीना (१७५६-५७ वें) नवार हुआ। यह बीर बोदा क्वे बडायब बा विन्तु अनुवर्त-होन बदल हुएक या। अंबरेबीयर वर्षे शरम्बने ही अधिकात या। बनीवरींनों को बचता जनुराति क्यपर निवायन एके हुए का बोर वयकी धालको बोनाने बाहर व बहरे देखा था। किन्तु उक्की जनके नरनाई ही क्लॉने बानी दिवेदली गुरू कर ही। नवावकी वे बच्चा करने करें, क्रमके बाररावियोंको करण देने करे और १७१७ ई के बाही फ्रांगानर क्ष्में को क्यानारिक मुश्चिमार्थ किसी हुई भी बनाम को है। बन्धिन कार्य शहाने समें विराय नद नव नहन न कर बका और बचने क्यू बद बन करवेंने रीया । अंगरेजॉले नवायकी माता नामनेने प्रपद्धार कर दिया जीर क्षात्रक बहुच्यणपुत्र बतार निक्ष बैजा । नवाबने अदेखित द्वांबर द्वालिक-बाबारकी कीमीनर वर्षकार कर किया । ब्रामन्त्रर अस्वसानर वाद्य

बनके पाननके प्रारम्भने ही। मराई।ने बनके पानपुर आजनम और लंड

विकास अपने में मेरिय कारि पार्थ मोर देवार्गि प्रमान क्रिकेश देवार दिवार मेरिय मोरियारी मान सैरिय प्रीवितीर भी स्वत्यस्त्र मिर्फा हो स्वा । मान्य कारणार पूर्वच ही नागार मोरियारी कार्यों कार्यक्रम मान्यकर्मानी क्रिय बीजबे किंग्स राम्य ही मेर्स क्रिय कार्यकर क्रूम सीकार कर क्रिया । पूर्व कारणों नामणी बीजके सबसे हीर-बाहरकी, भी मार्गियों क्रिया स्वति ही मार्गिय क्रूम कर कर मार्गिय या कार्यकर हो प्रमान सामित्र कर कर ही महिला मार्गियों

**

मास्त्रीय इतिहास क्या रहि

मिलाकर नथावके विरुद्ध एक भीषण पड्यन्त्र रचा और सव तैयारी कर लेनेपर झूठा दोषारीपण करके नयावको युद्धके लिए ललकारा । १७५७ ई० में पलासीके मैदानमें दोनों दलोगा भीषण युद्ध हुआ। नयावकी सेनाका बहुभाग जो मीरजाफ़र और उसके पुत्र मीरनके प्रभावमें था तमाशा ही देखता रहा। नवाब हार गया और बादी कर लिया गया, तदनन्तर मीरनने उसका वध कर हाला।

सिराजुद्दौलाके अन्तके साथ हो बगालकी स्वतन्त्र नवाबीका भी अन्त हो गया और इस विशाल समृद्ध देशपर बस्तुत सँगरेजोंका ही अधिकार हो गया । मीरजाफ़र नवाब बना । उसन मुक्तहस्तसे बलाइव तथा छैंगरेज कौ सिलके मेम्बरोको घन दिया। उसका अधिकार नाममात्रका ही या. वास्तविक शक्ति क्लाइवके हायमें थी। वैसे भी यह नवाब निकम्मा, क्षयोग्य और अफीमची था। १७५९ ई० में बाहजादा बाहआलम और नवाय वजीर अवधने उसकी अनीतिके लिए उसे दण्ड देनेके अभिप्रायसे वगालपर आक्रमण किया । नवायकी ओरसे सेना लेकर क्लाइव उनके विरुद्ध चला. इसपर वे विना लडे ही वापस लीट गये। मीरजाफरने प्रसन्न होकर मलाइवको ५-६ लाख रुपये वार्षिककी जागीर दे दी। किन्तु अँगरेजॉकी नोच-ख़सोटसे मीरजाफर भी तंग आ गया और उसने हचोंसे सहायता माँगो, किन्तु क्लाइवने उन्हें भी पराजित किया और उनसे हरजाना लिया। इघर नवामका खजाना खाली हो गया था, अँगरेजोंकी नित्य नवीन रुपयेकी मौंगको वह पुरा नहीं कर सकता था। हिन्दू जमींदारोको सहायतासे हो सिराजका अन्त करनेमें क्लाइव सफल हुआ या और अब मोरनाफ़रके मी मुख्यत हिन्दू दरवारी उसके विरोधी एव विश्वासमाती थे। १७६० ई० में क्लाइबके इंग्लैण्ड रवाना होनेके घोडे समय परचात् ही कलकत्तेकी अँगरेज कौन्सिलने मीरजाफ़रको गद्दीस उतारकर उसके दामाद मोरक़ासिम-को मवाव बनाया ।

मीरक्षासिम वृद्धिमान्, योग्य, बीर और स्वतन्त्रता-प्रेमी या, किन्तु

स्वाच्यक्त केरल

भेरियों भीच-लागिन के में पूर हा हिला था। बतारा सेरीफ मान्य-(दिनोया दिने अमेरे मान्य-मान्यान में क्षेत्र कार है से। कारी-कारमी वर्गुनारीओ कर कभी निर्माण कामा चारा को पॉनिनमें कार्य-दिगीम दिना मीट कम निर्माण कार्य-पिता हिला। पानमें दिन्दी हैं है से कुछे कर कार्य-सकत्त कर से क्षेत्र निर्माण केरियों कार्य-सार्य-दिना। मीरमार्थ- मुदद पर्याज्य निरम्भ साम्य-स्थाप केरिया कार्य-सार्य-सेरीमान मोन्य-मान्य-पितामें वेत्यक्त साम्य-दिनार्थ-दिनार्थ-स्वित्यक्त स्थापन स्थापने अस्तान्य वेत्यक्त साम्य-दिनार्थ-दिनार्थ-दिनार्थ-

बन्दरों पुत्रेषे वर्गात्म होन्दर स्वया अन्य हो पर्या : १०१५ हैं में बीरमार वर बर्ग और बेंबरा पुत्र कशुरोचा वराव हुआ । की। वर्ग हर्नामारको याप्तर्वित तीनके अनुसार क्यारने की बत्र वर्गाव ना बाह्य या सारवाह बाहबाहर्मी बंगल (सारा बीर वर्गामार्थ) कैस्सी,

वानुष्ट सक्ता धारणांविकार, आध्य वर्गनेय इन्युटी द्वित वी वरणा कर दिल्या व वरणाव्या तमान्ये देशिय सावत व्यक्ति ही वया (कर्मनेया वेशिय होत्या वर्गने व्यक्ति हो वया (कर्मनेया विकास क्रिकेट होता वर्गने व्यक्ति क्रिकेट वर्गने वर्ग

तम्ब प्रदेशस्य स्वित्रार् करके सान्त स्थान स्था नया निया या । वर्त्रावास्य मुख्यासार राजपुर, वरेली प्रोधीनीय वर्धार इनके प्रमुख समर से । स्वेडिक कारण ही वह प्रदेश को वर्षकरूकी स्वयान और स्टरफ्टर क्रीडर

446

बलर्ग,न इविद्रास पुत्र स्त्री

कहलाता था, रहेलखण्ड कहलाने लगा। मराठोंके वाक्रमणोंसे परेशान होकर इनके सरदार नजीबुदीलाने अहमदशाह अञ्दालीको आमन्त्रित किया था और पानीपतके युद्धमें १७६१ ई० में वह उसीकी ओरसे लडा था। अत तद्परान्त कुछ समयके लिए वह दिल्लीके बादशाका कार्यवाहक वन वैठा था। किन्तू अन्दालीके बापस जाते ही मराठोने रहेलोको फिर तग करना शुरू कर दिया। अतएव १७७२ ई० में यनारमको मन्यिके अनुसार रुहेना नवाव हाफिज रहमतखाँने अवधके नवाबसे यह तय किया कि यदि मराठे हहेलवण्डपर आक्रमण करेंगे तो नवीव उसकी रक्षा करेगा और वदलेमें ४० लाख रुपया पायेगा। अगले वर्ष जव मराठोने आक्रमण किया तो अवधके नवावने अँगरेजा सेनाकी मददसे उन्हें मार भगाया और रहेशोंसे रुपया मौगा। उन्होंने टाल-मटोल की। इसपर नवावने वारेन हैस्टिंग्सको सहायतासे १७७४ ई० में मीरनकटराके युद्धमें रुहेलोंको वरी तरह पराजित किया । वृद्ध रुहेला वीर हाफिज रहमत युद्धमें मारा गया । लगभग धीस हजार रुहेले देशसे निर्वासित कर दिये गये। रहेलोंका रुहेनखण्ड राज्य समाप्त हो गया, और अवधमें मिला लिया गया। कुछ रहेले और उनके सरदार इस देशमें फिर भी वच रहे, उन्हींमें-से एक रामपुरके आस-पासके प्रदेशका शासक वन वैठा । वही रामपुरके नवाबोंका पूर्वज था। किन्तु रामपुर प्रारम्भधे ही अँगरेजोंके अघीन एक छोटो-सी देशी रियासत-मात्र रहा ।

भे मेसूरके नवाय—गगवाहिक प्राचीन गगराज्यकी परम्परामें कर्णाटकका मैसूर प्रदेश होयसल राज्यके और तदनन्तर विजयनगर माम्राज्यके अन्तर्गत रहा था। विजयनगरका पतन होनेपर इस प्रदेशके एक प्रान्तोय शासकने अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिया। यह वश ओडेयर वश कहलाता है। १८वीं शती ई०वे मध्यमें ससकी राज्यशिक्त इस शोण हो रही थी और मन्त्री नजराज ही सर्वे-सर्वा हो रहा था। उसने राज्यके एक मुसलमान कर्मचारीके हैंदरअली नामक पुत्रकी योग्यता,

चनुरता एवं बुळ-नेपुच्यमे ब्रमावित होनर १७५५ हैं में क्वे डिडीयकमा श्रीतदार बना विशा । तरान्तर उन्हें बनकोरण बालीर है थी नहीं और राज्यका अवास वेकासीत भी सन्ता दिवा समा । १७६१ है में राज्यका समान बाबा जार क्यांके अविकारमें ही बना बीट यह बचने राज्यांनी मोरते बार्जुर्व राज्यका हो धालन करने बचा। किन्तु बबीका एक अनुबर काचीराम नामना प्राप्तान बक्का विरोधी ही नमा और कक्के कनुकीन

बाव विकार क्राके कालता वद्याल करने बना । १७६६ देनी हैराने मान्देरास्था समय किया बीट क्षेत्र इक विवरेने साजन्य बानी करके बाल दिया । बनी क्य क्यमें बेरनुर बावक प्रक्रित न्याचारिक अवरवर वित्रत करके सविकार कर किया । १७६६ हैं में राजाकी कुलु हो वाले-पर करने राजनहरूमोंको की कृता । उसने राजाके पुगर्की कामनावके किए विद्यानगर बैस दिया और स्टब्स राज्यका क्षरें-कर्त ही नया र सब बचने निकास सोट मधारोके काच मूटनीतिकः यन्ति-निवह करके

करनी प्रतिका प्रकार करना शुरू विचा। १७६० ई. में बक्की बना

बबके मरमाधी मित्र निवासकी बंगुका रेन्याको अंक्रेडोन वरानिस विना किन्तु १७६९ ई. में हो हैररमती अंबरेयकि महास्त्रं क्रिकेटर वह दौश सीर बचने बन्हें ब्रान्य करमेवर विषय किया जिनके सनुपार गेलीने एक हुमरेको सहानता करनेका समय दिया तथा विदेश प्रदेशीको कोटा दिया । किन्तु १७ १ ई. में अब मध्योंने हैदरमधीके सम्बद्ध बाजना किस बो बोपरेजीने मातरेके समुकार बच्ची कोई बहानता न की एक्टर नर बच्या चीर यनु हो नता । १७५८ हैं में चानके बान कुछ किए बानेके भारत सेनरेजीते नातीनर बना समस्य सम्मनार राज्य सीवनार कर किया, इनमें हैदरमकी और कविक बिड बना : निवाल और बराडीके क्षाप करने जेंगरेजीके विरक्ष जैंगी-मन्ति कर थी । विज्ञानको भैनरेजीने

चीड़ किया संपादि १ ८ ई. में हैंबराओं मामी पानवानी बीरेलर्जूण-वे वेना केवर पता और उसने क्यांत्रवर मात्रमय कर रिकारीर वहाँ भरपेट छूट-मार की। जँगरेजींके हामकी मटपुति मणिटक का नवाब तो अपन या ही। रक्षाके लिए आयो अँगरेजी सेना और उसके नायक कर्नल लेली हैदरअलीने काट छाला और राजधानी अर्काटमर भी अधिकार कर लिया। किन्तु १७८१ ई० में अँगरेजींने सर आयर कूटके नेतृत्वमें पोर्टीनोयाके युद्धमें उसे पराजित किया। मरार्टीने भी उसकी कोई मदद नहीं की। वह अकेला ही अँगरेजींके साथ युद्ध करता रहा और उसने कई धार उहीं पराजित भी किया। १७८२ ई० में हैदरअलीयी मृत्यु हो गयी।

किन्तु उसके पुत्र और उत्तराधिकारी टीपू सुरुवानने युद्ध जारी रक्षा। उसने भी कई बार अँगरेजोको पराजित किया और स्वय भी पराजित हुआ। अन्तत १७८४ ई० में दोनों पक्षोंके बीच मंगलीरकी सन्धि हुई जिसमे अनुमार जो स्थिति युद्धके पूर्व थी वही हो गयो। १७८६ ई॰ में पेरावा और निजाम टोप्के विरुद्ध मिल गये और उन्होंने अगले वर्ष उसे परामित करके एक जिला और ३० लाल रुपये उससे बसूस कर लिये। अंगरेज भी उनके साय ही मिल गये। इसपर टीपु शुन्य हुआ और फान्स तथा अफ़ग़ानिस्तानको उसने अपने दूत भेजे । अगरेजोंके परम दात्रको चन विदेशियोंकी सहायतासे यह अँगरेजोंको भारतसे निकाल वाहर करना चाहता या। १७८९ ६० में उसने अंगरेज़ोंसे सरक्षण प्राप्त ट्रावन्कोर राज्य-पर बाक्रमण कर दिया भीर लूट-मार मचायी। अब बँगरेजोके साथ खलायह छिंड गया, मराठे और निजाम भो उन्हें कि सहायक थे। स्वयं गुवर्नर जनरल कार्नवालिसने युद्धका नेतृत्व किया । कई युद्ध हुए किन्तु प्रत्येक वार टीपूने ही उन्हें पराजित किया, किन्तु अन्तिम युद्धमें वह बुरी तरह पराजित हुआ । १७९२ ई० में श्रीरंगपट्टनकी सिंघ हो गयी जिसके अनुसार उसक राज्यका छगभग आघा भाग, साढ़े सीन करोह स्पये और वचन पालनके आस्वासन रूप उसके दो पुत्र अँगरेजोको प्राप्त हए । टीप इस अपमानजनक सन्धिको न मूल सका। अँगरेजोंके विरुद्ध वह नैपोलियनसे भी पर-व्याप्तर करिए रहा। भी रेडियें शिवार करिया क्षेत्र क्रिकेट स्थाप करिया। इत्तर १७६६ में बाद स्वेत्रकोंने रोपूर्व राज्यर स्वयान करियानोंने रोपूर्व राज्यर स्वयान कर दिया। त्याप की स्वयंत्री क्षेत्र स्वयान कर दिया। स्वयान कर दिया। स्वयान करिया क्षेत्र स्वयंत्र प्राप्त करिया। स्वयान क्षेत्र स्वयंत्र राज्य स्वयंत्र स्वयंत्य स्वयंत्र स

शुक्त सका हुना नारा पता । ट्रमुंक क्याण एजका कार-कारण संपरिपोर्न करी क्या किया की स्टाप्टिक वाम तो किया कि प्रेमुक्त केट एजका गुर्का तीकेश्य केले एक एजनुमारको वीत दिया निर्मुक्त कर किया । जिल्हामा वह दियुक्त हो जारू जन्मी पुरिकामी नार्मी निर्मुक्त कर किया । जिल्हामा वह दियु एजन कर्मान एक पात हाथा है। दिग्नी क्यों के प्रमाण कर्मा कर दिवस क्या कर्मान एक प्रकार क्या हाथा है। दिग्नी क्यों के प्रकार करियु कर दी नार्मी ।

करनेवाल विकास कुट राजनीतियां, प्रकास केवार्ती और बीच गैंडन या। काफी वारावालिय वर्षी दीव थी। यह स्वाराव्यक गरेव और क्षेत्र या। काफी वारावालिय वर्षी दीव थी। यह स्वाराव्यक गरेव और काछा गा। बोचू भी बानवर्षी कारण कीर कोंग्रुल था। यह मुख्तिकत और रिवारारिक भी या क्ष्या मात्रा कारणी और कुटियोदिस्का मावस्त्राच्या था। वक्ष्यों भी वाच्या गया काणी कारणी और प्रकार से करें वे हिस्साम कीरों दियुं केवा कीर कारणी कीरों के मात्रा कीरों की कारणी कीरों के मात्रा वाच्या कीरों विद्या कर वाच्या कीरों विद्या कर वाच्या कीरों विद्या कर वाच्या वाच्या कीरों विद्या कर वाच्या कीरों विद्या कर वाच्या कीरों कीरों के कारणी कीरों कीरों के कारणी कीरों कीरों केवा कीरों कीरों कारणी कीरों कीरों केवा कीरों कीरों कारणी कीरों कीरों केवा कीरों की अत्यन्त वीर एव साहसी घोडा होते हुए भी कुणल सनानी नहीं था और कुछ अदूरदर्शी भी था। सबसे बडा अपराघ इन पित्रा-पुत्रका यही था कि वे अँगरेखाको नीति और उनके उत्तरोत्तर शिवन-सबर्धनमें बावक थे। विन्तु साथ ही य एकमात्र ऐसे नरेश थे जा प्रारम्भने अन्त तक स्वतः त्र ही रहे।

जपरोक्त प्रमुख मुसलमान पिक्तियों के लिरिक्त कुछ अप छोटे-छोटे मुसलमान नवाब भी भागतमें यत्र-तत्र उत्तर्ग हो रहे थे, कुछ पहलेसे चले आ गहें थे, कुछ इसी कालमें लूट-मारके वलपर बने और मुख अंगरेजानी कृपासे अस्तिन्वमें आये। रामपूर, भाषाल, टाक और जूनागढ़के नवाब, सिन्धके अभीर, लुटेरे विण्डारी मरदार इत्यादि इसी प्रकारक गोण गुसलमानी राज्य थे। य प्राय सब सहअ हो और प्रथम अवसरमें हो अँगरेजाके अपीन होते चले गये।

राजपृत राजे—इस कालमें राजस्थानके प्रमूप राजपूत राज्य उदय-पुर, जोघपुर, जमपुर, जैसलमेर और घोकानेर पे। बोरगजेबके समयमें राणा राजसिंहने समस्त राजस्थानका नेतृत्व किया था और मुगल मम्राद्स सफल लोहा लिया था। उसकी मृत्युके उपरान्त सग्रामसिंह दितीय राणा हुआ। १८वी धातीके पूर्वायमें वह ही मेवाङ्का महत्त्वपूर्ण राणा था यद्यपि राजस्थानका नेतृत्व अब मेवाङके हाथमें नहीं रहा था।

जोषपुरके राठौर महाराज जसव तिमहको मृत्युके यादमे ही लगभग ३० वर्ष तक मुगलोंके विद्रोही रहे, किन्तु १७०९ ६० में बहादुरसाहने महाराज अजीतसिंहका राज्याधिकार स्वीकार करके और उन्हें साही-सेवामें उच्च पदपर नियुक्त करके राठौरोंको मृत्तुष्ट कर लिया। अजीतसिंह वीर, चतुर और फुधल राजनीतिज्ञ था। करखिंसयरके समयमें कुछ दिन दिल्ली-में रहकर उसने वादशाहीका सवालन किया और उस कालमें उसके विश्वस्त जैन दीवान रमुनाय भण्डारीने मारवाड राज्यका कुशलताके साथ सासन किया। अजीतसिंहके एक अप जैनमनी सिमसी मण्डारीके प्रयत्नसे हो

बा मुनियाने रियमे बहिया बयानेवा संदर्भ रहात दिया था। बहरागर चारताहरू अमेनिवरणी बुकरान और अवर्वरका सुदेशर निवृत्त विमा । न्द्रान्द्रशाहके वनवने भी सर्वात्तिह सन ब्रान्तवा नुवेशार दश । वनके कारान्त क्लारा काराविकारी बोक्ता-नरेख बवर्जनंद भी देशने है १ देश्वर्तं न जन बालाका मुवेशारं हा । संबोत्तरिहणी सर्वित्र मीर प्रचार

बाप्पासीर परवारचे इसं बालागरहे नवील वह क्या वा स्थानीर बोर नुबराज्यो बुरेशारीके कारण क्षत्रे राज्यको धाँला और बर्न्स्ट मी

कार्या वह बनी वा । बरेन्दरे मुक्तमान मध्या बचने चवराने शर्म में बबके बार अवस्थित्यों सांचा और प्रवाद की बाद बैंगा ही रहा है बरपुरने इन कामने बरातात क्याई बर्बान्द्रका राज्य या । बा मी बड़ा केच्य चतुर विधारनिक इसं प्रधारी गरेख था । अयुर नगरहे बार्स्टीक निर्माणना और उने बर्बाट करनेका अपना सैन हुने ही है। विविध बाहिरवरी की एक शामने बीत्याहन दिया क्योतिवर्तिकारे एके रियोध सेन का कोर नक्षत्र ब्राईएएउसों काहिक प्रवेतेशक किन् बतने क्षत्रुर,

रिक्ती बार्जन नाराच्या आहि कर स्वानीने कवार-अत्तर का मानमीनर बन्दावे थे । रिल्ला बरवारने इत्तवा अन्तरिक नाम और अनाम था । इंड प्रचार बॉर्ररडेंबचा कुचुके बादः समानव तीख-मानीस वर्ग प्रकेत बररोश्त नोबंदि स्परितन बांश परं प्रश्नवंद बारन राज्यसम्बद्ध नर्शन बच्च वर्षत वन वया वा । राज्य बंबावनिष्ट राहीर अमीर्शन्द मोर बचाई बपविश्वमें परस्तर बेल और वैश्वा थी रही और इन बीपीन निकर सह गीवनां भी बनावां जो कि अपने चंतुरू प्रशास हमें बच्चे मारवादीको कोई शिन्तु-विराधी नार न अपने हैंने और वर्ग-कर्न- मुक्तक-मानोंको पराबुध करके सम्बद्ध हुआ हो देखने द्विष्ट्र शाय-प्रतिपन कुरस्तान करने । इतने कर्युं भारी और कुरेबॉका मा बहुबीर मान्य नर्य, और वेजवानीको निकारिका को अध्यक्ष दिशा करा। शांकान जंबान और जनमंद्रे स्वयन्त्र हो। बलेवे बाजाञ्चला जो हुए कान हो पहाना गर 411

इनकी योजनामें सहायक ही था अत उसे रोन नेका इन्होंने कोई प्रयत्न नहीं किया। नादिरशाह-द्वारा दिल्लीकी भीषण ट्ट-मारके अवसरपर मी ये अपनी राजधानियामें बैठे तमाशा देखते रहें। किन्तु इसी बीच राणा सप्रामिस्ह, महाराज अजीत निह तथा बीर छत्रसालकी मृत्यु हो चुकी थी। राणावा उत्तराधिकारी अयाग्य था किन्तु अजीतिसहका पुत्र अमयिसह अपने पिताका हो अनुमर्ता था। १७४३ ई० मे जयिमहकी और १७४९ ई० में अमयिसहको मृत्यु हो जानसे राजपूत पुनरत्यानको यह महान् योजना स्वयन बनकर रह गयी।

हिन्द्रपदपातनाहीका समर्थक पेशवा बाजीराव प्रयम भी १७४० ई० में मर चुका था । उपरोक्त राजपूत नरेशोंक उत्तराधिकारी अस्पन्त अयोश्व और निवम्मे थे। एक ओर दिल्लोका बादशाह दूत वेगके साथ बल, धन और अधिकार होन होता जा रहा या और दूसरो ओर दक्षिणके मराठाने उत्तरापयके विभिन्न भागोंपर लुटेरे आक्रमण प्रारम्भ कर दिये थे। अब उन्होंने इन राजपूत राज्योंको भी न बख्शा। उनके साथ ही छुटेरे पिण्डारी सरदाराने भी राजपूत राज्याको लूटना-यसीटना गुरू कर दिया था। आये दिनके इन सकटोने राजाओका नैतिक यल और अधिक कमजोर कर दिया। अन्त कलह और गृहयुद्ध आम हो गय। ये उत्तराधिकारके प्रश्तो एवं विवाह-मम्बन्धो आदि छाटी-छाटी बातोंके लिए परस्पर एक-दूसरेसे भी छड़ने लगे और मराठे उन झगड़ोमें हस्तक्षेप करने अपना उल्लु सीघा करने रुगे। जैसा कि कनल टाँडन अपने प्रसिद्ध 'राजस्थान'में लिखा है ''जाति-विरोपका पतन स्थय उस जातिके द्वारा हो होता है। जाति-गौरवके सुयको अस्त करनके लिए यदि वह जाति स्वय आगे न बढ़े तो किसी अन्य जातिके द्वारा यह कार्य कभी भी सिद्ध नहीं हो सकता। जो महाशक्ति जातिकी प्राण-प्रतिष्टा कर देती है, जातिको नस-नसमें अपना अध्ययं तेज भर देती है उस महाशक्तिका जिस दिनसे जातिने अपमान किया और आएस्य एव विला-सिसाके बशीमृत होकर जातीय भ्रातृभावकी जडमें कुठारापात किया उसी नीतम बढावें संक्रम की बदनरमें बढ़कि रहता। नाक्ष्मिक काम डियारी गानक मूँहरुडे पुरोक्षितने नावित्धारी नवा हो । वेतन वार्निक निर्देशने बन्ता डोकर बस्तै। सन्तर्फ बनेक मैन-मन्दिर और मृतियो गुडगा सामें चैनियोंका मोर अपनाल किया और चनपर वर्धकर अरवाबार विशे तथा र्च बीकरबाल-जैसे प्रसारत विद्यान संस्ताची बीनी झीसंके स्वारम ही हरनीकें पैरॉफ्ले कुथस्त्राकर सरका शाला । सम्मत राज्यस्त्रालके क्रियु स्त्रु स्टला मन्तर्व भी और देखके राज्यांचीन और वैशिक ब्लानकी ही परिचायक है। नुदेरे मराठी और रिन्हारियोंके निरमके बालों क्ये नहवडीने इन राज्यी-की करा तीत से थी। करना तम्मूर्व धालन कम्प्यतिकत हो। बना था। राजा कीन और अनके आसल करनार मालवी - विकासी और गावर पर नवे मैं । राज्यतान निकारन वर्ष निकारत हो बंदा का । देनी बोनकीन विवालियें क्या अंतरे बीचे करका करत हमत बद्धाना थी बक्तत राज्यत राज्या-मोने अरबाल पराणीनका बाकी धीयमणी तरबळ करबंका साहि किसी पी बादको परवाद व अरके बहुच बीर एड्डम ही क्लफे बंरक्रमधी बडोक्स मानकर बद्धम कर किया । इस प्रकार १९मी यहाँकै आरम्मने मी समर्द् बीयनर क्यमपुर, बीमानेए, बैनकमेए, कोशा मुँध बलबर बादि राजनुतानेके क्षेद्रे-वर्ड राज्यतः पान्य वैदर्शिको परायोजकाने वर्तजानकाल-वर्तन्तु की र्देन बुरमित रहे गाँग माने । मुनीमणार्गी बीर करवाक १ ३३ई में जारती मान गर्मेच नित्रोदी बना पदा किन्तु बनके बचराविकारी निर्वेश वर्षे मधीन रहे, बड़ा करके भीरका कार्य तथा सन्य प्रदेशीके इमे-निने राजपूर राज्योंको को बड़ी कीन हुई आर-वानरा एवं फिलोके बदन अबुराके बाय-पांच बारोंकी पनी बल्ती की बोरंगतको समयमें १६६९ है में मोकल बाटके नेतृत्वमें दरा

प्रदेशके पार्टीने बनागी दिल्य-वित्तेन्द्रों ग्रेजिके निरीवर्षे वर्गवर वित्रीय विना

मारतीय इतिहास एक धी

रिनमें बढ़ जाक्रि पालके बलवाकों केंद्रती चन्द्रों काही है।" जिल करन १७६१ हैं में माराजकी सभी अभाग राज्यक्रीस्तुओं दावीचटके क्षेत्रमें या और वाही फ़ोनदारको भी मार दिया घा । कठिनतासे धौरगजेवने इस विद्रोहका दमन किया था। १६८८ ई०में राजारामके नेतृत्वमें बाट फिर मडक चठे और १६९१ ई० में उन्होंने सिवन्दरेमें स्वम अकबरके मक्षवरे और शवका छुटा। सम्राट दक्षिणमें या और उमये सरदार कठिनतासे इस बिद्रोहका दमन कर पाये। १७०५-०७ ई०में भज्जा जाटके नेतृत्यमें से फिर महक चठे । यहातुरधाहने भज्जाक पुत्र चूडामनका शाहो-मेवामें नियुवत करके जाटोंको सन्तुष्ट किया किन्तु फर्रसियर उससे रुप्ट हो गया अन चुडामनने थून नामक स्थानमे एक सुट्ट दुर्ग बनावर शांवनमंचय करना प्रारम्म कर दिया । बादशाहन १७१६ई०में मवाई जयसिहको उसका दमन गरनेके लिए भेजा । राजाने यूनपर अधिकार कर लिया किन्तु बादशाहको उसके झाम दरवारियोन जाटांके साथ सुलह कर छेनका परामदा दिया। सचि जाटांके अनुसूछ थी और वे राजधानियो आगरा एवं दिल्लोंके निकट-वर्ती प्रदेशमें ही एक भयप्रद शनित धन गय । मुहम्मदशाहके समयमें चुडा-मनके पुत्रोंने फिर विद्रोह किया और जब शाहीमेना उनके दमनके लिए मेजी गयी तो उन्हान धूनके दुगमें घरण ली। किन्तु चूडामनका भतीजा बदन सिंह बादसाहम मिल गया और उसने यूनपर शाहीसेनाका अधिवार होनमें सहायता दी । अत बादशाहने उसे हो जाटोंका राजा बना दिया । उसफे दत्तक पुत्र और उत्तराधिकारी सूरजमलने जाटोंकी शक्तिका चरम शिक्षरपर पहुँचा दिया। उसन अपने राज्यको सुसंगठित एय शक्तिशाली बना लिया और यूनके अतिरिक्त धीग, कुम्भेर, वर तथा भरतपुरमें सुदृद दुर्ग निर्माण किये। भरतपुरको उसने अपनी राजधानी बनायो। उसने अपनी एक सवल घुडसवार सेना भी तैयार कर ली। नादिरधाहके आक्रमण और उससे चत्पन्न स्थितिसे चसने पूरा लाम चठाया था। किन्तु अब मराठे और अहमद्वाह अन्दाली भी उसके राज्यपर आक्रमण करने लगे। ऐसे अवसरी-पर वह अपने सुरक्षित दुर्गोमें बैठकर पात्रुआको चुनौती देता था। १७५७ ई० में अन्दालीने जब मथुरापर उस नगरको लूटनेके लिए घावा किया तो

सबके पूर वर्ष जाराजिकारी कराइएजिका क्षेत्रक मी पूजरी पूरा । मार्जनपर्क मिन्स्याम यह निव बना पहा जिल्लु १७४८ हैं में कार्य देवां कर हैं सारी । उपकार मार्जन्स में तो क्षार्य कराई सूर्य कर हैं सारी यह निव मार्जन्स कार्य कर कार्य कर कार्य कर कार्य कर कार्य के सार्व्य कर कार्य के मिन्स की कार्यों कर कर कार्य कार्य कर क

रिक्का—विशासकी स्थान पुर गामक (१४९०-१५३९ वें) से। स्मूमि पैनावरी सहित्रा एवं कान्यात्मकान निर्मुत एकेक्सानी कान्यनाव अभार विना का। अपनिव गामित गामित किस्तातनारी स्मूप्त कुमारेनाम गा। वें दिल्लामीका एकानी वो कार्यक से। कार्य शिष्य अगदको उन्होंने अपना उत्तराधिकारी नियत किया। गुरु अगद (१५३९-५२ ई०) ने सिक्सों (गुरुके शिष्यों) को एक धार्मिक सम्प्रदायके रूपमें सगठिन किया और उन्होंने गुरुमुझी लिपिका मो आविष्कार किया बताया जाता है। उनके उत्तराधिकारी अमरदास (१५५२-७४ ई०) के समय सिक्सधर्मको और उन्नति हुई तया चौथे गुरु रामदास (१५७४-८१-ई०) ने सम्राट् अक्सरके आध्य एव सहायतासे अमृतसर स्यानको प्राप्त करके उस नगरको, उमके प्रसिद्ध गुरुद्वारेको तथा वहाँ सिक्स धमके केन्द्रको नीव हालो। तदनन्तर गुरुका पद वश-परम्परागत हो गया।

रामदासके पुत्र गुरु अजुन (१५८१-१६०६ ई०) ने अपने अनुयायि-योंके सगठनको और अधिक व्यवस्थित किया और वह उनसे नियमित दान-दक्षिणा ग्रहण करते लगे । इस प्रकार जनकी शक्ति और घन काफो वढ गया । शहजादे खुसरुका पक्ष लेनेके कारण जहाँगीरने उनको मृत्युदण्ड दिया। १६०४ ई० में ग्राय साहियके सकलनका श्रेय भी इसी गुरुको है। चनके पुत्र हरगोबिन्द (१६०६-६८ई०) ने सियबोंका सैनिक सगठन किया। उन्होंने एक छोटो-सी अश्वारोही सेना भी बना छी और स्वयं भी तलवार प्रहण को । अनुयायियों की संख्या भी बढ़ी । अब सिक्ख एक राजनीतिक षांतिका रूप लेने लगे । उनके उपरान्त उनका पुत्र हरराय (१६३८–६० ई०) गुरु हुआ । वह णान्तिप्रिय था, क्विन्तु वह दाराशिकोहका पक्षपाती या बत उसे अपने पुत्र रामरायको आस्वासनके रूपमें औरगजेवके सिपर्द करना पढा । हररायके बाद उसका द्वितीय पुत्र हरिकशन (१६६०-६४ ई॰) गुरु हुआ और तदनन्तर हरगोविन्दका द्वितीय पुत्र तेग्रवहाद्र (१६६४-७५ ई०) सिक्लोंका नर्वी गुरु हुआ। निद्रोहके स देहमें बौरगजेवने गुरुको दिल्ली बुलाया किन्तु मिर्जी राजा जयसिंहके पुत्र कूमार रामसिंहकी सहायतासे वह बहुत समय तक पटना, आसाम . बादिम सुरक्षित रहे और फिर पगाब आये । वहाँ आते ही सम्राट्ने उन्हें पकडवा मँगाया और बडी फ्रूरताके साथ उनका प्राणान्त करा दिया । दिल्ली कारेंके पूर्व की बागोर कार्य कांने पूर्व में उन्हों उन्हों कारण कार्या प्रश्नी है पूर्ण के दिया का पुत्र वर्गाला नहीं है के ... देवन हो है दिवालों के कीवल की

बारण नव निरा क्षेत्र पुरुष काल अवस्थित किया होतार की वहीं एक कारणाले कारदी हरूक कर दो। कर कुनाए को सामार

हिस्सी मिंदी का । यह में हमारे के किया है। यह के मूल वार्ष पहरें कुत हिस्स करते की में में माने के में माने वार्ष दिस्सा करते और पतार करते मानियति कोरोसो कुर्वमार्थ हिस्सान देशा किया के तीन मानियारि माने में माने हम्में की स्वाप्त मुन्ति मुन्ता । बारण निवेदि का प्राप्त मानियारिक वीरायाओं वार्ष करते मुन्तामारिक काम्योग कामारामा हमानियारिक माने माने

कराना कर दिशा कोर को पान कर जिन्नू कामांक्याके सम्बन्ध है १९ है के यह कहार कम और कार्य मार्ग्याक्यिक जाता कर मार्ग्या स्थान कर अपने कुरेशाओं निक्तित संस्कृत क्ष्यापार जिन्न मार्ग्य मार्थक पुरेशाओं निक्तित संस्कृत क्ष्यापार किया जिन्नु करियामा कोर व्यवस्था क्ष्याचीडे सामानी के साथ सिमाधि मेर स्थान देशा विकास क्ष्याच्या में साथिक स्थान है कार्य

मारागित इक्षित्रमा । एक वर्षि

पंजायसे मुगुलोका अधिकार हो उठ गया। इससे सिक्नोंने लाम उठाया वोर अपनी दाकित सहायो। अन्दालोकी सेनाओका ये निरन्तर परेशान करत रहे। पानीपतक मुद्रके बाद अन्दालोने उनका दमन करनका प्रयस्त किया और १७६२ ई० में लुधियानाक गृद्धम उन्हें पराजित गरम १२००० मिक्याका संहार किया, किन्तु फिर भी उनका आत न हुआ और ये उन दूने वेगस घरावर परेशान गरत रहे। आतत १७६७ ई० में अव्हालीन अपना अनेमधंता स्वीकार पर ली और फिर उन्हें न छेडा।

अव निक्कान सुवोश्य युद्ध-नताओं मत्त्वमं बारह मिम्ला (सैनिक दला) में विभाजिन निक्तदल-द्वारा बहुमाग पंजावपर अपना अधिकार जमा लिया। यह एक प्रवारका धम-सैनिक राज्यसग था। किन्तु अब बाहरी मनुकी अनुपस्थितिमे य मिम्लें परस्पर हो लहन रुगी, और एक प्रकारको अराजकता एव अञ्चवस्था उत्पन्न हो गयी। इन्ही मिम्लोमें से एक सरदार महासिह था। १७९० ई० में उसका मृत्यु हो गयी।

उत्तक पुत्र रणजीतिनिहन जिनका जाम १७८० ई० में हुआ था, १७ दपकी आयुमें ही अपनी पैतृक निम्लका नेतृस्व प्रहणकर तिया और छाटे-मोटे पुदा-द्वारा अपनी दाकिन बढानी प्रारम्भ का । १७९८ ई० में जय अब्दालीक पोते काबुलके अमीर जमनशाहने पजायपर आक्रमण किया ता रणजातिसिंह उपसा मिल गया। जमनशाह तो विफल प्रयत्म होकर लौट गया किन्तु इन अवसरम लाम उठाकर रणजीतिसिंहन १७९९ ई० में उसक निमय अधिकारियोंसे उस प्रदेशको छान लिया। १८०५ ई० में उपन अमृत्यरपर मी अधिकार कर लिया। लाहीरका अपनी राजधानी बनाकर उसने अब अपनी शिवतका विस्तार करना शुरू किया। इसकायम उसकी सास सदाकौर, जा स्वय एक मिम्लको स्वामिनी थी, तथा मिन फ़तहिस्ह, जा एक अन्य मिम्लका स्वामी या, उमके प्रधान सहायक हुए। इस प्रवार राने काने प्रधावक समस्त सिक्स सरदारा और मिस्लोंको स्योन करके १८२३ ई० में रणजीत सिहन सम्पूर्ण प्रजावपर अपना रोज्य जमा लिया। फ़तहिस्ह तो उसका

कर क्यों मध्य अनुपर भी अन स्था का और मधारी रही उनने बन्दी गृहें बान दिया । सर्वत्र और अनुनाके मध्यमानको भी बढ अस्तै राज्यन जिनाना बाइना का और उस अदेखार तान बार करने बाळमक मी जिना विल्लु इस समय अविरय असित प्रसार प्रदेशमें अर. को और *पर्या*स वर्ष बनवारके इस कार न बहुत दिया। १८ ९ई में हो अनुनगरकी नान्ति-प्राण इनने बैना न कानका जैनरेशको क्यम है दिया था। किन्तु कर गार जनम रक्षित्रमें मुक्तान तक अधिकार कर निया और उत्तर-परियमने कोशाह बाज हंक बेगावाजीना बेगाश्वाहत्त्वा वेदाबर बीर कर्नारको विका काके क्ष्मा अप्रवालोंके क्षीनकर अपने राज्यते विका त्या । क्रियको जी बनने निजय भरमा पाछा दिन्तु तित्तके बडोरॉने जी १८११ है मैं अंगरेडोली अपीलका और लेरबान स्थीनाए कर निया ना अयः जेपरेश प्रवेत दल कारमें वायक हुए । तथारि सैयरने लेकर शलका सक बीर लवनिकारके केवर निरुपकी बीजा पर्यन्त रणजीवनिक्रण निरुप्त नुसर्कत एवं व्यक्तिव्यक्ती यात्र वा । १८१३ ई. में कक्के और १८२३ ई. हैं भौदीराके बुक्त विनने कायुक्क अञ्चलकाकी बुरी बरह बराबिन रिना का । १८६ दें में अनीर पोल्प मुत्रानरमें भी सिक्लॉड जनका और

मुस्तुर्व सांक यो सीम्या हुमोरी हर्मणा वर्षमा विकास कथा दिया स्थाने हर्म हिम्मा हुम्म एवं एका हाओ होने हुएसी बात पड़ा पूर्वमानू इस्थाने उससी निर्माण कर्म हुम हिम्मा हुम्म हिम्म हुम्म हिम्म हुम्म हिम्म हुम्म हुम हुम्म हुम हुम्म हुम हुम्म हुम हुम्म हुम्म हुम्म हुम्म हुम्म हुम्म हुम हुम हुम हुम्म हुम्म हुम हुम हुम हुम हुम्म हुम हुम्म हुम्म हुम हुम हुम हुम हुम हुम हुम हु

उत्तराधिकारी खडगिंसह एक वर्ष भी राज्य न कर पाया। खडगिंसहका पृत्र नौनिहालिंसह जा अपने दादा रणजीतिंसिहको ही मौंति होनहार था अगले ही दिन मार डाला गया। तत्यश्चात् रणजीतिंसिहका एक अय पृत्र होरिंसह राजा हुआ किन्तु १८४३ ई० मे उसका भी वध कर दिया गया।

अब रणनातिसहके सबसे छोटे पुत्र दिलीपसिहकी जो छह वर्षका बालक मात्र या राजा बनाया गया। राज्यकी मारी शक्ति और सेना चमके नेताओं के हायमें थो। सना ही स्वयका राज्यका प्रतिनिधि और खालसा कहन लगी, उसकी महया द्विगुणिन हो गयी और वही ममस्न शामन, बजोरो, राजा एव प्रजाकी भाग्यविधाता वन वैठी। चतुर अँगरेज तो ऐसे ही अवसरकी ताकमें थे। १८४५ ईं० में दानों शक्तियोंके बीच युद्ध छिड गया । ननापनियाके परस्तर अविश्वाम एव विश्वामधातक कारण एकके बाद एक चार युद्धोमे सित्रख हार और अंगरेओको सहज ही विजय प्राप्त हो गयी। परिणाम स्वरूप जा मन्यि हुई उनके अनुसार जालन्यर दाआवका सम्पूर्ण प्रदेश अँगरजोको प्राप्त हुआ, मिसल दरवारन यदके हरजानेके रूपमे तान करोड रुपया दनका वचन दिया और एक अँगरेज अफ़मर राजा दिलापिंनहक सुरक्षकके कामे तथा शामनके प्रत्यक विभाग-पर नियात्रण रखनके लिए लाहौर दरवारमे समीय स्वापित हुआ। हरजानको रक्कम अदा करनके लिए षदमार देशका जम्मूके छोगरा मरदार गलाव-सिहके हाथ वेच दिया गया। १८४९ ई० में व्ययका बहाना बनाकर अँगरेजान फिर युद्ध छेड दिया। निक्य वीरताके साय लडे किन्तु पराजित हुए। सिष्वत्राज्यका अन्त वरके सम्पूण प्रदेश अँगरेजी राज्यमे मिला लिया गया और महाराज दिलीपसिंहको पेन्शन देकर इन्लैण्ड सेज दिया गया। वहाँ वह ईमाई बन गया और मृत्यु पयन्त वहीं रहा। भारतका प्रभिद्ध काहेन्र होराभी, जिसे नादिरशाह छूटकर ले गया था आर जिस रणजीतिमिहन काबुलके अमार शाहबुजासे पुन प्राप्त कर निया था, अप्रहाय दिलोपिनहम महाराना विक्टारियाका मेंट करवा दिया गया ।वही निरम को बारनी रस्यापका राज्य सामा की विकास स्वास कर को मैं बार राज्य बीबोप्टीमी जैनानि करी हो नये और बारतों बचके राज्यमें बारा में निज्ञास हुए

प्रशास-भोरतिसासी क्षामीक्यांनी काम है अन्तु (१९६४) है विकास करें नहीं पासाप है जाने सामाप्ति है जिसे पास स्वास्त्र के स्वास्त्र करें सामाप्ति है जिसे पास स्वास्त्र के स्वास्त्र के प्रशास क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम क्षाम का कि स्वास्त्र के स्त्र के स्वास्त्र के स्वास्

विरञ्ज कञ्ज जारी रमना था । अन् विर्मृत्त नर नार भगाईको वृक्ष वैर वर्ष स्थापारिका वस्तु वन संयो । वै भागा आमे वसका मनुर्वा देशके

िन् साराण सामार्थ निवाह हुए। कोर्यंत की सुन्धुने कराम्य ती स्वत्य निवाह केता में है सामें के सा स्वत्य स्वत्य हों। है स्वत्य का स्वत्य का स्वत्य की स्वत्य के सा स्वत्य की स्वत्य का स्वत्य की स्वत

मार्त्वाप इक्टिक्स वर्ग रहि

. .

छिष्ठ गया। १७१२ ई० में ताराबाईका पुत्र मर गया और अब स्वय उसे भी पदच्युत करंके उसकी सपत्नी राजसवाईने अपने पुत्र शम्भूजीको राजा शीपित कर दिया तथा उसकी आरसे कोल्हापुरमें राज्य करना प्रारम्भ कर िया। मतारामें साहुकी स्थिति भी बिलकुल डाँवाडाल थी।

इमी समयमें कोक्णके एक चितपावन ब्राह्मण विश्वनाथका पुत्र बालाजो मट्ट मराठा सरदार धनाजी जाधवका मन्त्री था। उसके कहनेसे घनाजो तारावाईका पक्ष त्याग कर साहमे आ मिला या। उसके साथ हो वालाजो भी आया। १७१० ई० में घनाजीकी मृत्युके वाद उसका पृत च द्रमेन जाय व फिर कोल्हापुरवालों के पक्षमें चला गया विन्तू वालाजी माहूकी ही सेवामें रह गया। उसकी याग्यता देखकर माहने उम अपना सेनाकर्त्ता (बढ्शो) बना लिया और तदनन्तर अपना पेशवा (प्रधान मन्त्रो) बना लिया। इस प्रकार बालाजी विश्वनाय (१७१४-२० ई०) पेशवा वंशका सम्यापक हुआ । यह वडा चतुर राजनीतिज्ञ था । उभने एक-एक करके सभी लुटेरे मराठा सन्दारोंका दमन किया और उन्हें दशमें कर लिया। कन्होंजी आग्रे जैसे अधिक शिवतशाली सरदारोंको भी समझौता करके अपनो ओर मिला लिया। अपनी शिवनका सवधन करनेके लिए इन अनुषासनके अनम्यस्त निरकुण लुटेरे मरदारोको अपने नियम्प्रणमें रखना आवश्यक था, अत साम, दाम, भय, भेदसे उन्हें पशमें करके उनने एक नवीन मराठा सघका स्यापना की जिसका आचार चीय और सरदेशमुखी या।

या मन-द्वारा नियत भूमिकरका दसवौ हिस्सा सरदेशमुखी कहलाता या और वह पूरा मताराके मराठा राजाका मिलता था। चौय भूमिकरका चौथाई होता था, उसका २५ प्रतिशत मराठा राजाको जाता था तथा अय ६ प्रतिशत सहोत्रके रूपमें और ३ प्रतिशत नहगुण्डक क्पमें राजाकी देन्छापर अवलम्बित था, जिसे वह चाहें 'उस दे। शेप ६६ प्रतिशत को मोकासा कहलाता था मराठा सरदारोमे वेंट जाता था। प्रत्येक सरदारको करनके लिए वे दिया बाला था । जिस प्रदेशका अविकार जिस बरसारका रिया जला वा उनकी शीवका जीवाला उसी तत्त्वारको प्राप्त होताया और बनने ही वह बएना हेना बोर नेपकाका श्वंरक्षण करता था। इन वर्रोके बरचन बरैरपे बिए शीई एक निविषय रक्षत्र वा मुनिप्रवेध नहीं निया कता था बरन शिक्षित्र राज्या और प्रदेशोंके धालुरीन अर्थे धतिवर्षे निर्वादन नवन बनुस स्थित जाता था। परिस्तावस्थवन सीई वरस्य बन्दार दिना एक प्रदेशका स्टामी न हो यहा और बंद नवस्ति बना रहता। इन करोको समाहलेका सामार की डोडरमस्य बॉकन सम्बर कारिकी धाचीन जुकिकासरम्बद्धी बनावा बाह्या का किन्तु स्वीकि इन बोधमें शृतिको रक्षा बोट देखरी एवं ब्रत्येक सामवदी सैंपिट ब्यूड विगर करों का । वस प्राचीन आवारवर चीन देना समीके मिन् अनहा होता मा बीर बहुध शत्रों नहां च्युता छ। बरामा बरवायेंडे निर निवित्त राज्योंके बाब क्षेत्र करते रहते और इसके प्रदेशीमें स्व-सार करनेका बद्र नद्वन क्षेत्र निरस्तर बना स्क्रोनाला नहाता छ । केवना दालाओं विस्तानने क्रम खनिमत्त्रे गयोर. बैसर हुवैन अक्रोडे क्रमें बर्पनी र्गनिक बराम्या रेनके वक्तके बरनेने वक्कीके 👊 व्यक्तिनी नुवीकी गीम पूर्व नरदेशनकी समुख करनेका अधिकार के किया । बनके बान देखाय रिल्मी को नवा और बड़ों उसने अपनी बॉसबी बारपादीका अवास्ति बरानरता दन राजको देना १४ देववाद सीलामी हो बरायका नयम राजा बीच ही बना और नेहरा हो राज्यका वर्वे-वर्ग हा करा बयवा पुत्र रेखना बाजीराच जबय (१७२०-४ 🕻) बनने मी व्यविक महत्त्वकाची। मुद्राप्तिन ए५ पूर्वाच केतानी व्य । क्तनै करार विवाने विश्वार करनेशी मीतिशी अञ्चाला । क्या अविनिधि सीन्यायरने बनशी बीतिका विशेष किया और बढ़ा कि बच्चें बढ़के व्यक्ति माध्यपर असी

राज्यो नुर्वोद्ध इवं बृहास्तिक्ष करता वादिए, क्यारण बोर स्थल

...

भारतीय इतिहास दण धरि

न्यित प्रदेश यह पाई विशे भी राज्यका हो और और सरदेशमधी यून

नहीं देना चाहिए । किन्तु बाजीरायने कहा, यदि हम जजर वृक्षके तनेपर ही मीचे प्रहार करेंगे तो उसकी झाला प्रसादाएँ तो आपसे आप गिर पर्डेगो । उसको यक्तृनाके प्रभावमें आकर महाराज माहून भी अपनी स्वीकृति इ दो । अन्तव पेशवाने मालवा और गुजरातपर अनेक आक्रमण क्यि । इन आक्रमणामें मल्हरराव होत्कर, रानोशी सिविया, ऊदाशी पैवार, रघुजो भासले, पिसाजो गायकवाह आदि उसक अनुवर सग्दार अनुभर्वा एर मिद्धहस्त हो गये। उमरी युद्ध-यात्राक्षो और विजयोंके कारण राज्य-को विद्याल सेना सुदूर प्रदेशोमें व्यस्त रहने लगो, उसक निर्वाहका कोई भार राजकोपपर नहीं रह गया, उलटे लूट आदिका धन ही निर तर राज्य-में आने लगा और मराठाको शक्ति, प्रभाव एय आतक देशव्यापी होने लगा। १७२७ ई० मे महाराज साहुन पेशवाका राज्यके मर्वाधिकार सींप दिये। पेशवाने १७२६ ई० में श्रीरगपट्टन तक सुदूर दक्षिणमें भी धावा किया था। निजाम उसके लिए बाधक बन रहा था। उसन मोल्हापुर में राजासे मेल करके पेशवाके चौष वसूल करनवाले व्यक्तिका निकाल दिया। विन्तु १७२८ ई० में प**लसेडके युद्धमें पेशवाने निजामको पराजित** करके चेसे कोल्ट्रापुरका पक्ष त्वागने एवं चौष और सरदशमुखी नियमित रूपसे देते रहनेका वादा करनेके लिए वाघ्य किया । निजामने अपनी कृटनीतिसे सेनापति त्रियम्बक दामडेको पेशवाके विरुद्ध कर दिया किन्तु पेशवाने १७३१ ई० में दमोईके युद्धमें सेनापितको पराजित करके मार हाला। पेशवाके भाई चिमनाजीने मालवाके मुग़ल सूवेदार गिरधर वहादुरको भी पराजित करके मार डाला और उसका उत्तराधिकारी मुहस्मदर्खां वगश भी पराजित हुआ । तदन तर राजा सवाई जर्यासह माल्वाका सुवेदार हुआ। उसने पेशवासे समझौता कर लिया और सम्राट्म कहकर उसे मालवाका नायब सूबेदार बनया दिया । गुजरातके सूबेदार राजा अजीत-विहने भी पेशवाको चौष एवं सरदेशमुखी देना स्वीवार कर लिया। इसी समयसे गुजरातमें पेदावाके प्रतिनिधिके रूपमें गायक्वाहका प्रभाव बदन नमा । मानीराथ संगान्तमुनाके थोजावे एवं रिल्की अवैद्यपर प्रतिकर्ष गाया करता मा । स्वर्ण दिश्लीके बाह्यपान की अनने सब-नार की । बतके निकड रिल्बी परवारके तब अपन तिल्बन है। १७१८ ई. में बालमाईने विवास-को बहानवाने लिए मुनावा किन्तु बोचानके बुद्धमें नेप्रवाने वर्गाका दीकर यह भी बीट बंधा। बाब ही नियब होकर बावसामणी जोरने नागुण नामका आन्य समा नामा और मानकके बोचके कार्य त्रोसका मी पुन राज्याविकार अनने रेक्क्यारो है जिला। २७३५ ई. में जीर क्रमबाल अपनी कृत्युके बनन नातीरावणी नाले बुल्देनस्वयत्र राज्यणा एक विज्ञाई भाग स्वेत्साके बदाव कर नथा था । येथ भागवर वक्षके तुम बतारानिकारी हुए में मी नाजीरानके जिल इस बहुप्रक रहे । नेक्या विस्ती जलसम्बद्धाः जन्त करवेची बांच ही रहा ना कि नार्विरधाहका साहतक हो दवा । इन वर्त्व

भीर क्षत्र कि शक्तिको हिन्दुमी भीर कुरत्नानीकी धनुका यनित दत मासताबीको देखके विकास साहर गरे। किन्तु क्याकी केमा पुरासालिकोडे मेवोलको बोलतेम व्यस्त की बीर क्य इन बोलॉन नाविश्वाहक विकास रवला होनेकी बात बीची तो का कुर-नार करके वा की चुका का । ीहै कार करवार हो स्वयं वाणीरावणी मृत्यु हो करी । इत म्ह्यराष्ट्रीय वीर बोळाचे. कम्पणार्थे अनेक क्लिपरन्तिनी प्रचानित अस्तानी नामक एक मुख्यकान नर्तनीक बान क्यांग समुन्त मेन नी

कि नहीं गाविरवात हो। यहाँ न कर आने कवने निशामक बाज नेक किया

नुपारिक है - बड़ा पाना है कि शानीरापकी बहुएयांकामा भारतमें दिन्त करनदावाहीको स्थानमा करनेकी भी । फिन्तु वेक्रवाबीने जिन अनिवेकपूर्व शर-भार मादि बावगाँका दिविक्तके सरकारक किया था सबसे ऐसे क्षान बारकको विकि सकल हो यो । स्तर्ग रक्षिपारयका में मुक्तमान रह क्षम्य विदेशी चलित्रवेधि मृत्यु स कर क्षेत्र वीर नः चनवामारमको गुवानन

दर्व बान्ति है बहै।

भागीरामचा पुन रेक्सा शस्त्राजी वाचीराम (१७४ –६१ ६) अपने

भारतीय हर्जहास एक सी

-

पिताको मौति महत्त्राकांको तथा उपकी उत्तराभिमुक्षो मोतिका तो अनुमर्त्ता था कि तु उस जैमा बीर योद्धा, पृथल सेनानायक और राजनातिपट्ट न था। जयपुर, जोधपुर आत्मे उत्तराधिकारणे झगडोंमें (१७४२—
४९ ई०) हस्तक्षेप करने और फल्य्यक्ष्य उन राज्याको लट खसीट करनेमे ये
राजे भी मराठोंसे चिद्र गये और उन्हें अपना यशु समझने रुगे। १७४९ई०
में छत्रपति माहको मृत्यु हो गयी। उमकी वसीयतके अनुसार ताराबाईक
पोतेको मताराना राजा बनाया गया, जिन्तु ताराबाईने स्वय हो उमका
विरोध किया और राजाराम राजा बनाया गया। उमने राज्यके सर्वाधिकार
पेगवाको मौंप दिये। अब मतारा और कोल्हापुरके राजा नाममात्रके
अनुल्लखनीय छाटे में राजा मात्र रह गये। विस्तृत मराठा सामाज्य एव
विशाल मराठा शिवतका एकमात्र स्वामी पेशवा हो था। १७५० ई०
में उसने पूनाको अपनो पृथक् एवं स्वत प्र राजधानी बनाया।

उसके मराठा सरदारों में बरारका रघु नी भोमले ही उसका प्रवल विरोधी और प्रतिद्वन्द्वी था। पेशवाने उसे भारतक पर्वी प्रा तोंके सम्वन्धमें खुली छूट देकर सन्तुष्ट किया। अब भोंसले और उसके सहायक भास्कर पण्डितने प्रतिवर्ध वंगाल, बिहार और उद्योसको रोंदना एव लूटना शुरू कर दिया। भास्कर पण्डितको बगालके तत्कालीन नथाय अलाबर्दीखोंने मरवा दिया, इममे भासलेके आक्रमणोकी भीषणता और अधिक बढ गयी। अन्तत अलोबर्दीखोंने मोंसलेको उद्योगका समृचा प्रान्त देकर और बगालको चौथके स्वमें १२ लाख क्ये प्रतिवर्ध देनेका धवन देकर उसस अपना पिण्ड छुष्टाया। पेशवा निजामके उत्तराधिकारी मलाबतजगमे उलझा किन्तु उसके फान्मीमी सरक्षक बुसीने १७५१ ई०में पेशवाका कई बार हराया। १७५५ ई०में पश्चाने सरदार आग्ने और उसकी जहाजी शिवक्तो नए वरनेकी मारी भूल पो। १७५८ ई० में बुसीके हैदराबादसे इटले ही पेशवाने निजाम राज्यका अन्त करनेपर कमर कसी, अहमदनगरपर उसने अधिकार वर लिया। और निजामके कुशल तोपची इग्राहीमगर्दीको अपनी ओर मिला लिया।

पैनवाके कार्य शराधिकराच माजले बहुनिरके बुद्धमें निदानकी बुधै गर्ध पराजित परके बन्ने बानने बीलनाबाद समीमनद बीजापुर, सहुबद्दपर और पुरदानपुरके नुपनित दुर्ग तथा ६ नाथ दाने वार्त्वक जानका प्रदेव रेमवाणी बीप देनेके किए साध्य कर दिशा । अवर क्लाओं दुल बीचने देखना-के मार्ग राजीवाने बंदने १७५४-५६६ के बावनमर्वे राजपुत्रानेके बनपुर, बरबपुर, नाहा बुँरी बादि दिशिल राज्योजें सह-बार करके चीव बनुच नी और रूप दिल्ली अफर मात्रसाह महमत्त्वाहको बहुन्ते बनारकर माधनगर द्वितीयको बारमाद बनानेन बडीर दबाइस्कन्दकी नहानता ना । यह बढ़ार नराहोंके पुनशका कवीन वा । बंबाके दाजादेरी जी - बंबने बन्दें प्रश्य के दिये - सुरवसक बाटने राजावे जी बन्दोंने लट-बार की मीर किर प्रविभवी कीर बसे । १७५६-५७ ई. में बहुमाबाई बस्तावी रिल्मी माना सीर बच्चे मारबाहुब नेजाब और जन्तलके कुनै जान्त गर feet i from await the Parti di strategit two-40 & it fac कत्तर भारत्वर बाहरूब दिया और इन बार प्रशास तक पाना हिना तमा महर्षि सम्पानीक प्रतिनिविको सराकर सन्त्यी औरच अरीनावैदर्शको कानक निवृद्ध कर दिया । जब नराग्रंकी व्यक्ति अपने बरन विवरण नहेंद नहीं था । जन्मनदे नीशावधी और बरद बावरने अंधानना कामे पर्वन्य जनका सामाग्य प्रैम नदा या श्रीत प्राप्त-बार प्रारक्षे वे श्रीन बमुक करते थे । राजपुत्र भाव, खूँके विच्छी बरबार और निवाद बसी बनवा सीहा मान्य वै. बचन बनवा बार्नक वर । देनी बनव दरिन्तरमें नेपनाका निजानके बाब मूट किए नका मा जिल्हा नवाबार पावर रायांश कत्तरमें दशाजा निर्मेचका इसे जन्द्रराज होरकर नामक माने बरधारीयो क्षोतकर स्थिय क्या क्या था। अध्यानी मरागों है परावपर किये की सामना और अविकारका क्षेत्र जिल्ली परचारपर काके नहुत हुन क्षत्रावको सहस नहीं कर सबका का - सबकड मवाब बीर बहेगाने भी जी जाराहींके बहेदाल के बारतमें द्रालान और

मारबीय इतिहास पुत्र श्री

मुनलमानोंको रक्षा करनेके लिए उमे माग्रह आमित्रत किया। अतएव अब्दालीने एक विदाल मेनाके माथ फिर आक्रमण किया । १७५९ ई० में हा उगने परावपर पुन अधिकार हर लिया, १७६०ई० के प्रारम्भमें ही उमन दत्ताजी निधियाको पराजित करने मार ढाला, राजधानी दिल्लीमें प्रवेग किया और होन्करको मार सगामा । तदनन्तर वह अलीगढ़में छेरा हालकर मराठींके आगमनकी प्रतीक्षा करने लगा । अध्यका नवाच शुजा-चहीला और एहें ना सरदार नजी बुदीला ससैन्य उसमे आ मिले। मराठे दिनामें निजामके साथ हो उछन्न हुए ये। उत्तरके य ममाचार पाने ही पेपवाके भार्ट मदाशिक्याव माळ और पुत्र विद्यासरावकी अध्यक्षतामें बिवाल मराठा सना अन्दालीका सामना वारनेके लिए चल पटी । इब्राहीम-गरींका प्रशिद्ध तोष्यांना भी उनने साम था । उन्होंने आते ही टिल्हीपर अधिकार पर लिया और सब्दालीक रसदक आयार पुजन्पुरपर मी पन्दा कर लिया और फिर पानीपतके मैदानम सा हटे। मन्हरगव होन्दर, महादाशी मिचिया आदि मराठा सरदाराण सनिरिक्न मुरजमल मार भी जनमें आ मिला। १७६० ई० के नवस्यरमें ही दानों मनाएँ पानीपनमें भा बढ़ी थीं, गुरु पुर हमले चमते रहे, निष्तु मराटा सेनाकी रम॰ ममाप्त हा चलो वो बोर सैनिकोंके जनिस्वत पाहे, बैन बाहि प्रीमी पृत्ते मरमे लग । १४ जनवरी १७६१ ई० के प्रांत काल्स पाना-प्तका यह क्षीतरा भीवण युद्ध प्रारम्भ हुआ और शीमरे पहर तक समाप्त मी हा गवा ।

दम मुद्रमें महाठे पणनवा पराणित हुए । नवय माळ और विज्ञान-राव युद्धमें मारे गयं उत्तर २० क्षांस मन्त्रार भी काम आस, मृत और महात ग्रीतर्वाक्ष कर्दे विन्ता सं भी। मनाठोकी ४७००० मना गयं क्षत्रीत्रक महिम्मित विवारिमा नीवा। श्वाका धादिम बहुत पाठ ता देपका अतने स्वत्र पर दहेन दाये। अस्त्रात्रीके ६००० नेनावा भी पर्योज भाग मुद्धम काम आगा। गाम समक्षा भागने कांग्लाव नाद सह स की विधेश अर्थन न होने की और बचकर बाब निकता । नाना करनकीन मी बच निष्ठका । नूरवरण नाह मो बुढ्य नाच दशक ही बना रहा और बुक्का भागा पत्रकता देश काले राज्यकी और पत्र दिया । राज्युतीरी भराकोत नहते हो जपना श्रम दशा सिका ना अग्रपूर वृत्रकावने दे जन्मी रामशानियोग ही बैडे रहे - इस मुख्के परिवासन्त्रभव महाराष्ट्रणा कीर्र चर देशान या विवर्षे अपने विश्वी-व-विश्वी बारबीवधी क्रमुके निय बीक थ मनाव्य बच्च हो । स्वयं सथ रोजने बस्त नैयदा ो बाह्र मार्टि की बहुएत्याके किए क्लाएको बोर जब बडा बा इन हु बह बदाचारको मात्रे ही अपनेत्रे अर मचा । इस मराज्ञाने नेवचावाँके बनावाँका दिया

परपालकाई सबसा बराव सारतीय बासाअने स्थलको काले किए

रेपनेने यह ग्रिप्त और मनस्यान वरिष्ठाके बीच आरतके कामान्यके

र्मन पर दिया ।

ररन्यु चपुर युवावरीनावे अपनी वा अपनी नेनारो कोई वर्ति न होने दो और विजयमा का यह जीर केंद्रर वह अपने शामधी कीट नवा । अम्पर्ण-में वशीनुरीया रहेत्रेको विग्मीका बजीर बना दिया कुनस्थान सार्पात तवा बनके बरबारपर पूछ बनवके निए बहेनोंकी सम्बद्धारी स्वर्हना हो नदी । देनवाडे नदावनामें य डोक्टर हो बाडबी मीतिये मननेर होनके नाग्य रहते ही लिशक तथा था। लिक्सिन सी सफ्ती और अफ्ती हैरी-

निए स्था क्रानेपाम बनिय इने निर्मातक पुत्र का रिन्तु मुख्यमानीनी को प्रमुख विचीत नाम क्यों बाह्य । अपने नैतिकाँके विशेषके कारण सम्मी-बीको स्वदेश लीट माना नहां बोर नह किर कवी नहीं नहीं जाना । स्वर्ट मारको क्षिपु एव मुक्तमाल क्षेत्रींनी हो। ए*वक-स*न्तियो इच मुद्धके सार^{क्} और मी मनिक निर्वेश हो नहीं। बराह्म धरित विशेषकर वेक्चाके प्रता नोर प्रतिक्रका का बोडे समस्के किए सर्वमा मध्य हो क्या । और मंग

बदण साथ वैंबरेडॉने पुरी शरह बहारा

बारबीय इतिहास । एक गर्डि

बालाओं बाजीसको पुत्र और बस्तराविकासे वेबसा नावतसर्थ



वैरोतने स्ता देवेवा बचन हिंगा । इन वचार सामिती शर्यों सूर्यों सूर्यों का बचन होंगी हैं महर्याव्यापे शर्म के विदेशों हैं महर्या प्राविधिक विदेशक हरणों हैं भी कुने विदेशके बचने हैं स्वार्थिक महर्यों हैं भी होंगी हैं महर्यों के स्थार्थ के स्थार्य के स्थार्थ के स्थार

लवं नियं निर्म्थाओं मानियल्या राजा स्वीकार कर विद्या नीर

राजेपाको केवान रिकंपा पर परवाृत करते थि उस विकेत नास्त्र राजीरिको में मेंपीनीय प्रमुख क्यांगित हो गया । नेपाम नाप्तराव मताव्य (१८८८-५५ है) के सन्दर्भ नाम बहरनीय राउप नामी थीर सम्वर्धी या त्यांग काराया निर्माण क्यांग कारोब मेंपीनीय वाम रिवा मीर होने प्रमुख होते थिया से मुल्ले कुर्वेल क्योंग मेंपीनीय वाम रिवा मीर होने प्रमुख होते थिया से मुल्ले कुर्वेल क्योंग मोर्च क्योंग क्यांग नुम्ले विकासी ह्याप्त माने मेंप्ले इन्हामा बीट वीप्तायस्था हुएं बाग निर्मा क्यांग क्यों वर्ष केवामा बुद्धी मेंची पर निक्तामा था। राजेपीने हुए बारोग्य दिगोली प्रमुख होता था पर विकास माने प्रमुख माने क्यांग दिगोली प्रमुख होता था। यह विकास क्यांग माने व्यक्ति क्यांग प्रमुख माने प्रमुख होता था। इस्तु केवामा क्यांग क्यांग क्यांग मेंचा क्यांग क् मिन्यको सब शर्ते मानकर यह उनते अधीन हो गया। इस मियको सिचिया, होत्कर, भामले लादि मभी मराठा मरदारोंने को अब प्राय पूनाके प्रमुत्वसे स्वतन्त्र हो गये थे, बडा अपमागजनक माना और अँगरेजाक साथ युद्ध छेड निया।

अवतक अँगरेजॉकी शक्ति पर्याप्त बढ़ चुकी थी, १८०३-०५ ई० के मराठा मरदारोंक साथ किये गये इन गुदामें ऑगरेजाको ही विजय हुई और उन्होंने पेशवाके माथ-हो-साय मिन्पिया होस्कर, गायक्वाड और भासलेका भी सहायक सचियोंने जालमें जकडकर अपने अधीन कर लिया। वाजीराव द्वितीय अपने पिताका ही भौति मूप एव दुष्ट प्रकृतिका व्यक्ति षा। वह पूना मात्रका ही राजा रह गया था कि तु अपने पूछ जाको भौति पूरं मराठा सधका अध्यक्ष बनना चाहना या जो अब असम्भव या। उसका मन्त्रो व्यम्बकजी भी वहा धूर्त और दुष्ट था। इन दोनोने पडयन्त्र फरके गायकवाडके धर्मातमा विद्वान् एव मुयोग्य बाह्मणमात्रो गगाधर-शास्त्रीका वध करवा दिया, जिससे समस्त मराठा ससारमें सनसनी फैल गया। अँगरजोने मी हस्तकोप किया और अपराधा व्यस्यकको पक्डनेका विफल प्रयत्न किया। १८१७ ई० में एक सचिके द्वारा उन्होन पेणवाका कुछ बौर इलाङ्गा द देनने लिए तथा मराठोंका मुखिया बननक अधिकारका त्याग कर दनके ठिए बाध्य कर दिया। पेशवान इस सम्धिको सोष्ठा फठ-स्त्ररूप १८१८ ई० में अँगरजोक साथ युद्ध छिड गया अन्य मराठे राजे भा उममें उल्झ गये और पराजित होकर सभीन कैंगरेजानो प्रदेश एवं धन और अधिवार देवर और उनकी पूण अधोनता स्वीकार वरके पिण्ट छुडाया। पेनवाका तो राज्य, पद, अधिकार मच छीन लिया गया और उसे पेन्छन देकर कानपुरके निकट विठूरमे रहनके लिए मैज दिया गया जहाँ शतरज क्षेठकर उसने जीवनके दोप दिन बिताये । १८५१ ई० में उसकी मृयु हो जानपर उसक दत्तक पुत्र नाना साहिय घु घुपन्तकी पे रानः भी बाद कर दा गयो।

मराहा राज्य-जिनाभोड रंबभीने परश्रद समहबद सक्सी मृत्यु ह तीय वर्षां भीतर हा नवारा और क्षेत्रहानरक हो राज्य स्वास्ति कर निर्दे थे। बडारा राज्यके आजपने *हो* नेवराजीका सम्बद्ध हुना व्य व नराडे नहीं व राजनी बाह्य में बिल्यू बर्दाने तान्त्र मराहा-पर्टिंग कोर बनन्त बराडा नरवारोगर बचना प्रमुख स्वर्शनय करके भारती बर्तिग या महार विशान किया का काल्यापुर राज्य का बारराकी ही नामनाय-का बारान्या । गर का नगर। मी १०४९ है से बाहुकी मृत्युक्त करास्त वर्षी रिवर्तिको प्रत्य हो महा और वेशवाश्रादी को बनके कार्द रिनवरचै व हो । पेक्स बाजारात सबत हो बेसबा बल्लिस बाल्लीस निर्मात था और क्य प्रांत्यका बावन ब्यान दश्यके बनाई ौर कदाये हुए रिकामी मानकवार रचुना जानके बदाजा वैदार रानाओं निर्मनका, नग्दुरराप क्षान्यर जारि बरशारीक बचार को बचीक हान दिवनित को दिलानित विका वा । बबक अनेक बुदाने नाव केकर व सरदार वन अस्ति केना प्रदेश और अनुवयन पर्यान क्यांत कर यहे थे। इसके इसराविकारी मामाजी मानीरापने बनवने हां बनकी जरित इतनी बढ़ बनी की कि वेषया उन्हें वह करवया नाइक न कर जनना था। बारी कानवे बन्दीने मारतके निमन्न भागाने अपने स्थानी केन्द्र भा कता सिन्ने में अपा नाउक

मार्थ बडीरा (बुक्यत) में विकिशन मानिवरमें ड्रीस्टरने इस्टीरने भागनेने नामगुरने दालादि । १७६१ है क पानीपनक मुख्य बनराम्त हम बरशारीने गूना और वेजनाको राजकीत एक दिखीका क्षेत्रत करक अबल अपने राज्योंकी धरिक-विस्तार एवं नुरकारः ही और ज्यान क्या । विन्तु में सुने वर्त्ता लगारे स्थानका पंत्रिया भी न कर गाम व कि १७७५-८२ हैं के अपन वैंगरेज-मध्या पूजने ही अंगरेज सांस्टोड में कल्लाने बाने और कामा बोहा सभी करे क्या बनके हारा बच्चे राज्यावराख्ये स्टेक्न कराना

बानावक बनावे करें। इस मुद्रके स्थापना क्या करने क्यो-बारका

पेणवारे आधिपत्यमे मुक्प, स्वताय राजा घोषित करना प्रारम्भ कर दिया, किन्तु योस वर्षरे भीतर हो दूसरे अंगरेज-भराठा युद्ध (१८०३-०५ ई०) के फलम्बम्प जन मभी मराठा राजाशने म्वयका अंगरेजावा सहायश-मधि घोजनामे जक्कडवाबर उनकी अर्धानता स्वीकार कर ली और १८१८ ई० के तीसरे युद्धक उपरान्त तो वे अंगरजोग पूर्णतया अधीन और आश्वित हा गये, उनको हो बुपापर अवलम्बित हो गये आर अंगरेज उनके आन्तरिक मामलो, उत्तराधिकारफ प्रदन, शामन-प्रवाप आदिमें भा गुला हस्तकोप करने लगे। उनमें से जिसका जब चाहा अगरेजाने आत कर दिया, जो वच रहे वे वतमानकाल पयन्त चलत है। मराठों और विभाग वाहाणोंके कुछ अन्य भी छाटे छोटे राज्य थे। उनकी भी वहीं गति हुई। उपरोक्त राज्योंके कितव्य प्रारम्भिक नरेज यथा मन्हरराव होत्वर, अहत्यावाई, महादाजी मिधिया आदि अत्यान चतुर, मुयोग्य एव पराक्रमी य और अपने काय कलापांक लिए इतिहाम प्रसिद्ध हैं किन्तु उनके प्राय सभी कार राधिकारी निक्षमें और अयोग्य हो रहे।

घमें और संस्कृति—इस हेढ़ सौ वपफ ऐतिहासिक अवयुगमें धर्म और संस्कृति-जैम प्रकाश पुजोकी वात उठाना ही व्यथ है। उस पालकी यार अराजकता, अशानित, मार-काट, लूट-चमीट, ईप्प्री-द्रेप वैर-विरोध एवं सब्ज्यापी घार नैतिक पतनके श्रीच जहाँ छाटे बढ़े किसीकी भी प्रिष्ठिश, प्राण और धनकी सुरक्षा नहीं थो, धम और मस्कृतिकी ओर ध्यान देनका किस अवगाश था। उस कालच राजे रईस, नवाव, अभीर, मामन्त और सरदार अधिकत्तर या ता निर्मम छुटेरे एवं क्रूर अत्याचारी थे अथवा कायर आवश्ती, विलामी और दुराचारी थे। विसीकों भी अपनी किमी प्रकारकी विवास्त अवविवकी हो स्वार्थसाधनमें रत हा जाते या फिर निर्देन्द्र हो विषय भोगों इब जाते। इस कालमें किमी भी धर्म, जाति, वर्ग या प्रकार विमी भी तेजस्वी महात्मा, सन्त, महान् समाज-सुधारक या

बिरहर बरनेन वे साम्य मिनेश तथा औ बरना। हेस्तर्गानसीरी स्थान बरन तरे एक या तम अमिन्यों त्रीता हुन्ति हूर्न बरी स्थेत त्रातान पत्र नार्वादों या अस्त नामकी स्थानित स्थान क्रांटी स्थानित स्थानित भी। सीत इन नामकी नियास इन बेहर्सी साहे सम्बंधी स्थान बन्दी मोनेताने स्वाप्त योगे की नीसामी क्रारेत्याहरू हिस्सा स्थान

के मंत्राहे बर्णाना केन्द्रके होतू नृत्याना केन्द्रको हान्हें राज्या अभिनेक राजा नावरताच आर्था इन पित्र कायवादीको खोल्कर विद्यात्त्रिक तथा नार्टिन्य एवं निरामकर प्राप्त एक गोल्लाहन केनेकोक सेटीका प्राप्त समाप

हों है भागा में बजुक प्रशिवनिक ने प्रेयून एक्सी-देने पारित हाइन काम हो कि विते था विनें मातानको माता है मेरे नाम नाम नाम मातान वह कि वितास सराव हुआ। एन नामने महावादिको दिल्ली नेनायी नाम हुए। मात्री विद्युक्त मात्री कि हुए। मात्री विद्युक्त मात्री विद्युक्त मात्री विद्युक्त मात्री कि हुए। मात्री विद्युक्त मात्री कि वितास मात्री मात्री कि विद्युक्त मात्रि मात्रि कि विद्युक्त मात्रि कि विद्युक्त मात्रि मा

१५८५६२ वार्व व्यवस्थात शतकोत व्यवसीर्यकारी राजनीर्य बीर बनके बरवारियोग समार्थन दिया और वत्रये वासुका वर्षे विचानीरमाधी अधिवारिक व्यक्तिम विचा । सन्ते जलवात्रावीर वेपके वैदिक प्रथमें में प्राणी वर्ष वायक द्वीनेत बहार पर्योग्न वास्त्र

ही हुए। बाली रानेको विनेती परिचारीके बाधवाई राहोंने हरावनी बाह्यपत्ती परिचारों को बील्य वर्ष होता क्या विद्या वृत्त कोर्याली पत्तव कुरवारीके वेता राक्ते हरे-तिसे वरि बाह्यपत्ति है। इसी प्राचन अवस्थित का राहमें बादवार बुरब्यावाद्य और बाहें फुछ वशजों तथा अप मुसलमान नवाबोंके प्रयत्न, प्रथय और प्रोत्साहनसे उदूभाषा और उर्दूशायरीको अभूतपूर्व उन्नित हुई और नजीर, नसीर, मीर, सौदा, हाली, जीक, दागु, ग़ालिब लादि अनेक उच्चकोटिक गायर हुए, तयापि चदूके इन शायरोंने मो. इरक हक़ीकोंके वहाने इरक मजाजोंके कामोत्तेजक गात गा गाकर अपने आश्रयदाता नवावा, अमीरो, रईसो और उनक दरवारियोका विलासिता, काहिलो और विषय-भागामें अधिका-धिक ग़क़ होनेमें हो सहायता दो। यदि कुछ और किया तो यह कि उन्हें निराशावादी बना दिया। कोई नैतिकता या सत् स देश इस उदूशायरीमें मो न था। दिल्ली और लम्बनक उदूशायरीके प्रधान केन्द्र बन गय थे। तत्कालोन हिन्दा एव उर्दू साहित्यके आधुनिक प्रशसक मले ही उनमें गढ षय ईश्वरीय प्रेम, अन्य अतिशय ऊँचे-ऊँचे भाव एव प्रादश खोज निकालें. निन्तु जिस कालमें और जिन लागोक लिए वे कविवाएँ-शेर या गीत. गजलें लिखी गयी थीं और जो उन्हें पढ़ते या मुनते ये उनपर तो इस माहित्वका काई सत्प्रमाव पडा दृष्टिगोचर होता नहीं, प्रत्युत देश और जातिके नैतिक पतनमें ही वह भी साधक ही हुआ प्रतीत होता है।

पानिक, तात्त्रिक, राष्ट्रीय या किसी मी प्रकारके वैज्ञानिक साहित्य-का उस कालमें प्राय काई सुजन हुआ ज्ञात नहीं हाता । आमीद प्रमादमें मग्न और शरान, अफ़ोम एव कामिानयाके शरोरमागमें सवनकारके गम-ग्रलत करनेवाले इन राजे, रईम और नवार्वोने सगीत और नृत्य आदिकों मो अपनी ऐशका साधन बनाया, अत प्रात्साहन दिया । किन्तु इन महान् कलाओं को भी नीच उद्देश्योका इस प्रकार साधन बनाकर विकृत एव पतित कर दिया और उनका विकास एव उन्नति करनक बजाय उनक रूप एव मूल्यको अत्यन्त गिरा दिया । विविध कुन्यसनाका जिम देश और समाजमें बोलवाला था वहाँ सत्साहित्य और कलाआको प्या प्रात्साहन मिल सकता था । चित्र एव मूर्तिकलाकी भी प्राय यही दशा थी इम वानमें उनकी माधना, विकास या किसी उल्लखनीय कृतिका निर्माण नहीं हमा प्रगीत होता । पन पाताओं और वश्वनीने स्थापन एवं दिक्तकारा यी नीर्प क्योप क्लास का किनी महत्त्वपुत्र हतिका निर्मीत नहीं निया। किन्यू, तैन जुननवान साथि किमीका को कोई महरमपूर्व करौरण-ग^{ीन्द}र मन्त्रित आपि तो इस कानमें प्रायः बना ही नहीं स्वयं अपने किए से रिनी उपनेनकीय नवर वुर्व राज्यात्वार क्यारिका निर्माण में बच्छेने बाव नहीं किया - बर्जनहुनी बेबमानाएँ, बहुन्वाशांकि सन्दिर अपूर्ण नरमें निक्तीका स्वतमित्र अञ्चनक्रते नदावी-बारा निर्दित बनके दो-दक इमामधारे या बाल्क्स निवान-सबन एवं उचान वेबनाओं हारा दुष रीमोरर बनाने समे कोई-कोई हिल्लू मन्दिर ऐने ही खरनवटना दो-एक मन्द बराहरण भएनाइ नहें का करते हैं. फिल्टू से की कोई निर्मेण सम्बेक्टीन बन्धकृष्टियों हो देनी बात नहीं है।

नहरें, बांच बहर्ष मादि बनानेश तो बांदे प्रथम ही नहीं था. का जी में जो नह कर होतो नहीं। हमित्री दक्ष बोचनीय की बोर क्षात-क्यो एवं व्यानार इतकावे नह होते वा रहे वे । मारवपर्वके मानः nat fefam ubuit fein fret En mife etfelen but fafan वानाने बनी करणांके नागांगतः जाशान-प्रशासः एवं प्रस्तुवताके नागतः पुत्र नायन पत्रते बावे वे जिल्हा समान्ति एवं अधाननतानै नुवर्व बद बरके भीतर ही नुरक्षा निरिष्ध न बी ही नर्बन नाना बनार के चीर कार्नुकों सुदेशीन स्वास्त मानीन क्षेत्रर बहुए सीबीनी साम करवेदा काई बाहन ही व कर बनता था। जन इस कामने वे ग्रीकेशामार्थे जान: बन्द हा रही जिनके कारच निर्देश स्वालीने रिका तीची दम क्रमंत्र नकामुभ स्नारकंची नदा भी विवश्की क्यी नदी। लिपूर बीन मार्डिफॉफे लेके त्योतार मार्डि मी बाबा सन्तन्ते हो नवे । प्रथम धी बनडाके इसके कार्फ नियु बरनाड ही न वा दूतरे बन्हें निविक्ताताकुरू मनानेशी धन्त्राचना मा व रह बरी थी।

Les

बान्द्रतिक केन्द्र और बिकानंस्थान की अक्सर एवं बनान्त होते वर्षे मार्थाण इक्ट्रिया एक पति

गये। मावजनिक निक्षाची कोई व्यवस्था ही नहीं रह गयी। प्रत्येक समाज और वगर्मे घोर रुढिवादिता, मकीर्णता एव अनेक अचिविस्ताम और हुरीतियाँ घर कर गयी थी। धर्मन परम्परागत नामो, प्रधाओं र कतिपय बाह्य आचारो मात्रका रूप ले लिया था। तेजस्दी धर्मानार्यो , सन्ता, सुघारको एव विद्वानोंके अभावमें प्राण एव घनकी रक्षामे ही सदैव चिन्ताकुन जनमाघारणका चार्मिक जीवन सडन लगा था । क्या डस्लाम, क्या शैव, क्या बैष्णव, क्या जैन और क्या मियव अथवा अप्य काई भी घर्म, सबको प्राय । गवा-मो त्या थी। मभी घर्मी में घोर विकार अनेक पन्य उपपन्य, जो स्वय परस्पर एक दूसरमे वैमनस्य रखते थे, तथा एक प्रकारको शिथलता उत्पान हो गयी थी। थोडे ही मुमलमान होगे इस्लाम-के मिद्धान्ताको भली प्रकार जानते हो, उसके नियमोका ईमानदारोके साय पालन करते हा और अपने धर्मके विकद्ध कार्योको न करत हो या कुफ कही जानेवाली प्रवृत्तियोमें रत न रहते हों। हिन्दुऑक साय अपना विरोध बनाये रम्बनेके लिए ही अथवा अपनी राजनैतिक शक्ति बनाये रखनके लिए ही वे मुसलमान थे। जब हिन्दुओ या जैनो आदिशी सहायना और सहयाकी आवश्यकता होती तथ वे उनके धर्मके प्रति अत्यात सिहिष्णु एव चटार हो जाते. जब विरोध होता तो बडेसे वडा अद्याचार करनेमें न पुक्ते। परिस्थितियोंने मन्त गुरु नानकके सीधे सग्छ बर्मकी एक मैनिक सगठनका रूप दे दिया जिसकी राज्य और दावितिल्टिमामे बह षर्म कमने कम उस कालमें तो इय ही गया था।

जन-माधारण हिंदू, राम और कृष्णके स्वमें विष्णुके तथा शिव, गणेश, हनुमान, दुर्गाके मुख्यतया और सामान्यतया तैंतीस करोड देवी-देवताओं के उपासद हो गये धीर उनके लिए शैव, शावन, वैष्णव आदिका बहुवा कोइ भेद नहीं था, किनु प्राप्त, प्रदेशों, जानियों और वर्गों को दृष्टिसे कहों शैव मतका, कहीं शावतका, कहीं राममितवना, कहीं कृष्ण-भिवतका, कहीं जिगायत आदि अस्य किमी सम्प्रदायका यिशेष पक्ष था



नहीं पहना चाहिए। इसके विपरीत मेसूरवे हैं ररप्रे और उसके वेटे टीपूने अपने राज्यके जैन-गुरुओं और जैन तीथोंको दान दिये और उनके थवणवेलगोल-जैसे तीर्थोका सरक्षण किया । स्वय औरगरीवके मुहम्मदशाह क्षादि वशजोंने जैनाके आग्रहपर जब-सब जीवहिसा प्रतिबाधक फरमान जारी किये, और खीमसी भद्यारी, राव कुशारामशाह, लाला हरमुखराय, गजा सुगनचन्द आदिको अपना सजाचा मनाया तथा अपनी दिल्लो, आगरा आदि राजधानियामें भी जैनोकी धार्मिक स्वतन्त्रनामें विदोप वाधा नहीं दी । वंगालकी नवाबीमें मृशिदाबादका जैनवर्मानुषाया जगतसङ और उसका घराना अत्यन्त प्रतिष्ठित था। धनकृषेर जगनमेठ उस राज्यना स्तम्भ था और अँगरज भी उममा ब्रादर करनेपर विवश थे। व्यापारियो-के रूपमें जा घोडे-बहुत जैनी बगाल, बिहार, उष्टोसा, आसाम आदिमें थे उनको दशा अन्य हिन्दुओंसे भिन्न नहीं थी। यही दशा पत्राव, शिन्ध आदिमें यो । दोप उत्तर भारत-दिल्ली-आगरा प्रदेश, मध्यभाग्तक मराठा राज्य, राजस्यान, गुजरात आदिमे जैनोका अनेक्षाकृत बाहुल्य या, किन्तू यहाँ भी उनकी धार्मिक और सामाजिक दशा प्राय वहाँके अप हिन्दुओं जैसी हो यो। सुदूर दक्षिणक तमिल प्रदेश एव मैसूर आदि दक्षिणी कर्णाटकी प्रदेशोमें जैन-धर्म इस कालमे भी अपेक्षाकृत उन्नत दशामें रहा । अब भी कई छोटे-छोटे जैन राज्य वहाँ विद्यमान थे। उस प्रदशके जैन-तीर्थो एव गृहओका सन्धण एव कन्तड भाषाके जैन-साहित्यकारोका प्रथय यहाँ यरावर बना रहा । अनेक धार्मिक एव लौकिक ग्रन्य इन विद्वानोंने इस कारुमें भी वहाँ रचे । कई ग्रन्य तो ऐतिहासिक महत्त्वक भी हैं, विदीपकर वहाँकी एक जैन रानो रम्माका प्रेरणापर देवचाद्र-द्वारा रचित राजा-विलिक्ष्ये (१८३४ ई०) पर्याप्त महत्त्वपूण है । माहित्य-मृजनको दृष्टिस उत्तर भारतमें उस कालमें जैनोंके प्रमुख वन्द्र - गुजरात, दिल्लो, आगरा, और जयपुर थे। सस्कृत, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाआमें साहित्य-सुजन चलता रहा। किन्तु उसमें गद्य एवं पद्यके हिन्दी साहित्यकी हा बहुनता नहीं बीर बच्छी रचनार्थ बरपुर केल सर्वांच्यी रहा। इन देव नी वर्षे सरावस्त्रा कार्यों सबका रवास्त्याहः केन बहितों एवं साहित्यानी मान मिनते हैं मिनति बदस्या एवं वर्षन रहतेन महत्त्वपूर्व है —ऐन्ताराम, रोकरात्रम्य पुक्रपान कृतका वर्षोत्स्वक स्थान्त्य वर्षापुष्ठ क्षाव्यन्त्य नवस्त्र वेदराहः पुनायनः देवस्यः प्रमानस्त्र रेत्रस्तित्व स्थानस्त्राम्य नवस्त्रपुक्तस्य साहरः रोगानी पृष्टिवासम्बद्धे बस्तुदेवः हिन्तीक वाही बस्तुव्यान

भीर दुरान्त्रक नरायुर्ग्ड पनशक विकास बादि वस काक्के प्रसिद्ध राविद्योगी-ते दे । राज्युत राज्यीच्ये राज्यीतियी यो इस काक्षी हुएँ कीशी नात्रपर्युत्व नाव निमा है । गुण्येचनामंत्रे देशस्त्रका बाहव सैन या जिल्ली तिनिवसाम दुव हुवा था।

बनपूरमें किया राजा बयसिंहके बनवने बल्ल्बल बीनी एक बण्य-क्टपर निबुक्त ना । बक्ता पुत्र निवनशास राजा रामसिंह और निवनिर्देश के सम्पर्य रोजान या । बढ़ बीट बीजा सी या और बाबनीयके दुवर्ष भारतनमा था। इसका कृत राजकन्त्र इसका बद्वाराज समादे अनिर्दे (१७ र–४३ द्रै) का बाबिना द्वान एवं ब्रवान दीवानं का स्था त्री बानन-परन्य एवं राजनीतिये बायना कुळन होनेके बाय-डी-वान थोर बोद्धा एवं कुळल केनानी था। बद्धार और बीवपुरके राजानी करनिय और मजीवरिवान को परावर काक-बातोई को वे करारा विकारके शृहमें बादवका बान दिया वा क्या बहाइरबाहरे दीवों राज्यों पर बढाई करके कर्युं जिल्ला जिला और बाक्या मीजित कर दिया ह बोली राजा जानकर क्षत्रपुर यो करे । वर्जाबहरू जान कहका रोजल रामक्ता मी ना । करवतुरमाजींनी कोई व्यव्योक्ति नुमकर नड स्वर्व बनेना परपुरकी जोर थक दिया जाने क्रम-बक्त-शीवकी बनने नार-भाइकी नैनान्में बरनि निकास बाहर किया और कायुरवर जनिकार कर निया। इनी प्रशास अपने राजाकी आक्राते बढने बोधपुरके वी बाडी

बारवीय इतिहास पुत्र धरि

नेनाको मार मगाया, और दोनो राजाओको अपने-अपने राज्यमें स्यापित कर दिया। इस दीवानने साम्मरको भी मुमलमानोंने विजय किया और दोनों रानाओंके बीच चेंटवा दिया। राजापर बादशाहको प्रसन्न सरनेमें भी यह रीवान सहायक हुआ और राजाक साथ दिल्ली गया तथा जब राजाको माठवाका मुवेदारी मिली ता उहाँ भी उसके माथ गया। तद्वपगन्त रात्र कृपागम, शिवजी सास (मृयु १८१० ई०), अमरचन्द (१८१०-३५ ई०) आदि प्रमिद्ध जैन दीवान जयपुर राज्यमें हुए। दीयान अमरचन्द गिद्वानोका भागे आध्ययाता या, निधन छात्रोंकी छात्रवृक्ति देता या, स्वय मी वडा विद्वान् और धर्मात्मा या और अनेक मदिराका निर्माण एवं ग्रन्थोंको रचना भी इसन करायी यो। राजाका मारा दाप अपने कपर छेकर और अपने प्राणीको बिल देकर अँगरेजींक कोपमे उसने जयपुर राज्यकी रक्षा को था। इस कालमें जयपुर राज्यवे जैन-साहित्यकारोंने विशेष रूपसे हिन्दी वटी मोरीके गद्यका अभूतपर्य एव महत्त्वपूण विकास किया । जयपुरवे विद्वानीका देशके अन्य प्रदेशोंक चैन विद्वानोंके साथ भी बरावर सम्पक रहता था। ग्रायोंको प्रतिलिपियाँ फरनेका एक विशास कार्यालय भी इन कालमें वहाँ स्थापित हुआ जहाँसे मर्वत्र ग्रंथ भेजे जाते थे। अनेक जैन मि दरोंके अतिरिधन जैन-मूर्तिकलाके निर्माणका भी केन्द्र जयपुर बना। केवल जयपुर नगरमें ही उस कालमें लगभग दम-वारत हजार जैनी थे।

जीवपुर राज्यमे महाराज अजीतिनिहसा प्रचान दीवान रघुनाथ मण्डारी था, जिमसी भण्डारी महाराजका प्राइवेट सेक्नेटरी (सनदीवान) या और अनुपसिह जीधपुर नगरका धामक था। विजय भण्डारीको राजाने गुजरासके सूबेका कार्यभार सम्हालनके लिए मेजा था। हूमरी बार पोमसिह मण्डारोको अहमदाबाद भेजा। मेहता सप्रामसिह और सावन्तिमिह जिलाधिकारी थे। अनयिनहके समयमें सूरतराम भण्डारी दीवान या और रतनिसिह मण्डारीने अपने राजाको बोरस १७३०-२७

है में वृज्यान और सामेश्वी मुदेशारी वृष्यानाहरू को थी। वाले
दुवरण के में मेरार मो भी शिवाल की मो में मेर्क प्रविके
दुवरण के मेरार मो भी शिवाल की मो में मेरार प्रविके
दुवरण के पाइन्स भी शिवाल की मो मेरार प्रविके
दुवरण काता। येर तमाराज का मो है र है में मेरार देवरों
दुवरा काता। येर तमाराज का मो है र है में मेरार देवरों
कारार की मा मा मार्गिक (१८४१) मेरार करने क्लीपांस
कारार प्रविक्त का। इव प्रमाण काता मेरार्थि इन्द्रप्त मेरार्थि ।
कारार प्रविक्त का। इव प्रमाण काता मेरार्थि इन्द्रप्त मेरार्थि ।
कार वृद्धि के दुवर्गा मा मार्गिक मेरार्थि इन्द्रप्त मेरार्थिय ।
कार्याव्या मेरार काराया मेरार मेरार मेरार मेरार प्रविक्त
कार्याद्धि मेराराज काराया की की मो मीरार्थिय
कार्याद्ध्य मेराराज काराया की मेरार्थिय | विकास | मार्गिक |
कार्याद्ध्य मेराराज काराया की मेरार्थिय | विकास | मार्गिक |
कार्याद्ध्य मेराराज की मार्गिक | मार्ग

बागवरच्या हो वे दश नामने वारवार के कान दो बाब की है। व कारपुर रागले राज सार्ववर्ड पारम् वो करा विद्ध माने प्र कारपार रोगल का त्या । उत्तमन करान पुर वारवार ने रागले प्र राग बारवीया डिलेक्ट मानने नेपारी मौनती एक मोर नाम की वित्य के नामों या प्रवास्त्राओं के तिया पुरति का सार्व प्रवास्त्र प्र का पार्क्त पार्च के निर्माण करियों में एक बात के दिला मां रिस्ते वार्तिक नामाने राज्या विद्ध क्यान देशमा मौनक्त माने या कारपार्च विद्या माना करियों माना की स्व का स्वास्त्र की सार्वाण करिया करिया माना कि किया का स्वास्त्र की दोश्य सार्वाण की दिशा माना करिया करिया का स्वास्त्र की दोश्य सार्वाण की एक मारा नेक्सी एक बार करान का स्वास्त्र करिया की

तरसार और धीराल के अलोरन का नहारबीय नहीं और विधान

मग दम प्रतिशत थे, राजधानी उद्यपुरके अतिरिक्ष, निसीट, केशरिया-नाय, ऋषमदय, बोबोत्बी, बरुवाडा नेश्हा आदि प्रसिद्ध जैनतीय एव केंद्र थे। मदारक रेनश्पूर, बौक्याडा, प्रतापगढ आदि उश्राज्यामें भी जनाको अच्छो प्रतिश्रा था।

जैसलमेरम एक विद्याल एव महत्त्रपुण जैनग्रापभण्डार था। इस राज्य-में जनदीयानामें राजा मुलराज (१७६२ ई०) का मन्त्री मेन्ता स्यमप-विद्र बंधिय प्रसिद्ध है। वाकानर राज्यय इस पाल्ये जैनदीयापाम अमर-षाद मुराना अस्यिध र प्रसिद्ध ह। यह यार सनानी भी था, पई युद्धामें चयन विजय प्राप्त की भी और भाटिगार पान जाव्यावाँका युरी तरह पराजित करक उमके दुर्ग भटनरका भी हस्तगत कर लिया था। अजमेर मेरवाङ्गाया ज्ञामय १७८७-९१ ई० प बीच जैनवीर घनराज शचवी था। उसने चार वय तक निरन्तर मराठाफ विगद्ध मुद्र गरमे इम प्रदेशकी रक्षा का भो और प्राण रहते उन्हें उमपर अधिकार नहीं करने दिया था। बूँदी, कोटा, अलवर आदि अप राजपृत राज्योंम भी जैनोकी प्राय ऐसी ही स्यिति घो। सम्पूण राजस्यानयी जनसम्बाका स्वगमग उस बाग्ह प्रतिपात वर्ताम जैन थ, और यहा ऐना प्रदेश अब रह गया या जहाँ जैन मात्र सेठ साह्कार और ब्यापारी ही नहीं थे वरन् उनमें-से अनेव बीर यादा. सैनिक, सामात सरदार एव राज्यमात्री भी थे तथा शामनम विभिन्न पदींपर भी बिना भेदभाषके नियुक्त हाते थे।

हम पालके सवस्यापा नैतिक पतनके प्रभायसे जैनस्म और जैनी जन
मो अछूते नहीं थे, हिन्दुसोंका जैनिबिद्धेष मा यदा-कदा एय यत्र-सथ महक
उठना या और यही सस्यामें जैनी लोग अपना धर्म त्याग कर वैष्णव भी
वनने एगे थे। मट्टारबीय विश्विलाचार, स्विवादिता, संकीणता, अदिाक्षा,
जाति-पीतिके कठार बच्चन, छूआछूत, बालियाह, बहुपत्नीत्व, सहमरण
आदि अनेक सामाजिक कुरीतियाँ क्या हिन्दू, क्या जैन और क्या मुसलमान,
समोमें ब्याप्त होतो जा रही थी। सम्पूर्ण भारतीय समाज एक अजीव

निर्धायाताः कर्षः निर्पाटकार्यके सम्बद्धने स्टैनकर कार्यावधीन वर्षे सन्ता था। इसमें नन्त्रेर नहीं है कि एन दक्षनी वर्षे मुस्के प्रारम्य तन से मानगीय नारमा और संस्कृति समास्के नार्यो देखींग संस्कृत बढ़िन्यी से

बह यम यबके बन्त बक महीने विवह बनी। इस बामने सम्बद्धिते विद्यावर पूर्वीय देशीन अब बहुतपूर्व दामनि की नाइस्ते बहुतपूर्व बदनति की।

अध्याय ह

यूरोपवासियां-हारा भारनकी ऌट

क्षीरगर्जेयके जीवामें हो निस्ट्र आनि मुगलगानेतर भारतायाचा राज नैतिक पुनस्त्यात प्रारम्भ ही गया था, और उसकी भृत्युन उपरान्त १५० यपके बीस यह पुनकावान अवने घरन जिलाकको पट्टेंगकर देश और जाति-का बिना कुछ दिस किये ही दूसवगति अवनत भी हा गया । हिन्दू राज्य-मिनिने प्रयण्ड अत्यानम मन्तुत्र मुगरमात सत्ता दम देशमें पराभूत हो ही पुरी थी, बिन्तु छम हिन्दू राज्यशक्तिमें स्वयमे एबसूत्रना मधी। शत, जाति, पर्ग एवं व्यक्तिगत पक्षपात, पृष्ट, येमनस्य, स्वाधी घता ^{एवं} अहूरदिशतान उस मरान् प्रयत्नको फल दिशानिवे पुर्ये हा व्यक्षे बार दिया। इतना ही नहीं, श्रीमा कि पय अध्यायम बणत किया आ पुता है, देश और दसवासियाको स्वय जनक अपनीन हो घार अराजकता, अशानि, अध्यवस्या एवं अीतिनताम नृपाना आपनारमें हुवी दिया। पौरणाम यह हैया कि सुदूर परिचमन उटकर आय कतियय गृद्धाकी लालुप दृष्टिने हैंस प्रकार क्षत विश्वत, आहम एवं मृतप्राय भारत एप भारतायनांशा मन्पट रक्तजायण एव मान भागण करनका समुत्रयुक्त अवसर दला । सात समुद्र पारस आनदाल इन मुद्रा भर अनुल्लम्बनीय, धवित एय साधनविहीन, विन्तु चतुर छाहमी एव गृन यूरोपीय कुटेरान अपन आपका कुछ नहींस मेब कुछ बना लिया । १७०७ स १८५७ ई० पयन्तके भारतीय इतिहासका पननी मुखी नारतीय रूप सी पूर्व अध्यायमें दक्ष ही चुक हूं, प्रस्तुत अध्याय-में प्राय इंगी बालमें भारतमें भारतवासियोंके ही घन-बल और बूतपर निरामानाद एवं निर्वतिदारके स्वरूपने चेनकर अपनित्तीक वर्ष चला वा र इनमें नलेड नहीं है कि इन देखनी क्यके मुक्के प्रारम्ब एक मो भारतीय नम्पना बोर नांस्कृति नंनारके सभी देवनि बाँधक वडी-वडी ^{की} बद्ध बन सबके अन्त एक नामीने जिज्ञ बनी । इस कामर्वे बन्त देवनि

विदेपकर कुरेरीय देवीले. अस सक्तपूर्व क्लार्त की आराज्ये समूत्री

संपन्ति की ।

चस ममय भारतका ममस्त पश्चिमी जलमार्गी व्यापार अरविके हायमें था । पुत्रगाली उ हें हराकर पश्चिमी ममुद्रतटपर लम गये ।

१५०५ ई० में अलमिडा उनका गयनर हुआ। उमने पुर्तगाली वन्तियों रे लिए कृष्ठ किले भी बनवाये। १५०९–१५ ई० में अलबुक्तर्क भारतम ुनगालियोगा गयनर रहा । उसने गोआपर अधिकार करक उसे यहाँकी पूतगाला बस्तियाकी राजधानी बनाया । समने मलककाकी विजय किया, रंका मकात्रा, चरम्ज आदि द्वीपोमें पुतगाली बस्तियां स्थापित की, भारतम गोत्रा राज्यको कुछ विस्तृत करने संगठित किया, उत्तम शासन व्यतम्या को और जामन-प्रबन्धमें हिन्दु शोंको भी नियुक्त किया । मुमलमानोंसे पुतगालो बडी घृणा करते ये। मुसलमान स्त्रियोस विवाह करने और मुसङनाना तथा अन्य भागतीयायी ईसाई बनानेका भी वे प्रयत्न करते थे। अल्युक्कं भारतमें पुर्तगालका एक विशाल एव सम्पन्न उपनिवेश स्थापित भरमा चाहता था। उसी ममयमे व्यापार गीण और ईमाई मतका प्रचार तथा पुतगाली राज्यका धावत-मवघन पुतगालियाका मुख्य उद्देश्य वन गया था। दक्षिणके विजयनगर और बहमनी राज्यो तथा गुजरासक मुलतानोंके भी राजनैतिक सघपमें पुतगाली आये। मृगुलकालमें भी पश्चिमीतटपर वे एक महत्त्वपूर्ण शक्ति बने हुए थे और सूरत आदिस हें कक लिए जानेवाले मुमलमानोंकि मागमें भागी वापक होते थे। अत उनका जव-तव दमन भी किया जाता था। अकवरकी इच्छापर गाआक पुतगालियाने सम्राट्के दरबारमें जैसुइट पादरियोके दो तीन ईसाई घम प्रचारकदल भी भेजे थे। १५८० ई० में स्पेनके राजाने पुतगालको अपने राज्यमें मिला लिया, तभीसे भारतके पुर्तगाली राज्यको स्वदेशका राज्याध्य समाप्त हो गया और उसकी अवनति हान लगी। शाहजहौन वगालके पूर्वगालियोंकी ज्यादितियोंसे चिढकर उनकी बुरी तरह मुचल डाला था। तदन तर फ्रामीसा, डच और अंगरेजोंने उनके पूर्वी व्यापारके ण्काधिपत्यको नष्टकर दिया। अन्तत गोत्रा, द्वामन और द्यूके अतिरिक्त

इतिहासकामधे प्रतिके विवादिकाका भारतकार्यक काच करायन सम्बद्ध कुर्वातकाके झारसे हुआ। ५वी ६की शानी हैं वूर्वते ही कुवान और मारतका मान्द्रांतिक एक शामितक ब्रांगर्स बराजकवन स्वादित हो वदा या । ४नी मनी ई. पुत्रने विकासरके भारत आहमनके शास्त्रीत वर्षे न्यानारिक शम्बन्य भी अरबस मन्द्रों स्वानित क्षप् भी कई क्रतान्त्रियों हंड वके। तहरुता रोमन साम्राज्यके बस्त्य क्षांकव रोमके ताच भारतरा स्मापार बड़ा-पड़ा था। योगा वैद्योंके बीच नुष्क राष्ट्रण कार्य की करे-क्ये । देशान्त्रीर देशाई यतके बदमके बो-तीन बी वय परवाद ही दन इंदाई मध-बनारक दक्षिण चारतमें काना नताना माता है। किन्तु तहुनरान्य क्यानंत एक इक्षारं वर्ष तक गम्बन्ध विच्छेष रहा । मुरोगका वह सम्बद्ध वा इस्कानके अवन्तर्वतके क्रमूच ईवाई वर्ष वर्ष वृरोपकी यन्ति इत्यान दन राधपुत हो रही थी। कई ही दर्प तक मरने मनरनामी सन्त्रकर सारिका बढ़ार करनेके सिए क्रोगका ईनाई जन्त दुर्क बुलस्तानोंके बार्व वर्तवृक्ष करता रहा १४५३ ई में दुवों हारा कुन्तुनुनिवाकी विजनते कारान्त सही जारत एवं मान कृती देखीके बाम नुरोनका बसनार्ग चिरकाकने किए सबस्य हो गया वहाँ मुख्येने श्रम तमीन मामूचि चेयना साहक और पराधनका कहा हवा । बारतके करानानीस बन-बेजनकी क्वारियों तर्वत्र प्रशक्ति थीं । ऐते जपूर्व देशके ताथ स्थापार करके साथ कालेके किए बरेक शुरोपनारी कावासित ने फिल्तु कोई नार्ने र मा

बता १४९८ है। में बारेजी जिलामा शायक बामी कई जमाजो एवं स्मेज विपित्ती करूमके बाद माजीका महाहात्त्वा च्यूकर कारकर माजा स्मान रोगके मामले भारतके वरित्रोशीनविषयी तरहर दिनता कार्माच्यके क है के रामप्रदेश बा म्हीन मीर बादों बहाके प्रता क्षानीरूचने वनके प्रताह हारित माराके बाद महिनाकों स्माना स्मानीर कार्योकों दिना माराक कर्मानी

क्रश्रीके द्वारा और उन्होंका क्यशेन करके कित प्रकार वृत्ते अंगरेजेले एक वैपने करली पर्यन्त एवं प्रमुखका विकास क्रिया करका सकर करना है। सबसे पीछे प्रारम्म हुआ किन्तु उन्होंने वही शीझताक साथ उसित की। १६४२ ई० में सर्वप्रयम फान्सके तत्कालीन प्रधान मन्त्रो रिशलूने तीन मन्नितर्ग इस उद्देश्यको लेकर स्यापित कीं, किन्तु वे थोडे समय परवात् हो मग हो गयों, शिसका कारण सरकारो कमवारियों एव पादियोंका अनावश्यक हम्त्रक्षेप था। १६६४ ई० में फान्सके बादशाह लूई चौदहवेंके मन्त्रा कोल्वर्टने एक नयीन कम्पनीको स्थापना की जिसका उद्देश्य व्यापार उत्तना नहीं था जितना पूर्वी देशों में फान्सको राजनैतिक शिवतको स्थापना एवं फान्सके राजाको शिवतमें वृद्धि करना और ईमाई धर्मका प्रचार करना था। फलस्यहप १६७४ ई० में फ्रान्सिस मार्टिनने भारतके पूर्वी सटपर फान्सके पाण्डुवेरो उपनिवेशकी नींव हाली और वगालके चन्द्रनगरमें एक व्यापारिक कोठी बनायो। सदनन्तर फान्स और हाल्ण्डके वीच होनेवाले युद्धोंसे इम कम्पनोको भारो क्षति पहुँचो और १७२० ई० में उपका पुन मगठन हुआ। उसी वर्ष मारोशस होपपर तथा १७२४ ई० में मलावार तटवर्सी माही नामक स्थानपर फान्सीसियोंका अधिकार हो गया।

फान्सीसी गवनर डयूमा (१७३५-४१ ई०) सत्कालीन दक्षिण-नारतको अव्यवस्थित दशाको देखकर वहाँके छोटे-छोटे राज्योंके राजनैतिक मामलीमें इस्तक्षेप करके अपनी घावत बढ़ानी प्रारम्म की। तन्जीर राज्यमें उत्तराधिवारके लिए होनेवाले युद्धमें उसने एक पक्षको सहायता को क्षीर उससे बागेकल प्राप्त कर लिया, जिमसे फा सीसियोको दावित, अधिकार कोर प्रतिष्ठामें पर्याप्त वृद्धि हुई।

वदननर दूष्टें (१४७२-५४ ६०) भारतमें फान्सीसी गयनर बनकर बाया और उसके साथ ही फार्म्सीसी मस्पनीके जीवनमें वित्रप एप राजनीतिक विकासका नकीन अध्याय प्रारम्म हुआ। धूष्टें निम्बापों, स्वदेशभक्त, अस्पन्त चतुर एपं पूटनीतिपटु था। अपने पड़ीयो भारतीय राज्योकी राजनीतिका उसने भक्ती प्रकार अध्यान कर निया था। अपने अधीतस्य कर्मा

जनरा बोर नाई प्रदेश न रह नहां। शिन्नु वे डोटीको ने नुस्तायी विभागों नृष्ठ शिन पूर्व हरू चर्चा बाती होंदी स्पृत्राणी बीजारी बराय भी स्टाप्त आहारे वास्त्रव राजवीतिशांक प्रमुख कर विभाग बाह्या की इंडियों। रे दिस्तार १९६६ हैं को बीजा उत्तरक बहु है डीटी नुस्तामी विस्त्रयों भी विश्वमण्डात कर राजवी किया ही बती बीए

नाराने वर्गनदायार पूचनंत्रा बंधान्त ही बना । हार्वेद-रिकामी दश को यह दुसक कारिक ही अने वे। १६ दे हैं में पृथि देशक ठाव कारार करते हैं किए बन्धन एक बनानी वर्धने बीट बहर हु। नामार्था हीच बनाने नामार्थने टानुबोर्क कारारवर सम्म

एपालियन क्या किया तथा आरक्षेत्र नामुन्तरस्य भी अपने पेत्र कार्य हिन्तु संदर्शकों तीत्र तर्मामांत्रकार्ष वारण आरक्षित स्वस्थात्वे करूँ ती-वारण भी प्रति क्रिक अस्या वहां भारकार्य ही तर्मी स्वस्थात्वे अस्ति अस्ति तीव स्थापार्थ किंतु वृद्ध संस्था पहुं। सामान्या श्रीकों स्वस्थित अस्ति अस्ति स्थापार्थ कर बारण विश्वी स्थापार्थ कर्मा व्यवस्था है ते तिन्तरास्त्र विश्वी स्थापित स

वान्तीको वारी त्रवीमा रिक्सास । संवर्षको और जान्यामियकै स्थि हैरेसमा मेर्कामंत्रम एव मुर्जिक दण बीर सी वर्षिक रिव वर्ष । आस्त्री क्यानी ऑप्ट्रेशम व्यास्त्रीय कोर्जन उनके त्रिक स्थानी बीर विन्युस वर्धि योजन रक्तामें ही क्यान वारण त्रीव वर्षिकर रहा क्या किंगु नव्यक्ते समुद्रीतर रहता एयान्त्रिक वर्षका नाम कर स्थान क्या रहा क्याना देवानेका वर्षक प्रवास्त्रिक व्यास्त्री क्यानी वेतेले जी सार्वी सम्मा वर्षका स्थानिक व्यास्त्री व्यवक्षा प्रवास विद्या, सिंगु वे जी रिक्न

रहें। अंतरेड ओर कम्बाबियोंने वन्हें दीमा हो इन देगन निवासं बहर किया। अन्य मुर्तिश्व देशोंको देशानीको जन्मवीतियोने की नुर्ती देशोंने वार्य अनुसार करतेने कियु कमानियों स्थानित की। सम्बाधियोका यह स्थान

made aftern on the

चद हो गया और मद्रास धँगरेजोंको वापिस मिल गया।

इस युद्धके फलस्वरूप इन दोनों विदेशी जातियों हो अपने पहोसी नारतीय राज्यों को कमजोरों मालूम हो गयो, और अपनी वस्तियों के बासपास सो-मों मोलके क्षेत्रमें ये भली-मोंति परिचित हो गये। अवनक उन्होंने यह मो ममझ लिया था कि देशी राजाआं रे पारस्परिक झगडों में पड़कर कितना लाभ उठाया जा मकता है। उन प्रकारक हम्तक्षेपकी पहल ताजी के माम रेमें अंगरे जोने ही कर के फा मो मियों का प्रथ प्रदर्शन विया था। टूप्टेका स्थय मारतीय स्थितिका अच्छा झान था। उसने यह मा अनुभव कर लिया था कि यूरोपीय युद्ध-प्रणाली एव मैनिक अनुशासनके बक्षपर सुश्ववस्थित यूरोपाय सनाआक हारा अधिक गरपावाली भारतीय सेनाआको कैसी आसानीक साथ हराया जा मकता है और अपनी सिना खूय बढ़ायो जा मकती है। अत उसने अवसर मिलते हो पडासी राज्यों की राजनीतिमें भाग लेनेका निरुचय कर लिया।

अवसर भा सुरन्त आ उपस्यित हुआ। १७४८ ई० में आसफ़ जाहको मृत्यु होते ही निजाम राज्यके उत्तराधिकारका इन्द्र छिडा। उधर क्णांटकमें चौदा साहव वहाँके नवाव अनवहरीनको गदीसे उतारकर स्वयं नवाव बनना चाहता था। निजामका पोता मुजफ़फ़रजग और चौदासाहव मिल गये और उन दोनोंने फ़ा सीसियोंसे अपने प्रतिद्वन्द्वियोंके विरुद्ध सहायता भौगी। दूछे सा अवसरकी ताकमें ही था, सहप तैयार हो गया। तीनाने मिलकर अनवहरीनपर हमला कर दिया, वह पराजित हुआ और अम्बर्व युद्ध १७४९ ई० में मारा गया। उसका लडका मुहम्मदअली तिरुचिरा-पल्लीमें अगरेखोंकी अरणमें भाग गया, चौदा साहव कर्नाटकका नवाय हुआ और इस उपकारके लिए उसने फान्मीसियोंको ८० गौव प्रदान किये। अब तीनोंने मिलकर मुद्धफ़रजंग पराजित हुआ, तथापि घोडे ही समय पदिवात नासिरजंगके मारे जानेसे वही हैदराबादका निजाम बना। उसको

भीर वहीं एक बच्छा विस्तृत राज्य बसाकर बच्चे वेजना बाव स्वीपी जीर बसरा बीरव बदानेको भी । वैधे नुषद बारतके शालारना व्या उठानेके किए ही इत कूरोपीय समानियोली स्वारका हुई थी। कार्ने व इन नमन रेपक जैनरेको और जाल्लोनो हो हो बक्रानियों छ नहीं भी रामारिक मनित्रविता एवं मनित्रका तो इनमें परस्पर वो हो। क्या मुक्त बालकी सरावदगाना बाव ब्रह्मकर वे बचनो । व्योतिक वर्षिः मो बडाने समी की । प्रान्त बीर इन्हेंब्डवे इस नामर्गे इवाधाविक संपूर भी भी । मनः मान्यमं वे बोनो नस्पतिको परस्पर लड्डने असी । फिन्यु वर कि फल्लीमी सम्पनीकी बला इस देखाँ बजी अपी-नवी की अँपरेजें चन्त्रनी काफी स्वार्थितः स्वतित एवं समृद्धि प्रश्तत कर चुन्ते वो । मृत्यीकी परानीकी मरेबा यह मनिक साथननस्थम भी भी वसकी मारतीय वन्तियों भी अनेबाइन अविक मुस्कित सुप्रतिन एवं विकास में और इनकैन्डके राजा था बानवका थो बतके वार्वोदे बोर्ड बत्बक्रेर न वा र तिन्तु बालीनी नरुनी एक बरकारी नरुशी नो बच्ने धानकी बारे क्तापर पूर्वतया विजेर की क्लो कर्मचारित्रोको निवन्ति भी कार्य-

या । बनको मारांचा मारतमें कुन्तीबी सरिशको बस्पीक वर्गक

सैन्डे नारण नाम्मीचा नार-बार वही तुग्दीने बाव बस्ता वा। हर्ग प्रवार प्रावेशिक वेदिविद्यार्थि काल्या वार्षके किए मी सेन्द्रिये करणी-की निर्माण स्वीक पुरू वर्ष स्तुपूक थे। सात भारतवे सेन्द्रियों मीर नाम्मीहिन्द्रिये मार होनेबार्थ स्वयन दूस (१४५ -४८६१) में ये, भी कि मुरोप्त वेस्त्रेय सीर सुम्बक्त वीच मारस्य होनेसके पुरू व्यव

नी बरनार ही करती भी और चरकार तथा बक्के वर्धवारियोंके लंब-

दी किंद्र नया ना, राज्यीन प्रदास्त्रको मानवून कुम्बोतियोको किनेत कर्क भेता न मिनी । दुर्वेने नाज्यार अवस्त ही क्रमा कर क्रिया किन्तु संवर्धनी कई बार सम्बोतियोंको वस्तीन्त निम्म । १७४८ ई. है थेयो

संगरितीने कई बार काम्बोरियोंको परामित विच्या । १७४८ ई. है. धीओ वैचेकि बीच एनावच्छको शांच हो बानिक कारण वारणने जो बनका नुव

आसील स्थितका न सब स्थित

4 4

चंद हो गया और मद्राम अँगरेंजोंको वाविन मिल गया ।

इस युद्धके फरण्डमा इन बीगों बिदेशी जानियानी अपने पष्टामी भारतीय राज्योंनी कमजारी मार्ग्म हो गयी, और अपनी बित्नियाने आसाम मो-मो मोलये दीवम में नजी-भाँनि पिरित्ति हो गये। अवतक जिले पर भी ममदा लिया था कि देशी राजाआर पारम्परित अगदाम पड़र किना लाग उठाया जा मकता है। लग प्रवास एम्सम्परी पड़क ताजी में मार्गिमों और जान हो करने प्रामानियाना प्रय प्रदान किया था। इंट्रेंग म्थ्य गरसीय म्यितिका अन्छा जान था। उमन यह भी अनुभव कर लिया था कि यूगवीय पुज -प्रयाज एव मनिय अनुशासन के सलपर सुउपवीय यूगवीय सनाआक दारा अधिन सम्यायानी भारवीय सेनाओं को वैसी आमानीक माय हराया जा मजता है और अपनी यिन सूय यहायों जा सकती है। अन उमने अवसर मिनते हो पडासी राज्यों को राजनीतिमें भाग रेनेका निद्यम कर लिया।

अवसर भा तुरन्त का उपस्थित हुआ। १७४८ ६० में आसफ़ बाह की मृत्यू होते ही निजाम राज्यके उत्तराधिमारका हुन्द छिडा। उधर कर्णाटकमें चौदा साहब बहाँक नवाब अनवग्रहीनको गरोसे उतारकर स्वयं नवाब बनना चाहता था। निजामका पोता मुख्क राज्य कीर चौदासाहब मिल गर्ये और उन दोनोंने फा सीमियामे अपने प्रतिद्वन्द्वियोंने विषद्ध महायता भौगी। टूप्ले ता अवसरकी ताक में ही था, सहपं तैयार हो गया। तीनोने मिलकर अनवरुद्दीनपर हमला कर दिया, वह पराजित हुआ और अम्बरके युद्धमें १७४९ ई० में मारा गया। उसका लड़का मुहम्मदलली तिक्चिरापल्लीमें अगरेजोंकी धरणमें भाग गया, चौदा साहब कर्नाटकका नवाब दृशा और इस उपकारके लिए उसने फान्सीमियोंको ८० गौव प्रदान किये। अब तीनोंने मिलकर मुजफ़राजाके प्रतिद्वादा नासिरजगपर आक्रमण किया किन्तु मुजप़फ़रजंग पराजित हुआ, तथापि चोडे ही समय परवात नासिरजगिके मारे जानेसे वही हैराबादका निजाम बना। उसकी

बहानताके किए एक भूतनीची हेता. हैरराबावर्षे नितुक्त की नगी, का<mark>न्ती</mark> विशेषी कुछ बन और कई विके निने स्तर्व बच्चेकी थी एक वाहीर निको । बद् सन मारदीय क्यानोची जैय-मुदाने बन्हींची गाई उन्ह-नाले रहने क्या । क्ल्बीको देनागरि बुबोको तरसक्यामै बुवनकरमेन राज्यानै हैप्रचनाम पहुँचा मिन्तु एक कवाहेने नाच नया। बुबीने चक्के स्थानने बारकाराहके ही एक पुत्र बकामतकांत्रको नवाब बराला और स्वर्ध वर्के बेरसक्के करने ठाउ वर्ष हैपरानलों हो। कार पहा । मुद्री बहुत कोण, न्यूर वर्ष पुरवर्ती या राज्यमें वशीका प्रशास तमीडीर था। अन्ती केवास क्षर्य जवलेके लिए क्वे निवामते बतारी बरकारका प्रदेश मिल क्वा वा । रेक्प्ट हैं में बुबीको मापल बुबा किना क्या और बजके मानेके कार दी निवान राज्यके काम्बोरीकरीच्या प्रमान क्षत्रके किए वह बना । वर्षी बीचमें १ ५१ ई. में श्रेंबरेबोले कर्नाटकनी राजवानी सर्वाटक बन्द वेच क्रकार और वीराक्षत्रको वस्त्रिक करके मुहम्बदक्कोको क्र^{क्षीत्रक} पानवार बना दिवा पानीर इस जन्मर कुलेके आपे कार्यको निका गर दिना था। इन बन्धवारीको बात करके अञ्चलको बरकार कुलेब ^{सह} हो नवी और उन्तरे १७५४ ई. में बंधे मानव बूका किया ।

ही नवी और उसने १७५५ हैं के को नगड़ बुध्य मिक्स । इसके बता प्रीक्षण प्रमुख्यों का मत्तर्ग कोई से बेरोकों कार वर्ण पर को निवस मतुमार कर्याटक देखों सोनी वाहिर्याण करना क्योंगर्स विके मिन्सू मत्त्री मह कर्येण करातिंक्य को मतु स्वार्थ भी कि पूर्वले बीच्या कीर प्रमुख्य के की क्याव्यक्ति कुत (१७५६-६३ है) किड वर्य-बाद बाराक्ष की रूप पर्नेना मीचियों कहाई हिन्दर्स केन्द्र मत्त्री । कुम्यार्थीं कराइकि की पर्नेनी की सोनी की पाल्यक की क्याव्यक्ति का १९५५ हैं में हुए बानों बेरोकों के ब्याव्यक्ति होते की स्वार्थ मात्र्य कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या कर्याच्या क्याव्यक्ति क्याव्यक्ति क्याव्यक्त क्याव्यक्ति क्याव्यक्ति क्याव्यक्त क्याव्यक्ति क्याव्यक्त क्याव्यक्ति क्याव्यक्त क्याव्यक्ति क्याव्यक्त व्यक्ति क्याव्यक्त व्यक्ति क्याव्यक्त क्याव्यक्ति क्याव्यक्त व्यक्ति क्याव्यक्त वाह्यक्त व्यक्ति क्याव्यक्ति क्याव्ति क्याव्यक्ति क्याव्यक्त वाण्ड्यामके युद्धमें बेंगरेज नेनानी सर आयरगूटने लैलोको पराजित करके बन्दी पर लिया और इंग्लैण्ड भेज दिया। वहाँसे उसे भास जानको अनुमति मिल गयी किन्तु चमकी सरकारने उसे मृत्युदण्ट दिया। युसी भी कैदमें डाल दिया गया। अगले वर्ष पाण्यीरीपर भी अँगरेजोंका गण्या हो गया । १७६३ ई० में पेरिसको सन्विसे इन गुद्धका आत हुआ। इन सचिके बनुसार भारतमें फ्रान्सीसियोकी पावित एक-दम पट गयी, उनकी सेनाकी मन्या बहुत कम करके नियत कर दी गमी और प्रदेश विस्तारंपर भी प्रति-वन्य सगा दिया गया। यगालमें ये अब केवल व्यापारीके रूपमें ही जा सकते थे। हैदराबादमें उनके प्रभावका अन्त हो हो गया था, कर्णाटकमें मी कोई अधिकार नहीं रह गया था और उत्तरी सरकारके जिले भी र्थेगरेजोंके हायमें आ गर्व । अब पाण्डुचेगी, च द्रनगर आदि दो-सोन छोटी-छोटी बस्तिया एव उनमें स्पित उनकी व्यापारी कोठियोके अतिरिवन भारत-में फा सीसियोंकी कोई सत्ता न रह गयी और भविष्यके लिए भी कोई आशा न रह गयी। फ्राप्तको सरकारके लिए उसके इन भारतीय प्रतिनिधियोंके युद्ध एवं माग्य परिवर्तन अत्यन्त गोण घटनाएँ घी । वह इस प्रयत्नके तथा उसकी विफलताके मुल्यको तबतक औंक ही नहीं पायी थो।

आस्ट्रिया, स्वेष्टन, स्वाटलैण्ड आदि अन्य यूरोपीय देशोंके निवासियोंने भी भारतके साय व्यापार करनेका प्रयत्न किया किन्तु सब ही असफल रहे।

इस कार्यमें जो सबसे अधिक सफल हुए ये पूरोपके उत्तर-परिचममें स्थित इक्लिस्तान नामके एक छोटे-से द्वोप देशके निवासी अंगरेज ज्यापारी ये। जहाने न केवल पूर्तगालियो, डचों, छेनो, फ्रान्सासियो आदि अय पूरोपोय जातियोको ही भारतीय ज्यापार क्षेत्रसे शनै जनै निकाल बाहर किया वरन् पहिचम देशोंके साथ होनेवाले इस महादेशके सम्पूर्ण ज्यापार-पर अपना पूर्ण एकाधिपत्य स्थापित कर लिया। इतना ही नहीं, देशके सबतोमुखो पतनसे लाम उठाकर उन्हाने इस पूरे महादेशपर अपना पूर्ण राजनैतिक प्रमुख्य भी स्थापित कर लिया। देशके राजा-नवाव, सामन्त-

सरकार और-बारू और उप को देखके वनिवासी ही सुटकर देखता वर्ग देवये ही रक्षणे में जिल्हा इस नवाल सुटेरोले की मारतमांक बसी वर्गी भीर बामी शामतीशो लूट-कटकर चंदाक कर दिया और वत लटके दुवुरस्य रपरेख स्वजाति वर्ष स्वराध्यको समग्रीमुखी मोरिक क्यांतिक समूत्री यर्वं अनुसारताति अस्म-विकारपर पर्वेचा दिवा। बलके इस्तानिके पूर्व बत्तर मनक राकरी मीयन कराजरता एवं क्यान्तिक समजूद रह देवरी नतनाको बहुआन जनके छाने व इन्दर्क बरवकार, कारीकर आदिको वोहै स्तायो सांति नहीं पहुँची भी व उद्यंती सम्तालका ही भी वेरावा ब्यापार भी भेरी देशे पक रहा का और सनेक देखवादी ही। बहुका साथ करा पे थ । क्रिडर्व ही प्रान्तो-अवेद्यां और राज्योगें क्य-दव मुखावव मुखावा^{ति} बारिका मा अनुवयः तीवा रहणा या । किन्तु अंगरेजोली वर्षकोतुर्व दृष्टि वती निर्वत कारा-वता हवतं वस्तानार, व्यवसायी व्यासारी वर्तवार भीर धारूकार राजा भीर नवास नोई भी न अचा। किसते जिन क्ली मो मुख्य ती स्रोता-सरदा का चनता त्या त्रज सन्द्रोले स्रोता सीर अध्याप रिया । बाब ही मारतमाविजीको अब कड्-पट्टकर बन्द्रह वर्ष अल्पन करनेका प्रकल निवा कि इसने दुम्हें बीर सम्प्रान्त सराज्यता, सम्प्रकरण बीर अरबाते मुख्य रिया है, इन तुम्हें बमुनपूर्व सुधावन एवं मुख्या जात कर है है और इस मारुख समझ्बी क्यार निम्मक एवं न्यायनधारण है। यह वर पूर्व जैनरेकोला दान या और स्केपर नमक विद्यमनेके समाप का किन्तु कन समय देवणी कथा ऐसी क्षोचनीन ही नहीं को उत्तरीस^ह होनी का प्रति की कीए जाने भी होती चली करी कि वंदर्ने न दी वर्न अरेरी सकावी और न क्यूपर मनज क्रिक्ट मानेबें डोलेपाओं केरीपीकी भद्रपुत बरसेको सन्तः कोई धनितः सामर्थ्य ता प्रवृत्ति रह तथी थे । १०वीं सती है। हे प्रारम्भने मुख्य जेनरेच अग्रनाधी वर्ष-वयन मास्त बारी और नपास-काउ वर्षों के पीछर हो। बालानि इस देखरे बाले कतियाँ

स्थापारिक कहे क्या निर्मे बोर बाब ही पूर्वसम्बद्धि, वर्षो स्थाब हार्सिकर इ.स. १९६१ - सार्वाहिक स्थाब हो पूर्वसम्बद्धि, वर्षो स्थाब हार्सिकर इ.स. - सार्वहरू स्थाबता स्थाब प्रतिद्विद्विशोको प्रतिद्विद्विताके क्षेत्रमें निकाल बाहर किया । उसमें प्रगले पवास-माठ वर्षीमें चन्होंने अपन भारतीय स्वापारणा समुप्रत कर लिया, चनक द्वारा अपने-आपका और अपन दन एवं राज्यका मुनमुद्ध कर लिया तथा भारतवयमें अपने व्यापारिक अटाका जाल भी थिरतृत कर लिया कोर कुछ मुद्दू मुरक्षित केन्द्र भी बना लिय । तदनन्तर अगरे पद्यास वर्षीमें प्रान्तीतियाँक रापमें एक नवीन किस्तु सर्वाधिक प्रवल प्रतिद्वाहीना ए हें सामना करना पड़ा, किन् उन्हें भा अन्तत ऑगरेजान युनस दिया, साथ ही फ्रामानियोगो पुचलाव प्रयन्तमे उन्होन देशो तान छोटे, और पटोसी द्यो राज्याके अन्त याजह एवं सनकी जिल्लावस्थाना लाम चठाकर अपनी राजनैतिक प्रतिनयी सुदृढ नीव भी हम दशमें जमा दी। सब उनका हीसला और वहा और आगके पनाम वर्षीम उन्हान दुतवेगस एक एक मन करक ग्रमस्त दक्षिणापथ एवं उत्तरापथमी विभिन्न हिन्दू एव मुमजमान राज्य द्यावनचोंपर अपना प्रभाव एवं आधिपत्य स्थापित मार िया। और उसके बाद अराजनता कालके शेष पचास-साठ वर्षामें सिन्ध, पराव, बदमीर, नेपाए, वर्मा आदि मीमात प्रदेशाको भी अधीन करके तया परिल हो अधीन कर लिये गये राज्यो एव प्रदेशोपर अपना पूर्ण मनुत्व स्थापित वरवे और समूचे महादेशको नि सस्य करके एव अपना बनाबर उस सुवासन, सुरक्षा, याय, सास्कृतिक पुनरुत्यान आदि प्रदान करनेका ढाग भी प्रारम्म कर दिया। किन्तु इसी युगक अतमें बहुभाग भारतने अँगरेजोंके मजबूत पजीसे देशको मुक्त करनेका भी एक भगीरथ प्रयत्न किया। देशमे दुर्भाग्यसे या सीभाग्यसे अथवा उसके नेताआंके स्वयंमे दोपसे वह प्रयत्न विफल हुआ। फलस्यरूप देशमें जो पुछ सत्त्व वच रहा था वह भी कुचल हाला गया और अब सम्पूर्ण भाग्तवर्ष वस्तुत. लेंगरेखा- अपना दास और अपनी सम्पत्ति वन गया। भले ही अनेक अन्तर्राष्टीय परिस्थितिमों तथा इस प्राचीन देशकी नष्ट न होनेवाली प्राण शिवतके पुन सधारके मारण अँगरेजोका वह प्रभुत्व पूरे सौ वर्ष भी न चछ सका।

१६वीं बनाम्ये हैं में बम्बरत्या हो-एक नील जैनरेड वस्तिक बाबी स्थानावत करने मारत माने वे । १५८८ वे में संबर्धनीने लेकडे मारमेदा नामक एक मारी महाबी केंग्री पराजित करके क्रिय-निव वर क्या मा । इत विजयके मुरोपने इत्थिलतामधी प्रतिका वह नवी कीर अंगरेजीको नाविक यनितको पान जन करो । अब अँगरेज अस्तात, हो नुवरत्त्वा सनुती बाकू और नाविक सुदेरे ही वै हुर-दूर एनुरेनि वारे मारने बने । बनुरी भागारने चलके निजदमधी बम बोल सम्बे बनिक बड़े-बड़े में और बच्छे कारण करणा हैया मामधार हो रहा या । वयर पुनिश्चमात्रे निक्ष्मे की बर्गति मारवके ताब ब्याचार करके मान्यमान हो रहे वे । माध्यके बनुवानातीय पन-विकामी बद्दानियों बूर्रेफ-वरमें अर्थाका की । वह रोनी वारमेदानी नरावव पूर्ववाववानी-द्वारा स्वामित धारा-के बाच ननीन समुद्री वार्तने क्षेत्रेनामा वानावात सीर वर्णाका कार्या रकर्ग श्रद्ध कर निमक्त संबर्धन करायारिनीके किए माध्ये प्रेरक धरन हुए। पूर्व स्थानारक बान होनेवाके कामची बाधावे में प्रमुख्य ही बने । बन बन् १६ . है में इंग्डेम्पड़ी राजनानी करनके बुक्र जैनरेड लागरियोंने एंड कम्मारी स्थापित की जीर क्वाफे किए जनगी रागी एकिनामैगो भारत

आदि पूर्वी देवीके बाच न्यापार करनेका बुकाविकार प्रस्त कर किया। बनमें के कुछ म्यानारियोंने स्थातितान । करके पत्ना करके एक बहाउ पूर्वी हीर बनुहरू क्यानेके राषुत्रीमें बेजा और **कार्य होनेनाके कार्य**के परस्पर बोट किया । इनके बाद की बाद और व्यक्तिका बहार बाने । े अन्तिम पहान १६ ८ वें में बारतके परिवरी-स्टबर स्थि पूर्ण बन्दरसाद्द्यर भी गाँचा और यहाँ वहने कुछ न्यायर किया रिन्द्र देने वाक्यिक विधेवके कारण विवेदीको विधेव बाजकता नहीं निकी। क्यान वान हातित्व वहाँचीरके वरवारते की नहुँका मेंड बादि की १६ ९-११ ई में की पर्य बंद मुखब धारणानीने पड़ा जी खा, किन्तु पूर्णगाविक्रीके बनार और निरोक्षेत्र बारम निकल जन्म क्षेत्रर हो। बीजा । १९१९ हैं करतीय इतिहास : एक पर्ने

(E

अँगरेजी कम्पनीने गुजरातके मुगल सूचेदारसे सूरत, राभात तथा अय दो स्यानोंमें व्यापार करनेकी अनुमृति प्राप्त कर छी। उन्होंने यह समग्र छिया या कि पुर्तगालियाका दमन किये यिना मफनता न मिलेगी, अत एक भीषण समुद्रो युद्धमें च हाने पुर्तगालियाको हराकर अपनी स्थिति जमायो । इसो समय उनके राजाका अधिकारप्राप्त राजरून मर टामस रो (१६१५-१८६०) मुगलसम्राटके दग्वारमें पहुँचा । सम्राट्यो बहुमूल्य मेंट और उसके वासक नहीं बादि मन्त्रियोंको घूस देकर तथा अपनी चातुरीसे उसने अपनी ईस्टइण्डिया कम्पनीके लिए सुरतमें व्यापारिक कोठी स्थापित करनेका फर-मान प्राप्त कर लिया। सम्राट् स्वय इस बीचमें पूर्तगालियोंसे रुष्ट हो गया था शीर उनपर अँगरेजनि जो समुद्री विजय प्राप्त की थी उससे उन्होने स्वयको पूर्वगालियोंका प्रवल प्रतिद्वन्ही सिद्ध कर दिया घा, अत समाटने इन दोनो संजातीय फिर्रागर्योंको परस्पर लंडानेका अवसर खोना उचित न जाना और अँगरेजाको मो प्रश्नव दे दिया। सूरतमें हवींने मी अपनी कोठी म्यापित कर छी थी। १६१५ ई० में अँगरेजोंने पुर्तगालियोंको फिर एक जहाजो युद्धमें दराया और १६२२ ई॰ में ईरानियोकी सहायतासे सर्मुज-द्वीपपर भी अधिकार करके पुर्तगालियोंको अत्यन्त द्यिमतहीन कर दिया। ៘ १५८० ई० से ही भारतके पुतगालियोंको अपने देशके राज्यसे कोई आश्रय या सहायता मिलनी वन्द हो ही चुनी थी।

अय अँगरेजोने वागलकी खाड़ोमें भी पुसना प्रारम्भ किया, मछलीपट्टम्में एक अड्डा बनाया और फिर १६२५ ई० में आरामगांवमें अपनी
फोटो स्पापित की। १६३९ ई० में आरामगांवकी कोटोके अध्यक्ष फासिस
रेने चद्रगिरिके विजयनगरवशी राजाके प्रदेशीय नायकसे लगभग दस
हजार रुपये सालाना किरायेपर एक मील घौडी एव चार मील लम्बी
समूद्रतटयर्ती भूमि प्राप्त कर ली। इस कायमें निकटवर्ती सेनयामकी
पुर्तगाली बस्तीके पुर्तगालियोने भी अँगरेजोंकी सहायता की। और
इस स्थानपर १६४० ई० में मद्रास नगर तथा सेण्टजार्ज दुर्गकी

नीव नहीं। हर है है बनामध्रे बन्तुमने बोरोहरें बारी बनों नमीत्म थी। हरहाई है हुओ है। ताल क्यां दिन्ते रूप । उन्नासीर्थ पान दिक्ता बने बन्दी सरको रहेवा नम्य विद्या ना हहा है वे क्या न बना रावा के बेचा बाराना दिस्ती सरमित्र वे दिना नु तह बोरोहे बनाव की बारा बारिया है। है। तब वह तकर बीर दुष्टा दिस्ती तथा वी बीरोहा की मेरे रहाका । बीर हर है के मुन्ने के बनावी कार्य है गोरानी हरा

६ में बनने वर्ग बनल्या। नवर और डोर्ट (विकास) गैर पानी क्यां अधि अंतिक आर्थ क्यां क्यां क्यां क्यां क्यां अधि अधि अधि क्यां क्यां

मान्ताच ो मी हुम्मी लीत नामशी सनुमन्ति जिम समी और मन १६६

शात न हुए और १६९८ ई० में कुछ अन्य न्यापारियोंने राजाजा लेकर एक नयों कम्पनीकी स्थापना कर हो और यह दोनों कम्पनियाँ सारतीय ^{ह्यापारके एकाविकारके} लिए परस्पर ल्प्टने लगी। अन्तत १७०८ ई० में दोनाको 'सयुवन ईस्टइण्डिया कम्पनी' नामके अन्तर्गत मिछाकर एक कर दिया गया । इस समय मम्राट औरगजेबकी मृत्यु हो चुकी यी । भारतीय इतिहासका मीषण अराजकता युग प्रारम्भ हो रहा था। अपने अवतकके गत सौ वर्षोंके कालमें अपनी व्यापारी कम्पनीके आश्रयसे नेंगरेज जातिन अपने प्रतिद्वन्द्वी पुनगालिया एव उचोंका सर्दवके लिए ^{दमन करके} पिंचमी देशोंके साथ होनेवाले भारतीय व्यापारपर ^{झपना एकाधिकार} स्थापित कर लिया था, दशके विभिन्न ब्यापारिक केन्द्रामें अपनी ज्यापारी कोठियाँ स्वापित कर ली धीं तथा देशके पश्चिमी वटपर बम्बईको, पूर्वी तटपर मद्रासका और वगालमे कलकत्ताको केन्द्र वनाकर और इन स्थानोमें अपन सुदृढ़ दुग एव वस्तिया वनाकर अपनी न्यिति सुदृढ़ एवं स्थायी कर ली था। इसी वाच मारतमें कम्पनीकी उत्तरोत्तर उन्नतिके फलस्वरूप कम्पनीके हायरेपटर, हिस्सेदार, कर्मवारी बादि ही नहीं इन्लेण्डक अन्य ठ्यापाना, व्यवसायी, नाघारण जनता, राजा जीर मत्री मा पर्याप्त मालदार ही ाये थे। मम्पनीके जी कर्मचारी भारतमें कार्य करनेक लिए आते थे चन्हें वेतन बहुन थोडा मिलता था, किन्तु उसकी पूर्ति करनेके लिए उन्हें व्यक्तिगत व्यापारकी सुविधा दे दी जाती थी, अत कम्पनीक वहाने भारतमें आनेवाला प्रत्येक अँगरेजकम्पनी क प्रमान व्यापारके अतिरिक्त अपना स्वतन्त्र व्यापार भी करता था भीर मालामान हा जाता था। १७०८ ई० के पूर्व शिवसाली मुगल सम्राट्के भयसे और उनके व्यवस्थित सावदेशीय प्रशासनके कारण सँगरेजा-की यह प्रवृत्ति अति सोमित ही रही, किन्तु अव उत्तर मुग्छकालको वित्तरोत्तर बढ़ती हुई अराजकता, अशाति एव अव्ययस्याका छोटे-वह समा

रोपवाहियाँ-द्वारा भारतकी छूट

मानेके क्यानव रचनीय का तक जैनरेज मुक्त-बाजानका राज वर्ष किमा-निम्म स्रोता और देशको निरक्षो हुई राजनिक दसायो पुरवार देलते रहे । इसी बील १७१७ ई. में दिल्लोके निकाने नारबाद कराति वरको और उनके वरवारिजीको कुन जाहि वेकर बन्होंने दिना। शासकर विने ही न्यापार करनेकी कुर तथा सन्त अनुस्य पुनिवार शास्त्र कर वी भीर पुरसार माने स्थापारको स्थाते रहे । देशको बलपरिका दर्व अस् क्षित बका तथा क्य बकार्ने अपने केली एवं कोकिनॉकी चोरी, बाहुसी, कुरैयो बाविते एका करनेके बहानेते कन्द्रोंने एक सन्तरी देश की तैयार कर की जिल्हों क्षेत्ररेज सफल्योंके सचीन एवं उनके शास प्रविधान जाउ भारतीय रैनिक की बड़ी संकाम रक्षने प्रारम्य कर दिने । इसी वहनेने क्कोंने बनने कुनोंको भी मुख्द कर किया और सक्ती वरिवर्गों इर्व कीडियों-वी विकेशमी भी कर को । अनवा स्ट्रापी देश क्रवणी वहायतके किर् निषट पहता ही था। किन्तु हवी कान (१७२ ई) सूनवीबी कानी कुन भौतरित शोकर तथे कलाई बीर वक्के बाब जैवानमें कियो स वतरी । वयके मुद्रीम्य इनं शीतनामन्यः नवर्गरीके शानमें व्यवशीवनीकी पूर्वी बरिनवीं एवं चारतमें बनके केन्द्र सीम ही नुकरिय एवं महतून ही नमें। कृत्वीची कलनी बरकारी को सबके नार्तकर्यों को बरकारी कर्नचारी में और बंबका प्रवास बहेरन की राजनीवक ही भी अब जीव वर्गोंने ही करकी सांतर और अविकार अस्वतिक वह करें। यह वर्ग देखकर अंगरेज वह जिल्लिक हुए, हिन्तु बुझ कर जी न बके और नर्प-नरकी शासने की रहे। साम्बीकी नाम्बीक बाव वृक्त केरनेका अर्थ का कालके तान अञ्चेकका बुद्ध बीज केना दिवका काहन वह वैरवरणारी वेंगरेबी करूनी नहीं कर एकती थे । कुल्क्सीवर्गका प्रयास केन्द्र 🏋 तनुर तरनर स्थितः नागूचेरी था । जलके मिश्ट हो बीडकरी होर हैंने रेवींना फीट केन्ट-वेलिंड वा और जीड़ी दूर क्लारने कन्ना इक हरकी STATE BAY STATE FROM MY 1

414

जाकरीय इतिहास एक दी

१६७६ ई॰ में ही पाण्डुचेरीके फ्रान्सिस मार्टिन नामक गवर्नरने एक छोटे-से स्थानीय सरदार घेरखाँके लिए वल्दूरका दुर्ग आक्रमण-दारा हस्तगत करके फान्सीसियों और अँगरेजोंका मार्गदर्शन कर दिया था। अब १७४० र्इ० के रुगमग पाण्डुचेरोके निकट ही दक्षिणकी ओर स्थित छोटे-से तजौर राज्यमें उत्तराविकारका प्रश्न उपस्थित हुआ । गद्दोके लिए दो दावेदार थे। फा सीसियोंके मयसे उनसे पहले ही अंगरेजोंने एक पक्षका समर्थन किया, पुरन्त फ्रान्सीसी गवर्नर हच्माने दूसरे दावेदारका पक्ष ले लिया। मामला विना कुछ रक्तपातके ही निपट गया। किन्तु अँगरेजों और फ्रान्सीसियो दोनोको ही तन्जीर राज्यमें थोडा-योड़ा प्रदेश मिल गया। १७४० ई० में यूरोपमें ही फान्स और इंग्लैंग्डके बीच युद्ध छिष्ट गया। अब तो कोई बाघा हीं नहीं रही, भारतमें भी अँगरेज और फान्सोसी परस्पर छड़ने लगे। १७४८ ई० में एलाशपलकी सिंध-द्वारा यूरोपका युद्ध बन्द होनेपर भारत-में भी युद्ध बाद हो गया। इस युद्ध के फल्स्वरूप किसी भी पक्षकी कोई विजय या लाभ प्राप्त नही हुआ, दोनोंकी स्थिति पूर्ववत् ही रही, मद्रासपर फान्सीसियोंने अधिकार कर लिया था यह उ हैं वापिस मिल गया । तयापि इस युद्धने इस देशमें उन दोनो जातियोकी सैनिक शवित भोर राजनैतिक आकाक्षाओंको नींव छाल दो एव उनके राजनैतिक उत्कर्प-को सम्भावना दिखा दी ।

इस सम्बन्धमें यह ध्यान रखनेकी बात है कि १८वीं शताब्दीके इस
मध्यकाल तक अँगरेजों या फान्सीसियोंकी भारतकी राजनीतिमें अथवा
भारतीय राजे-नवाबों, दिल्ली दरबार या प्रान्तीय शासको अथवा छोटेमीटे सामन्त सरदारोंकी दृष्टिमें भी कोई गणना हो न थी। बहुत-से तो
ऐसे थे जो इन्हें जानते भी न थे या जिन्होंने इनका नाम भी न सुना था।
अनेक ऐसे थे जो इन्हें अति तुष्छ एव उपेक्षणीय समझते थे। दोष वे
जिनका इन लोगोंके साथ ध्यापार आदिके कारण कुछ निकट सम्पर्क पड़ा
या इन्हें अपने अनुग्रहका माचक और अपनी द्यापर आध्यत एक सामा य

ग्रामी वर्त-नाप नमनो थे। बनशे दृष्टिमें वे वेशरे नुपूर निरेत्त्रे ामप्रक शाहारके जिल मानेक भी चिम प्रदानक प्रथक देवने मानेक ने े दनको दशार अरगीका रहतेशो दिनेंग बनिवे नाव वे जिनको का । रता और जिल्ले संचानच्य मरिया महायता देखा बाह्य बर्दित हैयाँ बारमंग्रीका बलका वर हे बारमान्त्रिक क जनार वे वादिवाल स्वाद क्या में रह कारे कार बारता व त देखें वर मयस सारे कि इत कीरें राना । इस मार ने भारती बान्तीनमें बिरीते मार्ग मान पान निर्दे माने । वहें बन लेवे माजब समाह गाउँ तब अनिकारका वर्ण द्वार प्रवद इत्त्रवास इत्याचा और वर्धा वै यह ध्रो देशहरी न व िश्व करण देखती रा अध्यक्तिको तो प्रमुक्त वस बार जानेतास नीर्गालये-बाप ही नहीं है बानू हैने बिपट बाय है. वी बारे देशका रक्त tire art if felle art et en fit i tart umfer, muren और मैतिक बान नवा राज्याविकारियोंकी इस म्लांडानुर्व खडाव्यायणका मैंबर्रा में बुरा-बुरा लाम बडाला सारम्य कर दिया । दक्षिणके बसानके बरवरे तथा बाब प्रानीय नुवैदानि स्वताय हो अर्थ नाहरणाएँ। बरंडर मूट बररानीके बाजनमाँ जाती, निकास, दरेनी मारिके बन्यानी बोर नैयशाबीको चलरानिनुको दिशकनादाबीने क्य बन्द एक विन्ती बाध्यासमुक्ते ही नहीं क्ष्मुक देसके राजनैतिक अर्थिक और नैतिक पार्च-को रिल्यत्तर पहुँका दिया था । अवरिष्ठांके ही अन्तव हवारेंचर गुन देवचा बाचानी वानीराज्ये दुर्जर जारतीय शाविक शरदार बाव और क्षमधी क्षम भगावी योगाओं नक्ष कर दिया गा । विकासने जाने नेया भरादा करशारीकी मध्यमधानै एक बक्त सावित्र प्रतिप्तरा निर्माण पूर्व विकास किया का बीर में सरदार करे अञ्चल क्याने हुए है। कर्यी याँगांके महत्त्वने मनमित्र देशके किनी की जन्म नरेशने मध्यकानने देशको नामित्र बरिनारे विकासको बीट प्लान हो। नहीं दिया था । सुरीते कारियोंके ब्राप्त कारकरणने को बार्गोंने कीई बचक नहीं निया और बहुए

वालीय इच्छिम अब इ.हि

र्यो वेपकाओंने की बर्गे-पूर्व साधनमं भी हाम भी रिवे ।

रेण्डर हैं। में विश्वीपा बाल्यान बहुम्बद्धान मन गया, द्वशिव्हो निकाम राज्यका सस्यावन आसराज्यक निजामान्तर भी उसा वय मर गया । एक क्षारम् बहण्दपार अस्त्राच्यते ज्ञानः संक्षापर आक्रमण विकासः दूषरो शोरत पत्रयात्रोका मराठा ग्राप्त ता साल्या, गुल्याप, मण्य नीरदा, राजस्थान, संगाय बिलार और उत्रीमाना भीवता सुरू कर दिया । ण्य समयम विश्वाम राज्यके उत्तरमध्यापनावका प्रथम ज्यानिया का स्था । निवामका प्रवस बना पूप मोर दिल्लोमें शकीर यन बैठा था, दुसरा पूप नाविरजन निवासक निकासकार देशा विष्णु लसका लावका सुप्रयक्तकारी स्वयं निजाम यनना चादना था । इसी समय गणीटन का गयाय अमृव घेउद्दोन फामोसियोंक मद्रासका स्टल्सन करलेके कारण ऑसर्वे-बाक्तां महायनार्थं का मानियाको राजुना माल ले जुना था स्नार स्वतके द्वारा पर्राप्तित भी हा चुका था। अत का मानियाने उस पदच्युरा सरके वसने एव मुम्बाघी पाँदा साहबका नवाय यानिकी गोजना की । सँगरेन बनकहोन और उमके पुत्र मुहस्मदअलीके वर्णाटकमें और नामिरजनके हैदराबादमें पद्मपाती हुए । अत एलागपत्रनी मन्यि हा जाने और गुरेंपमें मा सीसी और अँगरेजी मन्दारांके बीच युद्ध बन्द हा जानंतर भी भारसंमें इत दानो जातियोंके बीच युद्ध चालू रहा। प्रारम्भमें मातीमी ही वर्णाटक बीर निजामराज्य दोनोंमें हो सफन रहे बोर फलस्यम्प उन्होंने घन, प्रदेश ^{"वित} और प्रभावका पर्याप्त लाम किया। अँगरेज यह सब देखकर चुर थैठनेवाले नहीं थे। इन प्रारम्भिक विफल्ताओं से ये बढे शुक्रप हुए। इस समय वलाइव नामका एक साधारण घरका आवारा अंगरेज युवक मदासकी कोठीमें मुक्तो था। उस कालको परिस्थितियोंके कारण भारतमें जैगरेज षम्मीक प्राय समस्त कमवारी मृद्यों भी थे, व्यापारी भी ये और मैनिय भी थे। मलाइव एम दो छुट-पूटे युदामि भाग लेकर एक छाटा-मा मेना-नायक वन गया था। उनने अपने गत्रनरिको यह योजना मुझायो कि छोटा

न्यानारी यम-मात्र नज़तरी से । बनशी रहिने में मैनारे मुद्दर निवेधने ामंत्रद श्वरतारके जिल् बनेक बोलिश संद्रांकर बनके देखने आलेवाचे कोर धनकी बसार अस्मिक्त रहतेगाँउ क्रिनी बनायेनाव से स्मिरी हा परमा और जिन्हें बनायका मुक्ति महामना देना बादर्स मनिन्दिती भारतीयों हा कलहर था । वे बाररपा थ बा नानद तुर्व बद्धनिनम स्थार्थ मारागमें रन बोर्फ मृत्य मारतीय बहुत देशमें यह बनक्ष बादे कि एन मोर्ड क्यागरियात संपंत्रे प्रशास अपनी बाक्शीयमें विपेक्ष कार्य नाम निर्मे है जो अबनर पाने ही यह बन मेरेंगे के रूप नयश पार्क एक प्रतिनारका वाई बचात्र बनक द्रापने नं इ. बया कार और तब धी ने धई की नगळ ही न बंदे रि ये नवन देशको पात्रक्तातिनको हो बनकर बन कर जातेगावे रोपीलिये-बाब ही नहीं है बरन ऐंगे क्रियर जाब है जो लारे देगका रूप गोवण करके उमे निधीन करके ही दब लेंगे । देवनी श्रवानित अन्यानाय और वैतिक नतन यका राज्याविकारिकोंको इब कुल्लाहरू बतानवानयाका अवर्षकोति प्रधानमा बाज बदाला प्रारम्ब कर दिया । दक्षिकके धवाकरे अवन्ये तथा जल्द बालीप सुवैदारिक स्काल्य ही बार्न शादिरकाइणी मर्थ कर तुर सरदानीके मानवार्ती, बार्टी, विकास बहुंची आरिके बतानी बीर पेक्वाबाँकी कत्तरामिन्नी निवय-वानावानि क्रम तबब एक रिप्पी बार्यासमुक्ते ही मही कमूर्व देखके राज्येतिक बादिक कीर मैलिक स्वय-नी विकास बहुना दिना था । जैनरेजीके ही जकरण इसारेसर मुखे रेवना बाजानी वानीराण्ये रक्षर भारतीय शाविक करवार मान्यारे

भारतीय इतिहास एक इहि

१७५४ ई० की सन्धि भली प्रकार कार्यान्वित भी न हो पायी थी कि १७५६ ई० युरॅपमें फ्रान्स और इंग्लैण्डके धीच सातवर्षीय युद्ध छिड गया। फलस्वरूप ससारके जिस किसी भागमें भी अँगरेज और फान्सीसी पास-पास हुए वे परस्पर लडने लगे, भारतमें भी दानों जातियों में लडाई प्रारम्म हो गयी । किन्तु फ्रान्सीसियोका सेनापित लैली १७५८ ई० के पूर्व भारत न पहुँच सका और जब वह यहाँ पहुँचा तो बगालको अद्भुत विजयके कारण अँगरेजोकी शिवत दसगुनी वढ चुकी थी और उनका स्थिति बहुत सुदृह हो चुकी थी। ललीने दूसरी भूल यह की कि हैदरावादसे वुसोका भी वापस बुला लिया, फलस्वरूप निजामके राज्यमें भी जो मारी प्रभाव बाठ वर्षीसे वृमीने जमा रखा या वह सर्वथा नष्ट हो गया और इस राज्यमें भी सँगरेजाका अपना प्रभाव जमानेका अवसर मिल गया जिसका लाभ उन्होंने नासिरजगकी मृत्युपर सलावतजगकी नवाब वननेमें सहायता देकर तुरन्त और प्रा-प्रा उठाया। उघर लैलीके नेतत्व-में फान्सीसी सेनाको ऑगरेज सेनापित मर आयर कूटने १७६० ई० में वाष्ट्रवाशके युद्धमें बुरी तरह पराजित किया, लैलीने भागकर पाण्ड्रचेरीमें भरण लो। अँगरेजोंने उसका भी घेरा डाल दिया और १७६१ ई० में उसपर अधिकार कर लिया। चन्होंने लैली आदिको यन्दी वना लिया और भारतमें फान्सीसियोकी आकाक्षाका अन्त कर दिया तथा स्वयको सजातीय (युरोपवासी) प्रतिद्वन्द्वियोसे सर्वया मुक्त कर लिया। इसी वर्ष पानीपतको ऐतिहासिक रणभूमिमें भारतके साम्राज्यके लिए मराठों और अफ़गानों, अथवा हिन्दुआ और मुसलमानों, या भारतीयों और विदे-शियोंके बीच भीषण युद्ध हो रहा था। सारे देशकी अखिँ उघर ही लगी हुई थों, दक्षिण भारतके पूर्वी तटपर इन विदेशी फिरगियोंके बीच होने-वाले इस छाटे से सवर्षकी ओर किसीका ब्यान भी न था। विन्तु वास्तवमें भारतके भाग्यका निर्णय १७६१ ई० के पानीपसके युद्धमें शायद उतना नहीं हुआ जितना कि पाण्ड्चेरीमें फान्सीसियोकी पराजयमें हुआ। इस मारवंकी राजवानी सर्वादका केश बाल दिया बावे विनका करियान का होना कि कीश बारक विकत्यसम्मीका केल क्यांकर अहाँ उनके बुसमा सबीको केर एका है अपनी शावचानीकी प्रशांक निया बीहा साहेता और मुहस्माजनी मुक्त हो बार्वना । यह बोजना कार्याच्या को बडी । १४९६ है में बनाइपने बापी बोटीनी बेनाचे अर्थादा पेरा बाब दिया और ५१ दिन बक्र यस नगाथी सेरे नहा दहा। सात्रे बीयना सक्ताहर्य बोरामार्थ वर्णाना हुमा और संबदेशोंने विव संबीदने समाने हारा मारा सना । सहस्त्रहस्त्री सेन्द्रेशीरी सहावताने वर्गातका नगर हुमा । यस शास्त्रके कालोर्वाक्षरीका समाच वर्षमा बढ यथा और अँदरिवीका प्रमाव सावकार और काँका अन्योवक वह नवे । इन ककनताके कारण क्याइवडी प्रतिका और बान की एकरव वह बने कालाडी नरवारने इक्षेत्रे रह होतर क्षे बारक बना किस और १७५४ है. में अंबरेशके बाब मान्य करके इन नद्भवा सन्त किया । बन्दिका वैद्य और ओन्ट्रेशका सर्वादयी नगावीत्र अगल्यान वह कामने वारतीय राज्नीविको एक बायल तुम्ब मीन अन्तर्रेजनीय वर्ष वर्षेत्रमीय घटना वी. किसीशा वी करान इसकी और बार्ड की हमा किन्तु इब तुम्छ बीतने ही को बेनके बाब क्वाछ क्योंके त्रीवर ही अवरेशोड़े विकास सारधीय आज्ञान्यका कर सारम कर किया ह १७५३ हैं में क्लाइन इंप्लेच्य क्ला बना, हो दन बाद सावह सीहा जीर बाक्ने कुछ नया अंबरेडी दोनशाना वृत्रं केना जो नामा । बाले ही बनने बन्वकि १ - बील बीक्यमें स्थित मारतीय न्याविक बाबुबंकि मेरिया गा विकार विवास समित पुरा पूर्वको इत्तान्य करके समझी सांगाकी वह कर दिया । यह दूनके बदकेवे बदावी बन्दांके निकट ही पूछ मूर्ति प्राप्त कर की । परिवर्धी तरकर जह खेतरेड कानवीको सनववस निजी मुक्तमि थी। वित्रकृषेत्रा नाव इव बतामा वक बस्स्राय है कि कैंद्रे वेंदरियोंने वर्त-वर्त वारतके बनुत-तरपर निकारी हुई करी क्रोडी-क्रोडी भारतीय नारिक वरिज्ञोका सन्त कर रिया ।

414

भारतीय इतिहास पुरू रहि

समम्म प्रतिइत्शिनो पछाड पर सनत व्यापारमें नेनृत्य कर विया था। वगालक विभिन्न उपरामें उनको सनेक व्यापारिक कोठिश फैल गयी थीं। पर्यकत्ता सनका प्रधान काइ था जहाँ उन्होंने सुदृढ दुग, नुगठित धन्ती तथा जल और धलको द्विषय सैंग्याम्तिके सुरक्ति हागर अपनी व्यक्ति बहुत बढ़ा ली थी। असीयर्शियाँ उनपर पुरा नियायण भो रमें हुए था और भोतर-ही-गीतर उनस भय भी काला था। उन्हें बाबू बनानेका समने सभी प्रयस्त को किया।

किन्तु १७५६ ई० में उनवी ति सत्तान मृत्यु हो जानेपर उमका सीहिय तिराजुद्दीना बगालका नवाब बता। यह बीर एर्ध सन्तराय सा था किन्तु अनुभवाीन अरहड नधयुवन था। अँगरेज स्वापारियोंकी वयावर्तियोंको देय-सुनकार वह पहलेस ही उनसे चिंदा हुआ या, अब इमी वर्ष गुरोपमें . सप्तवर्षीय युद्ध छिट जानेके समाचा जानकर इस देशमें भी परस्पर युद्ध छिल जानेको बागकासे बगालक अँगरेजा और प्रान्मीनियाँन अपनो-अपनो चस्तियोंकी क्रिलेबन्दी घरनी और नैनिक भर्नी करनी मुक कर दी। नमयने यह दशकर उन्हें रोका। फ्रामीमी तासुरत मान गर्व बिन्यु अँगरेजॉने उसकी अवशा की और एक अह्यन्त घृट्टतापूर्ण उत्तर नवाबको लिख मेत्रा । 'नवाबके मुख विद्रोहिया ग्यं भयानक अपराधियोंको भी उन्होंने शरण दी और नवायकी मौगवर भी उन्हें उनके ब्रिथिकारियाक निपुद नहीं किया। शाही फरमा । को आटमें व्यापारके बहाने भी वे देशमें अनाचार फरने लगे थे। यह सब नवीन नवाय महन न फर मका अत उमने उनकी क्रांतिमवाजारकी कोठोपर अधिकार करके पलमत्तेपर धावा कर दिया। कलकत्ताका गवर्नर, सेनापित और अन्य बहुत में अँगरेजा भाग निकले और कुछ मारे गमे । घोछ हो नवासका अँगरेजॉको वंगाल, विहार और उडीसामें स्थित प्राय सभी कोठियोपर अधिकार हो गया। इस पराभवका समाचार जैसे ही मद्रास पहुँचा अँगरेज चिन्सित हो उठे और उन्होंने अपने कर्णाटकके

नातवर्धीन पुत्रने अंतरेडोले भारतीतियोको आरतने हो नहीं बुरोतने वर्परिका और फनाडाने. पविषयी डीप-डनड और अल्लामें कर्पन परामित निना और चनके जांबरार, चरित और जनायको द्वानि शहुँचायो । १७६३ रै में रेरियमी शायिक शारा योगों देशोंके बीच मुख बन्द ही दना। इव नवाँ वीरामने क्यादनमें की बोबानते करीना बाकर काल्यीकियाँकी पराजित करनेमें दिस्ता बैदाना ना और फिर तुरस्त बंगार्ड नारत कारर विक्तु एकं बनोबा व्यवना वक्त कर दिया या १ दब प्रकार १७६३ ई. में नाएतमें मन्य कोई बुरोगीय धारिन अंबरेबोंडी प्रतिक्रती या प्रतिस्पर्धी न रह नयों भी और न किसी अध्यक्ते करता होनेकी कोई सम्मानमा रह बारी को र वती मुखके प्रतंतके और जनीके तीना खेंगरेकोणी को वसके मधिक नक्ररपार्थ बयमना की क्षत्र कर्नी बोधाकर्य जान्य हुई। शुवेशार मुखिय-पुनीयां बीर प्रावर्तन त्या नवाव वयोवधीयांके यावन (१४ ४-५६ र्द) वे सम्बन्ध प्रवास क्ष्यं प्रवास संवास वेसक निवाधियोने पारन्तरिक नकैप्लुता करारता लुख-धान्ति जीर नुधाक्लका वरवीय किया ना । इन रिकार्ने नह शान्त समस्य न्यास्त्रमें प्रापः सरकार था। इनक पूर्वा वै वर्गीशार सम्बन्न थे, बस्य बादिक ब्रह्मेन-क्ले बांध बनुवर के, वनिकास नागरिक न्याचार जी भूकातमा जैन देवन्ति हात्रमें वस-नग्र का रुक्त है के ही रश्जी कोकतेके मेतुलायें भरातीले जीवन कुटेरे आकर्त्रां-हारा देवाचे अपन्य ही पर्यान्त हानि पहुँचाओं थी. और समान्ति

कराय कर थे थे। तिन्तु बताय सर्वोत्तरीहर्मि संस्थे बहुएक्षि वर्षत्र थे। याच या क्रिया था। शेरावर्षे क्रम्तीली उर बारणीवरून सेरीय सारि विश्वे क्रमारी हुनेवर्षा और न्यानीली बारायांके व्याप्त कर बार स्वाप्त प्रमुख्य-पूर्वक सन्ते न्यानायां वरणोवार काव्य करते थे हैं। प्रमान करते दिखी क्रमार दूर्ण सोर्चेक दुस्तवे आ स्वाप्त था। करते वो सेरीयोने व्याप्त क्रांत्रपोने सम्बर्ग द्वारा सन्ती पूर्वकोंक वर्ष मान्यमध्ये सर्वेत सन्त सार्वेक दुव्याप्त क्रमार द्वारा सन्ती पूर्वकोंक वर्ष समस्त प्रतिद्वन्दियोंको पछाड कर उन्त व्यापारमें नेतृत्व कर छिया था। वगालक विभिन्न नगरोंमें उनको अनेक व्यापारिक कोठियाँ फैल गयी थीं। कलकत्ता उनका प्रधान केन्द्र था जहाँ उन्हाने मुद्दू दुर्ग, तुगठिन वस्ती तथा जल और थलको द्विविध सै यशिवतत्ते मुरक्षित होकर अपनी शिवत वहुत वढ़ा ली थो। अलीवर्दीखाँ उनपर पूरा नियन्त्रण भी रस्ते हुए था और भोतर-ही-भोतर उनसे भय भी खाता था। उन्हें शत्रु वनानेशा उसने कभी प्रयत्न नहीं किया।

किन्तु १७५६ ई० में उनकी नि सन्तान मृत्यु हो जानेपर उमका टोहिन सिराजुद्दीला वंगालका नवाव बना । यह बीर एव सदाग्रय ता 🔊 🚱 अनुभवहीन अल्ह्स नवयुवक था। अँगरेज व्यापारियोंकी उपाद्रस्थित देख-मुनकर वह पहलेसे ही उनसे चिढा हुआ था, अब इसी अर्थ कुर है सप्तवर्षीय युद्ध छिष्ट जानेके समाचार जानकर इस देगमें 💤 १४४४४ युद्ध छिड जानेकी आधकासे वगालके अँगरेजो और प्रशासिक है जपनो अपनो यस्तियोंकी क़िलेबन्दी करनी और मृंत्रिह द्वर्टी कुन्द्रन शुक्त कर दी। नवाबने यह दखकर उन्हें रोका। हार्टक अपनुष् मान गये विन्नु अंगरेजोंने उसकी अवझा पी ध्राप्त करण्य घुष्टतापूर्ण उत्तर नवाबको लिख भेजा। 'नवाबके हुए किर्हार, गर्न मयानक अपराधियोको भी उन्होंने घरण दी और निर्देश क्रिक्ट मी उन्हें उसके अधिकारियोंके सिपुद नहीं हिए। इन्हें नगड़ होईर आहर्में ब्यापारके बहाने भी वे देशमें अनामार कार कि कि कि कि नवीन नवाव सहन न कर सका अत उपने राष्ट्री प्रतिकारी फोठोपर अधिकार करके कलकत्तेपर धावा कर दिए। स्टाइन्स गवर्नर, सेनापति और अन्य बहुत-से अँगरेनु हो प्रित्र और कुछ जाँ गये। शीछ ही नवावका अँगरेजोंकी वगाल, जिल्ला अर्थ उर्गाटक वि प्राय सभी कोठियोपर अधिकार हो गुरा है स्टाइट्स ==== जिसे ही मद्रास पहुँचा अँगरेज चिन्तित हा र्हे की निर्देश कर्न कर्न कर्न

वीर क्याद्वाको वर्धीव्यार देवर तथा एस्टियक वाटका एवं १ वीरे वीर १९ दिखुलानी तिर्धाहरीको तेवा एकके साम करके नाकवानी विद् स्वाण कर दिया । इस्केंग काहे हो बक्कता वर्गाक किया वर्गीक तथा बार्ग वोशीओ तिरूक बोल्डर समीर धाववानी वाल का जुन्म या । वाव वे दूसांची स्वेट को नाकवानी एक केलाने बाल सुर्वेष की हुई दिल्लु हार-बीटका निकाद सोनेके वृत ही बोनों त्वांकि बीच वर्णिक हो। वर्षा । वर्षरीयोगी करनो वह कोटियों बीर पहुंचे वर्णवार प्रकार विद्या वर्षे।

बातमां बच्च वर्षण महाद्रा व्यक्ति हुत बार्ग्स विवास वर्षा वस्त्रीय या वर्ष्म बच्चेत्र वामण वर्षाय भी ग्रेड् कर गहें में बार व्यक्ति वर्षण क्षेत्र विकास करते हुन व्यक्ति वर्षण वर्ष्म वर्षा वर्ष्म वर्षण वर

देना पाइका या अवर इसी सबस सम्बाधीके शिल्मीयर किसे वरे

न पाइन्त क्षिप्रवृद्दीताका सन्त करतेके सिद्ध वृत्त निस्तव होकर चौठर इंत्रे-बोटर एक वर्षकर नदसन्त करता सुक निया। स्वातक कृष्ण बीर

वासीय इतिहास एक प्री

चगकी फीजके प्रधान बढ़ाी मीरजागरकी, जो इस समय यगालके मुमल-मान सरदारोंमें मबसे अधिक दानिनदाली या, नयाव बनानेका लोभ देकर पणाइवने अपनी धोर फोड लिया । नवारणी मामी अर्पात अलीवर्धीसीको पुत्रवयु घसोटी वेगम, मरदार यारलतोक्रमी, राजा रायद्रीम, जगतसेठ बादि नवाबीक स्तम्भ भी अँगरेजोंसे मिल गये। बाम्तवमें प्राय सभी बगाली हिन्दू जमीदार और सेठ ध्यापारी भी नयावर्गे पतनवे दन्छन में और व किसी-न किसी रूपमें अँगरेजोंके पष्टवात्रमें महायक हुए। नवाबके अन्त होनेकी सुरसमें उसके कोष एव सम्पत्तिकी सूटमें सभीका हिन्सा निश्चित हुआ । अमीचाद नामवा एक धनी मियल शौदागरकी मार्पत गणाइयने मीर-जाफर आदिके साम सम्पर्क बनाये रखा । अमीचन्द्रको भी हिम्मा निन्ना या, बिन्तु धूर्स क्लाइवने उसके साथ भी जाल किया और समझौतेंके जाली मस्विदे भी तैवार किये। नवाबी दरबारके मरदारोमें परस्पर भी दृष्या हेप और फूट थी, सभी अपने अपने स्वार्थमें आधे थे, नवावक, राज्यके, देशके या जनताके हितको किमीको कोई चिन्ता न थी। तत्कालोन देश-व्यापी अनैतिकता और पतनके प्रभावसे वगाल भी अछ्ता नहीं या, और १७५६-५७ ६० मे वर्षीमें ता अँगरेज़ोके प्रोत्माहन एव सहयोगम बगालके प्राय समस्त राज्याधिकारियोकी कुचालोंके कारण यह प्रमाव अपने चरम शिक्षरपर था। धूर्त अँगरेज इसी अयसरकी तात्र में थे। पर्यन्त्रकी सब याजना प्रो और पक्की हो जानेपर फलाइयने नवाबको एक अत्यात उद्धत एव पृष्ट पत्र लिला जिसमें उमपर फान्सीसियोंकी महायता करनेका मिथ्या दापारोवण भी किया । धोडे समय तक उत्तरकी प्रतीक्षा करनेके उपरान्त वह सेना लेकर नवायको राजधानो मुशिदाबादमे २३ मील दक्षिणको ओर स्थित पलासीके मैदानमें जा पहुँचा । नवाबने वहाँ कुछ सेना पहलेसे ही एक न कर रहा थी। उसकी संख्या पर्याप्त थी किन्तु उसमें ईरानी. अफ़ग़ानी, अन्य मध्य-एशियाई तथा भारतीय हिन्दू, मुसलमानोंमा अद्भुत अन्यवस्थित मिश्रण था। अधिकांश सिपाही राज्यभक्तिके कारण नहीं वर्तन्त्र केवळ केनेके. किए सन्तेवाके से । नवाय स्वाधित्रोधी एवं विश्वात वानी सररारोंके विश्व हुआ था । स्वयं श्रीरबाइन आस्तरीक और स्वय-वुर्णवर्गा वर्षानकार्ये केराला बहुनाव वा. वो केवळ. तनाया देखनेके सिन्ह नहीं पुरुषात निर्मित बना रहा । किर थी ननावकी धन्ति स्तानी की कि जॅनरेजो देनाका नहीं जिल्ला ती बेप न रहता। इश्री कारण नकाइव जरनन्त मपनीत और चिनित वा वह रामिक काची-हारा ही नगावको केमारी र्तंत ररनेके नक्षमें था । किन्तु सबै-तहे बरदारों और वानी वैनिकीने निस्त्रातमात्रको देखकर नवालकै विस्ताची वैभिक जो । इहोत्वाद्वित में जोर प्रकृष्ट कारोने ही में पीछे हरने कने । नवान स्वयं करता करा और मैचान क्रीहरूर मान वर्गा सन्तकः बन्दी ह्या और जनतानुर्वक क्वार वन कर विवा परा । क्षत्रव सी भारती अवस्त्रीके बीट बीच की करावके वर्ष का नावर हुए, किन्तु १७५७ ई. के नवाबीके इब कोटे-के मुखके नवीबने र्वदालना ही नहीं पूरे देवका जान्य निमयं कर दिया। वैदालके निया-विपेति संपन्नी कूर्वाचा एवं क्षत्र स्थानीकराके वसीवृत द्वीकर सन्ते वैक्ते एक मारदीन बालनका बाल करके बंधे बंबक राज्य, बंबकी बल्हा तथा

स्तिकारणे विद्यान विरोधी साम्प्रतिकों सुर्पाने स्वर्ध ही धीर दिया। इस् स्वर्ध में स्वितेष्टील साम्प्रताल सारस सामी हाल्योचारा में क्रियाणित स्वर्ध ही न सन् मार्थामा स्वर्धाना मिल्यास्त्राम मेर स्वर्धिकों या मोर्ट सा स्वर्थ केम्ब्रा हुए स्वर्धाना विरोध स्वर्ध हुए स्वर्ध हुए स्वर्ध हुए स्वर्ध स्वर्ध हुए स्वर्ध स्वर्ध हुए स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्

वर्गतीनुवी नवकर कुट निर्मनन्त वर्ग व्यवस्थित वसमै आरम्ब हर्द बीर

बाइटीय इतिहास । एक गाँउ

उसका प्रारम्म बगालसे ही हुआ जिसे सर्वप्रकार लूटनेमें उन्होने कोई कसर न रखी। क्लाइवने अपनी सरक्षकतामें नीच मीरजाफ़रको नवाब धनाया । म्बर्य क्लाइक्को लगभग ढाई लाख पौण्ड नकद और तीस हजार पौण्ड वार्षिकको जागीर मिली । कलकत्ता कौन्सिलके अन्य सदस्योंको भी किसीको पचास हजार और किसीको अस्सी हजार पौण्ड मिले। कम्पनी-की सेनाके विभिन्न अँगरेज अफसरोंको सब मिलाकर साढे वारह लाख पौण्ड तथा सिराजुदौला-द्वारा कलकत्तेके घेरेमें जिन अँगरेखोंकी जो कुछ क्षति हुई थो उसके मुआवजेमें पौने दो करोड रुपये उन्हें मिले। सिवाय अमीचन्दके अन्य देशी सामन्त सरदारोंको मी हिस्से मिले। वही शान्तिके साथ जी भरकर सैकडों वर्षसे सचित वगालके राजकोपकी छूट हुई और वह बिलकुल खाली हो गया । अँगरेजोंका देना फिर भी काफ़ी वाक़ो बना रहा जिसका तक्षाजा नवाबकी गरदनपर हर समय सवार था। अब अँगरेज हो वगालके वस्तुत स्वामी थे। घटनाका सवाद पाकर शहजादे अलीगौहरने अवधके नवाबके साथ बगालपर आक्रमण किया, किन्तु जैसे ही क्लाइव उसका सामना करनेके लिए बढ़ा वह विना युद्ध किये ही अवध धापस लौट गया। भैंगरेजोंके अंकुश और नित्य नयी मौगोंसे तग आकर मोरजाफ़रने चिनसुरा के हचोंसे वात-चोत करनेका प्रयत्न किया । इसपर अँगरेजोंने जल और यल दोनोंपर इचोंको बुरी तरह पराजित किया और उन्होंने अँगरेजोंको दस लाख पौण्ड हर्जाना देकर अपना पिण्ड छुडाया । इसके बाद डचोंकी ओरसे भी अँगरेज सदाके लिए निश्चिन्त हो गये। १७६० ई० में अब अत्यन्त धनवान् वलाइय इंग्लैण्ड चला गया ।

मेंगोंकी पूर्ति करनेमें असमर्थ पाकर पदच्युत कर दिया और उसके दामाद मोंगोंकी पूर्ति करनेमें असमर्थ पाकर पदच्युत कर दिया और उसके दामाद मीरक़ासिमको नवाब बनाया। इस उपलक्ष्यमें उससे खूब धन लूटा, लाखों रुपये और कई जिले प्राप्त कर लिये। मीरजाफ़रके पतनमें उसके हिन्दू मुसाहव और सरदार भी सहायक हुए थे। मीरजाफ़रसे ही अँगरेजोंने यह म्बाचारिजोके हाच भी ऐने तम वैच-वेचकर वे बरवा बनाते ने । जैवरैवाँके करलीकी मोरते को मोर इस्पेक मेंबरेक्के व्यक्तिवत करमें की राजा-वसा वनीचे पृत्रकोरी और स्थापार वीलो हो वान-वान कृत पक निक्ते । करन्त्रीके इत क्रमचारित्रीये न्याय-कन्त्रामः विका-सत्त्रीका और महर्त-कामानका बाद तिनक भी भ वा केमक कामे-बदने कामार ही क्लामी पृष्टि भी । स्वयं संपन्ने संबदेश काकिसीओं दानि श्लीपानेसे में नहीं पूजरी में । जिस एरड़ मने निजी सात स्वानेके तसलमें ही में सीन में । निमा निती किम्पेदारीके कॅनरेफ लोग सबीय कविकारीका क्रमोन करने करें। वहुना नै बाक्य-कारमें राज्याविकारियोके वार्यने को रोडे बटकरों है। वनवे हाथ म्यापारिक विकासन्तर्यो (वस्तर्यो) के पुक्रवीको राज्यकी मान भी बहुत कर हो नवी थी । जैपरेच कुटेरॉना एक निरंपुच अभिवेची एवं विविधारपूर्व वक्त समस्य वैकार कर नहा । मीरकाबीन बीम्ब ची-द हीक्ष्रीमन्त्र और कुम्बन काक्स ना । मोडे बनवर्षे ही राज्यकी व्यवस्था दुष्ट टीक करके क्यमें बोरशिकि शतकेको कुछ धन करनेका जपाव निया। काने निक्ष कई काम कानोंकी सहावदाने हो जेंगरेज १७६१ हैं। में गान्तु नेरीके पश्चमें बच्च वर्ष काल्योकियोंको कुमक्तीवें प्रमर्थ हुए ।

किन्तु वीरशासिकको धननाएँ नियम भी बहु नएकैन था। बेर्नेडेंबर्ग बार्ग किन्तु भीतन कह बीर बतिहाँ भी बढ़े बहुन था। बन्नेडेंबर्ग मेनुको किन्नमा नामा पुर्वाचनाको प्रकार पुरेश्यो प्रकारी कराना पर्वाच बार्ग किर्माचिको केनाम प्रकार का बीर कुन्न बीरावेड्ब वर्गी बता। बत्तवाह बाह्याबाब बीर बाल्ये नामांडे भी बत्ते बहुन्या बीरी। इस्त बहुन्ये बीरिक्टी रूपांति कर्मनार्थिको क्लिकार भी

समितार यो जान्य कर किया था कि किसी वो सेवरेब कोटेका सम्बन्ध किसी यो व्यक्तिको ऐहा। समित्रार-तम है ककता है कि तियक्षे कबता पोश्यरी माम राज्य-करते जुला रहेगा। सन्त कमनोको कोटे-तरे कर्यवारी सम्बे निजी स्माराप्ये दो इस समित्रार-नार्वेका प्रथमेन करते ही वे वैधी किन्तु कुछ परिणाम न निकला । इसपर उसने समस्त कर उठा दिये । इससे अँगरेजोंको जो दस्तकोंके-द्वारा विपुल लाम होता था यह वन्द हो गया । अत युद्ध छिड गया । पटनामें मीरकासिमके जर्मन कप्नान समकने २०० अँगरेजोंका वघ कर दिया और तदनन्तर १७६४ ई० में वष्मरमें अँगरेजोंके साथ मीरकासिम, अवधके नवाव और वादशाह शाहबालमका युद्ध हुआ जिसमें अँगरेजोंको हो विजय हुई । मीरकासिम और अवधका नवाव अवध भाग गये और शाहबालम अँगरेजोंकी शरणमें आ गया ।

अब तो अँगरेज बगालके ही सर्वे-सर्वा न थे बरन् स्वय दिल्लीका वादशाह उनके सरक्षणमें था, देशमें उनकी शिवतकी धाक जम गयी और भारतीय राजनीतिमें उनकी प्रतिष्ठा वढ़ गयी। वनसरके यद्धके कार्यको पूरा करनेके लिए फ्लाइवको कलकत्ताका गवर्नर एव सेनापति वनाकर फिर भारत भेजा गया। उसने १७६५ ई० में इलाहाबादमें शाहबालम और शुनानहीलाके साथ सन्धि करके अपनी कम्पनीके लिए वादशाहसे वगाल. विहार और उडीसाकी दीवानी अर्थात् इन प्रान्भीको मालगुशारी वसल करनेका अधिकार प्राप्त कर लिया जिसके बदलेमें बादशाहको २६ लाख रुपया पाणिक देनेका वचन दिया। अवधके नवाबसे उसने कहा और इलाहाबादके जिले ले लिये, उससे परस्पर सहायता करनेकी धर्त कर ली भीर उसकी सीमापर उसीके खर्चेसे अँगरेजी सेना रखनेकी बात तय कर लो। अव दिल्लीका वादशाह अंगरेजोंका एक प्रकारका पे शनर था. अवधका नवाब वजीर उनके प्रभावमें या तथा खर्चे एवं हर्जानेकी रक्षमके लिए ऋणी या, और वगालके तो वे पूरे स्वामी थे। मीरजाफ़रको नाम-मात्रका नवाब बना दिया गया, पुलिस एव दण्डविधान ही उसका एक-मात्र अधिकार-क्षेत्र रह गया । कुछ ही मास उपरान्त वह मर गया और उसके येटे नज्मुहौलाको नवाब वनाया गया । मीरजाफ़रके पुनरुत्यानपर भो उसे खूब लूटा-खसोटा गया था। स्वयं स्क्रेपटन नामक एक अंगरेजके शन्दोंमें 'नवाब तो कम्पनीके नौकरोंके लिए एक ऐसा वैंक बना हुआ था बक्ता बीधन ही अंगरेजोंके हारा ही निमन्त किया बाता में गौर क्षरमें क्षेत्र भी परिस्ति एवं निकत थी । बेशकों बोहुरा बारण मण क्यि हो बया । अँगरेव बद्धवरी और क्यके वास्त्रीय कमवारियोगा व्यक्ष देशके बोच-वीवये दिक्क तथा । कम्प्रतीके प्रशासारी, कवारियोंका भ्रष्टापार भीर बांचक श्रद नवा । स्वाहपने बच्छी वेताका बुधार मीर बंगरन किया तथा कमानोके कर्मशारितीयर थी निकास रखने और बनके ब्रह्मवारणो का करनेका प्रशत किया। किया रेक्स में में नगाइव इंग्लैंग्ड बारस बाहा बना और कुछ वर्ष बाद पानळ होकर एका व्यक्त-हरना करके कर क्या । रोहरे बायनक दोन प्रत्यक हा ने । बन्तकी और नवान रोनेकि कर्नपारी सनवाडी कुरमेर्ने श्रीड़ क्याने हुए में। बढ़े-बड़े करीयारीकी मो कोई प्रतिक्र का शुरका न एड वनी मी । बाक्युवारी वादिक नपूछ करवेंने बन-रूप निवर्शनी लाग किसीको वी ब्यूटवेंने कोई दिगक व

निक्षपेने का निक्ती बारबोर क्रिक्टना चाई कावा निका 🍜 ।

मध्रार नास्टे (१ ६७-६९ ई.) जोर कार्टिनर (१७६९-७१ ई.) भी समीरम ही से । १७६९-७ ६ में संबंध देखने सरवना समानक पुनिस परा निसर्वे एक विद्वादि अधिक सम्बद्धा मुख्ये वदा-वदास्कर वर वती । बरकारने कृष १ पीना शीन करोड़ सकाव-नीड़ियाँकी बद्दानको सिद्ध निवास । सक्तानको भीवनता राज्य-कनवारिनोंके भरवा-भार्ति कारम और वर्षिक वह वसे। जवालके चनलकर बनायके बावन-

भी । त्रता नित्यहान हो पत्री । इस बीचनें होनेशके बंबाकके बेंदरेन

का को बन्द कर हो दिशा गया और वसे देन्यन देवर जन्म कर दिना

वया चान ही जब कम्पनीके ही सरकारी कर्मशरिकोने बैंडे वका क्रकार-नीतित सन्तान्त्रे कृत-क्रक्टेसकर करनारो कीतमें toot हैं. में र ६८ हैं

को मरेबा मो अभिन्न राज्य-कर स्कूल करके बना कर दिया। रे 📑 👯

में बारेन हेरिया बंबाबना कर्नार नकर जाया । यह बड़ा ट्रॉफेंस पूर

भारतीय इतिहास एक धी

नीतिश था। बम्पनीके अन्य सभी बर्मचारियोकी भौति वह घूमखारी और अष्टाचारसे भी मुनत नहीं था। जनताका घोषण और लूट चेगके साथ चलती रही। देशके उद्योग-धाधे शनै-शनै अत्याचारपूर्वक नष्ट कर दिये गये। भारतमें अंगरेजोकी घिकत एव विस्तार, और ससारमें इंग्लैण्डका धन-वैभव, ज्यापार, उद्योग-धाधे, प्रभाव और प्रभुत्व दिन दूने रात चीगुने बढ़ते गये। भारतकी इस लूटसे प्राप्त धन तथा स्वय भारतके ही कच्चे माल तथा विशाल भारतीय बाजारके वल्पर ही इंग्लैण्डकी औद्योगिक क्रान्ति एव संसारमें उसके ज्यापारिक प्रभुत्यका सम्पादन इसी समयके लगभग प्रारम्भ दूआ।

बारेन हैस्टिग्सने अपनी दो साल (१७७२-७४ ई०) की गवर्नरीमें पड़ोसी राज्योंकी राजनीतिमें हस्नक्षेप करके कम्पनीकी शक्ति बढ़ानेकी प्रया चालू रखो । अपने ऋणो अवधके नवावकी इच्छापर रुहेलोंके साथ युद छेडकर और फलस्वरूप उनका विनाश करके उसने अवधको तो जो लाभ पहुँचाया सो पहुँचाया, स्वय अपना लाभ किया और कम्पनी की शक्ति और प्रमायको उत्तर भारतमें पश्चिम दिशामें और अधिक विस्तार दिया। इस युद्धमं पड्ना अँगरेजोके लिए अन्यायपूर्ण और अनु-चित था। उसके लिए स्वय अंगरेजोने हैस्टिग्सकी कडे शब्दोंमें निन्दा की है। रुहेले सरदार हाफ़िज रहमतखौंने अंगरेजोंका कुछ भी न बिगाडा था। वह स्वयं भी एक उदार एवं सहृदयं शासक था। अपनी मुमलमाने-तर प्रजावे प्रति भी उसका व्यवहार अपेक्षाकृत अच्छा था। मुद्धके उपरान्त अवधक नवाबोंके शासनमें घहेलखण्डको दशा एकदम विगष्ट गयी। किन्त उस कालके इन अँगरेजोंकी दृष्टिमें उचित-अनुचित, न्याय-अयायका कोई मूल्य न था। जा बात भी उनकी शक्ति-सवर्द्धन और स्वायसाधनमें सहायक होती वहीं उचित एव याय्य थीं और उसे करनेमें से कभी न चुकते थे। वारेन हैस्टिंग्सने इसी कालमें बगालके शासनको भी व्यवस्थित करनेका और उसमें सुधार करनेका कुछ प्रयत्न किया, किन्तु इन सुधारो-

रेबेंकि बलाचारीके निच्छ बंगायके बुध मानीमें इस गायने हुना किन्द्र वॅनरेजॉने कने सुरातके काम नुषक्ष सिया। १७७३ है के रेपुनेटिंग ऐक नास प्रजीवरकी मरकारने वर्षत्रका कारतीके कार्रोवे वैवानिक शस्त भेर किया । इब विवासके अनुसार बंगालका अवर्गर बारतका नर्कार-भगरम नहमाना सम्य तह तुर्वो और महत्व बन्दई बाविके नदमधीरर वनना वाजिपत्व हुना ५ मध्य वसका नार्वकाच निवस किया वया, वनकी नदानताफे किए चार गुरुकोची एक दीनिक बनाबी नहीं और सक्कारें में नुत्रीय गोर्डके नाकने क्योंक्व सदाकत स्थापित की नती जिसके कम वर्ष-र्पर मनरक और उक्की श्रीनिकके अविकारके क्ष्मण स्वयन्त है। मान्युवारी-वाक्त्यी स्पीरों तथा ब्रांडी वर्ष वस्त्रारिक मानलेक इंग्लैनकी नररारको सबकन रकता कारकदक्त हो पता । इस प्रकार इस बदासेन-हार्थ शंभीगरणी करकार या कड़िए कि कार्य संबर्धकी शाल आरही सम्बी राज्य-प्रतिनेते विल्हारने प्रत्यक्ष करते विकासनी केने समा। बण्यानिक निक्रके बाबी कार्योंकी तथा सरिश्यमें किये बाबेशके क्रम कार्योंकी सैनरेंस करणारका क्रमचेन सहयोग केरकन क्ये विविधानका वास्त ही क्या । निय प्रकार कामकार केमके बोर्केट बंबराओं और बिर बचके जाने महभर गांतनमी प्रदेशों में बंदरेजी खांतरका संगठन किरवार और संगर्जन कर भी में बता प्रकार वर्षी सहबर महाब केमने में सुपर प्रतिमने व्यक्ति युक्त आला और क्लॉटक देवोनें बैता ही कर रहे थे। वंजीर पार्शनिरि वार्षिके कोडे-कोडे राजाओंको हो क्यूंनि प्राय: काने नवीन कर ही किया या बीए कर्नाटक्या स्वाह बंगाक्त नरावकी वांति ही क्यके

हाक्ती नवनुष्टमी या । क्वके साम्बर्ते सी प्रायः वश्री शास्त्री वंशक-वैद्या रोजपूर्व रोप्टरा कानल स्वातीत करके क्लूनेन कर्नाटक वेक्सी दवा एर्व

बारतीय इतिहास एक रहि

र्वे मो नम्मनी भीर अंबरेडॉके दियों समा अधिकारीनी मुस्काकी वृष्टि है। प्रमान थी । संस्थानियोंके विज्ञोजके बानके प्रक्रित क्ल कास्त्रीक की बॉन-

निजाम और उसको राजनीतिपर उन्होंने अपना प्रभाव जमा ही लिया या, अब उसे और अधिक सुदृढ़ करने तथा मैसूरमें हैदरअलीका अन्त करने तथा निजाम और मराठोकी शक्ति सीण करनेके लिए उन्होने भारतके इस भूभागमें अपनी वानितका सगठन, विस्तार एव सवर्धन करना प्रारम्भ कर दिया था । इसी नीतिके अनुमरणमें उनका हैदरअलोके साथ प्रयम मैसूर-युद्ध (१७६७-६९ ई०) हुआ, यद्यपि उसका परिणाम चनके लिए बुछ लाभदायक न हुआ। इसी प्रकार पदिचमी तटपर सम्बई वेन्द्रसे उन्होंन मराठोंकी शक्तिको क्षीण करनके लिए वैसा ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया या। १७६१ ई० की पानीपतकी पराजयके चपरान्त पेदावा राज्यकी स्थिति विषप्त हो उठी यी । अन्त कलह, परस्पर फूट, सामन्त सरदारोंके स्वसन्त्र राज्य स्थापना आदिसं उत्पन्न परिस्थितियो-ने इस भागमें भी अँगरेजोको स्वर्ण अवसर प्रदान किया। तीनों फेन्द्रोंके हारस अँगरेज भारसवर्षको सीन महत्त्वपूर्ण दिशाओंसे आवृत करते चले आ रहे थे। तीनो ही केन्द्रोंके अँगरेज अधिकारी प्राय एक-दूसरेसे स्वतन्त्र रहकर हो अपनी-अपनी दिशामें अवतक अग्रसर होते रहे थे, किन्तु उनमें चट्देष्य, हित और पद्धतिकी एक-सूत्रता ९व साम्य तथा परस्पर सहयोग एव सहायता अमीतक भी बराबर वनी हुई थी। रेगुलेटिंग ऐवट-द्वारा उनका पूर्ण केन्द्रीयकरण एव एकसूत्रीकरण करनेका प्रयत्न किया गया, जिसमें प्राय कोई कठिनाई न हुई। अवतक अँगरेजी नीति और पदातिका ययावस्यक विकास हो चुका था, उनकी शक्ति अत्यधिक वढ़ गयी थी. स्यिति अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी थी तथा उनके प्रमाव, अधिकार और साधन पर्याप्त थे। उनकी भारतीय साम्राज्यकी नींव मजमूतीके साथ जम गयी थी, अब मात्र तेजीके साथ उस साम्राज्यका विस्तार करके समस्त देशको उसमें ब्याप्त कर लेना था जिसके सम्पादनमें वे मनोयोगक साथ जुट गये। इस काल तककी घटनाओंका कुछ विस्तारके साथ विवेचन इसीलिए किया गया है कि अँगरेजोंके उद्देष्य, उनको नीति, पढित, मनोवृत्ति, जातीय

में भी बरारी और संबंधीने दियों क्या महिलायों में हुए सार्थ हैं है समल मी। नेन्य निर्मेश निर्मेश नामने महिल एक महिलाय में में निर्मेश नामने महिलाय एक महिलाय में में निर्मेश नामने महिलाय महिला

रंभीनारी बरवार या वहिए कि बानुके अंबरेडी राष्ट्र आरावें करी राम-विभिन्ने रिसारारी प्रस्क करते रिकार के कहा। करायोंने तिके नयो नार्योंने करा भरिवार है कि अनेश्वी कर वार्योंने केरेड़ गरवारण वालेक बारोव बंधक एवं महिवारण प्राप्त देखा। विस् महार करवार केरोते अंदरेड बंधानी केरेड कर वाले में महार परिवार केरोडी अंदरेडी परिवारण वाला कियार है। ते वेरोड महार परिवार केरोडी केरोडी परिवारण केरोडी केरा है। प्रस्ता है। ते तेरो महारित बार्ड केरोडी एमार्डी केरोडी की प्रस्ता है। ते तेरो बार हो किया वा बोर कर्याटक्य क्यार बंधाने क्यार हो ही ही तेरोड़ बार ही किया वा बोर कर्याटक्य क्यार बंधाने क्यार हो ही ही क्यार कर्यों क्यार ही बार हो किया वा बोर कर्याटक्य क्यार बंधाने क्यार है।

नकनुष्ठारी-कानली ज्योगी क्या डोजी एवं शासारिक भावनीन इल्लेग्यवी नरवारको अवनत रचना आसारक ही नता : इन प्रकार इव चरातेनहास निज़ाम और उसकी राजनीतिपर उन्होने अपना प्रभाव जमा ही लिया था, अब उसे और अधिक सुदृढ़ करने तथा मैसूरमें हैदरअलीका अन्त करने तथा निजाम और मराठोकी शक्ति झीण करनेके लिए सन्होने भारतके इस भूभागमें अपनी शक्तिका सगठन, विस्तार एव सबर्धन करना प्रारम्भ कर दिया था। इसी नीतिके अनुसरणमें उनका हैदरअलोके साथ प्रयम मैसूर-युद्ध (१७६७–६९ ई०) हुआ, यद्यपि उसका परिणाम चनके लिए कुछ लामदायक न हुआ। इसी प्रकार पश्चिमी तटपर वस्बई वेन्द्रसे उन्होंन मराठोंकी शक्तिको शीण करनके लिए वैमा ही प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया था। १७६१ ई० की पानीपतकी पराजयके उपरान्त पेशवा राज्यकी स्थिति विषन्न हो उठी थी । अन्त कलह, परस्पर फूट, सामन्त सरदाराके स्वतन्त्र राज्य स्थापना आदिसे उत्पन्न परिस्थितियों-ने इम भागमें भी अँगरेजोको स्वर्ण अवसर प्रदान किया। तीनों केन्द्रोंके द्वारस अँगरेज भारतवर्षको तीन महत्त्वपूण दिशाओंसे आवृत करते चले वा रहे थे। तीनों ही केन्द्रोंके स्रेगरेज सिंधकारी प्राय एक-दूसरेसे स्वतन्य रहकर हो अपनी-अपनी दिशामें अवतक अग्रसर होते रहे थे, किन्तु उनमें चट्टेश्य, हित और पद्धतिकी एक-सूत्रता एव साम्य तया परस्पर सहयोग एव सहायता श्रमोतक भी बरावर वनी हुई थी। रेगुलेटिंग ऐक्ट-द्वारा चनका पूर्ण केन्द्रीयकरण एव एकसूत्रीकरण करनेका प्रयत्न किया गया, जिसमें प्राय कोई कठिनाई न हुई। अवतक अँगरेजी नीति और पद्धतिका यपावस्यक विकास हो चुका था, उनकी शक्ति अस्यिधिक वढ़ गयी थी, स्यिति अत्यन्त सुदृढ़ हो गयी थी तया उनके प्रमान, अधिकार और साधन पर्याप्त थे। उनकी भारतीय साम्राज्यकी नींव मजबूतीके साथ जम गयी थी, अब मात्र तेजीके साथ उस साम्राज्यका विस्तार करके समस्त देशको रसमें ग्याप्त कर लेना था जिसके सम्पादनमें वे मनोयोगक साथ जुट गये 1 इस काल तककी घटनाओंका कुछ विस्तारके साथ विवेचन इसीलिए किया गया है कि अँगरेजोंके च देश्य, उनको नीति, पढति, मनोवृत्ति, आतीय

परवाएँ इन्होंकी पुनरापृत्तिकात है। बढ़- क्ष्मला संक्रिप्त निवरण ही पर्याप होना भी नक्तर-बनरस्तेंद्रे बाबारते काकश्रमानुबार बिन्न बचार 🕯 💳 े चारेन द्वेरिटास (१७४४-८५ 🕻) मालका बबन बैंबरेट नवनर-बनरस वा । पाके बक्की निवृत्ति गाँव बर्वके सिए की की की बिर पाँच वर्षके निम् और बदा दी नदी दी । बदके रार्धकांकके शारान शरीके सबके ही वर्ष वस्क्ट्रेंग वहर्तर पेछवा करवारणी राजनीतियें वस्क यका । पेमचा राज्यके कला सकाता काथ प्रकार और राजीवारा पत्र केकर करते अलो अलाज को बंदाकको बरनाको पुत्रराष्ट्रीय करतेकी तीची हिल्लु विश्ववेत शरहा राजनीतिक साथ बहुतसीनके कुटमीतिक पानुर्वित बारम क्रते स्वर्थ केलेक देवे यह वर्ष । १७७५-८१ ई के प्रयत वेंगरेक कराता मुखर्ने माना कालगीनने तिलिया। हीत्यर, नावस्थान वींतने बर्राट बनी नराम बरवारींची बना लिडान भीर हैशरमबीची मी बन्ती और दिया निया । इनक्र बम्ब कालीके बीते ही बहेकले हैरिय शीकर मतान करकारने हैपरवासीके बाज नुख क्रेड रिया । हैपरवासी स्पर्द बीपरेडीको अमेरिकचे आहर किलास देनेवर तुम्म हुना वा । यदः प्रवस भेरोब-मध्या पुरुषे बांचने ही पुषध सेंग्रीक-नेतृर पुर (१७८०-

परित्र एवं जन्तरशारिताका क्षेत्र-टोक परित्रय निक्र बाने । आलेगी बर

१७८४ हैं) भी मूक क्षी क्या । इस मुख्यि आरम्भ करनेने बर्म्यर्ट बीर बहानके क्यार्टीन वहर्गर-अवरक वारेन हैतिरामची वीई बल्बी स स्क्षेत्रांत बढ़ी भी गी, मतः यह दृष्ट तयब तक बुर ही मैदा रहा । सक्-स्वान्त वर्धी वर्ष परिचारी एटके वॉबरेडीला बाकर्तियाल मिटवेडी मा प्ता था विवर्ष कारण भेरते होती या गालकाता यक्ति और विविधारों अभिर देव सन्तरी जान ही क्लिशनात जनतबंब बारि सांब्रनीने वर्नी

बरैंगके किए मॉकिंग मी धाला परता, फिल्मू बंबके पूर्व ही गारिन क्षिरानमे बयल बीररेय पानिनको केलिक अरके इक बार्य करा दिया । परिचरी हुट, पूर्वी कर मीर मध्य पारत आहेर शिवित्य स्थानीने देवता

मालोप इतिहास । यह इति

मराठा सरदारों और हैदरअलोके साथ अँगरेजोंक युद्ध हुए। अँगरेजाको कूटनीति और नातुरी साथ-माथ अपना कार्य करती रही। परिणाम यह हुआ कि १७८२ ई० में सालवाईकी सिघसे मराठा युद्धका और १७८४ ई० में मगलीरकी सिघसे मैसूर युद्धका अन्त हुआ। अँगरेजोका प्रमाम उनके समो विराधी राज्योंपर छा गया। उनकी सबको ही घषित-विस्तार और अधिकार कुछ-न-कुछ घट गमें और अँगरेजोंके पर्याप्त बढ़ गये। अब उन राज्योंका अत करने या उन्हें पूर्णतया अपने अधीन कर लेनेका मार्ग भी अँगरेजोंके लिए सुगम हो गया।

इम कालमें देशके प्रत्यक्ष शामनका काम अँगरेज़ोको केवल वगालमें ही करना पड रहा था। उसक लिए उन्होंने प्रचलिम मुग़लकालीन शासन पदितिके ढाँचेको हो अपनाया और उसमें अपने हितोकी सुरक्षा एव उद्देश्यों-की सिद्धिकी दृष्टिमे आवश्यक सुधार करने प्रारम्म किये। उनकी इस घासन-पद्धतिसे देशका विरोप लाभ नहीं हुआ, अँगरेजोंको ही उसके अधिकाधिक द्योपण और लूटम सहायता मिली। देश और जनताके हितकी उन्हें चिता थी भी नहीं। किन्तु रेगुलेटिंग ऐषट द्वारा स्थापित व्यवस्था स्वय उनके लिए भी सदीप और असुविधाजनक यो। गवर्नर-जनरल और उसकी फीन्मिलके बीच सद्भाव एव सहयोग रहता हो न था और राज्यकायमें बहचन होती थी। अत इन्लैण्डके प्रधान मन्त्री पिटने अपने १७८४ ई० के पिट्स इण्डिया ऐक्ट द्वारा कम्पनीके ल दनस्य प्रधान कार्यालयपर तथा उसको मारतोय नीतिवर अवनी सरकारका नियन्त्रण एव हस्तक्षेप और मुदुढ़ कर दिया और गवनर-जनरलके अधिकारोमें भी वृद्ध कर दी। इसी बीचमें अपने कार्यकालमे वारेन हैस्टिंग्सने कतिपय अन्य जघन्य कार्य किये थे। उसके अन्यायपूर्ण रहेला युद्धका उल्लेख किया ही जा चुका है। उसने वगालके एक प्रतिष्ठित एवं सम्भ्रान्त राजपुरुप महाराज नन्दक्मारको व्यक्तिगत राज्याके कारण अपने मित्र सुप्रीम कोटके प्रधान जज सर एला-इजा इम्पे-द्वारा जालसाजीके झूठे मामलेमें फ्रांसीको सचा दिलवायी।

चरित्र एवं अन्तरवादिताका क्षेत्र-क्षेत्र वरित्रत दिल कार्य । बावेकी क्ष्य पटनारों इन्हींको पुनरापृत्तिमान है जब धनका बंक्तिय विवरण ही वर्गीय होना वो नक्तर-स्तरकोके बाबारते कालकामनार निम्न प्रकार है ---१ बारेन प्रेस्टिय्स (१७७४-८५ ई) बारतका प्रवन बॅक्टेंब नवनर-अनरस था । नड़के बढ़को निवृत्ति पाँच बर्वके किए की सवी वी फिर गीन गर्रके मिए और उद्धा हो गयी थी। सक्षके कामस्त्रको धारम्य होनेके अनके ही कर्ष बावर्डका बर्कर वैक्या बरकारकी राजनीति वे स्वय वना । देवता राज्यके अन्त-कव्यक्ता साथ व्यक्तार और राजीवाका ^{पह} नेकर बछने अपने पान्तके जी बंगाकको चढनाती पुनरान्ति करवैसी बीचो । विश्व विषयम महाद्रा राजनीतिस वामा श्रवन्तीतके कुल्तीतिक पालुर्वके बारम क्षेत्रे स्मे क्षेत्रेक स्मे वह करे । १७७५-८१ हैं के प्र^{कृत} बैगरेश-वरध्य मुद्रवे गांना चळातीसने विश्विया द्वीस्वर, वायकगांव भौजने आहि क्षत्री वराठा करवारीको तथा निवान बीर हैपरवसीनी मी मन्त्री और क्लि निमा । इक्टर मन्त्रदेशलीके बैश ही क्ट्रेस्ट होति होकर नहास सरकारने दिरस्तकोंके बाव वृद्ध केंद्र दिना । दिरसको स्वर्न र्वेगरेबोल्पे कर्नाहरूके बाहर निवास देतीगर तुका हवा वर । बरा प्रवन भेरोध-गरास मुसके नोचमें ही दूसरा संगोक-वेक्ट नुस (१७८०tuce है) भी चुरू हो स्था। इत मुझेले आएन करतेने बस्बई बीर बहाबके कार्गरील व्यवनंत-समरक बारेन हैं दिखाबरी कोई समाप्ति मा स्रीइति वहीं की भी अंता वह कुछ समय तक पुत्र ही बैठा पहा । कुछ स्वका पूर्वी एवं परिचनी तटके जैपरैजींका नाय-विकास पिटने ही वा रता वा विवके कारण अंगरेजोची राज्याकाचा धरील और प्रतिक्रको शर्मिट देव करती. शर्म हो निकायमाठः अन्तर्भव वादि बाइनोंहे वर्षे वर्षेत्रके किए क्रांक्रिय को स्थान प्रकात किन्तु क्रान्के पूर्व हो शारेन हैरिटम्मी बन्नत मेंपरेन चन्तिको केन्द्रिय करके इच नुसमे बना दिना ह परिचनो ठट, पूर्वी ठट भीर क्ला भारत जानि विक्ला स्थलीन देखवा

मार्गम प्रमित्रक क्या प्री

41

प्रयाका अन्त करके बगासमें मालगुजारोका इस्तमरारी अर्थात् स्यायी बन्दोबस्त किया और सिविल सर्विसकी भी स्यापना की । कानैदालिस एक उच्च घरानेका सम्पन्त व्यक्ति, ईमानदार श्रीर अनुभवी शासक था। चसके पूर्ववर्ती अधिकारियों द्वारा किये गर्य अत्याचारा एव अनाचारोको भुलानेके लिए उसे मेजा गया था। ऐसा करना अँगरेजोंकी गहरी कूट-नीतिका प्रदर्शन था। इस प्रकारकी क्रिया प्रतिक्रियापर हो वह अवलम्बित थी और सर्देव चलती रही। एक शासक आता जो जो भरकर जार-जुल्म, रूट-खसोट करता उसके तुरन्त उपरान्त ऐसा व्यक्ति भेजा जाता जो जनता-के आंसू पोछनेका और उसे पुराने अत्याचारोंका मूलकर अँगरेजाकी सदा-घयता, चदारता एव न्याय-परायणताकी प्रशसा करनेके लिए प्रोत्साहित करता। किन्तु इन दोनो ही गरम और नरम प्रकारके अधिकारियोंके हाथमें वैंगरेजोंके व्यपने मोलिक हित समान रूपस सुरक्षित रहते । १७९०–९२ ६० में दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध छिड़ा जिसके परिणामस्वरूप टीपू सुलक्षान-का राज्य और शक्ति अत्यन्त घट गये और मद्रास प्रेसीडेन्सीका मी पर्याप्त विस्तार हो गया । इस कालमें उत्तरापयमें महादाजी विन्धिया सर्वाधिक शिविद्याली हो रहा था, वह चतुर, वृद्धिमान् और प्रतापी मी था । अँग-रेजोंने उसके साथ मित्रता ही बनाये रखी और उसके कार्योंने हस्तक्षेप नहीं किया। १७९४ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। १७९३ ई० में इंग्लैण्ट-को सरकारने कम्पनीको आगेके २० वर्षीके लिए भारतीय व्यापारक एका-विकारके लिए नया आज्ञा-पत्र प्रदान कर दिया था।

दे सर जॉन शोर (१७९३-९८ ई०) पहलेसे ही कम्पनीका कर्म-चारो था और कार्नवालिसका सहायक था। वह सिविलियन मनोवृत्तिका या और देशी राज्योंके मामलोंमें हस्तक्षेप न करनेकी नीतिका अनुसरण करना सथा पिटके इण्डिया ऐक्टका अक्षरश पालन करना चाहता था। अत पूर्व सिवको अवहेलना करके उमने मराठोंके विकद अपन मित्र निजामको सहायता न दो, फलस्वरूप खर्दिक युद्धमें निजाम बुरी तरह

नत्तपुत्रारमे हैर्सिक्सची नारी मुबन्नोरीका ची मध्याबीड फिना था। रही-की तहानवाड़े हैरिटमाने सपने कियहें हो। सन्य सर्वत कार्योंको बी बैयकी वे दिना वा । व्यक्तिवद बनुता एवं धनके शोकके बारम हो बतने वचारक^{के} बनुद एवं निर्देश राजा चैत्रविद्वार प्रतिविद्वार्थ निर्देशतके बाल विराध किया और बक्के राज्यको सुद्धाः चनके बोमने ही चन्नने अववनी प्रतिक्रि

वेपनोंको की बरफर लगा-सडीटा और अपनावित किया। वतने सरे^क चाक भिने जीवोत्रे साथ कक-रपरपूर्व स्थापारिक वर्ष राजनीतित कव्यक्ति

किने बनुकित की बीर कुन की । इस कर नावों के किए स्वयं इस्तानीन वर्ष बक्तरवर्ती अमेक अंगरेजोने कवकी वर्जान निम्हा की है। इंक्रीय नारत मानेपर क्यरोक्त करराजीके किए सक्ष्यर मुक्तरमा भनावर में बरेसें-को न्यान-राधनपराचा जो सुर होन किया रता। सन्तरा स्त्र बहानार निरंप्तान क्रिय हवा । न मी होता तो भारत बोर भारतीनोची मी बीरी बहु कर जुना का बसकी पुत्ति असम्बन की और सबकी तनिक की पूर्ति करवेचा अंगरेबीकी चवको करानो वा करकारकी, स्वप्नमें भी कोई क्टल न वा । हैस्टिम्लके माने और यहे बहर्वर-अवरमके आयेके नीच

क्षत्रम बोच नहीते एक नैक्ज़र्मको चक्रमा कारतार बीवामा । कारे बनवर्षे जैनरेकोका योकपूर्व एवं प्रशासारपुषः बरबन और अधिक प्रश्न ही बडा । महायांनी विनियम संपर्ध अल्बीबी केवायदि बाउन्ह दिनोदन्ही ब्द्रानको ६७ कार्यो दिली दरमारका एवंडवी या । बारबाह बहानावन की बत्तकी पनापर माजिय था । विशिषताने जीवरेचीले की बंबाक विद्वार वानिको भौतको बाँग को । २. कार्यं कार्नवासिस (१७८६-९३ 🐔) को कार्यर-जास होतेके बाम-वी-बाच मनान केनार्यात मां बना विना नवा और स्टेसियके करमोने कार को पूरा अकुल अधन कर हिना नहां । वहने करमोनी

नीकरीमें युवार करने जंबावारको कम करने बोर स्थानतीका बुवार करवेका प्रकल किया थया. शिक्रफ-हारा अच्छित बालाधारको स्थिताचे 414

प्याप्ति इतिहास १५ प्री

प्रयाका अन्त करके वगालमें मालगुजारीका इस्तमरारी स्रर्यात् स्पायी बन्दोवस्त किया और सिविल सर्विसकी मी स्यापना की । कानेवालिस एक उच्च घरानेका सम्पन्न व्यक्ति, ईमानदार और अनुभवी शासक था। चसके पूर्ववर्ती अधिकारियो द्वारा किये गये अत्याचारों एव अनाचारोको मुलानेके लिए उसे मेजा गया था। ऐसा करना अँगरेजोकी गहरी कूट-नीतिका प्रदर्शन था। इस प्रकारकी क्रिया-प्रतिक्रियापर हो वह अवलस्त्रित थी और सर्देव चलती रही। एक शासक आता जो जी भरकर जार-जुल्म, टूट-खसोट करता चमके तुरन्त उपरान्त ऐसा व्यक्ति मेजा जाता जो जनता-के आंसू पोंछनेका और उस पुराने अत्याचारोंका मूलकर अँगरेजोंकी सदा-घमता, उदारता एव न्याय-परायणताकी प्रशसा करनेके लिए प्रोत्साहित करता। किन्तु इन दोनों ही गरम और नरम प्रकारके अधिकारियोंके हाथमें अँगरेजोंके अपने मोलिक हित समान रूपसे सुरक्षित रहते । १७९०-९२ ई० में दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध छिड़ा जिसके परिणामस्वरूप टीमू सुलतान-का राज्य और शक्ति अत्यन्त घट गये और मद्रास प्रेसीडेन्सीका मो पर्याप्त विन्तार हो गया । इस कालमें उत्तरापयमें महादाजी विन्यिया सर्वीधिक शक्तिज्ञाली हो रहा था, वह चतुर, वृद्धिमान् और प्रतापी मी था । अँग-रेजोंने उसके साथ मित्रता ही बनाये रखी और उसके कार्योमें हस्तक्षेप नहीं किया। १७९४ ई० में उसकी मृत्यु हो गयी। १७९३ ई० में इंग्लैण्ड-की सरकारने कम्पनीको आगेके २० वर्षीके लिए भारतीय व्यापारके एका-विकारके लिए नया आज्ञा-पत्र प्रदान कर दिया था।

दे सर जॉन शोर (१७९३-९८ ई०) पहलेसे ही कम्पनीका कर्म-चारी या और कानवालिसका सहायक था। वह विवित्तियन मनोवृत्तिका था और देशी राज्योंक मामलोंमें हस्तक्षेप न करनेकी नीविका अनुसरण करना तथा पिटके इण्डिया ऐक्टका अक्षर्य पालन करना चाहता था। अव पूर्व सचिकी अवहेलना करके उसने मराठांके विकट अपन मित्र निजामको सहायता न थी, फलस्वरूप खदकि गुद्धमें निजाम बुरी तरह

ment weren me en al erne aural med माराज बाब बोर्नका प्रवीम विका । यह वहा साहकी अधिकेती बामmeriti er juding ut i gu nur bifnent unb detalt पान काम के के बनके बाब तेने प्रीपन वर्ष उद्याद बन्नने संतान के जिप बर बनके राज्या बीतन-सरम निर्मात छ । बारनवे हीए सम्बाधीर द्वार बा, बार्ड के बाद कि बाद की बनवे दह का बदा बीट संस्थी क्षिक्षीके बाच निमानको कामे समा । बाग हते विशिवता अन्यान व्यक्तिकाले मा । करानीकी औरसी दका भी बहुत लक्षत की अबके कर्जवारी बरलस कमाने रन में अनुवानन विवड़ नवा का कीर संस्थाना शानी का । मैंने-बनीने पुरल व्यर्का बहुलाबकाकर सेपूपर बाउभव कर दिया। निवार करकर भेंगरेबों के गुरो तरह क्योल हो गता और बुदावें बनशे नहायश बारवेके लिए भी जार हो बचा । १ ८-९९ है के इस चीने अंबरेक-तेपुर मुक्के अन्तरम्पन सीनु और बनके राग्यरा तथा ही क्या । राग्यरा बीर बन्नतिया एक वहा दिश्या बंचरेडीने हक्त विधा थेन बस्ते नियाने बाँड दिया और अपनी अस्तरकारी मैनुरका एक क्रोरा-का द्विप्र राज्य स्वालिक र दिवा ।

सर वेमेरकीने अपनी बहायच-वान्य तथा पाणुकी। को राज्य

कॅगरेजोंके साथ यह सिय फरता वह शिनवार्य रूपसे कॅगरेजाको अधीनता स्वीकार कर लेवा, किसी देशी या विदेशी आय शिक्तके साथ यह सिय-विग्रह नहीं कर मकता था, उसे अपने यहाँ एक बॅगरेज रेजीहिण्ट और सेना रखनी परती थी जिसका मत्र खर्च उस देना परता था और किसी अय विदेशीको वह अपने यहाँ नौकर नहीं रण सकता था। सबसे पहले निजाम इस बाधनमें वैधा। तदनन्तर प्रविधक नवाबसे रहेलम्बण्ड और गोरखपुरके जिले वरवस छोनकर उसे इस मिन्धमें बौधा। १८०२-०५ ई० में मराठोक साथ युद्ध छेड दिया और परिणामस्वस्त्व पेशवा, मिष्टिया, होलकर, मासले आदि मराठा राज्योंको पराजित करके उन्हें अपने अपने राज्योंके मूल्यवान् प्रदेश केंगरेजाको दे देने तथा इस सिधमें वैधनेपर विवश किया गया। भरतपुरक जाटों और राजस्थानके प्राय सभी राजपूत राज्योंका भी इन मिथ्योंमें जकड लिया गया।

इन सिंघयोंके फलस्वरूप भारतमें औंगरेजाको स्थिति अत्यात दृढ़ हो गयी, उनका राज्य विस्तार प्रत्येक दिशामें देशके अन्त प्रदेश तक पहुँच गया घन, आय तथा व्यापार अत्यधिक वढ़ गया, सिंधमें वेंधे राज्योपर चनका साम्राज्य स्थापित हो गया और उनके पास एक सुशिक्षित विशास्त सेनाहो गयी जिसके लिए उन्हें कुछ भी खर्चन करना पहताथा। इन कथित अनिगनत मित्र राज्योकी विदेशी नीतिपर भी उनका पूर्ण अधिकार हो गया और उन्हें अन्य यूरापीय जातियोंके आक्रमणका काई भय न रहा। ६न सचियोके लिए वेलेजलीने भारतीय राजाबोपर वहा दवाय हाला तथा उनक माथ अत्याचारपूण और सख्नीका वरताय किया । उसने उनकी या उनको जनताकी भावनाओंका तनिक भा खयाल न किया और न उनके न्यास्य अधिकारोंपर ही मुछ घ्यान दिया। उसको तो केवल अँगरेजी राज्यके विस्तार और सुरक्षाको चिता थी। देशी राजा नवाव उसके दवाव और अत्याचार तथा अपनी स्वयकी अमहाय अवस्था, अयोग्यता, फूट, स्वार्य-परता एव नैतिक पतनके कारण उसका कहा माननेपर विवश हुए।

संपोध प्रशिक्ताणकार्य और राजनीतिकोंने सान्ते प्रव कार्यि प्रीक्ष रह कुमोदिक्य को बहेता को है, किन्यु चारतिक स्वार्धी को बसर्वेग्य कर पर्निम्मीना कम बुरा महत्त्व पता। स्वत कर्षे विशिक्तिक भा मोती राज्योंने साक्त्योंना कमारा आन्तीति होहिता आग मोदि कर पर्स-स्वतः में किन्नी नमकोर मात्राची सीर मिलाबी हो करे। क्याने स्वत्य राज्यान मो सारा राजांदिर राजांदिन सोचन तिक्त्य हो नमा। राज्यों सामान सारा मोदि सी में विश्व हो मही। बहुन्त नमापार मोर स्वतान वाहे करें सीर सम्प्री राज सामार्थी और प्रवासकार्य हार्य स्वतान प्रशासन करेंदिन सम्प्री राज सामार्थी और प्रवासकार्य हार्य स्वतान प्रशासन स्वतान स्वतान स्वतान सामार्थ स्वतान सामार्थन सामार्थन स्वतान सामार्थन स्वतान सामार्थन स्वतान सामार्थन सा

वी इव दर्शन प्रयासी कई कन्दोर्थे बाजीवला की है और बड़ा है कि इवके द्वारा बारतीय वरेसा वृत्तिका चरित्रहोत और दुर्बक हो को । इतक है

नहीं बेक्किकों को बानों एकारा बादाबार मिलाए कारोपा हुए। बुधा था, रहिए एकाई काराविकारों कारवेका कार कारवार में एकारा कर्ण कर्या केरियों एकार्य दिवस किया । मुख्यों नामार्थि कार पी मोह दिवस पात और कारियां नामार्थिक हुए में परिकार्ष करियां कारात किया कार । मानेर्यों मानान्यार्थि । केर्क कर्या माना मां दिवस करा। माने एकारा बेरोगा कारक राजिए कर दिवस कार्य में बिया करा। माने एकारा बेरोगा कारक राजिए कर दिवस कार्य माना बीर ही सारान्यों पाने देशों बात्मा राजिए करिया कार्य कर्या कारान्य कर पूर्व में क्लियां क्लियों करिया कार्यान्य हुए मानियां राज्य कर्य कारान्य कर पूर्व में क्लियां केरियों कार्यां मानान्यां कर कर्यां करारां करियां कारान्य कर पूर्व में क्लियों कार्यां मानान्यां कर्यां करारां कर्यां क्ष्म कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां क्ष्म कर्यां क्ष्म क्ष्म क्ष्म क्ष्म कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां कर्यां क्ष्म कर्यां कर्यां क्ष्म क्ष्

2. वार्तवाविक्तको क्रा नवर्तनर-तवस्य बवाकर वेता वता शिन्तु १९६ - प्यानीय हमिहासा । एक श्री कुछ मास पदचात् ही उसकी मृत्यु हो गयी । उसके स्यानमें---

६ सर जार्ज वालों (१८०५-०७ ई०) नियुवत हुआ। उसने नी हम्तक्षेप न करनेपी नीतिषा पूर्णताके साथ पालन किया। वेलेजलीकी नीतिक परिणामों और अँगरेजोंको गृढ दुरिमसिन्धकी यहुत-से भारतीय अनुभव करने एने थे किन्तु विवदा थे। तथापि १८०६ ई० में वैलोरमें लँगरेजों सेनाके भारतीय सैनिकोंने भीपण विद्रोह कर दिया जिमका कठिनाईसे दमन हुआ। साथ ही देश-भरमें उपद्रव खडा हो गया, सुण्डवे सुण्ड साकू सर्वत्र धूमने फिरते थे और नि शक लृट-मार करते थे। युन्देलखण्डमें तो पूर्ण अराजकता फैल गयी, अनेक छोटे-छोटे सन्दार परस्पर लडने-साउने लगे। उधर पजावमें रणजीतिसहका स्वतन्त्र सिवस राज्य उत्तरीत्तर शिवराली होता जा रहा था। यूरोपमें नेपालियन बोनापार्ट अपनी शिवतन के शिवरपर पहुँच गया था। अँगरेजोंका वही सबसे अधिक सलवान एसं महान् सन्नु था जिसके कारण उनकी वही भयत्रद स्थिति थी।

७ लार्ड मिण्टो (१८०७-१३ ६०) के गवर्नर-जनरलका पद सँमालनेके समय उपरोक्त समस्याएँ उसके सम्मुख पीं। सत उसने ईरान, अफग्रानिस्तान और पजादके नरेशोंके पास दून भेजकर उनसे मैंगी सन्वियाँ कर लीं और उन्हें फासीसियोंके विकद्ध अँगरेजोंका मित्र बना लिया। सिन्धके अमीरोंके साथ भी इसी प्रकारकी सिंघ कर ली गया। उसने वुन्दलखण्ड आदिके सन्दारोंके पारस्परिक झगडोंका निबटारा किया और डाकुओंका भी कुछ दमन किया। मिण्टोको यह गर्वधा कि भारतीय धावतयोंके विद्यु शस्त्र टठाये बिना हो उसने सारी अराजक्ताको दसा

प्रतार्ड हैस्टिंग्स (१८१३-२३ ई०) के प्रथम वर्षमें हो वस्पनीका नया बाज्ञा पत्र क्षगले वीस वर्षोंके लिए जारी हुया जिसके द्वारा भारतीय व्यापारपर चसका एकाधिकार समाप्त कर दिया गया। १८१३ ई० के इस क्षाज्ञापत्र-द्वारा ही प्रथम बार अंगरेज कम्पनी सरकारने तीस

बॅबरेज प्रतिहासकारों और राजनीतिजोले अपने पत बाति वीरकी इत कुनोतिको बाँग प्रथंका की है। फिल्हु जारतीय राजाओं बीर नवलीहर इन वरिवर्गला वहा बुरा बबार पदा । अब अन्हें दिवेधिओं के ना परीनी राज्योके बाक्कमणोका संबंदा जान्यारिक होहोत्ता हाता कीई बय न रहा अना में फिल्म्में जमनोर सामग्री और विकासी हो अने । समग्री ^{साम} बस्मान मो बाठा १६१ और राजनीतिक बीचन नि बस्य हो नमा । राजनी पालन-प्रशनको ओरते थी वे चितुक हो वसे । वहसम्ब बनावार और करनाचार बढ़ने कने और अनामें इन बरवाचारों और कुधावनकी दुसाँ देकर कराँ-के जिसे नाहा सब राज्यको संगरेती राज्यमें निवा क्रेमेश बद्दन बद्धाना नेनरेजोके द्वापर्वे भा नना । टावड अंतरी साथि नानवारवेले थी इस फॉन्स प्रधानी करें कर्तीर आगोचना को है और कहा है कि इस्के शारा भारतीय नरेख नुभक्ता चरित्रहीत बीर नुर्वे हो वने । दक्ता ही नहीं बैकेडकीने को जनने राज्यका नवाक्तन वित्तार करनेतर पुना हुता था, तंत्रीर राज्यक प्रशासिकारके सम्बोध्य काम क्याकर वर्ष राज्यका बन्त करने क्षेत्र वेगरेकी राज्यमें किया किया। सुरतकी नगरिके कार की बड़ी किया करा और क्योंडक के क्याचीके कार भी अंशाध-वैद्या है। जरताय दिया गया । इत परेवींको याध-मावची वेन्द्रस देवर जनन कर दिशासना । करने राज्यानर अंबरेजी आसन स्थापिश कर दिशासना को बाता करेंच ही जाररनमें नड़के देयी शावनको स्टेबा सविक निक्रत और करवामारपूर्व या । वैथे तो कराइय ीर ईतित्यव बहुक ही इन बीतिका प्रारम्य कर जुने में जिल्हा कर नैकेजनीने की वृक्त व्यवस्थित नातक वृत्ते वैत्र का देवर माध्यमें वैनरेजोते अभूतवती अनुसामाधीय कार्ने बहुरा एवं क्रिका बना विशा जोर बान ही देशके वैक्तित वर्ष राजवैकित नामकी से विकास पहुँचा दिया । वैत्रे क्वीकी इन तीव त्रूपा नीतिक वररान्त क्वी बर्ध केरिकी मानवस्था की अवस्थ-

ह. कानमासिसकी कु: नगर्नगर-नगरक क्याकर बेना नगा शिग्रु

थी, पुढ छेड दिया। ब्रह्माने एम प्रथम पुढ (१८२४-२६ ६०) के फल-स्वरूप ब्रह्माना राजा पराजित हुआ और सहायक सिघमें वैधा। भारी रक्तम और आसाम प्राप्त वैगरेजांने हाय आये। मनोपुरका राज्य भी उनकी अधीनतामें रहा। उनकी पूर्वी सीमा भी अब मुरिनित हो गयी। १८२६ ६० में भरतपुरमें दुर्जनमाल विद्रोही हुआ जिमकी देखा-देखी मालवा, बुन्देलखण्ड एव मराठा राज्योमें विद्रोहक चिह्न दीम पटने लगे। अगरेजोंने दुर्जनसालको कुचल दिया, भरतपुरके किलंपर अधिकार कर लिया और खजानेको जो भरकर लूटा, किन्तु भरतपुर राज्यको कायम रखा।

१० सर विलियम वैटिक (१८२८-३५ ६०) ने शामन-

सुधार और शान्ति-मार्योकी कोर अधिक ज्यान दिया। इसमें समयमें सर्वप्रथम अँगरेजोंने अपने एक प्रतिष्ठित अधिकारी टामस मनरोके मुग्ते यह
महलाया कि ब्रिटिश सरकार एक सरक्षक रूपमें भारतको अपने अधीन
रखेगी और उसका ज्येय भारतीयोको अपने देशका शासन करनेके योग्य
सनाना है। यहींसे अँगरेजोंने विश्वमें अपना यह दम्म प्रचारित करना शुरू
किया कि भारत-जैसे पिछड़े, अशक्त, अरक्षित और असम्य देशोका सरक्षण
करना तथा उन्हें उन्नत और सम्य बनाकर अपने पैरोपर खड़ा कर देना
इस गोरी जातिका स्वेच्छा एव परोपकार वृत्तिमे ग्रहण किया हुआ भार
और उत्तरदायित्व है। अँगरेजोका यह दम्मपूर्ण ढोंग वर्तमान पर्यन्त चलता
रहा है। अस्तु वेटिकने घोपित किया कि प्रत्येक भारतीय जाति, धर्म या
रंगके किमी भेद-भाव बिना किसी भा सरकारो पदपर नियुक्त किया जा
सकता है। उसने क्रीजो खर्च कम करके तथा शासन सम्बन्धी अन्य आधिक
सुधारो-हारा सरकारकी आय और वचत बढ़ायी, पश्विमोत्तर प्रान्त-

का यन्दाबस्त पूरा कराया और इलाहाबादमें बोर्ड ऑफ़ रेवे यू स्थापित किया, अदालतोंमें सुधार किये तथा उनको भाषा फ़ारसोके स्थानमें उर्व कर दो। सतीको प्रया, नरबलि, शिशुहत्या, स्थियोंका ब्यापार आदि पराव दिशानिकों दे पर दिसान नेगांत जिन का बजार दीन विवास गुर्व परवेश कार विरास दिया। [24] है में बेदान में तो है के तर पूर्व नगर और वाई नगरफ ब्रोफ क्षांत्र की प्रतान करते कारा गया तथा कर के नगरि केंग्र के बजाते, प्राप्त हिल्ला करते पुर परार्थ करेंग्र कर के प्रतान करते हैं के [25] कि एमें हैं पुर परार्थ करेंग्र नगर का के के प्रतान करते हैं मेर कार्यक्ष करते हैं तथा परार्थ के देशकी तथा हुन कर करते हैं मेर कार्यक्ष करते हैं कर नगरियों के देशकी तथा हुन कर करते हैं मेर कार्यक्ष करते हैं में नी करेंग्र प्रतानी और गामिकों भी किएकर कार्यों पर प्रतान करते में नी करते परार्थी की गामिकों के प्रतान करते हैं बहाया वर्ष में मान्य करते हैं के क्षा दिशानि बरकन कराण करते हैं सामा की देशकार करते हैं के स्वत करते हैं कर करते हैं कर करते हैं कर करते हैं की

के स्वीतामी द्वीवार प्राप्त है दिया गया। (८१०-१९ हैं जै जैसी गया वृद्ध केंद्रण नेवापो कृत प्राप्तान अच्छ यह रिवा बार्ड वार्ड वार्ड दी गया नेवापो के नाम ही अहा। कर्ड दिवित्य होन्द्रण नीवी पायत्वार माहि रिवारीक तथार करने जोता स्वीवार होन्द्रण नीवी पायत्वार माहि रिवारीक तथार करने क्षा कर वार्डी होन्द्रण वेद्रण केंद्रण का माले राम्नीत अध्याद करने का माले की गाँ मोले कारपार कीरोजींच पूर्वता स्वीव हो से । सब वार्डी हिल्लामें सम्बन्धी स्वीवार कार्योंच्या सामेत हो स्वीवार्थ हान्य माहित्यार है समाची कार्य सामेत सम्बन्धारीकी राम्बन्धार कर्या क्यांच्या है। हर्वतार है मेंद्रण सामेत सम्बन्धारीकी राम्बन्धार क्षा क्यांच्या हो। हर्वतार है स्वापार माहित्यार हर्या व्यापी स्वापी स्वापी स्वापी स्वापी स्वापी स्वापी क्षा क्यांच्या हो। स्वापी क्षा कार्या स्वापी स्वपी स्वापी स्वापी स्वपी स्वापी स्वापी स्वापी स्वपी स्वपी स्वापी स्वापी स्वपी थी, युढ छेड दिया। ब्रह्माने इस प्रथम युद्ध (१८२४-२६ ई०) के फल-स्वरूप ब्रह्माना राजा पराजित हुआ और सहायक सिपमें बँधा। मारी रक्षम और आसाम प्राप्त अँगरेजोंके हाय आये। मनीपुरका राज्य भी उनकी अधीनतामें रहा। उनकी पूर्वी सीमा भी अब सुर्गदान हो गयी। १८२६ ई० में भरतपुरमें दुर्जनसाल विद्रोही हुआ जिसकी देखा-देखी मालवा, वुन्देलनण्ड एव मराठा राज्योमें विद्रोहक चिह्न सीख पहने लगे। अँगरेजोने दुर्जनमालको मुचल दिया, भरतपुरके किलेपर अधिकार कर लिया और सजानेको जी भरकर लूटा, जिन्तु भरतपुर राज्यको जायम रक्षा।

१० सर विलियम चेटिक (१८२८-३५ ई०) ने शासन-सुयार और शान्ति-यार्थोकी ओर अधिक घ्यान दिया। इसके समयमें सर्व-प्रयम अँगरेजोंने अपने एक प्रतिष्ठित अधिकारी टामम मनरोके मुख्ये यह महलाया कि ब्रिटिश सरकार एक सरक्षकके रूपमें भारतको अपने अधीन रक्षेगी और उसका ध्येय भारतीयोको अपने देशका शासन करनेके योग्य मनाना है। यहींसे अँगरेजोने विश्वमें अपना यह दम्म प्रनारित करना शुरू किया कि भारत-जैस पिछ्छे, अशयत, अरक्षित और असम्य देशोका सरक्षण करना तथा उन्हें उन्नत और सम्य बनाकर अपने पैरोपर खडा कर देना इस गारी जातिका म्वेच्छा एवं परोपकार वृत्तिसे ग्रहण किया हुआ भार और उत्तरदायित्व है। अँगरेजोका यह दम्भपूर्ण ढाग वर्तमान पयन्त चलता रहा है। अस्तु वेंटिकने घोषित किया कि प्रत्येक भारतीय जाति, धर्म या रंगके किसी भेद-भाय बिना किसी भा सरकारी पदपर नियुक्त किया जा सकता है। उसने फ़ौजी खर्च कम करफे तथा शासन सम्बन्धी अय आर्थिक सुघारा-द्वारा सरकारकी आय और वचत बढ़ायी, पहिचमोत्तर प्रान्त-का यन्दोबस्त पूरा कराया और इलाहाबादमें वोर्ड ऑफ रेवे यू स्यापित किया, अदालतोंमें सुघार किये सथा उनको मापा फारमोके स्थानमें उर्दू कर दो । सतीको प्रया, नरबलि, विाशुहत्या, स्प्रियोंका व्यापार आदि

बामानिक दुर्गीमंत्रीको यो जन्म-बारा वर्ण्यां क्याया वारा । दुर्ग की मात्रा की बार्ग से करी । मुख्यीक क्यीक क्योर जाने ने वार्ग करों या विवादे नात्व बावार्य पूर्व नाले बर्गीका के 1 किया कि स्थित करों ता करीना विचाय कार्या । दुर्गिमेंव बार्गिक की स्थित विवादी किए (८१६ हैं में बीट ८८५ हैं में कार्याप्त की संदित कार्यिक से पूर्व के क्यायिकत करने हैं वह बरायारे की बायोर्थ की स्थित कार्यों के क्यायिकत करने हैं वह बरायारे की बायोर्थ की स्थित बार्यों की क्यायिकत करने हैं वह बरायारे की विवाद बार्यिक की दूर नाव्यों का स्थित की हैं ब्यायों के करने का क्यायारे की की

क्या और सरकारी बहारता केवल अंबरेजी क्रिकार किए हैं

बारन परनेत्री ही जाता निगी । बादम-मनत्त्रामै दुख महरवर्ग गरि

क्ति थी दिने वर्षे बया वर्षेप्र-नगरमधी शीवकर्ते त्यांच बस्तवसी

स्थापन हर्द ।

वृद्धि । इस पदपर मैकालेकी नियुनित हुई । साथ ही पालियामेण्टने यह घोपणा भी की कि भारतका कोई निवासी अथवा ब्रिटिश सम्राट्की कोई प्रजा अपने घर्म, जन्म भूमि, वश या रगके कारण किसी सरकारी पद या नौकरीमे विवत नहीं की जायेगी ।

११ सर चार्ल्स मेटकॉफ़ (१८३५-३६ ई०) ने प्रेस-एक्ट-द्वारा समाचार पत्रोको स्वतन्त्रता प्रदान की।

१२ लार्ड ऑक्सलेंग्ड (१८३६-४२ ई०) के समयमें प्रथम अफ़-ग्रान युद्ध हुआ। इस युद्धका उद्देश्य रणजीतिसिंहको सहायतासे कावुलके स्वाधीन शासक दोस्तमृहम्मदको, जिसपर अँगरेजोंको अपना विरोधो होने-का स देह था, पदच्युत करके शाहबुजाको अफ़ग्रानिस्तानका अमीर वनाना या। अँगरेजो सेनाने सि धके मार्गसे अफ़ग्रानिस्तानमें १८३९ ई० में प्रदेश किया। इस युद्धमें अँगरेज बुरो सरह पराजित हुए। १८४२ ई० में जव पराजित अँगरेजो सेना सन्धि करके वापस लौट रही थी वो अफ़ग्रानोने उसे काट हाला और १६००० सैनिकोमें से केवल एक उस दु खान्त घटना-का वणन करनेके लिए जीवित वचकर आ पाया। आँकलैण्डको बड़ी निन्या हुई और वह वापस इन्लैण्ड बुला लिया गया।

१२ लार्ड पिछनवरा (१८४२-४४ ६०) ने ष्रफ्रगान युद्धको समाप्त कर दिया। उसने पिछली हारका कुछ प्रतीकार करके वाह्याही लूटी। दोस्तमुहम्मद हो काबुलका बादशाह फिर धन बैठा। बाँकलैण्डने सिन्धके अमीरोके साथ सिंध करके उन्हें रेखाडेण्ट रखनेपर विवध किया था और उनपर वाधिक कर भी लाद दिया था। १८४३ ई० में अमीरोंपर कुछ झूठे दोपारोपण करके युद्ध छेड दिया गया और मियानीके युद्धमें उन्हें पराजित करके समस्त सिंध प्रान्त अँगरेजो राज्यमें मिला लिया गया। इस अन्यायपूर्ण कार्यको स्वय इन्लैण्डकी पालमिण्टने निन्दा की किन्तु उसे उलटा नहीं ध्योंकि उसमें अँगरेजोंको भारी ब्यापारिक और राजनैतिक लाभ जो हुआ था। खालयरमें उत्तराधिकारका प्रदन उठा,



१८५२ ई० में अँगरेज ध्यापारियोंके हितोकी रक्षा करनेके वहाने नहाके माथ युद्ध छेडा गया और राजाको पराजित करके तथा सहायक सिन्यमें वौधकर सम्पूर्ण दक्षिणी ब्रह्माको अँगरेजी राज्यमें मिला लिया गया। अब बगालकी खाडोका सम्पूर्ण समुद्र तट, कुमारी अन्तरीपसे मलाया प्रायद्वीप पर्यन्त अँगरेजोंके अधिकारमें था।

हलहोजी एक कट्टर साम्राज्यवादी था, निर्वल देशी राज्योंके साथ उसकी कोई सहानुमृति नहीं थो। वह उनके बस्तित्वको बनाये रखनेका विरोधी था। उसका यह दृढ विदवास था कि ब्रिटिश शासन इस देशकी जनताके लिए परम लाभदायक है, चाहे वे उसे पसन्द करें या न करें। अत उसने देशी राज्योका अन्त करके उन्हें अँगरेजी राज्यमें मिलानेकी एक नयी योजना बनायो जिसके अनुसार किसी राजाकी औरस पुत्रके अभावमें मृत्यु होनेपर उसका राज्य समाप्त कर दिया जाता था। इस समय अँगरेजोंके आधिपत्यमें अवस्थित देशो राज्योको उसने तीन श्रेणियोमें विभक्त किया। प्रथम वे नेपाल आदि स्वतन्त्र राज्य थे जिनमें भारतकी अँगरेज सरकार राजाकी मृत्युपर उपयुक्त उत्तराधिकारीको गद्दीपर वैठाती थी, दूसरे वे राजपूत मराठा आदि राज्य थे जिन्होंने मुगल सम्राट या पेशवाके स्यानमें सँगरेजोकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। सौर वीसरे वे राज्य थे जि हूं अँगरेजोने ही बनाया या विजय किया था। इम तीसरी श्रेणीके राजाबोको तो उसने दत्तकपुत्र छेनेके अधिकारसे भी विचित कर दिया। अब भीतर बाहर किसीके भी विरोधकी कुछ परवा न करके उसने जिलना बना इन गज्योंका अन्त करना शुरू किया। सवप्रयम नागपुरके भोंसला राज्यका अन्त सीर उसकी लूट हुई। १८४८ ई॰ में सतारा राज्यका अन्त हुआ, तदनन्तर उडीसाके सम्मलपुर, वाघट. चदयपुर आदि राज्याका अन्त किया गया। १८५३ ई० में झाँसीकी रानोके दत्तकपुत्रको अमा य किया । पेशवा वाजीराव, द्वितीयकी मृत्युपर उसके दत्तकपुत्र नानाको भी अमान्य किया और उसकी पेन्यन बन्द कर की। १८५६ है में पुचाइनका बीच बनाकर मध्यकी नवारीया की मत्त कर दिशा बीर यन अभ्यत्ती बॅबरेबी राज्यों जिला किया । में तम कार्य सरधन्त कडोर जनुभित्र और बालासपूर्व में स्यूपनें की माने मन्त्रियों के क्ये क्ये क्ये अपने व्यवस्था की अंतरेश के बान्य वहीं किया । इस नावति समस्त देवने संचय स्रोध एवं सनगोप कैम नया । १८९६ हैं में करतीयों नवा बीतवाका बाह्याच्य विका त्रियाँ क्षारा करके स्थापार: करनेका सविकार दिलकुक्त हो कील किया गया मीर क्षतकी यात्रक-प्रकारको कुळ बहुत्त्वपुत्र गरिवर्षक समा अविक निकारक न'र दिवा पना । बक्षद्वीशीन स्थम देखके बान्तरिक चातनमें मी नहुत-वे भूपार किने बरफारणी बैतिक बनित बहाती विकसी बीट बोरबीची मी नाटमें अच्छी भी और अर्थ-विशासका बालवानीके बाब प्रयन्त किया। क्लके क्रांवर्ग करवारको बाक्ति साथ रेडन, बाक्क बहुकर १०७३ बाक ही नवी । बाजजीन्त बालींके किए संगान्ते ज्वल केनेशी तथा भी वर्षीने बमानी और क्षार्वजनिक दिशीय विवाद वी स्वातित किया। वर्तीते १८५३ ई में बड़के-प्रक्रम मास्त्रमें देश बालू नी तथा तार काह और रावके रिकरोटी परसन्य की। यर पार्त्तवरको सम्मन्ताने सामुनिक देशो बिकाफो सींच बाली गरी। और कार्व वैचानेले जारतीय पण्डनियान क्ष्मामा ।

थी। कर्माटक और संजीतके राज्यसमूच वर्षधोंकी हो। क्रांसियों की की

रेंगे, बार्ड वैशियां (१८९६-१८ हैं) के बार्ग १८९७ हैं में करवार प्राप्त और करते हैं रूप्यूम किस्पीयाव्यकों स्थापा हुई। किंगु इती वर्ष सामने या समाम के क्षाप्त कि वैदिक्ते में किस्सी विशोदना बाद रिस्स, कार सामने के कर या तीना है के कैंग्रेस माने में मेंग्रेस हूं और कि मेंग्रेस वार्त्यक के कर स्थापन करके कार्य पुत्ताचे को हैं। कर्यू तीने बात की स्थापने मूर्ण क भारतिकों जर सामना नीतिम क्षाप्त में मेंग्रिया थी। यह स्थापने करके क्षाप्त क्षाप्त कर सामना ऐसा महान् विद्रोह था जिसमें अँगरेजोके तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रान्त, अवस, बिहार, बुन्देलखण्ड और मध्यभारतको जनता, अँगरेजो सेनाकी विभिन्न छाविनयोंके भारतीय सैनिक, अनेक देशो राजे, नवाब, जमींदार, सालुकेदार आदि सिम्मिलत थे। अँगरेजोको देशसे निकाल वाहर करनेके लिए एक बार तो हिन्दू और मुसलमान मी मिलकर एक हो गये थे। यूरोपमें उस समय क्रीमियाका युद्ध छिडा था और इन्लैण्डकी शक्ति उसमें लगी हुई थी। भारतके जो अनिगनत देशो राजे नवाब खुले रूपसे इस विद्राहमें सिम्मिलत नहीं भो हुए थे उनमें-से भी अनेकोकी विद्रोहियोंके प्रति सहानुभृति थी।

मुसलमानोको उत्तेजित करनेके लिए ष्रवधके साथ किये गये अन्याय-का तथा दिल्लाके वादशाहको उसका साम्राज्याधिकार घापस दिलानेका नारा था और हिन्दुर्जोको उत्तेजित करनके लिए पेशयाके दत्तकपुत्र पृणुपन्त नानाक पेशवा साम्राज्यको स्थापनाका नारा था। हिंदू मुसलमान जनसाधारणमें अँगरेजो और उनके धासन-द्वारा लोगोंके घम-कर्मको नष्ट किये जानेका प्रचार था। रेल, तार, डाक, अस्पताल, स्कूल आदिकी स्था-पना तथा सतो आदिकी प्रथानोंकी बन्दो उदाहरणमें प्रस्तुत किये जाते थे। सैनिकोमें नयी किस्मको बन्दूको और उनकी मुँहसे खोली जानेवाली कार-तूसोंने घर्म श्रष्ट होनेकी बात, गोरे सैनिकोंका प्रभुत्व एव अधिकाराधिक्य आदि उन्हें भडकानेके लिए पर्याप्त थे। छावनियोंने रक्त कमल और ग्रामों-में चपातियोक वितरण-द्वारा विद्रोही आन्दोलनका प्रचार किया गया।

रिववार १० मई १८५७ ई० को मेरठको वंगरेज सैनिक छावनोमं इस विद्रोहका प्रथम विस्फोट हुआ और दायानलको नाइ यह आग शीघ ही एक जिलेसे दूसरे जिकेमें दूतवेगसे फैलने लगी। मेरठ, दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झौसी, रुहेलखण्ड, वृद्देलखण्ड, बिहार आदि अनेक स्थानोंमें जेलोंको सोझा गया और सेनाओंके गोरे अधिकारियोका ही नहीं जहाँ जिस बैंगरेजको देखा उसका सफाया कर दिया गया। नाना साहिब, वात्याटोपे, मानीको रान्ये नत्नीवार्षे विद्यारके बनीशार कुँक्टरित् बीक्रमी बद्रमरकन्द्र, वेतम इवरवन्त्रमः वाचयात बहादुरचात आदि विशिध वदेखींमें विजीतियी-के बन्दार थे। भवेष नवर्गके मेरे शांक नवे अवेद स्वावोर्जे अंबद्धित विद्रोधी हैना

बलोके बाम जैनरेडी बेनाके बनेब नुष्ठ हुए । एक बांडि व्यक्ति एक देवलें मर्पेकर बरस्त्रहार मार-साट सूट-राट बागामध्या और अधान्तिका धीर

पना गरा अंगरेजी बेनाफे अंगरेज वा दिल्ला बोरखे आदि भारतीय बैनिक बीर नय निहोदिबंकि हिन्दु एवं जबकमान विराही क्रांनि निहीय निरीप्त सननाके बन और प्राचीनर की घरकर विनास किया। जन्ति बेंगरेज सरकारको निजय हुई और विद्रोही अस्तन्त कुरकाने बाग रूपण बाके बने ताथ ही करताके कर्यका व्यक्तियोंनी तलवारके बाद करार रिया क्या ना देशोंसे सरकाकर फोडी दे दो नवी । सनके वाने वह पर्के भीर हुआ टी परि भूमेक काले मने । एक-एक अवरेश की मृत्युका बक्तम बी-ती दो-दो-तो भारतीयोके रक्तवे जी पूरा न हुना । इब बार भी विशेषों बरवारींची चरवार फुट, मज्बदरीन पूर्व स्वार्थ परता चपको देवाबोर्ने बंगस्थान्य समान तमा दिशोद्यका स्थाप कस्मार क्लाविन्छ पुर्वेदें और सुकैरीना कर्वन उलाछ इब बनोरन स्थालकी

विकास के नारव हुए । देवन राष्ट्रीयता एवं क्यानुस्ताका मान क्याप कार हो नहीं हुआ था । रिहोर्ड़ मान केमैदाने राखे नवान समीपार साहि करें बोल ने जिननी संगरियोंके बाद अविनन्त सबता नी और जिल्ला बच्चेचे बनके सात्र अधिकार, नव का बनने विकास कर दिना का । इस भीवाँकी पुनः प्राध्यके किए अपने नामी निश्री स्वापंकि कारच वे कर परे वे अंपरेजींकी करायके कांत्रिका क्या परस्पर बाल रिकी बारुमें की करेकर, बीरिंत प्रश्नाति का बहुका ऐक्त वहीं का। इक्ती कोई क्षेत्ररेज करुन्य पश्चिमान्ये में, नहीं पशुपाई पानानी और परिवर्तने रिकड़े को नर्पेने क्योंने न कुड़में जारम्य करके कमान कारतपर करना

पूर्ण अधिकार जमा पाया था और उसके फलस्वन्ध्य अनुमानातीत विविध लाभ उठाया था। वह इस मोनेकी चिडियाको सहज ही अपने हाधसे निक्ल जाने न दे सकते थे। अधिकांश भाग्तीय नरेशोंने थिद्रोहमें भाग नहीं लिया वग्न वे अंगरेजोंके ही महायक है। वगाल उडीमा, महाम, महाराष्ट्र, गुजरात, सिन्य, पजाव आदि प्रान्त विद्रोहके प्रमावसे प्राय अछूते ही बचे गहे। अपने मिक्स और गोरसे नैनिकोंकी सँगरेजोंको पूर्ण स्वामिभवित प्राप्त थी और इन्हींकी महायतासे चन्होंने उनके देश-माइयोंका दमन किया।

इस प्रकार यह महान क्रान्ति विफल हुई और फलस्वरूप अब सम्पूर्ण देशपर अँगरेजोंको सत्ता और अधिक दृढ एव स्थायी हो गयी। इन्हैण्डकी सरकारने भारतका राज्य कम्पनीके हार्योस छीनकर अपने अधिकारमें ले लिया, और वह अब इंग्लैंग्डकी महारानी विषटोरियाका मारतीय साम्राज्य कहराया । लाई कैनिंग अब कम्पनीकी ओरसे नियुषत ससका ग्वर्नर-जनरल नामक क्मंचारी न रहकर इंग्लैण्डकी महारानीका प्रतिनिधि शासक. भारतका वायसराय कहलाया । इंग्लैण्डके मन्त्रिमण्डलका एक मन्त्री भारत-सचिव हुआ जो अपने लन्दनस्य भारत-कार्यालयके द्वारा इन्नैण्डको सर्कार-के निर्देशनमें भारतका शासन-सचालन वायमराय बादि भारतमें नियक्त बिषिकारी बगसे कराने लगा। इलाहाबादमें १ नवस्वर १८५८ ई० की दरवार करके वायमराय मैनिंगने उपरोक्त ध्यवस्थाको कार्यान्वित किया और महारानी विक्टोरियाका घोषणापत्र पढ़कर सुनाया निसमें यह विस्वास दिलाया गया था कि कम्पनी और देशी नरेशोंने बीच की गयी समस्त सन्वियों एव प्रतिज्ञाओंका पालन किया जायेगा, देशी नरेसीकी गोद लेनेका अधिकार प्रदान किया जाता है, सरकारी नीकरियोका हार सबके लिए खुला है, जाति वर्ण या धम उसमें बाधक न होंगे, जनताके र्घामिक मामलॉर्मे सरकार किसी प्रकारका हस्त्रक्षेप न करेगी, और जिन लोगोंने विद्रोह-कालमें अँगरेजोंकी हत्या करने-जैसा महान् अपराध नहीं

आस्याय ७ प्रनस्त्रान प्रग (१८४० १६४० १०)

संबंधने नावकों थी बरवर मुख्य और बनवे सैठेक पानपी में पाय दोनगर पहुँचा दिया क्यांत्र क्यूंत्रि कहे कभी दिनी दियों की स्थापीय दुनिय होता हु पहुँचा दुन्दित प्रश्न कम्म पान-स्थलायों पर पेपणी प्रधान की की मुख्यातालाके पर्योग्तर स्थापनी स्थापनी स्थापनी ही बर्धा मुख्या सामग्रीत की कमी कमते हुए महिल्ह ही क्यांत्र और सेड मी। प्रश्नतमोज प्रमाणी क्यों क्यों सामग्री स्थापन का

भीर के भी। प्रश्नामंत्र प्रमाणी कर्क मित्र परात प्रावत के पाने पूर्व क्यो क्याप पदी केश या अमा विको देवर्ज यो क्राके पूर्व पानप पत्नी पदी पद्दा । पारतीन स्थानन या प्रीवत अदिक्त महिल्ला (गीवरपादी) अर्थनन प्रावती जी माने बेरणी परीत्य प्रवासन पदी कामी पत्नी। १८९५ में के दिस्मानी कराया ही देवेन्यको पानिका-देवाई करायाच्या प्रावती पद्दा मानानान्त्रकि एवं स्वास्त्य समी

प्रकार विकरित हुई और वचने सानेक निमान एवं विस्तारों नितुष्का प्रान्त थी। इस बाहित और व्यान्तानी किए भी नरेक देन रहे जिल्हा हमान अराज बाहकों इसे वाहितीक बीच में विकरितामा नाटी सानोत हने

कारण बावजी एवं थास्तिकि बीच में मिन्नेमामा मार्थे वाहोत वर्ष राष्ट्रीत कार था। व्यक्ति वाहम मार्थ्य में मेरीयो धानमते अपनिर्देश मृत्य वर्षेण नामीह हेर्जनेन्द्र देश और वेरियेष मान्नेने स्तरणे, स्तार्थी जोट हिहारिंद्र दुख्या चन्न बुपाय बावजे मार्थने मार्थने मी मार्थन्त्र और उनके दिलामिनोनो स्वारानिक एवं करमुका वस्तिये मार्ग वाचक था। जैसेक्

भारतीय इक्सिया पर रहे

किन्तु उनका यह दम्म भी एक प्रकारसे ठीक ही था। उसके लिए भारसवासी स्वय ही जिम्मेदार थे, अपने स्वयंके दोषो एक नुदियोंके कारण ही
वे स्वय गुलाम बने थे। देशका दुर्भाग्य भी था कि अनेक दोर्घकालीन
ऐतिहासिक परिस्थितियोने देशको उस कालमें वैसी विषम स्थितिमें ला
हाला था और कोई ऐसा तेजस्वी प्रतिभाशाली बीर या वर्ग उस समय
उत्पन्न न हुआ जो देशको उस अन्व-कृषसे उवाग्वा। किसीको ठगनेमें ठगका जितना दोष है उतना स्वय ठगे जानेवालेका भी है। तथापि इसमें
एदेह नहीं कि भारतके इतिहासमें सबसे वहे विदेशी लुटेरे अंगरेज ही
सिंद हुए और उनके द्वारा भारतकी महान्, दीर्घनालीज एव व्यवस्थित
लूटका सम्पूर्ण सम्य विश्वके इतिहासमें दूसरा उदाहरण नहीं है।

क्षिमा व्याक्षेत्री सना किया करा। सरकुत: भारतमें अँगोफीने शारण्यते ही बलने-हारा वार्टिश शोर्फी वयरा वयोग्यन राज्योंकी काठाके वार्तिक वामनीतें सर्वता हरायोर ह करतंत्री नोतिनो ही नरवा था। वे हिन्दू, जैन, तिकल जुनकरान नारके वावि कवी प्रचक्रित क्वोंके जांच श्रद्धिन दर्व क्वरधी रहे वे। ईक्कों वर्व पनका करना राज्यमं या वन कवनो क्यान हो जीरवाहन दिया कीर वतना व्यवस्थित अचार बाब करावा । तथानि वर्वप्रवार करना कीर्र त्रवृत्त बहेरत व था। राजनीतिक सत्याचारी एवं बर्धिक स्रोतानी में क्ये नवराध न था अतः वानिक अस्यानारने वेशवतः म हर । वे स्व भी बानते में कि नहि में देश करनेवा प्रमान करेंने को अनके मूर्ज ए^क र्रीक्षक दर्भ माजिक बहेक्सोंकी विदियों मारी बाबा बढ़नेकी बन्मायन्त हैं है इत बचार सनवे इक देवने सामसमी कारान्त प्रमा देवनी नर्ने मपनं सन्य मुद्दोद्दोन प्रतिद्वास्त्रांत्रों पुत्रकारेंके सामनी-सान कार्यने हैं नहारेक्के ब्यानारपर वर्ष क्लार्विकार स्थापित वर किया। क्रम मान्वराने बनाटिके क्रिक्टएए नहींचा दिला और बढते जनमें देखने एक अल्लाह मेरी कारी बोद्योविक व्यापारिक एवं वर्तका कार्यन करायी । कार्य की वर्षीरें को-पर्न किन् प्रकारके राज वर्षाने बहाते. जिल्हाय वर्गत स्र् वेपाक्षके क्षेत्रा गर्कता कामर्ग चारतपर्यगर वसके बीमान्य वर्ग कामक प्रदेशी वर्षित वरना दरकार बाजाना स्वतीत कर किना और दसके हाएं क्षाने देखा. व्यक्ति और शुक्ताओं विश्लाकी सकते वहीं एवं सबके सर्विक वर्षे वांन्य नवा दिशा । इन कार्यने क्योने देशके भीए शक्तीदिक इन वैकिन बरावरा बरवर बाब ब्रह्मचा यह फानको क्या दिएके बिन्द और बरिव जेलगादिक किया और फिर इन सम्बद्ध डोक्को प्रकारिक करवेवें से क्यार्ट हुए कि इन वा परीपकार कृति है इन निक्रम पवित समान को विक्रमें हुए बाले बार्शनियोंने देवपर दशा करने चकरा बंदबान कर रहे हैं और वर्षे बुबार्टिक बुबान बुवेल्ट्रक सर्व बनुवक न्यानेका स्ट्राल प्रसान कर रहे हैं है व्यक्तीय इतिहास अस हरि (III

किन्तु उनका यह दम्म भी एक प्रकार है ठीक ही था। उसके लिए भारत-वासी स्वय ही जिम्मेदार थे, अपने स्वयके दोपों एय मुदियोंके कारण ही वे स्वय गुलाम वन थे। देशका दुर्भाग्य भी था कि अनेक दोर्घकालीन ऐतिहासिक परिस्थितियोंने देशको उस कालमें वैसी विषम स्थितिमें ला टाला था और कोई ऐसा तेजस्वी प्रतिभागाली बीर या वर्ग उस समय उत्पन्न न हुआ जो देशको उस अध-कूपसे उवारता। किसीको ठगनेमें ठग-का जितना दोप है उतना स्वय उगे जानेवालेका भी है। तथापि इसमें सन्देह नहीं कि भारतके इतिहासमें सबसे बड़े विदेशी लुटेरे अँगरेज ही सिद्ध हुए और उनके द्वारा भारतको भहान्, दीर्घकालीन एवं व्ययस्थित लूटका सम्पूर्ण सम्य विद्वते इतिहासमें दूवरा उदाहरण नहीं है।

अध्याय ७

युनरूपान युग (१८४= १६४७ ई)

बेंदीओं ने मारदकों की बरबाट लाउं ीर अबके में नव बननकों की काम मान्नवर करेका दिया, अवर्तर बन्देले काई अपने निश्ची होते और रम चौरी दृष्टिते ही लडी एर सुवास मुंबीडर एवं बनाव मानन-जरालया वी हम देवको ब्रधन की जो मुवलनालागरके परवीरकर बान है ब्यरनंतानर

ही बर्दात मुक्ता सरकारित को स्वारि अपने दूस अधिक ही स्वार कीर केंद्र की पानल्योग प्रवासीने अपने अविक बलन पालन प्रव रेतने पाने बजी बाबर नहीं देवा या अन्य विशे देवने मी बनके पर

कारत करते नहीं रहा । भारतीय प्रवास्त या प्रशासन व्यक्तिकेती (मोडण्यादी) बर्नेक्टन बावने भी माने इंपडी क्योंपन प्रवासन पत्रके नवारे बते १८५० है के विश्वनके बनयान ही रंभीना के नहीं बन-

मैं भड़े बालारकार्वे चाराची यह बबावन-गर्दात वर्ष स्थानत सची जवार रिश्तिक हुई और वयनै अलैक विनाम वृथे विल्लाखेँ नियुत्तात

बारत को र कारक पावरों हुई प्राहितीके बीच न निर्देशका चारो बार्च दुर्व

इब बढ़ति और नारामाने किए भी मनेक बोध रहे जिल्हा जनान

राज्येत क्षार का । बन्नोंके कारक भारतके अंगरेजी बाजकरे अन्तरिक्षित

जब जोरम अर्थात हरनेक देव और अंदरेड व्यक्ति करनी, क्याची और

दियोंकी सुरका करत क्यार बाधनके अन्तर्वेड

बोर प्रकृत

शिक्षांचांची स्वास्तांदर रू^क ें । अंगरेन

.





ज्यातिके हित-सरक्षणको पूर्ण प्राथमिकता थी । निष्या । तक भारत्यर्षका प्रसासन एवं उन्नति अँगरेज जातिके अपने नियो भो प्रकारके उरक्षपम साधक था उसे उन्नत बनाया गया । यदि उससे भारतीयोको उन्नति होती है तो यह और भी अच्छा । किं तु जहाँ और जिस रूपमें भारतको इस उन्नतिसे स्वय अँगरेजोंके अपने उत्कपमें वाधा होनेको सम्मावना होती वहीं उत्तपर रोक और नियन्त्रण रूगा दिये जाते । इंग्लैण्डके हितके सम्मुख मारतका हित सदैव गौण रहा ।

प्रारम्ममें जो अंगरेज भारतमें आते रहे वे प्राय छोटे घरोंके अशिक्षात, अवारा, लोभी, धूर्त एव चरित्रहीन होते थे। व्यक्तिगत व्यापार और लूट ससाट-द्वारा जल्दो ही धनी बनकर स्वदेश लौट जानेपर चनकी दष्टि रहता थी । किन्तु १८वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें बगाल और कर्णाटकमें राज्य-सत्ता हायमें आनेपर तथा तद्वागान द्रुतवेगसे भारतके विभिन्न भागामें अँगरेजी सत्ताके प्रसारके कारण उक्त वगके लोगोंका अनुपात घोरे-घोरे घटने लगा और अच्छे घरोंके सम्पन्न मुशिलित अँगरेज मी अव माने छरो तथा उनकी सरुपा शर्न शर्न यदने छगो। ईसाई पादरी भी बहुएस्यामे आने लगे जिनका प्रधान उद्देश्य यद्यपि धर्मप्रचार और अधिकसे अधिक सक्यामें भारतीयोंको ईसाई बना डालनेका या किन्तु साय ही उनमें-से अनेक सुशिक्षित, परोपकारी वृत्तिके तथा दयालु भी होते थे। रिश्री वातीके पूर्वार्धमें बगाल, मद्राप्त, बम्बई आदि जिन प्रान्तोंपर अँग-रेंबी सत्ताको स्यापित हुए चालीस पचास वर्ष बीत चुके थे और फठस्ब-रूप जहाँ अँगरेजोंने अपना प्रशासन बहुत कुछ व्यवस्थित कर लिया था वया शान्ति स्यापित कर लो थी वहाँके भारतीय ३० भी शासनके विभिन्न विमार्गोमें काय करने छगे ये और अँगरेजींके सम्पर्कंक पाश्चात्य आचार-विपारों और मध्यतासे परिचित हो गये थे। उनमें-से अनेक अँगरेजी की मी सी से प्रकार की प्र ्रियत होने छगे थे। बगालके राजा राममोहनराय, महर्षि देवेन्द्रनाय

व्यास्थाने दिल्ला सेने अने और बाल्डरिय स्थापारको जन्त पुत्र क्योंने भारते हात्रजे कर किया तथा प्रश्निकती देखीने जेतना प्रश्ना पृथ्य वर्धीन-यन्त्रीको भी वर्षात्व करनेवी और वे अवृत्त हुए ह रीयरे, कुछ मनीका अंगरेज अविकारियोंने अपने कैतिक म प्रयादकीय कार्य-बारवे बक्ताय जिलालकर का बचीके खेरालवे दिया कारन और रिजाबारी मेरिय होकर अधिकान करते ही बड़ी दब देवरे वार्रिस वका वर्ष दर्गन पुराप्तद दरियान वार्त्रका सम्बद्धन जाराज कर विना । १८को बारो है के अनुवंद्याओं ही बाराअनीये एक बीला कवित्रकी बीट कमनतीने क्या मुक्तमान सररवेची स्वारमा हो। बच्चे की। बर विकास मेल्यने कालिसमध्ये राष्ट्रचना सवा नप्रासारत साहि गर्दे बीहत प्रच्योंका सेन्द्रेजीने सनुवार विका सीर प्राच्या विकास सामावरी बीजारीस्य फिया बचा इसी बहेरतरे १७७५ हैं में बंबाल बुक्कियारिक बीनाइरीकी क्याच्या की। वैधेवियस हान्देशमें स्वान्तांत काहिके बाबारके दिन्दु मो था बंदमन किया और मुक्तनानी शामुक्ता मी बंदसन दिन्छ । सेवर रेपाने वंबाला थय दिया, मारहास मरीमांगहाची बीच हारी और मेंनाच प्रस्थावा निर्माण विका । हैगरी टानन बीकवृत्तने गुण केन्द्रण क्राचीके मानारके मारतीय नमीं हुई श्रुवेनीका सम्मान प्राप्त क्या । पारते बुरोवरे बास्तीयोका बासिसी क्यों क्ये सेनि-रिसामार क्रम फिक्रा । यर पार्म्य विशिक्ष आदि मान फिरासीने की माराजे शिरपरियम कामनाको बहामा अपने वारेन हेल्टिए वर्षे, प्रारमी जरबी कार्य मानामींका क्षाना समा चरा करमकार्याच्य चा १ कहने जी कारोक्त विप्रानीको बोल्बारक किया । १९वीं प्राथमीके पुर्वार्थने बारवेन

सकीर बारिके मानीन विकानिको वर मन्त्र मतेक जातीन मार्ग औ

.

मतानेष इच्छिता (. . . . ह

राष्ट्रण, वेशावात केन बादि हैने ही महामवाय के 1 वर्षांका बार्जि स्वय समय मारबीस विरोधकर पारबी केन भारवाती समान्ती बादि वेसके हुंगा, देशके अनेक प्रदेशोका सर्वे हुआ तथा अनेक स्थानोमें गर्जे टियरोका निर्माण हुआ और भारत तथा भारतीयताके अध्ययनकी प्रभूत प्रगति हुई। कर्नल टॉडका प्रसिद्ध राजस्थान, पर्नल मेकेंजीका लेख संग्रह तथा एलिकिन्स्टन आदिके इतिहास प्रन्य लिखे गये। स्वय अंगरेज अधिकारियोंका ही एक दल ऐसा था जो भारतीयोकी शिक्षाका माध्यम सस्कृत आदि प्राच्य भाषाओको बनानेके पक्षमे था। मैकालेक तीप्र विरोधके कारण ही उनकी बात न चली। उपरोधत समस्त प्रयत्न व्यक्तिगत थे तथाि उन्होने मारतीय साहित्य, संस्कृति और इतिहासके आधुनिक अध्ययनकी सुदृढ़ नीव जमा दी और इस प्रकार इस देशका सर्वमहान् उपकार किया। इन दर्जनो उदार मनीयो, विद्यान्व्यसनी अंगरेज महानुमार्थोने ही अपने कार्यों एव कियोंके द्वारा भावी पीढ़ियोंके भारतीय विद्वानोका सो पथ प्रदर्शन किया ही इस देशके निवासियोंमें घर कर जानेवाले हीनताके भावोको धने-धने दूर होनेमें भी भारी सहायता दी।

इसके अविरिक्त सम्पूर्ण देशको एक केन्द्रीय शासन-सूत्रमें बाँधकर, रेल, डाक, डार आदिका न्यवस्था करके तथा सहकों आदिका निर्माण, मार्गोको सुरक्षा और शान्तिको स्थापना-द्वारा अँगरेको शासनने देशमें एक-सूत्रता एवं एकजातीयताके भावको प्रोत्साहन दिया, जाति, वर्ग एवं प्रान्ती-यताके भावोंको शिष्टि किया, और 'देशके चाहे जिस कानेमें रहते हो हम सब भारतवासी ही हैं' इस भावको उत्तरोत्तर पृष्ट किया। अँगरेकोने ज्ञान-चूझकर मले ही इन प्रमृति प्रवृत्तियोंका पोषण न करना चाहा हो कि तु उनके कार्योस इन परिणामोंका लक्ष्य या अलक्ष्य रूपमें स्थभावत प्रकट हाना अनिवार्य था।

इस प्रकार सँगरेजोने देशको भीषण लूट एव धोपणके सथा उसे पराधीनताको बेहियों में जकड छेनेके वायजूद जाने या अनजाने इस देश और जातिके पुनक्त्यानके बीज भी बो दिये। १८५८ ई० के उपरान्त देश-को आन्तरिक शान्ति, उसम शासन ब्यवस्या और शिक्षा-प्रसार सथा एक हरेको निवाधिकोंका दूसरे प्ररेसेंकि साथ सहय सूबस मिरायार सम्माधका इनं बन्धर्क ऐसी क्लूपूर्व भी जिन्होंने देखने एक नवीन बालुन्ति स्कृति। नेतन्य और क्र्वेत्रेज़को प्रपश्चिमी कहर चुँतनी सूक्त कर दी। क्रिक्सम दनव करके बीर बस्पूर्व देवको बस्ते नुषुत्र पंत्रीते पूरी तरह कवकर भव अंपरित नह बन्धा हैंडे में कि बाब दो। इस देख और कार्रियर हुमाधे पूर्व बच्चा स्मार्थित बोर प्रमुख क्षेत्रके किए स्थानी और सबर हो नमा है जान वजीवे ही उनके देवते-ही-देवते देख और मार्टिक पुरवसायरा मी प्राप्तन हो नवा। बाने वर्ष भी व बीतके बाने कि वर्षों इव देखको स्वतृत्व करने बीट कर्षण ब्रोडकर पढे वालेरर शास्त्र होना परा । सभी वर्षकी अवधि वी पुछ बोड़ी नहीं है, किन्तु देखका बनने पूर्वके बेद-बोब्र वर्विक वर्वीका वर्व-

ब्रकारका कान तथा अल्पना नक दर्ज बावत-बन्दक अंवरेड बन्दिना क्ष्मवन को क्षी क्षत तक इस वैकार करायेगर अधिकारिक क्या कार्नेवाका

बरिकार, धारून और विश्वनम मी कुछ कर गर्दी का । term-term f. & to and add the sixtal marchille विदेशकी करवारके प्रतिविधिकार्थे इस देखान समझा काला विद्या-कार्व केर्तिन (१८५८-१२ र) बार्व एवियन प्रवत (१८६१-६६ र्) बर बान बारिन (१८६४-६९ ई) बाई मेनो (१८६६-७२ ई) बार्ड मार्चपुत्र (१८७१-०६ ई), बार्ड किया (१८७६co f), wif frem (teco-ex f) will sufer (teco-८८ है), बार्ड बैन्ड बाइन (१८८८-१४ ई) बार्ड दलिल दिवीन (१८९४-९९ वे) बार्व कर्षन (१८९९-१९ ५ वे) कार्व निकटो (te 4-t t) mit tille (tetente f) mit die-

कोर्ड (१९१६-११ वें) कार्ड रीजिय (१९११--१६ वें) कार्ड gefen (1575-41 f) mir feffenger (2591-14 f).

और बार बाज्यदेश (१९४० है)।

इस नब्बे वर्षके ब्रिटिश शासनकी प्रधान विशेषताएँ वैदेशिक नीति, बान्तरिक शासनका वैद्यानिक विकास, देशकी धार्मिक, सामाजिक एव सांस्कृतिक प्रगति, राष्ट्रीयताका विकास और स्वातन्त्र्य सघर्ष है जिनमें उक्त शासनकी कतिषय सुदेनें और कुदेनें दोनों सम्मिलित हैं।

चैदेशिक नीति—इस कालमें भारतीय शासनकी वैदिशक नीति विदिश साम्राज्यकी वैदेशिक नीतिका ही अंग थी। भारतीय साम्राज्यकी सुरक्षाके लिए उसके सोमान्त प्रदेशोंको निष्कष्टक करना तथा उनके उस पार स्थित पडोसी स्वतः व राज्योको अपने प्रमावमें रखकर उहें 'धक्का सम्हाल' राज्य बना देना, तथा प्रिटेनके धनुओंको कुचलनेमें अपनी पूरी पक्ति लगा देना ही भारतकी विदेशो नीति थी।

१८६३ ई० में लार्ड एिलान प्रथमने सीमान्तके पठानोका दमन करनेका प्रयत्न किया और भूटान नरेशके साथ भी एक सन्धिकी। १८६५ ई० में क्षारेन्सने उस सिक्को अमान्य किया और भूटानियोंको पराजित करके अपना करद बनाया।

दोस्तमुहम्मदको मृत्युके उपरान्त १८६३-६८ ई० में अफग्रानिस्तानमें उत्तराधिकारके प्रक्ष्मपर गृह-युद्ध चलता रहा। इस प्रसगमें वायसराय खोरन्सने 'वर्तमान राजाके प्रति मित्रमाय रखने और उसके राज्यके अन्न - फलहमें क़तई हस्तक्षेप न करनेकी' नीति बरतो। रूस मध्य-एशियामें अफग्रानिस्तानको ओर बढ़ता वा रहा था और भारतके लिए एक स्वतरा था, किन्तु लॉरेन्सने युद्ध मोल लेना ठीक न समझा। उसके उत्तराधिकारी मेयोने मो इसो नीतिका अनुसरण किया। अफग्रानिस्तानका अमोर घोरअली १८६७ ई० में स्वय भारत आकर अम्बालेमें वायसरायसे मिला और विविच प्रकारकी सहायताको याचना की। वायसरायने उसका वहा छिप्टाचार और आवभगत की किन्तु सहायताका कोई स्पष्ट वचन नहीं दिया। फिर भी अमोर उसकी मित्रता, सोजन्य और घाक्तसे प्रमावित एव सन्तुष्ट होकर लीट गया। रूसके साथ भी एक सित्व को गयी असके अनुसार रूसी

बरशास्त्रे बहुदाविस्तानकी स्वतंत्रताकी कान्य स्वतंत्रा बहुतात्त्व दिया किन्दु बनोरके बान अंपरितेषे विषय मी विष्यानको पुरः कर थी। समीर ने समस्य नव-अवद्वार बारबयाओं चान येव दिशा किन्तु वह किर की बार रहा ! १८७३ वें में सरिवाने बीतरार व्यवकार करने धैरमनीको श्वतीय कर दिशा । काले नागवराग नाववृत्तवे बक्षात्राको नावना क्षे किया बच्चे बच्चा शिरत्यार कर दिया । विरूप्तर अधीरने पविचेति क्षात-बीव बारम्य कर थे। स्वतः बार्ड स्थितने बाउँ ही सर्ज-काशिकालके काम मुख बैच रिका । यह क्यम मुक्तिमें कुठी-करी मुख आरम्ब ही पना था । अँगरेज करके विरोधी थे । क्यूनि बहुबालिस्टान-बर साम्बन कर रिया। धेरककी नर्पात्रत होकर सुधी धान नय और १८७६ हैं में बचके पुत्र साम्बन्नांको समीर क्लाकर मास्त बरधारदे वर्षे बरावी मारीन्यार्थे अवन किया दिला वर्षे बेंबरेंड रेंबी-केलकी प्राचाने पर्यापके कार्याओं निर्वाणिक करके प्राप्त केंद्र विश्व बता । क्यर कमर्रहराको सम्बाधिततास्यर अधिकार कर किया । १८८ हैं में बारत बरकारते बढ़के बाब बन्नि करके और कियी कर्य रिदेधी केण्डिके करनाम म रक्षमेका रचन केन्द्र अनीर ताल्य कर निमा । क्रमत करेंटा और पित्रनिवर्ते मेंचरेजी कालीको निवस हो की क्या दिखोरिक्तान विदिश्व राज्यवै विका किया बना । इस प्रकार कथा-एकिनार्ने क्षिपॉरी मानांकाका करते क्षत्र एक दियाने क्षत्रन प्रतिप्रेष हो क्या । किर भी कड़ी करवर होते ही नहें और काल-एडिएएकें जेंगरेज-कड़ी क्षेत्रर्थ १८८१ के १९०७ हैं। एक सम्बद्धा रहा । क्षीत्रान्तके स्थान वर्गाकी-के बान भी भारत करकारको कहारूची नवटी गुर्हे । आई नर्जन्ते १९ १ वे महावि केमा हुशाकर तथा पतिवसीतार क्षोमा प्रवेदका एक पुरुष मूचा बनाकर वहाँ प्रान्ति क्यानित को । इसी वस अब्युद्धिमालकी मी मृत्यु ही ननी थी। प्रवस्त पुत्र इशीपुल्ला अशीर हुआ, वसने वाच ननीत बन्ति कर की की और वह बैंबरेजींका जिन बना रहा।

...

बार्लान इविदाल । इक धीर

इसी बीचमें पूर्वकी दिशामें ब्रह्मा राज्यके द्वारसे भारतपर फा सी स्यांके लाक्रमणका भय बना हुआ था। ब्रह्माका राजा मिण्होन (१८५२- ७८ ई०) वटा चतुर था, उसने लेंगरेजोंके साथ भी मित्रता बनाये रखी लीर फान्सके साथ भी सम्बन्ध रखा। किन्तु उसका युवक पुत्र और उत्तराधिकारी थीबी मूर्ल, ल्योग्य और अनुभवहीन था। उमपर फा सी सियोंके साथ मित्रताके करनेका थीप लगाकर भारत उसकारने युद्ध छेड़ दिया और उसके राज्यका लन्त करके उसे १८८६ ई० में लेंगरेजी राज्यमें मिला लिया।

लाई कर्जमने १९०७ ई० में एक अँगरेज रूसी मन्विके अनुसार ईरान देशको भी दो प्रभावस्त्रवामें बाँटकर दक्षिणी ईरान धौर फारसकी खाडोपर सपना प्रभाव स्थापित कर लिया। तिन्वत दशपर भी जो गाममायके लिए जोनके आधिपत्यमें था रूस और भारत-सरमार दोनो ही अपना प्रभाव स्थापित करनेका प्रयत्न कर रहे थे। इस सम्बन्धमें नी १९०७ ई० में झँगरेजो और रूसियोंमें यह तम हो गया कि वे दोनों ही जीनके जरिये तिन्वतसे सम्बन्ध रखेंगे और उसके किसी भी प्रदेशपर कभी भी अधिकार न करेंगे।

१९१० ई० में अफ़ग़ानिम्तानक अमीर ह्वीवुल्लाका वघ कर दिया गया और उसका पुत्र अमानुल्ला अमीर बना। १९१९ ई० में उसने विटिश प्रदेशपर आक्रमण कर दिया और क्षीसरा अफ़ग़ान युद्ध छिड गया गया श्रीष्ट्र ही समाप्त भी हो गया। अफ़ग़ानिस्तान अब सर्वया स्वतन्त्र और अँगरेजोंके नियन्त्रणसे मुक्त राज्य हो गया। १९२९ ई० के उपरान्त होनेबाली उसकी राज्य क्षात्या और गृह-युद्धामें भारत-सरकारने कोई हस्तक्षेप नहीं किया और पुन शान्ति स्थापित होनेपर नादिरशाहकी अमीर माय कर लिया।

६सी वीचमें १९१४-१८ ई० के प्रथम विष्वगुद्धमें भारत सरकारकी पूर्ण धिषत अंगरेजोंकी ओरसे जर्मनीके विरुद्ध प्रमुखत हुई। जनसासे गुद्ध- कैरोनोटार्टिया वार्थ नुदूर विदेशींने बाकर वीरवानुर्वक बहै। वार्यने बनार बेरोब और बनार को विन्तानुर कर अनुदूरने किसी हुई। बूदिन नार्यने कमनायों भी बढ़ी हुई और पूर्व देशीस्थानस्थान मार्याव को सार्विक बेरम साथा कहीं बहेते मार्यावे ही वहन किया ह इसी क्या १९९९-भर है के बिलेम निरुद्ध में मार्यावे ही वहन किया है बहुई बहुई की बीर्च किया हुए और प्रतिकृत के प्रतिकृत्य वहने बहुई के बहुई मार्थावा और इसे बार की मार्थ्यन कमी बहुं करके बहु हुआ। कार्याव्यक मार्थक बहुई का

भन्दा दरहा किया क्या । जारदीय सैनिक बार्खीकी बोदवार्वे कर्त्य,

विच्यानी वनराम्य इंतीन्वरों बरकारने बनने १८५८ ई के 'बारकी नेकार वाक्यार्न विमिनन' वर्णात् 'ऐस्ट झार वा वैकर वनवनेन्द्र वांड इंक्सिं के हाथ बोर्ड बांक कन्त्रीय एवं बोर्ड बांक साइरेस्टबंशे स्थान करके कारतमें देख प्रविशा करनांकि बादनका करा कर दिया वा और क्यकी बारबोर करने हानमें के की थी । इस कार्यका भार विदिश्व कीन सन्दर्भ एक बरस्तको कौरा नवा को भारत-सांवय क्यूब्यना, स्वर्की बहारताकै किए १५ क्यानीको एक परावर्धशाची हन्त्रिया कोलिस स्थापन हर्द और कन्दरमें इन्तिया माहित क्या विश्वका कार्यक्रम हमा । बार्स-ना नवर्गर-मन्दर्भ सद नामकरान कहताने कहा । देवले मार्कारक वाहरू वें निवेच परिवर्णन नहीं द्वारा । बादबारान कीतनो बान-दान वजनीरवे बान्ति स्थापन करमेरे हो। जपनी कवित करानी। क्याची नरन गोरिके कारण मेंगरेज 'पतासु पेतिज' कहकर बदका बदहात करते ने । बार्टि सममें मैनाके-हारा निर्मित सम्बन्धियान आहि कामून कार्यान्त हुए और हार बोर्टानी स्थानना हुई बना नाम चीनानी और बीचवारी करावनी-शारा नाम-बार्क्सभी बीचेंडे क्षार एक अवस्था हुई ।

बरमारके मत्त्वव बादनके सम्बर्धन किराहा प्रदेश ना नह बासान्तवन्त

QL.

विनर्रोके अधीन प्रान्तोंमें विभाजित था। प्रत्येक प्रान्त कमिश्नरोके अधीन र्गिश्निरियोंमें, प्रत्येक कमिश्नरी कलक्टरोंके अघीन जिलोमें, प्रत्येक जिला इसोलदारोंके अघोन तहमीलोंमें, प्रत्येक तहसील परगनोंमें और परगने गौंबों या महालोमें विभाजित थे । सेना, पुलिस, जेल, डाक-तार, शिक्षा, व्यापार, वित्त, पब्लिक वक्सं आदि विभिन्न सरकारो विभाग प्रान्तीय एव फेन्द्रीय भाषारोंपर सगठित हुए। अदालतोमें वादो-प्रतिवादी या अभियुक्तोंको सहायताके लिए वकील मुख्तारोकी प्रथा प्रचलित हुई। १८६१ ई० में इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट पास हुआ जिसके अनुसार वाय-सरायको सहायताके लिए एक कार्यकारिणी समिति तथा एक व्यवस्थापिका सिंभिति बनायो गयो । कार्यकारिणोमें स्वम वायसराय, जिसके अधिकारमें परराष्ट्रनीति भी थी, सेनाके शासनके लिए सेनापति, शान्ति-रक्षा तथा आन्तरिक शासन आदिके लिए गृहसदस्य, वैक, करेन्सी, ऋण, व्यय. टैंदे आदिके लिए अर्थ-सदस्य, कानूनके लिए न्याय-सदस्य, वाणिज्य, बन्दरगाह, जहाज, रेल बादिके लिए व्यापार सदस्य, शिक्षा-स्वास्क्य बादिके लिए शिक्षा-सदस्य, तथा उद्योग एवं श्रमके लिए एक अन्य सदस्य सम्मिलित थे। क्रानून बनानेके लिए ६ से १२ सदस्योकी एक परामर्श-दात्रो व्यवस्थापिका समिति वनी जिनमें भाषोंका ग्रैर-सरकारो होना आवश्यक या। पटियाला और काशीके नरेश तथा ग्वालियरके दीवान दिनकरराव इस समितिमें मनानीत किये गये। वम्बई, मद्रास और वगाल प्रान्तोंकी कौन्सिलोंको भी क्रान्न वनानेका अधिकार मिला। व्यवस्यापिका-द्वारा बनाये गये अधिनियमींपर वायसरायको विटोका अधिकार था, छह मासके लिए वह स्वयं भी कोई आहिनेन्स जारो कर सकता था।

उपरोक्त आधारोंपर भारतके आन्तरिक घासनका विस्तार और वैद्यानिक विकास उत्तरोत्तर होता गया। १८७१ ई० में प्रथम बार लार्ड मेयोने भारतको जन-सङ्या गणना करानेकी योजना की किन्तु पूरी गणना १८८१ ई० में म्युनिसपल ऐक्टॉ-

तान आर्त को के कार्य-वार्थ अरुपि स्वार्थण कार्य में मान के दें कर कार्यक्र मान के दें कर कार्यक्र मान के दें कर कार्यक्र मान कर कार्यक्र में कार्यक्र मान कार्यक्र म

एवं मोर्डिको मीर वर्षक स्वारता बोर स्थितार रिचा वर्षक व्यक्ति वर्ष प्रात्मार्थ स्थापित हुई वर्षक मोर्डिकार वहें मोर्ट वर्षक सूच्या कार्य कार्यनाया स्थितिक होने करें । देशनी धारोते वो स्थापीत का स्थित मोर्डिक स्वारत्म हुई। इस्ट्रेट में बिहुबरा शीवनम कोर्यनम स्थापत सामित हुई स्थापित हुई स्थापित स्थापित स्थापित हुई स्थापीत स्थ

वृद्धि हुई, क्ष्मणे कारक-नंबस्तने भी वृद्धि हुई और वरीज निर्माणका विक्रमण भी स्टीमार वर निर्माणका ३ केन्द्रीय क्षमीतिक केर-नरसारी

कार्य वालीय अर्थिनपी में देशकारणी करानों हारा कुषे माने को मेरी अर्थान मार्थानपी देशकारणी कार्य कार्यालाकार्यों, जिम्मीरी व्या दिवालामी वार्य कुषे माने को ! १९९१ में में मित्री-को नुमार्गे आरास्तर क्रमा कराने की मार्थ मेर्स्स में कार्य का । कार्य कार्याला कार्यालीय वार्य-मेर्स्स मोर्स मीवार मार्गे को । वर्षिका नार्थिकार कार्य कार्य किया किया भी मोर्स्स पिया कार्याल कार्याला अर्थिकार कार्य कार्य कार्य मार्थ किया मार्थ के सामग्रीक अर्थिकार कार्य कार्य कार्य कुष्म मार्थिक पूर्व मेरिकार कार्य के मी क्षांत्र कर्य कराने की इस्त मार्थिक पूर्व मेरिकार कार्य के मी क्षांत्र कराने कार्य कराने हुए मार्थिक पूर्व मेरिकार कार्य की मी क्षांत्र कराने कार्य कराने हुए मार्थिक पूर्व मेरिकार कार्य की मी क्षांत्र कराने कार्य कराने

१९१७ हैं में भारत-बांबर कालेग्यूने वृक्ष स्त्रितिके द्वारा बीरचा की सिं "दिक्रिय करकारचे मीकि क्रमानके दारेक दिवानमें वारतीनींका कराणे

**

त्तर अधिक सहयोग प्राप्त घरते जानेको है जिमसे कि वे दाने -रामै. स्वायत्त-शामनका विकास करके ब्रिटिश साझाज्यके एक अभिन्न अगके रूपमें अपने देदामें भी उत्तरदायित्वपूर्ण शागन प्राप्त करनेमें समर्थ हो सकें।"

फलम्बच्य माण्टेग्यु-चेन्सफोर्ट मुवार प्रस्तुत हुए जिनके बाघारपर रै९१९ ई० का गवतमेण्ट आंक्र इण्डिया ऐक्ट पास हुआ। इसके बनुमार भारत-सचिवको इण्डिया की सिल्म भारतीय सदस्योको सहपा बढ़ायी गयो, वायसरायको कार्यकारिणीम भी सदस्य वृद्धि हुई, उसको व्ययस्था-पिका समितिको कौन्सिन आंक्ष स्टेट्स तथा लेकिम्बेटिन एसम्बली नामक दा सदनोंमें विभक्त कर दिया गया जिनको सदस्य-सख्या क्रमश ६० और १४४ नियत हुई। जनको अधिकार-वृद्धि भी हुई और नियाचन-क्षेत्र ^{विस्तृत} हुआ । प्रात्वोमें हैंच शासन स्यापित हुआ, सरक्षित विषयोंपर गवर्नर और उसकी कार्यकारिणीया पूर्ण अधिकार था और हस्तान्तरित विषयोंपर प्रान्तीय लेजिस्लेटिव की मिलके जाता द्वारा निर्वाचित सदस्योमें-सं नियुक्त किये जानेवाले मन्त्रियोंका । विभिन्न जातियोके प्रतिनिधत्व. प्रत्यक्ष निर्वाचन और मताधिकार-विस्तारको मी प्रथय दिया गया । म्यनि-^{सिपल} बोह, हिस्ट्वट बोर्ट, टाउन एरिया कमेटो आदिके अधिकारोंमें भी वृद्धि हुई और इन सस्याओको प्रान्तीय मन्त्रियोके अधीन किया गया। नगरोंको उप्नतिके लिए इम्प्रवमेण्ट ट्रस्ट स्थापित हुए। प्राम-पचायतींके सगठनका सिरुसिला १९०९ ई० वे हीसन्ट्रेलाइजेशन कमोशन (विकेन्द्री-करण आयोग) की सिफारिशोंस ही सुरू हो गया था, अब १९२२ ई० से स्यानीय अधिनियमो-द्वारा उनका उत्तरप्रदेश आदिमें व्यवस्थित संगठन प्रारम्भ हुआ। सर जान साइमनने भारतका दौरा करने तथा विभिन्न दलोंके नताओंके विचार जान छेनेके उपरान्त सन् १९३० ई० में अपनी रिपाट प्रस्तृत की, तदनन्तर १९३०-३२ ई० में लन्दनमें तीन गासमेश का फोन्सें हुई जिनमें भारतीय नताओं के साथ ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने भार-

मारतका प्रयम गवर्नर जनरल होकर रहा, तवनन्तर १९४८-५० ई० ह पक्रवर्ती राजगोपालाचारो मारतके गवर्नर-जनरळ रहे, इस सोचमें ए देशो विशिष्ट विधान निर्मातृ-समा सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र भारतका प्रजातन्त्रात्म विधान निर्माण करती रही। काधुनिकतम आदशॉपर, देश विदेशींव विधानोंका सम्यक् अध्ययन करके भारतीयोंने ही अपने देशके लिए यह सिवधान स्वय वनाया जो २६ जनवरी सन् १९५० ई० से कार्यान्तित हुआ। तत्रसे चवत सित्रधानके अनुसार ही स्वय मारतीय जन पूर्ण स्वतन्त्रताके साय अपने देशका शासन कर रहे हैं, यद्यपि स्वतन्त्रता प्राप्ति-की एक प्रधान शर्वके अनुसार दशका एक वडा माग पाकिस्तानके रूपमें उससे सर्वया पृथक् फिर मो कर दिया गया।

मिटिश राजकी कुदेनें — अश्वत लगभग दो सो वर्षके और पूर्णव छगमग सौ वपके ब्रिटिशराजन भारतवर्षको अनेक भयकर कुदेने प्रदान भी जिनक कुफन यह देश ब्रिटिशराजके आरम्मचे ही मोगने लगा, कुछको भवतक मोग रहा है शौर सम्मवतया आगे भी न जाने कवतक मागेगा। सबसे वही कुदेन तो इस देशक इतिहासमें छग जानेवाला यह लज्जा-जनक अमिट क्लक हैं कि तीस करोडसे अधिक जन-सरुपावाछे इस महान् प्राचीन देशको जो सम्यता और संस्कृतिम किसीसे पीछे नहीं था, जिसमें चस कासमें भी न राजाओं और न रामनीतिज्ञोंका समाव था और न शूर-वीर योदाओंका, हजारों मीलकी दूरीपर स्थित एक छोटे-स विजातीय विदेशने जिसका विस्तार, जन-सरुया, शक्ति और धन-सैमव मारतके एक राज्य या छोटे हे प्रान्तमे अविक नहीं या, अपने मुद्दा-मर निकृष्ट श्रेणीके पया म्यापारके उद्देश्यमे वानेवाल प्रतिनिधियोक छल-कौशल द्वारा इतने ^{छहुन} भीर सुगम रूपमें अधीन कर लिया। कुछ ही दशकाँके मीतर सम्पूर्ण देशपर, उसके समस्त प्राकृतिक सीमा ताँके उस पार पर्य त, उनका मुत्व छा गया और फिर एक शताब्नीसे अधिक काल पयन्त सुद्धर कुरहम् वंडे-वंडे ही वे अपने एक लाखसे भी कम प्रतिनिधियों द्वारा तीस-

चामीन करोड़ बारवराविधाँक नुयमतापूर्वक बायन करते. है । मारपर्व सनी बर्नोंके जैनरेकीको अन्या बीय-चार जानने सचिव कवी नहीं पी और इस प्रचार एक अंगरेप क्या दवाने सांचय जारबसनियोंनर मन्तर 4115 121 1 नाय ही इस बेंगरेडी गाननका विक्रम स्वय-आर आरत्यो बहुन बरमा वडा । सन्दर्भ प्रतिका मार्जिनमे सेका मार्ट्य वार्च करनेशमे क्रोटेवे क्रीटे धेंगरेज कर्मवारी का राजरके बंश्यम अस्य आहे अरकम बेजन क्वें टिंगरें बतादे वनके प्रानिक करीतों स्तवा इब देवदे हुग्तेन्त्र बाह्य दर्श । हीन भार्वेद की रहरवमरी मार्थ की इंग्लैक्ट आरतके विकृत प्रकार निरम्पर पार्श रहा । को राजनेतिक स्वीयोजिक समया सन्त प्रकारके आसीन वा विदेशन इंग्लैंग्वने इन देववे निरम्पर बाने है बनका आही लाई बनव पहा इंक्ष्मेंगडके राजा राजी राजपुत्रारी बाहिके सारत आनवनार संग्या बहुकि राजाभीके राज्याधिके बाहि अपनरॉक्ट की बरवाद, अनुत और स्वाक्त-समारीह रिथे वाते है उसमें विकृत हमा पान होता था। हुनी देवीके नाथ द्वीतेवाचे दर्गन्यके अध्युवीचे की दन देवकी अनुवानाचेड सारिक बढाक्टा देनी नहीं विनक्ते सर्वितका सामी सारक्षेत्र बीटीने वाले बान की बैंबारी बना मुखकाचीन एवं मुद्रोकराना वादिक बंक्डॉले देक-की करणाड़ी रिवर्ग पता । बावपार्टि बावन्ती प्रगरीका विद्रत कार्य-भारती गृति इस देनवी बनतावर उत्तरीत्तर अधिवादिक लावे आवेशके विकित्र विकित सरवा वर्ष वरीय राज्य-करी और वरवारी वार्ण मारिने की मात्री की । रहमें-मुहाको सन्द करके व्यक्तिक इसकेंद्रे की उनकें भूम्यने नम पाँगी रमनर और कारताः क्ली बानुशी एवं बादरकी बतीय मुद्दा सम्बद्धि करके देखको करेग्ब्रीके बाब विश्ववाद किया वर्षा बीर वनके हारा भी अनुवास बोधम हुना । शुब्दे-राज्यक्षेत्रे पूर्ववेरिक हम्मणे वो पहले ही बहुत पुत्र कुछ किया नदा वा बो येव का का किया मकार विभिन्न होता. यसे बुदर्गके नई स्थान दिशांक किमें बने । अनेक

मारवीय इविदासः एवं ^{श्री}

..

व्यवसर्रोंपर इन्हैण्डके राजा-रानी, राजकुमारों मादिको मूल्यवान् भेंटें, कई-कई वार प्रत्येक वायसराय और उनकी लेडोको दिये जानेवाले मूल्य-वान् उपहार, रेजोडेण्ट, पोलिटिकल एजेण्ट आदि अन्य अंगरेज अधिका-कारियोका दी जानेवालो घूमें, प्रत्येक राजा-रईसके इन्लैण्डकी सैरके लिए जाकर वहाँ अपने वैभवका प्रदर्शन करना एक रिवाज मना देना, प्रत्येक राजा नवाबके पीछे एक आघ गोरी मेम लगा देना और इन निकम्में आलधी राजा-नवावों और रईस जमींदारोको चरित्र-हीन एवं विलासी बना देना, छोटे छोटे जमींदार्रा और रईसोंमें रायवहादुर, खाँबहादुर, राजा, रावराजा, सर आदि अनेक उपाधियोको प्राप्त करनेका चस्का और होड लगा देना जिनके लिए वे अंगरेज अधिकारियोको घूम देनेमें विपृत्र द्वव्य व्यय कर डालते थे, इत्यादि अनेक उपाय काममें लाये जाते थे।

टीमटाम, दिखावा, फ्रैगन-परस्तो, पिर्विमी सम्पताका अविवेकपूर्ण अनुकरण और अगरेजो की बिना हेयीगादेयताका विचार किये नक्कल करना भारतीय जनताके विभिन्न वर्गीमें छुनको वीमारीकी नाई फैनने लगे।

देशके विदेशी क्यापारको खँगरेजोंने बहुत पहले, १८वीं शताक्दीमें ही, पूर्णत्या अपने अधिकारमें ले लिया था, शर्न शर्न आन्तरिक क्यापारके महत्त्वपूर्ण अगोंपर भी वे छा गये। अनेक येको, बीमा-कम्पनियों, विभिन्न एव विविध क्यापार करनेवाली अँगरेज ज्वाइण्ट स्टाक कम्पनियों या प्राइवेट फ्रमींका देशमे जाल फैन गया। स्थान-स्थानमें उनके ऑफ़िस, डिपो और एजेन्सियों खुल गयीं। स्थानीय खरीजके व्यापारको छोटी मोटी हैं कोनदारों ही मारतायोक हाथमें अधिकतर रह गयी। इसपर भी सट्टें विकी, स्टाक एक्सचेंज आदि अनेक वैद्य जुआका चस्का भारतायियोंको लगा दिया गया जिसके फलस्वरूप उनमें पडनेवाले अधिकाश मारतीय अन्तत वरवाद हो होते रहे किन्तु सरकार तथा उनके प्रधान सचालक कैंगरेज कम्पनियों या व्यक्तियोंको लाम ही होता था। धुडशीह,

बरी। और ठाएँक व्यू कि व्यक्तिका बनोबिनोरके किए बोहे-में केंद्री क्षेत्रे कार्नेशांके देशी जुर वी सन्तर्गात जारशय तथा दिवे वर्षे और वे बहामबंबर मुख्यतिका मारी बुद वैच अपनुती बीट क्षम्य कामार्थ । देशके समेश रितिया एवं दिनिया बादीन बन्दे और स्वयंत्राय मी अन्द बर रेट्से के १९वीं वालि शास्त्र तब प्रचलतुर्वक यह कर लि क्षे थे । नरीम परिचनी चेनके वानिक बजोच-क्ष्मोंको प्रारम्ब करनेकी प्रयुक्ति और युविया कारणशासियोंको सङ्गत रोखे हुई । इतके हुई ही बेंबरेजोंने प्राप: वस ही महत्त्वपूर्व एवं मूनवरान बालीरर मन्त्र वृक्षाविकार स्वारीत कर किया था। वशानन्त्रत बडी प्रवल क्रिय बाता वा कि मारतमें बचनोनमें बानैयाबी बलोक बोबी-बड़ी नातु 🕬 इंब्रिंग्डरे ही तार्थे । जन्म देखीमें बचनेयाची बानूएँ खेडरर एएं प्रवित्र बल्दी हीनेवर की भारत करवार-हारा कनवर सनावे की करवीक बायल-कर, तर-कर बादिके कारण में इंब्लैन्डमें बनी बन्दबीकी क्लेब्स करपविक स्टेडपी पानी भी । सदी मोदि स्वयं जारवर्षे बनी बस्तुवर्षि कर्म भी बरती भारते भी । स्वर्ध इस देखने बनी बस्तुयें जी इस्ते देखने हंग्लेखनें बनी मलुबॉली मनेबा महेची पहली थें. बीर बननी बच्ची की माँ हैंगी भी । मन्त्रीके मनी क्रोडी-मड़ी दैतिक करवोरको प्रीयम खोळ मीर मार्टनी की मनवित्तत त्यों-नकी करनुमाँने देखकी रही-कही वस्तकारियों दर्व हर्ने कतानीका अन्य कर दिना । और क्य इंब्लेन्ड बादियी अधि इस देवरी भी कुछ बचीची स्वरवाधियाँने वस मस्तुत्रोसैन्द्रे मुख्के निर्मालके किए देवनें ही समिक वर्षीन कर्ने शारन्य किने हो वर्षे तही नहिनाहरीय समर्थ करना परा । अन जानातक रूप जीर विशेषक जाति कर्ने इंडेन्ड हैं। रिपुण नाम करके बँधाने बक्ते से : जिल्ला आहा संबदेशो मासपर दर्णना के भारतके ब्रहरूर पहुँचनेने कराय था बाब्दे अधिक देखी अस्तरूर देखी मीवर ही रेज हारा एक स्थानके दूनरे राजनगर से बानेने कर नाता था। *** मल्लीय इविद्वार एक धी

कारणे आदि बन्त वर्षक प्रशास्त्रे स्तुत-व्यवस वी मारवर्षे केन्स्री

र्अंगरेजोंके साम स्वतन्त्र व्यापारको मीति वग्तो जातो यो तया अँगरेज स्यापारियों और व्यवसायियोको सरकार सर्य-प्रकारको सुविधाएँ और प्रोत्साहन देती यो ।

अँगरेजॉको यह स्नष्ट और निश्चित नीति यो कि भारतवर्ष ६ग्लैण्डकी फेन्टरियोंको विपुल एव श्रेष्ठ कच्चा माल प्रदान करनेवाली उत्पादन-भूमि **थो**र उनके पवने सैयार मालको निरन्तर स्वपाते रहनेवाला सुगम एव सामदायक बाजार बना रहे और ऐसा ही होता भी रहा। अँगरेजोंने वपने शासनकारुमें विस्वके अन्य सभी देशोंको इस विशास देशका चपरोक्त द्विविष लाग उठानेसे यथाशक्य यंचित रखा और स्वयं इस देश-में मो देशो उद्योग घ घोको प्रोत्माहन न देकर घरन् उनमें बाघक बनकर चक्त द्विविध लाभपर अपना ही एकाधिकार अझुण्य बनाये रखनेका प्रयत्न किया । फउस्बरुम भारतके बलपर इंग्लैण्ड अपने औद्योगिक एव ब्यापारिक विकासके चरम शिक्षरपर पहुँच गया । इसी शतान्दोके प्रारम्भमें पाण्डच महुराके बीर विदाम्बरम् पिल्छेने एक देशी जहाजी कम्पनी वनानेका प्रयस्न किया या जिसके कारण सरकारने उसपर राजद्रोहका अपराध लगाकर उसे जेलमें सहाया। ऐसे न धाने कितने उदाहरण मिलेंगे। जहाज, रेल और उनके बनानेके कारखाने, जूट, नील, चाय, तम्बाक (सिगरेट) आदिके उत्पादन, विभिन्न खनिजोंकी खाने इत्यादि इस देशके अनेक प्रयान व्यवसायोपर अँगरेजोका पूण एकाधिकार या और अवतक बहुत फूछ चला आ रहा है।

देशके घन और भूमिके चिरकालीन भयकर शोपणने उसे बाद, भूमम्प, अकाल, महामारी आदि देशी विपत्तियों छहने और स्वरक्षा करने-में अशक्य एव असमर्थ बना दिया। साथ हो उपरोक्त स्थितिके कारण ये देवी प्रकोप आये भी बही सस्थामें। १८५७ ई० के पूव अराजकता काल-में तो प्राकृतिक उत्पातोंके अतिरिक्त नित्यप्रति वने रहनेवाले लूट-मार, युद, अशान्ति आदि मानुपी उपद्ववोंके कारण देश बराबर अकालपीहित-

बैता बना हो पहा और अज्ञाना ग्रेमेंडानेच बहाचारेगी, मेंडे-बारोबी अनिहित्तना एवं बन्धाः बलायात्रकी कविनाव्ये वर निकार त्रीपम महानानीती रिपंति बनाने हुए थी। अनके कारान्य मी दिही tett-te test-or test or tett-to te 4 hit धिनम्र भारति चर्ववर युविस यहे । क्वी-क्वी क्रम्द्रे बाव जवलय वार्रे और जीवन वर स्थापन कीन वादि बहायाँश्वीता की बीच ही बायी। अन्याने काली पारीरिक वा कार्रिक बायकों नहीं पह नहीं की कि वान थी बाबके पुरशानकी बाने सेवित क्षर्य दा बतीए-बाबके विकास के बाउँ ! क्षत्र प्रम क्रमारीमें कर्षप देशवाची तककत्वक कर क्यों मर बरे । देवकी नामान्य सान्ति एवं पातामातको बडी 🐒 सुविवासीके सारव सकार में महानारीके वर्षाच्छे मुक्त जिस बाद्य अदेशीते सशास-राहिटीके अहारावर्ष धन या यह निरुपाण नाता नहीं थी जब कारण शाका सकत यह नहीं। करकारने सकान-रक्ता कीच सकाम और बाह-नीर्टिटोंकी बहाराने बीजनार्यं, शतानारियोंची रोकने और बनके बचन करवेके बचन कार्य

वर्ष वर्षकर दुर्जिया पर पूर्व है, जीन रिपायक बाहें या पूर्व है और वर्ष या स्वामारियों पर पूर्व हैं। मुण्डिम क्षेत्र वर्षकर के क्षेत्र काम्परिक स्वाम्पर्क दिवित्त कार्ति ग्रामी कार्याया, कामप्रदा और काम्प्रपर था। केस्प्रक्रियों कार्या किर्प्यावायां, कामप्रदा और काम्प्रपर था। केस्प्रक्रियों कार्या कार्यायां कर्षा प्राप्त था, कर्यं प्राप्त कार्यायां कार्यायां मुख्य दिव्य या ग्रीर कर्या प्रदा था, कर्यं प्राप्त कार्यायां मा कार्यायां मुख्य विद्यायां मुख्य विद्यायां मुख्य विद्यायां मा कार्यायां कार्यायां

ध्ययन्तार्थं भी दिन्तुं से बच कदेश आपनीचा पहीं और देवानी प्रवेश करिया निराम्य स बप कपी । इस नार भी क्यानी सीर रावस्तारी है कारी दिनार केने और दिनाई अधिकारी क्यानार्थीय वार्यात्र विकास कप सेने आगार सी पत स्थान करों से में देवने पिरीस सार्यी एव नगरों के छोटे छोटे दूकानदार ये। बोर ये ही लोग निम्न वर्गके बहुमस्यक राज्यकर्मचारियों-द्वारा निरन्तर पीछ जाते ये । एक लाल पगढ़ीं-वाछेको देखकर सारे ग्राममें अज्ञात विपत्तिको आधाकासे शून्यता, मय और विपाद छा जाता या । जिला अधिकारियोकोको घूस, रिस्वत आदिके द्वारा अपना मुट्टोमें रखनेवाले जमींदार और साहकार पुलिस और अदालवोंके सहयोगसे इम ग्ररीब जनसाधारणपर मनमान अखाबार मरते ये, निरन्तर चनका लहू चूसते थे और उन्हें पनपने न देउ थे। मारसीय पुलिस जुल्मका बादर्श थी। कहीं किसी राजनैतिक, कानूनी या नैतिक अपराघके होनेका सन्देह मिलता कि सारे गौव और वस्तीपर आफ़त था जाती और मले बादिमयोंका धन एव इपज्ञत जो मन्कर लूटा जाता। नित्य नये बननेवाले **ष्टानुनों और अदालतोंक जालने जनताकी नस-नस धींघ दो। अदालतोंके** पण्डे, वकील और मुख्तार, मुक्तरमेबाजीको प्रोत्साहन देते। न कुछ वात-पर माई-माई और पहोसी पडोसी आये दिन लड़ते रहते और उस लड़ाई-का निपटारा करनेके लिए अतिवायत इन वकील, मुख्तारीं, पुलिस और वहलकारोंको दारण लेते. अपनी शान्ति, समय, धनित और कारबार नप्ट करते और जीवन-मरकी खून-पसीना एक करके सचित की हुई कमाई चनकी जैवोंमें मरते, सदाके लिए ऋणके भारसे दव जाते और स्वय अपनीके शतु बन जाते । त्यायका ढोल बजाकर इस मुझदमेबाजीने देशकी जनताका जितना खुन चुसा है, उसका जिसना नैतिक पतन किया है और चेषे अपग बनाया है उतना शायद किसी अन्य चीजने नहीं। और इसके छिए सँगरेज तो परोक्ष एव अल्ह्यरूपसे ही उत्तरदायी थे, वास्त्रविक एवं प्रत्यक्ष उत्तरदायी तो देशी वकील, मुख्नार, अदालमें, अहलकार और पुछित-कर्मचारो थे । दुर्भाग्यसे मुकदमें बाखीका यह विप स्वतन्त्र भारतमें मी घटनेके बजाय और अधिक बढ़ रहा है।

देशमें अंगरेजोंने शिक्षाका प्रचार किया, स्कूल, कांलेज श्रीर विश्व-विद्यालय स्रोक्षे, पर्याप्त-द्रव्य भी व्यय किया, किन्तु उसमें अंगरेजोंका पहेरव बारवीबॉको बास्तवर्गे मुक्तिबाद करके चकुन्यत बरामा वहीं छ । बरका बूल क्टूंबर थी. जाने प्रधाननके दिग्न शारीर काम करनेयाँ बहुनंबरक वनके बादुबोंका निर्माण करना वा बो बेंबरेडोंकी अन्ता हुई बारचं स्थानी, अन्तराना और वर्षे-वर्षा बन्धें । और वे इन वार्धवें बक्ष भी हुए, इन राज्यबन्त वर्ष स्थानितन्त्र मानुसीके बचार ही वे पाने कार तम इब देवार कुमलतार्वक मालन कर बक्रे । माने बह स्करी पृथिते बिए बॅनरेबोले बॅनरेडोफो विश्वाका बावास बनामा तथा बेररेड सम्पारकोन्द्राचा संबरेजो साहित्य संस्कृति कना सौर विक्रालय अध्याप न'रावा । बंबरेज वर्ततके प्रयतिकोल इतिहानके बाय-बाय अंबरेज केवसी क्षोर्डेश्न क्रियाने गरे चारतपत्रि वैदे इतिहास पहाने निमने पर-नशर भारतीय कार्यांको सनने देश आति पुर्देशी और श्रेत्कृतिको होनल-का अनुबन हो। और कारावे वनका किए जुक-सुक बाने बचा मेंदरेडींकी वे अत्यान ब्रधार, बवालू बर्गावक बन्द और क्ष्यंत्कृत देवता क्रवर्ण करें क्रिके क्रमणी यांचा पुढि और महत्ताको क्या अपनी क्षेत्रकारणे होनकाडी समित कार वनके हुक्त्में पर भावे । और प्राप्तः नहीं हु^{क्ता ।} सम्बादक और नार्थ पुस्तकों के केक बहुदा देशाई नारती होते ने के कारोंको स्वरेपीय वर्ग स्वतातीय वर्ग संस्कृतिका समावद करना ती किवारों ही ने वर्षों स्ववर्ष और बचानका जो विहोही बचा देते हैं । ईंगर्र वर्ष, पत्रवर्गी प्रस्ता मीर संबद्धिनतको ही वे क्य-पुत्र वस्त्रको वस्त्री वै । विकासिन्ते रिपुत स्वयं करोप गरीका-वचानी विविधेना कोर्यः सम्पारहारिक कियाची बात जानि समेक बीच इस विमान्त्राधिके देवे वे को जिल्हित नायोगांको बरनाय या बेर-बरनाय जैनरेनी सामयेनी व्या बीरी, प्रवास्त्र, बम्बानसी सक्ता नुस सोधी-मोटी शहररी वर्तर करके मतिरिका और कियो जीन्य बढ़ी खुले देते हैं। भारतीयीके किए पर विकास क्षेत्र शिक्ष्य केवर श्रीवरी करना ना नीर नीवरियाँ क्यों में धीनी व होती कि बनवें कर कार्मिक्टर ना दिया प्राप्त कार्याय गुपन

भारतीय इतिहास । एक दरि

स्पापे जा सकते, बत बनेकॉको घोर निराशामें जीवन नष्ट करना पहता। देशनें फिर भो ९० प्रतिशवसे अधिक निरक्षर ये, और जब इन थोडे-पे धिक्षितोंको यह दशा थो तो इन शिक्षासे देशको क्या वास्तिविक लाम हो सकता या यह अनुमान ही किया जा सकता है। सरकारी नौकरियोंमें भी प्रारम्भमें, विक्क १९वीं शती ई० के प्रारम्भ तक तो बँगरेज अधिकारी नारतीयोंपर विश्वास हो नहीं करते थे और उन्हें सरकारी नौकरीके योग्य हो नहीं समझते थे। धादमें वे यह घोपणा करने लगे कि सरकारी नौकरीका द्वार प्रत्येक भारतीयके लिए खुला है, किन्तु तब भी किसी उत्तरदायित्व-पूर्ण या ऊँचे पदपर भारतीयोंको चाहे वे कितने ही योग्य हों नियुक्त न करते थे। १९वीं शती ई० के उत्तराधमें भी नुरेन्द्रनाथ वनर्जी-जैसे अनेक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने आई० सो० एस० की परोक्षामें उत्तम सफलता प्राप्त की किन्तु उच्च नौकरी प्राप्त करनेसे यिवत रहे जब कि उनके साथके तथा उनसे कम योग्यतावाले अँगरेजोंको प्राय- मिकता दी गयो।

. सरकारके प्रश्नयमें काम करनेवाले ईसाई निधनोक्ते व्यवस्थित जाल-द्वारा मारतीयोंको ईसाई बनानेका प्रयत्न फिया गया तथा निम्न जातियों-के असहय अधिक्षित दीन भारतीयोंको ईसाई बना मी डाला गया और उनके रूपमें अपने राज्यके स्यायित्वका इस देशमें एक स्थायी स्तम्म निर्माण किया गया। ऍरलोइण्डियन या यूरेशियन गोरोंके रूपमें भी एक अन्य ऐसे वर्गका निर्माण किया गया।

अँगरेजोंने इन देशमें साम्प्रदायिकताके तोव्र विपक्तों भी स्वार्यके वशों भूत होकर खूव फूँका । सर्वधर्म समर्राधता, बहुसङ्गकोंसे अल्पसल्यकोंकी रेला, न्याय, उदारता आदिका बहाना लेकर उन्होंने हिन्दू और मुबल-मानोंके बीच ऐसे फूट और वैमनस्पके बीज वो दिये जैसे कि पूर्व मुगल काल-के सुलतानी शासन या औरगजेंबके कट्टर मुसलमानी शासनमें भी शायद म पे। हिन्दू और मुसलमान एक-दूसरेके जानी दुरमन हो गये, आपे दिन नाध्यातिक संवे और रन्ताना होने नने बन्ना इव कुता चीटन रुपा (नावन हुए। नेपने बेटने) प्रान्तनाकों नो बानी स्थापित वहाँकि हुने देशियोंकर मुनेत वहाँ रिशाह कार कर किया था और स्थापित के देशियोंकर मुनेत वहाँ रिशाह कार कर किया था और स्थापित के प्राप्त की बहु बना पहा को बहु के प्रीप्त में हुए स्थाप स्थापित वहाँ प्राप्तिक कर की स्थापित कर की स्थापित स्थापित करने को बाँड मुनेत्रों आठे समानक थो। अस्त स्थीन के स्थाप्त

वर तात्र पुत्रकार सार्थ कर कराय दा र का वसून के कर राह्य संदर्भ कराय सार्थिय ही एड केंग्रे पुत्रक करके वर किया सर्व इस देवते भी ही भी क्या पुत्र किया पंतार वर्ष निस्पोर्थ बीमाराकों करते परिचयी गांक्सिया और हुम्या पूर्वी प्रेयकों करी हो गांक्सिया करते हमा करा-त्याव वर्ष बहुविया कर दिया। इस्मी हो गाँची करते, भीता पालकर योट सार्यक्त हमें प्रारंभित करायें

भी वर्गीक विद्यु प्राथमिके विद्यु की थी। इस बहारेचारी जुर्गेजामूर्यक मुख्य बचाने, सीर्वडाव एक वर्षे पूर्व एक पुत्रान बरावे एको बहारा वर्शनवार, बसाव्यर सीराव करने की बचारिक विद्यु करना कर केनीय बीराव होने सोहाव वर्षे की सीराव वीर्य करने की सीराव वीराव करने की सीराव की सीरा

दिविद्या ग्रास्त्रको कविष्य सुदेशे—बारावरके त्रिय क्वां विद्यासका वर्गाण तरेन मान्य एवं वर्षाय रहा से पूर्व कर स्वाप्त स्वरूपार पर जन्म पूर्व में हैं। कच्ये बाने की पूर्व देखें पार्वित्त वार्षित स्वाप्ति होते हैं। कच्ये बाने की पूर्व देखें पार्वित्त वार्षित स्वाप्ति है कार्यके रच्या और सरस्पूर्व वरण सन्त्रकों और समाप्ति है, बार वर्गने या स्वस्त कर्यों कर्यों के विद्या त्यार्थी दाने करेबू वर्षी कि नार्वीत पार्वक वर्षीय स्वाप्ति की

बल्लीच इतिहास एक परि

जो प्राकृतिक, स्वामायिक, सास्कृतिक एव ऐतिहानिक पूर्णता यी उसे प्रवम बार राजनैतिक, आधिक एव प्रशासकीय एकसूत्रतामें वीधकर च होने चिरतार्थ और पृष्ट कर दिया । देशका विस्तार सभी दिशाओं में चसकी पैनानिक सीमामा एवं अंग-उपागा तक पहुँचा दिया । ऐतिहासिक कालमें ऐस अनेक भारतीय नरेश हुए जिनमें-ने कुछने पश्चिमीत्तर दिशामें कावुल और कन्दहारसे भी कुछ आगे तक अपने राज्यका धिम्तार किया, पृष्ठने पिरचममें अरवसागर और ईरानको खाडीपर अपना प्रमुत्य रखा, कुछने उत्तरमें कदमोर, नैपाल और भूटान ही नहीं तिब्बत सक अपने राज्यका विस्तार किया, कुछने पूर्वमें आसाम और अराकान तक हो नहीं वस्य देश तक अपना प्रभावक्षेत्र बढाया, और फुछने दक्षिण एव दक्षिण-पूर्वो लंका, मलाया प्रायद्वीप तथा पूर्वी द्वीप-समूहके अनेक द्वीपोपर अपना विविकार विस्तार किया। विन्तु ऐमा कोई एक नरेश कभी नहीं हुआ निसने एक ही साय उपरोगन सभी सीमान्ता और सीमापार प्रदेशापर वपना प्रमुख जमाया हो । चन्द्रगुष्त मीर्य, अशाक, समुद्रगुष्त, अलातहान खल जी, अकवर या जीरगजेय, इन महान् सम्राटों में से एक भी ऐसा न पा जिसने सम्पूर्ण देशपर अपना पूरा, अधूरा या नाममात्र भी अधिकार फैला पाया हो । देशका किसी-न-किसी दिशाम स्रीर कुछ न-कुछ भाग चनके आधिपत्यके वाहर रहा हो । चक्रवर्ती सम्राटका जो प्राचीन भारतीय बादर्श या उसकी सिद्धि इतिहासकालमें यदि कभी हुई तो प्रिटिश पासनके अन्तर्गत ही, और उसके अन्तके साथ ही वह भग भी हो गयी या कर दो गयी। किन्तू एक बार प्राप्त हो जानेवाली तथा एक शताब्दी पयन्त स्यागी बनी रहनेवाली वह पूर्णता एव एकता फिरसे भग्न और खण्डित हो जानेपर भी यह प्रदर्शित कर गयो कि यह कितनी स्गम. सम्भव, युक्तियुक्त और आवश्यक है। स्वतंत्र मारतीय राष्ट्रके लिए वह एक सजीव प्रेरणा वन गयी जो उसे निरन्तर यह स्मरण दिलाती रहेगी कि उपत मौलिक पूर्णता एवं एकताकी पुन प्राप्ति राष्ट्रीय सत्ताका

एक अभिवार्त कर्ममा है। देवने क्षेत्र कुरशरेका अधिकात अभिवासित एवं केरिया अधारण-का तथा अबने कराम बार्टिनपूर्व बाधाररण मुरब्रा, कार्टिनमा कार्यार स्थापन्य आर्थित क्षत्रमोत्र इत काल्ये क्या देश पूर्वशायमें बहुत कर बदनरींतर क्रिया था । प्रवर्धी बत्तमता हुनी बातके लाह है कि स्वान्त रीनेके बार भी प्रवादे आने वर्तवान प्रधानकोने बन्ने बाद: क्याँका स्वी मंदरा निका मोर जान रका है। बढ़ने बनेड दोन परियों वा पुत्रकारें भी भी बचा नित्त करें अभवन कृत्यून बना-बनावर करवा अन्तार सन्ताना बुक्रवर्षेशाजीको प्रीत्याहन देना प्रचलनके निर्देश पार्थीने भ्रष्टाचार और जवाबन-अवको वृद्धि, वृद्धित कारिकी अनुसरकावित्वपूर्व बरार्टाटको अरकारी भाषी, करी साहित्रे समाभवक वृद्धि, प्रचलित विकार पर्कारके दील पांत्रकोश केराओंकी निकृत्विकीने बहुका विद्यारिकी, रिस्पर्डी म्य प्रशासका अनीन प्रत्याति । संवादि विशेष कालके क्षरीरा सुन्त-परिचन प्रधानमध्ये ही इस बाठना भेर है कि इतने दिखान देवना करा-इस्तान्तरम विषया वर्षे व्य संस्कृतको स्थानने प्रशासन नरायीनाने रवामरे लाबीच्या निरेवी बायनके स्थानने स्थिती बायन वर्धीच्य वर्धीत बंदरेडोडे स्वानने वारतवादियाँको निवृत्ति हेना और अर्थ-धकायाम

पूर्विमानी की, मसीन देवके दुकरेनुकई करके बन्दी क्रांसिकाली

उन्होंने कुछ कलंकित ही किया।

कि तु अँगरेज इस देशसे क्यों चले गये और भारत स्वतन्त्र कैसे हो गया इन प्रश्नोंका उत्तर है देशमें उदित राष्ट्रीयताकी मावनाका विकास श्रीर फलस्वरूप किये गये स्वातन्त्र्य-आन्दोलनकी सरकटता। अँगरेजोंने भारतवानियोंके हृदयमें राष्ट्रीयसाको भावनाका उत्पन्न होना और पनपना कभी भी नहीं चाहा और न स्वातन्त्र्य-आदोलनको कोई प्रोत्साहन दिया, षरन् उन्होंने समय-समयपर अपना अत्यन्त क्रूर एवं भयकर दमनचक्र घलाकर इन दोनोंका मूलोच्छेद करनेका ही मरसक प्रयत्न किया। तथापि इन दोनोंके उदय और विकास एव अन्तिम सफलताका भी श्रेय अनेक अर्घोमें अँगरजोंको और उनके धासनको है। अँगरेज जाति चिरकालसे राजनैतिक स्वातन्त्र्यका उपभोग करती आयी थी। भारतपर राज्याधिकार स्यापनके कुछ पूर्वसे ही उनका देश नामके लिए राजतन्त्र किन्तु वास्तवमें प्रजातन्त्रका रूप छेता आ रहा था । भारतसे होनेवाछे कल्पनातीत आर्थिक लामके कारण उनके देशने दूत-वेगसे उन्नति की थी। उसके उद्योग-घन्धे. ब्यापार-व्यवसाय, शक्ति समृद्धि, प्रभाव और साम्राज्य विस्तार ही न केवल को झताके साथ अत्यधिक यह गये और उन्होंने उसे विश्वकी प्रधान शक्ति वना दिया, वरन् शिक्षा, साहिस्य, ज्ञान एवं विज्ञानकी भी उस देशमें अभूतपूर्व उन्नति हुई और उसकी शासनप्रणाली अधिकाधिक जन-तन्त्रात्मक होती चली गयी। धामित, सत्ता और समृद्धिके साथ शिक्षा, सम्यता और सस्कृतिके योगने अँगरेजोंके जातीय चारित्रमको भी उसत एषं परिष्कृत किया, तथा उनमें वुद्धिमत्ता, विवेक, दूरदिशता, उदारता, सिहिष्णुता, न्यायपरायणता और स्वसन्त्र विचारक्षमताका पोपण किया। वहाँकी सत्ताघीश पालियामेण्ट दिवलीय रही जिसमें एक दल नरम उदार परिहतापेक्षी और शान्तिप्रिय रहा और दूसरा गरम अनुदार स्वहितापेक्षी और प्रतिक्रियावादी रहा । जब जिस दलके हायमें सत्ता आ जाती उसीकी नीतिका प्रभाव उस देशके ही शासनमें नहीं भारतके प्रशासनमें भी छक्षित

होता, और शास्त्ररात्र आदि कृष्य नगरिकारी की शही रक्षके करानी प प्रवासितिमें निपृश्य किये बार्ड । यदः बारक्षके वर्षम् जनस्में बीर बावमरायोंने कडी बरव और कवी. नरम श्रीतका प्राप्त कुन्ने जनकर कुमरीका जानेस करनेकाने स्थानन वाले रहे । प्रारमको ही स्टार सम्बार्ड बेंगरेड जारवर्क बर्जुनिय मुख्यकन सामान्यें बार्धी नोंके सहयोग और अविष्यारोची पाँच, भारतीयोची किया-रीवा। माहि वासीयो बससे पी व पुत्रहे बळाडी काव अनुसाह स्वाची आवाचारी आवि नीर्रिको सुन्धे कर बाबोक्स करते रहे और बंध कमी बनके हावमें बता वा नामी ही वे बनने विवासीको पूर्वतः वा अंदर्शः शानून बनाकर अवदा नैदानियों, चेत्रपानी और नारेकीनारा कार्नोल्क करवेवा प्रकल करते । मार्डमाची किन्मे-के मनेक बीवरिट्रॉफे क्षान्वर्जने माद्रे में, बहुए-के विविश्व और होते माते में कुछ एक स्टोनकी बाबा की कर करों में बीर बनेक बरार वर्ष बनीवी बैंगरेश्रीके विचार-विकिश्य करते थे, प्र विवारोंके समयत होने समें और स्वयं सरकार-हारा ही। मोडीना दिने मने

विकारियों केन वाले करें। रेज, यात द्वार, व्यावारूपय वार्राव्यों स्वयमते ऐसे वार्षिय देखते विधित्व वार्री और वार्षिये जारा होतें कानूस्त वाराव्या थे। दिस्त केन दिव्य प्रवासन इंतर्स पार्थी वार्षिय पार्थित पहुंच तथा क्षेत्राची कार्यामी वार्षिय वार्यों वार्ष्या प्रवासी कार्या प्रवासी पार्यक्षा वार्षिय क्षांत्र विक्रुप्तार्थी वार्ष्या प्रवासीय कार्या अर्थ कर्म कर्मा वार्षिय क्षांत्र विक्रम तेन्द्र विक्रम विक्रम वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष क्षांत्र विक्रम वार्यक्ष विक्रम वार्यक्ष वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष क्षांत्र क्षांत्र वार्यक्ष वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष वार्यक्ष क्षांत्र वार्यक्ष वार्य

. .

बारतीय इतिहास एवं धी

साहकी होते पे वे सार्वप्रतिक भाषणों, समायार पत्रों, स्मृति-पत्रों अथवा उच्च अविकारियोंके साथ व्यक्तिगत भेंटाके द्वारा सरकारसे टयकर छेने लगे।

नरम दलके शासनमें उनके साथ सहान् भृति प्रदर्शित की जाती. आस्वासन दिये जाते, फुछ अधि हार और मुविषाएँ भी प्रदान कर दी जाती । किन्तु तदुपरान्त जम गरम दलका द्यासन प्रारम्भ होता तो प्रति-क्रिया होनी ओर सरकारकी आलोचना एवं अधिकार-मौगको रामद्रोह और षृष्टवा माना जाता । उससे नेताआ और उनके अनुपावियोंका क्षोम बढता और ब्रान्दोलनमें कुछ गरमी असी तो दमनचक्र चलाया जाता। फुड-स्वरूप सारे देशमें सरकारकी निन्दा होने लगती और आन्दोलन और विधिक उम्र रूप घारण करने लगता। दमन नीति उसे स्यायी रूपमें दवा देनेमें सफन भी हो जातो तो देशको सहानुभूति आन्दोलनकर्ताओंके साथ कोर अधिक वढ़ जाती और स्वय इंग्लैंग्डमे पदण्गुन नरम दल सत्ताधीश गरम दलको कटु आलोचना करने और उसे पदच्युत करनेका नया बहाना ट्रेंढ़ लेता तथा भारत और उसके नेताओं के माथ सहानुमूति एव समवेदना प्रदर्शित करता । सत्ता प्राप्त करनेपर वह पूर्व मौगोंके अनुसार भारतीयों-को कुछ अधिकार प्रदान करता। किन्तु इस बीचमें भारतीयोकी माँगे चससे कहीं अधिक बढ़ चुकी होसीं, अत उस अधिकार प्रदानसे भारतीयों-को कुछ मी सन्त्रोप न होता और आन्दोलन दवनेके मजाय और अधिक बल प्रकडता और प्रगतिवान् हो जाता । ब्रिटिश शासनके प्राय प्रारम्मसे अन्त तक यही क्रम चालू रहा। स्वय अँगरेजोंने ही मारतीयोको अपने विरुद्ध लष्टना सिल्लाया, उसकी यिघि और पद्धिस बनायों और उसके साधन भी प्रदान किये। अस इसमें अत्युक्ति नहीं है कि इस देशमें राष्ट्री-यताकी मावना और स्वात ज्य-आग्दोलनकी चरपत्ति, विकास एव सफलता-का श्रेय अनेक अशोंमें झेंगरेजो एवं झेंगरेजी ग्रासन ही है।

भारतवर्ष छोकको अपेक्षा परछोक और स्वार्थको अपेक्षा परमायपर

वृष्टि राजनेवामा धान्तिरिक पर्वशान मान्यात्विक देव है। दिनीय कर्योद नराचार, बण्याई बारती दश बमदेश्या बदारण महिन्तुण स्पर-कारन और रचनिवेरता बारि नुष इस देवके रिशावियोंके बरेश्वे बायान कुम रहते यह आते हैं। तिमरबात बीट बातायामा प्रथम मोई बाते बराबर रहता बाबा है : प्रतिवा मैचा विद्या-न्द्रबन और विचारबी कर्म-में में क्यो कियोचे पीछे नहीं रहे । स्वाप-रशम और बास-पविधारको सर्वे गीरता तिथींगता और बाह्म इब शा-बाच देव मैंने बाउन निक्ते नकिन है। नर्नरीए हो कर्ववीर हो नकता है वह इस भारतीय काविता बारचं रहा है बीर इनको स्थानका स्थानक मचौरू माने कर्त्यस्थानम और दूशरोंके अधिकारीया आक्षर करनेते सर्वत मानकक बने प्याप्तित जापारिक रही है। निर्देष्ट्रय अनिवेदी स्थार्थन्य वैकार्यक जापार्थियो के साम्बारी बाजुन हम देवती बनेत बाद परानुत ही सा पता । क्यि बह बरावर वर्षस महिन एवं महस्रवास रहा और बारवरी मार्टी-बना तथा बनके स्थानमा हैयतो यह कथी थी वित्रोय न कर कथा है बॉनरेजींसे नमें को जीर जितने की निरेक्त जातान्या पत सेवनर बावन करतेकी शोरतके बाने कर्ने पातिस होकर पाना नहां कर्ने बारकेन्छा है र्दश्में रेवना पड़ा और इस देवने इस्तेकी जात्मनालु करना बड़ा । देखा का वर्षक देवने ही एहा देवके दक्का बसोच-बन्तों और स्थापक-अवस्थान-के कारण विदेशीया जी यन विदर्शन क्षत्र रहा देशमें माता रहा । देशमी वार्तिक सामग्रीक्य एवं पार्तिक विश्वति और सहवान बोक-जीवनगर मी क्षत्रमा दिवेद सदान गरी पहर । देवको अन्ते प्रतिकादे व्यविक सत्त्रम बहैर वालेल इयक - इति-सहिक वालवार और कारीवर क्या कंडे-कंडे

इक्तररायें एवं न्यायरियेंना रही है को देखते जिल तथा जिल्लाकरियें में और अब भी है। नुमतवानीके चारत-अवेचके वृष्ट्री को बाद ही कर रिल्मीके पूर्वी नुसरानी एवं सानीय अपस्थान नरेबीकी वी प्रापत र्चांच इस ब्यूबन बनता तक वो हो पहीं । बोर बेहा कि क्वील स्वेल-भारतीय इतिहास पर परि

*

नाय ठोकुरने सन् १९३१ ई० में अँगरेज मनीयी एच० जी० वेल्ससे कहा षा-'मुग्रल शासक भी गौवोंके प्रगतिशील सामाजिक जीवनमें कोई हस्तक्षेप नहीं करते थे। दरवारी शासकोंके बावजूद भी जातीय जीवनकी घारा सहजरूपसे पछी आ रही थी। मुमलमान शासकोंने (अँगरेजोकी भौति) कोई शर्ते घोषित नहीं की और न भारतीय शिक्षा-दाताओं और ग्राम-वासियोंको अपने आदर्शपर चलनेके लिए पीडित किया।' वास्तवमें प्रत्येक प्राम अपने नम्बरदार, मुखिया, चौकोदार, पटवारी, दुकानदार, साहुकार तथा विभिन्न आवश्यक कार्य करनेवाले व्यक्तियोंसे पूर्ण और अपनी शुद्ध जनतन्त्रीय प्राम पचायतसे शासित पूर्णनया आतम परिपूर्ण, स्वनिर्मर और स्वतन्त्र था । साम्प्रदायिक एव जातीय पचायते अनेक ग्रामों, नगरों और पूरे-पूरे प्रदेशोंकी जनताको अपने स्वायस शामनमें बांबे हुए थीं। राजा-महाराजाओं, सुलतानों और वादशाहाकी स्वाधीनता-पराधीनता उनमें स्वयंमें परस्पर एक-दूसरेके सम्बन्त्रसे थी, सामान्य जनताका उधसे कोई सरोकार या विशेष हानि-लाभ नहीं था। अपने राज्य या प्रदेशको स्त्रा-धीनताके संप्राममें माग लेनेके लिए यदि सामान्य जनसाका आह्वान किया जाता तो वह भी उसमें महर्ष भाग ले लेतो । किन्तु प्रथम तो उपरोक्त पराधीनता भी प्राय अल्पस्थायी और परिवर्तनशील रहती थी, दूसरे ये स्वाधीनसा संग्राम भी क्षणिक एव अल्प हानिकर होते थे, तथापि वे देशकी समस्त अनताको सदैव सजग सचेष्ट और आत्म-रक्षा में समर्थ बनाये रखते थे। १९४७ ई० में प्राप्त स्वतन्त्रताकी नदीके वास्तविक अट्ट एवं अअस चद्गम स्रोत भारतवर्षको चपरोषत भारतीयसा, स्वभाववैशिष्ट्य और सनातन संगठनमें ही अन्तर्निहित है। उन्हें अन्यत्र खोजना उपर्ध है। अँगरेजाने इन स्नातोंको सुखा डालनेका सर्व-प्रथम भगीरय प्रयस्न किया किन्तु साथ ही उनके फूट पड़नेके अन्य द्वार स्वत ही खोल दिये जिनके कारण ये मूच्स्रोत भी सबया न सूख पाये । राष्ट्रीयताकी मावना और स्वात अव-आन्दोलनने इन स्रोतोको सूखनेसे रक्षा की और इन्होंने हिग्णित

वैन्ते बाद बहुद सारोमत्त्री अनुदृष्टं बन वृदं ह्यकि तरान ही। पुरस्ताम्-माराविक साराविक प्राप्त करते जन्दे स्था वह देवी नीव सारा राज्यकानातिक सिंह मुद्द करते हैं। जित्र बदान साराविक सिंह विकास सेवारी साराव एवं स्वापी की सारावा करते सेवारी स्थान

मेरेबोरर मेरेकी पावन पूछ रचाती ही नया वा नहीं मंत्राके स्वयन मोर बेनार विद्यानकी बरवाएँ होती पहीं। १८५७ हैं में वह मन्त्रीत स्वात बार्वावक मराल माराको मेरेबी पाराहे मुक्त बधारे स्वि विभावता । १५वी धरीने पूर्वारेंने ही रामा धर्मात्रवाम सेयरणा नेय

देवेग्रानाव टापूर जारिने देवशी प्रातृत करवेका अवस्य बारश्य कर दिय मा । करानी के हेटरेरे रेटरे और हटरेरे हैं के आधारती, हटीरे र्व को कार्नपुरको भारतात विका-बन्तानी हिलाई, १८५८ वें वी महारानी विक्रीरिकाकी विक्रतित और १८६१ ई के पुनिवस कीलिय एक मार्टिक कण्यरका समेक भारतीय अंबरेशी किया प्राप्त कामे करे में और प्रपादित कामने अन्तर्भन अन्ते देश विकासीने अवसन होने रूपे मैं । स्थापी वस्तान्य शामपुष्प परमाईन विवेदानम्य ईरवर्यन्य विद्वासायर मीनवा रूपीवेडेन्ट, स्थामी सारवाराज साहिने वर्व बीर बमाज बुचारे मानोकन पताकर देवको जानून करना बारान कर दिवा था। १८७६ है में पुरेत्रतान बनजी, मानन्यबाहन बीच हार लागर संस्कृत सामित बारधीर वंपकी स्थापना की, धोवले और रामादेन वर्षेन्द्रन आह प्रतिद्वा बोबाउरीकी क्यारता को और दिग्द्र नशक्षमा सैन-नडासमा साहीरको सेनुमत सर्वि अरेक बना-बोलाइटर्स की स्वतीना हुई । काई रिकानाय काहिनर त्रेष केल पर कर रिवे आनेहे लिक्स केवी. जानाओर जी स्वानन्तापूरेक क्रमाणात्त्रम निकृतने समे । सोगोरी स्ट्राने स्वकृतः विचार त्रकट करवेत्रे क्षमा वर्षी जाने मन्त्र वेक्सकियों तक पहिनाने के लिए समेक बावम वर नये । इत वर्ग मिक्कर राजवैद्येक बार बाजोंको अरक वर्ग पुर करना बक कर विधान

१८८५ ई॰ में ए॰ बो॰ ह्यूम नामक एक खेँगरेज डिविजियनने सर विल्यम वैहरदर्न, सर हेनरोकाटन, नार्न पूज लादि उदा हृदय लारेडॉ सीर मुरेन्द्रनाय बनर्शे, दादामाई नौरोजी, फ़ीरोजशाह मेहना, दिनशा बाचा, स्टरुहोन तैयदजी, के० टो तैला, महादेव गोविन्ट रानाडे बादि मारतीय बद्याानी सन्तर्नोके सहयोगसे सम्दर्दमें इण्डियन नेशनल कौरमको स्यापना को । स्योमेशकम्द्र वनर्जी ठनके प्रयम समापति वने । भाग्यनचे ही काँग्रेसको पूरे देशका प्रतिनिधित्य प्राप्त हुआ। उस समय सरमारके प्रति काँग्रेसका भाव पूरा मत्रीका था। लोर बहुत पीछे तक इस स्स्याका लक्ष्य द्विष्टितः साम्राज्यक बन्दर्गत स्वाग्यः प्राप्तः करनेका दना रहा । १८८६ ई० में बायमराय इक्तरिनने काँग्रेस नेताओंको कलकत्ताके राबनदन्में प्रीनिमाजके लिए सामन्त्रित किया। किन्तु उसके उररान्त ही काँद्रेसने अपनी नीति दिरामात्मक एवं आलोचनात्मक सना छी अतः सन्तर उने संकारी दृष्टिमें देखने लगी और १८९० ई० में लासा प्रचारित का दी गयी कि कोई मनकारी कमचारी उनमें भाग न ले। मुमन्सानोंके नेता सर सेयद अहमदखीने कपिमका विशेष किया और १८८८ ई० में अपर इष्डिया मुमल्मि एसोमियेशनकी स्वापना की, किर मी क्यिसके छठे अधिवेद्यनमे २२ प्रतिदान मृसन्मान मे । १८८९ ई० में० चार्स्स दैहला नामक पाल्यामेण्डका एक छडन्य काँग्रेस अधिवेदानमें सन्मिल्छि हेरा और फुरम्बस्य १८९२ ई० का ऐस्ट पास हुआ। किन्तु बनताका क्ष्मलोप बद्धता ही गया ।

महाराष्ट्रमें सोकमान्य बाल गंगाधर विष्टवने राष्ट्रीय आन्दोलनकी वह कर दिया। उन्होंने अपने 'केमरा' नामक मराद्ये समाकारपत्रमें नरकारको साद्र बटु आनोबना करनी प्रारम्भ की और विद्यावियोंको विरोजित किया। उनका पत्र बन्द कर दिया गया और स्त्रय उन्हें बैज्में बाल दिया गया। पत्रावमें सास्य सावत्रसम् और बनासमें दियनवन्द्र पाल भी उन्होंकी नीतिके समर्थक ये। बद्रिसमें बद्र नरम और गण्य दी

इन्स्यान युग



तिरोष नहीं किया। युद्धकालमें श्रोमतो एनोवेशेण्टने होमस्तल आन्दोलन पालू कर दिया और अपने पत्र 'न्यू इण्डिया'-द्वारा उसका उत्माहपूर्यक प्रचार किया।

१९१६ ई० के छलनऊके काँग्रेस अधिवेशनमें नरम और गरम दल फिर मिलकर एक हो गये, मुसलिम लीगके माय भी समझीता किया गया नो लखनक पैक्ट कहकाया और स्वायस-ज्ञासनको सरकारसे माँग की गयो। कांग्रेसने एनीवेसेण्टके होमएल आन्दोलनको भी अपना लिया। भारत-मिवव मोण्डेग्युने भारतको युद्ध-सेवाओको स्वीकार करते हुए उसे सन्तुष्ट करनेका आस्वासन दिया और १९१९ ६० का ऐवट पास कराया। किन्तु इसके पूर्व हो राज द्रोहके दमनके लिए रौलट ऐक्ट पास कर दिया गया था जिसके फुलस्वरूप अमृतसरमें हायरगर्दी मची और जनतापर मयकर अत्याचार किया गया। लोकमान्य तिलककी हमी वर्ष मृत्यु हुई, महायुद्धका भी अन्त हुआ और महात्मा गान्घोने जो दक्षिण अफोकार्मे गोरे सोगोंके विरुद्ध छेडे गये आन्दोलनके कारण पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुके घे, भारतीय स्वातन्त्रय-प्रान्दीलनमें पदार्पण किया । उन्होंने रीलट ऐक्ट और जिल्यांवाले वागुके हत्या-काण्डका तीच्र विरोध किया तथा जनताको सस-हयोग आन्दोलन चालू करनेको सन्ताह दी । तुर्कीको युद्धमें घम्रोटने एव खिलाफ़दको मष्ट करनेके कारण मुसलमान भी अँगरेजोंसे चष्ट हो गये चे और उन्होंने खिलाफ़त आन्दोलन छेड दिया । महातमा गान्योने जो अव कौंग्रेस तथा स्वातन्त्रय-सम्रामके नेता बन गये ये और पूण अहिंसक नीति-के पालक थे, खिलाफ़त आन्दोलनको अपनाकर मुसल्मानोंको भी अपना सहयोगी बना लिया।

१९२१ ई० में असहयोग एव खिलाफ़त आन्दोलनने वहा उग्ररूप धारण किया। स्कूल, कौलेज वन्द हो गये, अनेक वकील-मुख्नारोंन बनालत छोड दी, कुछ लोगोने सरकारी उपाधियाँ त्याग दीं, बहुत-से सरकारी कर्मजारियोंने पदस्याग कर दिया, विलायती वस्त्रोंकी होलियाँ जलीं, विदेशी बर्दू में वा विरुत्तर हुए में एक वह वह महरू शे बुद कर मी। विष् भेरमा (विदेश मीर भी प्रोप्ती) वनको माधीनको मार्ग मध्या निया गई गया। अपराप्त बस्त-मह सीर्थि बाद पत्र पत्र प्राप्ता वस्त्रा कर्मी, स्में अमेर नेता मोर हमार्ग पार्च कर्ती ने बीर्ड हुँ (देव वह । दिए पुरुप्तारी पारत्य पुर और वेशवंद सराम पर्ता (दार्ग प्राप्ता क्षा क्षा क्ष

विकेतके सर्वारम् नेताकोवे यो वोलिशः प्रवेतके प्रस्तरः यूट यह स्वी । विनरंत्रम राज कोर सोर्गनाल नेतृककोते नेता कोशिशः प्रवेतके राजवे गी वर्ष । १९९६ हैं में सार दर्शका वायवरात द्वाराः क्षत्रते वार्त्यिय सर्व

ीति वस्ती । वैशानीको वैचके मुक्त वर दिसा और हिम्मु व्यवस्थिती केल वस्तीया अध्या दिसा । १९६७ है वे वास्त्र वसीधन अर्था दिसा हिम्मु वास्त्र वसीधन अर्था दिसा हिम्मु । १९६९ है वे वास्त्र वसीधीधन के व्यवस्था विश्व । १९६९ है विशेषके आहेर सीधीधनके ये वसारस्थ्य विश्व कर्माचित्रके विष्य कर्माचित्रके विश्व कर्माचित्रके विश्व कर्माचित्रके विश्व कर्माचित्रके विश्व कर्माचित्रके विश्व कर्माचित्रके विष्य कर्माचित्रके विष्य कर्माचित्रके विष्य कर्माचित्रके विष्य कर्माचित्रके विष्य

सार्यामन पहुंच द्वारा । यह यह सार्यामन नशरी वर्ष अवसरित्र विर्माण कर्माची एक ही सीवित्र की या, जाराति प्रतिक तीर सार्याम कर्माची कर्मा है भी एक स्वाप्तिक कर व्यवस्था कर्माची कर प्रदान्ति कर प्याप्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्याप्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्याप्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्रदान्ति कर प्याप्ति कर प्रदान्ति कर

440

मास्रोत इतिहास एक की

र्ष० की दूसरी गोलमेज कान्कोन्समें महात्मा गांची, प० मदनमोहन मालवीय एव श्रीमती सरोजिनी नायडूने काँग्रेसका प्रतिनिधित्व किया किन्तु कोई समझौता न हुआ। सरयाग्रह आन्दोलन फिर छिड गया, नये वायसराय विक्तिगढनने कठोरताके साय आन्दोलनका दमन करनेका प्रयत्न किया और अनेक स्पेशल आहिने स जारी किये। नेताओं और कार्य-कत्तिओं को जेलोंमें भरा जाने लगा। शासन सुधारके प्रश्नपर भी बहस पलकी रही किन्तु साम्प्रदायिक प्रश्न सबसे वही बाघा थी। उसने निर्णय-के लिए इंग्लिस्तानके प्रधान मन्त्री रैमजे मैकडानल्डने अपना कम्यूनल एषाई दिया जिससे और अधिक अस तोप फैला। महात्मा गान्धीने अनदान बारम्भ कर दिया। देशमें तहलका मच गया। अतएव प्रधानमन्त्रीने महात्मानीसे समझौता कर लिया जो पूना पैमटके नामसे प्रसिद्ध हुआ। १९३२ ६० में सीसरी गोलमेज कान्फोन्सके प्रस्तायोंके आधारपर १९३३ 🗣 का द्वेतपत्र प्रकाशित हुआ और उसके आधारपर १९३५ ई० का ऐक्ट पास हुआ। वायसराय छिनछिषगोने इस ऐक्टको कार्यान्वित किया बौर १९३७ ई० के चुनावमें सात प्रान्तोमें कांग्रेसको विजय हुई और मन्त्रिमण्डल धने । किन्तु द्वितीय महायुद्ध छिडनेपर सरकारी नीतिसे मतभेद होनेके कारण उन्होने पदत्याग कर दिया। सर्वत्र आहिनेन्सीपर बाधारित निरक्षा गवर्नरी शासन चालू हो गया । काँग्रेसने युद्धमें देश-द्वारा अंगरेजोंको सहायता किये जानेका विरोध किया और आन्दोलन छेड दिया। मुसलिम लीग और काँग्रेसका परस्वर विरोध एवं मतभेद भी बढ़ता ही गया । मुहम्मदअली जिल्लाके नेतृत्वमें लीगने पाकिस्तानकी मौग पेश कर दी।

सन् १९४२ ई० में स्वातन्त्र्य-आन्दोलनने अति भीपण रूप धारण कर लिया। 'भारत' छोडों प्रस्ताव पास करके काँग्रेसने ही नहीं बल्कि सारी जनताने आन्दोलन मचा दिया। रेलको पटरी हटाना, सार काटना, स्टेशन, डाकस्ताने आदि जलाना, ऐसे अनेक उत्सात भी यत्र-तत्र हुए।

क्वर मुख्यें वर्मनी और अध्यालको निजय हो रही की भारतीय केर नेवामी नुमाममन्त्र मोतने जानी जाबाद हिन्द बेतावा निर्माण करके बारानको बडान्छाचे बचाना और बद्वागर बाह्रनम कर दिना और मारतके बाबनवरी देशरी थी। परनारने बत्यक बळोरतके बर अल्पारिक विशेष्ट्रण वसन करना सुक किया, बुखना थी राज रक्षाने क्या और निवरास्ट्रॉकी विजय होने करी । १९४४ है में वास्क्रान वैदेवने मार्त ही राष्ट्रीन गैराओंने काम बन्नाबिके प्रवरन पाक कर सिने ह १९४५ है में केवियेट विद्यान और शानिकादीकरो वेबीहैबन माने ! महामुद्ध कर बकारत हो क्या का और बॅबरेडॉले बारतको स्वधन गरनेका fires at fast at : fignet tore & d d e ungrane heat मन्त्रित्तम् अन्तरित करणारणी स्थापना कर वो वनी । १६४७ वे मैं मन्त्रिय नागवराम मावस्त्रोहसमें माते ही बस्त्रप्रस्थानात्रको वार्रवर्ध युक्त कर थी । ३ जून १९४० है भी विशिध शास्त्रियां के बारतीय स्वयानका ऐका नाथ किया और बडी वर्ष १५ बायस्तको आकारी स्वयान

कर दिवा क्या ना वी कदिए भारतकोक दिव्यूस्थान और राजिन्छा नामक वो बच्द करके बोलीको पुन्क-पुन्क स्वयानसा प्रधान कर दी वर्षी । एक वर्ष बाजक्षतेत्रको स्वक्रम बारकान राष्ट्रका क्याँड समस्य स्वतः वेंद्रमारेची तथा क्षांस्त्रातान्त्ररचके सम्बन्धित स्वयं सामानक महोत्री न्यरस्या गाँ। इत पार्की निवासको परिवासकथ दिन्द्र-सुनक्षित दैपकान समिकि कर बता । काली संस्थान सत्तवपान सारवाहे शावितान बीर बनके कही समिक नहीं बक्ताने मुक्तमानितर बन्दा पानिस्तानी मारत बापी । वर्गकर रक्तरात एवं क्रमान हुए मोर क्लबके वक्तनकी तमा वर्जन एवं बाधविक व्यवस्थाको बारी बाँद हुई । वींचान बया इव मीमने बॉनवाल बखती. रही की १६ बकरी

१९५ र के बार्वनिय हुवा। स्वक्रमा-बालीकाशा देशस करते के था करते कहा राजनीवक कर होने क्या जान पुरातने प्रवस्ता सन्त करनेके कारण काग्रेम ही सत्ताम्ब्द हुई और केन्द्रीय एथ प्राय समस्त राज्य सरकारें कौंग्रेसी दलकी हा बनीं। सवनात्र स्वतन्त्र गणकात्र भारतीय राष्ट्रका इस प्रथम प्रजातन्त्रात्मक कॉंग्रेसी सरकारने समस्त देशो राज्यों और जर्मीदारियोका अन्त कर दिया, देशको विविध क्षेत्रीय चत्रतिके लिए प्रवम पचवर्षीय योजना चालूकी और उसकी समाप्ति होते-न-होते द्वितोय पषवर्षीय योजना चालू कर दो । अन्तर्राष्ट्रीय जगत्में भो भारतने सम्मान एव प्रभावपूर्ण स्यान प्राप्त कर लिया। देशको स्वतन्त्र करनेमें चाहे वह स्वतन्त्रता कितनी ही सुजी, बृटिपूर्ण और चलप्तनोंसे भरी हुई रही, इस देशके निवासियोको स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके योग्य बनानेमें और स्वतन्त्रता-प्राप्तिके उपरात उसका संरक्षण करनेके लिए उनके समर्थ होनेमें अँगरेखी शासनका मी हाथ रहा है—इसमें स देह नहीं है, तथापि इस सबका प्रयान श्रेय भारतवर्षकी भारतीयता, देशवासियोंका अन्तर्निहित स्वातन्त्रव-प्रेम, उनके अनगिनत विविध बलिदान और विषम परिस्थितियोमें किये गये चिरकालीन संघर्षको ही है। देशने स्वय स्वप्रयत्नसे ही स्वतन्त्रता प्राप्त की है और उसी प्रकार वह उसका सफल सरसण एव उस्रति करेगा।

बिटिश शासनमें देशकी कृषि, उद्योग-धन्यों, व्यापार और व्यवसायों-का भी पुनष्त्यान हुआ। विभिन्न नियमित बन्दोवस्तों, टेनेन्सी ऐक्टो, मूमि आलेखों और सुविस्तुत भूमि प्रशासन द्वारा देशकी कृषि-मूमि तथा कृषि योग्य भूमिकी समुचित व्यवस्था की गयो। कृषि आयोगों तथा सरकारी कृषि अनुसन्धान समिति, सहकारिता विभाग, कृषि प्रदश्तियो आदिके द्वारा कृषि और कृषकोकी दशा सुधारनेका प्रयत्न किया गया। नहर, कृषे, ट्यूबवेल, बाँच आदि विभिन्न उपायोको विस्तार देकर सिचाई-का सुप्रवाध किया गया। चकवन्दी, नवीन प्रकारके रासायनिक स्वाद तथा यान्त्रिक उपकरणोंके प्रयोग भी कहीं-कहीं चालू किये गये। इस कृषि-प्रधान देशको लगभग तीन चौथाई जन संख्या खेतीपर हो निर्भर रहती क्षार बुढरी समेंनी और जापालकी चित्रव हो रही की बारतीय कीर वेदानी तुमानपन्त बोधने मएनी बाजाद दिन्द केनावा तिमीत वर्षे बारामको बहानताचे असता और बहानर शाक्षमम कर किना और बारतके बावनकरी वैवारी भी। बरकारने बादना क्योरताके वार वान्तरिक विशोहका दक्षण करना सुक किया, बुद्धका भी नावा नत्वाने क्षमा और विकास्त्रीको विकास होते सभी । १९४४ ई. में समस्यान वेबेक्ने बाते ही राष्ट्रीत नैदाबोके बाब बालांदिके तकल बालू कर कि । १९४५ ई में नेजिनेट विका और याजिमानेक्ट्री देवीरिका माने ! महानुश बब बक्त्य हो क्या वा और बॅबरेडॉने नारतको स्वजन करनेस नित्तन कर किया या । तिवानर १९४६ वें में म अवस्थान नेहन्ते मनियानों सन्तरिम क्रांगारकी स्थानमा कर वी वसी। १६४७ ई वे वान्तिय पाननपान सावन्यमेरनने मार्चे ही बताबुक्तान्तरमधी कार्यमें मुक्त कर दी। इ जून १९४७ ई को ब्रिटिस व्यक्तियोजनी भारतीर स्वतन्त्रता ऐक्ट पांच किया और वंदी वर्ष १५ मनस्त्रकी भारतकी स्वतन्त्र कर विश्रा कता वा की कश्चिए जारदनवेंके शिव्युस्तान और वावित्रका मात्रक हो सब्द करके शैलोको पुनुक-पूनुक स्वयन्त्रता प्रधान कर दी नहीं ह एक वर्ष भावन्त्रवेदनवे स्वयान चारधाव राज्यका क्वार्वर वारक धाकर

141

बास्टीय इतिहास : एक वर्षि

मिर्ले सून कातनेका कार्य करतो थीं, कपडा इन्लैण्डमे ही बनकर आता था। जमशेदजो टाटाने लोहेका कारखाना पहले हो चालू कर दिया था । कुछ अन्य चोजांके कारखाने भी स्यापित होने लगे। १९१४ ई० के महायुद्ध<mark>चे इन</mark> चद्योग घर्षोको भारी प्रोत्साहन मिला और उन्होन अमूतपूर्व प्रगति की । लोहा, सूत और चीनीके उद्योग विशेषरूपसे चमके, कुछ मिलें वस्त्र भी बनाने सर्गो । १९१८ ई० को सरकारी इण्डस्ट्रियल कमादानकी रिपोर्टमें देशको अोद्योगिक उन्नतिके महत्त्वपर वल दिया गया और उन्नतिके अनेक चपाय सुझाये गये । १९२४ से १९३९ ई० के बीच भारतीय मिल-उद्योगने अपूर्व उन्नति को । वैग्रानिक अनुमन्यानद्यालाओ और कई स्थानोंमें पानीसे पैयार को जानेवाली विद्युत् शक्तिने मा इस कायमें मारी सहायता को। प्रत्येक प्रान्तमें एक औद्योगिक विभाग खुल गया, सरकारने सहायता, प्रश्रय क्षौर कुछ द्रव्य प्रदान किया । रेल, मोटर, तार-डाक आदिसे यातायातकी सुगम सुविधा भी ब्रत्यन्त सहायक हुई। दूसरे विश्वयुद्धने भारतीय मिल-चेद्योगको और अधिक प्रोत्साहन दिया। फलस्वरूप स्थतन्त्रताब्राप्तिके समय तक भारतीय उद्योग-धन्धे पर्याप्त विकतित हो चुके थे और दैनिक चपयागको चन वस्नुओंमें-से जो पहले विदेशोंसे आयात की जाती थीं, अधिकतर अब भारतमें ही बनने छगों। इतना ही नहीं, कुछ वस्तुओं का भारत कतिपय विदेशोंको भी निर्यात करने लगा । मिल-उद्यागके उत्यान-क कुछ पहलसे ही भारतीय व्यापार और व्यापारियोंकी दशा भी उन्नत होने छगो थी। उद्याग घाषाक उत्थानने उसे और अधिक उन्नत किया। घीरे घोरे दशके आन्तरिक व्यापारका अधिकाश तो उनके अधिकारमें बाता हो चला गया, घोडा घोडा विदेशो व्यापार मा उनके हायमें आने छमा। अनेक अँगरेजी या अन्य विदेशो कम्पनियों और फ़र्मोंमें भी भारतीय हिस्सेदार, साझोदार या प्रधान कायकर्त्ता, मैनेजिंग एजेण्ट आदि होने लगे । वर्तमानमें देशका अधिकांश देशी एवं विदेशी व्यापार देशवासियोंके हायमें हैं। व्यापार और उद्योग धन्धोंक संघालनके अतिरिक्त धकील, बैरिस्टर,

नष्ट हो मानेवे सीरीपर और व्यक्ति बार बढ़ नदा वा । बँगरेवी न्यासर्ने द्वारा ही कराच जील जूट, तर चार बादि रशबंदि किए विरे*त*े राकारोंकी स्टेन सहवेके प्रमा कथानीको कृतिका क्षेत्रकन वह स्थ्य का मिक-मजबूरोंकी बहुदी हुई बंबताने कुनशीकी संस्थाने क्रमी की रेडीके विस्तृत बाब और बंक्बोफे झाइने वी कृषिको बाँत गा<u>र्</u>चेचारी। पानीन प्रवर्धका पूर्वकारीन स्थानिर्वेट स्वतन्त्र प्रपेष्ट वीरव शर्मिक सक्ता हो गया या । मुख्यनेदारीके स्वकारे क्ष्मा सर्वत्त्र वर्ष मैशिक क्या बीट समिक किया । क्या मिरामधी ईमानशर परिवर्ती बीर कार्नेपुष्टम होते हुए थी. विदेश स्टानको जनसम्बद्ध तम इन्होंकी क्या वर बायनके कारण ही अल्लान जीवनीन ही करी थी। विश् विदेश कार्यको ही बच्चे बसायर्थ कार्यने क्यारेखा विदेश बचाये हाएं देखकी होते. और हमक्रीके पुरस्तरामका अवस्य जारान्य कर दिसाया। १९४ है के मान्योक्तवे ही प्रामीय क्याप्तरे अपनी राष्ट्रीय केरण चीर-बोरके व्यक्त करती आरूब कर को को और सबेक संबंधि स्वाराज मान्योक्तको बक्तकदाका जेन देवको सङ्गान धारीम बक्तानास करने

मानी है। वॉनरेवॉफे प्रारम्बक प्रवासी-प्रारा देवके वरेक व्योक-सन्बंति

किने की धारती है। देख प्रतिका करानीने बारतके ताव- सबी बहुरावर्ष स्वीत-वार्थी को प्रयासकृषिक गष्ट कर विचा था । १८५७ ई के बनशाया मी इंड रक्ती वक वरकारने वनके पुनक्तकानको कोई होत्काहन नहीं दिया। रिन्यु नवरेक्या और मानुविके प्रवास क्या मुख्यस्य और सार्विके गुरी^{स्त} पुण पुरस्यी मारतीयोले परिचमी मान्तिक प्रचानीयर देवके गतिना क्योन-क्लॉका कुल्प्स प्राप्त कर दिशा। १८७६ ई. इक वासीन निजीनी जेवरा ५८ मी और १८८६ है एवं बढ़ ६ हो बसी जी। रेल

वीं सरीके प्रारम्य एक ए . तिसे क्यापित हो अबो की जिनमें रेक करीड़ परन्य क्या था और थी काब बढ़ार मात्र करते थे। श्रांत्यांच मिर्चे सूत कातनेका कार्य करतो यों, कपड़ा डाईण्डेने ही बनकर आता था। वमशेदको टाटाने लोहेका कारखाना पत्रले ही चालू कर दिया था । कुछ अन्य चौजोंके कारखाने भी स्यापित होने लगे। १९१४ ई० के महायुद्धने इन च्योग-च पाँको भारी प्रोत्साहन मिला और उन्होन अमूतपूर्व प्रगति की। छोहा, सूत और चौनीके टद्योग विशेषरूपस चमके, कुछ मिलें वस्त्र मी वनाने लगों । १९१८ ई० को सरकारी इण्डस्ट्रियल कमाधनकी रिपोर्टमें देशको बोद्योगिक उन्नतिक महत्त्वपर यल दिया गया और उन्नतिक अनेक चपाय सुझाये गये । १९२४ से १९३९ ई० वे बीच भारतीय मिल-उद्योगने अपूर्व उत्तरि की । वै रानिक अनुसन्धानशालाओं और कई स्यानोंमें पानीसे वैयार को जानेवाली विद्युत् शक्तिने मा इस कायमें मारी सहायता की। प्रत्येक प्रान्तमें एक औद्योगिक विमाग सुज गया, सरकारने सहायता, प्रथय भीर कुछ द्रव्य प्रदान किया । रेल, मोटर, तार-डाक आदिसे यातायातकी सुगम सुविधा भी अत्यन्त सहायक हुई। दूसरे विश्वयुद्धने भारतीय मिल-उद्योगको और अधिक प्रोत्साहन दिया। फल्स्यरूप स्वतन्त्रतात्रास्तिके समय तक भारतीय उद्योग-याचे पर्याप्त विकक्षित हो चुके ये और दैनिक चपयागको उन वस्त्ऑमें-से जो पहले विदेशोंसे आयात की जाती थीं. अधिकतर अब भारतमे ही बनने लगों। इतना ही नहीं, कुछ बस्तुओंका मारत कविषय विदेशोंको भी निर्यात करने लगा । मिल-उद्यागके उत्यान-के हुछ पहलेसे हो भारतीय व्यापार और व्यापारियोंको दशा भी सन्तत होने लगी थो। च्छाग धन्धोंक उत्यानने उसे और अधिक उन्नत किया। घीरे-घोरे देशके आन्तरिक व्यापारका अधिकास तो उनके अधिकारमें वाता हो चला तथा, योडा-योडा विदेशा व्यापार मा उनके हायमें आने लगा। अनेक अँगरेजी या अन्य विदेशी कम्पनियों और फ्रमींमें भी नारतीय हिस्सेदार, साझोदार या प्रघान कायकर्त्वा, मैनेजिंग एजेण्ट आदि होने लगे। वर्तमानमें देशका अविकास देशी एवं विदेशी व्यापार देशवास्त्रियोंके हाथमें है। व्यापार और उद्योग-धन्योंक सचालनके अतिरिक्त बकोल, वैरिस्टर,

करित हुए । विश्वनी तथा बन्नकी सहावताने जनवीयमें बार्वपाने वनवित्र क्षपरची बावनी नुनिवासी और शिवनित प्रशासने सामैपाने वरिपयी वैज्ञानिक व्याल्पकारीके शाम जातिने बोचन निर्वाद मेहना बनाना जीवन स्वरको क्रेंबा बटाया मीनव मीवनको स्वरत्वा बदानी मीर बीक्न-शंबाको सदिल दर्श क्य बना दिया । इन प्रकार परिचरी देवीके लगुरुर मारवका वर्षतीमुन्धे आविक कुक्सचान हमा त्रिक्के काम वी है और इक शास्त्र से है। विया-वादिस्त बाव-विवाद और ककातीका की पुरस्तवात हुना । मरामद्वारातमे माध्यरी ससी विश्वान्त्रकता और वस्ते बार्य किन्य-किन्न और प्राय: वश्र हो चुके में । य श्रायोके प्रारम्भिक सरिवारियो ने अपने स्नार्थ और मुश्चिमके किए अंबरेजी फोर्निको मुख माराविकी मान्तरपंता बहुनुष भी और ष्रथंभी पुलिके किया अवल पास क्यांन क्यों कामनें 40 सामक कार्यभेग, नाई कार्यं भेगरेक नागरितीने में देखाई वर्षण अभार वर्षकी माननाहे मारतीयोंनी विकास करवेडी मन्तर पासू निमा धाराधाना और शक्षक बनानेका एक नारवाना में कोका वक क्षतावार-एक की विकास और बाइनिकरा कई मारहीर मान्यमंत्री अनुसार प्रपादित किया । पुत्र सेनरेड प्रतिकारिमीने स्थापः चुकार बनच विकास स्थिते किए सासीम साहित्य गर्न, बंस्क्री, पुरायस्य और प्रविद्वासस्य अध्यक्त त्यानु विका और नेतान वीतवाहित क्षेत्राहरीनी गीव वाली । जक्षतरीतें वृक्ष स्वरका सीर स्वारको पर बंखा परित्र स्थापित हुए । १८वीं कर्ता है के सलित पर्यो

बररीना जनलींके करपान १९वीं वातीके अच्या कार्य बोर्टरी

19

भारतीय इक्सिक्स : एक वी

नुकार बटार्री भारतिवटर योक्टर प्रीतिनया, क्रम्याच केवर बरायक नवशर बतावल विश्ववद्वार केवेतिक आर्थ देवे करण्यों बीर कैर-बारारी कार्ड वसा कैसे क्रमी जारिको कर्यों जल बतावरी केवर्ड वो प्राप्तवित्त कार्ड कोक नवेत राज्यात विदिध बाक्तवार्णि शिक्षा और अँगरेजेंकि निकट सम्पर्कसे लामान्वित राजा राममोहन राय, राषाका तदेव, जयनारायण घाप आदि भाग्तीय प्रतिष्ठित मनोंने और इन्हैंण्डमें ग्राप्ट तथा विल्बर फ़ोर्सने भारतमें विक्षा~ प्रचारके आन्दोलनको प्रगति दी। १८१३ ई० के सम्पनीके चार्टरमें सरकारने इस मदमें एक लाल रुपया यापिक न्यय करनेकी स्वीकृति दी, १८१५ ई० में गवर्नर-जनरल लाई हस्टिंग्सने अपने सरकारी महिंददेमें शिक्षा-प्रपारके महत्त्वपर जोर दिया, १८१६ ई० में कलकत्तेमें हिन्दू कॉलजकी स्यापना हुई, १८२३ ई० में कलकत्ता वुक सोसाइटी एव कलकत्ता स्कूल सोसाइटोकी स्यापना हुई तथा ऐडम और विल्सनकी अध्यक्षतामें सार्व-जिनक शिक्षा कमेटीका निर्माण हुआ। १८३३ ई० के चार्टरमें शिक्षा-व्ययकी सरकारी रक्तम वस लाख कर दो गयी। १८३५ ई०में लाई वैटिक-ने गिक्षाका माध्यम अँगरेजी निहिचत किया। १८४२ ई० में पब्लिक इन्द्रवान कमेटीके स्थानमें कौन्सिल आंक्र एजुकेशन स्थापित की गयो । धयुक्त प्रान्तके गवर्नर सर जेम्स टाम्सनने देहातो स्कूलोंकी स्यापनाका कार्य मो प्रारम्म कर दिया । १८५४ ई० में चार्ल्स वुष्ट-द्वारा प्रस्तुत सार्व-निक शिक्षा सम्बन्धी रिपोर्टमें कहा गया था कि "शिक्षाके सिवाय और कोई प्रश्न ऐसा नहीं है जिसपर सरकारको सबसे अधिक घ्यान देना पाहिए। भारतवासियोको वे नैतिक एव आर्थिक लाभ जो केवल विद्योग-र्षेनसे ही प्राप्त हो सकते हैं, उपलब्ध कराना सरकारका पवित्र कर्त्तव्य हैं। हम चाहते हैं कि भारतवयमें ऐसी शिक्षाका प्रवार हो जिसके द्वारा जनताको यूरोपके साहित्य, विज्ञान, दशन, कला आदिका ज्ञान हो।" रिपोटमें यह भी कहा गया था कि "सार्वजनिक शिक्षाके लिए मातुमाया ही प्रधान माध्यम है परन्तु अध्यापकोंको अँगरेजीका ज्ञान होना आवश्यक है। देशो भाषाओंको अबहेलना नहीं करनी चाहिए, किन्तु जहाँ कहीं अँगरेजो भाषाके पढनेकी इच्छा प्रकट की जाये वहाँ उसका प्रचार करना स्लाध्य है।" फलस्वरूप विभिन्न प्राग्तोमें पृषक् पृथक् व्यवस्थित शिक्षा- बोदिनों, राजनो त अर्थाद अर्थक नवीन कावनाय जिटिय साक्यकार्य र्वारत हुए । विश्वनी श्रम्भ अवसी अहाचनात्रे क्वर्यानमें आनेशने अनिरात्रे वारपाणी कार्या मुख्याओं और शिवारीत प्रधानमें मानेवाले परिवर्ते दैसर्गनक सर्वत्रकारीके मान साचने बोवन निर्वाद बेंड्सर बनावा चीनन स्तरको कथा बस्तरा जीवन बीवनकी सरदाता बहानी और धीया भंगरेंदो बहिल क्षे उप बना दिया । इन प्रकार परिचयी देखींक सनुवर्ष मारवया नर्वतीनुत्री जानिक पुरुवानान हुना तिवके बाब बी है और कुछ दानियाँ भी है। विका-बादित्व जान-विज्ञान और कथाबींका को पुनवत्वान हुना र मराज्यतावानमें मारवंकी अपनी श्रिज्ञा-न्यपन्या और अनके बावने किल-नित्त और प्राय: नष्ट हो लुके थे। यजनीके प्रारम्भिक मधिकारियों मैं करने स्वार्थ और मुनियाके जिल् अंवरेजी वहे-विक्री पुण मार्की मैंसे मान्यस्था बहुत्त्व की और बनरी वृतिके किए प्रवान पासु किया न कवी शास्त्री केंग्रे शासक कार्यमेन बार्ड कार्डि जैसरेक वार्यायीने की र्वताई जनका सचार करतेकी जानकांक्षे जारतीकांको क्रिकित करतेका मक्त पासू रिन्दा, साधकाना और नावड क्लावेडर एक नारकाना मी बोस, एक क्याचार-पत्र थी निकास और बार्डनसका कई बारडीन मानामीनै बनुवार प्रशासित किया । पुत्र मेंशरेड व्यक्तिपरितेने स्थान्य-पुचाप नवस निकासा यूप्टिके कियु मारतीन साहित्स पर्ने बंदानी, पुरावरण और श्रीवद्मावका अध्यक्त चालु किया और बेनान स्वित्यदिक क्षेत्राइदीकी बीव बाबी । कन्नकरीमें वृक्त करावा और क्लारवर्ष दर्ज संस्तृत क्रांकेन क्यांका हुए । १८वाँ घटी ई के सर्वित कार्य कररोका जनतीके कररान्त १९वीं वर्तीके प्रथम करने लेक्ट्री भारतीय इच्छिता वह सी 11

बुक्तार बटली क्रांसिडिटर डॉस्टर एंडीनियर, जन्मानक केवर बन्तारन वयदार जनावन विवसत्त्रपुर केवेनिय ज्ञारिको बरसायै और बैर-बरनारी स्टूडरी बचा वेंडी, क्रमों जारिको वयारी, जन्म बरसाये मान क्या है। अनित्रत गरमारी बदवा गरमार-दाग स्वीवृत्त उपरोष्ठ मनारकी निक्षा-मन्याद्यके मन्तिरिकत बन्ध है है ग्रेग्या निक्तमानती, श्रीक पर्वेश महिला बिरत बद्यालव, नाम्बीश्राक्ष संज्ञाध्रम-लेन। सहर बचूर्ण मीमापै, मण्डारकर रिवर्ष दल्हीतपुर जैस समेक प्राप्यविद्यामीन्दर, छीरवृतिक छंगीयक मन्द्रल, सीम साथ एव खनुन पान-मम्बन्धी विचारेन्द्र, गाम्बदादिक विद्यालय, गाउ प्रात्यक भीर मदरम, सार्यभनिक इतिकालय शादि यत्र-तत्र गुल गर्य । ग्रापनानां, साम्प्रदायिक सा व्यवसायी घराणानस्यामी और वर्षी, समाचारपत्र। माणाहिक मानिक मानिक वमाधिक पत्र-पत्रिकाओं सादिने पा ज्ञानका प्रमार करन और देशको िनित बरनेमें भागे याग-दात दिया। मिनमा और देढियो सादि मनोरश्यन सामुनिक उरकरणीन मा जनगामारणका निस्ति करनेमें म्हायना हो । अमेर प्रशाण्ड भारतीय विदानीन प्रारम्भमें पारपास्य दिश्वानाचे पद प्रवर्धन या महसीगमें और कालान्तरमें स्रथिशीयत स्वताः बान कोर विशानक प्राय मभी विभिन्न एवं विदिय क्षेत्रमि आश्चर्यत्रनक एव स्तुर्य काथ विया और मारतीय प्रतिभाकी प्रतिष्ठा विदेवमें स्मापित की ।

षाय हो विभिन्न भाग्तीय भाषाभा और उत्तक भपन-भपने साहित्यका भी अभूनपुर विश्वास हुआ । चनाना, मगटी, गुकराती, सिमल, व प्रद,
जर्दे और हिन्दी आदि प्रमुग दला भाषाओंने रतुरय प्रगति सी। सस्कृत,
प्राहृत, पाल और अपध्या आदि प्राचान भाषाभाग अव्यवनको भी
प्रोम्माहन मिला। हिन्दी, धगला आदि प्रचलित देशी भाषाभाश सम्पक्
विश्वास बिटिश शासनकालमे ही हुआ। यो उनको बाब्य-भाषाशा उद्गम
पूर्व पर्योप्त विश्वास विष्ठली वाँग छह शताब्दियासे होता आ रहा था, किन्तु
पर्य-भेतन और उनको बैल्याका विश्वास प्राय इसी कालको देन है।
प्राष्ट्रत भाषास विश्वास और पूर्वमध्यकालीन अपभ्रंश भाषाने हारसे उदित
होनवाली हिन्दा इस दशके प्रवाससे स्वत्य विहार और हिगास्यको सराईस लेवर नमदापर्यन्त सहुभागमें अवदारमें जानेवाली सर्वाधक प्रचलित

इत्तरिके सहते करी । १८८२ हैं में वर विकास हम्परनी अन्यवात्रोंने एक विकानानेन निवृत्त हुवा क्षित्रे वित्रारिक की कि कम्माकी विकास प्रचार एवें मुचार बरकारका सर्वश्वत काल्य होता चाहिए, बक्के लिए वर्षे निरम्बर प्रयालगील रहना चाहिए, प्रारम्भिक विकास निर्मेष स्थान देख पारिष्यु स्वर्णाना प्रचल्य स्थानीय हैर-करकारी शांबरियोंकी बींच देख चाहिन, रक्षोंको ब्रोल कन कर देनो चाहिए और उत्तव विकास बरकारकी इच्छ्योर वहीं करना चाहिए । बार्रात्मक वृत्रे धामानिक विकास सरिक-बर बार स्कृतिराज वर्ष विक्तिक बोडीडो क्षेत्र दिवा समा । १९ ४ ई मै श्रीकारम मुनीवविद्याच देख पास हुता । १९१ हैं में बावस्थानी कार्यशारियोध्य हो युक्त बदस्य विका-विज्ञानका करोर्दार अविकास व्या १९१३ दें में विवासियानान्त्रत कर हार्जी जहताके जल्लानि क्षा स्वकृत वारावधी क्योनह सावधा परना बाबार क्याना, रिली, दाका जारि सन्य समेक स्थानीने नने क्लिक्सिका स्थापित हुए जिन्ही के कुछ केवल परीक्षा केलेपाने ही थे। अनेप क्यरीने वाजेय की पूर्व जीर प्राप्तरी निविश क्षे केषेपारी स्कूथोची संस्थाने जारानिक पृष्टि gi i geb ufafrer niert faften alt ftilenn falfteit, pfe मार्थर व्यापकारिक विकासि विकासि मिन् भी अनेक रहत वारित away techn ge : १९१५ \$ & buent fenfent to इरकान्तरित निवस समा दिया अन्य और कनताके स्थानवासित प्रक्रिकी

रियाय स्थापित हुए । १८५० हैं है ही बनुष-बनुष समर्थेने निरारिया-सम कुने रिवीमानेज स्थापित दिने आसे समें । विवासियोंकी बंध्या थी

सीनधेंको कोर रिधा नगा । १९६७ ई. व सार्यातक क्लियों सन्दर्भ करने बचा नहीन्द्री नवंशीतकारे सनुवार देखिक पुर्वकार्यः स्वतंत्र करके करना की भार हु के ले हिद्दील सामुद्रके करण्य क्लियोंकों नीर पिरिय विचानीस्मार्थीको बंद्या तथा कर्क कुमारीने कराने स्थित

**

भारतीय इतिहास । एवं धी

प्राप्त फिया है। अनिगनत सरकारी अथवा सम्कार-द्वारा स्वीकृत उपरोक्त प्रकारकी शिक्षा-सस्पात्रोंके अतिरिक्त कवो द्र टैगोरको विश्वभारती, प्रो० कर्वेशा महिला विश्वविद्यालय, गान्धीजीका सेवाध्रम-जैमी महत्त्वपूर्ण सस्याएँ, भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीटघूट जैसे अनेक प्राच्यविद्यामन्दिर, सांस्कृतिक संशोधक मण्डल, स्रोज बाध एव अनुमन्धान-सम्बन्धी विद्यावेन्द्र, साम्प्रदायिक विद्यालय, पाठशालाएँ और मदरसे, सार्वजनिक पुस्तकालय आदि यत्र-तत्र खुल गये। छापेखानीं, साम्प्रदायिक या व्यवसायी प्रकाशन-सस्याओं और फ़र्मी, समाचारपत्रा, साप्ताहिक पाक्षक मासिक वैमासिक पत्र पत्रिकाओं आदिने भी ज्ञानका प्रसार करने और देशकी शिक्षित करनेमें मारी योग-दान दिया। सिनमा और रेडियो आदि मनोरजनके आधुनिक उपकरणोने भी जनसाधारणको शिक्षित करनेमें महायता दो । अनेक प्रकाण्ड भारतीय विद्वानोने प्रारम्भमें पादचात्य विद्वानोंके पण प्रदर्शन या सहयोगमे और कालान्तरमें अधिकांशत स्वत भान और विज्ञानके प्राय सभी विभिन्न एवं विविध क्षेत्रोमें आश्चर्यजनक एव स्तुत्य काय विया और भारतीय प्रतिभाकी प्रतिष्ठा विश्वमें स्यापित की।

साथ ही विभिन्न भाग्तीय भाषाओं और उनके अपने-अपने साहित्यका भी अभूतपून विकास हुआ । वगालो, मराठी, गुजराती, तिमल, कल्लाइ,
उर्दे और हिन्दी आदि प्रमुख देशो भाषाओंने स्तुरय प्रगति की 1 सस्कृत,
प्राकृत, पाल और अपभ्रदा आदि प्राचान भाषाओंके अव्ययनको भो
प्रोत्साहन मिला । हिन्दी, बंगला आदि प्रचलित देशी भाषाओंका सम्यक्
विकास ब्रिटिश शासनकालमें ही हुआ । यों उनको काव्य-भाषाका उद्गम
एयं पर्याप्त विकास पिछली पाँच छह शक्षाब्दियासे होता आ रहा था, किन्तु
गद्य-रुखन और उसकी शैलियोंका विकास प्राय इसी कालको देन है ।
प्राकृत भाषासे विकसित और पूर्वमध्यकालीन अपभ्रश भाषाके द्वारसे उदित
होनेवाली हिन्दी इस देशके पलाबसे छेकर बिहार और हिमालयको सराईसे छेकर नर्मदापर्यन्त बहुमागमें व्यवहारमें आनेवाली सर्वाधिक प्रचलित

तीवनाता हो है। तीर साराताल नितृत वर्षणात्म वहुत वर्षणात्म एवं रिजापन-देव वर्षणी रिजापेट लावन र है। है। दि र रि एवं रिजापन-देव वर्षणी रिजापेट लावन र है। है। दि राज्याकर वर्षणी देव राज्या हों के राज्या वर्षणीतिक वालंक कर वीजवाकर वालक वर्षणा कर बोर वर्षणात्म व्यक्ति हारा निर्मेक्ट रही रिजी व्यक्ति वालया बहुद व्यक्ति वैदन्तीत्मीह प्रचलीत वालय को वर्षणा

के ब्रथमन बोर विवादे बनारवे बनारांग्रे पूर्व वैरन्यान्ती जानते वर्ष मानाने यह कर नेमा आरण कर दिया जिले वहे जात पूरे रूपों राज्यमाने नदर समीन कर दिया । आरण्यों केरोरीटन नमें भीर गाज्यमाने नदर बनायांन्द्रा करने माने भागे नदर बने गी-दिन्तु पास विवासान्त्री करनेते, मार्चनु ब्रीस्मन्त्रात्री केरोगे जाने बनाना सामान्त्रात्रात्री करनेते, मार्चनु ब्रीस्मन्त्रात्री केरोगे जाने विवास विवासी विवास कर्मायुक्त कर्मायुक्त स्वास्त्रात्र स्वास्त्र करनेते स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र

वते जर्मात्राधिक बसावर और वक्का करार वस्ते वहुँ स्थ्यात्रा स्थि। दिश्य केवार्थ कर करून सम्बन्ध स्थापित वर्ष में क्रिक सम्बन्ध समुद्र वर्ष्युर्व कार्याध्यान १५ इतिहासि वरिक जाने में विश्वित के वह स्थापत सम्बन्ध भी नहीं है अच्छारि इस पुरस्ताम और वक्कों तिह दिने सने कारक्योंने पुरस्कात मन्त्रास्त्रे हैं पात है। जीना कार्यानी संपन्नी भी कार्याह है। विदिश्य स्वत्यक वैक्कोंने स्वतित्व कर्णा कर्मोंने संपन्नी भी सम्बन्ध पात्राहित कर्मकाम स्थानन स्वाराम कर्णा कर्मोंने स्वाराम स्थानन

बारतीय इतिहास पुत्र प्रति

611

भौतिक एवं वाद्य दोनों प्रकारके शास्त्रीय एव लोकप्रिय स्पाँका विभिन्न संगीत-विद्यालयो, कला के द्रों, नाटक-समाजा निनेमार्गो एवं रेडियो-द्वारा पर्याप्त विकास एव प्रचार हुआ। नृत्य-कलाका भी पुनकत्यान एवं विकास हुमा । इस कलाके बास्त्रीयरूपो, त्रिभिग्न प्रदेशों में प्रचलित लोकरूपो, पाइनात्यम्या आदि विभिन्न प्रकारोका विकास एव समन्वय हुआ। चित्रकलाके पुनरुद्वारका श्रेष कलकत्ता गवनेमेण्ट स्कूल ऑफ सार्टके प्रिन्सिपल ई० वो० हैयेजको है जिनके प्रमावमे अवनोन्द्रनाथ ठाकुरने भारतको प्राचीन कलाको पुनक्उजीवित करनेके प्रयत्नमें एक नवीन धौती-का विकास किया । नन्दलाल बोम, अब्दुर्रहमान चुग्रदाई, ढाँ० सुरुमान शादि अय अने क प्रसिद्ध चित्र कारोंने चित्र कला के पुन एत्यानमें प्रभत सहयोग दिया। मूर्त्तक्लामें विषयको प्रत्याकृति बनानेकी और अधिक रहा, उसके भावपक्षकी इस कालमें विशेष प्रोत्माहन नहीं मिला। स्यापत्य कलाके क्षेत्रमें भी सादगो सुविधा और उपयागिताको ओर अधिक ष्यान रहा। इस कालमें अनिगतत सरकारा और ग्रैर सरकारी इमारतें वनीं, किन्तु वस्तुत कलापूर्ण कृतियां कहलाने योग्य उनमें शायद दा चार हो निवल सो निवलें। वास्तवमें इस युगमें कलाका भी पुनस्त्यान सो हुआ, किन्तु सभो फलाओ र अध्युनिक पारचात्य सम्यताको भारी छाप और प्रमाव रहा।

घम और समाजका इस घमंत्राण देशमें अविनामात्रो सम्बाध रहा है। सामाजिक जोयनका प्राय कोई अग ऐमा नहीं रहा जा घमंके प्रभावसे ओत प्रोत न रहा हो। इस देश की सस्कृति मा प्रधानत धमानुनारो ही रही, और वर्षोकि विचार एव विश्वास-स्वातन्त्र्यका भी इस देशमें सदैव सम्मान हुआ है, अत यहाँ प्रारम्भसे हो कई-कई घम और उनसे सम्बन्धित सस्कृतियाँ साथ-साथ बहुधा सद्भाव और सहयोगपूषक हो फड़ती फूड़ती रहीं। सुदूर प्राग्ऐतिहासिक कालसे ही चलो आयो भारतीय सस्कृतिकी द्राविष्ट आर्य, ब्राटव वैदिक अथवा श्रमण बाह्मण रूप विशुद्ध स्वदेशो द्विष्ट वा दुक्तांबाय बहुमानेशामा बतार-तरिवसी प्रदेश का वृक्त दुक्तेशर दिया-अतिक्रिया करती सकताके भाव चली आ ही की । ऐतिसक्ति कार्यने मनगमारा जैन बोडाहि करोने और बाह्यमचारा ग्रेप बैन्समाहि करीने रिकृतित होतो नावी बच्चे । बृतनमानीके बार्वते वृत्रे को को बच्च विदेशी मार्गियो इस देवने आयो कर्चे भारतीय बनाय और बंग्युनिये बरम्यारे बाब बारबनान् कर निवा वा और मुनवशानी बानके बारस्य बन बन्ते बात में पुरुष-पुरुष कर रिक्तु बाहार्ग एक का मा तीय बंदर्शिकी वह दिनिय बाध माने दिन्दु मैन मादि अनुधारियों-बाध वनतानायो मना बढ़नी वर्ष बतारोत्तर वि नित होती का रही थी । इत्ताव और बुनक-मानीके मायमप्रेन संबोध नि कि बहुक्ति अपन बार प्रधापट काली और वने पूक्त नये जाह ब्रधान किये । प्रश्ताम और मुनमनानाँकी चारत पूर्व-त्रवा माल्यनाम् तो व कर बका विल्यु क्वकी बुक्का मीर विदेवीया क्षं निवालीयताको अनेक संयोगे बहुत कर कर विचा । चारतके शस्त्रक बोर मुनलनाय बन्द दरनानी देखींके दरनाम ीर मुनलनानाने वहन पूर्व निम हो नवे । इनके सर्ति का बहुबान सन्ताके नामाजिक सर्जिक सर् क्षेत्र हिन्द कीवनके मुक्तनानी पाकनके विधेप हुन्छत्ती की नहीं किसी ओर न बक्तर कोई कान प्रभान शाना । बोई-दे बारस्वत्र गरिवालीने साम नह किर करनी कान महिने प्रचारित होने कहा । अधानकाताना की मकारित और फल्पप्याने मह मतीय बीवन भी पिषिण बुद्धा पूर्व बरक्रम्बरक्रमा पर नवा मा । भीर तथ अंगरियो बालनके नती प्रकार क्यांना हो जानेवर को पुत्रस्त्रानका सुनाव निशा हो क्या बायको परिमान्त्यक्षर परिपत्नी सम्बद्धा एवं त्रांस्ट्रांत्ये बाच बक्के बाले-बाल्ये र्वपर्व करते पाता । आरम्भवे अल्लो क्या अवका सन्तर दर्व वस्तित निवर्तने यह साने थोड़ेन्द्रे में हिन सानवाने हारवे परिचयो सम्तृयों विदेश प्रचारित करते हैं शोला तो का नहीं अनेक ब्रोट्स्विटिनीने स्वयं बड़े जार

बालीय इतिहास दक्ष की

चाय जिनकेन्द्रे अवसरा यहन्त्र झीत संवताहि वृत्ती बहेब या और हुन्यी-

सम्यतासे अत्यिधिक प्रमावित करना प्रारम्म कर दिया । पिश्चमकं धर्म, विचारों, आदर्शों, रहन-सहन, वेशभूषा, आविष्कारों, पद्धतियो एव प्रणालियों, समीका भारतीय जीवनपर प्रभाव पढा । इसमें भी सन्देह नहीं कि कितप्य जिज्ञासु अंगरेज मनीषियोंने प्रारम्भसे ही भारतीय धर्म, सस्कृति, साहित्य और इतिहासके ज्ञानका पुनरुद्धार करना भी शुरू कर दिया था । और यह कार्य उत्तरोत्तर उन्नति करता गया तथा उसने भारतके सम्बचमं पिष्चमी जगत्की घारणाओंको परिवर्तित करनेमें, उनकी भूलोका सशोधन करनेमें और भारतकी सास्कृतिक विभूतिका आदर करनेमें पर्याप्त सहायता दी । तथापि भारतका यह प्रभाव अधिकाशत बौद्धिक ही रहा, व्यवहार-इष्टिसे उसका फल प्राय नगण्य ही रहा।

अस्तु, अँगरेजोंके सम्पर्कस देशमें जा जागृति हुई उसका एक परिणाम धर्म और समाजमें सुघार करके उसे पूरोपवासियोके आदर्शपर उन्नत वनाने-के प्रयत्न थे। सस्या, प्रभाव और व्यापकताकी दृष्टिसे अपने अनेक, बहुधा परस्पर भिन्न एवं विरोधी, रूपोके वायजूद, देशका प्रधान धर्म अब कथित हिन्दूधर्म था और प्रधान समाज हिन्दूसमाज था। हिन्दूसमाजमें भी वर्ण एव जाति व्यवस्थाके कारण भारी अनैषय था। उनमें भी अवण अछ्त शदी-की सस्या आधेसे अधिक थी जिन्हें चतुर अँगरेजाने दलित जातियां या 'परिगणित जातियां' आदि नाम दिये । उनकी सामाजिक आधिक बौदिक एन नैतिक दशा अवश्य ही अत्यधिक शोचनीय यी और जितनी थी उमसे कहीं अधिक वणन को जाती थी। १९वीं शतीके पूर्वार्धमें हो राजा राममोहन रायने घम एवं समाज-मुघारके उद्देष्यसे ब्राह्म समाजकी स्थापना की थी। इसमें वर्ण व्यवस्था और मूर्तिपजाका बहिष्कार या और इसका झुकाय अंगरेजियत एव ईसाइयतको ओर अधिक था। उस कालमें अँगरेजिक साथ सान-पानका मम्पर्क रागनेवाला या नमुद्रपार जानेवाला व्यक्ति जाति और पर्मस स्युत कर दिया जाता था, और ऐसे लोगोंकी संस्था दिन प्रतिदिन बद रही थी। ब्राह्म-समाज उनको आश्रय देता या, अत उसका प्रचार बीर प्रवार बहुता गुरा । केवरकार बेशने को और आने बहाता । देशिक नान राष्ट्राने शासा-नामना प्राप्तान है कि जाएपीरे बार नामना काने-के क्यालन नार्टर क्रम्म ननावके अन्ते बलको एक नती मानाकी ^{क्रस्} दियो । इसके अनुकासके आराज्यकं विर्मुख सकेदरायाधी धार्वतानार्थक का स्थापना हुई । जरादेश बोर्न्सन्य राजादे और राजपूरण नीरित्य सम्बार कर प्रार्थना समाप्रके य अ रिशा के र प्रावादेने समाय-स्वार के हैं। वर्गर-स वेदम राष्ट्रोसन कोलाइटीको 🌖 बान्धो संगान हान्स सेमानेने वर्वेन्ट्र कोड इच्छिम जानाइदीकी मी क्यारमा की । स्थानी पानइपर वरमा^{जाने} को बैदाली दिवारामा प्रचार हिमा अनके विरूप स्थानी विवेदानानी तया नदायी रामनीचेन रिरेमोंने की माचर जारतीर सरमानदार्थ कुरेंद्र और अमेरिकाफे नियानियोक्त समाचित किया । यामहत्त्व निर्मा ती एक नवा नुवारक्त अन नता । १८७५ ई. वे मेरव व्याक्तिती मारतीय जारबी है क्या नवीन कन देवर निवीचोडिकन बीनाडरीनी रवास्ता को । ब्यानगी स्वीदेनेक्टन इन क्षेत्रमें रनुष्य बार्च किया । संबद्धी दो-बिसे भारतीयीने बचवा बचा बचार हुआ। रेटक्य है के ही सर्वार न्याची प्रकारण्यम् साधानमाजको स्थापना को से जो कर्नेहर, मूर्ति हरे वीराज्यनाके विराधी ने जवात-नुवारके वसने के और वाक्रिक देश समेचा पुतः सचार करना चादनै से । चेताब सीर चलट सरेसमें मार्क नवानवा बहुत त्रवार हूं । विन्तु वहाँ सार्ववतात सार्वोत्तनवे त्रवेर कुरानि रोको दूर करवेका प्रयन्त किया, व्यान्यानिक मुकार और विकास वार के नार्वको जांगे बहाया और मुक्तकाता तुर्व ईशाहकानाच जनवानी जन्म बनीने रोक्षित करवेते जारी बावा ही वहां बनाइन बनोंनी वह मार्णवरा वर्ष मीतान बाढान करके बल-सांचारमधी वासिक जानगको मी हैं

र्थुवाची । विन्यु दनवा भी चन बनका ही हुआ नवानव कर्ने की अपने

अरने चंतरम वर्ष भरका करनेत्र अवून हर । आवर्षक स्थानी विभागान-के रायलगायी नश्राधान्त्री स्थारका की । बनावर्ने ईरवरचन्त्र विद्यानामाने

..

मालीय इन्स्लिल पुत्र शीर

विघवा-विवाह बा दोलन चलाया । बन्तमें महात्मा गा घोने समाज-मुवार-को अपने राजनैतिक आन्दोलनका प्रमुख अग बनाया और विशेषकर बछूत कही जानेवाली जातियोंके उद्घारके ठिए हरिजन-आन्दोलन चलाया । अप भी अनेक घामिक और मामाजिक नेता इस युगमे हुए। वज्ञानिक शिक्षा, पाब्चात्त्य विचारों एव सम्यताक सम्पर्क विदेश-यात्रा आदिन भारतीयाके दृष्टिकोणमें भारी परिवतन कर दिया। रूढि, रीति, प्रया, चास्त्रोय त्रक्तच्य और पण्डितो पुराहितोके फ्तबोंको अपेक्षा युनिन भौर तकको अधिक महत्त्व दिया जाने लगा। अनेक बन्बन तो आधुनिक सम्पताके स्कूल, अस्पनाल, रेल, होटल, छापानाना आदि विविध चप-करणोंने स्त्रय ही ढोले करने प्रारम्भ कर दिये थ । इन सबक सुयोगमे चपरोक्त आन्दोलनोके फलस्वरूप धम और समाजमें प्रमृत सुधार एव जागृति आ गयो । दलित जातियोको दशा मुधरन रूगो, स्त्रो-जातिमें शिक्षा, स्वनिभैरता, परदेका अमाव आदि वेगके साथ बढ़ने लगे, विदेश-यात्रा, विधवा विवाह, विजातीय विवाह आदि बुरे न समझे जाने लगे और वाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, कन्या-विक्रय आदि हेय समझ जान रुगे। इस प्रकार हिन्दू जातिका पर्याप्त पुनरु यान हुआ।

नस्या और प्रभावमे बहुत कम होते हुए भो मारतीयता, प्राचीनता, देशमें व्यापकता एव सास्कृतिक ममृद्धिमें कांधन हिन्दू धम और ममाजके प्राय समकक्ष जैनधर्म और जैन-पमाजमें भा उपरोक्त युगानुमारी प्रवृत्तिया, विचारों एव क्रान्तियोंका प्राय धैमा ही प्रमाव पड़ा। अब भा दशक प्राय प्रत्येक भागमें पाये जानेवाले जैनो अधिकाशत मध्यमध्यम एव उच्चमध्यम वगक व्यापारप्रधान ममृद्ध एव मम्पन्न मारतीय थे। मामाजिक मगठन, निक्षा, सदाचार, स्वधमज्ञान एव धामिकताकी दृष्टिसे वे अप ममाजीच बहुत कुछ आगे थे। विवाह गम्बानी कुप्रयाओं, छूताछूत, विदेशनमन, धर्मशास्त्रींके छापे जानेका विरोब, स्या ग्रांतिको अनिक्षा, परदा आदि अनेक कुरीतियांके सम्बन्धमें मध्य एव उच्च वर्गोंके हिन्दुशी जैसा ही

मीर प्रभार बहुना नदा । केयहचन्त्र शैनने उन्ने मीर बावे बहुन्ता । देनेक नाथ शकुरते ब्राह्म-बनायका प्राचीत नैहिक कार्रसीके साथ बन्त्यन करते-के प्रवासन आदि श्राह्म-कार्यके क्यानें जनको एक क्यी शामाको क्^{या} रिता । इतके अनुकरवर्षे बद्धाराच्युक निर्मुत क्षेत्रप्रसाती आर्काः। वार् की स्वातमा हुई । अहादेव बीविन्द रामाडे और रामकृष्य बीविन्द संस्थार कर प्रार्वना नवावके त्रवृक्ष र्वता वे । रालाहेवे तमात-नुवारक ही वरेरक हें देवन क्षुवेशन शोधारदीको और बादको बोधान कुछ बोहकेने वर्वेन्ट्र श्रीप इन्तिया बोशाइटीपी सी स्थापना सी । स्थानी 'चावकुम्म परम्ब्रीनी भी नेपाणी विचारीका जचार किया क्लके दिवन स्थामी विवेदनायों रामा स्थानी सम्भानिन स्टियोर्न भी बाकर मास्तीत सम्मानकार्य कुरैर और समेरिकाके निधानियोगी जवानित किया । धमहत्त्व निवा भी एक नमा सुभारकन यम नदा। १८७५ ई. में मैडा ब्यान्स्स्मीने भारतीय मात्रधीको एक सभीन कप देवर विजीतोजिकक बोताहरीकी स्वापना की । बीवती एगीवेदेश्यने इन क्षेत्रकें स्नुप्त काव किया । सेंबरेडी परेनीको माराधेनीमें जबका बसा प्रभार हुआ र १८७५ ई. के ही समर्थ स्वाभी वनागान्त्रं आर्वधवामधी स्वापना की वै को बन्दिर, वृत्ति वर्ष पीरानिश्वाके विशेषी में समाय-गुवारके बच्चों ने और वासिस वैदिस वक्ता पुन प्रचार करना चल्ला थे। चन्नाव और बत्तर प्रदेवने व्यर्क समायका महत्त अभार हुता । किन्तु कही आर्थकाराज बाल्योकाने वर्तन पुरोशियोंको पुर करनेका प्रमत्न किया स्वी-शाधिके नुवार और विकासपार-के कार्यको मानै बढाया मीर मुख्यमानी एवं ईबाइसी-द्वारा क्लावको मन्ते पर्भवे बीवित करवेव भारी बावा वी बड़ी बनानम बर्धोली कई बाकोक्स रूपं वीजन्त प्रस्तुत्व करके क्ल-शावारमधी वाजिक कावनाको मी हैय

याक्यीय इतिहास दूर रहि

.

सस्याएँ स्थापित हो गयी जिनसे सोध खोज एवं विविध विषयक साहित्य-का सुजन तथा प्रकाशन होने लगा । यान्ठ-पाठशालाओ, वालिका-विद्यालयों एव उच्च सस्फुनविद्यालयोंके अतिरिषत जैन स्कूल, पॉलेज, छात्रावास, बाला-विश्वाम, अनाथालय आदि भी शीघ्रताके साथ स्थापित होने लगे। स्त्री-शिक्षा, अन्तर्जातीय या विजातीय विपाहके पक्षमें और वृद्ध विवाह, कया-विक्रय आदिने विरोधमें उग्न आ दोलन चले और पर्याप्त सफल हुए । दस्सापूनाधिकार-आन्दोलनने किमो भो व्यक्तिके धर्मपालनकी स्वतन्त्रता अपहरण करनेकी प्रथाका अन्त कर दिया। समाज सुधारके चेंद्रेश्यसे ही दिगम्बर जैन परिषद्-जैमी सम्याण मी स्थापित हुई। तीर्थ-पेत्रोंके प्रवाधके लिए कमेटियाँ बनीं किन्तु इस प्रसगको लेकर दिगम्बरों और ब्वेताम्बरोंमें कई तीर्थोक एकाधिकारक प्रश्नपर खेदजनक मुक्तदमे-वाजियां भी चलों जिन्होंने घातक माम्प्रदायिक वैमनस्यमें वृद्धि की, जो किनप्रय नेताओंके सत्प्रयत्नोमे इघर कुछ दशकोंमे किचित् शान्त पह गया है। अँगरेज प्राच्यविदोने १८वीं शताब्दीके अतिम पादमें ही जैनघर्म एवं साहित्यमें रुचि लेनी प्रारम्म कर दी थी । १९वों शताब्दीके पूर्वायमें अनेक अँगरेज विद्वानोके प्रयत्नोंसे जैनधर्म, सस्कृति, साहित्य, पुरातत्त्व और इतिहासके अनेक अगोपर स्तुत्य प्रकाश पडा और घीरे-घीरे जैन-विद्या मारतीय विद्याका एक महत्त्वपूण अग वन गयी । १९वीं शतीके उत्तरार्घमें र्वेगरेजोंके अतिरिवत अनेक जर्मन, फ्रान्सीसी, इटालियन आदि अन्य परिचमी देशक प्राच्यविदोंने भो जैन विद्याके अघ्ययनको प्रभूत प्रगति प्रदान की एव जैन धर्म और उसके इतिहाससे सम्बन्धित अनेक भ्रामक धारणाओंका चफल निरसन किया । वीरचन्द राघवजो गान्घो, प० लालन, जगमन्दरलाल जैनी, चम्पतराय वैरिस्टर आदि अनेक जैन विद्वानोने यूरॅप और अमे-रिकामें जाकर जैन धर्म एव दर्शनका प्रचार किया। भारतमें अनेक जैन एव वजैन प्रकाण्ड भारतीय प्राच्यविदो एव विद्वानीने जैनाध्ययनकी चत्तरोत्तर प्रगतिवान् किया और यह क्रम चाल है। इस प्रकार इस युगर्से

मानवायात साहि सनेक केलाने दिल्लाको प्रीड एक वर्ष रहा विकास करना निर्म वर्धिक बाहिएक निर्माण होता रहा वा और पूर-पूर जलाति नैक्टा प्रतिपत्ते अथम बहुबना रहता बा । अलोक अनिर बनवा देनिक नामधीनक विश्वनक्ता या बड़ी एक छोटा-बड़ा याल्य-बड़ार मी हर्ण या और प्राप्तः निक साम्य-निमा होती या । इसने सनका यार्थिक मीर्थ भीर शामार्जिक कीवन भी बहुत कुछ बेंबा हुमा था। १९वीं समीकें मध्यमे दिल्लीके व निवचनप्रत बचावां कोटो-काँडी कृतवें विकासमेती वार्तिक एवं बोर्डिक विषयोगर दिली वचने किसी बी ! बुक्त प्रत्ये (बत्तर प्रदेश) के बचन विकासकाल राजा प्रियमकात निर्मार क्रिक की बैन वे जिनक प्रवल्लोने दिन्ही व केवल विश्वान्तरवाजीशा एक पन्देश विकर ननी बरम् कालसीमें जा कर्युंक बाव-शाम कक्षा प्रयोग होना अरम्ब ही बता। कहोंने स्वर्ग जी दिल्हीने कई कुलुके शिक्षी। १८५ में बी भागरा नगरमें एक जैन कार्निक पुस्तक कर चुकी जा। किय यमकानोक क्रापे मानेपा रिल्टू परिष्ठदोशी मादि मीन पुरस्तकपरिकाने में सनम्ब प्रयास वर्ष एक विरोधः विज्ञा । किन्तु निरोधके बारमूत संदेषे मान्योत्तरने प्रनिध होती क्यो । १८७५ ई के बीन समामास्पर मा निकाले प्रारम्भ हो वर्षे और कुछ क्षी ब्रह्मचोने क्षिमा अवराती नहरू,

मराध्ये भैनरेपी-वर्षु व्यक्ति स्थित्रत्र बागाओले बार्ट्याय्ये व्यक्ति । बारिक वैशासिक परनार्थियावाची वेच्या वर्षकोरः गुर्वेष वसी । १८८९ है है में प्रशासन बैन बाहातावाची और स्वत्यन्त्रतः क्षेत्रास्त्रत वास्त्रक्ते और बैन में में मन्त्र प्रदार्थियाव (मारत बैंच स्थानस्वत्र) औ स्थान्त्रा

नवायह बनमें थी जा। निश्नु सांबद विद्या सम्प्रमुख वर्ष सम्बद्धियाँ नारम थेयनार सामानिक बंदरन दृष रचनाविष्यकों अधिक निवस्ती जादे पुरका वार्षित नाम सामे भये और बसावण नुबार करीने वेल्या भारतार नाम बसम नया निता। है थी बती है के साम तर्थ कराई मुक्तमान नेताओको भांति राजनीतिक लाभोकी ओर अधिक रहा है और धर्म, समाज एव सस्कृतिके पुनस्त्यानको ओर कम ।

पारसी समाज छोटा-सा किन्तु सर्वाधिक समृद्ध, सुशिक्षित एव गठा हुवा समाज है। बँगरेजी शासन और सम्यताका सर्वाधिक छाम उसने अपनी व्यापारिक, बौद्योगिक एव सामाजिक उन्नति करनेमें उठाया।

बीद धर्म लगमग एक सहम्माद्दीके उपरान्त अब कुछ दशकोंके बीच इस देशमें बाहरसे आकर फिरसे उदय हो रहा है, देशमें उसके अनुपा-वियोंकी सस्या चाहे अधिक न बढ़ रही हा किन्तु समर्थकों एव प्रशसको-की कमी नहीं है। धार्मिक दृष्टिसे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पुनस्त्यान इस कालमें बीद्ध धर्मना ही हुआ है।

ईसाई घमने अँगरंजी शामनके आश्रय, सरक्षण एव सहायता, सहयोगसे भारी उन्नति की थी। निम्न जातियोकी दीन ग्रारीय अधिक्षित जनताको ईसाई बनानेमें उन्होंने अधिक ध्यान दिया और उसमें वे पर्याप्त सफल भी हुए। उनके मिशनों और पादिरयोने स्कूला, अस्पतालो, अना-पालयो आदिके द्वारा देशको लाभ ही पहुँचाया, सेवाभावका आदर्श भी मलो प्रकार प्रस्तुत किया, किन्तु इन सत्प्रयत्नोमें यही सबसे वहा कलक हैं कि इस दरामें ईसाई धर्मका प्रचार करनेके पीछे पिक्चमी गोरी ईसाई जातियोंके राजनीतिक उद्देश्य ही प्रधानरूपस कार्य करते रहे और सम्भव-तया अब भी कर रहे हैं। वैसे ईसाई समाज अपेक्षाकृत शिक्षित एव सामान्यतया उन्नत समाज रहा है।

इस प्रकार गत धातान्दोके पुनरूत्थान युगमें भारतवर्धने जीवनके विभिन्न क्षेत्रामें नवीन आगृति, प्रगति एवं उन्नति की । इस सर्वतीमुखी पुनरूत्थानने स्वतन्त्रता प्राप्तिक साथ एक वडी मजिल तय कर ली । देशका पुनरूत्थान ही चुका, अब वह सवप्रकार समर्थ सचेतन होकर अपने पैरोंपर खडा है और सम्यताकी दौडमें विश्वके अन्य सम्य राष्ट्रोंके साथ समान स्तरपर माग लेनेके लिए कटिबद्ध हैं । यदि अपनी सांस्कृतिक

बन कराहरे से मार्गांत कृता तर्थ तुस्त्यन्तरे साक्ष्यी-स्मा देश वर्षेत्र, वृत्ति व र्गांत्र पर्व राश्यान सम्मानं स्थान से स्मान्त्र कृति होता । स्वार्थ प्रश्ने स्थान स्

कारक ने नाता । 128 वाल्य प्रालक्ष मुलकालका है कि में संग्रहण व. स्थान स्थान देश में वाल्य की स्थान के स्थान संग्रहण के स्थान प्रमाणिया का काम्यूच में मोत्र कर सामा नोता की स्थान के सामा कारक में हिन्मू के होत्र में मोत्र कर में सामें (दिन्द्र) के दें। अध्येष्णक मानिता मानिता की स्थान दें। जनवाद में मोत्र विद्या मानिता (१८६०-१९१४) में मार्च के मोत्र मुक्तमाले सामृति के स्थान में मानिता मुक्ति हिए। एक मार्ग का्या मानिता हुन्मा कालक मुक्ति स्थान स्थान मार्ग का्या मानिता हुन्मा मार्ग हुन्मा मुक्तमान केना में सारक्ष्य सी मार्ग मोल्या हुन्मा कर स्थान प्रमाण कर्मा स्थान सी मार्ग में मार्ग कर सामा सी सी सी सी

रिया मिनते दुष्ण गर्वतः नाम्यामिक व) आप्ताह, सद्याव कीर सामते स्वाप केपने माम्याप्त हा सामेंते करते हागले सा ? विश्वपार्वते भी प्रवादानाहों प्रकृत को किन्तु विद्याप्त नहीं । वेसने विश्वपार्वते प्रवादानाहों प्रकृत को किन्तु विद्याप्त नहीं । वेसने विश्वपार्वते प्रचारक वर्षों स्वत्य पंत्रस्तों एवं किन्तु दिश्च वेद साहित्ये वामकीनाह साथि तब वसता पहें हिन्तु वर्षके वैद्यास्ताहास स्वर्

नाण्यसाविक वैकास्य का लिपू-विदेशको समक्षेत्र मेसामाने सदैव मोस्कारण

प्रमुख तिथियाँ

१. देशो भारत

१ करोडसे ६ लाख वर्ष पूर्व पर्व पापाण युग लगभग ६०००००-१५००० ई० पृ० पुरातन पापाण युग १4000-6000 नव्य पापाण युग घातु-युग एव मानव सम्यता और 6000 ,, ., मस्कृतिका उदय, ऋपभ-युग सिच् घाटो सम्यता-पूर्वकी मानव ६०००-२५०० ,, एव परिचम और दक्षिणकी विद्या-घर (द्रविष्ठ) सम्यताएँ वैदिक आर्य-सम्प्रता ₹०००-१००० रामायण काल, अयोध्याके 2000 श्रो रामचन्द्र मगधमें २०वें तीथैं-कर मुनिसुयत, दक्षिणमें वानर-वशी तथा ऋग जातिकरावण आहि महाभारत युद्ध, महाराज कृष्ण. १४४३ ,, २३वें सीर्थंकर अरिष्टनेमि उत्तर-वैदिक काल, उपनिपदोकी 8800-000 ,, रचना, नागोंका पुनस्त्यान, ब्रात्यों एव श्रमणोका पुनरुत्कर्प हस्तिनापुरका विनाश 8000 ,,

904

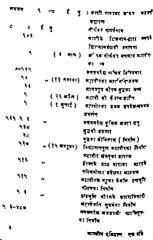
मसुख तिथियाँ

कर **गालीन इस्टिस्स । ए**वं वीर

नरम्पाके बनास केंद्र एवं बनारेय शामीना नारक्की भारतिनामने. परकल करते हुए और पाई बनारेकर समुध्य बनाते हुए वह साने नहीं है तो नह समस्य ही सम्मार-मानाक्का सफल सामन कर देना. हमें

कोई करेड़ रही है।

aco-ceo to do	पार्टीलपुत्रनरेन अनुगढ, मुण्ड, नागदाम धादि
YC ⁸ ,, <\$0 ,, <\$0 , Y64 ,,	गोतमबुद्धका परिनिर्वाण (मृष्ट्) मगपन शेननाग वास्त्रास्त्रिन्द्रारा विक्रवर्यश (पूपनत्त्रवः) को स्थापना अवस्तीका मगपराच्यम मिल्ला गराबोर-परम्लाक अस्तिम अस्त्वेषित सम्बु- स्थामीका निर्वाण
XX5-500 "	मगय-मम्बाट निस्टयपा पालायोग, वैसासस्य पाणित
۱۱ ۶ دع	निद्यपन-द्वारा कीरग विसप
\$€€ " ,,	मगप-मसाट् महार्गादन् शनिम श्रुतसेयाँच भटवाहुना (जैन) मप- महिन रक्षिण प्रामा विद्वार नगप्रमे हादायपीय
	दुभितका प्रारम्भ
₹ ₹ ,,	कर्णाटकके कटयप्र पवसपर महवाहका देहत्याग
३६३ ,	मग्यमे राज्यक्रान्ति, नवनन्द्रमशको स्वापना
३६३-५०९ ,,	मगधका नन्दमग्राट् महापद्मन'द
356 " 456—486 "	घनान द और उसके भाई -८ न द, कार्य चाणक्य यूनानी सम्राट् सिकन्दरका पजाय एव सिन्धपूर आक्रमण
328 ,,	मीय चादगुष्तका नन्दोंके विमद्ध विद्रोहारम्म
३१७ ,,	मगधर्मे राज्यप्रान्ति, नन्दवदाका अन्त, मौर्यवदा- की स्यापना
३१७-२९८ ,,	मम्राट चन्द्रगृप्त मौर्य
₹१२ ,,	सम्राट् चन्द्रगुप्त-द्वारा सविनिविजय
प्रमुख तिथियों	voc



१५८ ई	० पू०	स्रारवेलने मगध-नरेशको पराजित किया तथा
		यूनानियोको मध्यदेशसे निकाल वाहर किया
१५३	,,	कुमारी पर्वतपर खारवेलने जैनमुनियोका महा-
		सम्मेलन किया
१५२	11	खारवेलके हाथोगुस्फा शिलालेखको तिथि
स० १५०	11	जैन मरस्वता आन्दोलनका प्रारम्भ
ल० ८५	,,	शकोंका भारत-प्रवेश
७४-६१	,,	चर्जनीमें खारवेलके वशज महेन्द्रादित्य गर्दभिल्ल-
		मा राज्य
६६	,,	शकोका मालवामें प्रवेश, पुरातन शक संवत्-
	.,	को प्रवृत्ति
६१-५७	**	उज्जैनोमें शकोका राज्य
ر <i>بر</i> ه	**	विक्रमादित्यके नेतृत्वमें शकोकी पराजय, मालय-
		गणकी स्वतंत्रता, विक्रम सवत्का प्रवर्तन।
		सुराष्ट्र, मथुरा अदिमें शकक्षत्रप वशाकी स्यापना
۷	着。 な	०-४४ ई० जैनाचार्य कुन्दकुद स्रोर उनके पाहुडग्रन्य
રૃષ-७५		दिगम्बर परम्पराके आगमोका सकलन
२६-६६	ई०	सुराष्ट्रका क्षहरात नहपान, गौतमापुत्र शातकर्णी
६६	ξo	दक्षिणन दिगम्बर मूलसघर्मे उपभेदोंको उत्पत्ति
১৩	ई०	चष्टन-द्वारा पश्चिमो क्षत्रपवशको स्थापना, उज्जैनो-
		की विजय, शक सवत्का प्रवर्त्तन
७८-१००	Ęο	पुरुपपुर (पेशावर) का कुपाण सम्राट् कनिष्क,
		बौद्धाचाय अश्वघोष
७०		े जैनसघका दिगम्बर एवं दवेताम्बर सम्प्रदायोंमें
		विमाजन
१२०-१		जैनाचार्य समन्तमद्र
प्रमुख		
.,		308

111	र्षे । चर्मनुष्यनासः सूनाना सम्राप्त सेरमुक्तको सरावर
11 "	चर्चानपुरुषे सामनवार्वे बुनानी शबपूर वैरेन्ड- नीवचा बारवन
14	नक्षारे चानुष्य नोर्वेश राज्यास्य बीर नेर मृति सम्बद्ध चारपदेश्योच (त्रशिक क्योडि) को बना माना
796 T Y	नीर्व नमार दिशुसार अधिकतात
27.515	नाम नमान विश्ववाद संगवकात समार संगोध
tat a	मधीन का राज्याजिले क
465-65	विवस्तात
94444	मबानके विवासकारा निशास जाना
444 t4	परिषया वर्ष चलियो सोर्च-मधान्यका सविधी
	वसार् बन्नांत (राजवानी बन्नांत्री) कावने
	बत्तवा करेश माई बसरब और उसके बंधन
• •	
\$50-EEV	पैप्रतये निमुध-शास मानवाहम वंशकी स्थापना समीनमें मोर्च सम्मतिके वंशक
******	प्रतिन-पद्भानी सारवेल
ter "	पुष्पानित सुन हारा नवचके अध्यक्त बोर्न वह-
-	प्रवर्ग क्षेत्र हाता वसक्य आध्यक्त आव वर्ग-
CY-WY	नवनमें धून बंधः वाहानवर्तनुसद्धार, वर्तनीत नात्त्रीति क्यूस्तृति
₹ ₩ %	वारवेतका बीवराज्यानिकेक
***	नारवेतना राज्याज्ञिक नारवेतना राज्याज्ञिक
ttv	ः नारवैत्र-द्वारा वैश्नके बारानाकृत्यन्तरेश धारानीन
	नी विजय
	मासीन इतिहास : एक सी

१५८ ई० पृ०	स्वारवेटने मगप-नरेशको पराजित किया तथा
·	युनानियारो मध्यदेशसे निकाल बाहर विया
१५२ ,,	फुमारी पर्वतपर खारवेलने जैनमूनियाका महा-
	सम्मेलन किया
१ ५२ ,,	पारवेलके हाथोगुम्का शिलालेखको तिथि
₹०१५० ,,	जैन सरस्वता आ दोलनका प्रारम्भ
^स ० ८५ ,,	शक्तिका भारत-प्रवेश
५४ ६१	चण्जैनोमे ग्वारमलक वराज महे द्वादित्य गर्दभिल्ल-
	मा गाउव
ξξ ,,	शकोका मालवामें प्रवेश, पुरातन शक संवत्-
	का प्रवृत्ति
६१-५७ ,,	उज्जैनोमें सवाका राज्य
١, ١,٠	विक्रमादित्यके नेतृत्वमें शकोकी पराजय, मालव-
	गणकी स्वतात्रता, विक्रम सवत्का प्रवर्तन।
	सुराष्ट्र, मथुरा आदिमे शक्सत्रप वशाकी स्वापना
•	-४४ ई० जैनाचाय फुन्दकुन्द और उनके पाहुद्दग्रन्य
२५-७५ ई०	दिगम्बर परम्पराके आगमोका सक्लन
२६-६६ ई०	सुराष्ट्रका धहरात नहपान, गौतमोपुत्र शातकणी
६६ ई०	दक्षिणक दिगम्बर मूलसघमें उपमेदोको उत्पत्ति
৬८ ६०	चप्टन-द्वारा परिचमी क्षत्रपर्वराकी स्थापना, उज्जैनी-
	की विजय, शक सवत्का प्रवर्तन
७८१०० ई०	पुरुपपुर (पेशायर) का कुपाण सम्राट् कनिष्क,
2	बोद्धाचाय अश्वयोप जैनसघका दिगम्बर एवं दवेताम्बर सम्प्रदायोमें
७९ ई०	जनसर्वका स्थान्यर एप स्वताम्बर सम्प्रदायाम् विमाजन
95 a 5 4 a 45 a	जैनाचार्य समन्तभद्र
१२०-१८० ई०	ALITHE ALIMAN
ममुख तिथियाँ	

tt tv t tee f m t f	नहामपर बहापन इसन नुरर्धन झीनदा हैन निहमनित्नामा अनुरत्धे देवीदानी स्वाहन । नापद इन बहादी बला दर्धिक चाराठे पूर्वी नगरे नावस्थानको बला कांचेचे पालपदिवर्ध उपन्योगन बतायाचीर नाम और बनार्थ
tre t	क्षमको सा देवून्द्र संबद्धा प्रवर्तन
ल ३५ ई	दैवयानीका स्वारवर्गन व रस्य
111.7	कुरा तक्त् व बल्बनी ७६ण्डा प्रदर्शन चार्रात
****	प्रवस्था सम्बद्धाः स्थिताः कृता संस्थी
	PATPAT
1001	नमाद नशुरकुत कार्यामे विष्णुनीत क्रमण
	वृत्तव-रचनावान
ins-sta t	सम्राप्ट चलामुध्य दियोगं विज्ञमारित्य बहार्गर्य सर्वाचरान
* Y *	ः वदम्यकोग्रः वाकुल्लवयर्थनः विकारेण गायव विशेषः अस्तराजवाः वारतः वालावयः
YPPYCE E	मंग व्यक्तिस कोलियो
vtran t	बनाद पुषारमुख
vit f	स्वेतद्वकाका प्रथम भारतन्त्रवेश अत्वाचारी विवर्धे
	विरुपा प्रम
verte f	गार्थानरेस निरंदर्भ कन्तर
# whomest	अनिय सर्वत करान कुरमार्थ प्रदमश निर्देश
mires f	वस्त्रजोमें देशकि-द्वारा श्वेशकर आवर्गीका लेकका
745 140 \$	बनाद रणसङ्ख
YEV-YEV (बैनानार्थ पुरस्तार देखान्द
#1	भारतीय इतिहास एक प्री

४६५-५५५ ई०	महाकवि भारवि
४७३-५१५ ई०	हूणराज तोरमाण (किल्कपुत्र), जैनगुरु हरिगुप्त
४९२-५५२ ई०	गगनरेश द्विनीत कोंगुणो, चालुक्य जयसिंह
	विष्णुवर्धन
४९७ ई॰	पूर्वी गग सबत्का प्रवर्त्तन
५०५ ई०	वराहमिहिरकी पंचसिद्धान्तिका
छ० ५२०-५५० ई०	चालुक्य पुलकेशि प्रथम
५३० ई०	मालव-नरेश यशोधर्मन द्वारा हुण मिहिरकुलकी
	पराजय
ल० ५५० ई०	उज्जैनोमे राजपि देवगुप्त
५५०-५७६ ई०	क्न्नोजमें मौखरि ईशान वर्मन, काचीमें सिहविष्णु
	पल्लव
६०० ६३० ई०	पल्लव महेद वर्मन प्रथम
^{स्त्र} ० ६००-६८० ई०	जैन।चार्य सकलक देव, भतृहरि, कुमारिल भट्ट,
	धर्मकीत्ति, महाकवि दण्डो, वाण आदि
६०४ ई०	वज्रनदि-द्वारा पाण्डघ मदुरामें जैन द्रविडसधका
	पुन सगठन
६०५-११ ई०	वल्लमीका मैत्रक नरेश शिलादित्य धर्मादित्य प्रयम
६०६-४७ ई०	स्थानस्वरमें सम्राट् हपवर्धन, गौड नरेश शशाक
	(६१९ ई०)
६०८-४२ ई०	वातापीका चालुक्य-मम्राट् पुलकेशिन् द्विताय
६०९-७० ई०	गगनरेश मूर्विक्रम कोंगुणि
६१५ ई०	ब्रुट्ज विष्णुवर्धन, वेंगिका प्रथम पूर्वी चालुक्य नरेश
६२९-४३ ई०	ह्वेनसागमा भारत-प्रवास
६३०-६६८ ई०	पत्लव नर्रामह धर्मन प्रथम
६३४ ई०	रविकीर्तिका ऐहोल शिलालेख

सरकक्ता गनिनको राज्यना^{त्र} बीड स्मि^{त्र}ि (Y) (कार्य वास बारक क्षेत्राट् विक्रमादिख प्रयम WIZ F to well f र्गन विकास नवकाम sees t वासका क्षित्रपाकिक पास्त्रम विजयादित्व 110-022 - - (वंशानने आरिएर 521-0 CE वय पीपुदर मुखरन 1 -1 1 वर्धानम् अस्त्रमान 911-ett f नस्मेरमे स्टब्स्स्टिस नगाचैर पासूच्य रिक्रमादित्य क्षेतीय VII VYC C # + 114.44 £ राध्यक्त व्यक्तिवर्ष wrs f क्ष्पमङ्ग सूर्तर--वरेग्राम्बरोक ८४ मण्ड स्वास्त बनराव पानवान्द्रासः मुख्यातमे भागीरण्ड वेर्व WI I स्वास्त 942-93 E राज्युं र कृष्ण अवव wee-cay & र्वशास्त्री कालोंको समाप्त weres 6 वैनिका भूती बाक्का विव्यूपर्वत न्यूर्व P4 ? \$ वाजनारा जिल्लोने शोपर-जंबको स्वापना W WWW.Z E वर्षर-महिलार गरेब क्लासब 4 बद्रोराग्युरियो कुवळ्यमञ्ज \$ \$10-200 राध्यक्षर प्रवासकर्ष स्वामी शेरदेन-प्राप्त सीववळ नावक बहाक्ककी •< f **चमान्ति** Ħ वंशसम्बद्ध W41 8 विवदेशका हरियंश मास्त्रीथ इतिहास । सूत्र इति *11

~ 63 £0 कन्नीजमें इन्द्रायुधका राज्य ७९३-८१४ ई० राष्ट्रकृट गाविन्द तृतीय जगत्तुग ८१५- ७७ ई० 🕆 राष्ट्रकृट सम्राट अमोघवर्ष प्रथम नृष्रतुग ८१५- ५० ई० . गग राचमल सत्यवास्य प्रथम ८२८- ७२ ई० वगाल-नरेश देवपाल ८३६- ८५_{। ई}० कन्नीनका गुर्जर-प्रतिहार मम्राट् भोजदेव ८७८-९१४ ई० राष्ट्रकूट कृष्ण दितीय स्रकालवर्ष रु० ९०७ ई० . परान्तक प्रथम चोल ९३९- ६७ ई० राष्ट्रमूट फुण्ण तृतीय, ९४७ ई० गुजरातमें मूलराज-द्वारा सोलंकी वशकी स्थापना ९५४-१००२ ई० - खजुराहोका घग चत्देल ९६१- ७४ ई० गग मारसिंह ९७३- ९७ ई० ' तैलप द्वितीय, कल्याणीके उत्तरवृतीं चालुवय वंशका सम्यापक ९७४- ९५ ई० धारामें वाक्पति मुज,परमार ९७७ ई० म्बालियरमें बज्जदामन कच्छपघट ९७८ ई० , श्रवणवेल्गोलको गोम्मटेश बाहुमलि, मृत्तिका निर्माण ९८५-१०१६ ई० ॰ राजराजा चोल ९९७-१००९ ई० चालुक्य मत्याश्रय इरिव वेदिग १००६ ई० मुनीन्द्र वर्धमान-द्वारा हा्यसल राज्यकी स्यापना १०१४- ४२ ई० चालुक्य सम्राट् जयसिंहे द्वितीय १०१६- ४२ ई० राजे द्र चोल १०१८ ६० ई० । घाराका मोन परमार र्१०७६-११२६ ई० । चालुक्य, विक्रमादित्य, (विक्रमाक) -१०९० ईp ६ कन्नीजमें चाहदेव द्वारा गहदवाल वंशकी स्थापना मसुखन्तिथिमॉ;; ⁺उ । । । " । 0.1 B

१. ५-११४३ है : मन्दिनगड़िश बर्गान्ड विद्वारण बोर्गनी होबबल गरेच विन्तित्रमः रामानुधार्यार्थ tt t vt f ११४३- ७६ वं : मुजरालका पुनारमान बोबंको चैनाकार्न हैनला सप्रवेश-बारवरका स्वित्रपत्र चीवृत्त जिल्ली # 225 **\$** बनंदरात होयर कावानोने विश्वत कवपुरि, बायवनाय किंग्र-HISS- TO E का बतको स्थालना 2255-17 1 f नरमञ्जू पत्रेष रिल्पेने नृजीरात्र चौद्यान कडीवर्षे वस्त्रात H EEWS SEE 13cc 11 f नार्थानीकानी भारत-नामा me f केपनिर्देश सामग्रीका स्थल शार्वकके कवाशीय शतका पतन titt f 2 2985 ः हारबन्द्रके होनस्य धानस्य प्रस् इच्हिर एवं नुस्कानाच वित्रकार चन्त्री **** (PER PER this tree f विजनसम्बद्धे संबद्ध बंध tv25 53 f निजनगरमें बरहित बातुन जनीन गंध १५ ५ ई - विजयनपर्ति बर्च बेचको स्थानम 14 41 4 Personal Properties thin f erfenteren au. fenannt fente २. विदेशी शासनमें मारत विकरी बनका शास्त्रक wi मरबीका क्रिकार प्रकर बाह्यक **४१२ र्र**ः मुक्तम्बर्धान काविकनारा वाधिरकी वराज्य और दिलाई प्रताननात्राची स्थापन भारतीय इतिहास : एक वर्ष 1-

९८७ ई०	मिटण्डेके राजा अयपाल साही-द्वारा मृदुवतगीन गजनवीकी पराजय
९९९-२०२७ ई०	महमूद गुजनवीके उटेरे बाक्रमण, अलविस्ती
1126 20 3	तराइनका प्रथम-युद्ध, राजपृतीं-द्वारा मुहम्मद
	गोरीको पराजय
११९२- ९३ ई०	तराइनका दूसरा मृद्ध, पृथ्वोराजकी पराजय, दिल्लोपर मुसलमानाका अधिकार
११९४ ई०	जयचन्द्रकी पराजय, बन्नीजवर मुमलमानोंका
	अधिकार
११९७ ई०	भोमदेव मोलको-द्वारा ग्रारीको सेनाआको पराजय
११९९ ई०	मुहम्मदिबन षिहतयार सलजी-द्वारा विहार व
	वगालपर अधिकार
१२०६ ई०	गोरीको मृत्यू, कुनुबुद्दोन ऐवक द्वारा दिल्लीमें
	गुलामधंशकी स्यापना
१२१२-३६ ई०	इल्तुतमिश दिल्लीमा सुलतान
१२२५ ई०	चंगेजखौ मंगोलका आक्रमण
१२६६ ८६ ६०	वस्रधन
१२९० ई०	जलालुद्दोन सलजी द्वारा दिल्लोमें सलजीवशकी
	स्थापना
१२९६-१३१६ ई०	अलाउद्दोन खलजी
१३२१ ई०	गाजो सुग्रलुक-हारा दिल्लीमें तुग्रलुक्यशकी
	स्थापना
१३२५-५१ ई०	मुहम्मद तुग्रलुक, अफोकी यात्री इन्नयतूता
१३४७ ई०	दक्षिण (गुलवर्गा) में बहमनी राज्यकी स्पापना
मुख तिथियाँ	७ १७

शासरका बुलसान बहुनुस लाजमे tris-cr t

बार्ड् (बालवा) वा बुल्हान होर्घद होगी 22 4 18 E तुमपुर बंगका अन्य दिल्लीमें सैयर मार्थी ल्याtrtrt en-der frateil-ter क्रमीरका मुक्तान अनुवसास्त्रीत (मुक्ता) treve f

1144 11 1 f धारोद्धरा पार रो वंद वैतृरसंबदा भारत-साउत्तव और स्टन्धर 1116 t *1 2476 £ erferente einer eine ti stact बीनपुरका राष्ट्री बस्तरा

भौरोक्याद तुरुका रित्योक्षेतुर्वी बालागस 1111 42 f -

रैक्पर ५४ ई० पाम्मीसी गवर्गर हुन्ते रैक्पर-५४ ई० . दितीय श्रीवस्य काणीमी पुढ रैक्पर ६० वराहबन्द्रारा सर्वादका पेरा, १

रेण्ये ६० वलाइवन्यामा अर्थाटका पेमा, श्रीगरेखी सार्गनितः शक्तिका सुवराम

रेष्प्र ६३ ई० सोसरा अंगरत प्राप्तांमी गुद्ध

१७५६ है। अहमदमाह धनाली-द्वारा दिग्लीकी सृट

रेष्पं रं० प्रामीना मुझ, संगालपर अंगरेजीना प्रमुख

१७६१ हैं। पानीपसना सामग्र पुद्ध, मराठोकी पराजय, पमताश्राम पतन

रैष्ड् १.८२ ६० मैसूरका हैयर अली

१७६५ दे॰ : लाह मलाद्व वंगालमा गयनंत, दलाहाबादकी मन्द्रि

रै७६७-६९ ई० प्रथम छॅगरेज मैगूर युद

१७०२ ०८ ६० धारेन हेस्टिंग्स बनालका नवार

१७३३ ई० नेगुलेटिंग ऐस्ट

१७०४-८५ ई० यारेन हेन्टिस अंगरको भारतवा मर्पार-जनरल १७७५ ई० सर विशिषम जो महारा बगाल गृधियाटिक

मोराइटाकी स्यापना

१७७५-८२ ई० प्रयम अंगरेज-मराठा युव

१७८०-८४ ई० दूगरा अँगरेज-मैसूर युद

१७८८ ई० विद्स इव्हिमा ऐक्ट

१७८६ ९३ ई० स्टार्ड कार्नथालिस (ग० ज०), इस्तमरारी यन्दोबस्न

१७९३ ई० सम्पनीका चाटर

१७९३ ९८ ई॰ सर जॉन घोर (ग॰ ज॰), हस्तक्षेप न करने-की नीति

ttv f	बर वर्षे वेंदरेक्षा च वत त
ttya f	मामनेती करवनीडी स्वताना
11 6	प्रमाणिकार मुख साप्रकारिक सन्तो पाने
	बो (व हे बचा रण्या रेपूच
tt ct of	स्पन-मध्य भीरवस्य
ttict	Metalente met beret fenfe
ttret	विशामका सार्वाचीक कराह्य सारावी
	FRITTE
11 /	राजपुत बुद्ध सीरंबडेश्या वर्तत्त्वत्तवत
11 11	
to stenst	सराज्यतासाम क्यानसामान्य व संदेश पार
	fetfeitein urreiter, auters sem-
	FREEZE
12 4-64 4	मुक्त-बारबाद साराहरवाद प्रथम
t ct	संयुक्त हैरद प्रतिपत्ता बन्तरी (बेंदरेवी)
t test t	प्रयम नेपारा कामानी विश्वस्थान
t eses	वेनरेक्षेत्री कारतार वर्तजीकारके स्थापनी
	वर्षकार प्राप्ति
t tork t	वैद्या नाजीशन प्रथम
t teref	derretten mittente battenalen unt.
	निका म
tally of	वान्तीनी नश्नर बयुवा
tal f	नारिरमात्र पुरश्चित्रः मात्रममः दिल्लीती गुर
tor see	भीर द्वारामध्य
100-YC \$	the state of the s
(4110 f	मनम भेनरेज काल्योमी मुख
1=	ममर्गाम इध्याल : एक स्थि

१७४२-५४ ई० • फ्रान्सीसी गवर्नर हुप्ले १७४९-५४ ई० द्वितीय अँगरेज फ्रान्सीसी युद्ध १७५१ ई० वलाइव-द्वारा अर्काटका घेरा, अँगरे

१७५१ ई॰ मलाइव-द्वारा अर्काटका घेरा, अँगरेजी राजनैतिक शिवतका सूत्रपात

१७५६ ६३ ई० तीसरा अँगरेज फान्सीसी युद्ध

१७५६ ई० सहमदशाह अन्दाली-द्वारा दिल्लीकी लूट

१७५७ ई० पलासीका युद्ध, वगालपर अँगरेजोका प्रमुत्व

१७६१ ई० पानीपतका तीसरा युद्ध, मराठोंकी पराजय, पेशवाओका पतन

१७६१-८२ ई० मैसूरका हैदरअली

१७६५ ई० लाई क्लाइव वगालका गवर्नर, इलाहाबादकी सचि

१७६७ ६९ ई० प्रथम अँगरेज-मैसूर युद्ध

१७७२-७४ ई॰ : वारेन हेस्टिग्स बगालका गवर्नर

१७७३ ई० रेगुलेटिंग ऐक्ट

१७७४-८५ ई० वारेन हेस्टिंग्स अँगरेजी भारतका गवर्नर-जनरल

१७७५ ई० सर विलियम जोन्स-द्वारा वगाल एशियाटिक सोसाइटोकी स्थापना

१७७५-८२ ई॰ प्रथम अँगरेज-मराठा युद्ध

१७८०-८४ ई० दूसरा अँगरेज-मैसूर युद्ध

१७८४ ई० पिट्स इण्डिया ऐक्ट

१७८६-९३ ई० लाङ कार्नवालिम (ग० ज०), इस्तमरारी बन्दोबस्त

१७९३ ई० कम्पनीका चाटर

१७९३ ९८ ई॰ सर जॉन शोर (ग० ज०), हस्तक्षेप न करने-की नीति

```
चेत्रावमें रामग्रीन निष्ठः मिरान शास्त्र मेरवास
to a talk f
                 नार्व बेन्यको (म स ) नारक वन्तिक
torcte at
                 भीवा अनिरेश-जेतुर वृक्त होतु तुन्तानवा कर
tutett f
                 बुनरा भैनरेज-भराता नज
81 8-04 E
20 4 W #
                 मरकार्जनाची (प प )
                 साई विष्णे (घण)
  te o-ti t
     1411 t
                 कारकीयाः वार्रेर
 1 (F 155)
                 सार्थ हैस्टिल (अ व )
                 राजा रामबादुनसम्बास बाह्य बनाजकी
  1617 6
                 स्थापना
                 नेराकनुद और विशेमीको बन्दि
     1211 E
                 रिकारियोधा दश्य
  tets te f
  tetutt f
                 कीवता मधान पुत्र, मराहा धाँकावा पत्रा
  103196
                 लाई एप्टरटे (व भ )
   2 27×15 $
                 प्रवाद वर्गी बद
   1272 14 €
                 मर विभिन्न वैश्विक और बतके मुचार
      1617 f
                 निरुपके संवारीका समय
      1411 (
                 रकाताना नार्धर
  1614 15 6
                 नर चार्ल्य मेडकाइट (न म )
                 नार वाफर्तेच्य ( स. स. ) अवन अफवान हुव
   154 1153
                 साई बनिनदश (व व )
   terr or t
                । क्रियको सँगरेका राज्यमे जिल्लामा
     tert f
                 मार्ड हाबिज (श्रं वः ) ज्ञान क्रिक्त कुर्नेन
   terrici
                 विकास स्थल १५व
   terest 1
                 चार्ट स्ट्रांटी
      teret
                 क्याचा राज्यका बन्त
```

* 12 YS \$0 पजावको धैंगरेजी राज्यमे विलाना १८५२ ई० दुसरा वर्मा गृद्ध, दक्षिणी वर्मापर अँगरेजावा अधिकार १८५३ ई० हाँसी राज्यका बाठ, कम्पनीका नाटर, भारतमें रेलका जारी होता १८५४ ६० चान्म वचना निधा-सम्बाधी निवाट **ረረ**५६ ይo वयधकी नवायीका अन्त १८५७ ई० . अँगरेजी द्यामनवे विषद्ध देशस्यापी सैनिक बिप्लव 4646 E0 विद्राहना दमन, भारतया घासन इंग्लैण्डकी सरकारा कम्पनासे छोनकर अपने हाथमें लिया. महारानी विषटारियाकी विक्रप्ति, ऐषट फार दो चंटर गवनमेण्ट आफ दण्डिया, लाह पैनिम प्रथम यायसगय १८५८-१९४७ ई० पनरुग्धान सुग इण्डिया की सल ऐवट १८६१ ई० 9 200 Fo म्युनिसिपल ऐषट द्वारा स्वायत्त शासनको मान्य मरना १८७१ ६० प्रथम जन-गणना १८७६ ई० भारतीय मध नामर संस्थाकी स्थापना विभिन्न स्थानोमें स्युनिसिपल व हिस्ट्वट बोहोंको १८८३ ८४ ई० स्यापना इण्हियन नेघानल काँग्रेसकी स्थापना १८८५ ई० अपर इण्डिया मुमलिम एसोनियेशनकी स्थापना 8666 E0 दूवरा इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट १८९२ ई० यगभगं आ दालन १९०४-०५ ई० ममलिम जीगकी स्यापना 317.880£ £0 मेसल तिथियाँ

14.50 g

ł

1456 1615 6 पंजाबमें रामजीत तिह दिश्य राज्य संस्थाप 1486 16 4 1 मार्ड नेकेबकी (म. स.) सहायक वस्ति-वय 1496 79 F चीना जैनरेड-मैतूर बुढ रोपु सुन्छनका का 16 3-4 £ कुछ जैनरेज-मध्या मुख 16 4-00 E मरचात्रदाची(द च) 14 w-11 f नाड विच्छे (न च) 1613 1 मम्पनीका कार्रेड 1621 81 f चाकदेसिटान (व व) 1414 £ राज्य रायमञ्जूनसम्बन्धास ब्रह्म समाजको 74 1940 tets f वेशल-युद्ध और दिशीकीका बन्दि tets tet विकासिकोचा प्राप्त tetmete f बीबरा मराठा मुळ मराठा परितका राज ₹८२१-२८ € भाव पाइस्ट (च भ) terret f प्रथम बर्जा हुई 1272 14 8 गर विकित्त देख्यिक और क्लोके नुवार terr f विन्तके बयारीका राज्य ten f करमधीका कार्र र 1214-0C E बर भागव नैटकाफ (व व) 1614- 91 नार बाक्येंग्र (वं वं) प्रवस अग्रतान सुर terrive ब्यड एक्लिक्स (व व) tont क्रियको जॅनरेजी राज्यने निकास terrive f मार्वदादिय (१ म.) प्रदर्शनाच कुठ विकासमध्य राज्य COYCAS E वार्व स्वर्धनी tout क्यास सम्बद्धा कर भारतीय इतिहास पुत्र धी

^१८४९ **ई**० पजाबनो सँगरेजी राज्यमें मिलाना १८५२ ई० दूसरा वर्मा युद्ध, दक्षिणी बर्मापर अँगरेजोका अधिकार १८५३ ई० . झाँमो राज्यका अन्त, कम्पनीका चार्टर, भारतमें रेलका जारी होना चालम वृडकी शिक्षा-सम्बन्धी रिपोट १८५४ ई० १८५६ ई० अवधकी नवाबीका अन्त १८५७ ई० . अँगरेजी शासनके विरुद्ध देशव्यापी सैनिक विप्लव १८५८ ई० विद्रोहका दमन, भारतका शासन इंग्लैण्डकी सरकारने कम्पनीसे छीनकर अपने हाथमें लिया. महारानी विषटोरियाकी विक्रप्ति, ऐक्ट फ़ार दी बैटर गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया, लाई कैतिग प्रथम वायमरायः ' १८५८-१९४७ ई० पुनरुत्यान युग १८६१ ई० इण्डिया कौसिल ऐक्ट १८७० ई० : म्युनिसिपल ऐषट द्वारा स्वायत्त शासनको मान्य करना १८७३ ई० प्रथम जन-गणना १८७६ ई० भारतीय मध नामक सस्याकी स्यापना विभिन्न स्थानोमें म्युनिसिपल व हिस्ट्रिक्ट बोर्डोकी १८८३-८४ ई० स्थापना डण्डियन नेपानल काँग्रेसकी स्थापना १८८५ ई० अपर इण्डिया मुमलिम एसोसियेशनकी स्यापना १८८८ ई० द्रमरा इण्डिया कौन्सिल ऐक्ट १८९२ ई० १९०४-०५ ई० वगभंग आन्दोलन मुमलिम लोगको स्थापना ा १९०६ ई०

वर्तिनका भूरत वानिवेदन, भरत बीर वर्र 24.25 दल शतम हुए बिन्टो-बार्ने रिकाम ममस्त्रीक ब्रीड द्रांगिया देख t • f दिल्ली बरबाट, इंब्लैन्डके राजा जीर धनीके 2 5573 अन्यक्ते काराव्ये \$51417 f नरोपीय स्वास्त्र वर्तिमधा सन्तर्क कविनेधन गरम-नरम वड tere f क्रिके मुक्तमानीके बाज क्यानक रेज्य, र^{ूप} वैनेन्द्रवा श्रीमञ्च शान्द्रोतम 21215 मान्तेम्बु-बेम्बब्रोव रिनीत वस्तिम्ब बाब प्रीयम ð-c सोक्सम्य विकासी मृत्यु, सामीडी सरिवर्ड 222 Ant ark भक्तमंत्र नाम्बोका बताह्योग बान्दोबन, विकास \$ \$\$\$\$ भागीका 2 5 5 5 5 5 पारम रेपामवीको स्थापना 2 2225 करियरा साहीर अधिरेशन वर्ष सामीना करय बोबिन tt1 f नाइनन पत्रीयनको रिचेट 222 6 महान्या नान्यीके केन्द्रशर्मे कविनय साहार्यन मानोचन और शताबद्ध शास्त्र \$ \$1-427 राष्ट्रपदी शीम भारतीय काल्य मह * * * * * * रिन्दे नैक्सनस्त्रका काल्यक हराह \$ 6523 स्वेत-सम 1515 F नवर्तिक बांड इतिहा हैक t to f वर्ष प्राप्ति शहित प्रतिवादकीकी स्थापनी *** मारबीय इविद्राल । वृत्र दर्वि

१९३९-४५ ई० विस्वपुरा

१९४२ ई० 'भारत छोछो' बान्दोलन, सुमाप बोसका झाजाद हिन्द प्रयस्न, मुहम्मदबलो जिन्ना-द्वारा पाकिस्तान-की माँग, स्ट्रैफ़ड क्रिस्सका भारत आगमन और भारतीय सध-योजना प्रस्तुत करना

१९४४ ६० वेवल याजना

१९४५ ई० फीबनेट मिशन एव पालमेण्टरी छेलोगेशन

१९४६-४७ ई० अन्तरिम शामन

१९४७ ई॰ (१५ अगस्त), इर्ल्ण्डकी सरकारका इण्डियन इण्डेपण्डेस ऐस्ट, भाग्तवर्षका विभाजन और स्वतन्त्रवा

१९४८ ई० (३० जनवरी), महात्मा गान्धीकी हत्या

१९५० ई० (२६ जनवरो), भारतीय संविधानका कार्या न्यित होना

. . . कांत्रका सुरह अधिवेदन भारत और नार रत धवन हर 27.75 विष्टो-मार्चे रिकार्न वयनवेष्ट ब्रांड इन्हिया हैन tere f रिक्की बरबार, इंजीनको राजा बीर एमीके Brench mercuit 151×12 f ः गुरोतीय सहस्रुद्ध 1111 f परितका सक्ताळ व्यक्तिक्य वरक-तरह रूप मिने व्यवस्थाति धाप अक्षात रेगा, स्पे वैनेक्का होत्रका कालीका t1 t1 f मान्तेम्-नेष्यचीर रिनीर्ट नक्षेत्रेष्ट बांड श्रीयस रेक erre t सोकमान्य विकासी भूत्यु, साम्बीबी वर्षिकरे Arr ad 2372 € म्हारमा नान्त्रोका सरहतीन जान्द्रोत्तन विकास **अल्लोक** 1 1 1 1 1 1 बास्य र्ववाक्टॉको स्थापना ttre f क्षत्रेकका बाह्यर बांबरेकन वर्ग स्थानीकर महत्त्व श्रीविक 248 E बाइनम् क्रमीखनको रिपोर्ट 111 f न्द्रमचा पाल्योके मेल्लाके समितन शास्त्रके अल्बोलन और बस्पाद्ध हाराज 258-BR € राज्यको सीम भोजनेश बर्ज्य माँ **** रेम्बे बेक्सलस्या क्रम्बक स्थार * *** भेद-पर 1515 6 नर्मायेष्य मात्र श्रीकरा देशा \$ # #P P को सम्बंधि कोचेस सीमार स्वांकी स्थलना व्यक्तीय इक्षित्रसः । एव परि